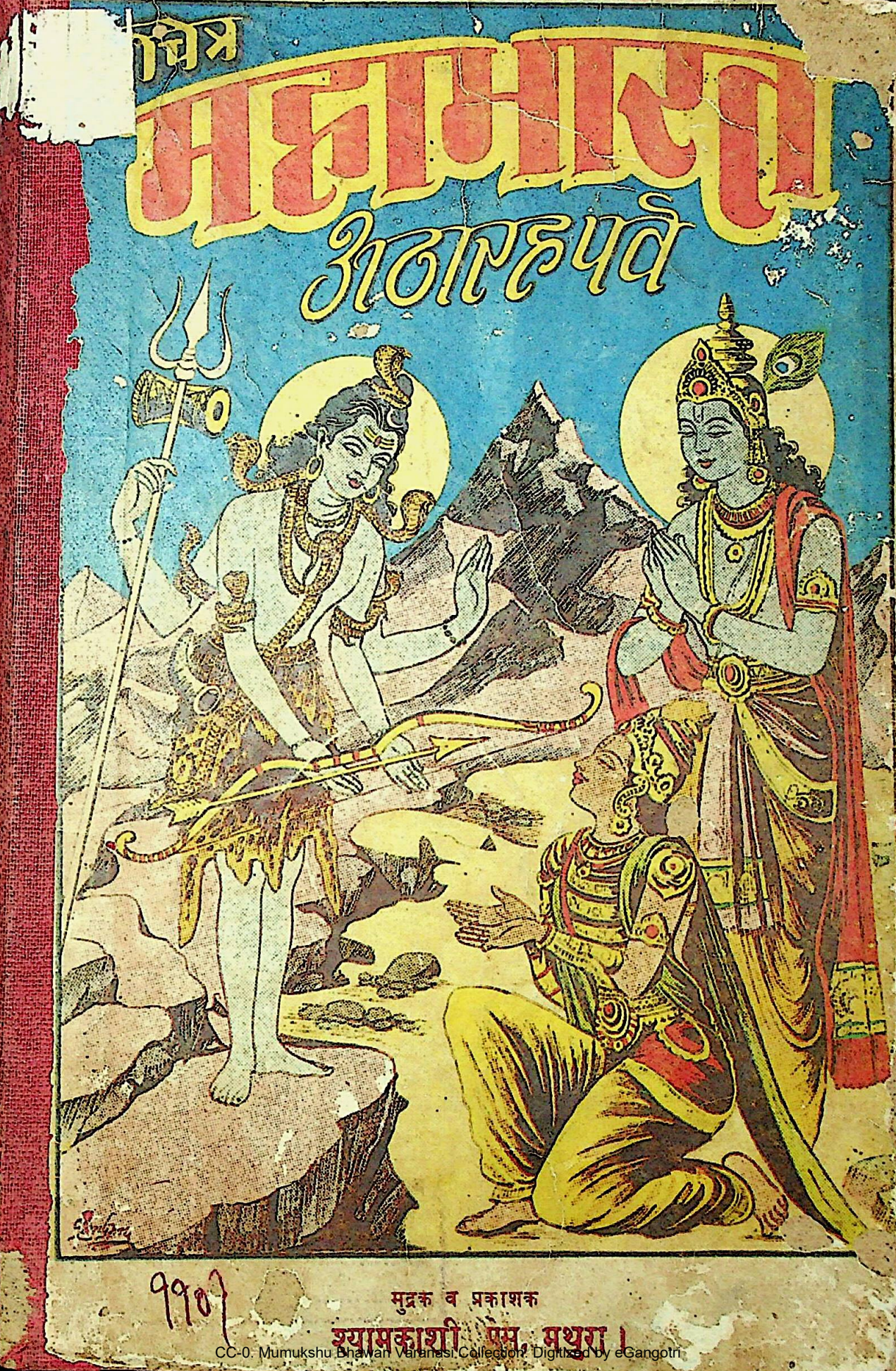

१९०१

मुद्रक व प्रकाशक
श्यामकाशी एम. प्रथरा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्रमांक ३०४५
दिनांक

३२०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ श्री ❀

महाभारत

अठारहों पर्व

मुमुक्षु भवन पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक ३०४८
दिनांक

तर्ज राधेश्याम

—०:❀:०—

मुमुक्षु भवन वेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थालय
क्रमांक
दिनांक

लेखक
काव्य-कला-भूषण, अभिनयाचार्य, कुशल-कवि,
कीर्तन-कला-निधि
श्री पं० गोविन्द दास 'विनीत'

मुद्रक व प्रकाशकः—
लाला श्यामलाल हीरालाल
श्यामकाशी प्रेस, मथुरा

मूल्य ।=)

सर्वाधिकार सुरक्षित है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाभारत की विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
१—आदि—पर्व	१ से १८२ तक
मंगलाचरण और प्रस्तावना	२
कथा सूत्र	७
भीष्म प्रतिज्ञा	२६
धृतराष्ट्रपाण्डुविदुरकी उत्पत्ति	५२
कर्ण जन्म	६५
कौरव,औरपाण्डवोंकी उत्पत्ति	७७
कौरव,पाण्डवोंकाबालजीवन	१०१
लाक्षा गृह	१२२
द्रौपदी स्वयंवर	१५४
२—सभा—पर्व	१८३ से २५८ तक
भक्त भावन	१८३
धर्माश्वमेध	२११
द्रोपदी चीरहरण	२३२
३—बन—पर्व	२५९ से ३०९ तक
पाण्डवों का वनवास	२५९
नल चरित्र	२८८
४—विराट-पर्व	३१० से ३४१ तक
कीचक वध	३१०
गौ रक्षण	३३०
५—उद्योग—पर्व	३४२ से ३९५ तक
रण निमंत्रण	३४२
हरिश्चन्द्र की कथा	३५०
कुरुक्षेत्र पर सैन्य समागम	३७६
६—भीष्म-पर्व	३९६ मे ४६२ तक
भगदत्त वध	३९६
भीष्म का पराक्रम	४१८
भीष्मकापराक्रमऔरवीरगति	४३४
७—द्रोण-पर्व	४६३ से ५२८ तक
वीर अभिमन्यु जयद्रथ वध	४६३
द्रुपद वंध, द्रोण वध	५१९
८—कर्ण—पर्व	५२९ से ५६० तक
कर्ण वध	५०९
९—शल्य-पर्व	५६१ से ५६६ तक
शल्य वध	५६६
१०-गदा-पर्व	५६७ से ५८२ तक
दुर्योधन वध	५६७
११-सौप्तिक-पर्व	५८३ से ५९४
पाण्डव पुत्र संहार	५८४
१२—ऐषिक-पर्व	५९५ से ६००
धर्मराज्यतिलक	५९६
१३—स्त्री-पर्व	६०१ से ६०४ तक
अन्तिम संस्कार	६०१
१४-शान्ति-पर्व	६०५ से ६२४
भीष्म का परलोक गमन	६०५
तुलसीचरित्र,काशीमहात्म्य	६१०
गंगावतरण, सत्य महिमा	६१४
दान महात्म्य, दयामहात्म्य	६१७
अतिथि सत्कार	६१९
१५-अश्वमेध-पर्व	६२५ से ६३५
पाण्डवोंकोदिग्विजय	५२५
१६आश्रमवासिकपर्व	६३६-३४१
सन्यास	६३६
१७—मुशल-पर्व	६४२ से ६४६
यदुकुल संहार	६४२
१८-स्वर्गारोहण-पर्व	६४७-६५२
पाण्डवों का स्वर्गगमन	६४७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* ब्रज बिहार *

श्रीकृष्णचन्द्र भगवान सुख निधान की बाल लीलाऐं भगवान के भक्तों के लिये बड़ी आनन्द कारिणी हैं। जिस समय रासधारी कृष्ण—राधा और ललितादि सखियों के वेष में भगवान की बाल लीलाओं को करते हैं उनकी वह अनुपम छटा, राग रागनियों का गान, उनकी घूमन और थिरकन आदि भाव दर्शकों के चित्त पर ऐसा अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करते हैं कि उनके प्रेम रस प्यासे नेत्र उस प्रेमामृत को पीते २ नहीं अघाते हैं, परन्तु यह सुख उन्हीं बड़भागियों के भाग्य में है जो सांसारिक कार्य भारों को थोड़े दिन के लिये त्याग ब्रज मथुरा, बृन्दावन, गोकुल आदि स्थानों में निवास करते हैं, यह आवश्यकता देख हमने अपने मित्र पण्डित रङ्गीलालजी से इस ग्रन्थ के बनाने की प्रार्थना की, अतः उन्होंने बड़े परिश्रम से यह ग्रन्थ तैयार किया है इसमें भगवान की ५० लीलाओं का वर्णन है। पृष्ठ संख्या ३२० मोटे अक्षर मोटे कागज पर छपा है, मूल्य केवल ४) है।

* भजन कीर्तन *

यह पुस्तक तरह तरह के भजन व कीर्तनों का भण्डार है। भगवान् रामचन्द्र कृष्णचन्द्र तथा शिवजी के भक्ति पूर्ण भजन और कीर्तन इसमें छपे हैं। जिल्द बँधी पुस्तक का मूल्य २) ५० पैसे।

मंगाने का पता :—

श्यामकाशी प्रेस, मथुरा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* श्रीगणेशायनमः *

* महाभारत *

मुमुक्षु आदि पर्व पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक ३.४६
दिनांक

* प्रार्थना *

तुम्हारा करने को आह्वान।
उठीं फिरसे आंखें भगवान॥
छिप कर प्रेम-सलिल भर लाईं, पद धोने दो नाथ।
श्रद्धा-सुमन सफल करने दो, तनिक बढ़ादो हाथ॥
करो स्वीकृत स्वागत सन्मान।
उठीं फिर से आंखें भगवान॥
विश्व विमोहन बनकर आओ, उसी फवन से श्याम।
फिर सारथी वेष धर साधो, नर–जीवन–संग्राम॥
सिखादो शुचि-गीता का ज्ञान।
उठीं फिरसे आखें भगवान॥
मिलन–याचनायें कर कर के, देंगे तुम्हें न दोष।
केवल गुण–गायन द्वारा ही, कर लेंगे संतोष॥
उसी की कर दो शक्ति प्रदान।
उठीं फिर से आंखें भगवान॥
जो होगा देखा जायेगा, वैतरणी के तीर।
अभी इसी तरणी को थोड़ा, ठिसका दो रघुवीर॥
निभादोजन "विनीत" की आन।
उठीं फिर से आंखें भगवान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* मङ्गलाचरण और प्रस्तावना *

उद्भव, स्थिति प्रलय है, केवल जिनके हाथ।
करें कृपा वे सर्वदा, माया माया नाथ॥
वट तल आसीन नवीन नित्य, शुच संकीर्तन सत भाय करें।
वे गिरजा पति गिरजा नन्दन, गिरजा मय गिरा सहाय करें॥
पाजाये पतित पपीहा भी, कुछ स्वांति बूँद सुख राशी की।
जो महा भाग्य से मिल जाये, वह कृपा कोर कैलाशी की॥
अघटित घटनायें घटित करन, व्यापक विनीत के हो घट में।
हे व्यास वंश की प्रथम पूज्य, प्रगटो दुर्गे अन्तर पट में॥

देव दनुज नर नाग, खग, सचराचर समुदाय।
कीजै सब सत भाय से, इस काज में सहाय॥
यह विश्वास प्रमाण धर, करूं सप्रेम प्रणाम।
सब जग राधेश्याम मय, सब को राधेश्याम॥
लेखनी संभल यों मचल न चल, वह चंचल चाल चुरायेचल।
वे ब्रज बिहार के व्यङ्ग बदल, रजवाड़ी आन निभायेचल॥
उन रसिक बिहारी का वर्णन, सीमा के अन्तर आना है।
नटवर का नाटक वेष बदल, राजसी ठाठ दिखलाना है॥
जो चुल बुल की मन चली कहीं, तो वही डाट दीजायेगी।
व्यङ्ग या हंसी आई मुंह पर, तो जीभ काट दी जायेगी॥

कहा लेखनी ने मुझे, चलने दो अविराम।
रहैं किसी भी वेश में, यहां श्याम के श्याम॥
प्रभुता पाकर पलटा खाये, ऐसी मोहन की प्रीति नहीं।
जो समय देखकर टूट सके, ऐसी उन प्रभु की नीति नहीं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रुक्मिणी आदि को पाकर भी, भूले प्रीत ब्रज वामा की।
द्वारिका नाथ होने पर भी, कब भूले याद सुदामा की॥
मैं खूब जानती हूँ आगे, चरचे हैं कठिन मारका के।
वह ब्रज के रास बिलास नहीं, वह जलसे नहीं द्वारका के॥
फड़केंगे बाजू किसी जगह, तो कहीं हृदय आरत होगा।
जो भारत का है सिद्ध ग्रन्थ, वह आज महा भारत होगा॥

किन्तु न करती हूँ कभी, मैं इसकी परवाह।
और चढ़ेगी चित्त पर, उन चरणों की चाह॥

देखना-बात की बात करूं, बात ही बात की लागत हो।
मजमूनी खूनी आंखों की, यक साथ गुलाबी रङ्गत हो॥
तू वही नेह सम्बन्ध वही, होकर निरद्वन्द निभाये जा।
द्वारिका नाथ बनवारी का, एक ही स्वरूप बनाये जा॥

अहो हृदय तुम भी कहो, अपने मन की गाय।
महा भारती गाथ में, दोगे कितना साथ॥

बोला विनीत घबराओ मत, मैं इस चिन्ता से निर्भर हूँ।
वह परम देवता मेरे हैं, मैं ही उनका देवालय हूँ॥
जो साफ जगह होगी पसन्द, तो आप सफाई करलेंगे।
यदि जन की प्रभुता चाहेंगे, तो प्रभु प्रभुताई भरदेंगे॥
वे लेखक लेख लेखनी हैं, हैं वही अलेख लेख धारी।
गायनाचार्य, गायन वह हैं, इच्छा वह हैं इच्छाचारी॥
जो हुआ होरहा होना है, वह इच्छा धर की इच्छा है।
बतला बावले किया जो भी, उसमें तेरा करतब क्या है॥

राधा पति राधा रमण, राम निरत रस राज।
वार साज धारण करो, जन विनीत के काज॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माधव मुरली लकुटी धरदो, सारथी साज सजकर आओ।
हे परमारथ स्वारथ सारथि, अब पारथ का रथ ले आओ॥
वह दिव्य चरित्र द्वापर वाला, श्री मुख द्वारा ही समझादो।
लेखनी खड़खड़ा रही नाथ, लेखक बनकर ही सिखलादो॥

सचमुच ही अपने हुए, सानुकूल यदि श्याम।
तो ही लीला धाम का, लीला लेख ललाम॥

वाचको महाभारत गाथा, सब ऋषि सिद्धि सुखदायक है।
भावुक भक्त को सुभायन है, रसिकों को रसिक रसायन है॥
कामिनी मुक्तिकी वेणी है, शुचि शान्ति सिन्धु की श्रेणी है।
सीधी स्वर्ग की नसेनी है, कलियुग की त्रिगति त्रिवेनी है॥
त्रैताप हरणि संजीवनि है, मद मोह मदन मुक्ता मणि है।
कामना कुक्षिकी कामधेनु, चिन्तित जन की चिन्तामणि है॥
बे समझे ही स्वीकार करें, अब नर वह हीन प्रयास नहीं।
लीक पर लीक ही ठीक कहें, वह रहा अन्ध विश्वास नहीं॥

जब तक कारण कार्य का, होन सिद्ध सब साज।
नहीं मानता है उसे, तब तक सभ्य समाज॥

प्रत्येक कार्य कारण पर है, कारण नियमों के अन्दर है।
हैं नियम अटल सिद्धांतों पर, सिद्धान्त खोजपर निर्भर है॥
वे नियम और सिद्धान्त सभी, इस महा ग्रन्थ में पाओगे।
जो मनन प्रयोग चिन्तवन का, पहले कुछ कष्ट उठाओगे॥
कोई कोई वितर्क बादी, जब नहीं तत्व पर आते हैं।
तो इसको पाप कथा कहकर, निष्कारण थूक उड़ाते हैं॥
मैं कहता हूँ शरीर बल ही, दे सकता सारी विजय नहीं।
जो ईश्वर वाद कहाता है, वह है शब्दों का विषय नहीं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल बातों ही बातों से, जो कह सुन कर ठहराया है।
वह शास्त्र नहीं है किस्सा है, वह ब्रह्म नहीं है माया है॥
यदि इच्छा है यथार्थ पद की, तो श्रद्धा से चिन्तवन करो।
यदि आत्म स्वरूप देखना हो, तो आत्मा ही से मनन करो॥

अस्तु महाभारत लिखूं, जिस उमङ्ग के साथ।
उनको पूरा करेंगे, राधा, राधा-नाथ॥

क्या लिखता हूँ वह महा काव्य, जो पञ्चम वेद कहाता है।
भूत या भविष्यत में जिसका, प्रति उत्तर नजर न आता है॥
विज्ञान ज्ञान संयम स्वधर्म, जो पग पग पर सिखलाता है।
जो भव के भूले भटकों को, क्षण भर में पार लगाता है॥
भारत के लिए पूर्वजों का, वह-वीर सन्देश सुनाता है।
जिसको सुनकर मुर्दे में भी, सहसा उबाल आजाता है॥
जिस समय महाभारत ही की, भारत में चरचा आती है।
उस समय विपक्षी लोगों की, रङ्गत फीकी पड़ जाती है॥

जिन वीरों के नाम से, है भारत का नाम।
उनकी गाथा कुशल से, लिखवादो घनश्याम॥

जो मेरे ही बल बूते पर, यह कीर्तन छेड़ा जायेगा।
तो मेंढ़क के सिर पर मानो, गिरिवर सुमेर दिखलायेगा॥
जिसका अन्तिम फल यह होगा, वह मेंढ़कही पिचजायेगा।
काज भी न फलने पायेगा, मेरु भी न चलने पायेगा॥

अस्तु लीजिये आप ही, अपने कर में डोर।
ध्यान अब दीजै हे प्रभो, जन विनीत की ओर॥

❀ गायन ❀

धँस धूमके धाम पतङ्ग धुन्यौ, धर धूम ध्वजा धरि धूर धरेगौ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कससोचतसोच विमोचन लौं, बरलोचन आपहिं सोचहरैगौ॥
पद पाहन पाट पिपीलक हूं, प्रभु प्रेरित पार पयोध परैगौ।
जनिभूलिविनीतबिसासकबौं,सुखरासन तोहिनिरासकरैगौ॥
विनय पत्र अन्तिम लिये, जगत जयाके द्वार।
खड़ा भिखारी भीख हित, खोलो अम्ब किवार॥
कमले! विमले! सुरते!, शुचिते! रुचते! सविते! स-विते!।
महिते! महते! रविते! रवते कविते हवते! भवते भविते॥
मैं भी तो एक दुलारा हूँ, दे दो दुलार की लोरी माँ।
यशुदा–किशोर की कृपा-कोर,करवादो कीर्ति-किशोरी माँ॥
व्यासदेव ने जब किया, इस ग्रन्थ का प्रकाश।
तब लेखक के वास्ते, होने लगी तलाश॥
लेखक कैसा! जिसके पीछे, भाव को बन्द रहना न पड़े।
जो एक बार कह दिया जाय, वो दोबारह कहना न पड़े॥
गणपति बोले मैं लिखता हूँ, पर एक स्वभाव बताता हूँ।
जो लिखने कभी बैठता हूँ, तो कलम नहीं ठहराता हूँ॥
इसलिये लिखूँगा तो पहले, इतना तुमसे ठहराऊंगा।
जो कहने में रुक जाओगे, तो जी चाही लिख जाऊंगा॥
व्यासदेव ने कर लिया, वह कहना स्वीकार।
लगातार चलने लगा, उन दोनों का तार॥
वायु के साथ बादल दौड़े, या बादल लिये वायु धाई।
उनका न कण्ठ रुकने पाया, उनकी न कलम रुकने पाई॥
दैवात् एक क्षण ही भरको, मुनिवर का मौन विधान बना।
बस उसी एक क्षण के अन्दर, वह पूज्य गणेश-पुराण बना॥
उन कवि-पति गण-राज को, करूं सप्रेम प्रणाम।
वंश-बीज को पोषिये, हे हे करुणा-धाम!॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* कथा सूत्र *

बैठे थे दरबार में, जन्मेजय नर राज ।
सजा हुआ था शान्तिमय, सारा राज समाज ॥
उसी समय आये वहाँ, व्यास देव मुनि नाथ ।
स्वागत कर नर नाथ ने, कहा नियम के साथ ॥

जब बिगड़े हुए नसीबों के, कुछ दिन बनने पर आते हैं ।
तब शकुन रूप इन चरणों के, सहसा दर्शन मिल जाते हैं ॥
पाण्डव कुल के पावन प्रभात, कौरव कुल पतवार प्रभो ।
यदि आज्ञा हो तो प्रगटाऊँ, इस मन का एक विचार प्रभो ॥
हँसकर कहा महर्षि ने, कहो परीक्षत लाल ।
सदा तुम्हारी चाह के, हैं सहाय गोपाल ॥
भ्रम हो अथवा कोई भय हो, बतलाओ उसे मिटाऊंगा ।
यदि उपदेशक की इच्छा हो, तो कुछ उपाय कर जाऊंगा ॥
हे पाण्डव वंश के दिव्य दीप, रोको वह मनो विचार नहीं ।
कह डालो जो कुछ कहना हो, जायगा प्रश्न बेकार नहीं ॥
जन्मेजय कहने लगे, सुनता हूँ मुनि नाथ ।
सुहृद सहेली मनुज को, है पुरुषों की गाथ ॥
नर होकर जिसे पूर्वजों का, हो पाया कभी विकास नहीं ।
आजीवन उनके जीवन का, हो पाया कभी विकास नहीं ॥
जिनको न पता चल पाता है, पिछले आचार विचारों का ।
क्या खाक उसके द्वारा होगा, फिर अपने आप सुधारों का ॥
अज्ञान ज्ञान का लोहा है, खोटा है और खरा भी है ।
नर पुरुषों के इतिहास बिना, अन्धा भी है बहरा भी है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब पतन काल में पुरुषों का, इतिहास सामने आता है।
तब पामर से भी पामर का, निश्चय सुधार हो जाता है॥
जब पथ भ्रष्टों को पुरुषों की, वह याद दिलाई जाती है।
तब कान आप खुल जाते हैं, खुद ही अङ्गड़ाई आती है॥

कर्म हीन कापुरुष हो, कितना ही अज्ञान।
फिर भी कुछ उत्थान का, आजाता है ध्यान॥

अस्तु मुझे समझाइये, भारत का इतिहास।
अन्ध पथिक की आंख में, कीजे ज्ञान प्रकाश॥
कहा व्यास ने सत्य है, बेटा आत्म विचार।
पर मैं इसकी पूर्ति से, हूँ प्रियवर लाचार॥

मैं और काम से जाता हूं, आवश्यक है प्रस्थान मेरा।
अच्छा हो अगर ग्रहण करलें, वैशम्पायन स्थान मेरा॥
वे केवल कथा न कहते हैं, आदर्श सामने लाते हैं।
जो कहते हैं सो करते हैं, इल्म का अमल दिखलाते हैं॥
विज्ञान ज्ञान जहाँ तात, वास्तविक अमल दिखलाता है।
वक्ता श्रोता दोनों ही का, उद्धार वहाँ हो जाता है॥

यों कहकर ऋषिराज ने, बनको किया पयान।
वैशम्पायन का यहाँ, किया गया आह्वान॥
दिया गया ऋषिराज को, शुभ आसन तत्काल।
वही भाव पूजन वही, वही प्रश्न की चाल॥

वे कुशल कथा वाचक बोले, राजन् मैं भारत गाता हूँ।
लेकिन इस गाने से पहले, कुछ मुख्य नियम बतलाता हूँ॥
यह ग्रन्थ विशाल ज्ञान का है, विज्ञान भरा है जहाँ कहीं।
वीरों की वीर कथायें हैं, तोता मैंना का चरित्र नहीं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शारद-नारद रद हुए जहां, ब्रह्माजी बिल में खड़े रहे।
रह गये विचारे शेष शेष, सनकादि सनक में पड़े रहे॥
उस महा-सिंधुकी थाह मिले, यह रुचि तो नहीं बराबर है।
हां उसके फल को पा जाना, अपनी श्रद्धा पर निर्भर है॥

सुन-सुन कर भी समझ में, कभी न आता भेद।
किन्तु न करना चाहिये, हमें व्यर्थ का खेद॥

जो विषय इन्द्रियों तक का है, वह समझाया भी जाता है।
पर इन्द्रिय-गत-गम्भीर भाव, यों भी न समझ में आता है॥
ऐसे विषयों के लिए हमें, श्रद्धा-भाव की जरूरत है।
विश्वास और प्रेम के सिवा, दूसरी न कोई सूरत है॥
राजन्! यह गलत धारणा है, वे पाण्डव नर-तन-धारी थे।
मेरे विचार में वही नहीं, सब के सब ही अवतारी थे॥
इसलिये महाभारत-गाथा, श्रद्धा समेत ही श्रवण करो।
भक्तिके लिए मुक्तिके लिए, प्रभु चरणोंका चिन्तवन करो॥

❀ कथा प्रारम्भ ❀

कौशलपुर के निकट था, मुनि वशिष्ठ का बास।
एक बार वसु वृन्द मिल, पहुँचे उनके पास॥

वसु-वृन्द-वशिष्ठ समागम की, हम गाथा अभी न गायेंगे।
इससे पहिले उस युग की भी, कुछ आत्म कथा समझायेंगे॥
जिन कामों को यूरुप वाले, उत्तम विज्ञान मानते हैं।
उनको भारत के योगी-जन, बच्चों का खेल जानते हैं॥
उस योग अग्नि के द्वारा ही, वह महाशक्ति उपजाते हैं।
जिसके आगे यह रेल-तार, रेडियो व्यर्थ हो जाते हैं॥
घर बैठे हुए एक क्षण में, त्रिभुवन का दौरा हो जाए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रारम्भ काम का पीछे हो, पहिले परिणाम नजर आये ॥
ऊपर नीचे आते-जाते, थी नहीं जरूरत जीने की ।
जीवन में मांग न होती थी, पुरुजों की और मशीनों की ॥
वे जगज्जयी थे, गो उन पर, बंदूक न थी, शमशीर न थी ।
वे महाराज कहलाते थे, यद्यपि उनकी जागीर न थी ॥

जड़ पदार्थ तो थे उन्हें, केवल थूक समान ।
आत्म-ज्ञानकी ओर ही, था उनका सब ध्यान ॥
आयोजन करते न थे, निर्लोभी मुनि लोग ।
खुद जीवन-निर्वाह का, लग जाता था योग ॥

बस उसी योग में बँधी हुई, जो काम सिद्धि कहलाती थी ।
वह कामधेनु का वेश किये, मुनिवर के यहाँ सुहाती थी ॥
वह मुनिवर की इच्छानुसार, सारे सामान-जुटाती थी ।
जो कुछ आवश्यकता होती थी, वह सभी पूर्ण होजाती थी॥
वे भूत भविष्यत् ज्ञाता थे, अध्यात्म रूप पर मोहित थे ।
इतना तो सभी जानते हैं, वे रघुवंश के पुरोहित थे ॥

इस कारण था और भी, नाम और सन्मान ।
आते रहते थे वहाँ, कितने ही महमान ॥
करना पड़ता था उन्हें, उन सबका सत्कार ।
कामधेनु पर किन्तु वह, था सारा ही भार ॥
वसुओंने जाकर किया, मुनिराज को प्रणाम ।
स्वागत कर उस धेनु से, यों बोले गुण–धाम ॥

बेटी ! वसु वृन्द पधारे हैं, उनका स्वागत सन्मान करो ।
रहजाय न त्रुटि महमानी में, ऐसा कुछ उचित विधान करो ॥
आज्ञा पाते ही सुरभी ने, भरदी कुटीर सुविधाओं से ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आशाओंसे थी पूर्ति अधिक, थी शान्त अधिक इच्छाओं से॥
भोजन, विश्राम, शान्तिसुखका, कुछइस प्रकार अधिकार हुआ।
जिसका जितना उपयोग किया, उससे दूना भण्डार हुआ॥

वसु बेचारे रह गये, इस महिमा पर दंग।
किन्तु साथ ही हृदय का, बदल गया वह रंग॥

कल्पना न पूरी कर पाया, कल्प तरु अभागे दीनों की।
फिर कामधेनु के द्वारा क्या, चुकती कामना कमीनों की॥
सोचने लगे चिन्ता छूटे, खाने की और कमाने की।
जो ऐसे भोले बाबा से, कुञ्जी मिल जाय खजाने की॥
खाना पीना ही बात नहीं, त्रैलोक सम्पदा साथ लगे।
जो साम दाम से किसी तरह, यह कामधेनु ही हाथ लगे॥
एक ने कहा लूं चुरा इसे, मुझको तो यही सूझता है।
भोले बाबा जी भीतर हैं, फिर बाहर कौन पूछता है॥

वसुओं ने यह सोचकर, ली वह गाय चुराय।
बिना मिले ही चल दिये, पापी अवसर पाय॥

पर हम पहले कह आये हैं, वे मुनि मुनियों के स्वामी थे।
था भूत भविष्यत् ज्ञान उन्हें, वे सबके अन्तर यामी थे॥
लीपा पोती की लाख बार, पर पाप छिपाये छिप न सका।
सौ तरह छिपाया दुष्टों ने, पर भेद छिपाये छिप न सका॥

ध्यान मात्र से खुल गया, उस चोरी का हाल।
शान्ति सिन्धुमें आगया तब क्रोध का उबाल॥

सोचा-उफ! देव रूप होकर, आसुरी वृत्ति दिखलाते हैं।
ऊंची दुकान बनाये हैं, फीका पकवान बनाते हैं॥
यदि गलती हो अनजानों से, तो क्षमा किया जासकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर जान बूझ कर भूल करे, तो रहम नहीं आ सकता है ॥
अमरो ! तुमको यह पता नहीं, कितना बल है ? यमदूतों का ।
ओ रंगे सियारो ! फल पाओ, अपनी काली करतूतों का ॥
धोखे बाजो ! धोखे ही में, धोखे की दुनियाँ में जाओ ।
ओ अमरनामके गर्वीलो ! अब जन्म-मरण का दुख पाओ ॥
बसुओं ने ज्यों ही सुना, महा शाप का हाल ॥
धूल हो गई वह हँसी, भूल गई वह चाल ॥
उलटे पैरों से लौट पड़े, हा ! हा !! मुनीश चिल्लाये हैं ।
मानो पवित्र पापी मिल कर, वरदान मांगने आये हैं ॥
वह फूल फूल कर भूल गई, माथे पर धूल उड़ाने लगे ।
हाजिर करदी झट कामधेनु, फिर हाथ जोड़ घिघियाने लगे ॥
सच्चे योगी यदि उठ जायें, भू-मण्डल की दीवारों से ।
तो दुनियाँ हो जाये तबाह, दुष्टों के अत्याचारों से ॥
बल, वैभव, प्रभुता, अस्त्र, शस्त्र, हैं यह केवल दिखलाने को ।
वास्तव में कोई शक्ति नहीं, योगी की शक्ति दबाने को ॥
रविकी ज्वाला ठण्डी करदे, वह योग अञ्जनी का जल है ।
हिल जायें जिससे महाबली, वह एक तपस्या का बल है ॥

❀ गायन ❀

लड़ते हैं योगी जन, विष्णु से विरंच से भी,
अड़ते अकड़ते हैं, विश्व-दण्ड-कारी से ॥
सृष्टि उलट देते हैं, वृष्टि पलट देते हैं,
दृष्टि कर दिखाते हैं नृपति भिखारी से ॥
अञ्जलि के जल में ही, काजल की जलजाभा,
करदें करादें कहो शीत चिनगारी से ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मक्कर के चक्कर में भिड़ियो सभी से पर,
टक्कर न लीजै तात ! एक जटाधारी से ॥
भूल गये हम मूर्ख थे, यह 'विनीत, की नीति।
अब फल क्या गाया करें, बिना समय के गीत ॥
अपनी करनी को सोच-सोच, मुंह रहा न मुंह दिखलानेका
पर कल्प-वृक्ष के नीचे हैं, मिट जाय रोग कलपाने का ॥
हम पातक के भण्डारे हैं, पाप ही बढ़ाते जायेंगे।
पर प्रभु तोदया-सिंधु ही हैं, फिर दया न क्यों दिखलायेंगे ॥
स्वामी वह सच्चास्वामी है जो, जीत भी ले फिर हार भी ले ॥
मारना उसीका भाता है जो मार भी ले, चुमकार भी ले ॥
अब पालो तो इच्छा प्रभुकी, जो मारो तो इनकार कहां।
अपराध सरासर कर बैठे, कुछ कहने का अधिकार कहां ॥

मुनि वशिष्ठ कहने लगे-वसुओ ! लाओ होश।
जो खुद कूदे आग में, तो किसका क्या दोष ॥
ऊँचा बल, बैभव या प्रभुता, हैं केवल नहीं दिखाने को।
ईश्वर यह चीजें देता है, मर्यादा सहित निभाने को ॥
बगुला-भगतों का कपट ध्यान, तपकी गोलीसे टूट गया।
क्या करूं शाप की ज्वाला से, माया का भंडार फूट गया ॥
वसु-तन में ढला हुआ ढाँचा, शीशा था गिरकर टूट गया।
आशा मत करो लौटने की, जो तीर कमाँ से छूट गया ॥
जो वचन शाप में कहे गये, उनको पूरा करना होगा।
करणी का फल भरना होगा, जीना होगा, मरना होगा ॥
हाँ, होते ही मर जाओगे, तुम करके वचन प्रमाण मेरा।
उतना था महा शाप मेरा, इतना समझो वरदान मेरा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर जिसने निज हाथ से, छोड़ी थी यह गाय।
सहसा उसकी मुक्ति का, कोई नहीं उपाय ॥

वह वीर ब्रह्मचारी बन कर भू-तल पर नाम कमायेगा।
जन्म भर करेगा ब्याह नहीं, पर नाम 'पितामह' पायेगा॥
उसका यश और साधनायें, त्रिभुवन में जागृति भरदेंगी।
उसकी वह अटल प्रतिज्ञायें, प्रभुका प्रण खण्डित करदेंगी ॥
उसका तन मन अक्षय होगा, वह निश्चल गति-मति पायेगा।
मरकर धारेगा अमर नाम, फिर तुम में ही मिल जायेगा॥

लोट गये 'वसु' भूमि पर, पाकर यह वरदान।
किया सभी ने सुख-सहित, सुर-पुर को प्रस्थान ॥
बसुओं ने जोड़ा वहां, सुर समाज तत्काल।
रो-रो कर वर्णन किया, अपना सारा हाल ॥

"बन्धुओ! विश्व का ठुकराया, जाति की शरण में आता है।
गङ्गा भी जिसे न तार सके, वह यहाँ पार हो जाता है॥
यह प्रेम जाति देवी में है, गिरते-गिरते ही रुकवाले।
यह शक्ति जाति-गङ्गा में है, नीच से नीच भी अपनाले ॥
दीनको धनी नीच को ऊंच, निर्बल को बली बनाती है।
भूले-भटके की बाँह पकड़, जाति ही किनारे लाती है॥
जिस पर कि राज्य के नियमोंका, कोई न असर दिखलाता है।
वह शासन शासन से बढ़कर, जातीय दण्ड कहलाता है॥

जाति, जनार्दन जाह्नवी, जन्म-जीवना धार।
जीवन में यह सर्वदा, दुर्लभ पंच जकार॥
यदि स्व-जाति करती रहे, अपनी दया प्रदान।
इस जकार, से शेष वे, सब जकार आसान ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी लिये जोड़ा गया, इतना जाति-समाज।
पतित पापियोंकी प्रभो! आज बचालो लाज॥
हमको इसकी परवाह नहीं, यह योनि अचानक टूट रही।
चिन्ता है तो केवल इतनी, यह जाति जन्म को छूट रही॥
वह द्वन्द लिये दुनियां क्या है? अन्धेरा लिये उजाला है।
माया की एक पिटारी है, अथवा मकड़ी का जाला है॥
छू गया एक ही तार कहीं, तो नहीं छूटने पायेंगे।
जैसे—जैसे उकसायेंगे, वैसे ही फंसते जायेंगे॥
इस एक पाप के वश होकर, उस पाप-लोक में जाना है।
जिस जगह जन्मभर पापोंको, जीवन का सखा बनाना है॥
उस माया से लौटना, स्वप्न समान विचार।
बन्धु गणो, निश्चय करो, हो कैसे उद्धार॥

❀ गायन ❀

सैर समझे हैं जो संसार का आना जाना।
मान बैठे हैं वे बाजार का आना-जाना॥
एक-दो बार हो तो खैर! गवारा करलें।
सहा न जायगा हर बार का आना-जाना॥
लगा हुआ सभी चीज का आना-जाना।
घर बनाना, कभी परवार का आना-जाना॥
याद आयेगा जहाँ प्यार का आना-जाना।
भूल जायेगा तो दरबार का आना-जाना॥
'विनीत' पाप नहीं योनि का आना-जाना।
बना रहे जो हरि-द्वार का आना-जाना॥
देवों में एक देव बोला-जाओ-कोई परवाह नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाँ, एक नसीहत याद रहे, विश्व से बढ़ाना चाह नहीं ॥
जो जीवन भर त्याग बनकर, उस जीवन को भर पाओगे ।
तो कोई भी सन्देह नहीं, आप ही मुक्त हो जाओगे ॥
एक ने कहा–शिव पूजन से, फिर देव योनि दिखलायेगी ।
बोला दूसरा–तपस्या से, पाप की डोर कट जायेगी ॥
इसी भांति उद्धार के, निज मति के अनुसार ।
पृथक–पृथक सुर–वृन्दने, जाहिर किये विचार ॥
कहा अन्त में वरुण ने, चलिये ऐसी चाल ।
जिसे चालमें डालकर, विधि भी सके न टाल ॥
उस मधुर मोह की माया में अच्छे से अच्छे छलते हैं ।
उस मृग–तृष्णा की बाड़ी से, विरले ही पूत निकलते हैं ॥
रचना है जहां पाप ही की, पुण्य को वहां रचना कैसा ।
पाप–मय जहाँ जीवन ही हो, फिर पापों से बचना कैसा॥
छोड़ो मेरी राय में, योग शक्ति का ध्यान ।
करो हमारी राय में, गंगा का आह्वान ॥
तत्काल लाभ के लिये किसी, देवी–देव की सहाय नहीं ।
आपही मुक्ति पा लेने को, गंगा के सिवा कोई उपाय नहीं ॥
जिसको नर्क की नागनी भी, देख कर नाक सिकुड़ाती है ।
डंके की चोट उसे गंगा, सानन्द स्वर्ग पहुँचाती है ॥

❀ गायन ❀

धेनु– द्विज–हिंसा गुरु–मात पिता हत्या लहि,
वारिध बतासा जिमि वातन बिलाय देत ।
परतिय भोगी, चोर, लम्पट, लबार हू के,
छींट मार छिन ही छिद्रन में छुड़ाय देत ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोग नस जात भव रोग नस जात साधु,
व्याधि वापुरी के बेड़ बैर दै बुड़ाय देत।
कोटिन पहाड़ पुंज पाप के त्रिताप हार,
एक बूँद गङ्गा जल पल में बहाय देत।
जगत तारणी का किया, ध्यान एक ही सङ्ग।
प्रगट हुई जल पात्र में, पतित पावनी गङ्ग॥
हाथ जोड़ कर देवि को, सबने किया प्रणाम।
कह-कह कर अपनी व्यथा, रोने लगे तमाम॥

जो परम पातकी कहला कर, जग से ठुकराया जाता है।
जो जीवन से निराश होकर, मर कर भी चैन न पाता है॥
कुछ बची-खुची मिट्टी ही यदि, तेरे साये तक आती है।
तो वह भी अपने देही को, संसार पार ले जाती है॥
इस आशा में ही महा मये, हम दोनों ने बुलवाया है।
अन्तर्यामी! खुद जानती हो, जो कुछ भी कारण आया है॥
जाते हैं जगत-जीव बन कर, यह जगत-तारणी के आगे।
यह पतित अपावन होते हैं, बस पतित-पावनी के आगे॥
गङ्गा बोली—मेटदूं, हैं त्रिताप, भव—ताप।
मगर न मेटा जायगा, मुझसे मुनि का शाप॥
वह जन्म मरण का एक बार, दुःख तो उठाना ही होगा।
मुनिवर का वचन निभाने को, भूतल पर जाना ही होगा॥
हाँ इतना मैं कह सकती हूँ, यह कर्मों से बच जायेंगे।
जन्म के साथ ही मर करके, फिर इसी योनि में आयेंगे॥
इस प्रकार वरदान दे, किया देवि प्रस्थान।
अब दैवीय विधान का, आता है आख्यान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री शान्तनु नर पाल का, था वह शासन काल।
प्रजा सुखी थी शान्त थी, भारत था खुश हाल॥
युवकों की ऐसी दशा न थी, जैसी इन दिनों दिखाती है।
झोके में कमर लचकती है, तिरछी में फिरकी खाती है॥
थे भव्य—शरीर वीर ऐसे, जिनको केहरि कह सकतेथे।
थे ऐसे धीरवान बरसों, भूखे प्यासे रह सकते थे॥
बच्चे बच्चे में वह दम था, काल भी खड़ा चकराता था॥
सचाई में यह ताकत थी, धर्म भी कचाई खाता था॥
वह संयम शील सत्य व्रत था, भोग भी योग दरसाता था।
वह धर्म नीत का जोड़ा था, शस्त्र भी मित्र बनजाता था॥
शासन क्या था? लोक—मत, शस्त्र कहे सो न्याय।
भला कहाँ था? फिर वहां, दुःख के लिये उपाय॥
दूना पैदावार से, लगता था न लगान।
दबे न थे ऋण—भार से, इस देश के किसान॥
विद्या के साथ विनय भी थी, धन था लेकिन अभिमान न था।
विज्ञान कर्म के बल पर था, शब्दों का कोरा ज्ञान न था॥
जो कुछ था सीधा सच्चा था, साजिशका कोई लेख न था।
इतना फिर भी कह आता है, सब कुछ था लेकिन मेल न था॥
शान्तनु नृपाल की धर्म प्रिया, सत् शील अमोघ रानीथी।
साध्वी, सती स्वरूपा थी, सुख दानी शान्त सयानी थी॥

कुछ कारण बश होगया, रानी का देहान्त।
शान्ति सदनकी शान्तिभी, फिरनेलगी अशान्त॥

जब विरह व्यथा बढ़ जाती है, तन मन न कहीं ठहराता है।
ऐसे नर को एकान्त जगह, या बन का वास सुहाता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिल में यक दर्द बिठाये हुए, रोता है और न गाता है।
मरता है और न जीता है, दम पीता है गम खाता है॥
गुल बदनीके गुल बदन बिना, प्रेमीका भी गुल बदन कहां?।
सुखकैसा जबसुख-दानि नहो, सदनी न रहे फिरसदन कहां॥
थी यही दशा शान्तनु नृप की, घट पर मरघट पट घटताथा।
कटती थी रात मौत बनकर, तोदिन रो-रो कर कटता था॥
घर बाहर चित्त न लगता था, ऐसा उच्चाटन छाया था।
मन ही में प्रेम-वियोगी ने, छोटा सा नगर बसाया था॥

उसी नगर में बास था, वही नगर था साथ।
वही लिये बन की तरफ, जा पहुँचे नर-नाथ॥
एक ओर से चल पड़ी, सुन्दर सुरुचि समीर।
एक ओर से नृपति पर, चले विरह के तीर॥

कोयल की कल-कल कू-कू ने, दी खबर पिया के बोलों की।
बेलों की ललित लपेटों ने, दिलवादी याद किलोलों की॥
सेज का समां सा बाँध दिया, बन की सुरभित हरियाली ने।
बो दिया विरह का विशद बीज, मानो अजान वनमालीने॥
मृग-छौनों के लौने नयना, वन गये नयन मृगनैनी के।
बेणी के लहरा देने लगा, लहरा बन—विटप नसैनी के॥
केहरी कमर को लचका कर, दूसरी ओर को निकल चला।
केहरी-दमन मनको मसोस, वन के यौवन पर मचलचला॥

आ न सकी थी हृदय से, अभी होंठ तक आह।
चिपट गई तब तक कहीं, चंचल चितकी चाह॥

आगमन किसी बन-देवी का, बतलाया उठकर नयनों ने॥
दे डाला प्रेम-निमंत्रण भी, अनजाने अलसित नयनोंने॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर दिया हृदय में काम-वेग, वन की गुमनाम कामिनी ने।
भरदी बिजली अन्तर पट में, घन-पट के बिना दामिनी ने॥

बिना विचारे ही बढ़े, नर–पति उसकी ओर।
कर कटाक्ष कहने लगे, अमृत–बाणी बोर॥

"किसने बन की हरियाली को, तोता पक्षी कर डाला है।
किस सूर्य-मुखी ने सूरज के, परदे से बदन निकाला है॥
बदला क्यों समां आसमां का, वन का यौवन क्यों निखरगया।
धूप पर ढाल कर धूप-छांह, क्या चांद भूमि पर बिखरगया॥
कर गई शिकारी का शिकार, वह कातिलकी शमशीर कहां।
राजा जिसकी बन गया प्रजा, वह मालिककी जागीर कहां॥

कहा देवि ने भी विहँस, भर कर विनय विषाद।
जली कली पर मत जता, अरे अली! उन्माद॥

जब तक रस है, तू तभी तलक, हा हा खाकर मंडराता है।
जब आश पूर्ण हो जाती है, तब कहीं पास भी जाता है॥
यह विनय-प्रेम है कुछ दिन का, देखने और दिखलाने को।
रे खुदगर्जी! मर्जी तेरी, जाहिर है सभी जमाने को॥
कर रहम न हमसे उलझन कर, दीवानों का सन्मान नहीं।
हुस्न के भिखारी! आगे चल, यह बाजारी दूकान नहीं॥
त्यागदे प्रेमियों पर सरबस, त्यागी यह तेरा त्याग कहाँ।
ले बाँध रागनी धागे से, रागी! तुझ में वह राग कहाँ॥
यह पूजन प्रेम पुजारी का, कर डालेगा बदनाम तुम्हें।
हे प्रेम देव आगे जाओ, है अन्तिम प्रेम प्रणाम तुम्हें॥

"शान्तनु" ने अब साफ ही, कहे वचन जी खोल।
"—लेती ही देवी किसे, बिना मोल का मोल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिक जाते हैं जिस पर प्रेमी, वह प्रेम—भरी दूकान कहाँ।
मैं इतना फकत पूछता हूँ, तेरा सुन्दरी मकान कहाँ॥
रति हो रम्भा हो या देवी, नारी बन कर अवतारी हो।
हे यौवन-धन की रमा रूप! बन में किस लिये पधारी हो॥
भृकुटी के भाले तने हुए, क्या अब भी नहीं झुकाओगी।
फँस चुका जाल में एक हिरन, अब आगे किसे फँसाओगी॥
तन, मन, धन, तीनों हाजिर हैं, मत बाणों की बौछार करो।
प्रेमिके! प्रेम बन्धन में, यह प्रेम हार स्वीकार करो॥
वह विरही-प्रेमपुजारी को, कुछ प्रेम प्रसादी दिये चलो।
या चलो साथ में मेरे ही, या मुझे साथ में लिये चलो॥

देवी बोली—दूर से, करो प्रेम की बात।
प्रेम—पुजारी! मानले, प्रेम नहीं खैरात॥

सुन्दरता पर मोहित होकर, जो हृदय दे दिया जाता है।
मैं उसको प्रीति मानती हूँ, वह प्रेम नहीं कहलाता है॥
वह सब खुशामदी बातें हैं, वह चापलूस चपरासी है।
जो खाल-बाल पर मरते हैं, वह इश्क नहीं अय्याशी है॥
धक्कों पर धक्के खाने से, यह मेरा अनुभव कहता है।
स्वर्ग में कदाचित हो तो हो, पृथ्वी पर प्रेम न रहता है॥
मत बाँधो चच्चे धागों से, हो चुकी हार स्वीकार मुझे।
"प्रेमिका" ढूँढ़ना और कहीं, मत करो व्यर्थ लाचार मुझे॥

❀ गायन ❀

कहाँ है यहाँ प्रेम का धाम।
सुना जाता है केवल नाम।
जिसे लगन के लग जाने पर, नहीं सूझती ठौर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बन जाता है दिन ढलने पर, वहीं और का और ॥
बात करना फिर उसे हराम ।
कहाँ है यहाँ प्रेम का धाम ॥
आम देख कर कोयल धाये, कली देख अलि-जात ।
समय गये फिर वही स्वारथी, नहीं पूछते बात ॥
लगा है फकत् काम से काम ।
कहाँ है यहाँ प्रेम का धाम ।
कोई नहीं किसी का साथी, नहीं किसी का यार ।
है "विनीत" केवल दुनियाँ में, मुँह देखा व्यवहार ॥
जपो इसलिये सदा घनश्याम ।
कहाँ है यहाँ प्रेम का धाम ॥
नृप बोले—चल ही रहा, जब ऐसा व्यवहार ।
तो हो सकता है हमें, कब उससे इनकार ॥

तुम कहती हो—लोक की प्रीति, स्वार्थ से कदापि न बाहर है ।
मैं भी तो इसे मानता हूँ, वह स्वार्थ सभी पर जाहिर है ॥
जीवन की जटिल समस्यायें, दिन पर दिन आया करती हैं ।
पर तुम सी सुघर नारियां ही, उनको सुलझाया करती हैं ॥
दिन भर की कठिन उलझनों से, जब घबराया नर आता है ।
तब साध्वी, शील पतिव्रता से, वह शान्त भवन में पाता है ॥
देवात् दीन दुर्भागी की, जीवन—सहकारिन छूट गई ।
जिस लकड़ी के बल चलता था, वह शक्ति अचानक टूट गई ॥
केवल विषयों की इच्छा से, मैं किया चाहता ब्याह नहीं ।
सच तो यह है—धर्मणी बिना, रहता कोई उत्साह नहीं ॥
है सूना मन—मन्दिर मेरा, लक्ष्य का उजाला रहा नहीं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आजाय झलक वीराने में, जो प्रेम-दान मिल जाय कहीं ॥

रमणी बोली ठीक ही, कहते हैं नर पाल ।
पर कुछ दिनमें आप ही, उड़ जायगा खयाल ॥

जिस आशा और प्रतीक्षा में, मानव यह सूत्र रचाता है ।
पर कुछ दिन में आप ही आप, उन पर पानी फिर जाता है॥
कारण नर—वृन्द नारियों को, इतना परतन्त्र बनाते हैं ।
जितने परतन्त्र जमाने में, कैद भी नजर न आते हैं ॥
समझें हैं नारी को मशीन, केवल सन्ताप बढ़ाने की ।
या पली हुई कठ पुतली है, खाने की और खिलाने की ॥
इस लिये कभी उन लोगों के, हो सकते पूर्ण विचार नहीं ।
नर-नारी को गृह जीवन में, जब तक समान अधिकार नहीं ॥

छूट न सकता है कभी, नर का मानस-रोग ।
अगर नारि के कर्म में, हो न उचित सहयोग ॥

कुछ कहते हैं-स्वतन्त्रता से, उनका चरित्र गिर जाता है ।
मेरे विचार में नर समाज, यह उलटा दोष लगाता है ॥
यदि नारी अपने स्वामी को, पत्नी-व्रत में पक्का पाये ।
तो निश्चय है वह बिना कहे, आप ही पतिव्रता हो जाये ॥
देखते हुए भी लाख पाप, आँखों से अनाचारियों के ।
सद्भाव न हरगिज टूट सके, कितनी ही सती नारियों के ॥
लेकिन जब अपने स्वामी को, क्षण भर अनकूल न पाती हैं ।
तब बेचारी बेवश होकर, कुछ चरित्र भ्रष्ट हो जाती हैं ॥

सरल नहीं है इसलिये, ब्याह-प्रेम का काम ।
हण्डी के भी दीजिये, ठोक-बजाकर दाम ॥

फिर यह तो जीवन-बीमा है, सारी पूंजी भरनी होगी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये प्रेम-प्रण से पहिले, कुछ शर्त हमें करनी होगी ॥
राजा बोले—"स्पष्ट कहो, यों ही न करो लाचार हमें।
कहने-सुनने से भी पहले, जो कहो वही स्वीकार हमें ॥
वह बोली इस शर्त पर मुझे, है चलने में इनकार नहीं।
मेरे कामों में बाधा का, आपको कभी अधिकार नहीं ॥
जो जी चाहेगा वही काम, जीवन भर करती जाऊंगी।
जिस दिन रोकोगे उसी समय, मैं चली वहाँ से आऊंगी ॥

किया नृपति ने हृदय से, देवि वचन स्वीकार।
तथा महल में पहुँच कर, हुआ ब्याह व्यवहार ॥

नाशाद महल में दो बारह, जम गया समां फिर शादीका।
खिंचगया मनो बरबादी में, फिर से नकशा आबादी का ॥
उस प्यासे कण्ठ कलेवर में, वह सुधा बूँद सी ढलक पड़ी।
अथवा उस धुंधली रेखा में, भाग्य की यकायक झलक पड़ी॥

बीते भोग-विलास में, दोनों के दिन रात।
हुआ इधर सन्तान का, आशा लिये प्रभात ॥

लेकिन प्रभात होते-होते, सन्ध्या ने समा दिखाया है।
बालक होते ही रानी ने, गङ्गा की भेंट चढ़ाया है ॥
पहिला ही नहीं सात बेटे, यों ही बलिदान चढ़ाये गये।
छाती से तनिक लगाये गये, गङ्गा में वहीं बहाये गये ॥
राजा थे वचन-बद्ध इससे, कुछ कहने के हकदार न थे।
मुख्तार आप अपने ही थे, पर रानी के मुख्तार न थे ॥
छाती पर वज्र बिठाये हुए, रेखा बलिदान दुलारों का।
रोकने न पाये बेचारे, बेकार खून बेचारों का ॥

पर जब रानी से हुआ, प्रसव आठवाँ लाल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सके न तब नर-पाल भी, अपना वचन सँभाल ॥
रानी गङ्गा की तरफ, बढ़ी उठा कर बाल।
त्योंही आगे पहुँच कर, यों बोले नर-पाल ॥
बे रहम ! रहम से देख जरा, यह शिशु बेकस बेचारा है।
ओ राज-देवि ! अब भी विचार, यह किसका राजदुलारा है॥
उफ़ ! विषय-भोग के चक्कर में, रुक गई योग की गाड़ी है।
आचारी नीतिवान् नृप को, नारी ने किया अनाड़ी है ॥
यदिविषय-विवशहोकर यहदिल,अन्यायकलङ्क न सिरलाता।
तो एक खून के बदले में, यह खून कभी का हो जाता ॥

मन हरणी ने हर लिया, आह मनोहर भूप।
हत्यारी के हाथ में, पाया हत्या—रूप ॥
मां बाप सदा सन्तानों को, आंखों के तले बिठाते हैं।
हम नीच निर्दयी पैदा कर, गङ्ग में उन्हें बहाते हैं ॥
कुल-तारणि है ? कुलहत्यारी ? कुलदेवि है ? या डायन है।
ओ हत्यारिन ! बतला तो दे, मां है, या क्रूर कसाइन है॥
जो है जैसी है, बैठ अलग, सहली खींचातानी तेरी।
अब कभी नहीं चल सकती है, घर जानी मनमानी तेरी ॥
विषयों का जब तक वेग रहा, मैं खुद भी रहा न आपे में।
सन्तान और हरि चरणों की, आती है याद बुढ़ापे में ॥

अब न कभी कर सकेगी, यों अन चाही चाह।
जाना है तो जा चली, खुली पड़ी है राह ॥
बढ़ना चाहे उस तरफ, जैसे ही नर भूप।
बदल गया क्षण-मात्र में, वैसे ही वह रूप ॥
देखा रानी के बदले में, गङ्गा माता मुसकाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिशु को स-प्रेम आगे रखकर, राजा की ओर बढ़ाती है ॥
बोली-राजन्! आंखें खोलो, देखो मैं कौन कहां की हूँ।
नारी हूँ और न देवी हूँ, न यहां की हूँ न वहां की हूँ ॥
चौरासी लाख, योनि वाले मेरे साये में रहते हैं।
पैदा हूं विष्णु चरण-नख से, और मुझे जाह्नवी कहते हैं ॥
वन देवी बन वन-वन फिर कर, शादी का एक बहाना था।
मुनिवर बशिष्ठ के शाप विवश, वसुओं को पार लगाना था ॥
पा गये मुक्ति वसु सात मगर, आठवां नहीं पा सकता है।
सच है किस्मत का लिखा हुआ, मेटा न कभी जासकता है ॥
इसलिये सँभालो इसे भूप! आज्ञा दो गङ्गा जाती है।
राजन्! इतना ही याद रहे, यह देव-वंश की थाती है ॥

इतना कहते ही हुई, गङ्गा अन्तर्द्धान।
सुना किये शान्तनु फकत, यह आखिरी बयान ॥

चक्कर था, चमत्कार भी था, दुखभीथासुख-सन्देश भी था।
चुपकीथीसाथ चपलता थी, शान्तिथी, और क्लेश भी था ॥
ज्योतिषियों ने उस बालक का, देव व्रत नाम बतलाया है।
आगे चलकर वह महावीर, भट भीष्मपिता कहलाया है ॥

यथा पूर्व चलने लगा, फिर शान्तनु का काम।
जन विनीत, कहप्रेम से, जय प्रभु माया धाम ॥

भीष्म प्रतिज्ञा।

हैं प्रसिद्ध मधु—वंश में, वेणुभूप सरदार।
खेल रहे थे वे कहीं, वन के बीच शिकार ॥
भँवरा-भंवरी का केलि देख, वीरत्व वीर का टूट गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ गया यकायक काम-रङ्ग, वीर्य भी आपही छूट गया॥
दोने में रख वीर्य-विन्दु, नृप ने तोते को समझाया।
एवं यत्न से स्वरक्षित कर, रानी तक उसको पहुँचाया॥
कारण वह वीर्य उपेक्षा से, वीरत्व नहीं खो सकता था।
वर के बल से उसका प्रभाव, बेकार नहीं हो सकता था॥
तोता ले चला वीर्य लेकिन, बाज भी भाग्य से टूट पड़ा।
कुछ वीर्य सिन्धु में बिखर गया, पत्ता पृथ्वी पर छूट पड़ा॥
जा ठहरा वह भावी-वशात्, यक मछली का अहार बनकर।
फिर प्रकट हुआ कुछ दिन पीछे, भारत का होनहार बनकर॥

उसी मीन को एक दिन, ले आया मल्लाह।
दिल ही में बढ़ने लगी, अनचाही चितचाह॥

सोचा यदि-ऐसी मछली को, चीर कर आप खा जाऊंगा।
तो एक घड़ी का स्वाद छोड़, ज्यादा क्या लाभ उठाऊंगा॥
ले जाऊं यदि बाजारों में, तोल का मोल मिल जायेगा।
हाँ राजा को आये पसन्द, तो भाग्य-कुसुम खिल जायेगा॥

शासक थे उस प्रान्त के, नर-पति दासाराम।
केवट रङ्ग-उमङ्ग भर, गया उन्हीं के धाम॥

बोला-नरराज! भाग्य पतिने, यह तुहफा हाथ लगाया है।
यह हृष्ट-पुष्ट-नीरोग मीन, सेवक सेवा में लाया है॥
इच्छा हो अगर पालने की, तो तालाब में बसा दीजै।
भोजन को स्वाद बढ़ाना हो, तो पाकालय पहुँचा दीजै॥

हो प्रसन्न नर राजने, दिया उसे इनआम।
तथा वहीं होने लगा, चीड़ फाड़ का काम॥

पेट पर छुरी के पड़ते ही, ईश्वर ने माया दिखलाई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दर बालक के साथ-साथ, छवि-मई बालिका प्रकटाई ॥
उन दोनों भव्य—मूर्तियों से, भारत की भावी भास रही।
लड़का राजा ने रख छोड़ा, लड़की केवट के पास रही ॥
अब भी ऐसी सन्तानों का, मिलता कितना ही परिचय है।
इस कारण इन घटनाओं पर, बेकार हमारा संशय है ॥
रज और वीर्य्य का तो प्रभाव, सारे विद्वान मानते हैं।
इतिहास जानने वाले नर, यह बातें खूब जानते हैं ॥

ज्ञानी जन सोचा करें, ज्ञान और विज्ञान।
हरि की माया मात्र ही, समझें श्रद्धावान ॥

जो हो, केवट ने कन्या का, मत्स्योदरि नाम धराया है।
माया ने किरणों के समान, पल-पल पर उसे बढ़ाया है ॥
रक्खा था तेल निबौड़ी का, उसमें यह इत्र बूँद आई।
माया—वश मलिन मलेच्छों में, भारत की देवी प्रकटाई ॥
कटक-करील की कुञ्जों में, कुसुमित बेले की कली हुई।
अथवा अनार्य्य कुल बालोंमें, शोभित आर्य्योंकी लली हुई ॥

धीरे—धीरे बढ़ चली, उस पर योवन—द्योति।
छिड़क पड़ी प्रत्यंग से, मधुर—माधुरी ज्योति ॥

लेकिन उस छविका मोल करे, ऐसे ग्राहक का तार न था।
या उसकी शादी करने का, केवट का अभी विचार न था ॥
या यों कहिये वह मणि महान, उन लोगों में साधारण थी।
या छिपी हुई उस परदे में, वह नव नीला की कारण थी ॥

एक रोज मत्स्योदरी, गङ्गाजी के तीर।
देख रही थी बैठ कर, ललित लहर गंभीर ॥
चले पराशर योगि भी, साध समय का योग।
रच रक्खा था प्रथम ही, विधि ने वह संयोग ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा ऋषि ने सूर्य कान्ति, है मूर्तिमयी हरियाली में।
या चन्द्रकान्ति आ बैठी है, मखमली फर्श की जाली में॥
नर्त्तन के लिये समुद्यत है, या पीत परी पैमाने में।
या प्रेम-पुष्प ले प्रगटी है, वह प्राण प्रिया वीराने में॥
समझ लिया संयोग सब, मुनिवर ने धर ध्यान।
तथा कहा कुछ विहँसकर, प्राण प्रिया छबिखान॥
लहरों की लहरों को तज कर, यक लहर यहाँ भी होजाये।
कोकिल-वयनी! पंकज-नयनी! यह नजर यहाँ भी होजाये॥
जिस लीला की रचना से तू, सुन्दरता की अधिकारी है।
उस लीला के कारण तुझसे, योगी भोग का भिखारी है॥
आशा है बिना विवाद किये, मेरी आज्ञा तू पालेगी।
कारण कार्य का विचार त्याग, रति दान मुझे दे डालेगी॥

था यद्यपि सुन्दरी को, वह पहले ही चाव।
फिर भी कुछ कहना पड़ा, छिपा हृदय का भाव॥
बाला बोली-"श्री महाराज! क्या किसी नशे में छाये हो।
सोचकर कहो तो प्रभु! किससे, रति-दान मांगने आये हो॥
मेरी साया से काया का, यह महा तेज खो जायेगा।
तनका प्रभाव तप का प्रताप, आप ही हवा हो जायेगा॥
जो कली देखकर मोहित हो, उसकी जड़ और लता भी है।
ओ प्राण-प्रिया कहने वाले, मेरे वंश का पता भी है॥
नाथ! जरा से विषय में, खो मत बैठो प्राण।
ढूँढ़ो कोई कामिनी, कुलवन्ती छविमान॥
मुनि बोले-इस विषय की, कर न सुन्दरी बात।
जन्म-पूर्व से चरित सब, प्रिये मुझे है ज्ञात॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तू वेणू वंश की बेटी है, इस भांति गिरा उत्साह नहीं।
मैं भी विश्वास दिलाता हूँ, यह पिता तेरा मल्लाह नहीं॥
साथ ही इसे निश्चय करले, मैं कामी, लोल लबार नहीं।
कुछ दैवी-माया ही यह है, चित्त पर रहा अधिकार नहीं॥
इसका कारण इस समय नहीं, उस रोज तुझे खुल जायेगा।
जिस दिन इसके प्रभाव द्वारा, तेरा कलङ्क धुल जायेगा॥
मत्स्योदरी कहने लगी—करती हूँ विश्वास।
किन्तु दयामय सोचकर, कीजै विषय विलास॥
यह आम राह दोपहरी है, कोई मनुष्य आ जायेगा।
लज्जा और अनादर से, मुँह भी न दिखाया जायेगा॥
जिस समय मलेच्छिन के तन से, दुर्गन्धित झोंका आयेगा।
उस समय नाथ अङ्ग से अङ्ग, किस भांति लगाया जायेगा॥
हँसकर फिर कहा पराशर ने, यह कुछ चिंता का काम नहीं।
यह उलझन क्षणमें मेंट न दूं, तो योगि पराशर नाम नहीं॥
देखते—देखते देख प्रिये!, ऐसा कुहरा प्रगटायेगा।
जिसके मारे मैं–तू तो क्या, सूरज भी नजर न आयेगा॥
तेरे शरीर में क्षण भर में, ऐसी सुगन्धि प्रकटायेगी।
जिसके कारण तू जीवन भर, योजनगन्धा कहलायेगी॥

❀ गायन ❀

दे प्रिये इस योगि को रति–दान दे।
मान ले, महमान को सन्मान दे॥
प्रियतमे यह आन अटकी प्राण पर।
प्राण दे बेकार में मत ज्ञान दे॥
कर सके उद्धार जो संसार का।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे प्रिये ! वह देश को सन्तान दे ॥
भोग भी है योग में शामिल विनीत ।
लोक को सन्तान यदि उत्थान दे ॥

मत्स्योदरी महर्षि का, हुआ प्रणय स्वीकार ।
उन से वेद–व्यास का, हुआ सिद्ध अवतार ॥

गौरांग, आत्म-तेजोनिधान, जिस पर रवितेज निछावर है ।
सोलहों कलायें लिये हुए, मानो प्रत्यक्ष कलाधर है ॥
जन्म के साथ ही बोल चाल, चलने फिरने की ताकत भी ।
विज्ञान ज्ञान की प्रतिभा भी, आचार नियम की आदत भी॥
ओ औघट घट के पट वाले, इन घटनाओं को देख जरा ।
रुचिकर-रचना रचने वाले, इन रचनाओं को देख जरा ॥
प्रकटें ऐसी शक्तियों–सहित, भूतल पर ऐसे लाल कहाँ ।
ऐसी विचित्र सन्तानों की, दुनियां में और मिसाल कहाँ ॥
गुण्डा शाही कह सकती है, ऐसी घटनायें सही नहीं ।
मैं कहता हूँ–ओ नादानो ! बुद्धि ही तुम्हारी रही नहीं ॥

किसी जगह से मांगकर, पढ़ जाओ अखवार ।
इन चरचों की आज भी, पाओगे भरमार ॥

कुछ बालक पैदा होते ही, स्पष्ट बोलते आये हैं ।
कुछ पूर्व जन्म की गाथायें, प्रत्यक्ष खोलते आये हैं ।
उनकी समता में व्यास देव, सौ गुनी शक्ति धर आये हैं ।
इसलिए उन्होंने होते ही, इतने जौहर दिखलाये हैं ॥
हां एक प्रश्न पर हमें यहाँ, अपना विचार प्रकटाना है ।
सम्बन्ध सूत्र या शादी का, थोड़ा मसला निवटाना है ॥
कुछ नये सुधारक कहते हैं, इस घटना का प्रमाण देकर ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मत्स्योदरि और पराशर की, क्षण-क्षणपर खुली आनदेकर॥
जी चाहे जिससे ब्याह करो, चाहे कोई भी जात रहे।
इस बारे में मेरे मित्रो! यह बात हमारी ज्ञात रहे॥

लौकिक रीति रवाज सब, है समाज की चाल।
बदला करता है उसे, देश, परिस्थिति काल॥

पहले कोई भी जाति न थी, सब आर्य-मात्र कहलाते थे।
ऋषि कन्याओं से राजा के, सम्बन्ध सूत्र हो जाते थे॥
ऋषि भी क्षत्रिय की बेटी से, अपना सम्बन्ध जोड़ते थे।
जातीय काल में बहुधा नर, मर्य्यादा नहीं तोड़ते थे॥
अब खिचड़ी समय आचुका है, पड़ रही भ्रमों की मार उन्हें।
सब तरह स्वतन्त्र निरंकुश हैं, जो करें वही अधिकार उन्हें॥
मेरे विचार में पुरुषों की, इज्जत रखना अन्याय नहीं।
जो बुरा इसे भी समझें हैं, तो आगे और उपाय नहीं॥
कहते हो हो अगर पराशर की, तो पहले वैसा योग करो।
कुहरा करदो, दुर्गन्ध हरो, फिर जी चाहा संभोग करो॥

नौनिहाल को देखकर, माता हुई निहाल।
किन्तु हाल के हाल में, बदल गया वह हाल॥

चल दिया पिता के साथ लाल, ननिहाल देखने से पहिले।
निर्भीक हुआ सब चालों से, भव-जाल देखने से पहले॥
छिन गई भिखारिन के करसे, सम्पदा हाथ आते-आते।
गिर गई बिचारी बिना वजह, स्वर्ग की ओर जाते-जाते॥

हाथ जोड़ मत्स्योदरी, करने लगी पुकार।
लूट चली दोनों तरह, हे हे परम उदार॥
जिस पुत्र-रत्न की आशा में, अपना सत्-रत्न लुटाया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस पुन्य–मूर्ति की इच्छा से, निष्कारण पाप कमाया है ॥
उस आशा को अभिलाषा को प्रभु, । छीने लिये जारहे हो ।
स्वामी ! इस पतित पापनीको, अब किसकी किये जारहे हो ॥
लाल के साथ तुम रहो यहां, तुम हीरे को दिये चलो ॥
इसको भी साथ लगाते हो ,तो दासी को भी लिये चलो ॥
लोक के कलंक-कष्ट सहकर, इससे ही मन समझाऊंगी ।
यह भी न रहे वह भी न रहे, तो किसकी कौन कहाऊंगी ॥

विहँस पराशर ने कहा–सुमुखी ! धीरज धार ।
ठहर यहां सकता नहीं, मुनियों का शृङ्गार ॥

मेरा-तेरा द्वारा लेकर, यह ऋषियों में अवतार हुआ ।
सुन्दरी आज सौभाग्य मान, तुझ से भारत आधार हुआ ॥
यदि यहां छोड़ कर जाऊंगा, तो बिगड़ेंगे विचार इसके ।
ऋषियों के साथ तपोवन में, सुधरेंगे संस्कार इसके ॥
इसलिये इसे तू जाने दे, जग में न कलङ्क उठायेगी ।
कन्या ही अभी कहायेगी, शान्तनु को ब्याही जायेगी ॥
तेरे एवं इसके द्वारा, अनघटती घटनायें होंगी ।
भारत की भावी रचना की, भारत की लीलायें होगी ॥

यों समझा कर चल दिये, इधर पराशर धीर ।
मत्स्योदर पहुँची उधर, मातु–पिता के तीर ॥

कुछ दिन यों व्यतीत होकर, फिर आयासमय सुहाग लिये ।
अथवा विरहिन विरागनी पर, पहुँचाविरही अनुराग लिये ॥
सुन्दरी वहीं पर बैठी थी, शान्तनु भी कहीं निकल आये ।
आंखों से आंखें मिलते ही, श्री प्रेम देवता मुसकाये ॥
ये उसे देख, वह इन्हें देख, प्रेम की सिसकियाँ भरते हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शान्तनु सीधे से शब्दों में, प्रस्ताव ब्याह का करते हैं ॥
देवी क्या बसती जाती है ? कुछ बस्ती इधर प्रेमियों की ।
हे प्रेम मये ? क्या यहां कहीं, होगी ? कुछ गुजर प्रेमियोंकी॥
दो बार विरह की चोटों ने, जर्जर शरीर कर डाला है ।
प्रेम ! क्या प्रेम पुजारी को, मिल सकता जीवन प्याला है ॥

❀ गायन ❀

दिल मिलाने को अगर एक दिलदार मिले ।
खाक भी तो न मिली गो उसे संसार मिले ॥
मिले कयाम कहां ? प्रेम के दीवाने को–
एक साया न मिला, सो दरो दीवार मिले ।
भूल जाता है जहां भौंर को आना जाना-
वह कली मिल न सकी यों कोई गुलजार मिले ।
छोड़ बाजार निकल आये हैं वीराने को-
यहाँ विनीत कहीं दिल का खरीदार मिले ।
मत्स्योदर कहने लगी–मौन रहो नर–राज !।
इस मलेच्छनी के लिये, दे मत डालो लाज ॥
धन, धर्म शर्म हरने वाली, यह नागिन है दुखकारी है ।
मत चमक-दमकपर मर जाओ, यह विषकी बुझी कटारी है ॥
जो रूप देख कर मोहित हो, वह सदा नहीं ठहरायेगा ।
यह यौवन-धन दो दिन का है, फिर वही काठ रहजायेगा ॥
जिसको जीवनकी निधि कह कर, कुछ दिन कंठसे लगाओगे।
जिसको-कुठार कह कर उसको, कुछ दिन पीछे ठुकराओगे ॥
तुम नर पति हो, मैं भिक्षुक हूँ, तुमक्षत्रिय हो, मैं शूद्र-लली ।
बस रहने दो हो चुका प्रेम, तुम वहां भले, मैं यहां भली ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ गायन ❀

प्रेम कठिन है सोच समझ कर करो किसी से प्यार।
डिग न जाय पग, गिर जाओगे, प्रेम कुटिल तलवार॥
हाड़-चाम पर प्रीति लगाना, स्वारथ का व्यापार।
जब तक छवि है, तब तक सब है, फिर सब कुछ बेकार॥
प्रेम करो तो कर दिखलाओ, जीत रहे या हार।
प्रेम हो तो प्रेम—पात्र पर, दो सर बस बलिहार॥
यह गँठ-बन्धन किसी शर्त पर, रहता नहीं उधार।
जन विनीत प्रेमी की खातिर, खुला सदा बाजार॥
शान्तनु ने उत्तर दिया, कोट—कोट उपकार।
पहुँची तो इस कान तक, मेरी प्रेम-पुकार॥
मैं स्वयं जानता हूँ सुखसे ! संकीर्ण प्रेम की राहें हैं।
धरने को प्राण धरोधर हैं, भरने को केवल आहें हैं॥
जिसमें स्वारथ की गन्ध न हो, इच्छा आशा का नाम नहो॥
वह सच्चा प्रेम कहाता है, जिसमें कामना सकाम न हो॥
लेकिन ऐसा निष्काम-प्रेम, विश्व में कदाचित हो तो हो॥
अन्यथा आज-कल यहां प्रेम, यौवन या सम्पति हो तो हो॥
फिर भी तन,मन, धन जीवन में,जो वचन-मात्र पर निर्भर है।
वह प्रेम नाम के बन्धन पर, इस शान्तनु का नेछावर है॥
मत्स्योदर ने तब कहा, मुझे नहीं इनकार।
लेकिन मेरे ब्याह का,मुझे नहीं अधिकार॥
इस तट का बूढ़ा केवट है, प्रभु ! वह मेरा प्रति पालक है।
मेरा सम्बन्ध-सूत्र सारा, केवल उसकी आज्ञा तक है॥
इसलिये पिता से मिलने पर, जैसा विचार ठहरायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजन्! वैसा ही बिना कहे, मेरा निश्चय हो जायेगा ॥
बुलवाया नर—पाल ने, केवट को तत्काल।
एवं उससे खोल कर, कहा हृदय का हाल ॥
बूढ़े बाबा! मैं जानता हूँ, इस डाली का तू माली है।
इस दैवी मणि-की देवों ने, सौंपी तुझको रखवाली है ॥
फिर भी यह बिलकुल निश्चय है, यह यहां नहीं ठहरायेगी।
कुछ दिन के बाद किसी नर को, आप ही विवाही जायेगी ॥
इसके निमित्त योग्य से योग्य, वर की तू खोज करायेगा।
फिर भी मेरा यकीन यह है, उत्तम घर ढूंढ़ न पायेगा ॥
कारण? तू केवल केवट है, अपनी समता तक जायेगा।
जो पात्र देवि के लायक है, उस तक न पहुँचने पायेगा ॥

यदिमिल जाये आपही, उसका उचित विधान।
तो क्या इस सम्बन्ध को, समझेगा कल्याण ॥
केवट बोला—क्यों नहीं, समझूंगा? कल्याण।
यह तो कहना चाहिये, जीवन का अहसान ॥

क्या लाभ? सजादें खटमल को, सुन्दर इत्र से फुलेलों से।
क्या लाभ? फेंक दें हीरों को, चिड़ियों की ओर गुलेलों से ॥
क्यालाभ सुमन कीसुरुचि, सरस, कपि को माला पहिनानेसे।
क्या लाभ किसी वर—कन्या का, अनमेलव्याह करवाने से ॥
कन्या जीवन भर रोती है, दुनियां भर थूक उड़ाती है।
ऐसी दुखयारी बेटी की, फिर आह न खाली जाती है ॥
दे सच्चा प्रेम प्रणय— परिचय, चाहै ऊपर कौपीन न दे।
दुनियां में एक कहावत है, घर हीन मगर वर हीन न दे ॥
राजन्! ऐसी ही चिन्ता में, यह समय बीतता जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या करूं मगर इसके लायक, कोई भी नजर न आता है ॥
शान्तनु बोले तो कहो, अपना आत्म विचार ।
इस देवी का क्या मुझे, देते हो अधिकार ॥
जीवन-सहचरी बना कर के जीवन की ज्योति बनाऊंगा ।
जीवन की साक्षी देकर के, जीवन भर इसे निभाऊंगा ॥
बश भर जो कुछ कर पाऊंगा, इसके निमित्त कर डालूंगा ।
पट रानी इसे बनाऊंगा आजन्म प्रेम- प्रण पालूंगा ॥
केवट बोला धन्य है, यह उदारता नाथ !
किन्तु प्रतिज्ञा कीजिये, कुछ विचार के साथ ॥
प्रभु आज प्रेम के बन्धन में, पट-रानी उसे बनालेंगे ।
पर आगे चल कर भीष्म कुँवर, धक्कों के साथ निकालेंगे ॥
माना कि किसी विधि से इसकी, जिन्दगी टर ही जायेगी ।
पर आगे इस अनाथनी की, सन्तान कहां को जायेगी ॥
सर-ताज नाथ हैं भारत के, तो सन्तति भी सरताज रहे ।
यह पट-रानी बननी है-तो, इसका बेटा युवराज रहे ॥
जन हाजिर है, मैं हाजिर हूँ, सौभाग्य दीन को अपनालें ।
पर पीछे कुछ उलझन न पड़े, यह जटिल समस्या सुलझालें ॥
केवट की यह शर्त सुन, साध गये नृप मौन ।
इस प्रकार अन्याय पर, कमर कसेगा ? कौन ।
ना कुछ विषयों की भट्टी में, झोंक दूं न्याय की क्यारी को ।
शान्तनु ! तेरा यह कह कब है, अधिकार न दे अधिकारीको ॥
मैं राग-बाग में फँसा करूं, सच्चा सुपुत्र वैरागी हो ।
मेरी इस तुच्छ कामना पर, मेरा अनुरागी त्यागी हो ॥
मैं एक कली के पीछे क्या, वह फुलवाड़ी वीरान करूं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धिक्कार कामनी के कारण, सुकुमारे का बलिदान करूं ॥
अपने स्वारथ हित के पीछे, जो भूल गया पर का हित है।
ऐसे पिशाच, पामर नर पर, थू है तुहमत है लानत है ॥

❀ गायन ❀

गऊ बेंच कसाइन कोटपती भए, बेटिन बेंच के भोग कियौ।
जग को पर-हेतु न हेर सको, हर कैचर स्वारथ हेतु जियो ॥
पितु-मातदुखी, परिवारदुखी, जिहिसो सुख लाभनलोकलियौ
भवसागर में उस पामर को, कर नाम वृथा करतार दियौ ॥

ज्यों-त्यों उत्तर टाल कर, लौट पड़े नर--पाल।
पर न बुझाये बुझ सकी--प्रेम-विरह की ज्वाल ॥

प्रेम की चोट उनमें से है, प्राण चूस कर भरती है।
फाहा न जहां लग सकता है, जो मरहम काम न करती है ॥
प्रेमी से दूरी बढ़ते ही, तड़पन को और बढ़ाती है।
दर्शन की आश टूटते ही, मौत का सबब बन जाती है ॥
दिलका कांटा बन जाती है, कामिनियोंकी तिरछी चितवन।
दो बातें फकत खटकती हैं, बिखरे काकुल निखरा जोबन ॥
यह रोग न देखो नाड़ी से, ठण्डक और न दाहों से।
इसका तो पता चल सकता है, बिरही की केवल आहों से ॥

रूखा मुख, नीचे नयन, रूखे लब और आह।
समझ रखो, यह होगया, बस प्रेम पर तवाह ॥

प्रेमी की ना कुछ मांगों को, प्रेमी सौभाग्य मानता है।
एवं उनको पूरा करना, अपना पुरुषार्थ जानता है ॥
कोई पदार्थ लेने में यदि, प्राणों की भी नौबत आये।
तो इसमें कुछ सन्देह नहीं, उस में प्रेमी न हिचक खाये ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन जब धर्म संकटों में, इस भांति विवश हो जाता है।
तब लाज और संकोचों से, फिर मुँह भी नहीं दिखाता है॥
उसकी किस्मत में फिर खाली, रात-दिन याद में जलना है।
गलना है उस लाचारी पर, पल-पल करवटें बदलना है॥

मार रहे थे विरह में, नृप मन ही में खेद।
किन्तु भीष्म पर खुल गया, उनका सारा भेद॥
तत्क्षण केवट के निकट, पहुँचे भीष्म कुमार।
बोले—नानाजी! वृथा, इतना किया विचार॥

मुझको भी तभी बुला लेते, सुन लेते मेरी राजी को।
इतने दिन देर लगाने से, होता? क्यों कष्ट पिताजी को॥
जो हुआ खैर! अब भी तुमको, सेवक विश्वास दिलाता है।
तत्वों की साक्षी देता है, ईश्वर को पंच बनाता है॥
मैं मत्स्योदर माता जी की, आजीवन आज्ञा पालूंगा।
भूल कर राज-सिंहासन पर, लालच की नजर न डालूंगा॥
मत्स्योदर की सन्तति को, सिंहासन पर बिठलाऊंगा।
मेरी सन्तति का डर हो तो, मैं शादी नहीं कराऊंगा॥

❀ गायन ❀

रोष करें सर्वेश, सेस फन सहस डरावें।
फटे व्योम, रवि, चन्द्र, मेघ बरु बज्र गिरावें॥
धरे काम शत वेष स-रति मिल काम बढ़ावें।
उमा, रमा, अप्सरा, सची हू छोह दिखावें॥
यदि गहे तिमिर रवि-तेज, पै मोहिं मोह गहना नहीं।
यदि ब्रह्मचर्य हो भङ्ग, तो शान्तनु सुत कहना नहीं॥

वहाँ भीष्म के वचन पर, छाया जय का नाद।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ लेखनी चल पड़ी, लेकर और विवाद ॥
भारत क्या तेरे बालक हाँ, सचमुच ऐसे प्रण धारी थे ! ।
बूढ़े बाबा ! बतलाओ तो वे, क्यों ऐसे आज्ञाकारी थे ! ॥
पुरु ने साहस ही कर डाला, आमरण बुढ़ापा धरने का ।
भीष्म महा-प्रण रोप लिया, आजन्म न शादी करने का ॥
यह-घोर-प्रतिज्ञायें उनसे, कह तो कैसे निभ जाती थीं ।
क्या उन्हें हमारी ही नाईं, इच्छायें नहीं सताती थीं ? ॥
क्यों अपने मात पिता के हम, यों भक्त नहीं रह पाते हैं ।
दस बार प्रतिज्ञा करते हैं, सौ बार तोड़ दिखलाते हैं ॥

बूढ़े भारत ने कहा, सुनो लाड़ले लाल ।
जकड़ गई है जाल में, हमें विदेशी चाल ॥

जबतक ऋषियोंकी शिक्षा थी, तबतक श्रद्धा, आत्मिकबलथा ।
धनथा साथ है धर्मभी था, जब तककि आचरण उज्वल था ॥
अब धन ले लिये पढ़ाई ने, बल चूसा व्यर्थ रटाई ने ।
कर किया हरण आचरण यहाँ, फैशन की नई सफाई ने ॥
बारह बरस की उमर ही से, बीबी की जिन्हें सुझाती है ।
उनको फिर मातु-पिता–सेवा, जीवन में कहां सुहाती है ॥
जब मुख्य प्रतिज्ञा ही हमको, कल्पना सिखाई जाती है ।
तब अपनी और प्रतिज्ञा में, सत्यता कहाँ से आती है ॥
फिर भी मैं इतना कहता हूँ, प्रण–भङ्ग बराबर पाप नहीं ।
बात है अगर तो सब कुछ है, बात नहीं तो बाप नहीं ॥

पितु-भक्ति ही श्रेष्ठ है, याद रहे यह सीख ।
पड़े न दर-दर मांगनी, तो रो-रो कर भीख ॥
मत्स्योदर से भूप का, हुआ ब्याह-सम्बन्ध ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यथा पूर्व-चलने लगे, सारे राज प्रबन्ध।
मत्स्योदर योजन-गन्धा से, अब सत्यवती कहलाती है।
चित्राङ्गद यथा विचित्रवीर्य्य, दो पुत्र रत्न उपजाती है॥
शान्तनु कुछ दिनमें देह त्याग, सुरपुर में शान्ती पाने लगे।
भीष्म की मदद से शासन का, चित्राङ्गद काम चलाने लगे॥
था अवसर उत्साह का मगर, उत्साह किसी का हुआ न था।
ब्याहका समय, आ पहुँचा था, पर ब्याह किसीका हुआ न था॥
काशी-नरेश के उन्हीं दिनों, कन्यायें तीन सुहाती थीं।
अम्बा, अम्बिका तथा क्रम से, वे अम्बालिका कहाती थीं॥
दैवात् उन्हीं कन्याओं का, काशी में तभी स्वयंवर था।
लेकीन उनसे विवाह करना, बल और तेज पर निर्भर था॥

सत्यवती के पुत्र थे, यद्यपि गुण-बल धाम।
फिर कर सकते न थे, इतना ऊँचा काम॥
सत्यवती ने इसलिये, कहा भीष्म से हाल।
वीर शिरोमणि भीष्मभट, शक्तिसिंधु प्रणपाल॥

तेरे बल पर ही सधा हुआ, शान्तनु-कुलका यह शासन है।
एवं तेरे ही हाथों में, चित्राङ्गद का सिंहासन है॥
तेरे दम से वे निर्भय हैं, एवं हर तरह सुखारे हैं।
पर इतनी बात खटकती है, वे दोनों भाई क्वारे हैं॥
काशी-नरेश की सुनती हूँ, लाला! इन दिनों स्वयंवर है।
लेकिन उसमें जय पा जाना, इनकी ताकत से बाहर है॥
इसलिये अगर तू ही चाहे, तो आबादी हो सकती है।
तेरे ही बल-विक्रम द्वारा, उनकी शादी हो सकती है॥

भीष्म वीर चलते हुए, रथ को शीघ्र संभाल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहाँ जमा होने लगे, धीर–वीर–नर पाल।
छोटीसी इन्द्र-सभा वह थी, अथवा महेन्द्र महि मण्डल था।
थे काम–रूप में कामी जन, या वीरों का दल बादल था॥
जो थे, अच्छे थे, मद में थे, मस्त थे कल्पना किये हुए।
घूमते वहीं थे एक नई, आशा की दुनियां लिये हुए॥
अपनी-अपनी नव-फवन लिये, अपना-अपना सिंहासन था।
अपने आसन पर एक तरफ, वह भीष्म वीर वीरासन था।
था तार लगा महमानों का, स्वागत सन्मान हो रहा था।
मङ्गल मुखियों का एक ओर, मङ्गल मय गान हो रहा था॥

बाज रहे थे बाजने, साज रहा था साज।
गाज रहे थे वीर गण, राज रहे थे राज॥
उठी एक ध्वनि तब तलक, रङ्ग महल की ओर।
सजग होगये साथ ही, नृप वर, नृपति किशोर॥

देखा कुछ रमणी-मण्डल में, ललनायें चलती आती हैं।
अथवा कुछ दीप-शिखाओं में, बिजलियां चमकती आती हैं॥
तारों की ओर चांदनी में, या तीन उषायें आती हैं।
शशिकी शोभा में मिलकर, या त्रिविधि कलायें आती हैं॥

उठ न सके थे उस तरफ, राजाओं के नैन।
सुन न सके थे भूप जन, वन्दी गण के वैन॥

तब तक पद तालोंसे मिलकर, झप-ताल झपकियां देनेलगा।
या मोहनियों का मधुर नशा, मोह मय थपकियां देने लगा॥
आशा उमङ्ग बढ़ते बढ़ते, देवियां यहाँ को बढ़ने लगीं।
उस साजदार राजाओं पर, नूरानी पानी मढ़ने लगीं॥
पद पड़ न फर्श पर पाये थे, तब तक हल चलसी पड़ने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बरात न चलने पाई थी, तब तक फुलवाड़ उजड़ने लगी ॥
किरणें न छिटकने पाई थी, कुश केतु कहीं से छूट पड़ा ।
मृगियाँ न कुञ्जसे निकली थीं भट भीष्म केसरी टूट पड़ा ॥
दो घड़ी मची हू-हल्लड़ सी, पल्लड़ न किसी से सँभल सका ।
वह पाँछ पुछल्लड़ पीछे का, अल्हड़ सा आगे निकल पड़ा ॥

काशी-पति चीखा किये, दौड़ा वीर समाज ।
धाओ पकड़ो भी मचा, पर न हुआ कुछ काज ॥
तब नरेश ने जोश में, की लम्बी तकरीर ।
वीरो ? वह वीरता की, कहां गई ? शमशीर ॥

जो मूंछ बढ़ाकर आये थे, वे पूंछ छुपा कर बैठे हैं ।
जो शान दिखाने आये थे, वे कान दबाये बैठे हैं ॥
अब भी हुरमत कुछ बाकी हो, तो मौका है दिखलाने का ।
मरने का और मारने का, कौमी ताकत जतलाने का ॥
मालियो ? आंखके आगे ही, लुटचुकी मालकी क्यारी है ।
यह काशी-पतिका काज नहीं, जाती अब लाज तुम्हारी है॥

❀ गायन ❀

लाया न असर अपना, मौके पै कहीं पानी ।
तो खाक में मिल जाये, वह ऐसी नौजवानी ॥
रह जाय पस्त होकर, दुश्मन के मुकाबिल जो ।
मुर्दों से बुरी है वह, नामर्द की मर्दानी ॥
मरने से कहीं बदतर जीना उसी का मानो ।
समझा है बुजदिला जो मरने में परेशानी ॥
गोविन्द वृथा ही है जीने के लिये रोना ।
होना है अमर गर तो कर कौम पर कुरबानी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पानी चढ़ते ही बढ़े, धीर–वीर सरदार।
तलवारों के वार से, फैल चली धर-मार॥

बलवीर भीष्म ने जब देखा, सिर पर सेनायें आने लगीं।
बालायें इधर भागने की, मौके से घात लगाने लगीं॥
तब एक बन्ध ही में कसकर, रथ के पिछवाड़े डाल दिया।
तेग म्यान से निकाल लिया, धन्वा हाथ में सँभाल लिया॥
घन पट समान उस भटवर पर, औघट हथियार दिखाने लगे।
मानो चमगीदड़ हुल्लड़कर, रवि–मण्डल पर दरशाने लगे॥
हर भटवर की बौछारों ने, वह छार–छार कर डाले हैं।
जो बलवानों के भाले थे, वे बने जान के लाले हैं॥
तल उखड़ गये तलवारों के, पिछुओं के उड़े पुछाले हैं।
टूटे भुज बन्द भुजाली के, खाली रह गये रिसाले हैं॥
शमशीर शेर की बाढ़ों में, मुँह मोड़ लिया शमशीरों ने।
पेड़ों की तरह उखाड़ दिया, उसको तूफानी तीरों ने॥

प्राण बचा कर भूप गण, भाग पड़े मुँह फेर।
बालाओं को साथ ले, लौट चला वह शेर॥

अम्बा, अम्बिका देवी ने, उन दो से नाता जोड़ लिया।
पर अम्बालिका सुदेवी को, यों ही महलों में छोड़ दिया॥
वह बेचारी यह समझी थी, मुझको भीष्म ही विवाहेंगे!
तीनों बहिनों को लाये हैं, तो तीनों बन्धु निभायेंगे॥
बहिनोंका विभव विलास देख, कुछ दिनतक हृदय मसोसाकी।
कुछ दिन आशा में काट दिये, समय भाग्य को कोसाकी॥
मयके में माँ के जीते जी, नारी सुख से रह पाती है।
स्वामी की प्रेम किलोलों में, ससुराल सुखद बन जाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों में दोनों अगर नहीं, तो त्रिभुवन-धन निर्धन ही है।
सौभाग्य-सजीवन ही न मिले, तब तो जीवन जीवन ही है॥
कौड़ी को कोई तरस मरे, भण्डार विश्व का भरा रहे।
धीरज कैसा ? जब भूख लगे, और थाल सामने धरा रहे॥

घड़ी, घड़ी, जुड़ती गई, पर न जुड़ सका जोड़।
आखिर कहना ही पड़ा, अपनी लज्जा छोड़॥

स्वामी ! स्वामी हो चुका समय, लाये इस जगह टहलुनीको।
आखिर कब तक सहना होगा, यों आशा-विरह टहलुनीको॥
बहनों का वक्त बीतता है, फुलझड़ियों पर चलते-चलते।
दासी का जीवन जाता है, दिन रात हाथ मलते-मलते॥
यौवन-वन खिलता जाता है, यौवन-पति मगर न हिलता है।
दासी दरशन को तरस रही, पर प्रभुको समय न मिलता है॥
अभिलाषी प्यासी दासी की, कब तलक बुझेगी प्यास नहीं।
हे नाथ ! राज के कामों में, कब तक होगा ? अवकाश नहीं॥

कहा भीष्म ने आह भर, सुन सुलोचने ! बात।
तुझसे भी ज्यादा मुझे, है चिन्ता दिन-रात॥

सर्वत्र तलाश करा डाली, यद्यपि मैं घर से हिला नहीं।
क्या करूं ? मगर तेरे लायक, कोई सुयोग वर मिला नहीं॥
अब कुछ ही दिन को धीरजधर, यह कारज शीघ्र सँभालूंगा।
पीछे घर देखूं भालूंगा, पहले यह ऋण निबटा दूंगा॥

चकित हुई अम्बालिका, सुनते ही यह बात।
बदली घोर प्रभात में, सुख सुहाग की रात॥

स्वामी ! स्वामी ! क्या कहते हैं, क्या मेरा ब्याह रचायेंगे।
किससे ? क्या किसी दूसरे से ? फिर आप कहां को जायेंगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर करके हमें स्वयंवर से, वर-रूप आप बन आये हैं।
हम भोली सी कपलाओं को, क्या कहीं बेचने लाये हैं॥
क्या अपनी दोनों बहिनों से, पापिष्ठा और अधम मैं हूँ।
अथवा छवि रूप शीलता में, हे देव! किसी से कम मैं हूँ॥
जब तीन भाइयों की खातिर, तीनों बहनों को रक्खा है।
तब मुझे त्याग कर देने का, हे नाथ! मुख्य कारण क्या है॥

कहा भीष्म ने हो न यों, अम्बालिके! अधीर।
बांध चुका हूँ आप ही, पैरों में जंजीर॥

हे रमा रूप! जीवन चाहे, तो देने को तैयार हूँ मैं।
यौवने! मगर यौवन-निधि को, अपनाने से लाचार हूँ मैं॥
श्रीमान् पिताजी के कारण, पहले कर चुका प्रतिज्ञा हूँ।
आजन्म इसलिये हे देवी, मैं ब्याह नहीं कर सकता हूँ॥
इसलिये प्रतिज्ञा खण्डन पर, हे देवी मत लाचार करो।
मेरे सिवाय दूसरी जगह, सम्बन्ध-सूत्र स्वीकार करो॥
दो दण्ड मुझे हर लाने का, तो सिर तक से इनकार नहीं।
मृत्यु भी आज स्वीकार करूं, शादी करना स्वीकार नहीं॥

कहा देवि ने चीख कर, एक आह के साथ।
अगर निभाना ही न था, तो क्यों पकड़ा हाथ॥

मैं हाथ तुम्हारा पकड़ चुकी, अब किसके द्वारा जीऊंगी।
भीष्म को हृदय से अपना कर, किसकी पत्नी कहलाऊंगी॥
मँझधारा में डूबती हुई, किस्ती को कौन सँभालेगा।
अपनाने की तो बात अलग, आंख भी न सीधी डालेगा॥
वे पिता मातु भी अब मुझको, क्या उसी भांति से पालेंगे।
या कुल कलङ्किनी बतलाकर, कुलटा की भांति निकालेंगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा भी ऐसा निश्चय है, केवल पति तुम्हें बनाऊंगी।
या किसी जगह बनमें जाकर, तुम पर बलिदान चढ़ाऊंगी॥
भीष्म प्रतिज्ञी ने कहा, यह तुझको अधिकार।
किन्तु प्रतिज्ञा भङ्ग से, है भीष्म लाचार॥

❀ गायन ❀

टूट जाँय नाते नेह, गेह देह टूट जाय।
टूट जाय मेरु-मूल वृत्ति त्रिपुरारी की॥
टूट जाँय लोक-जाल चाल भी सनातन की,
टूट जाँय तारे वृन्द, गन्ध पुष्प झारी की॥
विधि का विधान टूटे, वैदिक विज्ञान टूटे,
टूटे ब्रह्माण्ड सहित आन अवतारी की॥
टूट जाय प्रान सूत्र वंश आन टूट जाय,
टूटे ना प्रतिज्ञा पर भीष्म ब्रह्मचारी की॥

तब अबला ने क्रोध में, रोकर कहा पुकार।
रे रे नामर्द तुझे, लाख—लाख धिक्कार॥
निष्कारण मेरे जीवन की, कर डाली कठिन समस्या है।
हो चुका खैर अब जाने दे, इन बातों में क्या रक्खा है॥
बलके अभिमानी यह न समझ, अबला हूँ चुप रहजाऊंगी।
तेरी काली करतूतों की, दर दर पर सदा लगाऊंगी॥
जीवन से क्या मरने पर भी, धर्म के यहाँ चिल्लाऊंगी।
जैसा होगा जब भी होगा, इसका फल तुझे चखाऊंगी॥
यों कह कर अम्बालिका, करती हुई पुकार।
निकल चली उस महल से, रहे भीष्म मनमार॥
आशा की टूटी गलियों से, श्रद्धा का भार सँभाल चली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वंश की विशद-मर्यादा पर, करुणा का घूंघट डाल चली ॥
कुछ सुना किसी ने पर न सुना, उड़गईं हवाओं में आहें।
रह गई याद कुछ भीषम को, रह गई सफाओं में आहें ॥
बलवानों का दलबल जोड़ूं, तो इस बलधर पर निष्फल है।
बलवानों को निर्बल करदें, वह एक ब्राह्मणों का बल है ॥

यही सोच अबला चली, तपोभूमि की ओर।
परशुराम की कुटी पर, लगी मचाने शोर ॥
है क्या कोई कुटी में, योगी–साधु–सन्त।
दुखिया के दुखका करे, दयावन्त जो अन्त ॥

रजसे राजसी भस्म करदे, है कौन ? तपस्वी का लाला।
बस्ती भी सूना कर डाले, है कौन ? यहाँ धूनी वाला ॥
दे महल जला जल-अंजलि में, वह मेरी हाहाकार सुने।
करुणामय जिसकी आत्मा हो, वह मेरी करुण-पुकार सुने ॥

निकले तत्क्षण कुटी से, भृगुपति तेज निधान।
ओ दुखयारी ! शान्त हो, है ऋषिकी सन्तान ॥
एक ही ब्राह्मण के आगे, अन्याय न होने पायेगा।
एक तपस्वी के मारे, भू–तल हल चल में आयेगा ॥
देवी ! तू अपना हाल सुना, कौन है ? कहाँ से आई है ?।
किसने ! क्यों तुझे सताया है, क्यों यहाँ पुकार लगाई है ॥

शीश झुकाकर रह गई, विवश बिचारी बाल।
रो रो कर कहने लगी, अपना सारा हाल ॥
काशी नरेश की कन्या हूँ, उजड़े दिनकी फुलवाड़ी हूँ,।
हे नाथ ! कपट की आड़ों से, आपके शिष्य की मारी हूँ ॥
हरलाये भीष्म स्वयंवर से, फिर घरसे मुझे निकाल दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथ्वी से तनिक उठा करके, इस अन्ध कुएं में डाल दिये ॥
उनका प्रण है-जीवन भर तक, वे शादी नहीं करायेंगे।
अपना प्रण है-उनके सिवाय, और से न ब्याह रचायेंगे ॥
उनकी कठिन प्रतिज्ञा है, मेरी भी कठिन प्रतिज्ञा है।
स्वामी! बोलो, मुनिवर! बोलो, इस दासीको क्या आज्ञा है ॥

परशुराम कहने लगे, है बेशक उलझान।
धर्म समस्या आ पड़ी, बात नहीं आसान ॥

दोनों ही प्राण के सच्चे हैं, किसकी आशा को ठुकराऊं।
किसको सद्-पथ पर बतलाऊं, या किसको दोषी ठहराऊं ॥
न्याय का विषय तो रहा नहीं, हाँ ऐसे ही बुलवाता हूँ।
यदि बातों ही में समझ जाय, तो ऊँच नीच समझाता हूँ ॥

भीष्म वीर को बुलाकर, यों बोले भृगुनाथ।
हाथ पकड़ कर क्यों किया, बेटे इसे अनाथ ॥

जब लाये इसे स्वयंवर से, तो वेद रीत से तुम वर हो।
फिर इससे शादी करने को, बतलाओ तो क्यों हठपर हो॥
इस महा दोष से निर्दोषी, कह ठहरायेगा कौन इसे।
जब तू ही इसको त्याग रहा, फिर अपनायेगा कौन इसे ॥
आशाकी ललित क्यारियों को, निष्कारण कुँवरउजाड़ न दे।
अपना कर एक अनाथा का, जीवन व्यर्थमें बिगाड़ न दे ॥

कहा भीष्म ने मांगिये, है माथा तैयार।
पर विवाह के वास्ते, करें न प्रभु लाचार ॥

मैं तीनों को हर लाया था, पर भार किसी का लिया नहीं।
फिर इसने भी उनकी नाईं, क्यों ब्यार गैर से किया नहीं ॥
अब भी नरेन्द्र देवेन्द्र कहै, अथवा लोकेन्द्र बुलाऊं मैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल, थल, नभ में जिससे चाहे, उससे शादी करवादूं मैं ॥
उतना ही बोझ डालियेगा, जितना अनुगामी उठा सके ।
हे गुरुवर! ऐसी आज्ञा हो, जिसको कि शिष्य भी निभासके ॥

परशुराम कहने लगे, अरे नीच नादान ! ।
हाथ पकड़ने के समय, कहां गया था ज्ञान ॥
जो हो, अब चलना नहीं, इन बातों से काम ।
शादी कर, या सामने, कर मुझ से संग्राम ॥
कहा भीष्म ने भाग्य से, मिलता है यों योग ।
गुरु के ही हाथों मिटे, मन—मानस का रोग ॥

सौभाग्य नाथ के द्वारा ही, चेलों की सफल सु-दीक्षा हो ।
गुरु के हाथों की शिक्षा हो, गुरु के ही हाथ परीक्षा हो ॥
जीवन का वन न उजाड़ूंगा, इस योवन क्यारी के पीछे ।
गुरु-जन की आन न तोड़ूँगा, गुरुवर इस नारी के पीछे ॥

बात-बात में छिड़ गया, दोनों का संग्राम ।
दो—दो वारों में हुआ, जौहर हुनर तमाम ॥

बाणों पर बाण चलाये गये, वाणों के काट दिखाये गये ।
भाले बिछुड़े कुछ देर तलक, उलझाये गये सुलझाये गये ॥
निष्कपट भावका रण वह था, समझो न फकत् अय्यारीथी ।
हथियारी क्षण में खत्महुई, तो मल्ल युद्ध की बारी थी ॥

कवित्त ।

चपट चपेट चोप चोप ही चलात चोट,
चाप चाप चाप थल चौंक दोउ ओर को ।
लपकत लपेटे दै सटकत सराने से
झपटत झटकाने से डारैं झकोर को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्ण की लतापै अहि बेल खेल-खेल मानो,
चाँपत द्वै भांतिन सौं छुद्र छल चोर को।
भवन विनीत अस होत है तीन देख,
केहरी सिखात दांव केहरी किशोर को।
भृगु-पति बोले अन्त में, उफ! होती है भूल।
बो कर अपने हाथ से, अब क्या काटूं? मूल॥

मूरख! जो तुझे हराता हूँ, तो मुझ को बट्टा आयेगा।
सारा जग मेरी विद्या की, कल को खिल्लियां उड़ायेगा॥
जो मैं ही हार मानता हूँ, तो और कलंक मढ़ाना है।
चेलों से बाजी खाने की, सच्ची उपमा रह जाना है॥
इसलिये छोड़ कर तुझे मूढ़! अपना ही दिल समझाऊंगा।
क्षत्रिय-कुमार को धनुर्वेद, अब कभी नहीं सिखलाऊंगा॥
ओ-रण विद्या के अभिमानी! रण में ही धोखा खायेगा।
जा, किसी समय शस्त्रास्त्र बिना, छल बल से मारा जायेगा॥
काले को दूध पिलाया है, हाथ में रहा हथियार नहीं।
बेटी जाओ दूसरी जगह, मेरा कोई अधिकार नहीं॥

यह सुनकर अम्बालिका, बैठी चिता बनाय।
क्रोध-शोक के वेग में, यों बोली बिलपाय॥

अन्यायी! अधिक निरंकुशता, सर्वदा नहीं ठहरायेगी।
मेरे ही कारण किसी समय, युद्ध में मृत्यु हो जायेगी॥
ओ पतित-पावनी, मां ज्वाले! जल उठ, किस्मतको चेतादे।
अपनी फरियाद सुनाने को, उस न्याय सभा में पहुँचा दे॥

दोहा-भस्म हुई अम्बालिका, भीष्म चले दुख मान।
कहा विनीत आनन्दसे, जयति कृष्ण भगवान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धृतराष्ट्र पाण्डु बिदुर की उत्पत्ति

यों आनन्द-विलास में, बीत गया कुछ काल ।
विदुर—राज्य पर चढ़ गये, वीर जाह्नवी लाल ॥

हर लाये राज कुमारी को, नृप-मण्डल का मद खण्डनकर ।
वह भी जीवन काटने लगी, चित्रांगद की चेरी बनकर ॥
दैवात् एक दिन चित्रांगद, वन में शिकार के लिये गया ।
गन्धर्व राज भी उसी जगह, उस दिन बिहार के लिये गया ॥
दोनों की बात बात ही में, इस दरजे तक तकरार हुई ।
छिड़ गया युद्ध राजा समेत, सारी सेना संहार हुई ॥
भीष्म ने बिना पूछे छोड़ा, एक भी दैत्य—देवता नहीं ।
पर त्रिभुवन में चित्रांगद का, कोई भी पाया पता नहीं ॥
भीष्म का सारा बल बूता, केवल उन छान बीन तक था ।
शासन का नाम चलाना भी, उस ओर उन्हें आवश्यक था ॥

चित्रवीर्य को इसलिये, दिया राज का भार ।
किन्तु राज-परिवार से, रूठा था करतार ॥

जाले का एक तारा टूटा, पर टूट सका संसार नहीं ।
उठ गया लोक का एकजीव, पर रुका लोक-व्यवहार नहीं ॥
रवि-शीश वैसे ही उगा किये, वायु भी वही लहराया की ।
मिट गया प्रकृति का एक खेल, फिर भी प्रकृति मुसकायाकी ॥
झण्डा कुछ दिक तक झुका रहा, फिर खुशियोंमें जरतारबंधा।
कुछ-शोक प्रदर्शन के पीछे, फिर राग रङ्ग का तार बंधा ॥
महिलाओं ने शिर पीट लिये, फिर मौन हुई दुख भूल चलीं।
सूरज की किरणें ढलते ही, मानो कमोदनी फूल चलीं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मांग ली बिदाई कुछ दिन में, सबसे वियोग की विपता ने।
पर साथ न छोड़ा जीवन भर, किसने? माता की ममता ने॥
बदल गये कुछ रोज में, राग और वैराग।
किन्तु न रोके रुकसकी, सत्यवती की आग॥
वह दुखियारी दुखकी मारी, बेटा! बेटा! चिल्लाया की।
वह पुत्र-बिरहणी जी कर भी, मरने का मजा उठाया की॥
खाने को हृदय कामना थी, या गम के आंसू पीती थी।
रोती थी और न हँसती थी, मरती थी और न जीती थी॥
आजाय बुढ़ापा तब पूछो, लोगों से मूल्य जवानी का।
मायें यह हाल समझती हैं, उस बेटे की दीवानी का॥

❀ गायन ❀

जगत में किसका-कौन प्रभाव?।
बड़े-बड़े आते-जाते हैं, राजा क्या उमराव।
किन्तु कभी बदला न जरा भी, अटल प्रकृतिका भाव॥
लाखों राज्य बने या बिगड़े, बनकर मिटे जमाव।
मगर न उनसे हुआ प्रकृति में, कभी बिगाड़ बनाव॥
होता है सम्बन्धी-जन का कुछ दिन उधर झुकाव।
किन्तु डाल देती है माया, उसमें भूल भुलाव॥
वह केवल माता का मन है, लाख जिसे समझाव।
किन्तु विनीत नहीं टलता है, निज सन्ततिका चाव॥

दोहा-विरह वेदना का न जब, रुका न मां का तार।
मातृ-भक्त भट भीष्म तब, करने लगे विचार॥

यह आठ पहर ठण्डी आहें, यदि यों ही चलती जायेंगी।
तो आज नहीं पर कुछ दिन में, निश्चय प्रभाव प्रकटायेंगी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेदना मयी अश्रु की झड़ी, बढ़ गई बाण बौछारों से।
आधी रातों की चीख भला, क्या कम होगी? तलवारों से॥
देखो दुखिया मां की आंखें, गममें वे क्यों कर पकती हैं॥
निशदिन बिसूरती आंखों को, यह आंखें देख न सकती हैं॥
बेटे बहुओं के कहने से, दो-चार निबाले खा आना।
त्यौहारों पर लंघन करना, एकान्त बैठ कर बिलपाना॥

काँटों पर तुलने लगी, फूलों वाली देह।
कुछ दिन में हो जायगी, जीवन का सन्देह॥

हो दुखी वंश में एक सुखी, तो समझे वह विश्राम नहीं।
माता रोये बेटा देखे, यह कर्म वीर का काम नहीं॥
ज्ञान ही पार कर सकता है, ऐसी मानसिक व्यथाओं से।
या जीव शान्ति पासकता है, शास्त्रों की कर्म कथाओं से॥
यह सोच भीष्म प्रति सन्ध्या को, माता के महलों जाने लगे।
विज्ञान, ज्ञान से भरा हुआ, वैदिक इतिहास सुनाने लगे॥

माता को होने लगी, धीरे धीरे शान्ति।
चित्रवीर्य्य के हृदय पर, किन्तु चढ़ गई भ्रान्ति॥

सोचने लगे प्रति सन्ध्या को, क्यों भीष्म यहां पर जाते हैं?।
एवं आधी रात से पूर्व, बाहर न लौट कर आते हैं॥
यह सच है दोनों की आत्मा, सब भांति ज्ञान गुण-खानी है॥
फिर भी जगदीश्वर कुशल करे, दोनों की अभी जवानी है॥
दोनों का विषय—कामना ने, पीछा न अभी तक छोड़ा है।
यह आग घास का जोड़ा है, जो हो जाये सो थोड़ा है॥

❀ गायन ❀

काम का है वह चक्र प्रधान, विसर जाता है सारा ज्ञान।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई भी ज्ञानी ध्यानी हो, इन्द्रिय जित गुणवान ॥
पर कटाक्ष मय मृदु झांकी पर, होता है बलिदान।
नहीं रहता संयमका ध्यान, बिसर जाता है सारा ज्ञान॥
न रह सका स्थिर जिस पथ में, शिव विरंच का मान।
फिरे भटकते कामी बनकर, स्वयं विष्णु भगवान ॥
वहां क्या मानुषका अभिमान, बिसर जाता है सारा ज्ञान।
भ्राता, पिता पुत्र कोई हो, यदि चाहे कल्याण।
तो न जाय एकान्त समय में, नारी के स्थान ॥
कहीं डसले न काम शैतान, बिसर जाता है सारा ज्ञान।

सुना रहे थे भीष्म जब, सत्यवती को गाथ।
छिपे हुए सुनने लगे, चित्रवीर्य नर–नाथ ॥

शङ्कर का परिचय लेने को, जा छिपा काम अमराई में।
या कपट मुनी मरने आया, बजरङ्गी की प्रभुताई में॥
गुरुता, गरिमा से कारण से, गिरधर का आप गिरीश बना।
दोषी बन गया न्याय कारी, अपराधी न्यायाधीश बना॥
संकोच, शर्म की आड़ लिये, रुख बदला खामोशी बनकर।
पर दोष देखने वाला ही, रह गया आप दोषी बनकर॥

चित्रवीर्य ने भीष्म को, बुलवाया एकान्त।
तथा कहा संकेत में, अपना सभी वृतान्त॥

बोले–भैया ! मान गया, शान्तनुकुल के शृङ्गार हो तुम।
जो पड़ी हुई है भंवरों में, उस नैया के पतवार हो तुम॥
भारत भूषण हे शान्ति निधे, आचारों के आधार हो तुम।
हो ब्रह्मचर्य के सेतु रूप, दृढ़ भावों के अवतार हो तुम॥
इसलिये तुम्हीं से पूछता हूँ, जीवन की जटिल समस्या है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरु–जन पर झूठा दोष धरे, तो उसका प्रायश्चित क्या है॥
इन बातों में वदन पर, प्रगट न था कुछ खेद।
भीष्म इसी से प्रश्न का, समझ न पाये भेद॥
सीधे शब्दों में बोल उठे, यह नर का मानस–पातक है।
एवं इसका प्रायश्चित यों, शास्त्रानुसार आवश्यक है॥
यदि मानस–पाप मिटाना हो, तो नर काशी को अपनाये।
तन-मन देकर हरि-जाप करे, फिर चिता बनाकर जलजाये।
चित्रवीर्य ने भीष्म से, ले शास्त्र की सलाह।
सेली-कफनी धार कर, ली काशी की राह॥
वह राज ताज का दीवाना, है मस्त आज मृग छाला में।
वे हार और शृङ्गार सभी, बलिहारे कण्ठी—माला में॥
राजसी ठाठ, शाही लिबास, मोहित हैं मुनि के चोरों में।
महलों की भीड़ निछावर है, ऋषियों की शान्ति-कुटीरों में॥
सेना है और न नौकर है, घोड़ा है और न हाथी है।
ओ अभिमानी! पट खोल देख, कर्म ही जीव का साथी है॥
कर्म ही साथ था, जिससे वह, राजसी रूप में आया था।
राजा को उसी कर्म ही ने, भिक्षुक करके भटकाया था॥
राम भजन ने नृपति का, मेटा आत्म विकार।
तब की नृप ने आप ही, सु–रुचि–चिता तैयार।
खुल गये हृदय के ज्ञान-पटल, प्रभु-पद में प्रीति बढ़ाने से।
पा गया शान्ति का कल्प-वृक्ष, या कल पाई कलपाने से॥
बोले-ओमन-मानस-चारी, व्यापक! विश्वेश! निहार यहां।
करतार! तार तेरे कर है, नर–पामर के करतार कहां?॥
प्रभु! मन तेरा ही मन्दिर है, करना है वहां बिहार तुझे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसको रख मैला या सुन्दर, हे मालिक है अधिकार तुझे ॥
तूने ही भ्रम का भाव भरा, तूने ही उसे हटाया है।
तूने ही इस प्रायश्चित का, पीछे से स्वांग रचाया है ॥

कृपा--कोर कर अन्त में, ओ मेरे नट राज।
तेरी कठ पुतली चली, नाच-नाच कर आज ॥

❀ गायन ❀

सुनो चाहे मत सुनो दयामय, विनीत अपनी सुना चुके हैं।
सुखी रहो ओ जहान वालो, जहाँ से बिस्तर उठा चुके हैं ॥
छिपे रहोगे भला कहां तक, कहो मुरारे उन प्रेमियों से।
हटा चुके जो अहम् का परदा, यहीं पै धूनी रमा चुके हैं ॥
तुम्हें जो माया का सिन्धु मानें, तो जीव हैं बुलबुले उसी के।
मिटे कहाँ वे मरे कहाँ हम, तुम्हीं में आखिर समा चुके हैं ॥

यों कह कर नर राज ने, करदी देह निपात।
अरे हिन्दुओं क्या तुम्हें, भूल गई यह बात ॥

ना कुछ पाप के सोचने का, तुम इतना दण्ड उठाते थे।
वे कहे-सुने ही कहते थे, खुद ही जल कर मर जाते थे ॥
लेकिन अब तो हत्या की भी, कोई तुमको परवाह नहीं।
कहना विचारना दूर रहा, करके भी उठती आह नहीं ॥
तुम पाप खूब पहिचानते हो, जाहिर भी है परिणाम तुम्हें।
फिर जान बूझकर करते हो, जाहिर भी है परिणाम तुम्हें ॥
गैरों के दोष देखना ही, दूरन्देशी कहलाती है।
आक्षेप किसी पर कर देना, चतुराई मानी जाती है ॥
यह अपना पाप मिटाने को, इतनी कोशिशें लड़ाते हैं।
हम अपने पाप छिपाने को, झूठी गङ्गा धर आते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जमा रहा है जब यहाँ, यों असत्य अधिकार ।
तो क्यों भारत देश का, करें न बंटाढार ॥
पहुँचा राज स्थान में, यह दारुण–सम्बाद ।
धँस आया धौंसा लिये, मानो विरह–विषाद ॥
लेचला फूल करुणादिलकी, मल चलीं हाथ अलियाँ मिलके ।
चीखने लगीं गलियांहिलके,जलचलीं आप कलियाँ खिलके॥
हस्तिनापुरी का भाग्य उठा, रानी का अचल सुहाग उठा ।
भीष्म का शान्त वैराग उठा, वह माता का अनुराग उठा ॥
प्रभुता पर पानी फेर–फेर, आशा तोड़ी आशाओं ने ।
माताकी आत्मा से निकल२, मुँह मोड़ लिया ममताओं ने ॥
हा उठी दरो दीवारों से, महि गूँजी हाहाकारों से ।
आकाश वहाँ पर गूंज उठा, सुर वृन्दों के जयकारों से ॥

सत्य–धर्म पर जो यहाँ, होता है बलिदान ।
सुर-मण्डल में उन्हीं का, होता है गुण गान ॥

लोगों को धीरज दिया गया, मां को विशेष समझाया गया ।
गढ़पर का झुका हुआ झंडा,फिर ज्योंका त्यों फहराया गया ॥
जब रोने से कुछ शान्ति हुई, तो रोना था फिर शासन का ।
जब धीरज से कुछ बात उठी, तो प्रश्न उठा सिंहासन का ॥

सत्यवती कहने लगी, बेटा भीष्म कुमार ।
मनुज विचारा मर रहा, कर-कर व्यर्थ विचार ॥

अपनी उन्नति या अवनति पर, बेकार किसी का रोना है ।
होनी मनुष्य के हाथ नहीं, जो दैव करे सो होना है ॥
कैसे–कैसे बन्धन बांध, आई थी यहाँ विचारों पर ।
मैंने ही छुरी चलाई है, बेटा तेरे अधिकारों पर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन बन्धानों को ईश्वर ने, पर बांध-बांध कर तोड़ा है।
मेरी आज्ञा की चादर में, कुछ भी नहिं बाकी छोड़ा है॥
वह स्वार्थ-मोह की सीमा में, कल्पित-विस्तार हमारा था।
यह आज समझमें आता है, वह सब अधिकार तुम्हारा था॥
ईश्वर की उचित दैनगी का, अब सिर पर भार धरो बेटा।
मेरी आत्मा से आज्ञा है, यह पद स्वीकार करो बेटा॥

भीष्म वीर कर जोड़कर, बोले वचन प्रमाण।
बस माता! अब शब्द यह, सुन न सकेंगे कान॥

जिस वचन और प्रण के पीछे, हत्या ली राजकुमारी की।
जिस वचन और प्रण के पीछे, गुरुवर से भी धर-मारी की॥
वह वचन जरा से लालच में, सेवक से अम्ब! तुड़ाओ ना।
हाहाकर पैर चूमता हूँ, उस प्रण से मुझे छुड़ाओ ना॥
ना चीज राज की हस्ती क्या, त्रिभुवन भी उठें पुकार मुझे।
तो लात मारकर ठुकरा दूं, विश्व भी नहीं स्वीकार मुझे॥
वह आज्ञा दो माता! जिससे, यह खंडित आन न हो जाये।
डरता हूँ तेरे वचनों का, मुझसे अपमान न हो जाये॥

सत्यवती चुप हो गई, सुनकर यह आख्यान।
तथा वहीं करने लगी, व्यासदेव का ध्यान॥

प्रकट हुए आह्वान पर, व्यासदेव तत्काल।
गले लगाकर लाल को, कहा मातु ने हाल॥

बेटा! दुखनी को लूट गई, दुर्भाग्य दैव की दूती है।
मेरे सुपूत! तेरे आगे, माता होगई निपूती है॥
तुम पैदा होते ही सिर से, ममता का भार उतार गये।
दोयुवक कुँवर कुछ दिन रहकर, सुरपुर की तरफ सिधार गये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बे वत्स और बिन ग्वालों के, यह बेड़ा है कपिलाओं का।
हे तात! तुम्हारे जीते जी, रहगया राज्य विधवाओं का॥
अबलाओं का बल रोना है, वारिस न नजर में आता है।
बोलो बेटा! इस बेड़े को, अब सिर पर कौन उठाता है॥
है भीष्म वचन में बँधा हुआ, वह कभी न राज्य संभालेगा।
कोई भी राजा कान पकड़, महलों से हमें निकालेगा॥
इसलिये तुही अब शान्तनु के, शासन में हाथ लगा बेटा।
अथवा जैसे हो आगे को, इस कुल की बेल बढ़ा बेटा॥

व्यासदेव कहने लगे, सब सुन लिये सवाल।
माता! माया-जीत पर, माया जाल न डाल॥

राज्य ही मुझे करना होता, तो उस दिन त्यागी क्यों होता।
अनुराग मूर्ति! राग के समय, यह जान वैरागी क्यों होता॥
इसलिये दयाकर—ममता की, बातों से भी घबराता हूँ।
हां, वंश-बेल बढ़वानी है, तो कुछ उपाय बतलाता हूँ॥
तीनों बहुऐं मेरे आगे, बे पर्दा अगर निकल आयें।
तो मैं निश्चय कह सकता हूँ, तीनों इच्छित फल पा जायें॥

व्यासदेन ने कर लिया, वहीं भयानक वेश।
बैठ गये एकान्त में, शान्ति-मूर्ति महिमेश॥
मान चुके थे व्यास को, लोग मुख्य अवतार।
शान्तनु वंशी तो उन्हें, समझे थे आधार॥

इससे उनकी आज्ञा में भी, लोगों को कुछ इनकार न था।
उनका कोई भी वचन कर्म, ऊपरी न था, निस्सार न था॥
श्रद्धा विश्वास कामना से, तीनों को सच्चा चाव बढ़ा।
पर अपने-अपने भावों का, तीनों पर अलग प्रभाव पड़ा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अम्बा ने सोचा यह सच है, श्री व्यासदेव अविकारी हैं।
भोगी से परम वियोगी हैं, योग के जन्म अधिकारी हैं॥
वे सम-दर्शी, सम्यक-गति हैं, अध्यात्म-भाव पर जाते हैं।
इसलिये उन्हें नर या नारी, सब एक रूप दरशाते हैं॥
आ सकता कभी विकार नहीं, उनकी अधिकारी आँखों में।
कब तक न दोष पर आयेगा, दूषित संसारी आँखों में॥

शर्म और संकोच का, दिल पर परदा डाल।
आंखें कसकर वस्त्र से, निकल गई तत्काल॥

व्यास ने कहा इन आंखों में, द्वैत का हुआ है ध्यान तुझे।
इस द्वैत हारी प्रभु ही ने, अन्धी दी है सन्तान तुझे॥
उस प्रभुके अटल खजाने में, सारा ही साधन रक्खा है।
पर मिलता है कर्मानुसार, इस पर अपना काबू क्या है॥
आशा से भरी दुराशा में, अम्बा बेचारी विचल गई।
तब तक अम्बिका नग्न होकर, मिट्टी लपेट कर निकल गई॥

व्यासदेव कहने लगे, सुन देवी! वरदान।
पाण्डु रोग से ग्रसित ही, हो तेरी सन्तान॥

राजा चित्रांगद की चेरी, सतवन्ती विदुर-कुमारी थी।
दोनों महिलाओं के पीछे, अब उसी देवि की वारी थी॥
उसने सोचा-संकोच वृथा, अविकारी और विरक्तों से।
कुछ छिपा हुआ है त्रिभुवन में, प्रभुसे और प्रभुके भक्तों से॥
उस दिव्य दृष्टि से दृष्टि बचा, कौन सी सृष्टि पाजाऊंगी।
सर्वाज्ञ शुद्ध की नजरों से, क्यों कर यह अङ्ग छिपाऊंगी॥

माया निधि के ध्यान में, रहा न माया जाल।
सीधे-सीधे भाव से, निकल पड़ी तत्काल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यास ने कहा री निर्लज्जे, क्या लाज बेच कर आई है।
लजवन्ते कुल में रहकर भी, क्या लज्जा सीख न पाई है॥
वह बोली नाथ दासियों का, लज्जा से काम नहीं चलता।
वन में व्यापार नहीं होता, छिपने से काम नहीं चलता॥
व्यापक यदि नाथ नहीं होते, तो कुछ चतुराई दिखलाती।
जो तुम से कभी छिपी होती, वह आज छिपाकर आजाती॥

हँसकर कहा महर्षि ने, सुन देवी वरदान।
प्रकटेगी इस कोख में, परम भक्त सन्तान॥

वह ज्ञान मूर्ति नीतज्ञ लाल, औरों को ज्ञान सिखायेगा।
दासी का पुत्र कहा कर भी, त्रैलोक पूज्य बन जायेगा॥
इतना कहकर वह दिव्य-मूर्ति, तत्क्षण ही अन्तर्द्धान हुए।
महलों में उन महिलाओं के, सर्वांश सिद्ध बरदान हुए॥
धृतराष्ट्र जन्म से अन्धे हुए, रोगी अम्बिका कुमार हुए।
उस विदुर-सुता के विदुर-भक्त, सद भक्तों के शृङ्गार हुए॥

नहीं समझनी चाहिये, यह अचरज की गाथ।
लगा हुआ विज्ञान है, एक दृष्टि के साथ॥

नजरों ही नजरों के अन्दर, दो आत्मायें खिंच आती हैं।
प्रीति या बैर का आकर्षण, ये नजरें ही उपजाती हैं॥
आजकल मैस्मरेजिम विद्या, निर्भर है नजरी हिकमत पर।
कुछ लोग दवा भी करते हैं, केवल नजरों की ताकत पर॥
शक्ति मय नजर पत्थर पर भी, अपना असर दिखाती है।
कितने ही छोटे बच्चों को, आजकल नजर लग जाती है॥
है इतना असर आज बाकी, खासो अवाम की नजरों में।
क्या अचरज यदि प्रभाव वह हो, उन तपोधाम की नजरों में॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है प्रसिद्ध संसार में, भारत का विज्ञान।
यूरुप का विज्ञान है, जिस पर खुद कुरबान ॥

❀ गायन ❀

यह रेल जहाज न तार सही, हृद-तार उठा जिस रोज यहाँ।
महि-मंडल के नभ-मंडल के, प्रकटे क्षण में सब भेद वहाँ ॥
जगयोग-क्रिया व्यवहार हुई, गहि मौन कला चितई न तहाँ।
जिस पै बलि था विज्ञान सभी, वह भारत का विज्ञान कहाँ ॥

बढ़े चरित के भांति ही, वे माया के अङ्ग।
कुछ दिन के पीछे चला, उनका ब्याह प्रसङ्ग ॥

भारत के उत्तर-पश्चिम में, गन्धा का राज्य सुहाता था।
जो कंदहार कहलाता है, पहले गान्धार कहाता था ॥
गान्धारी उनकी थी बेटी, शङ्कर की परम-उपासक थी।
बालकपन की कुल दिन चर्या, केवल शिवके पूजन तक थी ॥
जब शांति पाठ का दिन आया, तो शङ्करजी सन्मुख आये।
गान्धारी ने पद चूम लिये, अवढर दानी भी मुसकाये ॥
बोले—सौ बेटे एक सुता, बेटी ! आगे प्रकटायेगी।
जिसके कारण भू-मण्डल पर, तू वीर-जननि कहलायेगी ॥

शङ्करजी गमनित हुए, देकर यों वरदान।
गान्धारी ने भी किया, महलों में प्रस्थान ॥

इस ओर सुभग-वर दिया गया, उस ओर स्वयंवर सँभलगया।
भट भीष्म पकड़ गान्धारी को, शेरों के मुँह से निकल गया॥
हू-हल्लड़ जी भर हुआ किया, तलवार सिरों को जांचाकी।
रण-रङ्गी आगे निकल गया, रण-चंडी पीछे नाचा की ॥

कटे सुभट, खटपट हुई, बही रक्त की धार।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गान्धारी पर किन्तु वे, कर न सके अधिकार ॥
किया गया उस देवि का, धृतराष्ट्र से विवाह ।
पति को अन्धा देखकर, लगी सोचने राह ॥

नेत्रो ! जब आत्म देव अपना, अन्धा दैव बनाया है ।
तो बोलो, तुम्हें खुला रहना, फिर किस प्रकार से भाया है ॥
सम्बन्ध प्रेम का करता है, एक ही तोल हों सम्बन्धी ।
इसलिये तुम्हें भी बन्द करूं, वे भी अन्धे मैं भी अन्धी ॥
तुम पर बन्धन पड़ जाने से, चंचल-चित्त भी बँध जायेगा ।
केवल सेवा ही में लगकर, बेकार ने फिर भटकायेगा ॥
नारी पतिव्रत की है गुलाम, विषयों में लिये गुलाम नहीं ।
पति से बढ़कर कुछ काम करे, यह पतिव्रता का काम नहीं ॥

गान्धारी ने वस्त्र से, नयन कर लिये बन्द ।
पति–सेवा ही को फकत, मानलिया आनन्द ॥

भारत ! कैसे ? कैसे ? गाऊँ, प्रभुता तेरे पुजारियों की ।
पुरुषों की गाथा कहा करूँ, या गाऊँ ? कीर्ति नारियों की ॥
पति सेवा पर, पति-चरणों पर, जो होती थीं बलिहार यहां ।
वे भारत के अवतार रूप, नारियां आज कर्तार ! कहां ॥

❀ गायन ❀

हमारी देवियों का भी, बदलता ढङ्ग जाता है ।
नई फैशन का घोड़ा है, कहाँ-कैसा गिराता है ॥
तड़पता है पती घर में, तुम्हें टेनिस की सूझी है ।
वह आंखों को तरसता है, तुम्हें काजल सुहाता है ॥
नई साड़ी, नया साया, नये दिन हैं नई मांगें ।
न जाने वह विचारा किस तरह जीवन बिताता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न पूछो देवियो ! इसका जमाने में असर क्या है ?
यही विधना बना करके तुम्हें दर-दर फिराता है ॥

❀ कर्ण जन्म ❀

शूरसेन के मित्र थे, कुन्तिभोज मति मान ।
मानों थे संसार में, दो शरीर यक प्राण ॥
उन शूरसेन की दुहिता भी, थी कुन्तिभोज के अंग लगी ।
इसलिये बाल जीवन भर में, वह रही उन्हीं के सङ्ग लगी ॥
या यों कहिये वह अधिक समय, उनके ही यहाँ बिताती थी ।
बस कुन्तिभोज के कारण से, वह भी कुन्ती कहलाती थी ॥
बैठे थे दरबार में, कुन्तिभोज जनतेश ।
दुर्वासा मुनिराज का, तब तक हुआ प्रवेश ॥
देखकर उन्हें दरबार उठा, नृप उतर पड़े सिंहासन से ।
आगत स्वागत में तुष्ट किया, षोडश प्रकार के पूजन से ॥
नृप बोले—जैसे सोमवती, दश-पाँच वर्ष में आती है ।
त्यों ही गृहस्थ पर ऋषियों की, दैवात् कृपा होजाती है ॥
सौभाग्य दयानिधि आये हैं, पावन सिंहासन कीजेगा ।
करुणा-निधान ! दास के योग्य, जो हो सो आज्ञा दीजेगा ॥
दुर्वासा कहने लगे, सुन राजन् ! मति धीर ।
ठहराना इस बार का, है कुछ टेढ़ी खीर ॥
जिस जगह आज मैं ठहरूँगा, चौमासा वहीं बिताऊँगा ।
इससे ठहराने वाले से, पहिले शर्तें ठहराऊँगा ॥
चौमासे की तपचर्या में, परिचर्या जिससे बन आये ।
वह आज खुशी के साथ मुझे, अपनी नगरी में ठहराये ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजन् ! विचार कर हाँ कहना, सहसा हारना जबान नहीं।
मैं इतना अभी बताता हूँ, वह परिचर्या आसान नहीं ॥

नर–पति भी निर्णय न कुछ, कर पाये तत्काल।
हाँ बोले कुछ देर में, हे हे दीनदयाल ॥

दो–एक घड़ी ही रहने का, थोड़ा सा कष्ट कीजियेगा ।
जन को महलों तक जाने का, करुणाकर हुक्म दीजियेगा ॥
सेवा को हृदय चाहता है, त्रुटियों से आत्मा डरती है ।
इस कारण अपनी सम्मति में, मेरी मति काम न करती है॥
इसलिये स्वजन कुल वालों से, जनकुछ सम्मति ले आयेगा ।
दो–एक घड़ी के पीछे ही, सारा निश्चय हो जायेगा ॥

मुनिवर से यों विनय कर, घर आये नरपाल ।
कहा सभी के सामने, मुनि को जटिल सवाल ॥

कोई बोला हाँ ठहरालो, इस में कोई नुकसान नहीं ।
कोई बोला क्या कहते हो ?, यह ठहराना आसान नहीं ॥
एकासन उन्हें बैठना है, केवल इच्छा जतलाना है ।
जिसकी जब उन्हें जरूरत है, यह उसी समय पहुँचाना है ॥
जो कहीं जरा भी कमी पड़ी, तो समझो यहाँ सफाई है ।
इसलिए बिदा कर देने में, राजन् ! हर तरह भलाई है ॥

कुन्ती ने उत्तर दिया, हे हे आत्म उदार ।
साधू–सन्तों के लिए, इतना सोच–विचार ॥

रह सका न धर्म गृहस्थी का, तो बाकी हमें रहेगा ? क्या ।
जब अतिथि निराशा जायेगा, तो कोई हमें कहेगा ? क्या ॥
क्या होगा ? यह कैसे होगा ?, इसकी न आप चिन्ता कीजै ।
केवल मेरे ही कहने से, दुर्वासा को ठहरा लीजै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुन्ती ही की शक्ति पर, ऋषि ने किया निवास।
कुशल तथा निर्विघ्न से, बीते चारों मास॥
कुन्ती ने उस आयोजन पर, अपना सब आयोजन छोड़ा।
शृङ्गार और भूषण छोड़े, निद्रा छोड़ी भोजन छोड़ा॥
ऋषि ने भी कुन्ती देवी को, आकर्षण-मन्त्र प्रदान किया।
एवं प्रयोग बतलाकर के, उस नगरी से प्रस्थान किया॥

होता है नव उम्र में, चित्त का चञ्चल भाव।
कुन्ती बाल स्वभाव वश, लगी बदलने भाव॥
ऋषि वर के आकर्षण द्वारा, देवता यहाँ आ सकते हैं।
लेकिन प्रयोग के बिना कभी, विश्वास न हम ला सकते हैं॥
सम्भव है—मेरी सेवा का, मेवा ही मुझे चखाया हो।
अथवा छोकड़ी समझ केवल, मेरा तन ही बहलाया हो॥
है चीज आजमाने ही की, तो क्यों न आज ही अजमायें।
ऋषि का प्रयोग सच्चा हो तो, सूर्य ही सामने आ जायें॥

यों कहकर ज्यों ही किया, दिनकर का आह्वान।
त्यों ही प्रकटे सामने, स्वयं सूर्य भगवान॥
चक-मक होकर झपकी आई, अभिलाषित उन्नति आंखों में।
देखकर देखने की फिर से, रह गई न ताकत आंखों में॥
वह अमित तेज वह घोर ताप, बालिका विचारी सह न सकी।
अटपटा गई लड़ खड़ी उठी, सामने खड़ी भी रह न सकी॥

कम्पित-तन वाणी वदन, बोली आर्त्त पुकार।
विश्व-रूप विश्वेश बिभु, विश्व भास दातार॥
बलिहारी! इतना ही बलदो, अबला यह तुम्हें निहार सके।
हे ज्ञान मूर्ति दो तनक ज्ञान, कन्या कुछ विनय उचार सके॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्य ने कहा कुन्ती देवी, क्या करदूं शक्ति प्रदान तुझे ।
आह्वान और जप के बदले, है इतना ही वरदान तुझे ।
मेरे प्रभाव से मुझ ही सी, ईश्वर देगा सन्तान तुझे
दस मास बाद ही सिद्ध रूप, फल जायेगा वरदान तुझे ॥

कुन्ती औचक रह गई, बोली दया-निधान ।
शांति सहित यह शाप है, या विषमय वरदान ॥

क्वारेपन में एक बेटा जाकर, क्या कुलटा नहीं कहाऊँगी ?
जब दुनियाँ थूक उड़ायेगी, तब किस के द्वारे जाऊँगी ? ॥
वर-रूप कलङ्क चढ़ाकर भी, क्या मुँह दिखलाया जायेगा ?
हे देव ! कौन ऐसा होगा, जो फिर मुझको अपनायेगा? ॥
दिनकर बोले विश्वास रहे, वर तो बेकार न जायेगा ।
लेकिन यह सब होने पर भी, तुझ पर कुछ दोष न आयेगा ॥
अपना-अपने पुत्र को नाम, जब तक न बताया जायेगा ।
तब तक उसकी पैदाइश का, कोई भी पता न पायेगा ॥

सूर्य देव गमनित हुए, देकर यह वरदान ।
यथा समय पैदा हुई, कुन्ती से सन्तान ॥
सब से बढ़कर था वहां, यह देवीय-विधान ।
उदर छोड़कर कान से, प्रगटी वह सन्तान ॥

दैवीय सम्पदा हाथ लगी, अथवा कलङ्क का ग्रह आया ।
सुख-दुखमें द्विविधा साथ हुई, या आशाने मुँह दिखलाया ॥
श्री सूर्य-देव का अंश कहो, या केतु ग्रहण बनकर आया ।
यह मूर्ति हुई या अपयश का, सीधा साधन बनकर आया ॥
उस अनचाही निधि को पाकर, यों दुविधा में पड़ जाती है ।
जैसे योगिनी सिद्धि पाकर, अनुराग त्याग दिखलाती है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोचने लगी सौभग्य मूर्ति, ईश्वर ने मुझे दिखाई है।
पर आह लोक-मर्यादा ने, दुर्भाग्य निशा मँडराई है॥
यदि एक प्रहर भी इस निधि को, छाती पर रख अपनाऊँगी।
तो मुँह दिखलाने योग्य सुबह, दुनियाँ में क्या रह जाऊँगी॥

मुझे मिलेगा प्रात ही, वह प्रसिद्ध उपहार।
याद रखेगा प्रलय तक, जिसे सकल संसार।

धिक-धिक बधाइयों से मिलकर, बौछार गालियों की होगी।
थू-थू के कीर्ति गान होंगे, धर-मार तालियों की होगी॥
कोई सिकोड़कर मुँह अपना, आगे से हँसता जायेगा।
कोई सीधी गाली देकर, घर से बाहर कर आयेगा॥
मैं यह कलङ्क की मूर्ति लिए, सौ-सौ सौगन्धें खाऊँगी।
पर नहीं समझ में आता है, किसको कैसे समझाऊँगी॥

सभी व्याधि से बचत का, है एक ही उपाय।
यह लोहू का लोथड़ा, दूं गङ्ग में बहाय॥

नर अपना पाप छिपाने को, पापों पर पाप बढ़ाता है।
पर सत्य प्रकट हो जाता है, झूठ का झूठ रह जाता है॥
व्यभिचार-कलङ्क छिपाने को, शिशु-हत्या शीश चढ़ाती हूँ।
कीचड़ का दाग मिटाने को, खूनी दरिया में जाती हूँ॥
पर कुछ भी हो, इस समय यही, आसान राह दिखलाती है।
दुनियाँ ! तेरे भय से माता, पुत्र को मारने जाती है॥

यों कहकर उस बाल को, छाती लिया लगाय।
बिलख-बिलखकर देविने, कहा उसे चुमकाय॥

ओ लाल ! अभागे लाल कहाँ, आये हो इस अभागिनी के।
ओहंस रूप सुकुमार ! कहाँ, आ फँसे ? कराल नागनी के॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं मां हूँ, कुदरत ने मुझको, ममता की मूर्ति बनाया है।
पर आज लोक मर्यादा ने, पत्थर पर मोम चढ़ाया है॥
हे ब्रह्म-रूप शुद्धात्म कुँवर !, कीजियो क्षमा हत्यारी को।
यदि बचे रहे तो दुनियाँ में, कहियो न बुरा महतारी को॥
जिस दैवी लीला के द्वारा, क्वारे में तुम को जाया है।
जिस दैवी माया ने तुम को, कर्ण से प्रकट करवाया है॥
उसके बल-विश्वास पर, करने को बलिदान।
जाती हूँ-तेरा लला ! हो सहाय भगवान॥

❀ गायन ❀

वही मेरे दिल की दवा जानते हैं।
जो इज्जत को जी से बड़ा मानते हैं॥
भले आदमी पर यही चीज तो है।
उसे लोग जिससे भला जानते हैं॥
इसी स्वार्थ की आड़ में पाप को भी।
कभी पुण्य से भी बड़ा जानते हैं॥
यही आन तो है कि गोविन्द जिसपै।
यह कुरबानियां भी रवां जानते हैं॥
दबती, छिपती, ठिठकती, पहुँची गङ्ग किनार।
देखा अन्तिम बार फिर, सुत का बदन उघार॥
ममता ने आत्म-दुलार किया, ऋण चुका दिया चुमकारी ने।
गङ्गा माता की गोदी में, शिशु डाल दिया दुखियारी ने॥
हे गङ्गा माता ! जग की माता, तू माता की भी माता है।
माँ की गोदी से उठा हुआ, तेरी गोदी में आता है॥
दरबारों में यम-द्वारे पर, तेरी ही मान्य जमानत है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धेय जाह्नवी ! ग्रहण करो, दुखिया की एक अमानत है ॥
शशि-देव ! पवन ! पृथ्वी देवी, मतकहो कसाइन माता है ।
दैव की दान, देवेच्छा से, दैव के सहारे जाता है ॥

उठा लहर के साथ में, मां का शोक विनोद ।
फैला दी ज्यों गङ्ग ने, शुचि-हिलोर की गोद ॥

लहरों के लहरित पलने में, ललना आगे को आने लगा ।
भय और अभयताका झोका, कुन्ती का हृदय हिलाने लगा ॥
जैसे-तैसे गिरते-पड़ते, दुखिया महलों में आती है ।
दैवीय-शक्ति अन्तर पट से, अपनी लीला दिखलाती है ॥

एक सारथी गङ्ग पर, पहुँचा प्रातःकाल ।
शिशु पर पड़ते ही नजर, उठा लिया तत्काल ॥

पर टूटे हुए परिन्दे को, प्रभु के प्रताप से आँख मिली ।
हीरा भिक्षुक के हाथ लगा, अथवा अन्धे को आंख मिली ॥
सारथी दुखी था इसी लिये, उसके कोई सन्तान न थी ।
गोदी लेने का साधन था, साधना मगर आसान न थी ॥

सूर्य रूप उसको मिला, जब सहसा सुकुमार ।
रहा न उस आनन्द का, तब कुछ वारा-पार ॥
घर ले आया सारथी, कर्ण धर लिया नाम ।
बढ़ा बाल-रविकी तरह, बलशाली गुण-धाम ॥

हीरा मिट्टी में रह कर भी, वक्त पर मूल्य बतलाता है ।
सुन्दर, सुगन्धि-मय सुमन कभी, पत्तों में नहीं छिपाता है ॥
चन्दन ईंधन में रह कर भी, अपनी सुगन्धि फैलाता है ।
यह सच है होनहार प्राणी, आप ही प्रकट हो जाता है ॥

खेल रहा था कर्ण जब, कुछ बच्चों के साथ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक बाल कहने लगा, वहीं उठाकर हाथ ॥
मैंने कर्ण को छू लिया है, वह देखो पीछे आता है।
कर्ण ने कहा यह नालायक, झूठा अपराध लगाता है ॥
लड़का बोला बाप की कसम, इसकी आखिरी सफाई है।
कर्ण ने कहा प्रभु की साक्षी, एवं तात की दुहाई है ॥

तात–शपथ सुन बाल गण, हँसे कहकहा मार।
बोले—रे रे बावले ! कह कुछ सोच विचार ॥

कुछ मां–बाप का पता भी है, या योंही खड़ा अकड़ता है।
क्या बूढ़े जठर सारथी को, तू अपना बाप समझता है ॥
वह तेरा असली बाप नहीं, पालक अवश्य कहलाता है।
इस कारण से तेरा उसका, सेवक स्वामी का नाता है ॥
जो मां-बाप को जानता हो, तो नाम बता या उन्हें दिखा।
टुकड़े खाया कर मौज उड़ा, उस बूढ़े की सौगन्ध न खा ॥
लगती बोली निर्लज्जों को, होली की एक ठिठोली है।
लेकिन लज्जावान के लिए, बोली है जैसे गोली है ॥
वह बच्चों की फुलझड़ियाँ थीं, पर प्रणधर को शमशीर हुई।
लड़के कह गये लड़कपन में, पत्थर की उधर लकीर हुई ॥

खेल-कूद सब छोड़कर, घर आया मन मार।
बूढ़े से कहने लगा, बाबा परम ! उदार ॥

आप की भांति मेरे कारण, दूसरा सहेगा ताप नहीं।
पर मुझे पता यह चलता है, आप हैं दास के बाप नहीं ॥
इसलिये पिता-माता का कुछ, हे तात ! पता बतलाइयेगा।
इसके अन्दर रहस्य जो हो, वह साफ-साफ समझाइयेगा ॥

सीधा साधा सारथी, बोला—हे हे तात !।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शपथ त्रिलोकी नाथ की, मुझे कुछ नहीं ज्ञान ॥
क्या जाने ? किसने-किस कारण, गङ्गा में तुझे बहाया था।
हे तात ! प्रात के समय तुझे, मैं ही निकालकर लाया था ॥

इतना सुनकर विपिन में, पहुँचा सूर्य-कुमार।
चिन्ता के उद्वेग में, हुई चिता तैयार ॥
जैसे ही वह कर्ण भट, बढ़ा चिता की ओर।
त्यों ही नभ में मचगया, ठहर ठहर का शोर ॥

देखा सूर्य ही मनुज बनकर, उस ओर लपकते आते हैं।
मुसकाते से, सकुचाते से, बेटे को हृदय लगाते हैं ॥
ओ कर्ण कुँवर ! यह कारिखता, क्या रवि मंडल के घेरे में।
ओ भूतल के प्रकाश कर्ता, देता है प्राण अन्धेरे में ॥
ओ चिंतामणि के चिंतामणि, किसलिये चितामें जलता है।
ओ भारत के शृङ्गार,रूप, बतला तो तुझे कष्ट क्या है ॥

कहा कर्ण ने सहन है, मुझे बज्र दिन-रात।
किन्तु सही जाती नहीं, एक लाज की गाज ॥

जिसके न वंश का पता चले, जो माता-पिता न जानता है।
जो किसी जाति के योग्य नहीं, जीने में उसे लाभ क्या है ॥
मेरे बल-विक्रम से अवश्य, भट-मण्डल भय सा खाता है।
पर प्रश्न जाति का उठता है, तब मुँह न दिखाया जाता है॥

सूर्य देव कहने लगे, सत्य मान प्रिय ! बात।
मैं ही तेरा हूँ पिता, तू ही मेरा तात ॥
कुछ कारण वश इस घटना को, मैंने विश्व से छिपाया है।
फिर उसी समस्या से मां ने, गङ्गा में तुझे बहाया है ॥
लाला ! इतना विश्वास मान, वह देवी भी कुलवन्ती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुद्ध है, सुशील, गुणागरि है, लजवन्ती, सतवन्ती है ॥
कर्ण ने कहा यदि यह सच है,तो मां का तात ! नाम क्या है ।
जिससे मेरी यह दशा हुई, उसकी क्या मुख्य समस्या है ॥
सूर्यने कहा यह हाल तुझे, इस समय न आगे आयेगा ।
कुछ दिनों सब्र कर सब चरित्र, आपही प्रकट हो जायेगा ॥
लेजा लाला ! इस कपड़े को, यह अग्नि--चीर कहलाता है ।
जो इसे ओढ़ कर जले नहीं, बेटा ! वह तेरी माता है ॥

यों कहते ही हो गये, दिनकर अन्तर्द्धान ।
यहाँ हर्ष से कर्ण ने, घर को किया पयान ॥
धीरे--धीरे कर्ण का, आया विद्या---काल ।
लगा सोचने बैठ कर, सूर्य देव का लाल ॥

शूर को दांव यदि याद नहीं, तो शूर कहाँ ? वह सूरा है ।
बल विक्रम हो, प्रताप हो पर, विद्या के बिना अधूरा है ॥
समुचितप्रकाश शुचिवायु बिना,खुलकरके फूल न खिलता है।
यह सच है-गुरुके किये बिना, जीवनका मार्ग न मिलता है ॥

हो स्वभाव से मनुज में, कितना ही गुण-ज्ञान ।
पर गुरु-दीक्षा के बिना, है वह मूक समान ॥

गुरु किया जाय ऐसे जन को,जो गुरुता का अधिकारी हो ।
आचार्य वही माना जाये, जो वास्तव में आचारी हो ॥
तन,मन,आचार विचार शोध, जो जीवनकाफल दिखलादे ।
चेले का सफल मनोरथ हो, ऐसे कुछ जौहर दिखलादे ।

इसीलिये संसार में, है यह मसल प्रधान ।
गुरु कीजै तौ जान कर, पानी पीजै छान ॥

वरना वह गुरुता उद्यम है, वह पढ़ना है मन का मेला ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस जगह एक होजाते हैं, लालची गुरू लोभी चेला ॥
जिनका कि परिश्रम निर्भर है, पैसे की प्रबल प्रेरणा पर।
जिनकी गुरुता की कीमत है, चेले की दान-दक्षिणा पर ॥
मुझको तो विद्या के द्वारा, वास्तविक लक्ष्य पर जाना है।
जीवन का ध्येय ढूंढ़ना है, रोटी ही नहीं कमाना है ॥

सकल सगुण-सम्पन्न हैं, भृगुपति तेजनिधान।
पर पढ़ सकना अब वहां, रहा नहीं आसान ॥

क्षत्रिय के आगे जाते ही, भौंहों में बल पड़ जाता है।
बात ही जहां पर है मुहाल, फिर विद्या कौन पढ़ाता है ॥
पर विद्या का सच्चा प्रेमी, इसकी परवाह न करता है।
फूलों के रस का रसिक भ्रमर, कांटों से कभी न डरता है ॥
मर कर जीकर जैसा होगा, वह विद्या रत्न कमाऊंगा।
क्षत्रियता यहीं छोड़ दूंगा, भिक्षुक ब्राह्मण बनजाऊंगा ॥
यद्यपि इस छल-असत्य का भी, बदला आगे दिखलायेगा।
पर इसकी कुछ परवाह नहीं, जीवन पथ तो मिलजायेगा ॥

पहुँचे मुनि के पास में, धर ब्राह्मण का वेश।
धनुर्वेद में कर्ण भट, करने लगा प्रवेश ॥

सत्पात्र और सच्चे चेले, जब गुरुओं को मिल जाते हैं।
गूढ़ से गूढ़ तर भी रहस्य, तब गुरु भी नहीं छिपाते हैं।
कर्ण की अटल श्रद्धा विलोक, गुरुने वह ज्ञान-प्रकाश किया।
कुछ ही दिनमें थोड़े श्रमसे, सब विद्या का अभ्यास किया ॥
दैवी बालक दैवी प्रकाश, दैवी ही भाव निराला है।
पहले वालों से पहले ही, अभ्यास पूर्ण कर डाला है ॥
पर उस श्रम-फल के साथ-साथ, छलका भी कुछफल पानाथा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावी भारत की लीला में, लीला का सूत्र जमाना था ॥
मुनि की शान्ति कुटीर में, बैठा था बलवीर ।
आये वन की ओर से, गुरुवर श्रमित शरीर ॥
गुरु को कर्ण ने प्रणाम किया, छिड़ गई बात फिर वेदों पर ।
शिष्यकी जांघपर सिररखकर, सोगये वहीं मुनिवर थककर ॥
दैवात् एक भौंरा आकर, कर्ण के पास मण्डराने लगा ।
फिर पैरों के नीचे जाकर, जंघा में छेद बनाने लगा ॥
वर्मा सा चलता रहा, टरा न पर मति धीर ।
बोला धीमे स्वरों में, रे भौंरे बे पीर ॥
मैं जान चुका हूँ यह तेरी, प्रण मय पुरुषार्थ प्रतीक्षा है ।
गुरुता की प्रथम परीक्षा थी, यह गुरु भक्ति की परीक्षा है ॥
इस कुटिल रोग से गुरुवर का, अनुराग नहीं टल सकता है ।
दे चला आरियां भी सिर पर, कर्ण नहीं टल सकता है ॥
जंघा से बहने लगी, प्रबल रुधिर की धार ।
फिर भी अपनी जगह से, टला न सूर्य-कुमार ॥
लोहू की ठण्डक लगने से, गुरुवर की निद्रा टूट गयी ।
वह छल का भंडा फूट गया, शिष्यता वहीं से छूट गयी ॥
द्विजवर बोले रे रे पापी, क्या सच-मुच ही तू ब्राह्मण है ।
तेरी क्षण-क्षण की चालों से, जाहिर होता क्षत्रीपन है ॥
ब्राह्मण कितना ही योद्धा हो, पर यह साहसी विचार कहां ।
चिउंटे के डंक चुभाने से, पड़ जाती आह पुकार यहाँ ॥
अब भी मूरख सच-सच कहदे, वरना न शिष्यता पालूंगा ।
एक ही शाप में सब प्रताप, जीवन के साथ मिटादूंगा ॥
हाथ जोड़कर कर्ण ने, कहा क्षमा मुनि नाथ !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasl Collection. Digitized by eGangotri

क्षत्रिय हूँ ब्राह्मण नहीं, हाजिर है यह माथ।
विद्या—प्रेमी ने विवश करके, सेवक से झूठ बुलाया है।
या यों कहिये यह दान, भिक्षुक बन कर ही पाया है॥
जीवन की सारी सुख आशा, जीवन लक्ष्य पर निर्भर है।
वह लाभ प्राप्त हो चुका मुझे, अब यह जीवन नेछावर है॥
उस छल असत्य का दंड यहीं, मिल जाये शिष्य तुम्हारे का।
यह ऋण क्यों नाथ लिये जाऊँ, उस धर्म-राज के द्वारे को॥

परशुराम कहने लगे, हुआ आप ही न्याय।
कौन बधेगा? हाथ से, शिष्य, ब्राह्मण, गाय॥

लेजा यह पांच बाण लड़के, जीवन भर तुझे बचायेंगे।
जब निकल हाथ से जायेंगे, तब जीवन लेकर जायेंगे॥
क्यों करूं कलंकित गुरुता को, भगवान करे कल्याण तेरा।
जीवन में तुझे सुयश बख्शे, यह शाप और वरदान मेरा॥

कर्ण बाण ले हर्ष से, लौटा शीश झुकाय।
कह विनीत आनन्द से, जय जय, यादव राय॥

* कौरव और पांडवों की उत्पत्ति *

कुन्ती के शुभ-ब्याह की, आई लग्न प्रधान।
शूरसेन नर राज ने, दिया स्वयंवर ठान॥
कुन्ती ने छवि पर मोहित हो, जय-माल पांडु को पहिनादी।
मद्र-पति-सुता माद्री की भी, भीषम ने शादी करवादी॥
फिर पाराशरी नाम वाली, नृप देवराज की बेटी को।
भीष्म ने स्वयंवर से लाकर, अर्पण कर दिया विदुरजी को॥

गान्धारी के गर्भ का, जोड़ा देव विधान।
बीत गये दश मास पर, हो न सकी सन्तान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दश मास बाद पैदायश के, यदि कुछ ही दिन बढ़ जाते हैं।
तो नारी के प्राणों के भी, लेने—देने पड़ जाते हैं॥
पर यहां चार छः रोज नहीं, चौबीस महीने बीत चुके।
हो चुके लाख जादू टौने, औषधियों के घट रीत चुके॥
जी की मचली हलकी मरोड़, रह-रहकर मस्तक चकराना।
सिसकियाँ कभी जारी होना, उफ कह कर भी तड़पाजाना॥
नकसीर अन्त में फूट चली, पीड़ा से रग-रग टूट चली।
आंखें पथरा कर रूठ चलीं, जीवन की आशा छूट चली॥

उमड़ उठा धनकी तरह, महलों में कुहराम।
नर—नारी दौड़े बड़े, रोने लगे तमाम॥

होगया शुरू शान्तिका पाठ, गौ-दान आदि सब होने लगे।
रह गये भीष्म भी सिकुड़े से, धृतराष्ट्र बिचारे रोने लगे॥
पड़ गया शरीर शिथिल ठंडा, प्राण भी कंठ तक जा पहुँचे।
तब एक दैवी इच्छा वशात्, श्री व्यासदेव भी आ पहुँचे॥

शोक भवनमें जिससमय, पहुँचे शान्ति निधान।
शोक आप ही कर चला, महलों से प्रस्थान॥

सब लोग व्यास के चरणों पर, दो अश्रु गिराकर खड़े हुए।
व्यासजी उन्हें धीरज देकर, चल दिये वहीं को बढ़े हुए॥
उस दिव्य दृष्टिके पड़ते ही, जीवात्मा फिर से पिछल पड़ा।
गान्धारी के गर्भाशय से, मांस का लोथड़ा निकल पड़ा॥

अब महलों में छा गया, सहसा जय जय कार।
लेकिन दुखिया की उठी, फिर दुख भरी पुकार॥

ओ प्रभु जय कारे बन्द करो, रोने का अवसर आया है।
टुक आंख उठाकर देखो तो, यह क्या अनिष्ट प्रकटाया है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इससे कोई प्राणी होता, तो यह कलङ्क ही खो जाता।
लड़का न सही लड़की न सही, पिस्सू ही पैदा हो जाता॥
ओ गाने वालो मौन रहो, यह गाली लिये बधाई है।
टुक नजर उठाकर देखो तो, यह दो वर्ष की कमाई है॥
बहतर था मरने से पहले, यह भेद न कुछ निकला होता।
इस बार-बार के मरने से, वह मरना कहीं भला होता॥

व्यास देव कहने लगे, रह गान्धारी मौन।
जन्म मरण के प्रश्न में, तू अधिकारिण कौन॥

पत्थर पर कमल खिला डाले, आगी में जल प्रकटा डाले॥
यह माया-पति के हाथों है, पानी में आग लगा डाले॥
क्या भेद समझ में आता है, महिमा मय लीला स्वानी का।
होशमें तनिक आ गान्धारी, वर भूल न जाना बरदानी का॥
पर एक पिण्ड के द्वारा ही, प्रभु को वह कर्ज चुकाना है।
या इसी लोथड़े के अन्दर, सौ बेटों का दिखलाना है॥
पिंड के सौ टुकड़े करके, ऋषि ने करुओं में धरा दिया।
गौ-मूत्र आदि अभिमन्त्रित कर, उनमें ऊपर से भरा दिया॥
कुछ दिन पीछे वह टुकड़े ही, बालक बनकर प्रकटाये हैं।
उन करुओं के कारण ही से, वे सब कौरव कहलाये हैं॥

चूहों से बढ़ कर न था, उनका प्रथम शरीर।
उछला करते थे सदा, गान्धारी के तीर॥

पर कुछ ही दिन में हुए, दीर्घ-काय बलधाम।
कुछ सुन्दर कुछ विकट भी, कुछ गोरे कुछ श्याम॥

यद्यपि वे सारे साथी थे, अन्तर केवल क्षण ही क्षण था।
फिर भी पहला दुर्योधन था, दूसरा बन्धु दुःशासन था॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माता के दिन बीतने लगे, सच्चे सुख और विनोदों में।
एक ही साथ में सौ हीरे, भर दिये दैव ने गोदी में॥
छूटा जाता है यहाँ, अपना एक विचार।
बहुधा नर करते नहीं, यह घटना स्वीकार॥
वे कहते हैं चौबीस माह, गर्भ में न कुछ रह सकता है।
नीचे के बदले ऊपर को, पानी न कभी बह सकता है॥
फिर शिशु की जगह पिंड होना, टुकड़ोंसे बालक बनजाना।
यह इन्द्र-जाल की चरचा है, या मन-घढ़न्त ताना-बाना॥
मैं कहता हूँ शास्त्र पर, दो मत पानी फेर।
उस ईश्वर की सृष्टि पर, हुआ नहीं अन्धेर॥
कितने ही नये उपायों से, आज भी सृष्टि उपजाते हैं।
फिर पता नहीं क्यों ग्रन्थों के, नाहक पीछे पड़ जाते हैं॥
फिर प्रकृति–बद्ध तो दुनियां है, यह चरित्र प्रकृतिके बाहर है।
इसलिये यही कह सकते हैं, यह लीला पर भी निर्भर है॥
जन्म-अन्ध धृतराष्ट्र थे, शासन से लाचार।
दिया गया था पाण्डु को, इसीलिये अधिकार॥
एक रोज वन-भूमि में, गये पाण्डु नर–नाथ।
रहते थे उस ठौर पर, मुनि पत्नी के साथ॥
उस रोज दैव की इच्छा से, कुछ ऐसा भाव सवार हुआ।
छाया प्रसङ्ग का नशा फकत्, सब ज्ञान योग बेकार हुआ॥
पत्नी से बोले प्राण प्रिये, इस समय भोग की इच्छा है।
सज साज शीघ्र तत्परता से, मेरी इतनी ही आज्ञा है॥
मुनि पत्नी कहने लगी, है आज्ञा स्वीकार।
किन्तु परिस्थिति पर तनिक, करलीजियेविचार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन को, प्रभात को, संध्या को, संभोग बुरा बतलाते हो।
फिर आज जरा से चक्कर में, क्यों अब मर्याद डुबाते हो॥
आहार-नींद-भय-मैथुन में, नर पशु-समान कहलाते हैं।
केवल विवेक के बल ही से, नर उत्तम माने जाते हैं॥
उस ज्ञान और मर्यादा को, भगवान! न हाथ से दीजैगा।
दो-चार घड़ी की बात रही, थोड़ी ही शान्ति कीजैगा॥
क्या काम नई रोशनी करे, जब आठों पहर दिवाली है।
इतनी उतावली नाहक है, नारी तो घर की थाली है॥

मुनिवर बोले याद है, मुझको बुद्धि विवेक।
किन्तु काम के सामने, कायम रहे न एक॥

मेरी नजरों में वक्त नहीं, रङ्ग है न कोई बू भी है।
दुनियाँ सूनी है अन्धी है, मैं ही मैं हूँ तू ही तू है॥
जब कहीं आग लग जाती है, तब वक्त नहीं दिखलाता है।
केवल ज्वाला दिखलाती है, या पानी फकत सुझाता है॥

इस उमङ्ग में भङ्ग क्या, क्या गङ्ग की तरङ्ग।
इस अनङ्ग के रङ्ग में, सभी रङ्ग बदरङ्ग॥
मुनि-पत्नी ने फिर कहा, रहने दो मुनिनाथ।
मन को मन से जीतना, है मनुष्य के हाथ॥

आप ही मुझे बतलाते थे, जब काम-प्रेरणा दिखलाये।
तब ज्ञान-भावनायें लेकर, वह स्थल वहीं छोड़ जाये॥
कितनी ही योग क्रियाओं से, जब काम दमन होजाता है।
काम-जित आज कामी बनकर, फिर क्यों यहचरित रचाता है॥

मुनि बोले मन पर नहीं, सदा एक अधिकार।
घोर अन्धेरा है कभी, कभी ज्ञान अधिकार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह वह रस है जिसमें मिलकर, विष भी रसमा दिखलाता है।
नर खुद अन्धा हो जाता है, पर जग अन्धा दिखलाता है॥
जिसके मुँह से उफ! उठी नहीं, बज्रों से या शमशीरों से।
वह भी बेकल हो जाता है, रस-मय फूलों के तीरों से॥
सब जान चुका बस रहने दे, अब दे मत कोई ज्ञान मुझे।
आखिरी बार फिर कहता हूँ, दे प्रिये फकत् रति-दान मुझे॥
हाँ इतना मैं कह सकता हूँ, लौकिक-मर्याद निभाने को।
पशु-देह बनाकर भोग करूँ, लज्जा से पिंड छुड़ाने को॥

रति-निमग्न दोनों हुए, बना हरिण का वेश।
दैव-योग से भटक कर, पहुँचे वहीं नरेश॥

चञ्चल-चितवन, चौंकती चाल, फुर्ती के साथ खिंचावट भी।
भय मिली हुई निर्भयता भी, छल-बल में भरी लगावट भी॥
खटके के साथ खटक होना, फिर चौं नजरी बट-मारी की।
एक ही दशा दिखलाती है, व्यभिचारी और शिकारी की॥
आशा-मय उठती आंखों ने, उस जोड़े को निहार देखा।
या होनहार के पर्दे से, राजा ने वह शिकार देखा॥
धन्वे पर तीर चढ़ा ही था, कुछ जोड़ लगाकर छोड़ दिया।
जिसके रग-रग को तोड़-ताड़, जुड़ कर जोड़ेको फोड़ दिया॥

आये निज-निज वेश में, वे दोनों तत्काल।
चकित-थकित डरते हुए, जा पहुँचे नर-पाल॥

आह की राह से चीख लिये, दोनों दो तरफा तड़पाये।
क्षण भर दोनों देखते रहे, क्षण भर तक दोनों बिलपाये॥
रग-रग से विष बहते देखा, उन विषय-विषैली आँखों ने।
मौत का नशा बढ़ते देखा, नेह की नशीली आँखों ने॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रस-प्रिय की आंखें ठिठक गईं, उन निरस-रसीली आँखों में।
पत्नी की आँखें जा पहुँचीं, पिय की नशीली आँखों में ॥
देखा दोनों की आँखों ने, आगे वह गुनहगार देखा।
अथवा अधमरे शिकारों ने, आगे अपना शिकार देखा ॥

दोनों की मिलती हुई, उठी साथ ही आह।
सावधान ! चैतन्य हो, ओ पापी नर-नाह ॥

यह बाण और उस जोड़े पर, जो जीवन जोड़ मिलाता था।
यह ताप और उस तपसी को, जो दैहिक ताप बुझाता था॥
पाण्डु ने कहा हे दयाधाम, यह महिमा अगर ज्ञात होती।
तो इस सेवक से कभी देव ! ऐसी न कठोर बात होती ॥
यदि यह रहस्य जाहिर होता, तो प्रभु पर बाण चलाता क्यों।
असली भेद को समझ लेता, तो ऊपर आंख उठाता क्यों॥

फूल-फूल में हो गया, जीवन अपना धूल।
क्षमा-क्षमा निधि कीजिये, अनजाने की भूल ॥

मुनि बोले माना राजा को, खेलना शिकार सुहाता है।
लेकिन जोड़े को बध करना, कौन सा शास्त्र बतलाता है ॥
क्या जाने ? कैसी आशा में, हमने यह वेश बनाया था।
जीवन की प्यास बुझाने को, यह कैसा मेल मिलाया था ॥
अनरस की रस-मय योनि लिये, किस रस के रस में छाये थे।
दुनियां वाले हम तो अपनी, दुनियाँ ही अलग बनाये थे ॥
हमने भी प्रकृति विरुद्ध किया, इस कारण प्राण गँवाते हैं।
तू ने भी धर्म नीति तोड़ी, इस से फल पर पहुँचाते हैं ॥
रति-निरत गरीबों का जोड़ा, जोड़ के तोड़ पर ज्यों तोड़ा।
वैसे ही ओ जोड़े वाले !, मिट जाये तेरा भी जोड़ा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तड़प तड़प दम्पति हुए, भव सागर से पार।
पाण्डु-भूप भी भवन को, लौट पड़े मन मार॥

❀ गायन ❀

जनि जान अजान कि पातक कौ, दुरि है फल कै परभाव टरैगौ
भल ही फर जाय अनीतन कौ तरु, पै जर पात समेत झरैगौ
हर लै करलै अपने मनकी, हरि हैं जो कहूँ तोहि आप हरैगौ
ऋण है यह कर्मनकौ मन मूढ़, जो आज नहीं कल दैनो परैगौ

पाण्डु बैठ एकान्त में, करने लगे विचार।
आजीवन को हो चुका, यह जीवन बेकार॥

छत्तीसों व्यञ्जन धरे रहें, पर रोगी कब अधिकारी है।
हो राज्य मगर राजसी न हो, तो राजा नहीं भिखारी है॥
अपना मन तो यह कहता है, दो में से एक प्रयोग करो।
जीवन के योग्य यही दो हैं, या भोग करो या योग करो॥
यदि दो में से कुछ भी न मिला, तो हो तुम कौन कहां के रहे।
न हरी ही मिले न विलास किये, न यहांके रहे न वहांके रहे॥

❀ गायन ❀

यक ठाहर कौनहु ठाय रहे, उत शाल कुटीर इतै मधु-शाला।
अधरान कली के अली बनिये, कै भली विधि भोगिये जोग रसाला॥
कुचि कांचन कै रुचि पंचवटी, हिय माल मिलै कै मिलै हरि माला।
धिक् जीवन जा कहँ जीवनलौं, मृग नैन मिलै न मिली मृग छाला॥

हुए भोगने से विवश, पाण्डु भूप भव भोग।
योग भूमि को तब चले, साध योग का योग॥

जब पुरुष युवावस्था ही में, पुरुषत्व-हीन हो जाता है।
तो लज्जा के मारे केवल, उसको मरना दिखलाता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्यासी प्रेमिका सामने है, पर प्रेम-पात्रता रीती है।
उस दुख को वही जानते हैं, जिनके सर पर यह बीती है॥

अस्तु समझना चाहिये, यही पाण्डु का हाल।
भोग भाव योगी फवन, एक मीन दो जाल॥

दोनों रानी भी वहीं, पहुँची सुनकर गाथ।
कुन्ती ने कर जोड़ कर, कहा विनय के साथ॥

लीला धर की लीलाओं पर, चिन्ता की कौन जरूरत है।
जिस को बिगाड़ हम समझे हैं, वह तो बनाव की सूरत है॥
हो गया भोग का योग पूर्ण, पर हम जीवन-सहचारिण हैं।
नाता क्या केवल विषयों से, हम तो प्रेम की पुजारिन हैं॥
उन रोगोंमें जीवन काटा, भव-भोगों की भोगिन बन कर।
हे योगिराज अब हम दोनों, दिन काटेंगी योगिन बनकर॥
अब इस जीवन में घड़ी-घड़ी, इन चरणों का दर्शन होगा।
विषयोपासन हो चुका खूब, अब तो प्रेमोपासन होगा॥

पाण्डु राज कहने लगे, सुनो प्रियतमे बात।
इस घटना में दर असल, है मरने की बात॥

निश्चल पथपर चलने वाला, चल-चलकर सहसा बिचल गया।
अफसोस सदाव्रत वाले के, कोष का दिवाला निकल गया॥
जोड़ा-जोड़ा है त्यों त्यों कर, ना जाने क्या आशा रख कर।
रखना होगा अब पिंजड़े में, उस जोड़े को प्यासा रख कर॥
इस पर यदि यों सन्तोष करूँ, भावी का लेख न टलता है।
तो बतला पाण्डु-वंश आगे, अब किस प्रकार से चलता है॥
जिसके घर में दो बालायें, उस के कोई भी बाल न हो।
दो खानें जहां लाल की हों, भगवान् क्या उनके लाल न हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुन्ती बोली वंश की, चिन्ता करें न नाथ।
यह सारे व्यवहार हैं, एक दैव के हाथ॥
बालकपन में दुर्वासा ने, आकर्षण–मन्त्र सिखाया था।
एवं सन्तान–प्राप्ति ही को, उसका प्रयोग बतलाया था॥
आज्ञा हो तो आज ही नाथ, उसके प्रभाव को दिखलादूं।
खुद भी उसका प्रयोग करूँ, बहू माद्री को भी सिखलादूं॥
आज्ञा पाकर स्वामि की, किया मंत्र संचार।
हुआ धर्म आह्वान से, धर्मराज–अवतार॥
फिर पवन देव की शक्ती से, भट भीम महा-बल धार हुए।
इन्द्र के अंश से भक्त–मौर्य, अर्जुन भारत शृङ्गार हुए॥
अश्वनी देव के अंशों से, सहदेव नकुल प्रकटाये हैं।
वे परम-चतुर साहसी शील, माद्री के लाल कहाये हैं॥
जन्म से धर्म में शांति सत्य, सद्गुण का पूर्ण प्रवेश हुआ।
अर्जुन ने सुन्दर छवि पायी, भीम का भयानक वेष हुआ॥
सहदेव नकुल सुन्दर दोनों, बल विक्रम में साधारण थे।
हाँ इतना कहना पड़ता है, दैवी लीला के कारण थे॥
इस प्रकार से चल सका, वीर पाण्डु परिवार।
हम तो कहते हैं यही, प्रभु तुम पर बलिहार॥

❀ गायन ❀

तुम्हारी कलायें तुम्हीं जानते हो।
बुरे से वृथा ही बुरा मानते हो॥
उजागर तुम्हें बानगी हैं सभी तो।
किसे सोधते हो किसे छानते हो॥
चलो आज पहिचान ही हम करादें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बताओ किसे तुम न पहिचानते हो ॥
सुना देगा खुल-खुल के सारी तुम्हारी।
जो गोविन्द ही से बहस ठानते हो ॥

छोड़ दिया था पाण्डु ने, चिन्ता से सब भार।
दुर्योधन को इसलिये, मिला सभी अधिकार ॥

हम यह न कभी कह सकते हैं, दुर्योधन पाप-निधान ही था।
सच्चा था और प्रतिज्ञी था, गुणवान भी था विद्वान भी था॥
था स्वाभिमान इतना ऊँचा, जिसकी समता में प्राण न था।
हठ और किसी धुनके आगे, अन्याय न्याय का ध्यान न था॥

बाल रूप में थे अभी, पाण्डु राज के बाल।
इससे किसी स्वभाव पर, उठा न मुख्य सवाल ॥
एक रोज माद्री वहीं, कर मासिक स्नान।
बैठी थी शृङ्गार सज, वह छवि-रूप-निधान ॥

तिरछी कटाक्ष से बिन शिकार, तारों पर तीरन्दाजी थी।
थीं कलियां वहाँ उंगलियों पर, वन से यौवन की बाजी थी॥
दन्तावलि की लाली छिटकी, उजियाली लेकर गुञ्जों में।
थे हिरन हरे से खड़े हुए, सुरमई आंख की कुञ्जों में ॥
बिधु वदन झलकपरअलकढलक, अधिखिलेपलकछविछाईहै।
मानो नागिनी सुधा-सर से, यौवन-जल भरने आई है ॥
गम्भीर--भाव में चन्द्र-वदन, पहुँचे से पहुँचा लेता था।
मानों अंगूर बल्लरी पर, बिम्बा फल शोभा देता था ॥

बिना चन्द्र की चाँदनी, बनी हुई थी बाल।
आ पहुँचे संयोग-वश, वहीं पाण्डु भूपाल ॥

लग चुकी लगन थी लाख बार, लेकिन यों लगन न देखी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारहा प्रिया को देखा था, पर ऐसी फबन न देखी थी ॥
रुचिकर भोजन की भूखी को, भावी ने थाली लादी है।
या भिखमंगे की गुदड़ी में, वह स्वर्ग-लता प्रकटादी है ॥
चित के चैतन्य विचारों को, चितवन ने चकनाचूर किया।
उस वन की यौवन वाली ने, सब ज्ञान-ध्यान काफूर किया ॥
हत-काम-हृदय में काम-भाव, सहसा कामनी जगा बैठी।
उन बुझते हुए विकारों में, विप्लव की आग लगा बैठी ॥

काम ताप में उड़ गया, उस शाप का खयाल।
प्रिया-प्रिया कह कर बढ़े, उसकी तरफ नृपाल ॥

भँवरे की कलित कामनायें, कुसुमों पर बन्दी बनी रहीं।
उफ ! दगा ! ज्योति पहलूमें थी, पर आंखें अन्धी बनी रहीं॥
दी छिपा किसी ने महादेवि, धोखे से मुझे निकाल दिया।
इस अरमानों से भरे हुए, मुँह पर भी ताला डाल दिया ॥
जीवने ! जोबने ठहर तनिक, जो बने आज जीवन फलदे।
प्रेमिके ! प्रेम के प्यासे को, रति रस से मिला प्रेम जल दे ॥

नजरों के जुड़ते जुड़ा, जोड़ जोड़ के साथ।
पकड़ लिया प्रिय ने वहीं, प्राण प्रिया का हाथ ॥

अलसाती हुई चञ्चला ने, अञ्चल के छोर उछाल दिये।
कुछ घूंघटके पटको संभाल, अमृत घट तनिक निकाल दिये॥
जीवन की बीहड़ बस्ती में, चाहत का एक चिराग मिला।
वीराने की वैरागिन को, फिर से आशा का बाग मिला ॥
फुरी लेकर कुछ वदन हिला, सुख पाती सी सुख-दानि उठी।
पहुँचे तक पहुँची तनिक बांह, सकुचानी सी मुसकान उठी ॥
राजा जी दिल से रुके न थे, रानी ने उन्हें न टोका था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानो भङ्ग की उमङ्गों में, पहली तरङ्ग का झोका था ॥
किन्तु ज्ञान से होगई, पहली लहर तमाम ।
साफ नजर आने लगा, वह भीषण परिणाम ॥
त्यों ही बीच-बचाव कर, चतुराई के साथ ।
भाग चली अधबीच से, प्रिया छुड़ा कर हाथ ॥
ऐसी उमङ्ग के रङ्गों में, रङ्ग में भङ्ग हो जाय नहीं ।
तो वास्तव में इसके आगे, बज्र की चोट कुछ चीज नहीं ॥
उड़ गई बिखरकर स्वांति-बूँद, चातक के मुख जाते-जाते ।
कौड़ी की रकम न हाथ रही, दैवी सम्पति आते-आते ॥
प्रेम की एक फुलझड़ी मार, प्रेमिका झिड़क कर चली गई ।
मरहमके बदले जख्मों पर, कुछ नमक छिड़क कर चलीगई ॥
यद्यपि पड़ना चाहिये, इसका बुरा प्रभाव ।
पर उलटा हो चुका था, उस भावी का भाव ॥
उस बीच बचावे को नृप ने, काम का एक कौतुक माना ।
या हाथ छुड़ाकर जाने को, चाह का चोचला पहिचाना ॥
रिस-रिस कर भी रस देता है, जब प्रेम पुराना होता है ।
वह दुनियाँ खूब जानती है, प्रेमी दीवाना होता है ॥
दौड़ झपटकर प्रिया का, पकड़ लिया फिर हाथ ।
शीश नाय कहने लगी, देवि विनय के साथ ॥
मैं मेरा तन मेरा यौवन, किस दिन प्रभु पर बलिहार न था ।
आज भी मुझे इनकार नहीं, पहिले भी कुछ इनकार न था ॥
यौवन या बादल की छाया, पहिले कुछ थी या अब कुछ है ।
इस पर जीवन मत नाश करो, यदि जीवन है तो सब कुछ है ॥
जीवन से केवल काम जोड़, परमार्थ शेष सध जायेगा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोबन कुछ काम स्वाद देकर, पीछे बेकाम बनायेगा ॥
इस धन के साथ बिलायेंगी, आशायें सारे साधन की ।
इस लिये विनय है महाराज, कीजिये कद्र नर-जीवन की ॥

जिसके पीछे राज्य गृह, छोड़ दिया परिवार ।
उस जीवन को क्षणिक में, करो न प्रभु बेकार ॥
सहस-स्वर्ग सुख भी नहां, इस तुलना की तोल ।
सुर मुनि से अनमोल है, नर जीवन का मोल ॥
नृप बोले सब याद है, पर न रहा अब ज्ञान ।
आ पहुँचा है शीश पर, भाव चक्र प्रधान ॥

त्रैलोक सम्पदा धरी रहे, पर मन न मिला तो कुछ न मिला ।
जीवनमें सरवर मिले मगर, यौवन न मिलातौ कुछनमिला॥
दो वस्तु एक पल्लड़ में हैं, तन का सुख या मन का साधन ।
दो रत्न नजर के आगे हैं, नीरस जीवन रस मय जोबन ॥
लेकिन जब रस की घड़ियों पर, दोनों को साथ उठाता हूँ ।
तो जीवन से इस यौवन का, पल्ला कुछ भारी पाता हूँ ॥
जोवन जीवन जब नश्वर है, दोनों को कभी नसाना है ।
जीवन जाने को जाता है, पर जीवन स्वाद न पाता है ॥

बह जाता है एक दिन, जीवन प्रबल प्रवाह ।
क्यों रहजाये तो वृथा, दिल की दिल में चाह ॥

❀ गायन ❀

जिन्दगी कब तक संभाली जायगी ।
एक दिन कमली बिछा ली जायगी ।
हसरतों के हाथ फैले जायेंगे ।
लाश जब घर से निकाली जायेगी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शाह दिल ! मत सोच तेरे रौब से
बेकसों की आह खाली जायगी ॥
मान लो मानी न हमने वह खुशी
हाथ से फिर भी दिवाली जायगी ॥
खाक मुसकायेगा गुल ? उस रोज तू
आयेगी पतझाड़ लाली जायगी ॥
कर चलो गोविन्द जो अरमान हो
फिर कहीं बस्ती बसाली जायगी ॥

आया था प्रत्यक्ष ही, महा मृत्यु का योग ।
प्रकट हुआ था इस लिये, भोग रूप में योग ॥

भोग का योग आते-आते, आ पहुँचा काल करीने से ।
बह चले पसीने में मिलकर, वे प्राण पखेरू सीने से ॥
यक तड़प लिये बिजलीदौड़ी,घनजीवन सहित विनाशहुआ।
मानो उस बुझते दीपक का,वह अन्तिम बार प्रकाश हुआ ॥
आँख में आँख मिलते-मिलते,आप ही प्रबाहित नीर हुआ ।
जागृत ज्योति सी जगा करके,जीवनको शान्त शरीर हुआ॥
अनुराग-राग का बाग जला, वैराग्य एक आग लेकर ।
बिधवा बन गई माद्री भी, अन्तिम दिन का सुहाग लेकर ॥

महा बज्र बन कर पड़ा, शोक-विरह का वार ।
बिलख उठीं वह रानियां, चीख उठा परिवार ॥

राज-महल में जिस समय, पहुँचा वह संवाद ।
फैला बिजली की तरह,दारुण-विरह-विवाद ॥

धृतराष्ट्र पुकारे आह आज, अन्धे का बाजू टूट गया ।
भीष्म ने कहा शान्तनु कुल का,पतवार यकायक छूट गया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौरव पाण्डव गान्धारी क्या, विह्वल होकर परिवार उठा।
घर से ही क्या ? नगरी भरके, दर–दर से हाहाकार उठा ॥

पाण्डु-राज की की गई, अन्तिम क्रिया प्रमाण।
लौकिक-वेद-विधान से, दिया गया रुचि-दान ॥

छूट गई कुछ रोज में, माद्री की भी देह।
लगी पालने सुतों को, कुन्ती सहित सनेह ॥

ले आये घर पर उन्हें, भीष्म बंधा कर धीर।
महलों में रहने लगे, कुन्ती पाँचों वीर ॥

कौरव-पाण्डव का मिला, जोड़ एक ही ठांव।
किन्तु कहाँ कब मिल सके, दो विपरीत स्वभाव॥

यों तो सारा ही पाण्डव दल, कौरव के गले अटकता है।
खासकर भीम दुर्योधन को, कांटों की तरह खटकता है ॥
कारण सम्पूर्ण कौरवों का, गिन-गिन कर नशा उतारता था।
जब खेल अखाड़ा होता था, तब बाजी यही मारता था ॥
कौरव पेड़ों पर चढ़ते थे, नीचे से भीम हिलाता था।
तो पके फलों की तरह वहीं, ढेर सा लगा दिखलाता था ॥
रगड़ा देकर कुछ रगड़ दिये, कुछ के रग पट्ठे तोड़ दिये।
बस पकड़ लिया दुर्योधन को, बाकी कचड़ा कर छोड़ दिये ॥
यह उनके पीछे पड़ा हुआ, वह हरदम इनकी ताक में था।
सारांश भीम ही के मारे, दुर्योधन का दम नाक में था ॥
खेल ही खेल में किसी रोज, इतना झगड़ा बढ़ जाता था।
जो भीष्म और धृतराष्ट्र बिना, कोई न चुकाने पाता था ॥

आततायियों ने किया, निश्चय एक उपाय।
पण्डे से मिलकर दिया, बिष भीम को खिलाय ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष का प्रभाव होते होते, भट को मूर्छा सी आने लगी।
या यों कहिये झपकी देकर, कुछ होनहार मुसकाने लगी॥
रुकगईश्वांस तनशिथिल हुआ,आंखोंने ओज निकालदिया।
पापी ने पाप छिपाने को, भीम को नदी में डाल दिया॥
नर अपने स्वार्थ और मद में, तनकी भाई कर जाता है।
अथवा लीलाधारी अपनी, लीला में उसे नचाता है॥
विद्वान इसी को कहते हैं, नर का विचारना कच्चा है।
अच्छा क्या? हरि की इच्छा है, जो दैव करे सो सच्चा है॥

बहते बहते लाश वह, जा पहुँची पाताल।
बहा जा रहा था वहां, वह कुन्ती का लाल॥
नाग सुता भी उस समय, गङ्गाजी के तीर।
भोग रही थी शान्तिमय,सुन्दर सुरुचि समीर॥
दीख पड़ा वह भीम का, बहता हुआ शरीर।
उसी समय वह लाड़ली, गई पिता के तीर॥

हे तात आज गङ्गाजी में, सुन्दर शव बहा जा रहा है।
साथ ही साथ में याद मुझे, शिव का वरदान आरहा है॥
है ज्ञात आपको किसी समय, मैं शिव का पूजन करती थी।
नव विल्व-पत्र नव पुष्प सदा, शम्भुको समर्पण करती थी॥
एक दिन पत्र या पुष्प मुझे, मिल सके न थे देव के लिये।
इस कारण मैंने बासी ही, फल-फूल नाथ पर चढ़ा दिये॥

उसी समय होकर प्रकट, बोले शिव भगवान।
देवी अपने हाथ से, उलटा भाग्य-विधान॥

तू नहीं जानती है शीले, जो बासी फूल चढ़ाती है।
वह मुर्दा फूलों की नाईं, मुर्दा ही स्वामी पाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या करूं जरासी गलती ने, जीवन कर दिया तबाह तेरा।
बेटी इसके बदले होगा, मुर्दे के साथ विवाह तेरा॥
मैं बोली यक बार की, भूल बन गई शूल।
किन्तु कहां को जायेंगे, सहस बार के फूल॥
इस गलती पर चढ़ गया क्रोध, तो फूलों पर दाया कीजै।
इस अभागिनी के लिये देव, कुछ द्वारा और लगा दीजै॥
शिव बोले वर हो चुका तुझे, मुर्दा स्वामी ही पायेगी।
हाँ, वह जीवित होजायेगा, जो अमृत उसे पिलायेगी॥
शायद फलता है वही, तात! आज वरदान।
बहता जाता है मृतक, सुन्दर रूप निधान॥
वह हृष्ट-पुष्ट, बल-शाली है, शायद छल-बल का मारा है।
दिल कहता है हे पूज्य पिता, भावी-दामाद तुम्हारा है॥
यदि आज्ञा हो तो यह दासी, उस को गङ्गा से ले आये।
जो उचित लगे तो उसही से, फिर शादी भी करली जाये॥
आज्ञा पाकर भीम को, नाग-सुता हर्षाय।
ले आई निज महल में, अमृत दिया पिलाय॥
अमृत-बूंद के साथ ही, उठे भीम कर वाह।
हुआ प्रेम के साथ में, उनका प्रणय-विवाह॥
थे अमृत-कुण्ड भी उसी जगह, जिसके तक्षक रखवाले थे।
उसको देखकर भला भटवर, भीम कब छोड़ने वाले थे॥
पी लिया अमृत, जी भर मारा, भट ने उनके रखवालोंको।
करदिया बराबर तोड़-ताड़, नागों के कुञ्जी तालों को॥
की जाकर तक्षकों ने, शिव के पास पुकार।
शम्भु-भीम की परस्पर, हो बैठी धर-मार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भङ्ग के तरङ्गी भिड़ बैठे, कुन्ती-नन्दन, रण-रङ्गी से।
या अर्द्धांगी का समर छिड़ा, उन पवन पूत बजरङ्गी से॥
शूलों से छेद-छेद भटका, छलनी शरीर कर डाला है।
भीम भी गदाधर बांका है, कुन्ती माता का पाला है॥

सहे बार पर बार पर, देता रहा दहाड़।
आखिर को भट का उदर, दिया शम्भु ने फाड़॥
चीर फाड़ कर भीम को, अमृत लिया निकाल।
तथा लाश को क्रोध में, दिया भूमि पर डाल॥
किन्तु उमा को भीम पर, आया तरस विशेष।
हाथ जोड़ कहने लगी, हे अवढर करुणेश॥

इस महावीर ने कुण्डों से, अमृत ही तो पी डाला है।
प्रभु ने उसका पेट फाड़, भक्तों का काज सँभाला है॥
यह न्याय उचित है दयाधाम! पर इतनी विनय हमारी है।
इसके पीछे वह नाग-सुता, बिधवा हो गई बिचारी है॥
वह न्याय होचुका न्याय मूर्ति, अब दिव्य दया की बारी है।
उस महा पुरुष की मृतक-देह, प्राणों के लिये भिखारी है॥
वह गिरजा जी के विनय वचन, श्रीशङ्करजी के मन भाये।
सीं दिया चाम बस उस दिन से, भट भीम वृकोदर कहलाये॥

किया वहां से भीम ने, उसी समय प्रस्थान।
यहां विरह में बन्धु गण, थे बेहद हैरान॥

था चन्द्र न पंच सितारोंका, पाण्डव कुल का कुलपाल न था।
थी बांह न वीर-बन्धुओं की, माई का प्यारा लाल न था॥
मरते थे विरह वेदना में, पर कोई दवा न मिलती थी।
फिरते थे सभी हवाई में, पर उनकी हवा न मिलती थी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काबू भर छान जहान लिया, हो सका जहाँ सन्धान किया।
पर मिलनसकी जब खोज कहीं, तब उनका मरना मानलिया॥
उन दिनों परस्पर जाहिर में, उनका कुछ कम स्नेह न था।
इसलिये दुष्ट-दुर्योधन पर, हत्या का कुछ सन्देह न था॥

विलप-विलप कर मां दुखी, काट रही थी काल।
एक बारगी सामने, आ पहुँचा प्रिय लाल॥
मिले परस्पर बन्धु गण, रही मातु लपटाय।
कह विनीति आनन्द से, जय श्री यादवराय॥
राज-महल में था बना, शिव मन्दिर रुचिकार।
रानी ही को था वहाँ, पूजन का अधिकार॥

पहले रानी-पद के कारण, कुन्ती उसकी अधिकारी थी।
अब दुर्योधन के शासन से, उसकी मालिक गान्धारी थी॥
फिर भी कुन्ती पूर्व की भांति, शिव पूजन को जाती थी।
लेकिन उसकी गान्धारी से, भेंट भी न होने पाती थी॥

एक रात संयोग से, उनका हुआ मिलाप।
गान्धारी को चढ़ गया, राज-मान का ताप॥

झुँझलाकर बोली क्यों कुन्ती, जब रहा न दावादार तेरा।
फिर भी शिवजी के पूजन का, रह गया शेष अधिकार तेरा॥
क्या तुमको यह मालूम नहीं, मन्दिर है राज-रमणियों का।
रानी की चित्रसारियों में, क्या है अधिकार चेरियों का॥
कुन्ती बोली री गान्धारी !, यह घर है देव पुरारी का।
जिसमें समान हक होता है, राजा का और भिखारी का॥
फिर कितने दिन से गान्धारी, रानीपन का दम भरती है।
सच है देवर की थैली पर, भावज शर्राफी करती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ गान्धारी बोली ❀

यदि अन्धे होते नहीं, मेरे जीवन नाथ।
तो आता किस भांति से, यह पद तेरे हाथ ॥

कुछ दिन का पुण्य पांडु का था, अब उतर चुका वह छप्पर है।
या यों समझो हकदारों को, वापिस मिल गई धरोहर है ॥
दो दिन की उसी धरोहर में, अपने को रानी कहती है।
बावली निकल चल बाहर हो, किसके गुमान में रहती है ॥

बात–बात में बढ़ गई, इस दरजे की बात।
आपस में चलने लगी, थप्पड़ घूसा लात ॥
उनके बीच-बचाव को, प्रकटे शिव भगवान।
सावधान करते हुए, बोले ज्ञान-निधान ॥

मूर्खाओ मेरे कारण क्यों, निष्कारण यहां झगड़ती हो।
क्या धन की नाईं मुझको भी, अपनी जागीर समझती हो॥
यों तो मैं उनका चेरा हूँ, जो सच्चे मेरे चेरे हैं।
अन्यथा देव–पद के नाते, मैं सब का हूँ सब मेरे हैं ॥
है रोक न ब्राह्मण, शूद्रों को, है छेड़ न कुछ नर-नारी को।
जो हक है यहां नरेशों को, वह हक है एक पुजारी को ॥
सत्संग और श्रद्धा द्वारा, झूठे भावों को निकला दो।
जो भक्ति मुझे वश करती है, वह भक्ती करके दिखला दो॥
लो आज एक जांच ही सही, जो स्वर्ण पुष्प ले आयेगी।
आगे चल कर उस देवी की, सन्तान राज्य पा जायेगी ॥

यह सुन कर दोनों चलीं, उन्हें झुका कर माथ।
गान्धारी ने पुत्र से, कहा गर्व के साथ ॥

मेरे सुवीर ! शङ्कर जी ने, सोने के सुमन मँगाये हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं उनके देने का भी, हम इन्हें वचन दे आये हैं ॥
दुर्योधन बोला क्या चिंता, सब स्वर्णकार बुलवायेंगे ।
स्वर्ण ही नहीं रत्न के कहो, तो सुबह ढेर लग जायेंगे ॥
आज्ञा पाकर स्वर्णकार आये, स्वर्ण के सुमन तैयार हुए ।
जिसकी शोभा निहार करके, खुद शिल्पकार बलिहार हुए॥
माता बोली बेटा इनकी, शोभा दर असल निराली है ।
केवल इतनी ही कसर रही, हर फूल गन्ध से खाली है ॥
इसलिये बुला कोई गुणिया, जो इतना हुनर दिखा जाये ।
हर पंखड़ी कोमल पड़ जाये, फूलों में गन्ध समा जाये ॥

दुर्योधन कहने लगा, अब न पचाओ माथ ।
गन्ध फूल में डालना, है कुदरत के हाथ ॥

पंखड़ियां दूनी बढ़वादूं, हीरे पन्नों से जड़वादूं ।
चौगुनी बनावट करवादूं, पर गन्ध कहां से भरवादूं ॥
लेजा माता ! ना कुछ से तो, कुछ का होना ही बहतर है ।
उस कुन्ती के भिखमंगों से, इतना होना भी दूभर है ॥

गान्धारी लेकर उन्हें, इक टक रही निहार ।
कुन्ती बेचारी वहाँ, लेट रही मन मार ॥
आये घर पर जिस समय, पाँचों पाण्डव वीर ।
दी आवाजें मात को, खटकाई जञ्जीर ॥
पर कुन्ती ने शोक वश, दिया न उस पर ध्यान ।
आपस में कहने लगे, तब पाँचों अनुमान ॥

हे बन्धुजनों ! हम से कोई, अपराध बड़ा बन आया है ।
इसलिए आज माता जी ने, दरवाजा बन्द कराया है ॥
इसलिये पुकारो एक साथ, मांग कर क्षमा हा-हा खाओ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोकर चिल्ला कर जैसे हो, पहले दरवाजा खुलवाओ ॥
अन्त में परस्पर मिल-जुल कर, हाहामय एक पुकार पड़ी ।
प्रिय-प्रेम-शपथ से पगी हुई, उन कानों तक झनकार पड़ी ॥
मन मारे कुन्ती ने उठ कर, द्वार के किवाड़े खोल दिये ।
वे प्रणम-प्रेम के पांच पुष्प, मन की तोल ने तोल दिये ॥

तब तक अर्जुन ने कहा, है माता क्या राज ।
आज चीखते-चीखते, बैठ गई आवाज ॥

कुन्ती बोली कुछ राज नहीं, किस्मत खुद साज बजाती है ।
बेटा ! जो कल को रानी थी, वह भिखमंगी कहलाती है ॥
तुम हो भिक्षुक के भिक्षुक, वे अधिकारी के अधिकारी हैं ।
हे तात कलेजा चीर रहे, यह व्यंग-वचन गान्धारी के ॥
वे सौ हैं तुम हो पाँच फकत, क्या काबू वहां तुम्हारा है ।
इसलिये भोगना पड़ता है, जैसा कुछ भाग्य हमारा है ॥

अर्जुन बोले भूल जा, मां ! यह झूठे भाव ।
क्या तुझको जाहिर नहीं, इन पांच का प्रभाव ॥

यह पञ्चमुखी शङ्कर समझो, सौ गण समान कौरव-गण हैं ।
क्या डर हो गोल गीदड़ों का, पांडव जन तो पंचानन हैं ॥
पञ्चों का और जाह्नवी का, दुनियाँ में मान बराबर है ॥
पञ्चों का हाथ स्वर्ग तक है, पञ्चों में ही परमेश्वर है ॥
पञ्चों को माता कम न मान, हैं अनी सृष्टि के नेजे की ।
आने दे समय कभी अम्बे, कर दूंगा दवा कलेजे की ॥
कुन्ती बोली प्यारे पंचो, पंचायत का तो काज ही है ।
जो समय ढूंढ़ते फिरते हो, वह समय सुपूत आज ही है ॥
मांगे हैं शिव ने कमल-पुष्प, मुझ से एवं गान्धारी से ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह काम कहो कैसे होगा, दुखियारी अवला नारी से ॥
तुम सब हो मगर निरे बच्चे, वे सौ हैं सभी सयाने हैं।
उत्साही और उद्यमी हैं, सुख सम्पति के दीवाने हैं ॥
ले आयेंगे फूल वे, शिव देंगे वरदान।
राज्य यहां का करेंगे, वही दुष्ट शैतान ॥
कल को मैं रह जाऊंगी, भर कर लम्बी सांस।
तुम को बनना पड़ेगा, अब जीवन भर दास।
अर्जुन बोले–उफ! जरा बात, जिसको इतना पछताती है।
थोड़े से फूलों का सवाल, इतना मुहाल बतलाती है ॥
शान्ति से बैठ माता घर में, घर में ही पुष्प बुला दूंगा।
शिव ही को क्यों शिव मन्दिर तक, उन फूलों से छा डालूँगा॥
झट कुबेर के बाग पर, छोड़े भट ने तीर।
स्वर्ण–सुमन से छा गई, शिव की शान्ति कुटीर॥
दिया शम्भु ने प्रात ही, कुन्ती को वरदान।
भारत में शासक बनें, पांडव नीति-निधान ॥
फूलों सा कलेजा फूल गया, उन दीनों की महतारी का।
मिल गई धूल में फूल उधर, मुँह उतर गया गान्धारी का॥
मन के मलीन वे मन मोहन, मोहित मानस के रस में हैं।
जानलो जानने वालो बस, भगवान भक्त के वश में हैं ॥

❀ गायन ❀

रह जाय अवाज सुबाजन की, जु गरीब की बाज अकाशलौ गाजै।
उठि जाय महा अधिराज कौ राज, गरीब जु गोल सौं लेपन राजै ॥
ठहराय गरीब कौ पौन अपोच, गरीब को सो असोच समाजै।
मन सोच विमोचन कौ जप सोच, गरीब की लाज गरीब निबाजै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौरवों पाण्डवों का बाल जीवन

अपनी बीती भीम ने, कह डाली सब खोल।
तब कपटी कौरवों की, खुली ढोल की पोल॥

भीम तो उबाल खा रहे थे, बोले अब मजा चखाता हूँ।
उसने धोखे से मारा है, मैं जाहिर ही निबटाता हूँ॥
सुर धाम उन्हें पहुँचा डालूँ, पीछे जी भर विश्राम करूँ।
इस एक जान के बदले में, उन सौ का काम तमाम करूँ॥
कुन्ती बोली कुछ लाभ नहीं, पहले ही रार बढ़ाने में।
सुख और दुःख बैर या प्रीति, छिप सकती नहीं छिपाने से॥
यह सच है खल दुर्योधन से, बढ़ कर कोई शैतान नहीं।
लेकिन उसकी इस करनी का, कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं॥

पहले से कुछ इसलिए, करो न झगड़ा लाल।
हाँ उससे बच कर रखो, अपनी आप संभाल॥
दुर्योधन को जिस समय, मिला भीम का हाल।
प्रगट हो गई हृदय में, बुझी हुई वह ज्वाल॥
लगा सोचने नाश का, फिर कुछ नया उपाय।
किन्तु न कुछ भी कर सका, उनका कौरव राय॥

कारण ? कौरव पाण्डव दोनों, पड़ गये दूसरी उलझन में।
या समय फूट का बीत चला, आप ही पठन और पाठन में।
वाचक गण इनके पढ़ने का, पीछे प्रसंग बतलाऊँगा।
हाँ, द्रोणाचार्य विप्रवर की, पहिले गाथा समझाऊँगा॥

भारत में विख्यात थे, द्रोण वीर बलवान।
शस्त्र-शास्त्र के साथ ही, थे सब नीति निधान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे परम-स्वतन्त्र सुखी हो कर, अपना परिवार पालते थे।
लोभ या स्वार्थ की आशा में, दर-दर न सवाल डालते थे॥
पर विश्व-विजेता होकर भी, जय नहीं प्रकृति पर पाता है।
या यों कहिये परिवर्त्तन का, कुछ समय सभी पर आता है॥

आता है जब प्रकृति का, कठिन परीक्षा काल।
ले जाती है तब विदा, नीति बुद्धि की चाल॥

लाखों उपाय कर नर यों ही, विज्ञान ज्ञान जतलाता है।
पर एक प्रकृति के झोके में, सब गुण मिट्टी हो जाता है॥
रोग की दवा ज्योतिष का फल, यह रेल तार की जञ्जीरें।
दैवी घटना के घटते ही, रह गईं पड़ी सब तदबीरें॥

पड़ा द्रोण के प्रान्त में, ऐसा विकट अकाल।
जड़ें न पृथ्वी में रहीं, बची न तरु की छाल॥

दो बरस न जल की बूंद पड़ी, जड़बन्द शाहु भी बिचल पड़े।
दर वाले दर-दर भटक उठे, घर छोड़ अकाली निकल पड़े॥
मर गये मवेशी तड़प-तड़प, कुछ मार काट कर खा डाले।
कुछ मार-काट कर आपस में, मर बैठे मार काट वाले॥

दल के दल सब चल पड़े, समझ पड़ी जो राह।
द्रुपद-राज में द्रोण को, नजर पड़ा निर्बाह॥
जा पहुँचे दरबार में, लिये साथ परिवार।
द्रुपद-राज ने भी किया, गुरुवर का सत्कार॥

बोले इन चरणों ने आकर, कर दिया पवित्र धाम मेरा।
नगरों से बाजी मार गया, हे द्विज वर आज ग्राम मेरा॥
लेकिन यह समय मिला कैसे, जन सौभाग्य बढ़ाने का।
हे देव कहो कारण क्या है?, कुटियों में कष्ट उठाने का॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा द्रोण ने भूप है, मतलब का संसार।
कब जाता है कौन नर, बिना स्वार्थ पर द्वार॥
चेला गुरु के घर जाता है, रोगी वैद्य की दुकानों पर।
भूखे कंगाली जाते हैं, श्रीमानों पर धनवानों पर॥
मेरी भी उन में गिनती है, खल दुर्भिक्ष का सताया हूँ।
इसलिये आज परिवार लिये, तेरी शरणागति आया हूँ॥
भूखे को प्रश्न न उठता है, मिलती है मोटी या खोटी।
दो चीजें केवल मिला करें, तन भर कपड़ा मुँह भर रोटी॥
जो मुझ से दान अनाथों को, हो जगह यहां तो बिठलादे।
गुञ्जायश अगर न हो राजन्, तो सीधी मुझको आज्ञा दे॥

कहा द्रुपद ने शान्ति से, रहिये श्री गुरुराज।
द्विज सेवा गुरु-वर मिलन, एक पंथ दो काज॥

रोटी की और सम्पदा की, कब चाह हुई गुणवानों को।
लक्ष्मी खुद पूजा करती है, विद्वानों को बलवानों को॥
रहिये गुरुवर निश्चिन्त यहां, जनता को एक सहारा है।
गुरुवर विद्या की जानिब से, अन्धा सा नगर हमारा है॥
इस कारण घर ही समझ इसे, सानन्द निवास कीजियेगा।
हे स्वामी अपने शिष्यों को, कुछ विद्या दान दीजियेगा॥

द्रुपद राज में इस तरह, गुरु ने किया निवास।
मिला राज्य की ओर से, उनको पूर्ण सुपास॥
खेल रहा था एक दिन, कहीं द्रोण का लाल।
बच्चों में पैदा हुआ, तब दूध का सवाल॥
अश्वत्थामा भी गया, अपनी माँ के तीर।
मचल-मचल कर क्षीर को, लगा खींचने चीर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोले बालक को पता कहां, कैसे ? क्या ? काम चलरहा है।
जाता है समय किलोलों में, या रो कर वक्त टल–रहा है ॥
मिल जाँय रोटियां खाने को, मां की गोदी हो तख्त जहां।
हों बालक साथ खेलने को, तो उन नजरों में स्वर्ग कहां ॥
ऐसे बच्चे का जीवन तो, केवल किलोल में जाता है।
या खेल कूद दिखलाता है, या कभी मचलना आता है॥
लेकिन यह माता से पूछो, उसको किस तरह मनाती है।
उसकी अनुचित या उचित मांग, किस भांति चुकाई जाती है॥
वह कृष्णचन्द्र का रह–रह कर, मचलना चन्द्र खिलौने को।
यशुदा मैया का जतन सहित, समझाना अपने छौने को ॥

मां बोली बेटा ! नहीं, अपने घर में गाय।
हो सकता है क्या यहां, फिर दूध का उपाय ॥

बेटे ने कहा उपाय नहीं, तो पहले एक उपाय बना।
बेकार समय मत खो मैया, दूध को बना या गाय बना ॥
मां समझ गई समझेगा कब, हठवादी यों समझाने से।
मन माना मानी अज्ञानी, मानेगा किसी बहाने से ॥
चुप चाप उठी आंसू पी कर, थोड़े से चांवल धो लाई।
उस का धोवन लाड़ सहित, उस लाल लाड़ले को लाई ॥

द्रोण-लाल को उन दिनों, थी इतनी न तमीज।
दूध जगत में दर असल, होती है क्या चीज ॥
श्वेत–रंग का नीर वह, किया प्रेम से पान।
धोवन की या दूध की, कर न सका पहिचान ॥

पर राज भोज में एक रोज, दूध की उसे पहिचान हुई।
आ पड़ी नई मुश्किल सिर पर, पहली मुश्किल आसान हुई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तो प्रति-दिन अश्वथात्मा, दूध ही दूध चिल्लाने लगा।
आगया नाक में दम मां का, वह नटखट द्वन्द मचाने लगा॥
करती है असर नहीं उतना, वस्तु की कमी खुश हाली में।
जितना वह असर दिखाती है, भलमनसी की कङ्गाली में॥
दिल को समझाना पड़ता है, दिल ही में खुद भर कर जीकर।
मन मार लिया जाता है, यों मर्यादा के आंसू पीकर॥

कहा अन्त में द्रोण से, पत्नी ने वह हाल।
देव! दूध के वास्ते, हठ करता है बाल॥

बालक को वीर बनाना है, पर घी-दूध की सफाई है।
जो हानि लाभ कर सकती है, वह इस उम्र की खिलाई है॥
इसलिये कृपा कर एक गाय, राजा से आज मांग लीजै।
इस आठ पहर की चक चकसे, दासी को नाथ छुड़ा दीजै॥

कहा द्रोण ने सुवदने, है यह नीति प्रमाण।
बार-बार की मांग से, होता है अपमान॥

राजा, योगी, जल, अग्नि, शस्त्र, वेश्या, बन्दर, पर नारी है।
विश्वास मान प्यारी! इनकी, धोखे दारी की यारी है॥
क्या हुआ अगर धन-धाम नहीं, द्वारे पर राज-नकीब नहीं।
उनसे तो फिर भी अच्छे हैं, रोटी भी इसे नसीब नहीं॥
जो कुछ भी हमें मिल रहा है, काफी है अपने जीवन को।
क्या काम व्यर्थ आयोजन का, सन्तोष चाहिये ब्राह्मण को॥
पौधे में पुष्टि नहीं आती, पत्तों की फकत सिंचाई से।
बच्चे बलवान नहीं होते, घी शक्कर दूध मलाई से॥

यदि बालक साधन करे, ब्रह्मचर्य, व्यायाम।
तो भाजी भूसी करे, घी शक्कर का काम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्यथा उन्हें घी शक्कर क्या, संजीवनी-मूरि खिलाया करो।
पहना दो अक्षय कवच आदि, अमृत के घूंट पिलाया करो॥
छुटपन की मगर कुटेवों में, जँचता घी-शक्कर किस पर है।
पूंजी जुड़ने की आशा क्या, अब आमद खर्च बराबर है॥
मैं समय समझ कर राजा से, गौ का भी प्रश्न उठाऊँगा।
दो-चार रोज सन्तोष करो, दूध का क्लेश मिटाऊँगा॥

अवसर पाकर नृपति से, कहा द्रोण ने हाल।
पर कुछ अनरस भाव में, कहने लगे नृपाल॥

द्विजराज! अगर देते-देते, बढ़ता जाता भण्डार कहीं।
तो एक गाय क्या हाथी भी, दे देने में इनकार नहीं॥
पर प्रभु आप ही जानते हैं, यह राज्य बहुत मामूली है।
जितना ही खर्च साल का है, उतनी ही यहाँ वसूली है॥
अफसोस! आज मेरे द्वारा, बेकार हुई फरमाइश है।
गुरुराज! बहुत लाचारी है, गाय की नहीं गुञ्जाइश है॥
अब तो हर जगह बहारी है, वैसी अकाल की घात नहीं।
देखिये दूसरा रजवाड़ा, इसमें मलाल की बात नहीं॥

निकली जब द्रुपदेश के, मुँह से ऐसी बात।
द्रुपद-राज में फिर उन्हें, कटी न अगली रात॥
भरा हुआ जिस हृदय में, सत्य आत्म-अभिमान।
वे सह सकते हैं कहां, इस प्रकार अपमान॥

हैं प्राण आत्म अभिमानी के, बात की तोल तुलने वाले।
वे जीव नहीं हैं रह-रह कर, द्विविधा-भय में घुलने वाले॥
काल भी उन्हें भय दिखलाये, पर छोड़ विवेक नहीं सकते।
यों कट जाये तो कट जाते, पर माथा टेक नहीं सकते॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है हृदय स्वत्व-गुण का सागर, गो हाथ द्रव्य से सूना है।
रे हृदय! देख यह भारत के, भिक्षुक का एक नमूना है॥

कौरव राज स्थान में, जा पहुँचे गुरु-राज।
खेल रहा था जिस जगह, सारा बाल समाज॥

पाण्डव-गण थे कौरव भी थे, कितने ही और खिलाड़ी थे।
कुछ चञ्चल, चपल चतुर भी थे, कुछ भोले और अनाड़ी थे॥
कुश्ती के बाद कबड्डी थी, फिर बल्ला शाही सँभल गई।
दैवात् किसी के डण्डे से, वह गेंद कुएं में उछल गई॥
एड़ी चोटी हो गई एक, पर चाल किसी की चल न सकी।
हरचन्द हजार उपाय किये, पर गेंद न बाहर निकल सकी॥

देखा गुरुवर ने जहां, वह बच्चों का हाल।
बाण मारकर गेंद को, खींच लिया तत्काल॥

गेंद के खींचने में गुरु ने, कुछ ऐसा जौहर दिखलाया।
बींध कर गेंद साथ में लिये, शर उनके पास चला आया॥
दे डाला गुरु को धन्यवाद, जय-जय कह कर बालक गण ने।
पर क्षण भर तक कुछ सोच समझ, द्रोण से कहा दुर्योधन ने॥
द्विज देव एक-दो घड़ियों तक, विश्राम यहीं पर कीजैगा।
अपने घर तक जाने की ही, सेवक को आज्ञा दीजैगा॥
कब तक के लिये फकत् तब तक, जबतक न लौटकर जन आये।
शायद इस जाने आने में, कुछ सेवा प्रभु की बन जाये॥

दुर्योधन ने भीष्म को, सभी सुनाया हाल।
तथा राज मण्डल सहित, लौट पड़ा तत्काल॥
भीष्म आदि ने द्रोण का, किया पूर्ण सत्कार।
तथा विनय करते हुए, बोले गङ्ग-कुमार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौभाग्य आज इस बस्ती को, जिसमें गुरु देव पधारे हैं।
सौभाग्य आज इन बच्चों के, एवं कुछ पुण्य हमारे हैं॥
यह भी तो नगर तुम्हारा है, हे हे गुरुवर पधारियेगा।
कुछ भक्त यहां भी रहते हैं, उनका जीवन सुधारियेगा॥
यह कौरव पाण्डव इस दिन तक, केवल अल्हड़ बन खेले हैं।
पर इतना फिर भी याद रहे, यह सभी तुम्हारे चेले हैं॥

यों कहकर गुरुराज को, घर ले आये लोग।
इस प्रकार उनको मिला, पढ़ने का संयोग॥

श्रुति-शास्त्र ज्ञान के साथ साथ, वह राजनीति सिखलाई गई।
धर्म का कर्म बतलाया गया, कर्म रीति दिखलाई गई॥
वाणिज्य-शिल्प के सार भेद, उठना बैठना सभाओं में।
बन गये निपुण कुछ दिन पीछे, चेले चौदह विद्याओं में॥
यद्यपि उन वीर कुमारों का, प्रत्येक ज्ञान था चढ़ा हुआ।
फिर भी उनमें से अर्जुन का, था धनुर्वेद बल बढ़ा हुआ॥
बढ़ गया धर्म का धर्म सत्य, भीम को गदा विद्या आई।
सहदेव पूर्ण ज्योतिषी हुए, कुरुपति ने हठ विद्या पाई॥
सर्वाङ्ग नकुल को भेद सहित, चौपायों की पहिचान हुई।
दुःशासन आदि कौरवों को, रण-कौशलता आसान हुई॥

एक रोज मैदान में, जमा हुए सरदार।
यहाँ परीक्षा के लिये, थे कुमार तैयार॥

आज्ञा पाकर अपने-अपने, सब भटवर तीर चलाने लगे।
जिसको जितने थे हुनर याद, वह कह-कहकर दिखलाने लगे॥
भीष्म ने कहा अये बलवीरो, इसमें न नाम का पाना हो।
तीर का पता जब चलता है, जब कोई खास निशाना हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्रोण ने कहा हां बहुत ठीक, जौहर का यही दिखाना है।
वीरो देखो उस चिड़िया की, दाईं आंख का निशाना है॥
जो वीर आज उस चिड़िया की, आंख को बींध दिखलायेगा।
हे वीरो ? तीरन्दाज वही, वीरों में बाजी पायेगा॥
अरे धनुर्धरो है समय यही, बल-मद न शान में बहजाये।
हां हां कमान वालो धाओ, कोई अरमान न रह जाये॥

आज्ञा पाकर उठ दिये, सभी धनुर्धर वीर।
तान लिये उस ओर को, अपने-अपने तीर॥
छुटते ही थे उस तरफ, सहसा सबके बाण।
तब तक गुरु कहने लगे, नीचे करो कमान॥

यह भी तो मुझे देखना है, परि पूर्ण कहाँ तक शिक्षा है।
बाण की परीक्षा पीछे है, पहिले ध्यान की परीक्षा है॥
दुर्योधन बाण चलाने को, धन्वा तो झुका जा रहा है।
लेकिन पहिले यह तो बोलो, तुमको क्या नजर आ रहा है॥
दुर्योधन बोला महाराज !, यह सुन्दर बाग दिखाता है।
जिसकी लहराती कुञ्जों में, शीशम तरु शोभा पाता है॥
उनकी उन नई कोपलों का, जमघट सा बना जारहा है।
उस जम घट्टे में छिपा हुआ, वह पंछी नजर आरहा है॥

हँस कर द्रोणाचार्य ने, कहा चलाओ बाण।
हो सहाय भगवान ही, तो लगजाय निशान॥

वास्तव में यह परिणाम हुआ, लक्ष्य का तार दो टूक गया।
उड़ गया ध्यान हिल गया हाथ, वीर का निशाना चूक गया॥
व्यंगों से भरी हुई बाणी, चहुँ ओर उठी दर्शक-गण की।
द्रोण को जरा सी हँसी उठी, झुक गई आँख दुर्योधन की॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःशासन बढ़ा धनुष लेकर, उससे भी वही सवाल किया।
त्यों ही उसने जवाब देकर, खाली हौसला निकाल दिया॥
बढ़ चुके सभी चढ़ चुके सभी, पर भाग्य किसी का बढ़ न सका।
पड़ गये पस्त रह गये सभी, पर ठीक निशाना पड़ न सका॥

अर्जुन से तब द्रोण ने, कहा उठो बलधाम।
नहीं किसी से हो सका, एक जरा सा काम॥

तेरा धन्वा तो महावीर, झुकता है, और न बढ़ता है।
हे धीर! बताओ तो पहले, क्या तुम्हें दिखाई पड़ता है॥
अर्जुन बोला हे परम देव!, मुझको न बाग दिखलाता है।
है कहां पेड़ कैसी शाखा, यह कुछ भी नजर न आता है॥

पता नहीं किस रङ्ग की, है पक्षी की पाँख।
गढ़ी हुई है आंख में, खाली दाईं आँख॥
कह डाला गुरु द्रोण ने, जय पाओ बलवान।
वहां वीर का आंख में, जाकर पड़ा निशान॥

दर्शक-गण ताली पीट उठे, जय-जय का एक निनाद हुआ।
मुँह उतर गया कौरवदल का, पांडव दल में आल्हाद हुआ॥
जय जय के नारे बन्द हुए, फिर गुरुवर की मुस्कान उठी।
उन तनती हुई समाजों में, तनती सी मीठी तान उठी॥

मत समझो हमको मिला, कोई हुनर तमाम।
कामयाब होगे तभी, करो लगन से काम॥

जीवन की सभी सफलतायें, अभ्यास मात्र पर निर्भर हैं।
पर एक लक्ष्य के बिना सभी, जौहर बेकार बराबर हैं॥
अपने-अपने काम के लिये, लाखों जी–जान लड़ाते हैं।
क्या कारण है? इतने पर भी, वे नहीं सफलता पाते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका कारण इतना ही है, वह कायम नहीं लक्ष्य पर है।
हैं एक काम मैं सौ बिचार, सरपार कहां जब वे सर हैं॥

❀ गायन ❀

काम हो सकता नहीं, जब तक लगन सच्ची न हो।
क्या जलेगा स्वर्ग ही, जब तक अगिन सच्ची न हो॥
सोचते हैं खेत की, खलियान की करते हुए।
खाक ही जाना करें वे, जो महन सच्ची न हो॥
क्या करे विश्वास कोई, क्या किसी की दाद हो।
क्यों कहें सच्चा तुम्हें, सब तक रहन सच्ची न हो॥
हो नहीं सकता दमन है, मुश्किलों का शत्रु भी।
जब तलक गोविन्द, तेगे बिजन सच्ची न हो॥

दो०—दुर्योधन कहने लगा, है यह झूठा मेल।
क्या चिड़ियाकी आंख से,निबट गया सब खेल॥

वीरों का तो समरांगन में, वीरों के शीश उड़ाना है।
पिद्दी चिड़िया की आंखों से,कुछ आंखें नहीं मिलाना है॥
धनु-धारी के धन्वे का गुण, दूरी पर सच कहलाता है।
वह देखो मेरा वृहद्-बाण, सूर्य को फोड़ने जाता है॥
कौरव-गण बारी-बारी से, अपने जौहर दिखलाने लगे।
छुटते हुए वे शर-समूह, नभ मण्डल में मँडराने लगे॥
यह देख पार्थ बलधारी ने, बाण को व्योम पर छोड़ दिया।
जिसने आंधी सी उपजा दी, एवं रवि मण्डल फोड़ दिया॥
फिर न लौट कर आ सका, वह अर्जुन का तीर।
वाह! वाह सुनकर उठा, कर्ण महा बलवीर॥
बोला बस इतने जौहर पर, आहा की झड़ी लगा डाली।

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रवि की ना कुछ ऊंचाई पर, यों ऊंची नाक बना डाली ॥
अपना माथ उठाये हो, और का माथ भी तो देखो।
बिक गये एक ही के हाथों, कर्ण का हाथ भी तो देखो ॥

यों कहकर भट कर्ण ने, छोड़ दिया यक बाण।
तो उसका भी लौटकर, मिला न पता निशान ॥
उस पर भी होने लगा, वाह वाह का शोर।
इस पर भी खम ठोककर, फिर बोला शहजोर ॥

जौहर का पता न चलता है, बाणों की बाढ़ दिखाने से।
ताकत न समझ में आती है, खाली कमान लचकाने से ॥
सच्चा रण-धीर वीर वह है, जो समर वीर के साथ करे।
रजपूती हो गर अर्जुन में, तो मुझ से दो दो हाथ करे ॥

वीर-हाँक पर वीरवर, रह न सका खामोश।
क्षत्रियता के रक्त में, उठा यकायक जोश ॥

खम ठोक रहा था कर्ण यहां, पार्थ ने वहां से ताल दिया।
पर भीष्म पिता ने यों कहकर, बढ़तेझगड़े को टाल दिया ॥
भट कर्ण तुम्हारी भटवरता, हम भले प्रकार मानते हैं।
पर इतनी ही कुछ उलझन है, हम कुल न तुम्हारा जानते हैं॥
इसलिये प्रथम अपने कुल का, जाहिर लोगों में नाम करो।
इसके पीछे जिससे चाहो, जी खोल खूब संग्राम करो ॥
जुड़ सकता हरगिज जोड़ नहीं, नीच से ऊँच परिवारों का।
क्यों कर मुकाबला होता है, रय्यत का राजकुमारों का ॥

शर्म और संकोच में, आया और उबाल।
बोला है क्या यहाँ भी, कुल-जातिका सवाल ॥
क्या कांटों में खिलकर गुलाब, दे सकता सुरुचि-सुगन्ध नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे विचार में तो गुण से, जाति का कोई सम्बन्ध नहीं ॥
अध्यात्म-शक्ति के बढ़ने से, जीव भी ब्रह्म बन जाता है।
सैनिक दैहिक बल के द्वारा, शूद्र भी राज्य पद-पाता है ॥
इस के मानी हैं साफ़ यही, अपने बल का न ठिकाना है।
इस लिये झेंप के खाने को, बातों का जाल बिछाना है ॥

कहा भीम ने कर्ण प्रिय, है यह कहना ठीक।
बँधी हुई है मगर यह, शान्तनु-कुल की लीख ॥

दो समता वालों का लड़ना, उत्कर्ष भाव उपजाता है।
पर व्यर्थ पराजय पाने से, उत्साह भंग हो जाता है ॥
इसलिये हमारी सम्मति है, या तो अपना कुल बतलाओ।
या फिर खैरियत इसी में है, पार्थ के मुकाबिल मत जाओ।

कर्ण वीर ने जोश में, कहा करो सन्तोष।
किसी समय कुल-जातिका, आ जायेगा होश ॥

घबराओ मत इस भट वर का, यह भी कलंक धुल जायेगा।
वह समय बहुत अब दूर नहीं, वंश का भेद खुल जायेगा ॥
यों कह कर एक निराशा मय, सूरज की ओर नजर डाली।
मानों उस एक दृष्टि ही में, कामना-वृत्ति कर दी खाली ॥

उसी दृष्टि की चाँप से, काँप उठा आकाश।
सूर्य देव ने प्रकट हो, दिया उन्हें-विश्वास ॥

हे सभा जनो ! भ्रम में न पड़ो, कर्ण भी न तुमसे हेटा है।
मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ, यह भट मेरा ही बेटा है ॥
माता का नाता मत पूछो, कुछ वंश तुम्हारा ही होगा।
जिसको तुम गैर समझते हो, वह अंश तुम्हारा ही होगा ॥
पर उसका पता निशान अभी, तुमको न बताया जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस दैवी—घटना का प्रभाव, आप ही सामने आयेगा ॥
विश्वास रहे इस हीरे का, ऐसा ही वक्त न रहवेगा ।
यह शुद्ध-वीर्य भी किसी समय, अर्जुन से न्यून न ठहरेगा ॥

यों कह अन्तर्हित हुए, दिन पति ज्योति निवास ।
हुआ कर्ण उत्पत्ति का, तब सबको विश्वास ॥
इस घटना से हो गया, एक बड़ा ही काम ।
चन्द रोजको रुक गया, वह भीषण संग्राम ॥
छिड़ा हुआ था आम में, चर्चा यही तमाम ।
एकलव्य बल धाम ने, तब तक किया प्रणाम ॥

बोले—गुरुदेव समागम की, जन को भी आज्ञा दे दीजै ।
वीरों की वीर—परीक्षा में, दास की परीक्षा ले लीजै ॥
गुरुवर बोले—कुछ हर्ज नहीं, धन्वा कमान ले सकते हो ।
इन बलवीरों के साथ—साथ, तुम भी परिचय दे सकते हो ॥

आज्ञा पा कर वीर ने, दिया बाण को छोड़ ।
निकल गया वह बाण भी, रवि-मंडल को फोड़ ॥

सब लोगों ने शाबास कहा, बल पस्त पड़ा बलधर का भी ।
कर्ण की बोलती बन्द हुई, मुँह उतर गया गुरुवर का भी ॥
दूसरी बार भी आत्मा से, गुरुवर ने धन्य पुकारा है ।
फिर पूछा बड़े स्नेह से—, बेटा क्या नाम तुम्हारा है ॥
सह पाठी साथ न लाये हो, आये क्यों यहां अकेले हो ।
खेले हो कौन अखाड़े में, बोलो प्रिय किस के चेले हो ॥

फिर चरणों में गिर पड़ा, भर नयनों में नीर ।
हाथ जोड़ कहने लगा, एकलव्य बल वीर ॥

सिद्धी के अटल अखाड़े में, अनुरागी चौपड़ खेला हूँ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ ध्यान लगा कर याद करो, गुरुदेव तुम्हारा चेला हूँ।
विद्या की भीख मांगने को, मैं आया था इक बार यहीं।
आप ने कहा विद्या का, शूद्रों को है अधिकार नहीं॥
वे अनचाही बातें सुन कर, घट सकी दास की चाह नहीं।
गो लाख रङ्ग में भङ्ग हुआ, पर टूट सका उत्साह नहीं॥
मैंने बन में वापिस जा कर, प्रभु की मूर्ति बनाई थी।
पर उसी मूर्तिकी श्रद्धा ने, जन को विद्या सिखलाई थी॥
उस मूर्ति-मात्र की सेवा से, वह असर हो गया तीरों में।
जिसके कारण भील का नाम, हो गया नाथ बलवीरों में॥

यक मिट्टी की मूर्ति में, इतना अधिक प्रभाव।
क्यों न बढ़े इस भाव से, गुरु सेवा का भाव॥

वे गुरु की मूरति के द्वारा, इतने सुयोग्य हो जाते हैं।
हम दस-दस गुरु रखने पर भी, अक्षर न सीखने पाते हैं॥
गुरुवर पेट के पुजारी हैं, लेने देने के मेले हैं।
इस में क्या दोष किसी का है?, जैसे गुरु वैसे चेले हैं॥
जो स्वयं ज्ञान से सूने हैं, वे हमको ज्ञान सिखायेंगे।
या स्वर्ग-स्वर्ग चिल्ला करके, नर्क की ओर ले जायेंगे॥
शिक्षित होने से पहिले ही, जो शिक्षकता बघराते हैं।
वे गुरु घण्टाल शिष्य का भी, बण्टाढार मिटाते हैं॥

गुरुओं से भी अधिक है, सब चेलों का मान।
व्यर्थ जानते शिष्य हैं, अब गुरु का सन्मान॥

वे कहते हैं व्यर्थ का मान, बे जगह जान की जोखिम है।
जिसको दुनियां गुरु कहती है, वह कुर्सी तोड़ मुलाजिम है॥
चूल्हे चेताया करते हैं, चिन्ता है ईंधन कण्डों की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गाली–गलौज के तरकश हैं, या गन मशीन हैं डंडों की ॥
मखमली फर्श की समता में, क्या मूल्य पुराने टाटों का।
हम तो रईस के लड़के हैं, क्या अदब करें खुर्राटों का ॥
परिणाम यही निकला समझो, कुर्सी पर शिष्य सुहाते हैं।
गुरु जो काले बोर्ड पर खड़े, हाहा—हूहू चिल्लाते हैं ॥

फुरसत चेलों को नहीं, उठ कर करें प्रणाम।
गुरुवर टोप उतार कर, कर लेते हैं काम ॥

वे उनको भार बताते हैं, वे उन्हें शिकार समझते हैं।
चेले ड्यूटी बतलाते हैं, गुरु जी बेगार समझते हैं ॥
चेले जी आब चढ़ाते हैं, अपने व्यसनों के तैशे पर।
गुरुवर जी—जान लगाते हैं, तीस रोज के पैसे पर ॥

अन्तिम फल में दे चुके, घर की भी कौपीन।
वे कोड़ी के दीन हैं, वे कौड़ी के तीन ॥

यदि फिर से गुरु शिष्य का, हो सच्चा समुदाय।
अनाचार अज्ञानता, तो क्यों बढ़ती जाय ॥

एकलव्य के बाण का, जब देखा यह हाल।
गुरु को भी चलनी पड़ी, तब चेले से चाल ॥

बोले शाबास वीर ! मेरे, ऐसी ही बस तेरी गति है।
मैं मिट्टी की ही मूरति हूँ, पर तू श्रद्धा की मूरति है ॥
तेरी उस अटल भक्ति ने ही, भील से सुशील बनाया है।
बेटा इसमें मेरा क्या है ?, तूने अपना फल पाया है ॥
कितने ही लोग मूर्तियों को, केवल पत्थर बतलाते हैं।
कितने ही उनका पूजन कर, कामना सिद्ध कर जाते हैं ॥
इस में दोनों का दोष नहीं, केवल विचार का अन्तर है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फल पाना या निष्फल रहना, अपनी श्रद्धा पर निर्भर है ॥

एक लव्य कहने लगा, साक्षी है भगवान ।
गुरु वर ! मेरे हृदय में, हो तुम इष्ट समान ॥
कहा द्रोण ने विहँस कर, प्यारे शिष्य सुजान ।
तो कुछ देना चाहिये, उस के बदले दान ॥

विद्या पाकर जो लोग न कुछ, गुरु की दक्षिणा चुकाते हैं ।
वे लोग कभी इस जीवन में, उसकी न सफलता पाते हैं ॥
मूरत से मेल मिलाया है, तो मन से मेल मिला बेटा ।
यदि विद्या सफल बनानी हो, तो गुरु-दक्षिणा दिला बेटा ॥

एकलव्य कहने लगा, हाजिर हूँ भगवान ।
तन, धन जो भी चाहिये, मांग लीजिये दान ॥

द्विज बोले अपनी श्रद्धा का, लोगों को परिचय दिलवादे ।
धन के बदले इन हाथों के, दोनों अँगूठे कटवा दे ॥
शिष्य ने कहा उफ क्या होती, शोभा उन उखड़े ठूंठों की ।
मांगते गला तो हाजिर था, क्या मांगी मांग अँगूठों की ॥
काट कर अँगूठों को गुरु के, चरणों पर तत्क्षण चढ़ा दिया ।
या जीवन के अरमानों को, गुरु दान मान का चढ़ा दिया ॥
खिलगई जीवनी जीवन की, गो जीवन आशा खिल न सकी ।
चेले के आगे गुरु की भी, फिर आंख आंख से मिल न सकी ॥
लोगों ने बिला रोक सहसा, जय धीर-वीर बलवान कहा ।
गुरु ने भी नीची नजरों से, हो प्रिय तेरा कल्याण कहा ॥

ज्यों ही गुरु के कण्ठ से, उठा शब्द कल्याण ।
त्यों ही जख्मी हाथ से, खिंचा दूसरा बाण ॥
चलते ही उस बाण के, फैला अतुल प्रकाश ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह शर पहले से अधिक, भेद गया आकाश ॥
जिनके हाथों में भरी, करामात की भार ।
प्रकटा दे फिर देश में, ऐसे जन कर्तार ॥
श्रोताओ इतनी गाथा में, दो लाँछन गुरु पर आते हैं।
लेकिन हम यथा-शक्ति उनका, वास्तविक भेद बतलाते हैं॥
पहले उस विद्या प्रेमी को, गुरु ने विद्या न सिखाई है।
दूसरे अँगूठे कटवा कर, द्वेष से हानि पहुँचाई है॥
था एकलव्य वर्ण का शूद्र, एवं निषाद कहलाता था।
त्रेता में तो इस मण्डल को, इल्म सिखाया जाता था॥
फिर द्वापर में क्यों गुरुवर ने, उस से ऐसा इनकार किया।
क्या यह समाज का बन्धन था, या स्वयं नहीं स्वीकार किया॥
मित्रो मेरी समझ में, जाति—वर्ण व्यवहार ।
बदला करता है यहाँ, समय–समय–अनुसार ॥
माना वह सद् पात्र था, सच्चा शील निधान ।
पर होता है जगत् में, आम बात पर ध्यान ॥
शूद्रों में वह हीरा होगा, यह था उर में अनुमान किसे।
या यों कहिये जांच के बिना, स्वर्ग की हुई पहिचान किसे॥
वैसे तो शूद्र जाति सारी, हिंसक द्रोही कहलाती थी।
उसकी जीवन की घड़ी–घड़ी, बस लूट–मार में जाती थी॥
इस लिये खौफ था शूद्र अगर, सुन्दर विद्या पा जायेंगे।
तो हिंसा और पाप ही तो, दिन दूने बढ़ते जायेंगे॥
इस कारण आर्य्य–समाजों ने, ऐसा ही नियम बनाया था।
बस उसी नियम के बन्धन में, गुरु ने यह कर्म कमाया था।
अस्तु न धरना चाहिये, हम को गुरु पर दोष ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी अतुलित प्रभा पर, होता है सन्तोष ॥

❀ गायन ❀

कहाँ हैं ? वे चेले भगवान ।
जिन्हें थे गुरुही इष्ट समान ॥
गुरु-सेवा का ध्यान कहां है, एकलव्य सा दान कहां है ।
कहां है ? पार्थ सरीखी आन ॥
गुरु के वचन मन्त्र जो मानें, उनकी आज्ञा भाग्य बखाने ।
करें जो सदा आत्म सम्मान ।
अब तो काया पलट गई है, गुरु की गुरुता उलट गई है ।
बने हैं गुरु से शिष्यप्रधान ॥
शिष्य हुए दीवान शान के, गुरु दीवाने फकत् दान के ।
भला फिर कैसे हो उत्थान ॥
कौरव पाण्डव ने लिया, यों विद्या का दान ।
यथाशक्ति धन-धान्य से, रक्खा गुरु का मान ॥
किंतु जहां अर्जुन गया, लेकर कुछ उपहार ।
त्यों गुरुवर ने कहा, प्यारे इन्द्र कुमार ॥
व्यवहार बढ़ाने से पहले, कैफियत देख ली जाती है ।
दक्षिणा दान के लेने में, हैसियत देख ली जाती है ॥
दुर्योधन आदि शिष्य मंडल, धन ही देने के काबिल है ।
हे महावीर उन लोगों में, केवल तू ही जिन्दा दिल है ॥
यह कङ्कड़ पत्थर रहने से, कुछ दैवी कोष नहीं होता ।
तुझ से यह द्रव्य दान लेकर, मुझको संतोष नहीं होता ॥
इस लिये दान दे वह बेटा, जो कभी किसी ने दिया न हो ।
वह काम आज कर दे लाला, जो कभी किसी ने किया न हो ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्जुन भट कहने लगा, आज्ञा हो गुरु राज।
चरणों में हाजिर करूँ, त्रिभुवन राज-समाज॥
नर क्या चट्टानी लोहा है, जो दो रुपये मन आता है।
लेकिन गुरु के हाथों पड़ कर, रत्ती की तोल बिकाता है॥
यह चमक दमक इज्जत हुरमत, कैफियत तुम्हारी ही दी है।
हे हे उदार विश्वास रहे, हैसियत तुम्हारी ही दी है॥
है इन्द्र तुम्हारे चरणों में, लक्ष्मी इच्छा की चेरी है।
हे नाथ काम में देर नहीं, केवल आज्ञा की देरी है॥

कहा द्रोण ने वीर वर, तो जाओ पञ्चाल।
बल, विक्रम से बाँध कर, लाओ द्रुपद नृपाल॥
इन बाणों की पौछारों से, परि चेतन रण चंडी कर दो।
उस यार मार को हाजिर कर, मेरी छाती ठंडी कर दो॥
मेरे रिपु का अपमान करो, इस में सन्मान तुम्हारा है।
हे महावीर! तुमसे बढ़ कर, यह विद्या दान तुम्हारा है॥

आज्ञा पाकर पाण्डु-सुत, ले कर चला निशान।
जा पहुँचा पाञ्चाल में, वह आँधी तूफान॥
घर वाले घर से उठे न थे, तब तक घर-घर घुमड़ाने लगा।
हल चल छाया सारे थल में, दल बल दर-दर उमड़ाने लगा॥
सैना न सँभलने भी पायी, तब तक सैनिक हुँकार उठी।
झट पट में अबाबील झपटे, जब चील झपट्टा मार उठी॥
धोंसे की धोंस समाई वह, रह गई न होंस विचारों में।
सरदारों की दीदारों पर, हिम्मत न रही सरदारों में॥
उठने से पहिले बैठ गये, बढ़ने से पहले पिछड़ गये।
लड़ने से पहिले हार गये, जमने से पहले उखड़ गये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षण भर को समता भी करली, कुछ बची खुची सेनाओं ने।
पर तहस-नहस कर भगा दिया, पार्थ के वीर योधाओं ने॥
द्रुपदेश्वर का भट अर्जुन ने, सारा हौसला निकाल दिया।
रथ के पिछवाड़े बाँध लिया, गुरु के चरणों पर डाल दिया॥

हा-हा करने के सिवा, क्या था और उपाय।
उन्हें देख मुस्कान भर, यों बोले द्विजराज॥

पांचाल-नरेश कुशल तो है? बोलो कैसे घिघयाये हो।
भिक्षुक के आगे रोते हो, राजसी कहाँ धर आए हो॥
वह घर का राज समाज कहां, वह मित्रों का समुदाय कहां।
बोलो ओ ब्राह्मण के बँधुवे, वह है ब्राह्मण की गाय कहां॥
नृप बोले—वह राजसी देव, पड़ गई काल के चक्कर में।
वह राज वंश लाचारी में, धर आया नाथ धरोहर में॥
उन बड़ बोलों के बदले में, प्रभु के आगे घिघियाया हूँ।
वह गाय देव आज ही नहीं, आप ही गाय बन आया हूँ॥

कहा द्रोण ने द्रुपद नृप, है इतना ही ज्ञान।
जीवन में जाते नहीं, सब दिन एक समान॥

नर जीवन काल विवश होकर, नीचा-ऊँचा हो जाता है।
अज्ञानी दुख में रोता है, सुख में फूला न समाता है॥
बढ़ती में मूर्ख समझता है, मेरे मुकाबले गैर नहीं।
ओ मूढ़ मुसाफिर दुनियां की, यों आंख मूँद कर सैर नहीं॥
दुखिया की आह मौन रह कर, आखिर जवाब दे देती है।
पैर के तले की मिट्टी भी, अपना बदला ले लेती है॥
सुखही दुखहै, दुख ही सुख है, क्या याद तुम्हें परिणामनहीं।
राजन् क्या यही जानते थे, दीन से पड़ेगा काम नहीं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोच लो आज उसका जवाब, हर तरह दिया जा सकता है।
बोलो नरेश लाचारी में, क्या नहीं किया जा सकता है॥
तुम को इस तरह कैद करके, कुछ कष्ट नहीं पहुँचाना है।
ओ धन मद के भूले राजन्, केवल तुमको चेताना है॥

दो०—यों कह कर गुरु राज ने, दिया उन्हें छुड़वाय।
शीश झुका कर चरण में, चले वहाँ नर राय॥
नहीं रहेगा सर्वदा, यह विपदा का काल।
भज विनीत आनन्द से, राधावर गोपाल॥

* लाखा गृह *

शिक्षा-दीक्षा में हुए, फारिग राजकुमार।
पर उनका बढ़ने लगा, दिन प्रति द्वेष-विकार॥

पाण्डव वीरों के गुण-बल से, कौरव गण पेश न पाते हैं।
जितना सिर ऊँचा करते हैं, उतना ही धोखा खाते हैं॥
शासन में काम न करती है, एक भी चाल दुःशासन की।
आसन हिल गया कौरवों का, उड़ गई नींद दुर्योधन की॥
कौरव अन्याय मचाते हैं, तो पाण्डव उसे मिटाते हैं।
षडयन्त्र रचाया जाता है, सो भंडा फोड़ मचाते हैं॥
यदि कूट नीति की चालों से, कुछ प्रजा फँसा ली जाती है।
तो सत्याग्रह के नारों से, यह पोल खोलदी जाती है॥
आमद के लिये नई रीतें, जिस समय चलाई जाती हैं।
तो बहस और सिद्धान्तों से, धज्जियां उड़ाई जाती हैं॥

दुर्योधन की हर तरह, हुई बोलती बन्द।
मिला राज्य पर राज्य का, मिल न सका आनन्द॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन तब अन्त में, होता हुआ उदास।
दुखड़ा रोने के लिये, गया पिता के पास॥
बोला हे तात! बात सारी, कुछ दिन में डूबी जाती है।
पांडव लोगों के जीते जी, अब कुशल नहीं दिखलाती है॥
सुनती है नहीं प्रजा अपनी, कुछ ऐसा नशा पिलाया है।
सत्याग्रह के मन्त्रों द्वारा, बकरों को सिंह बनाया है॥
हम कोई नियम बनाते हैं, वे उसे काट दिखलाते हैं।
यदि हम मन चाही करते हैं, तो घर-घर शोर मचाते हैं॥
भेटें नजरें हो गईं बन्द, खाली हो चला खजाना है।
रैयत की तूती बोल उठी, उठ गया रौब शाहाना है॥
अन्देशा है यदि यों ही वे, लोक-प्रिय होते जायेंगे।
तो किसी रोज हमको निकाल, भारत सम्राट कहायेंगे॥
इसलिये हे तात! कुछ, बतलाइये उपाय।
जिससे कौरव वंश का, यह कंटक टल जाय॥
ज्ञानचक्षु कहने लगे, सुन मेरे नर-पाल।
आखिर हैं वे भी किसी, क्षत्राणी के लाल॥
इसलाह नहीं हो सकती है, जब तक कुछ नेह सलाह न हो।
तू तो बस यही चाहता है, मैं जुल्म करूँ पर आह न हो॥
छल और कपट की हांडी तो, एक ही बार चढ़ सकती है।
अन्याय और पाप की बेल, हरबार नहीं बढ़ सकती है॥
छल और कपट का खेल कभी, एकसा नहीं ठहराता है।
कैसा ही छिप कर पाप करो, पर पाप प्रकट हो जाता है॥
इस अवसर पर आप ही आप, ऐसी शक्ति प्रकटाती है।
जो पाप ताप के साथ-साथ, पापी का नाम मिटाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनता भी सारा मोह छोड़, उसके पीछे हो जाती है।
फिर चाहे प्राण निकल जायें, परवाह न हरगिज लाती है॥

चाहे कुल परवार का, हो जाये संहार।
पर जनता सहती नहीं, नृप का अत्याचार॥

जिसमें न सफलता दिखलाये, ऐसा आप ही उपाय न कर।
सबको अपनाना चाहो तो, इस जनता पर अन्याय न कर॥
तेरा कहना ही सत्य सही, वे जुल्मी हैं अन्यायी हैं।
लेकिन बेटा विचार तो कर, आखिर तो तेरे भाई हैं॥
जो इनको साथ मिला करके, शासन का काम चलायेगा।
विश्वास रहे तो जीवन भर, तू धोखा कभी न खायेगा॥
मैं जिसको ठीक समझता हूँ, उसको पहले कह रक्खा है।
मैं अपने मन की कह हारा, अब आगे तेरी इच्छा है॥

खटपट में हो जायेंगे, दोनों वंश तबाह।
घर के भेदी से हुई, सारी लङ्क तबाह॥

जबकि पिता के पास में, गली न उसकी दाल।
तो दुर्योधन कर्ण के, घर पहुँचा तत्काल॥

अर्जुन से और कर्ण भट से, जब हुई बात वह अनवन की।
बढ़ गई तभी से मुलाकात, रविनन्दन से दुर्योधन की॥
भाई समान मान कर उसे, दुर्योधन मान दिलाता है।
कर्ण भी उसे स्वामी कह कर, सेवा में कभी न लाता है॥
शाही महलों में मान्य बना, अधिकारी एक झोंपड़ी का।
या सूर्य सुमन इस भांति हुआ, मुखिया चंडाल चौकड़ी का॥
दुर्योधन और कर्ण भट की, उस दिन से गहरी छनती है।
औरों के साथ बनें न बने, पर उनके खासी बनती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा कर्ण ने दूर से, आओ कौरव नाथ।
दुर्योधन कहने लगा, एक आह के साथ॥
क्यों नाथ! नाथ! चिल्ला करके, मेरी खिल्लियाँ उड़ाते हो।
भैया कीचड़ के जुगनू को, त्रिभुवन का सूर्य बताते हो॥
जो दबे न दमन कारियों से, हे शत्रु-दमन वह माथ कहां।
इन चला चली की चालों में, धर्म है नाथ-हम नाथ कहाँ॥
जिसके मारे हम लोगों की, एक भी न चलने पाती है।
ईंधन सौ भांति जलाते हैं, पर दाल न गलने पाती है॥
ढाई चांवल का रोज अलग, खिचड़ा पकवाया जाता है।
हर एक काम में बिला वजह, रोड़ा अटकाया जाता है॥

जब तक होगा देश में, दुहरा राज प्रबन्ध।
तब तक राजा प्रजा का, क्या कैसा सम्बन्ध॥

कहा कर्ण ने चुप रहो, करो न यों प्रतिघात।
सुन न सकेंगे कान यों, अन होनी सी बात॥
घन-घोर घुमेड़ों के आगे, ढफली का बाजा क्या होगा।
कुरुराज तुम्हारे जीते जी, वह भुकड़ राजा क्या होगा॥
यह हम पहले कह आये हैं, अपना पथ देख भाल डालो।
जो सुख में रहना चाहो तो, इन कांटों को निकाल डालो॥
यक तर्फा कोई चाल रहे, दुहरी मार कब तलक सहें।
अपना तो सीधा कहना है, या हमीं रहें या वही रहें॥
मक्कारी बढ़ती जाती है, उन टुकड़ खोर बदकारों में।
मिलते फिरते हैं बिला वजह, दिल्ली वाले असवारों में॥

कुरु-पति बोला जी यही, कहता है बल-धाम।
किसके बल-बूते मगर, किया जाय यह काम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो बात पिता से कहता हूँ, तो वे उलटा धमकाते हैं।
भीष्म या विदुर से मिलता हूँ, तो न्याय नीति बतलाते हैं॥
जो खुलकर आगे आता हूँ, तो दल-बल टूटा जाता है।
औरों से सम्मति लेता हूँ, तो भण्डा फूटा जाता है॥
ऐसी द्विविधा असमंजस में, बोला भैया उपाय क्या है।
हम फकत तुम्हीं से पूछते हैं, बतलाओ निजी राय क्या है॥

कहा कर्ण ने राय तो, है बिलकुल माकूल।
हो जाये जो आपको, जी–जान से कबूल॥

नगरी से बाहर किसी जगह, यक महल लाख का बनवाओ।
फिर उनको किसी बहाने से, रात में वहां पर ठहराओ॥
जलसा जलसे की सूरत में, चलने वाली हर चीज रहे।
लगवादें आग रात ही में, तो मर्ज रहे न मरीज रहे॥

कर देगी किस्सा खतम, लाक्षागृह की आग।
न फिर रहेगी रेंकड़ी, न फिर उठेगा राग॥

लाक्षागृह–निर्माण का, शुरू हो गया काम।
नियत हुए उसके लिये, विदुर-नीति गुण-धाम॥

कुछ ग्रन्थों का कहना यह है, दुर्योधन और कर्ण ही थे।
कुछ कहते हैं इस सम्मति में, धृतराष्ट्र और मन्त्री भी थे॥
मैं भी यह बात मानता हूँ, थी मिली भगत उन चारों की।
आगे चलकर खुल जाती है, जो थी सम्मति उन चारों की॥
भारत विख्यात विश्वकर्मा, उसका निर्माण कर रहा था।
गुण शील विदुर की आत्मा में, और ही विचार भर रहा था॥
लाख का महल लाख की नींव, लाख की ललित छज्जेदारी।
लाख की दरो दीवारी पर, लाख की लाख मीना कारी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाख के खम्भ लाख के फरश, लाख का साज सजवाया है।
किसलिये आज खाक के लिये, लाखों का माल लगाया है॥

चाण्डालों की इस जगह, खुली हुई है चाल।
इसमें फांसे जांयगे, उस दुखिया के लाल॥

इन सत्य वादियों के मारे, अन्यायी चैन न पाता है।
बस इसलिये लाखों बिगाड़, लाख का महल बनवाता है॥
अन्याय न्याय को जान बूझ, देता हूँ साथ अधर्मी का।
ओ पापी पेट पिन्हाता है, अब भी जामा बेशर्मी का॥
ना कुछ सहायता के पीछे, काट दूं गला असहायी का।
ओ हृदय हृदय को रखकर भी, क्या करूँ साथ अन्यायी का॥
भुगतूंगा बेशक नमक आज, वह ऋण है नमक हरामी का।
पर साथ-साथ भय मानूंगा, त्रिभुवन-पति अन्तर्यामी का॥

तन अधर्म की ओर है, मन में धर्म-विषाद।
क्यों न करूँ कर्त्तव्य निज, है आत्मा आजाद॥

कुछ शिल्पकार को धन देकर, नीतिज्ञ विदुर ने समझाया।
भैया यह समय परीक्षा का, ईश्वर ने हमको मिलवाया॥
धन धाम धमकियों का बन्धन, यक तरफा खींचा जाता है।
दूसरी ओर धर्म का पक्ष, करतब की याद दिलाता है॥
इसलिये जहाँ तक संभव हो, दोनों ही पक्ष निभा डालो।
लाख के महल में छिपी हुई, बाहरी सुरङ्ग बना डालो॥
हम लोग लगाकर दिखलादें, जितनी काबू की हिकमत है।
आगे ईश्वर की इच्छा है, पाण्डव लोगों की किस्मत है॥
कुछ दिन पीछे लाख की लाख, खाक में पड़ी दिखलायेगी।
होनी होकर मिट जायेगी, करणी बाकी रह जायेगी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके बदले पायगा, तू नृप से धन–दान।
उसका बदला अन्त में, देंगे दया निधान॥

शिल्प कार पर चढ़ गया, भक्त विदुर का रङ्ग।
छिपी हुई उस महल में, रख दी एक सुरङ्ग॥

यहाँ विदुर फारिग हुए, लाखागृह बनवाय।
वहां कहा धृतराष्ट्र ने, कुन्ती को बुलवाय॥

कुन्ती मैंने अपने चलते, रिपु को न हानि पहुँचाई है।
है विदित तुझे जैसे कुछ भी, भाई के साथ निभाई है॥
दो देहों में थे एक प्राण, अथवा हंसों का जोड़ा था।
दो में से दोनों के पीछे, जो कर डाला सो थोड़ा था॥
पर मेरी फूटी किस्मत में, लिक्खा ही बन्धु दुलार न था।
अथवा निर्दयी विधाता को, वह प्रेम-मिलन स्वीकार न था॥
भावी के क्रूर कुदालों से, बाई का बाजू तोड़ दिया।
बे पीर बधिक ने जल-भुनकर, जुड़ते जोड़े को फोड़ दिया॥
उस महा-विरह के सागर की, जीवन भर थाह न पानी है।
गो भाई नहीं मगर सुख है, भाई की अभी निशानी है॥
कहता हूँ शपथ सहित बेटी !, वे मुझे प्राण से प्यारे हैं।
कौरव हैं मेरी नयन ज्योति, तो वे नयनों के तारे हैं॥
जब धर्म भीम अर्जुन में से, कोई आगे आ जाता है।
तो मेरी अन्धी आंखों में, सहसा प्रकाश आ जाता है॥

जी कहता है एक क्षण, करूँ न उनको दूर।
मगर चाहता है नहीं, इसे विधाता क्रूर॥
पैदा की दुर्दैव ने, कुछ ऐसी सन्तान।
नहीं तनिक भी है जिसे, मेल जोल का ज्ञान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस समय भीम दुर्योधन के, मिलने का अवसर आता है।
उस समय क्रोध से दोनों की, आंख में खून आजाता है॥
घुलने-मिलने के एवज में, जल-भुन घुले जारहे हैं।
अफसोस प्राण प्रिय होकर भी, प्राणों पर तुले जा रहे हैं॥
बच्चों की अनबन बन-बन कर बूढ़ों का नाम डुबाती है॥
ज्वाला तिनकों से बढ़ती है, फिर महल मिटा कर जाती है॥
इस से मेरा है यह विचार, इन के जोड़े ही अब न जुड़े।
हरदम न मिलें झगड़ा न बढ़े, शूतर न फटे भुनगे न उड़ें॥

दुखिया कुन्ती ने भरी, एक मर्म-मयआह।
तथा कहा कर जोड़ कर, पितृ-रूप नर-नाह॥

यह मैं क्या जगत् जानता है, वे निराधर दुखियारे हैं।
हे नाथ किसी भी नाते से, वे दीन अनाथ तुम्हारे हैं॥
सौ राज कुमारों के आगे, गिनती क्या है भिखारियों की।
जैसे जानो लज्जा रक्खो, दुखिया के उन दुखारियों की॥

अन्ध राज कहने लगे, है एक ही उपाय।
उनको कुछ दिनके लिये, अलग करदिया जाय॥

इस लिये वरुण पुर में मैंने, एक अलग महल बनवाया है।
उसमें तुमको ठहराने का, अपना निश्चय ठहराया है॥
इस के सिवाय मुझको कुन्ती, बतलाओ तो उपाय क्या है।
तुम भी अपने दिलकी कहदो, जाने के लिये राय क्या है॥

कुन्ती ने उत्तर दिया, मैं क्या कहूँ उपाय।
करनी ही है सर्वथा, उनकी तुम्हें सहाय॥

इस जगह रहूँ उस जगह रहूँ, मुझको घर बार बराबर है।
उनका पालन पोषण-जीवन, सर्वत्र तुम्हीं पर निर्भर है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस जगह रहेंगे तो सुख से, आज्ञा पर टहल बजायेंगे।
उस जगह रहेंगे तो जी भर, अपने प्रभु के गुण गायेंगे॥
बाप की जगह तुमको पाकर, दुखिया के लाल मोद में हैं।
जिस जगह मुनासिब हो रक्खो. वे दीन तुम्हारी गोद में हैं॥
या यों कहिये उन दुखियों का है आजीवन को भार तुम्हें।
जैसे चाहो वैसे रक्खो, राजन् यह है अधिकार तुम्हें॥
एक होगई अन्त में, उन दोनों की राय।
कपट-भवन में पाण्डु-सुत, जा पहुँचे हरषाय॥

❀ गायन ❀

हमें बताओ पराधीन तेरी आन कहाँ।
लाख गुणवान हो पर ज्ञान की पहिचान कहाँ॥
हजार शोखियां मारा करे तो मार भले।
हृदय से पूछ-असल में है तेरी शान कहाँ॥
एक मालिक की नजर पर है बने या मिटे।
कनककी मारजो पड़जाय तो फिरजान कहाँ॥
एक अपराध बने, तो पड़े लाखों थू-थू।
जान देदे तो बता दे वहां अहसान कहाँ॥
लाख घर बन के मिटे घर केलिये।
आजभी कहते तो हैं गोविन्द का मकान कहाँ॥
आ पहुँची सयोग-वश, एक भिखारिन नारि।
जो कुन्ती से भी कहीं, थी विशेष दुखियार॥
कुन्ती बाहर निकल कर, उसकी ओर निहार।
मन ही मन करने लगी, उस पर सोच विचार॥
यह मलिन बदन यह खुश्क होंठ, जल मय नयनातरसानेसे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह पांच लाल विलपाने से, या पाँच कुसुम कुम्हलाने से ॥
यह धोती फटी पुरानी सी, दुर्बल- तन कम्पित वाणी है।
आह का तार शोक का भार, विपता की खास निशानी है॥
देखा दुखिया को दुखिया ने, दुख के लक्षण पहिचानगई।
अपनी ही सी गति मान गई, रोगिन रोगिन को जानगई॥
कुन्ती बोली हे बहिन तुझे, देख कर दया सी आती है।
इस करुणा भरे कुमारों पर, करुणा उमड़ाती जाती है॥
दिल कहता है दिल से पूछूं, कुछ चरचा कठिन कसालों का।
तुझको लूं दिल में बिठा देवि, लूं चूम बदन इन लालों का॥
पद-पद पर जाहिर होती है, तेरे सर बीती व्यथा मुझे।
यदि क्षोभनहोतो सुना बहिन, अपनी कुछ करुणा कथा मुझे॥

दुखियारी कहने लगी, क्या सुनती हो हाल।
जानी जाती ही नहीं, उस विधान की चाल।

मैं कुन्ती हूँ थे पाण्डु स्वामि, सो बने मौत के ईंधन है।
यह धर्म, भीम सहदेव, नकुल, अर्जुन उनहीं के लालन हैं॥
बस इनकी ही रख वाली को, ममता का ढाँचा जीता है।
है मसल दूध का जला हुआ, छाछ भी फूंक कर पीता है॥
इसलिये साथमें इन्हें लिये, दर-दर पर डोला करती हूँ॥
इनके जीवन की आशा में, घर घर जय बोला करती हूँ॥

कुन्ती चकमक रह गई,सुनते ही वह हाल।
एक नाम कुलवंश का, एक दिनों की चाल॥

कुन्ती बोली इस चरचे से, भूला- भटका दिल शान्त हुआ।
हाँ देवी इतना और कहो, पति का क्योंकर प्राणान्त हुआ॥
वह बोली मां मैं हूँ भिलनी हूँ, मेरे पति-देव शिकारी थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या प्राण पराये लेने के, वे जन्म सिद्ध अधिकारी थे ॥
गर्भणी-मृगी को एक रोज, जा घेरा किसी पहाड़ी में ।
चौ तरफा फन्दे डाल दिये, फिर आग लगादी झाड़ी में ॥
मुँहका तिनका मुँह में अटका. सह सकी आग की दाह नहीं ।
चौ तरफा नजर घुमा डाली, पर आया कहीं पनाह नहीं ॥
पूरब में श्वान गरजते हैं, पश्चिम में आग लगाई है ।
उत्तर मैं जाल बिछाया है, दक्षिण में डटा कसाई है ॥
रही न चारों ओर से, जब जीवन की आश ।
दीख पड़ा दिव्यात्म में, धुंधला एक प्रकाश ॥
मन ही मन में वह मन मारी, बलिहार गई मन मोहन के॥
जीवन की आशा त्याग गई, शरणागत उन जीवन-धन के ।
आत्मा की सच्ची आहों ने, ऐसी महिमा दिखला डाली ।
श्वानों को चीते चाट गये, पानी ने आग बुझा डाली ॥
चूहों ने फन्दे काट दिये,, स्वामि पर बज्र सा टूट गया ।
हो गया सभी मैदान साफ, हिरनी का संकट छूट गया ॥
कुन्ती ने देखा उसे, अपनी तरह अनाथ ।
पास बिठा करप्रेम से, कहा दया के साथ ।
सुनचुकी बहिन सुनचुकी खूब,अब सारी कथा सुनाओ ना ।
इन विषद-व्यथा की बातों से, मेरी भी व्यथा बढ़ाओ ना ॥
तू कुन्ती है मैं कुन्ती हूँ, स्वामि की कथन में हमपर हैं ।
दोनों के पांच-पांच सुत हैं, उन सबके नाम बराबर हैं ॥
दोनों पतियों के मरने में, हिरणी द्वारा कहलाई हैं ।
दोनों ही ने भावी—वशात्, अपनी जागीर गँवाई हैं ॥
हैं एक शक्ल में दो सांचे , हैं एक झलक पैमाने दो ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आ अली ! खूब गुजरेगी जो, मिल बैठेंगे दीवाने दो ॥
ठहर गई तब भीलनी, सरल–सहृदयता देख।
किन्तु न देखा किसी ने, अलख भाग्यका लेख॥
धर्म ने भवन की शुद्धि-हेतु, मांगलिक यज्ञ रचवाया है
हरि कीर्तन होम आदि करके, शुभ ब्रह्म-भोज करवाया है ॥
नर राजों का द्विजराजों को, धर्म ने पूर्ण सन्मान किया।
कुछ दिन पीछे महमानों ने, अपने गृह को प्रस्थान किया॥
पर खतम न होने पायी थी, दुखिया भिलनी की महमानी।
या यों कहिये रह गये वहां, छः नाम मगर बारह प्राणी॥
यज्ञ हवन के बाद में, किया ठीक सामान।
ठौर–ठौर पर भीम ने, देखा धर कर ध्यान॥
बोले धर्म से सुनो भैया, यह तो सपने कैसा धन है।
यह दया नहीं है दगा खास, उस अन्धे का अन्धापन है॥
यह दीवारें यह छतें खम्भ, या जो भी साज सँभाला है।
मेरा विश्वास कह रहा है, उनमें आतशी मसाला है॥
डर है आहा के बदले में, शायद हाहा होजायेगा।
जो जरा आग छूगई कहीं, तो सब स्वाहा होजायेगा॥
इस लिये राय मेरी यह है, यह महल आज ही छोड़ चलो।
उस भंडा फोड़ी होनेसे, पहले ही भण्डा फोड़ चलो॥
धर्मराज कहने लगे है, बिलकुल सच बात।
पर एकायक इस तरह, कहना उचित न बात॥
मैं भी अनुमान कर रहा हूँ तुम भी निश्चय बतलाते हो।
पर ऐसी ओछी बातों पर, इतने नाहक अकुलाते हो।
दुनियां का सारा कार बार, केवल जगदीश चलाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस की इच्छा के कारण ही, नर का द्वारा बन जाता है ॥
उस की इच्छा को रोक सके, इतनी किस नर की हिम्मत है।
उस की माया से निकल सके, इतनी किस नर की ताकत है ॥
कर्त्तव्य भ्रष्ट का करतब क्या, कर्तव्य-परायण के आगे
नर बेचारे का चारा क्या, जग-धर नारायण के आगे ॥
फिर पाँच यहाँ पंचानन हैं, क्या भय करते हो धागों का।
हे वीर वंश के गरुण भीम, क्या खौफ? विषैले नागोंको ॥
भेद दे सप्त आकाशों को, यह दम है उस धनुधारी में।
फोड़ दे सात पातालों को, वह बल है गदा तुम्हारी में ॥
तुम वीर पुत्र कहला कर के, यों मत भीरुता प्रकाश करो।
हे महा धीर! नर सिंह रूप, अपने बल का विश्वास करो ॥

धर्मराज के वचन सुन भीम रहे चुपकाय।
वहाँ पुरोचन के निकट, पहुँचा कौरव-राय ॥

बोला भाई! यह अवसर है, भाई का जलन बुझाने का।
बैरी के नाम मिटाने का, उस घर में आग लगाने का ॥
ड्योढ़ा खाता हो चुका सभी, रोकड़ सँभालना बाकी है।
सारा इंधन कर लिया जमा, बस आग डालना बाकी है ॥
इसलिये बिलम्ब न कर भाई, करदे स्वाहा बदकारों का।
इस दुनियां से ही नाम उठा, कुरु-कुलके दावादारों का ॥

विहँस पुरोचन ने कहा, जाता हूँ सरकार।
बहुत दिनोंके बाद में, आया हाथ शिकार ॥

जी कहता था जीते ही जी, उन की धज्जियां उड़ा डालें।
फिर मित्र वर्ग को जोड़ यहीं, दो दो बोटियां खिला डालें ॥
पर खैर दूध के बदले में, घर बैठे की छाछ ही सही।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो मिली न लाश कुचलनेको, तो चलने को खाक सही ॥
निश्चिन्त आप घर पर बैठे, धोका जिनहार नहीं होगा।
निश्चय ही सुबह अमावस के, पाण्डव परिवार नहीं होगा ॥
वरुण-नगर में शाम को, जा पहुँचा छल-धाम।
धर्मराज के सामने, उसने किया प्रणाम ॥
धर्म ने कहा आओ भैया, बोलो प्रिय कैसे आये हो।
क्या कौरवेन्द्र दुर्योधन का, कोई सन्देशा लाये हो
देखो तो भाई बिना वजह, दुर्योधन बात बढ़ाते हैं।
मालूम नहीं किस बिरते पर, हम को दुश्मन ठहराते हैं ॥
है नियम पिता के मरने पर, बेटा युवराज कहाता है।
एवं बालिग हो जाने पर, अपने हक को पा जाता है ॥
अधिकारी होकर भी मुझको, आया राज्य का ख्याल नहीं।
अपने मुँहसे अपने हक का, मैंने कुछ किया सवाल नहीं ॥
घर में रख कर एक मत, किये रहैं अधिकार।
उन्हें भला हो राज्य पद, मुझे भली बेगार ॥
लेकिन जब चलती गाड़ी में, रोड़ा अटकाया जायेगा।
तो अपना भी फिर कांटे से, कांटा खटकाया जायेगा ॥
इस लिये हमारी इच्छा है, नेह के नेह में सने रहें।
जो घर की बनती चाहें तो, घर में घर के ही बने रहें ॥
छली पुरोचन ने कहा, है यह सबको ज्ञान।
पर मर्जी भगवान की, जाने श्री भगवान ॥
न जाने किस-किस ने उसको, यों ही की नहीं नसीहत है।
लेकिन उस लीलाधारी को, करनी ही खास फजीहत है ॥
इस लिये समझ में आता है, उसकी न समझ में आयेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या होश नशीली आँखों को, जब तक न ठोकरें खायेगा।

रखना मेरी बात यह, याद सदा सरकार।
खाई खने जो और को, उसे कूप तैयार॥
शान्ति-मूर्ति बस इसलिये, रहो शान्ति के साथ।
बना देंयगे आप ही, बिगड़ी को यदुनाथ॥
ठहर गया उस चाल से, वह जालिम बदकार।
भोजन के पीछे हुआ, आराम का विचार॥

सुरभित समीर के झोंकों में, सारा संसार सो रहा है।
पातकी पुरोचन पड़ा-पड़ा पल-पल पर विकल हो रहा है॥
सच है पर—द्रोही पापी ने, कब दिन पाया ? कलपाने का।
कलपाये तो कब क्षण होगा ? कलपाने के फल पाने का॥
दुनियां खर्राटा भरती है, पापी करवटें बदलता है॥
जो जलन गैर पर खाता है, उसका हर पहलू जलता है॥
उठता है कभी बैठता है, झुकता है फिर उकसाता है।
जो पत्ता कहीं खटकता है, तो होश हवा हो जाता है॥

पर द्रोही के हृदय में, रहती है कब लाज
करता है क्या क्या नहीं, पर अकाज के काज॥

छिपती प्रकटाती दब-दब-कर, पातकी लगाये लाग गया।
अङ्गारा फेक ऊंचाई पर, वह नीच उछल कर भाग गया॥
भक-भककर भवन भवकतेही, धकधक ज्वाला धँधकायउठी।
चर,चर चरखी चाल लिये, लप-लप लूको लप काय उठीं।
दस-पाँच कोस केनगरों की शिख तकरों ज्योति दिखाती है।
अत्याचारी दुर्योधन की, मानो करणी प्रकटाती है॥
या पास पड़ौसी चेता कर, दुखियों की याद दिलाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या उनकी विपद-वेदना का, घर-घर सन्देश पठाती है ॥
दुर्योधन ने वाम से, देखा अमित प्रकाश।
हलकी नजरों से निरख, ली हलकी सी श्वाँस ॥
श्रोताओ! जाने नहीं, देती हमको ज्वाल।
दिव्य दृष्टि से देखिये, भीतर के अहवाल ॥
पिघल-पिघल कर जब पड़े, वीरों पर अङ्गार।
तो कुन्ती माँ के सहित, जागे पाण्डु कुमार ॥
हा हा उस हाहा कारी पर, क्या बोल कहूँ? उन बोलोंपर।
आग पर फफोला पड़ते ही, पड़ती है आग फफोले पर ॥
पड़ गई पिघल कर लाख जहां, लाख सी वहां पर चढ़ी रही।
कढ़ गई जहां से चिनगारी, चमड़ी न वहां पर मढ़ी रही ॥
चिल्लाये भीम युधिष्ठिर को, वे पार्थ-पार्थ चिल्लाने लगे।
कुन्ती ने एक चीख मारी, सहदेव नकुल बिलपाने लगे ॥
धर्म ने कहा ओ पार्थ! भीम, दौड़ो इस समय सहाय करो।
हां वीर उठाओ अस्त्र शस्त्र, बचने का कहीं उपाय करो ॥
कहा पार्थ ने विश्व को, सकूं देव संहार।
पर भावी के सामने, है कमान बेकार ॥
भीम ने कहा क्या करूं बन्धु, यदि कुछ भी द्वारा पाजाऊं।
तो एक गदा की ठोकर में, पाताल फोड़ कर दिखलाऊं ॥
सहदेव 'शकुन से सोचो तो, कोई द्वारा भी पायेंगे।
या इसी जगह लाचारी में, सब तड़प-तड़प मर जायेंगे ॥
कुन्ती बोली लाड़लो, नहीं रुदन का काम।
ध्यान धार सुमिरण करो, राधा-पति घनश्याम ॥
बेटाओ आओ गले मिलो, मिलना है अन्तिम जीवन का।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया मामता को छोड़ छोड़- लो नाम देवकी नन्दन का ॥
मिल गये गले सब आपस में, रोने के बदले गाने लगे।
बरसते हुए अङ्गारों में, केशव का ध्यान लगाने लगे ॥

❀ गायन ❀

जिनको रकार और मकार बीच लाने को,
पहुँची गजेन्द्र--आह भागे करतार हैं ॥
विश्व-रूप व्यापक हैं विश्व के सन्देश जिन्हें,
जिनके कानों में लगे त्रिलोकी के तार हैं ॥
वही हैं यहां पर भी वही हैं वहां पर भी,
वही काल रूप और जीवन-दातार हैं ॥
करना यदि चाहें तो करना असम्भव क्या,
करना ही न चाहें तो बहाने हजार हैं ॥

तभी कहा सहदेव ने, गदा धार बजरङ्ग।
इसी खम्भ के पास है, सीधी एक सुरङ्ग ॥
वीर वृकोदर ने वहीं, मारी गदा घुमाय।
त्यों ही यादव राय ने. की धर्म की सहाय ॥
निकल गये उस राह से, सब कुन्ती के लाल।
किन्तु शोक जल भुनगये, उस भिलनी के बाल ॥

आया न ख्याल किसी को भी, अपने महमान जगाने का।
क्या था सवाल माल का वहां, चरचा था प्राण बचाने का ॥
बाहर आते ही पवन-पूत, ताल पर ताल फटकार उठे।
काल के गालसे बचते ही, काल की भांति हुँकार उठे ॥
बस भाई ! बस होचुकी बहुत, अब बस कहने का काम नहीं।
बस कर न दिया दुर्योधन का, तो वीर वृकोदर नाम नहीं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हां हां जल्दी ही हां कहदो, कौरव नगरी उखाड़ डालूं।
अन्धे के अन्धे बेटों को, झरपट्टे में पछाड़ डालूं॥
या बीन-बीन कर उनसबको, यह बढ़ती ज्वाल में बढ़ादूं मैं।
इन छः प्राणों के बदले में, सौ का बलिदान चढ़ादूं मैं॥
धर्मराज कहने लगे, शान्त महा-बल-धाम।
घबरा कर होते नहीं, गम्भीरों के काम॥
ऐसा दिन तो आना ही है, लेकिन मौके से आयेगा।
देखना तुम्हारे ही हाथों, दुर्योधन मारा जायेगा॥
बच कभी बदी के जालों से, बदकार नहीं जा सकता है।
विश्वास रहे कर्मों का फल, बेकार नहीं जा सकता है॥
उन नीचों का वध करना तो एक तो घड़ी का काम नहीं।
इस प्रकार के बधने में, नामवर! तुम्हारा नाम नहीं॥
इन जल्द बाजियों के कारण, उलटा परिणाम दिखायेगा।
संसार कौरवों के बदले, दोषी हमको ठहरायेगा॥
हां पापी नीच पुरोचन को, उस छल-बलका फल दिये चलो।
बाकी कामों के लिये अभी, नीची नजरें ही किये चलो॥

❀ गायन ❀

कहदो मदमानी से, न माने मन मानी ही।
आत्म-अभिमानी नित्य भाव के भिकारी हैं॥
समझ न पाये क्रूर फिरते हैं दूर-दूर।
शूर हैं हजूरी पर आन-बान धारी हैं॥
देखना किसी दिन वे होंगे छत्र-धारी यहां।
जो यह अन्याय देख दीन हैं दुखारी हैं॥
भ्रान्ति में न भूल रहे क्रान्ति ये रहेगी नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रान्ति करदेंगे हम शान्ति के पुजारी हैं ॥
करता था जिस जगह पर, वह छलिया आराम ।
आग लगा कर करदिया, उसका काम तमाम ॥
फिर कुन्ती के साथ में, पांचों पाण्डु-किशोर ।
कृष्ण नाम लेते हुए, चले विपिन की ओर ॥
लाक्षागृह का प्रात ही, फैल गया संवाद ।
मचा हस्तिना पुरी में, घर—घर घोर विषाद ॥
सारी जनता सिर पीट—पीट, पांडव-पांडव चिल्लाने लगी ।
हस्तिनापुरी होकर अनाथ, विधवाकी भांति दिखाने लगी ॥
धृतराष्ट्र और दुर्योधन भी, ऊपर से आँसू डाल उठे ।
चाण्डाल-चौकड़ी वाले खल, उफ कहकरजीभ निकालउठे ॥
शाही रस्में भी अदा हुईं, कहने को और कहाने को ।
कुछ दिनतक मातम बना रहा, देखने और दिखलाने को ॥
पर वे पत्थर से दिलवाले, दिल ही दिल खुशी मनाते थे ।
मानो मल्हार के रागों में, सोहनी मिला कर गाते थे ॥
कुन्ती को काँधे चढ़ा, चले वृकोदर वीर ।
शीतल से होने लगे, झुलसे हुए शरीर ॥
एक विपिन में पहुँच कर, ठहरे पाण्डु कुमार
थके हुए थे सो गये, पीड़ा वश—सरदार ।
मगर भीम सोये नहीं, करने लगे विचार ॥
फकत् अहम् की आड़ में, है सारा संसार ।
नर नाहक ही चिल्लाता है, यह मेरा है यह तेरा है ।
मेरा है और न तेरा है, यह चिड़िया रैन बसेरा है ॥
जो तू महमान जहां का है, तो मेजमान भी वहां का है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अय प्राण आज खुल कर कहदो, तू क्या है और कहांका है॥
दर असल एक नाटक-शाला, दुनियां की दुनियां सारी है।
मेरे विचार में तो कोई, राजा ही है न भिखारी है॥
हा हा यह वही पाण्डु-सुत हैं, जो भारत के अधिकारी थे।
वे कौरव हैं जो किसी रोज, चेरे थे आज्ञा-कारी थे॥
ये कुन्ती है जो फूलों पर, करती थी दिल में सबर नहीं।
कांटों पर और कङ्कड़ों पर, उसको अब तन की खबर नहीं॥
पट पलट गया उस नाटक का, अधिकारी हुए भिखारी हैं।
वह गदा हमारी रोती है वह पड़े हुए धनुधारी हैं॥

तन बल धन बल ज्ञान-बल, काम न आये आन।
अभिमानी मन कृष्ण भज-छोड़ व्यर्थ की बान॥

❀ गायन ❀

जगत में तेरा क्या अधिकार?।
एक घड़ी घोड़े को कोड़े रहा सिपाही मार।
एक घड़ी पीछे सवार पर घोड़ा हुआ सवार॥
प्राणों की नाईं समझा है जिसको तू हथियार।
वही पराये हाथों में पड़ रहा तुझे संहार॥
मैं भीकुछ हूँ अरे मूढ़ मन तज यह व्यर्थ विचार।
जप विनीत राधा-माधव-पद, यदिचाहेकुछ सार॥

उसी विपिनमें था कहीं, खल हिडिम्ब का बास।
उसकी बहिन हिडिम्बनी, थी उसके ही पास॥
बोली हिडिम्बनी बन में से, मानुस की गन्ध आरही है।
उन उड़ती हुई हवाओं में, तबियत सी उड़ी जा रही है॥
क्या अचरज है विधि ने शिकार, बे तांगे ही पहुँचाया हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूला भटका कोई मनुष्य, किस्मत का मारा आया हो ॥
बढ़ी हिडिम्बिन शीघ्र ही, उस स्थल की ओर।
ठहरे थे जिस जगह पर, पांचों पाण्डु-किशोर ॥
बढ़ते बढ़ते बढ़ चली गन्ध, एक ही जगह छः को पाया।
होठों में धीमी फड़क उठी, मुँह में पानी सा भर आया ॥
सोचा सबही को एक साथ, भाई के पास लिये जाऊं।
कुछ खालूं कुछ को दूंमरोड़, कुछ घायल यहीं किये जाऊं ॥
लेकिन ज्यों ही भीम से, हुईं निगाहें चार।
पलट गया पट हृदय का, दिल होगया शिकार ॥
पड़ गई यकायक प्रेम पाश, मांस की नशैली आँखों में।
विष धर कैसे विष व्याप उठा, उन विनय-विषैली आंखों में ॥
चितचिपटगया भटके चितपर, वह लपट झपटकाध्याननथा।
रति का अरमान बढ़ रहा था, अब हिंसा का अरमान न था ॥
वे आंखें खूनी आंखों में, जा चुभी एक नाखून लिये।
खूनी बाला आगे आई, प्रेम का मधुर मजमून लिये ॥
हाथ जोड़ कर भीम से, लगी पूछने बाल।
अये देवों के लाड़ले, अये भारत के लाल ॥
मन मोहन यह मोहनी मूर्ति, कौन सी घड़ी में लाये हो।
चित चोर कृपा कर बतलादो, कौन हो कहाँ से आये हो ॥
हैं कमल नयन क्यों लाली पर, उमड़ी दिलपर निराशक्योंहै।
हे प्राणाधार बताओ तो, सुन्दर मुखड़ा उदास क्यों है ॥
इन दीन भिखारी भेषों में, क्या त्रिभुवन के अधिकारी हो।
हे काम रूप कामनियों के, या वन वेश में शिकारी हो ॥
इस घोर विपिन में ब्रह्मा ने, क्या प्यारे चाँद उतारे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे प्रेम मूर्ति यह पड़े हुए, पांचों जन कौन तुम्हारे हैं ॥
कहा भीम ने क्या कहें, अपने दिल का हाल।
बिछा दिया है दैव ने, महा विपद का जाल ॥
क्या कहें और कैसे कहदें, हम किस अंटिया के धागे हैं।
जब जैसेथे तब तैसे थे, अब जैसे हैं सो आगे हैं ॥
यह कुन्ती माता मेरी हैं, साथ ही विपिन में आई हैं।
सुन्दरी नाम है भीम मेरा, यह चारों मेरे भाई हैं ॥
हस्तिना-पुरी से आये हैं, जाने का नहीं ठिकाना है।
जाना है जाना! हमें वहां, भाग्य को जहां लेजाना है ॥
भाग्य की भयानक मारों से, घर छोड़ दिया रजपूतों ने।
हमको दर-दर भटकाया है, दुर्योधन की करतूतों ने ॥
बिहँस हिडम्बन ने कहा, नाथ भाग्य की बात ॥
सच तो यह है असल में, नहीं किसी को ज्ञात ॥
क्या पता सुखों के परदे में, कौन से दुख की मूरति है!
जिनको हम दुःख समझते हैं, उसमें फिर सुखकी सूरत है ॥
जो है जैसा है अच्छा है, इस पर कीजिये विचार नहीं।
भाग्य ही साथ जब अपने है, तो भाग गया करतार नहीं ॥
सूरज पर ग्रहण रूप धर कर, भावी का चक्कर आता है ॥
कीचड़ गूदड़ में रह कर भी, हीरे का मूल्य न जाता है ॥
सन्तान कहां जब जान चुके, यह सभी देव की इच्छा है।
हे कर्मवीर कर्त्तव्य करो, यह विपदा नहीं परीक्षा है ॥
तुम्हें विपिन भटका रहा, जिस भावी का फेर।
वही मुझे भी यहां पर, ले आया है घेर ॥
वीर वर! बुरा मानना नहीं, मैं बुरे भाव से आई थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल शिकार की गन्ध मुझे, खींच कर यहां तक लाई थी ॥
लेकिन क्या करूं भाग्य-वशहूँ, आकर खुद यहां शिकार हुई ।
बलि के खातिर आने वाली, बलिदानी पर बलिहार हुई ॥
वह सिंह वृत्ति आप ही आप, क्या जाने कहाँ सिधारा है ।
हे नाथ अनाथ हिडिम्बिन अब, इन चरणों पर बलिहारी है ॥
बजरङ्गी इस अर्द्धांगी को, बाईं दिश बिठला लीजावे ।
जो सुख-सुहाग की सूचक है, वह नजर इधर करदीजावे ॥

कहा भीम ने सुनयने !, मुझे नहीं इनकार ।
यदि मेरी माँ बन्धु सब, करें इसे स्वीकार ॥
उन्हें जगाने के लिये, हुआ न पूर्ण विचार ।
तब तक कानों में पड़ी, भय कारी हुँकार ॥

देखा आगे पर्वताकार, निर्झर उमगाता आता है ।
मानो प्रत्यक्ष महा-यम ही, हुँकार लगाता आता है ॥
पूछा भीम ने-सुनयने, यह कैसी आवाज आरही है ।
यह पर्वत सी मूरति क्या है, पृथ्वी क्यों हिली जारही है ॥
कांप कर सुन्दरी बोल उठी, यह मेरा भाई आता है ।
मुझको हिडिम्बनी कहते हैं, और यह हिडम्ब कहलाता है ॥
इसने ही गन्ध लगाकर के, दासी को यहाँ पठाया है ।
मुझको विलम्ब हो जाने से, खुद शोध लगाने आया है ॥
बलवीर धीर रण शाली से, रह सका किसी का बैर नहीं ।
हा हा उसके आने ही से, प्राणेश प्राण की खैर नहीं ॥
वह सरस रागिनी बदलेगी, विधवा दासी दिखलायेगी ।
वह सुख सुहाग की सुरुचिघड़ी, मरकर भी हाथ न आयेगी ॥
इस कारण मेरी विनय मान, इस घोर विपिनको त्याग चलो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लो जल्दी जगा बन्धुओं को, हे नाथ यहाँ से भाग चलो।
कहा भीम ने सुमुखि हम, हैं क्षत्रिय बलधाम।
चोरी-चोरी भागना, नहीं हमारा काम॥
हम खूब समझलें काल है यह, बाजी न जीतने पायेंगे।
फिर भी क्षत्रिय के नाते से, उसको न पीठ दिखलायेंगे॥
आने दे आने का डर क्या, हम भी कुछ हाथ दिखायेंगे।
जब लेजाना ही ठाना है, तो खुल कर ही ले जायेंगे॥
वह देखेगा भाँवर पड़ते, या गरदन पड़ी दिखायेगी।
या बिन व्याहे वर दुलहिन की, वन में समाधि बनजायेगी॥
यों कहकर भीम बढ़ा आगे, वह भट भी आगे बढ़ आया।
मानो कज्जल गिरि के ऊपर, तूफानी बादल चढ़ आया॥
बोला हिडम्ब-क्यों दीवाने !, तू कौन कहाँ से आया है।
इस भटवर की भगिनी को सठ, किस बिरते पर ठहराया है॥
कहा भीम ने बावले, दीवाने मत जान।
आये हैं तेरे यहाँ, भूतल के दीवान॥
हम अपनी राह जा रहे थे, तूने भगिनी पहुँचाई है।
जिसने मुझको ठहरा कर के, शादी मुझसे ठहराई है॥
जिससे भगिनी के पहरों तक, दिल खोल हुई दिलजोई है।
वह कुछ भी हो कैसा भी हो, आखिर तेरा बहनोई है॥
यह अकड़-झकड़ के किस्से अब, बेजा हैं अये अनजान तेरे।
घर ले चलकर महमानी कर, घर आये हैं महमान तेरे॥
बढ़ कर कहा हिडम्ब ने, खूब मिले महमान।
दिये भाग्य ने साथ ही, सुन्दर पांच जवान॥
रोजाना एक पक्का करके, निर्वाह कर लिया जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मरने के दिन तक तू भी कुछ, इनमें से हिस्सा पायेगा ॥
पाँचवें दिन काट कर तुझे, बुढ़िया का रुधिर निचोड़ूंगा ।
पर कुल कलङ्कनी भगनी को, आज ही न जीता छोड़ूंगा ॥
ना कुछ विषयों पर नटनी ने, भटवर की नाक कटाई है ।
निशिचर वंश की हंसनी ने, मानुष से आंख लगाई है ॥

कहा भीम ने बहिन का, समझ न मूरख दोष ।
दुनियां की रफ्तार का, रहा न तुझको होश ॥

स्यानी कन्या क्वांरी रख कर, ऐसे ही नर पछताते हैं ।
यह क्या है इससे भी बढ़कर, सैकड़ों पाप बन जाते हैं ॥
नालायक तूने बिला वजह, क्वारी युवती ठहराई है ।
मैं खुले तौर पर क्यों न कहूँ, तू भाई नहीं कसाई है ॥
जो हुआ खैर अब भूके को, जैसे हो आत्मा भरने दे ।
वरषें बीतीं नाशादी में, अब उसको शादी करने दे ॥
भोजन की रुचि होने पर भी, जो अन्न न प्राणी पाता है ।
तो फिर जैसे बन आता है, वैसे वह आग बुझाता है ॥

निश्चर ने उत्तर दिया, नहीं ब्याह में देर ।
लगता है क्षण मात्र में, मुरदारों का ढेर ॥

मण्डप की नहीं जरूरत है, मण्डप अपना मदफ़न होगा ॥
गठ-बन्धन से क्या, ओ पापी, गठ बन्धन एक कफ़न होगा ॥
यों कह कर वीर बढ़ा आगे, झपटे से पेड़ उखाड़ लिया ।
भीम ने पेड़ को तोड़ ताड़, दम भर में उसे पछाड़ दिया ।
हुँकार मार फिर वीर उठा, खम ठोक दांव दिखलाने लगा ।
भिड़ गया भीम देकर उड़ान, मुक्कों की चोट लगाने लगा ।
भिरत असी जोर सीम छोर जोर-जोर ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तोरि देत नीम तोर चोर-चोर निम्ब पै ॥
मारत हुमक्का भरि मुक्का मुख मोर-मोर ।
गिरत गरुओ गिरि मानो गिरि-बिम्ब पै ॥
चढ़िगौ चपेट भट भूमि पै लपेट फेंक ।
तीखन नखन गाढ़ि देत चोट सिम्ब पै ॥
सुनत दै कान सबै हैं हैं कहा भयौ अबै ।
कम्पभूमि-खंड पै या भीम है हिडिम्ब पै ॥

जागे कुन्ती के सहित, पांचों पाण्डु कुमार ।
लगे पूछने नारि से, उसकी ओर निहार ॥

क्या नाम सुन्दरी तेरा है, किस लिये यहां पर आई है ।
किसने तुझको ठहराया है, यह किन से ठनी लड़ाई है ॥
लज्जित होकर हिडम्बनी ने, अपना सब परिचय समझाया ॥
एवं उस जगह ठहरने का, सारा कारण भी बतलाया ॥
फिर विहँस कहा माताजी मैं, निश्चर वंश की कुमारी हूँ ।
बल-वीर भीम की चेरी हूँ, एवं कुल-वधू तुम्हारी हूँ ॥
वह महावीर भीम के साथ, भिड़ रहा हमारा भाई है ।
हम ने तुमको दुख दिया नहीं, इतनी बात पर लड़ाई है ॥

कुन्ती बोली पार्थ प्रिय, तुम जाओ उस ओर ।
निश्चर के आगे कहीं, हो न भीम कमजोर ॥

अर्जुन भट चलने लगा, देकर एक दहाड़ ।
तब तक बलधर भीमने, खल को दिया पछाड़ ॥

बनके सब प्राणी सुखी हुए, पाण्डव दल में जयकार हुआ ।
सबकी सम्मति होजाने पर, भीमका ब्याह स्वीकार हुआ ॥
पाण्डवगण यों आनन्द सहित, उस बन में समय बितातेरहे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फल फूल-मूल जब जो पाया, उससे ही गुजर चलाते रहे॥
फिर हिडिम्बिनी से हुआ, वीर पुत्र बलधाम।
योग राशि-तिथि-लग्नवश, पड़ा घटोत्कचनाम॥
एक सा रङ्ग एक सा तेज, एक सा रूप दरसाया है।
मानो कौतुक दिखलाने को, भीम ही बाल बन आया है॥
कुन्ती मां को मिलगया काम, अपनी तबियत बहलानेका।
मिलगया खिलौना वीरों को, आत्मा की तरह खिलानेका॥
एक रोज सुन्दरी ने, कहा जोड़ कर हाथ।
घर जाऊँ कुछ समयको, हो आज्ञा यदिनाथ॥
जिस समय जहां भी आप मुझे, करके स्मरण बुलायेंगे।
उस समय वहीं क्षण भरमें, दासी को हाजिर पायेंगे॥
सानन्द सभी से बिदा मांग, बेटे के साथ सिधारी है।
रह गये वहीं फिर पांच पूत, एवं कुन्ती महतारी है॥
उसी समय उस विपिन में, पहुँचे वेदव्यास।
सब चरणों में गिर पड़े, होकर निपट उदास॥
कुन्ती बोली क्यों महाराज, तुमने यह वंश चलाये हैं।
एक ही हाथ से एक घड़ी, दो पौधे साथ लगाये हैं॥
एक के फूल तो फूल-फूल, सिंहासन पर दरसाते हैं।
एक के फूल मुरझा कर के, पैरों से कुचले जाते हैं॥
जन्म के रोज से आज तलक, दुखियों ने चैन न पाया है।
क्यों दयाधाम अपने प्रभु का, ऐसा क्या पाप कमाया है॥
हरगिज न शान्ति मिल सकती है, रोने से और रुलाने से।
जाती है आन तुम्हारी भी, हमको वन वन भटकाने से॥
विश्वास रहे शान्तनु कुल के, पौधे आपके सहारे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे भले बुरे कैसे भी हैं, आखिर तो दास तुम्हारे हैं ॥
व्यास देव कहने लगे, कर कुन्ती मत खेद ।
समझ न नर सकता कभी, नारायण का भेद ॥
जितने भी महा-पुरुष अब तक, इस पृथ्वी पर प्रकटाये हैं ।
वह जीवन में एक भी घड़ी, सुख से न बैठने पाये हैं ॥
दुख ही कठिन कसौटी है, खुल जाता है सब ज्ञान जहाँ ॥
दुख ही न पड़े तो दुनियाँ को, हो बुरी भली पहिचान कहां ॥
यह लाल दुःख सहते-सहते, उस सुखके पद को पायेंगे ॥
कुन्ती ! इतना विश्वास रहे, चारों पन एक न जायेंगे ॥
हां इतना कहना और करो, तुम एक चक्र नगरी जाओ ।
है प्रजा वहां की परम दुखी, तुम लोग उन्हें सुख पहुँचाओ ॥
इतना कह मुनिवर हुए, तत्क्षण अन्तर्द्धान ।
तथा पाण्डवों ने किया, उस वन में प्रस्थान ॥
करुणाकर इन के लिये, बने चलो पतवार ।
जब विनती से दीन को, दिये रहो आधार ॥
एक चक्रपुर को गये, सुमर कृष्ण यदुवीर ।
एक ब्राह्मण के यहाँ, ठहरे पाण्डव वीर ॥
भिक्षा का पेशा पाल लिया, सावन्त सूर सरदारों ने ।
दाता-दाता कहना ठाना, भारत के राज कुमारों ने ॥
पांचों प्रभात को उठते ही, दर-दर भिक्षा को जाते हैं ।
सन्ध्या तक जो कुछ पाते हैं, यह मां के आगे लाते हैं ॥
सत्संग करे हरि भजन कर, माने न दोस्त दुश्मन क्या है ।
दुनियां में विपति निभाने का, इससे बढ़कर साधन क्या है ॥
जो क्षमा शान्ति पर कायम है, अक्षय शमशीर उन्हीं की है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्तोष धैर्य जो पाल चुके, दुनियां जागीर उन्हीं की है॥

गये भीख को एक दिन, चारों तनय यतीम।
किन्तु किसी भी सबब से,उस दिन गये न भीम॥
ब्राह्मण के घर में मचा, वहाँ अचानक शोर।
कुन्ती उनका रुदन सुन, जा पहुँची उस ओर॥

देखा बुढ़िया सिर पीट रही, बूढ़ा ब्राह्मण बिलपाता है।
कौने में बहू बिसूर रही, बेटा बाहर कलपाता है॥
कुन्ती हरेक के पास गई, उन को हरचन्द मनाने लगी।
हर बार वजह पूछने लगी, हर तरह उन्हें समझाने लगी॥
सौ बार उन्हें चुप कर हारी, पर कोई भी चुप रहा नहीं।
रोने चिल्लाने के सिवाय, कुछ सबब किसी से कहा नहीं॥
एक को अगर चुप करती है, तो तीन पड़े बिलपाते हैं।
भरता है एक सिसकियां तो, बाकी हा! हा! चिल्लाते हैं।

ज्यों-त्यों करके ब्राह्मणी, हुई तनिक खामोश।
बोली बहिना व्यर्थ में, दूं क्या किसको दोष॥

जिस समय किसी भी मानुष की,किस्मत चक्कर में आती है।
उस समय सिवा चिल्लाने के,कुछ भी न युक्ति दिखलाती है॥
इस नगरी के पास में बहिन, रहता बल वीर निशाचर है।
जिसने लोगों को खा खा कर,किस्सा कर दिया बराबर है॥
हरचन्द उपाय लड़ा कर भी, उस से न पेश पाने पाये।
तब सारे नगर निवासी मिल, उस के ही आगे घिघआये॥

तथा कहा कर जोड़ कर, कृपा करो बलवीर।
सुनो तनिक धर ध्यान भट,हम दुखियों की पीर॥

रोजाना आप यहां आकर, दस बीस खून कर जाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ को तो आप मारते हैं, कुछ भय से ही मरजाते हैं ॥
इस आठ पहर की हल-चल से, कोई भी चैन न पाता है।
उन खून खराबी से पहले, खुद खून खौलता जाता है ॥
इसलिये आज हम सब मिलकर, प्राणों का मोह त्यागते हैं।
तुमने ही दर्द बढ़ाया है, तुमसे ही दवा मांगते हैं ॥
हम सब की अन्तिम इच्छा है, हम सबको मार डालियेगा।
या कोई नियम बना करके, दीनों के प्राण पालियेगा ॥

बिहँस कहा किर्मीर ने, करता हूँ स्वीकार।
यदि रोजाना एक नर, मुझको मिले अहार ॥

लेकिन जिस रोज जरा सा भी, इस में नागा होजायेगा।
उस रोज नगर का नगर सभी, मरघट बन कर दिखलायेगा ॥
तब से निश्चर के लिये बहिन, बारी से जाना पड़ता है।
ग्राम की कुशल को एक नित्य, बलिदान चढ़ाना पड़ता है।
उसको अहार पहुँचाने की, बँध चुकी नगर में बारी है।
देवी ! अब समझ गई होगी, वह बारी आज हमारी है ॥
कुल चार आदमी घर में हैं, बोलो किसको पहुँचा देवें ?।
किसको किससे प्यारा समझें, और किसके प्राण बचालेवें ॥
इसी लिये हम रो-धो कर, एक ही साथ सब जायेंगे ॥
एक के नाम पर शेष तीन, अपना बलिदान चढ़ायेंगे ॥

सहन न कुन्ती कर सकी, वह करुणा मय गाथ।
आँसू भर कर नयन में, कहा प्रेम के साथ ॥

हे बहिन तुम्हारी नगरी में, हमको भी मिला सहारा है।
इस लिये तुम्हारे बदले में, यह नम्बर आज हमारा है ॥
तुम लोग शान्ति से घर बैठो, मैं अपना पुत्र पठाऊँगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या तो खल ही मिट जायेगा, या एक निशान मिटाऊँगी ॥

द्विज-पत्नी कहने लगी, धर कानों पर हाथ ।
यह अनर्थ होगा नहीं, महमानों के साथ ॥

इस नगरी में रोजाना ही, बीसों नर आते जाते हैं।
रहते हैं उद्यम करते हैं, पर बासी नहीं कहाते हैं ॥
एक तो अतिथि के नाते से, कुछ टहल तुम्हारी कर न सकी।
रूखा-सूखा भोजन भी तो, सामने तुम्हारे धर न सकी ॥
इतना कर्त्तव्य पालने पर, अब यह भी सुयश कमाऊँ मैं।
अपने बेटे की ममता में, अतिथों का खून चढ़ाऊं मैं ॥
फिर प्राण पराये लेकर भी, हम अमर न कुछ हो पायेंगे।
बच गये आज तो बचना क्या, आखिर तो मर ही जायेंगे ॥
इस ना कुछ स्वारथ के पीछे, जो इतना पाप कमायेंगे।
तो बहिन बताओ ईश्वर को, आगे क्या मुंह दिखलायेंगे ॥

कुन्ती ने उत्तर दिया, जरा गर्व के साथ ।
बहिन ! न मैं हो सकूँगी, क्षण-मात्र में अनाथ॥

तुम समझी हो जाते ही बस, किर्मीर उसे खाजायेगा।
उस ऐसे तो सैकड़ों वीर, केवल भीम ही गिरायेगा ॥
मान लो भीम पस्त ही हुआ, तो चार और बलधारी हैं।
यद्यपि भेष के भिखारी हैं, पर धन्वे के अधिकारी हैं ॥
जैसा होगा जो भी होगा, यह कष्ट न रहने पायेगा।
विश्वास रहे किर्मीर दुष्ट, निश्चय ही मारा जायेगा ॥
फिर बेटे के पहुँचाने में, दूसरा लाभ भी ताका है।
तुम से ही किस्सा खतम नहीं, यह काम आज जनताका है॥
उस महा कुटिल के जीवन से, आखिर संहार सभी का है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये भीम के जाने में, सच्चा उपकार सभी का है ॥
यों कह कर भट भीम से, बोली देवि पुकार ।
बेटा खल किर्मीर का, कर आओ संहार ॥
मद मानी ने मन मानी कर, सीधी सी प्रजा दबाली है ।
हत्यारे ने खाते-खाते, नगरी उजाड़ कर डाली है ॥
ऐसे पिशाच खल पामर का, जाओ संहार करो बेटा ।
सारी जनता का दुःख हरो, द्विज का उपकार करो बेटा ॥
आज्ञा पाकर अम्ब की, खड़ा हुआ वह लाल ।
शीश झुकाकर चल दिया, विपिन ओर तत्काल ॥
बढ़ा नगर की ओर को, आता था किर्मीर ।
धीरे-धीरे उस तरफ, जाता था रण-धीर ॥
भीम पर नजर पड़ते-पड़ते, किर्मीर किलक कर चिल्लाया ।
रे मूरख क्या मालूम न था, इतने विलम्ब से क्यों आया ॥
गुस्सा आता है मुझे आज, टुकड़े-टुकड़े पहले करदूं ।
बोटी-बोटी भुनवाडालूं, ऊपर से नमक-मिर्च भरदूं ॥
भीम ने कहा वक्त की फिक्र, करता था शिकार तेरा ।
पर आज शिकारी बन करके, आया है दावादार तेरा ॥
इसलिये धौंस का काम नहीं, समता से हविस बुझायेंगे ।
या तू हमको खाजायेगा, या हम तुझको खाजायेंगे ॥
यह सुनकर किर्मीर भट, बढ़ा मार हुंकार ।
दांव बदल कर शीश पर, पहुँचा पवन कुमार ॥
झपटा चपेट पटका समेट, मुक्के से घुसता पेट गया ।
फेंका लपेट चेटक ही में, खल दांत निकाले लेट गया ॥
लात की एक आघात पड़ी, निश्चर सहसा हो विकल गया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे बार में पापी का, बस प्राण पखेरू निकल गया ॥
हुई प्रजा सुख-शान्ति में, छाया जय जय कार।
जन विनीत तुम भी कहो, जय श्रीनन्दकुमार ॥

* द्रौपदी स्वयंवर *

गुरु के शासन काल में, था प्रसिद्ध पांचाल।
पाठक–गण पढ़ चुके हैं, पहले इसका हाल ॥
द्रोपदी द्रुपद की बेटी थी, शङ्कर की परम उपासक थी।
फिर भी उसकी सारी श्रद्धा, मनमोहन के चरणों तक थी ॥
उसकी सेवा से खुश होकर, प्रकटाये शम्भु जलाली से।
एवं उन अवढर दानी ने, इस तरह कहा पांचाली से ॥
बेटी ! तेरी सेवाओं ने, मुझको वश में कर रक्खा है।
सङ्कोच त्याग कर मांग आज, जो कुछ भी तेरी इच्छा है ॥
पांचाली बोली दया धाम !, दासी पर दया किये जाओ।
पति-वर२ पति-वर, पति-वर,पति-वर ही फकत दिये जाओ॥
शङ्कर बोले–द्रौपदी शान्त, पत–राखन हों करतार तुझे।
दिन आने दे मिल जायेंगे, आप ही पांच भरतार तुझे ॥
वर सुनकर पीछे खुले, पांचाली के कान।
हाथ जोड़ कहने लगी, यह कैसा वरदान ॥
वरदानी यह वरदान कहां, ? यह महा शाप कहलायेगी।
गौरी–पति पांच पती पाकर, क्या मेरी पति रह जायेगी ॥
यानी प्रकटी है पांचाली, केवल व्यभिचार बढ़ाने को।
वर मांगा है कुल घातिन ने, अपनी कुल जोति डुबाने को ॥
उफ किसे पता था वर वंचक, यह वरकी अधिकारिण होगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों साफ नहीं बतलाते हो, पांचाली व्यभिचारिण होगी ॥
इस वर का कैसा फल होगा, कुछ सोच विचार करो स्वामी।
हा हा इन घोर कलंकों से, दुखिया को पार करो स्वामी ॥

शिव बोले—यों द्रोपदी, रख न दोष का भार।
फिर से अपनी माँग पर, करले तनिक विचार ॥

तूने ही मुँह से पांच बार, पति वाचन वचन निकाला है।
मैंने उस पर ही सीधा सा, बस-एवमस्तु कह डाला है ॥
अब क्या अदोष हो जायेगी, देवों को दोष लगाने से।
क्या भावी से बच जायेगी, रोने से और रुलाने से ॥
घर जा शान्ति से बैठ देवी, यह है दैवीय विधान तुझे।
विश्वास मान कल्याण हीन, होगा न कभी वरदान तुझे ॥
तेरे हित पांच रूप धर कर, एक ही अंश प्रकटायेगा।
वर भी पूरा हो जायेगा, पतिव्रत न हाथ से जायेगा ॥

दिखलाते हैं जिस तरह, घट-घट में रवि-वेश।
पांच रूप में उस तरह, प्रगटेंगे प्राणेश ॥

पांचाली ने शम्भु से, पाया यों वरदान।
पहुँचे कुन्ती के निकट, यहाँ व्यास भगवान ॥

बोले—कुन्ती जिस आशय से, इस नगरी में पहुँचाया था।
या जिनकी व्यथा मिटाने को, मैंने यह मत प्रकटाया था ॥
वह काम आज हो चुका पूर्ण, अब फिर आगे जाना होगा।
भावी के पथ में छिपे हुए, भावों को प्रकटाना होगा ॥
मत समझो—आने जाने में, केवल तकलीफ उठानी है।
विश्वास रहे इस परदे में, बढ़ती की एक निशानी है ॥
बाहर के आये-जाये बिना, सुख-दुख का ज्ञान नहीं होता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सच है और नियम भी है, घर में सन्मान नहीं होता ॥
गुणवान और दुखिया मनुष्य, जितने बाहर भटकाते हैं।
वे लोग लोक में उतना ही, सन्मान उठा कर जाते हैं ॥

कुन्ती ने उत्तर दिया, हे हे परम उदार।
दासी किस दिन थी नहीं, आज्ञा को तैयार ॥

यह केवल आना जाना है, प्रभु पर सरबस दे सकती हूँ।
भिक्षा से भी वह नीच कर्म, वह भी सर पर ले सकती हूँ ॥
प्रभु की आज्ञा से ज्वाला भी, फूलों का समा दिखायेगी।
मेरा विश्वास कह रहा है, आशीष न खाली जायेगी ॥

कुन्ती ने तत्क्षण किया, मणिपुर को प्रस्थान।
सोच रहे एकान्त में, इधर कृष्ण भगवान ॥

पाण्डव मेरे आश्रित होकर, बन-बन में कष्ट उठाते हैं।
उनकी हालत से जग वाले, मुझ पर भी थूक उड़ाते हैं ॥
करुणा कर करुणा कर न सके, तो फिर करुणाधाम कहां।
भक्तों की पीड़ा हर न सके, तो भक्त वत्सल नाम कहां ॥
बेशक लोगों की नजरों में, मेरी यह भूल समानी है।
पर इसको कौन समझता है, इसमें क्या छिपी कहानी है ॥
लोहे सोने को जितना भी, आग में तपाया जाता है।
उतना ही अधिक शुद्ध होकर, यह मूल्यवान कहलाता है ॥

होनहार—भावी पुरुष, कब पाये आराम।
क्षण-क्षण पर है सामने, उनके जग का काम ॥
उसी काम में रात दिन, रहते हैं, वह लीन।
अब कोई समझा करे, उन्हें दुखी या दीन ॥

झूठ है खयाल जिन्हें निश्चय हुआ है यह।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व में विरोध बिना मिलती विश्रान्ति है।
ब्रह्मा विष्णु शम्भु भी तो इससे अछूत नहीं,
हल-चल की चालें या जीवन की क्रान्ति है।
पेट का सवाल कहीं, धर्म का खयाल कहीं,
जान का बवाल कहीं, वैभव की भ्रान्ति है।
छाई है अशान्ति जहां आठ पहर मेघों सी,
कहता है कौन वहाँ रहती सु-शान्ति है।

गरुड़ध्वज ने गरुड़ को, यों समझाई बात।
पता पाण्डवों का तुम्हें, शायद होगा ज्ञात॥
जाओ वे जहाँ विचरते हों, मेरा सन्देश सुनाना है।
मणिपुर उनको पहुँचाना है, दुखियों को धीर बँधाना है॥
चरणों में पड़-पड़ बार बार, फूफी से पायलगन कहना।
मेरे उन पांच बन्धुओं से, मिल मिल कर प्रेम मिलन कहना॥
कह देना-भावी भाग्य विवश, नर नाना संकट सहता है।
लेकिन भावी का चक्कर भी, यकसां न सर्वदा रहता है॥
बदलेगा समय शीघ्र ही यह, पहले से वही साज होंगे।
भूतल का भार उतारेंगे, फिर राजा धर्मराज होंगे॥
कुछ कारण वश न आ सकता हूँ, फूफीजी लावें रोष नहीं।
है सारा दोष समय ही का, मोहन का कोई दोष नहीं॥
अब मेरी उनकी मुलाकात, पांचाल-नगर में होनी है।
होनी जो होने वाली है, वह फकत् सबर में होनी है॥

सन्देशे से पूर्व ही, पूर्ण हुआ वह काज।
शेष विषय समझा उन्हें, लौट पड़े खग-राज॥

इसके भी पहले एक और, घटना अर्जुन के साथ हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़ गये पार्थ मौत के हाथ, या नारि पार्थ के साथ हुई ॥
एक दिन पार्थ प्रात से पूर्व, सरवर पर गये नहाने को।
यक मगर झपट कर दौड़ पड़ा, अर्जुन का पैर दबाने को ॥
लेकिन क्षण भर के अन्दर, वीभत्स-भाव शृङ्गार बना।
पार्थ का पैर छू जाने से, वह मगर बदल कर नारि बना ॥

उस घटना को देखकर, चकित हो गये वीर।
चरण पकड़ कर सुन्दरी, बोली हे मतिधीर ॥

अर्जुन ने चकित होकर देखा, यह भी छोटा सा नाटक है।
मैं सुता चित्रवाहन की हूँ, जो इसी प्रांत का शासक है ॥
अपने पापों के वश होकर, यह देह मकर की पाई है।
पर चरण तुम्हारा छूने से, फिर असली छवि प्रकटाई है ॥
यह कृपा बिना ही कहे हुई, अब एक विनय स्वीकार करो।
जो पशु से नारि बनाया है, तो मेरे साथ बिहार करो ॥

अर्जुन बोले—सुन्दरी, मुझे नहीं इनकार।
पर कुछ दिन के बाद में, होगा प्रिये बिहार ॥
अभी कुछ दिन के लिये, जाओ अपने धाम।
हो जाने दो हमारा, एक जगह विश्राम ॥
हुए परस्पर वे विदा, इस प्रसङ्ग के बाद।
अब द्रोपदी–विवाह का, कहता हूँ सम्बाद ॥

पांचाली ज्यों-ज्यों बड़ी हुई, मुख पर बढ़ चली उजाली सी।
यौवन-वन बन २ विकस चला, छिटकी देह पर दिवाली सी॥
उस सुन्दरता का महा भार, थम-थम कर उसे दबाने लगा।
राजाको मौन इशारों से, उस ऋण की याद दिलाने लगा ॥

द्रुपद राज एकान्त में, करने लगे विचार।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान कैसे चुकेगा, कन्या का ऋण-भार ॥
देवों ने देवी द्रोपदी का, अर्जुन से ब्याह बताया है।
आगया ब्याह का योग मगर, वह योग न आने पाया है॥
जल मरे पार्थ लाक्षागृह में, तो आने की आशा क्या है।
कुछ नहीं समझ में आया है, उस ईश्वर की इच्छा क्या है॥
इसलिये स्वयम्बर के सिवाय, दूसरा न कोई चारा है।
रख दूं सब प्रभु की मर्जी पर, इतना ही फकत सहारा है॥

यह विचार द्रुपदेश ने, दिया स्वयम्बर ठान।
भूतल के प्रति भाग में, किया गया ऐलान॥
सुनते ही सम्बाद वह, आये नृप बलवान।
धीर वीर सामन्त भट, द्विजवर साधु सुजान॥

नृप ने नगरी को साज साज, उत्तम वितान बनवाये हैं।
बागों में और बाजारों में, सारे मिहमान टिकाये हैं॥
गृह-गृह पर तोरण कलश आदि, दर-दर पर विजय पताकायें।
हर गली सुगन्धित सुरुचि भली, हर पग पर सुघड़ सेविकायें॥
जिस जगह बनी थी रङ्गभूमि, उसका ही रङ्ग निराला था।
हर बैठक थी सिंहासन ही, हर द्वारा एक दिवाला था॥
थे घटा-टोप मेघ से कहीं, तो कहीं सुहावन सावन था।
मानो इन्द्र के अखाड़े का, कोई विशेष अधिवेशन था॥

शुचि सेवक-गण प्रेम से, करते थे सत्कार।
यथा—योग्य स्थान पर, बैठे थे सरदार॥

थे एक मंच पर ताजदार, सरदार उन्हीं के हमसर थे।
था अलग मंच द्विजराजों का, सामन्त सुशील बराबर थे॥
दर्शक बैठे थे बा-कतार, अपनी शोभा दिखलाते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याचक चेटकी तमाशाई, और ही समा फैलाते हैं॥
कौरव मण्डल को साथ लिये, बैठा सुधीर दुर्योधन था।
दुर्योधन से कुछ ऊपर को, श्री यादवेन्द्र का आसन था॥
महलों से सुरुख झरोखों में, मङ्गल मुखिया दरशाती थीं।
जिनके कल कोकिल कंठों से, मांगलिक सदायें आती थीं॥
थी रङ्ग भूमि ही भूमि अलग, थी भूरि भीड़ महमानों की।
महमान बसाये बैठे थे, दुनियां भरके अरमानों की॥

अपना अपना भाव था, अपना अलग विचार।
हार कहीं बलिहार थी, अपनी ओर निहार॥

आप ही आप मान कर बुरी, कोई पोशाक उतार रहा।
मन ही मन में निसार होकर, कोई शृङ्गार निहार रहा॥
तुल तुल कर बाजू बाजू पर, बाजी की डींगें मार रहा।
कोई चुप चाप चित्त ही में, चरखी की चाल विचार रहा॥
कोई मन ही में कहता है, कब घड़ियां प्यारी आती हैं।
इतने में एक सदा आई, श्री राजदुलारी आती हैं॥
उन रङ्ग विरंगे फूलों में, फूली सी एक कली आई।
आलियों में सुघड़ अली आई, या द्रुपददेश की लली आई॥

शशि-तारा-मण्डल-सहित, यथा चंचला शान्त।
या उस माया-नगर में, विश्व मोहनी-प्रान्त॥

नृप गण की आशा-माल लिये, आशा की मूर्ति प्रकट आई।
भाव की भाव मय रेखा ने, या एक झलक सी दिखलाई॥
उकसाने कुछ मुसकाने कुछ, कुछ देख रहे अकुलाने से।
कुछ दबक उठे दीवाने से, कुछ बैठे रहे बिकाने से॥
कुछ खाँस खाँस आखें निकाल, मृदुता के साथ निहार उठे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ बल बाहों को ताक-ताक, अपना बल आप पुकार उठे।
बन्दी जन जय जय बोल उठे, मागध जन कीर्ति बखान उठे।
उस उठती हुई चांदनी में, मानो कुछ चन्द्र प्रधान उठे॥
उस कलित कलीसे हिली मिली, आलियाँ झूमती आती हैं।
गतिपर गजगण चकराते हैं, छबिपर रति शचि शरमाती हैं॥

सुघर शील सुमुखिशुचि, रुचिकर छविकीखान।
कर सुवर्ण के थाल धर, करती है कल गान॥

❀ गायन ❀

सावधान! धीरे चलो सुकुमारी।
गुरु-जन की लज्जा आई, भूपों की आशा आई,
आई हमारी दुलारी।
वीरों में वीर भाव, धीरों में धीर-भाव,
मनमें गम्भीर भाव,
भरती सी आई ज्योति, ज्योतियोंमें न्यारी न्यारी।
बलिहारी, बलिहारी,
हाँ प्यारी।

मद-मय ललचाने नयनों ने, मद-हर मृगनैनी को देखा।
या उन दुखते से हृदयों ने, हृद-हर सुख दैनी को देखा॥
लावण्य ललित फैलाती सी, उस जलसे की सूरत आई।
आशा धारी नर पालों में, आशा की मूरति आई॥

त्यों ही बन्दी जनों ने, शुरू किया ऐलान।
धीर वीर योधा गणों, सुनो लगाकर कान॥

यह तो सब लोग जानते हैं, बेटी का आज स्वयंबर है।
लेकिन यह हमें बताना है, वह किन बातों पर निर्भर है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसका कि अनुसरण ही करके, फली भूतल पर शिक्षा है।
उस वीर-भूमि के नाते से, वीरों की वीर परीक्षा है॥
राजा ने इसी प्रतिज्ञा में, यह बज्र खम्भ गढ़वाया है।
आखिरी सिरे पर वह देखो, लोह का चक्र बँधवाया है॥
उस खम्भ और चक्र के बीच, वह मछली चक्कर खाती है।
नीचे तेल के कड़ाहे में, उसकी तसवीर दिखाती है॥
नृप का इतना आयोजन है, वह तीर कमान तुम्हारी है।
बस उसकी आंख बींधनेमें, बलवीरो-आन तुम्हारी है॥
तेल में देख कर लक्ष्य करे, वह आज स्वयम्बर में वर है।
जो इतना वीर दिलावर है. उस पर द्रोपदी निछावर है॥

हे भारत के वीर गण, ऋषियों की सन्तान।
चढ़ती हुई कमान पर, भूल न जाये आन॥

यों तो घर-घर में धन्वे हैं, तलवार सभी लटकाते हैं।
पर जो अवसर पर लक्ष्य करे, वह धनुर्वीर कहलाते हैं॥
जो खरी समय पर उतर सके, बस वही वास्तविक इज्जत है।
जो ठीक समय पर काम न दे, ऐसी इज्जत पर लानत है॥
ना कुछ पिनाक की धाकों में, नाकों की धाक न खोजाये।
मछली की आंखों के आगे, यह नीची आंख न होजाये॥
इस विजय-कीर्ति के साथ-साथ, यह प्रणय-लक्ष्मी पानी है।
वीरों! कौमी पानी रखकर माया की आन बचानी है॥

गायन-वीर सिंहो! बढ़ो, मैदान न जाने जाये।
जान जाये मगर, यह आन न जाने पाये॥
वीर—पूतों में यहां, जांच तुम्हारी होगी।
वीर—बाने की वह, पहचान न जाने पाये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भला लजाइयो न दूध-वीर-माता का।
शान तो यह है कि वह शान न जाने पाये॥
विनीत जाय जो सर्वस्व तो जाये लेकिन।
जाति या देश का अभिमान न जाने पाये॥
इस प्रकार ऐलान सुन, उठे वीर बलवान।
इष्ट देव का ध्यान धर, साधी हुई कमान॥

तक तान-तान कर -कर गुमान, धर-धर कमान बलवान चले।
धीमान् चले श्रीमान् चले, दीवान चले दावान चले॥
पर शोक कदम चलते २, दमबाजी का वह दम न चला।
खींची कमान बाण भी चला, लेकिन निशानका गम न चला॥
वह हांक-धांक दोनों में रहे, हांक की जगह थी कांख वहां।
कुछ आंख लगाकर झांक रहे, हैं मछला की आंख कहां॥
चढ़ते चढ़ते जय-आशा में, किस्मत का जीना टूट गया।
मानो ज्वर का जाड़ा आया, साथ ही पसीना छूट गया॥
मुख उतरा रुख पलट कर, पीला पड़ा शरीर॥
सदा वहीं उठती रहीं, पर न उठ सकं वीर

बल रहा न वह बलवानों में, महिमा न रही महमानों में।
बाणों में आप झुकान पड़ी, बल पड़ने लगे कमाना में॥
रनवास उसास खींच उठा, राजा ही हाय पुकार उठे।
अपमान लिये मतिमान वार, आप ही आप धिक्कार उठे॥
इस सूक्ष्म-लक्ष्यकी उलझन में, चलती फिरती छाया भी थी।
लेकिन माय के साथ साथ, माया पति की माया भी थी॥
यानी उस चक्कर से मिलकर, कृष्ण का चक्र मण्डराता था।
जिसकी चौंधी से चकराकर, वह लक्ष्य नहीं दिखलाता था॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो हो जैसा हो प्रभुजाने, भाग्य का सितारा जग न सका।
सबजान लगाकर बैठगये, पर ठीक निशाना लग न सका॥

कहा चाहते थे द्रुपद, कुछ भर करके जोश।
तब तक बोले भीष्म भट, हैफ! हैफ अफसोस॥

वीरों के विन्दु कहाते हो, वीरों में नाम कहाते हो।
वीरों का बाना धारे हो, वीरों का नाम धराते हो॥
अपनी कमान ना कुछ निशान, इतना मजमा बलवानोंका।
दानाओं की इतनी महफिल, इस तरह काम नादानों का॥

❀ गायन ❀

पटका पहाड़ देकर दहाड़, पर लहर न आई पानी में।
मुरदेका सिर भी कट न सका, लगजाय आग मरदानी में॥
जाल में फँसीचुहिया को भी, अफसोस बज्र से बध न सके।
कायरो! कहो तो फिर होगा, कौन सा काम आसानी ने॥
खाली ऊपरी दिखावे से, इज्जत न जहां में होती है।
कुछ करतब करके दिखलाओ, भूले न रहो दीवानी में॥
गो बन्द हुनर हो तो पूरा, ना कुछ गुण पर मत इठलाओ।
दानाओं की संगति पकड़ो, मत पड़े रहो नादानी में॥

एक वीर कहने लगा, रहने दो सरदार।
आखिर है यह किस तरफ, लानतकी पौछार॥

तुम भी जलसे में आये हो, तुम भी तो वीर कहाते हो।
जब धनुर्वीर हो तुम भी तो, धन्वा क्यों नहीं उठाते हो॥
हम कायर और निकम्मे हैं, तो तुम शूरता सिखा डालो।
कंगन के लिये आरसी क्या, लो आओ हाथ दिखाडालो॥

कहा भीष्म ने क्या करूँ, हूँ प्रण से लाचार।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस जीवन में ब्याह का, रहा नहीं अधिकार।
हां एक बात जो होजाये, तो लाभ उठाडालूं फन से।
लग जाय निशाना जो मुझ से, तो शादी हो दुर्योधन से॥
सब बोले यह तो ठीक नहीं, अपने से अपना नाता है।
कोई खाये तो देखने से, कुछ पेट नहीं भर जाता है॥
फिर भी यदि द्रुपद-राज चाहें, तो आजायें यों ठिकाने पर।
दुर्योधन से शादी कर दे, प्रण का पेटा भर जाने पर॥

द्रुपद-राज ने भी किया, वह कहना स्वीकार।
लक्ष्य बांधने के लिये, उठे भीष्म सरदार॥

लेकिन उनके जाते-जाते, सब आशा का बन उजड़ गया।
सामने शिखंडी नजर पड़ा, वह शकुन बीच से बिगड़ गया॥
रख दिया भीष्म ने धनुष वहीं, आंखों में धर्म समस्या है।
मुँह से केवल दो शब्द कहे, ईश्वर जाने भावी क्या है॥

फिरे देखकर भीष्म को, उठे द्रोण बल-धाम।
पर प्रभु की इच्छा बिना, सब प्रयत्न ना काम॥

केशव के चक्र सुदर्शन ने, उन नजरों का चकरा डाला।
प्रभु माया ने द्रोण का बाण, चक्कर ही में टकरा डाला॥
ताली पिट गई दर्शकों में, उफ यह भी कोई निशाना है।
गुरु के ऐसे लक्षण हैं तो, चेलों का कौन ठिकाना है?॥

हुआ न था पूरा अभी, आपस का आख्यान।
तब तक उठकर कर्ण ने, सीधा किया निशान॥
गूंज उठी जय ध्वनि तभी, धन्य धन्य के साथ।
तब तक एक उतावला, लगा नचाने हाथ॥

हर एक बात पर वाह! वाह, अच्छा दस्तूर यहाँ का है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ यह भी पता किसी को है, यह भटवर कौन कहाँका है।
बेशक इसके बल विक्रम की, तारीफ खूब की जायेगी।
पर कुल गोत्र–के बिन जाने, बेटी न ब्याह दी जायेगी॥
यों तो आत्मा के नाते से, अपनी ही सृष्टी सारी है।
लकिन रोटी–बेटी में तो, जाति की जाति अधिकारी है॥
इस शुद्ध वंश में खिचड़ी का, मजबून कहीं हो जायेगा।
तो पहले से जतलाते हैं, बस खून यहीं होजायेगा॥

हुआ अन्त में कर्ण से, कुल गोत्र का सवाल।
होंठ दबा कर रह गया, वह गूदड़ का लाल॥

खुल-खुल कर वह उत्तर देता, पर भेद अभी तक खुला न था।
था श्वेत वस्त्र पर कीचड़ में, जो किसी वजह से धुला न था॥
लौटना पड़ा रखकर कमान, तो एक दूसरी सहर उठी।
क्षत्रिय-मण्डलमें शान्ति हुई,तोद्विज मण्डल में लहर उठी॥

एक वीर उस ओर से, उठा तनिक मुसकाय।
विप्र वृन्द मे बिहस कर, यों बोला सिर नाय॥

महि देवो यदि आज्ञा पाऊँ, तो अपना हुनर आजमाऊँ।
एक ही बाण में पुतली को, बींध कर निशाना दिखलाऊँ॥
एक ने कहा हे महाराज, इन बातों में रक्खा क्या है।
सेवा पूजा में लगे रहो, यह काम नहीं ब्राह्मण का है।
मुँह के मुहरे लड्डू गोले, पेट की मशीनें भर डालो।
फिर बात-चीत का मौका है, तो गोलन्दाजी कर डालो।
अथवा माला की धन्वी पर, जप–जप के तीर चढ़ायेरहो।
पाप की मीन बाँधते हुए, आत्मा को लक्ष्य बनाये रहो।

कहा एक ने रोकना, नहीं हमारा काम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इच्छा है हम सबों की, बढ़ो वीर बलधाम
जो हुनर किसी ने सीखा है, तो मौके पर दिखलाने दो।
उत्साह भङ्ग क्यों करते हो, जाने दो हविस बुझाने दो॥
उन अजित-बाहु की दया से, बाहु-बाहु तुम्हारा अक्षय हो।
हम दिल से आशिष देते हैं, इस जगह तुम्हारी ही जयहो॥
आशीष ब्राह्मणों की पाकर वह, विप्र वेष बल धाम चला।
योगी बन कर वीरत्व चला, यह जटिल भाव में काम चला॥
भस्मी में तेज छिपाये हुए, वह तेजवान यों जाता है।
मानो घन मण्डल को लेकर पूर्व से दिवाकर आता है॥
क्षण भर में उस भूमि पर, जा पहुँचा बल धाम।
इष्ट-देव की ओर को झुक कर किया प्रणाम॥
केशव भी ने सकेतों में, आशिष स्वीकृति दे डाली है।
बल-शाली ने कौतुक ही में, धन्वे पर डोर सँभाली है॥
बाजू ने थोड़ा बल खाया, खुद चक्र सुदर्शन बिचल गया।
चक्र के निकट चटकार हुई, वह तीर आंख से निकल गया॥
द्विज वृन्दों ने जयकार किया, वाह वा उठी क्षत्रिय दल से।
पीले मुँह पड़े कौरवों के, झड़ उठे फूल नभ मण्डल से॥
एक ने हृदय से लगा लिया, चूमा एक ने भुजाओं को।
चारों दिश की जयकारों ने गुंजित कर दिया दिशाओं को॥
खलदल फिर भी कह उठा, इसका कौन प्रमाण।
क्या जाने किस ओरसे, निकल गया है बाण॥
यदि भटवर में कुछ जौहर है, तो फिर से करतब दिखलाये।
दूसरी बार वह बार करे, बस बाण आंख में रह जाये॥
वह विप्र-वेश भट-वर बोला, लो अब से नई बात देखो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखो विद्या का चमत्कार, हाथों की करामात देखो ॥
यों कहकर झटका धन्वे को, तो तीर डोर में लटक रहा ।
कुछ खटके में शर सटक गया, और बीच आंख में अटक रहा॥

अब विपक्ष के पास था, क्या दूसरा विवाद ।
रंग भूमि के रंग में, बिखर पड़ा आल्हाद ॥

आदेश पिता का पाते ही, पांचाली कदम बढ़ाती है।
झुकते झूमते सकुचाते से, नयनों को तनिक उठाती है ॥
विकसित कपास के कुसुम निकट, वह कुन्दकली छविपाती है।
अथवा कुमार कैलासी ढिंग, गौरी देवी दरशाती है ॥
झटवर को वर प्रणाम करके, या वर माला दिखलाती है।
या सुरति दिलाकर रति पतिकी, तपसी काम को मनाती है॥
पर चकित थकित रहगई आप, कुछ ऐसा अमित प्रभाव बढ़ा।
कर की माला कर से न बढ़ी, वह भेद भाव मय चाव बढ़ा॥
संकोच-प्रीति की लोरी में, हृद–कली विकसने वाली थी।
गिरने वाली थी द्रुपद-सुता, वर–माल खिसकने वाली थी॥

तब तक आली ने कहा, जोड़ी पर बलिहार ।
हार गई हो क्या बहिन, पहिनाओ जय-हार ॥

है घड़ी घड़ीकी कुशल आज, है घड़ी न यों ही खोने की।
जो घड़ी शांति से बीत सके, वह घड़ी समझ है सोने की॥
जिस में अपना हित माना है, उसको पहले अपनाओ तो।
इस प्रेम निहारन से पहिले, यह विजय हार पहनाओ तो॥

आली के सुनकर वचन, उठे विकम्पित हाथ ।
मानो शशिरस-पान हित, बढ़े युगल अहि नाथ॥

अथवा दो कमल सनाल बढ़े, रवि के हित पूजन-थाल लिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या विजय लक्ष्मी ही पहुँचा, जय-शाली पर जय माल किये॥
ठिठकी सी और भुलानी सी, ज्यों त्यों जयमाल उठाती है।
प्राणों का हार बनाती है, या प्रणय हार पहिनाती है॥

धीरे-धीरे कण्ठ तक, पहुँचा दी जय माल।
पर न चली पद-जाल से, आगे दृग की चाल॥
द्रुपद सुता का जब हुआ, प्रेम प्रणय स्वीकार।
जयकारों के साथ तब, उठा मङ्गलाचार॥

मिल गई थाह द्रुपदेश्वर को, रानी का हृदय सिराना है।
पांचालों को आनन्द हुआ, विप्रों में मान समाना है॥
आलियां उमङ्ग कर गाती हैं, बन्दीजन विरद सुनाते हैं।
बाजों में विजय बधाई के, शुचि सुन्दर राग सुहाते हैं॥

बदा न था लेकिन अभी, वह महान आल्हाद।
फिर विवाद छिड़ने लगा, जयमाला के बाद॥
कौरव गण बकने लगे, ले-लेकर करवाल।
वीरो लो करवाल कर, निकल न जाये बाल॥

इसमें कुछ चाल द्रुपद की है, वरना रङ्गत पलटा खाती।
वे जाति वंश के पहिचाने, जयमाल न पहिना दी जाती॥
जो शर्त कर्ण के साथ हुई, यह इस पर क्यों न लगाई है।
योधाओ बिलकुल धोखा है, साजिश की एक लड़ाई है।
मालूम हुआ दोनों ही ने, यह कोई जाल रचाया है॥
हम सबकी नजर झुकाने को, जलसा करना ठहराया है।
इसलिये हमें भी दुष्टों को, इसका बदला देना होगा।
वीरो! डरने का काम नहीं, बढ़कर लोहा लेना होगा॥

या बतलाये वीर यह, अपने कुल का हाल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या करना होगा हमें, इसको यहीं हलाल ॥
भटवर बोला ओ बेशर्मो, बहतर है अब भी शर्म करो।
जो आन-बान बाकी हो तो, चुल्लू भर जल में डूब मरो॥
सूरज आगे आने पर भी, अन्धों को संशय बाकी है।
दो बार परीक्षा ले डाली, इस पर भी परिचय बाकी है॥
अच्छा है वही उपाय करो, तब दूर आत्म संशय होगा।
आंखों से परिचय मिल न सका, अब धन्वे से परिचय होगा॥
एक ही बार के वारों में, कह देगा नाम बाण मेरा।
खुल जायेगा धन्वे से ही, ओ वीरो ! खान्दान मेरा॥

कुरुपति बोले वीर गण, नहीं देर का काम।
इस अभिमानी नीच से, लेना है संग्राम॥

यह हांक एक भिकमंगे की, जिसको सुनकर सब धाक चली।
उफ एक पिनाकी के आगे, इतने वीरों की नाक चली॥
सङ्गठित शक्ति से एक शक्ति, हरगिज न पेश पा सकती है।
इतने शेरों के हाथों से, द्रौपदी नहीं जा सकती है॥
अपनी इज्जत हुरमत हो तो, है काम बस यही करने का।
वरना नीची गरदन करके, है समय डूब कर मरने का॥

❀ गायन ❀

वीरो उठो तलवार लो, है यह घड़ी संग्राम की।
मौकाअगरखालीगया, तो वीरताकिसकामकी॥
हाँ हौसले के वक्त में, दिल को न तोड़ा चाहिये।
जो वक्त हैउसपर मरो,परवाह क्या अंजाम की॥
जब वीर वेशी वीर हो, वीरत्व का ही मान है।
तब टेक रखना चाहिये, कुछ वीरता के नामकी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोविन्दअपनीआनपर, सर्वस्व ही बलिदानकर।
तज मोहमाया विश्वकी, दे त्याग ममताचामकी॥
उतर पड़े सुनकर वचन, नीच शूर सरदार।
बस क्या था चलने लगे, यक तरफी हथियार॥

अनगणित तीर तलवार द्रुदुम, अनगणित अस्त्र गोरे-काले।
अनगणितसेलमुग्दरकृपाण, अनगणिततीक्ष्णबिछुए भाले॥
भट एक अनेकों विकट वीर, झरपट झपेट चिपटाये हैं।
मानो रवि पर बहुरङ्ग धरे, जंगी भुजंग लिपटाये हैं॥
धर मार-मार का विकट नाद, हू-हू-हा-हा के साथ उठा।
इस ओर सुभट का मुसका कर, वह धन्वे वाला हाथ उठा॥
दो गुप्त-वीर सुरपति ने भी, अर्जुन की ओर पठाये हैं।
तीनों भटवर रंग स्थल में, हल चल की धूम मचाये हैं॥
ज्यों ही कमान पर बाण चढ़ा, गई आन बल राजों की।
भटराज जहां से गाज उठा, उठ चली लाज सरताजों की॥
हाथों ने एक बाण खींचा, धन्वे पर सौ दरसाने लगे।
चलते-चलते होगये लाख, लाखों का माथ उड़ाने लगे॥

फिर आये शर आप ही, पड़े धरणि पर टूट।
रण-वीरों में मच गई, बिना लूट की लूट॥

श्रोताओ यह न समझ लेना, लड़ने वाले बस कौरव थे।
केवल कुछ भक्त नृपाल छोड़ बाकी रण में सब के सब थे॥
उस ओर विप्र मण्डल में भी, यक वीर बड़ा दरशाता है।
शायद भाई के नाते से, कुछ भाई को समझाता है॥
हे देव! जरा हां ही कह दो तो घाटा पूरा कर डालूँ।
इन चलते हुए जानवरों का, क्षण भर में चूरा कर डालूँ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाई धीरे से कहता है, यों हू-हल्लड़ न करो भैया।
मौके पर आज्ञा दे दूंगा, कुछ समय अभी ठहरो भैया॥
बचने दो अभी विपक्षी को, जब तक कि काल से माफी है।
बाकी लोगों के लिये भीम !, पार्थ ही अकेला काफी है॥

श्रोताओ ! अब तो सभी, प्रकट हो गया हाल।
विप्र वेश में कौन हैं, कुन्ती माँ के लाल॥

हथियार उठाने वालों के, उठते ही उठते हाथ उड़े।
हाथ की ओर मुड़ते-मुड़ते, एक ही मोड़ में माथ उड़े॥
वह खून-खराबा फैल गया, खूनी नाले उमड़ाने लगे।
धड़ भू-मण्डल पर डोल उठे, नभ पर मस्तक मँडराने लगे॥
आ-हा-आ-हा कहने वाले, अब स्वाहा होते जाते हैं।
आनों पर आने वाले के, वह बाने नजर न आते हैं॥

खू-खचड़ के बाद में, बचे-खुचे सरदार।
अपने-अपने मंच पर, आ बैठे मनमार॥
फिर भी किसी नरेश ने, समझ न पाया वेश।
दुर्योधन ने पार्थ पर, पहुँचाया सन्देश॥

दूत ने कहा हे विप्रदेव !, कुछ सम्मति दैने आया हूँ।
श्री कौरवेन्द्र दुर्योधन का, आप तक सँदेशा लाया हूँ॥
यह खूँ-खचड़ हो चुका खूब, अब कुछ शान्ति से विचार करो।
इस कमला कैसी मूरति की, मिट्टी मत बंटाढार करो॥
तुम केवल एक भिखारी हो, यह देवी राज-दुलारी है।
इसका पालन पोषण कर लो, यह हस्ती नहीं तुम्हारी है॥
फूलों की शैया वाली को, मत घास-फूस पर ले जाओ।
इस राज-हंस की मैंना को, कौवे का घर मत दिखलाओ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपिला-नन्दनी और रासभ, यह जोड़ा कहां दिखाता है।
दुनियां में एक कहावत है, जिसका नग वहीं सुहाता है॥
इसलिये हमारी सम्मति है, ले जाओ अपने भोजन को।
घर जाओ प्रभु का भजन करो, दे दो दुलहिन दुर्योधन को॥

कहा पार्थ ने सुन लिया, बस तेरा सम्बाद।
लेकिन मेरी बात भी, कहना रखकर याद॥
इतनी मार पुकार पर, रही राजसी शयन।
अन्धे की औलाद के, खुले न अब तक नयन॥

इस खूँ-खंचड़ से बचना हो, तो फिर से बात बढ़ाये ना।
इस परम प्रतापी के आगे, वह पापी मुँह दिखलाये ना॥
यदि दुलहिन की चाहना हो, तो फिर से तेगें चलवा दे।
मेरी हस्ती देखना चाहे, तो विन्दुमती को पहुँचा दे॥
इतना आगाही कर देना, अब पा सकता है सफल नहीं।
मेरे जीते जी दुनियां में, दुर्योधन तेरी कुशल नहीं॥

चुभा तीर की तरह से, यह भट का सन्देश।
झपट उठे फिर पार्थ पर, कामी कुटिल नरेश॥

लेकिन अब से पांचों भाई, कर उठे ठीक दीवानों को।
वह मार पड़ी बलवानों पर, ले भागे पापी प्राणों को॥
जो जिसे जहां से राह मिली, उस ओर भागता दिखलाना।
ताना बाना सब भूल गया, रह गया पड़ा सब ताना-बाना॥
उत्साह गया, वह राह गई, घर की सलाह भी भूल गई।
ब्याह की चाह तो अलग रही, पंच की चाह भी भूल गई॥
नारी की ममता में मर कर, भाई की यारी तोड़ चले।
एक तो तड़पता छोड़ चले, एक को सिसकता छोड़ चले॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्यों-त्यों कर फिर से हुई, रङ्ग भूमि में शान्ति।
फिर भी उनकी ओर से, बनी रही वह भ्रान्ति॥
अन्त में द्रुपद ही ने बढ़ कर, उन बलवीर से प्रार्थना की।
हे महाराज! रखनी होगी, तुमको भी लाज याचना की॥
यह महा तेज यह बल विक्रम, क्षत्रियता को दरशाता है॥
लेकिन यह भस्मी मय शरीर, ब्राह्मण पन को बतलाता है॥
इतना तो सभी मानते हैं, तुम बांके शूर लड़ाके हो।
लेकिन अब भी बतलादो, भटवर तुम कौन कहांके हो॥
अर्जुन सीधे से बोल उठे, राजन् हम दीन दुखारी हैं।
जब जैसे थे तब तैसे थे, अब केवल एक भिखारी हैं॥
कहते हैं लोग मुझे अर्जुन, यह चार बन्धु हमराही हैं।
साक्षी है मणि-पुर वालों की, श्री यादव चन्द्र गवाही हैं॥
दर्योधन के छल से मारे, भाग्य के सताये फिरते हैं।
कुछ देश-काल की प्रगति देख, यह वेश छिपाये फिरते हैं॥

कृष्णचन्द्र ने भी कहा, है बिल्कुल सच बात।
राजन् यह हैं पाण्डु सुत, बली विश्व-विख्यात॥

उस लाक्षागृह की ज्वाला से, ज्यों त्यों कर बचने पाये हैं।
या यों मुझको वह पूर्ण पुण्य, आपही सामने आये हैं॥
ऋषि की वाणी भी सफल हुई, प्रण भी हो चुका तुम्हारा है।
अब यथा वंश व्यवहार करो, इतना संकेत हमारा है॥

द्रुपद राज कहने लगे, आह! विधाता! पोच।
अपने ही कुल वंश में, इस प्रकार संकोच॥
ना कुछ विपदा के बादल में, छिप बैठे पांच सितारे हैं।
उफ कौन कहेगा? दुनियां में, सचमुच यह पाण्डु दुलारे हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों महाराज कुरु-वंश सहित, सारे विश्व से किनारा था।
आते इस जगह राज्य करते ,यह भी तो देश तुम्हारा था॥
एक चमकीला पत्थर समझा, अफसोस ! हाथ के हीरों को।
बिठलाया हा भिखारियों में, शान्तनु कुल के बलवीरों को॥
जो हुआ शान्ति निधि अनजानी, यह भूल क्षमा करदीजैगा।
भिक्षुक की तुच्छ भेट जो है, अब उसको स्वीकृत कीजैगा॥

धर्म राज कहने लगे, यह न हमारा दोष।
विपदा में रहते नहीं, कभी ठिकाने होश॥

यदि होश हवास दुरुस्त रहैं, हर उलझन भी मिटती जाये।
जो दुःख टलता जाये, तो विपदा ही क्यों कहलाये॥
यह अटल नियम प्रकृति का, जब जिसपर विपदा आती है।
तो विपदा जाने से पहले ,उसकी मति मारी जाती है॥
फिर राजन् एक नीति भी है, जिससे मैंने पत खोई नहीं।
सुख की साथी तो दुनियां है, दुख में किसी का कोई नहीं॥
जब ग्रहण चन्द्र पर आता है, तब एक न आगे आता है।
कुछ ऐसा भी है विपदा में, मित्र भी शत्रु दिखलाता है॥
विपदा तो तभी नसाती है, जब साहस धर्म-विचार रहे।
सीधा स्वभाव शुचि-शील सुकृति, श्रीरामचरण आधार रहे॥

नृपवर इसे न ढालिये, केवल अपनी ओर।
मचा हुआ है जगत में, इसी नीति का शोर।
दुखी नहीं तो दुख कहां, सुखी दुखहुए अन्त।
है दोनों ही तरह से, इन द्वन्दों का अन्त॥

साफ बतलाती हमें जगत अनस्थिर है।
प्रकृति तो सदा ही यों रंग दिखलाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाचती स्वयं है तब और को नचाती हुई।
सत्य शान्ति शौर्य शील साहस सिखलाती है॥
कुछ दिन ठहराती और आप त्याग जाती है।
जाते ही जन को भरा पूरा कर जाती है॥
व्यर्थ घबराते नर रोते हैं वृथा ही भीरु।
विपदा विचारी कौन बार-बार आती है॥

इससे भी कोई सम्बन्ध नहीं, हम मिट्टी हैं या सोने हैं।
जैसे भी हैं जो कुछ भी हैं, प्रभु के हाथ के खिलौने हैं॥
हम तो माया के चेरे हैं, यह माया नाथ कहाते हैं।
वैसे ही हमें नाचना है, जैसा नट-राज नचाते हैं॥

यादवेन्द्र कहने लगे, शान्त धर्म मति धीर।
इस चरित्र का भेद है, परम-गूढ़ गम्भीर॥

मत समझो दाना मिट्टी में, मिलकर न पनपने पायेगा।
विश्वास रहे कुछ दिन पीछे, सर सब्ज बाग दिखलायेगा॥
मैं एवं मेरे भक्त वृन्द, ऐसे ही रहस रचाते हैं।
विपदाओं को सहते-सहते, पाप पर विजय पा जाते हैं॥
वह समय नहीं है दूर नृपति, यह विपद स्वयं मिट जायेगी।
भारत के कोने कोने में, धर्म की ध्वजा फहरायेगी॥
थे अभी एक अब दो तुम हो, जो चाहोगे कर डालोगे।
दो मिल कर उठ बैठोगे तो, गिरती बाजियां उठालोगे॥
राजन् ऋषि वाणी सफल हुए, अब ब्याह प्रेम के साथ करो।
अपने कुल के व्यवहार करो, कन्या के पीले हाथ करो॥

मिले अन्त में प्रेम से, पाण्डव द्रुपद-नरेश।
गमने द्वारावती को, यादव पति कमलेश॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि-जटित सुभट मण्डप मानो, मन्मथ ने स्वयंबनाया है।
सानन्द अर्घ्य देकर उसमें, वर दुलहिन को बिठलाया है॥
कल-वदनी कल कंठाओं ने, हिल-मिलकर मंगल गान किया।
वैदक-विधान से नियम-सहित नृपवर ने कन्यादान किया॥
कितने ही दिन रहा, वह उत्सव पुर छाय।
धर्म राज कहने लगे एक रोज सकुचाय॥
नर-राज आपका अतुल प्रेम, कुछ ऐसा भाव दिखाता है।
जो हम से वन विरागियों को, अनुराग सिखाता जाता है॥
जी कहता है इन चरणों की साया से जाना ठीक नहीं।
लेकिन स्थिति बतलाती है, यों समय बिताना ठीक नहीं॥
हम चैन यहाँ पर करते हैं, उस जगह अकेली माई है।
कुछ पता नहीं इतने दिन में, क्या पेश वहाँ पर आई है॥
दूसरे आपको जाहिर है, हम दीनों का आधार नहीं।
भीख के सिवा व्यापार नहीं, घर-बार नहीं परिवार नहीं॥
ऐसी सूरत में एक जगह, रहना हमको न सुहाता है।
सुख शांति प्रेम होने पर भी, कुछ दुख सा बढ़ता जाता है॥
इस कारण आज बिदाई को, चाहते प्रेम अधिकारी हैं।
चरणों के प्रेम पुजारी यह, आज्ञा के नाथ भिखारी हैं।
द्रुपद-राज कहने लगे, भर नयनों में नीर।
जाओ मेरे पूज्यवर! धर्म-वीर! प्रण-वीर॥
मैं भले प्रकार जानता हूँ, जैसे तुम दीन दुखारी हो।
हे त्याग मूर्ति भूतल तो क्या, सुरपुर के तुम अधिकारी हो॥
उन नटवर की लीलाओं के, तुम सूत्र-धार हो नायक हो।
या आदि सृष्टि संचालन से, द्वापर के मुख्य सहायक हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह धर्म डूबता जाता है, हे धर्म रूप ! आधार बनो।
जो नाव भँवर में अटकी है, उसके तुम खेवन हार बनो॥
मुझसे तन, मन, धन के द्वारा, जोकुछ सेवा बन आयेगी।
संकेत मात्र के पाते ही, वह खाली कभी न जायेगी॥

यों कहकर द्रुपदेश ने, पुत्री को बुलवाय।
आँसू भरकर प्रेम से, छाती लिया लगाय॥

सच तो यह है इस नाते से, तकदीर हमारी खुलनी है।
हे पुरुष रत्न लो ग्रहण करो, चरणों की तुच्छ टहलनी है॥
बेटी जाओ उस विधना ने, लिख दिया जन्म सन्यास तुम्हें।
मान लो पिता माता ने ही, दे दिया आज बनवास तुम्हें॥
पर ध्यान रहे इस हालत में, अपने कुल जाति मयत्री का।
आदर्श हमेशा बना रहे, बिदुला, सीता, सावित्री का॥
मरियो मत बिषय बिलासों पर, विपदा से कभी डरैयो ना।
पति सेवा से बंचित रहकर, माता की हँसी करैयो ना॥

मातु पिता सब नारियाँ, ललक-ललक लपटाय।
बिलख रहीं लखती हुई, प्रेम न हृदय समाय॥

पांचाल नगर के बाल- वृद्ध, हैं विरह व्यथित पांचाली से।
उस प्रेम बाटिका के माली, बिछुड़े हैं आशा डाली से॥
उड़ गया ध्यान अपने पन का, वह आत्म भाव उत्साह बढ़ा॥
आया न किनारा पहरों तक, कुछ ऐसा प्रेम-प्रवाह बढ़ा॥
द्रोपदी दो कदम चलती है, फिर माता से लपटाती है।
माता से जरा छूटते ही, सखियों की बारी आती है॥
हर नर—नारी बिलखाते हैं, करुणा सर्वत्र समाई है।
मानों नगरी के घर–घर से, बेटी की आज बिदाई है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लपट-लपट कर मातु ने, कहा लाड़ली जाव।
भूल न जाये भीर में, सती-धर्म का भाव॥

❀ गायन ❀

प्राण दे के भी सती-धर्म बचैयो बेटी।
विशुद्ध वंश की मर्याद निभैया बेटी॥
आँख में जिस तरह काजल निबाह करता है।
उसी तरह से वहाँ मेल बढ़ैयो बेटी॥
जाय सर्वस मगर धर्म न जाने दीजो।
सत्य के नाम पै बलिदान चढ़ैयो बेटी।
विनीत लाज का शृंगार न लुटने पाये॥
चाहे धन-धाम का बलिहार करैयो बेटी॥
रानी ने फिर पार्थ के, चरण गहे अकुलाय।
विनयशीलइसदीनकी, विनयबिसरजनिजाय॥

लाड़ली लड़ैती ललना का, है समय खेलने खाने का।
गुड़ियों तक का है ज्ञान अभी, अनुभव कुछ नहीं जमानेका॥
भूल पर भूल बन आयेगी, पर उन्हें हृदय में धरियो ना।
होजाये कोई बड़ी चूक, तो लाज क्षोभ कुछ करियो ना॥
मैया से पायलगन कह के, कह दीजो विनय हमारी है।
इतना ही समझे रहें सदा, उनकी नादान दुलारी है॥
अपनाओ प्रिय अपना कहकर, अपने पनकी अधिकारिणको।
हे प्रणय-मूर्ति स्वीकार करो, चरणों की प्रेम पुजारिन को॥

रोते-धोते इस तरह, दिया गया घर-भार।
हिल-मिल कर चलने लगे, पाँचों पाण्डु-कुमार॥

वाचक गण! कितनीबार कहें? माता बेटी का बिलपाना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो चार क़दम आगे बढ़ना, फ़िर लौट-लौट कर लपटाना ॥
माँ की पुकार यह उठती है लाड़ली सोच कुछ करियो ना।
बेटी चिल्लाती जाती है, मैया री सुरति विसरियो ना ॥
शब्दों में क्यों कर दरशायें, ममता-मूर्ति की दाई को।
माता का हृदय जानता है, बेटी की विरह-बिदाई को ॥

द्रुपद-सुता के साथ में, गमने पाण्डु कुमार।
पहुँच द्वार पर धर्म ने, माँ से कहा पुकार ॥

मैया थोड़ा बाहर आओ, सुकुमार कुशल से आये हैं।
आँखों से तनिक निहारो तो, क्या भीख अनोखी लाये हैं ॥
कुन्ती बोली भीतर ही से माता तो अभी काम पर हैं।
लाड़ले आज की भिक्षा में, पाँचों का भाग्य बराबर है ॥

माता के यह वचन सुन, चुप रह गये कुमार।
आज्ञा पालन के लिये, कर न सके निर्धार ॥

चिल्लाये बाहर तो आओ, इस आज्ञा को कैसे पालें।
आज की भीख वह भीख नहीं, जिसका बटवारा कर डालें ॥
यह अन जानी आज्ञा देकर, क्या लीला करनी ठानी है।
माता तुमको मालूम नहीं, यह जिन्स नहीं है प्राणी है ॥

कुन्ती ने बाहर निकल, देखी द्रुपद दुलारि।
तन मन से उस पर हुई, मन ही मन बलिहार ॥
लेकिन ज्यों ही वचन पर, आया उसको ध्यान।
असमंजस में रह गई, त्यों ही मूर्ति समान ॥
किन्तु व्यास भगवान ने, आकर दिया प्रमाण।
तेरी आज्ञा मात्र ही, है दैवीय विधान ॥

सब लोग द्रुपद के धाम चलो, तब यह रहस्य प्रकटाऊँगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं उस दैवी लीला का, प्रयक्ष रूप दिखलाऊंगा ॥
सब लोग द्रुपद के यहाँ गये, वह सारी घटना समझाई।
ऋषिवर ने उसके साथ साथ, अपनी सम्मति भी ठहराई ॥
आँखें नीचे पड़ गईं, सुनते ही वह हाल।
हाथ जोड़ मुनिराज से, कहने लगे नृपाल ॥
ऋषि राज आपकी आज्ञा तो, वैसे ही मुझे मानना है।
लेकिन इसके साथ ही साथ, धर्मों का तत्व जानना है ॥
पृथ्वी पर एक पतिव्रत ही, नारी का धर्म कहाता है।
तो फिर पांचाली देवी को, क्यों बिवश बनाया जाता है ॥
इसके बहु-पति होजाने पर, वह पतिव्रत क्या ठहरायेगा।
यह महा नीच व्यवहार देव, व्यभिचार नहीं कहलायेगा? ॥
मेरी तो इतनी सम्मति है, वैदिक मर्यादा ठनी रहे।
पुत्री का पातिव्रत बना रहे, मां की आज्ञा भी बनी रहे ॥
व्यासदेव कहने लगे, उस दैव का विधान।
करता है सब भांति से, जीवों का कल्याण ॥
पहले पूछो पांचाली से, इसने कैसा वर पाया है।
फिर इस लीला पर ध्यानकरो, जिसने यह योग मिलाया है ॥
वर मिला पंच भरतारों का, राजन द्रोपदी दुलारी को।
उस ओर शंभु का शाप हुआ, माया बशात असुरारी को ॥
पाण्डव गण क्या हैं वही इन्द्र, इन रूपों में प्रकटाया है।
प्रभु ने ही अपनी इच्छा को, मां के मुँह से कहलाया है ॥
फिर कर्म मात्र का निर्णय तो, मानुष के मन पर निर्भर है।
है शुद्ध-हृदय तो कुकरम भी, अच्छे कर्मों से बढ़ कर है ॥
लाचारी या भूल से, बन आये जो पास।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी उठायेगा नहीं, नर उसका संताप ॥
बीमार अहार छोड़ने से, व्रत-धारी नहीं कहाता है।
लाचारी में कर्म का त्याग, कुछ त्याग न माना जाता है॥
कारण उसका मन आठ पहर, उन विषयों में ही रहता है।
फिर यह तो बात दूसरी है, उसका कुछ जोर न चलता है॥
बस इसी तरह लाचारी का, अपकर्म न माना जायेगा।
तत्वज्ञों की नजरों में वह, दैवी-विधान कहलायेगा॥

है प्रसिद्ध संसार में, यही एक व्यवहार।
पत्नी को है सर्वथा, पति आज्ञा स्वीकार॥

बेटे को पिता और माँ की, आज्ञा सर्वस्व कहाती है।
नारि को पति की आज्ञा ही, पतिव्रत मानी जाती है॥
अर्जुन कुन्ती का बेटा है, पांचाली उसकी नारी है।
इसलिये प्रतिज्ञा रखने में, वह सब प्रकार अधिकारी है॥
अर्जुन माँ की आज्ञा माने, यह पति आज्ञा स्वीकार करे।
बस इस प्रकार से पांचाली, पाँचों के साथ बिहार करे॥

खुला न हो, अबभी अगर, तुम परदैव विधान।
दिव्य दृष्टि द्वारा करो, तो इसकी पहिचान॥

देखा सबने सब पाण्डव-गण, मिल गये परस्पर एक हुये।
फिर रूप होगये भिन्न भिन्न, सुरपति के अंश अनेकहुए॥
द्रोपदी पंच-रूप बन कर, पाँचों के साथ नजर आई।
फिर एक रूप धार कर वहीं, पाँचों की नारी कहलाई॥

इस प्रकार से मिट सका, वह सन्देह विकार।
एक द्रोपदी सती के, हुए पंच भरतार॥

॥ शुभमस्तु ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री गणेशायनमः ❀

महाभारत

सभा-पर्व

—::❀::—

भक्त-भावन-

❀ प्रार्थना ❀

हम भी तो अंश तुम्हारे हैं भगवान ! हमारी खबर करो।
ममता-वश दीन-दुखारे हैं, भगवान हमारी खबर करो॥
सुख दुख की बात करो न करो, यह विपदा नाथ हरो न हरो।
इतने ही वचन हमारे हैं, भगवान् हमारी खबर करो॥
ले चलो स्वर्ग में तो अच्छा, नर्क में गिरा दो तो अच्छा।
वे दोनों धाम तुम्हारे हैं, भगवान् ! हमारी खबर करो॥
धन जाये तो परवाह नहीं, जन जाये तो परवाह नहीं।
हम तो तुम पर बलिहारे हैं, भगवान ! हमारी खबर करो॥
आया मद-मोह विषाद रहे, पर नाम तुम्हारा याद रहे।
इस में गोविन्द सुखारे हैं, भगवान् ! हमारी खबर करो॥

-०-::❀::-०-

विनीत,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथा--आरम्भ ।

इस प्रकार सानन्द वह, पूर्ण हुआ उत्साह ।
उसी जगह करने लगे, पाण्डव गण निर्वाह ॥
मर-मिट कर कौरव यहाँ, पहुँचे अपने धाम ।
अन्ध-राज के भवन में, रोने लगे तमाम ॥

दुर्योधन बोला-आह पिता, आशा का फूल त्रिशूल हुआ।
जो आम समझकर गाढ़ा था, वह उगकर आज बबूल हुआ॥
दामन अपना भरते-भरते, अरमान पड़ गये रीते हैं।
मर मिटे मारने को जिनको, वे पाण्डव अब भी जीते हैं
जीते ही नहीं जीतने के, सारे सामान जुटाये हैं।
पूरब में डेरा डाल चुके, उत्तर पर आंख लगाये हैं॥
ज्यों ज्यों हम जड़ें काटते हैं, त्यों त्यों वह पौदा फलता है।
कोई तो बतलाओ दिल का, कांटा किस तरह निकलता है॥

दुःशासन कहने लगा, विनय सुनो बल-धाम ।
नहीं चलेगा अब वहां, बिना नीति के काम ॥
भीम अर्जुन को आशा देकर, लो बुला और मरवा डालो॥
पांचाली को यह बहका दो, या द्रुपद नरेश दबा डालो॥
अथवा फिर से झांसा देकर, कोई माया फैलावेंगे।
बच गये अभी यह किस्मत थी, अब से न कभी बच पायेंगे॥

कहा कर्ण ने मत करो, बच्चों की सी बात ।
आखिर उनकी शक्ति भी, है कुछ तुमको ज्ञात ॥
पहले तो गीदड़ के समान, हम उन शेरों के आगे हैं।
दो दिन भी अभी न बीते हैं, हा हा पुकार कर भागे हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाल ही सही तो डर क्या है, सिंह को श्वान के नारे से।
सारा भू-मण्डल नाचेगा, उँगली के तनिक इशारे से॥
वे वचन विदुर द्रुपदेश्वर के, कुन्ती को भी स्वीकार हुए॥
कुछ गुप्त-मंत्रणा के पीछे, सब चलने को तैयार हुए।
लगा हुआथा जिस समय, कुरु-पति का दरबार॥
उसी समय पहुँचे वहाँ, पाँचों पाण्डु कुमार।
धृतराष्ट्र भीष्म को कर प्रणाम, बलवीर बीच में खड़े हुए।
कुछ लखते हुए कनखियों से, वे धूर्त्त यकायक चौंक पड़े॥
हिल मिल कर प्रेम जुहार हुई, छल-मय सम्बन्धी आँखों से।
कुछ कपट नीर भी बह निकला, अन्धेके अन्धी आँखों से॥
अब समझा जीवन मरण, नहीं किसी के हाथ।
सदा और सब जगह है, वह अनाथ का नाथ॥
उसने ही कृपा कोर करके, मेरे लाड़ले बचाये हैं।
सौभाग्य आज इतने दिन में, वे हीरे मिलने पाये हैं॥
जब से कानों में पड़ी तात, जलने की खबर तुम्हारी है।
तब से ईश्वर जाने भैया, रो-रो कर रात गुजारी है॥
पर शोक वहाँ से बचकर के, जङ्गल की ओर सिधारे थे।
घर आते अपना दुःख कहते, क्या हम सब शत्रु तुम्हारे थे॥
हमने जी जान लगा डाली, कारण का पता लगाने में।
इन सब का समय बीतता है, भैया! रोने बिलपाने में॥
क्या नहीं जानते हो बेटा, कितने तुम मुझको प्यारे हो।
आखिर यह तो है बोध तुम्हें, तुम भी यक अंश हमारे हो॥
धर्मराज कहने लगे, धन्य हमारा भाग्य।
जो हम पर कुरु नाथ का, है इतना अनुराग॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस जलती हुई ज्वाला में से, प्रभु ने जो हमें उबारा है।
वह पुण्य प्रताप पाण्डु का है, शुभ आशीर्वाद तुम्हारा है॥
घटना के बाद यहाँ आना, पहला कर्त्तव्य हमारा था।
लेकिन किस्मत के चक्कर में, बुद्धि का न कोई चारा था॥
यह सच है और प्रकृति भी है, जब विपदा सिरपर आती है।
उस समय चतुरता और बुद्धि, आप ही विदा हो जाती हैं॥
बस उसी विपति ने दीनों को, इन चरणों में आने न दिया।
ले गई खींचकर विपिन ओर, महलोंका सुखपाने न दिया॥

बिहँस कहा धृतराष्ट्र ने, खैर समय बलवान।
पर अब आगे के लिये, कुशल करे भगवान॥

बेटा बिछुड़े हो चुका समय, अब भाई-भाई मिल जाओ।
घर में जो रूखा सूखा हो, उसको सब मिल-जुलकर खाओ
बन सकती नहीं कौरवों से, हो यदि यह अभी विचार तुम्हें।
तो पांच पंच मिल देते हैं, आधा-आधा अधिकार तुम्हें॥
तुम इन्द्र प्रस्थ की ओर रहो, दे दो यह भाग सुयोधन को।
अपनी-अपनी जागीर रहे, फिर अपना-अपना शासन हो॥
आप ही भला हो जायेगा, मिल जायेंगे दस जहाँ भले।
जो आप भले तो जगत भला, तुम वहाँ भले यह यहाँ भले॥

उस उजाड़-थलका मिला, था यद्यपि अधिकार।
किन्तु धर्म ने कर लिया, उसको भी स्वीकार॥

तत्क्षण नर-पतिकी आज्ञा से, बन बीहड़ साफ कराया गया।
बाजार-हाट शुभ-सदनों से, वह सुन्दर नगर बसाया गया॥
सूचना सहाय आदि पाकर, गुणवान आप ही आने लगे।
कुछ दिन पीछेही बन बीहड़, उपवन के चिह्न दिखाने लगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ दुर्योधन से पीड़ित-जन, आप ही वहां आबाद हुए।
बन्धन कटगया गुलामी का, पाया स्वराज आजाद हुए॥
कितने ही आने वालों का, नृपवर ने सिर पर भार लिया।
कितने ही कर करदिये बन्द, कितनों को धान्य उधारदिया॥

इन्द्र नगर से कम न था, इन्द्रप्रस्थ शुभ धाम।
धर्म नाम ही में प्रगट, हो सकता है काम॥

घर-घर विनोद हरि की चरचा, शुभ धर्म-कर्म की शिक्षायें।
वाणिज्य शिल्प कृषि की उन्नति, विज्ञान ज्ञान की गाथायें॥
पंचों के द्वारा धर्मराज, शासन का काम चलाने लगे।
या जन्म भिखारी कुछ दिन को, सपने के लड्डू खाने लगे॥

एक रोज दरबार में, आ पहुँचे ऋषिराज।
यथा साध्य सत्कार कर, बोले नृप सिर ताज॥

सौभाग्य! आज करुणा-निधान, दीनों के यहां पधारे हैं।
है इन्द्रप्रस्थ की किस्मत ही, कुछ पुण्य-प्रताप हमारे हैं॥
दीनेश! दया कर बतलाओ, दीन के योग्य सेवा क्या है।
किस कारण कष्ट उठाया है, भगवन् जनको आज्ञा क्या है॥

नारद ने उत्तर दिया, सुनिये धर्म नरेश।
कहना है कुछ आप से, यथा समय उपदेश॥

दो बन्धु यहाँ पर रहते थे, उपसुन्द सुन्द कहलाते थे।
जिनकी समता में भू-तल के, बलवीर नहीं ठहराते थे॥
था उनमें सच्चा प्रेम भाव, जीवन-चर्य्या भी न्यारी थी।
पर सबसे बड़ा नुक्स यह था, बीच में एक ही नारी थी॥
कुछ दिन तो उनमें प्रेम रहा, फिर मन मुटाव का तार हुआ।
नारी के पीछे ही उनका, लड़ते-भिड़ते संहार हुआ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब जर जमीन अथवा जोरू, दबते हैं दावादारों से।
तो उनका निर्णय होता है, शमशीर और तलवारों से॥
जिस घर में नर पांच हैं, नारी केवल एक।
वहां कठिन है हर तरह, सच्चा प्रेम विवेक॥
वह प्रेम जभी निभ सकता है, जब बंधी हुई मर्याद रहे
वर्ष के पांचवें भाग तलक, प्रत्येक पुरुष आबाद रहे॥
इतना ही नहीं नियम इसका, कोई विशेष कर बन्धन हो।
जिसके द्वारा प्रेम ही रहे, शुभ धर्म-कर्म का साधन हो॥
बारी के सिवा द्रौपदी के, महलों में कोई जाये नहीं।
जाये तो बारह वर्षों तक, फिर घर में मुँह दिखलाये नहीं॥
करना न चाहिये स्वयं एव, महलों में भूल निवास उसे।
बारह वर्षों भोगना पड़े, इसके बदले बन-वास उसे॥
सम्मति से निश्चित हुई, वह महलों की आन।
किन्तु वहां भी छिपा था, कुछ दैवीय विधान॥
एक विप्र ने एक दिन, की रात को पुकार।
दौड़ो, दौड़ो बेग ही, ओ अर्जुन बलधार॥
मुझ दुखिया का धन धान्य छीन, यह तस्कर भागा जाता है।
ओ गौ ब्राह्मण के बन्धु उठो, यह ब्राह्मण टेर लगाता है॥
अर्जुन की निद्रा टूट गई, झाँकने लगे वह बगलों में।
अफसोस मगर उनका धन्वा, था द्रुपद-सुता के महलों में॥
किन्तु विचारे ही वहां, जा पहुँचे बल-धाम।
धन्वा लेकर कर दिया, खल का काम तमाम॥
धन लौटा कर विप्र को, गये धर्म के पास।
तथा बिहँसते बदन से, यों बोले बल-राशि॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे सत्यवादी वे हैं, वास्तविक राज्य-अधिकारी हैं
तीसरे पाण्डवों के साथी, यादव--पति गर्वाहारी हैं॥
चौथे देखो द्रुपदेश्वर को, बेतुके न यों ही जिक्र करो।
उनकी चिन्ता पीछे करना, पहले कुछ अपनी फिक्र करो॥
बूढ़े—बुजुर्ग एकत्र करो, फिर एक शूर सरदार करो।
जैसे उनकी सम्मत ठहरे, वैसा अपना निर्धार करो

दुर्योधन ने कर लिया, यह कहकर स्वीकार।
हुए इकट्ठे उस जगह, भीष्म आदि सरदार॥
रक्खा सबके सामने, नृप ने वह प्रस्ताव।
प्रकट किये प्रत्येक ने, अपने—अपने भाव॥
कहा भीष्म ने अन्त में, सुनो सुयोधन लाल!
नर को देखा चाहिये, सदा समय की चाल॥

सारा संसार पुकार रहा, तुमने उनको जलवाया था॥
पर उनके सत बल के कारण, ईश्वर ने उन्हें बचाया था॥
यदि यह सच है तो तुम्हीं कहो, क्या लज्जा-मय ये कर्म नहीं।
शत्रु के साथ भी दगा करे, यह किसी वीर का धर्म नहीं॥
तुम समझे हो ऐसा करके, शत्रुका नाश हो जायेगा।
पर याद रहे इन चालों से, वह बल दूना दिखलायेगा॥
यह दमन-नीति आगे बढ़कर, तुम तक धक्का पहुँचायेगी।
विश्वास रहे, उन लोगों की, शान्ति ही क्रांति बन जायेगी॥

अपने ही भाई हुए, शोक आज को गैर।
कुशल कहाँ तक करेगा, यह आपस का बैर॥

ऐसा न कहीं हो यह बिगाड़, दोनों का बंटाढार करे।
कौरव न रहें पाण्डव न रहें, तीसरी शक्ति अधिकार करे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये नीति यह कहती है, बिछुड़े भाई को अपनाओ।
जो अपना भला चाहते हो, तो उन्हें यहाँ पर बुलवाओ॥
सोचो तो जरा हमारे प्रिय, औरों के पड़े सहारे हैं।
वे नीच सही दुष्ट भी सही, आखिर तो बन्धु तुम्हारे हैं॥
इसलिये मान जाओ अब भी, दो दुःख न यों बेकार उन्हें।
घर बुलवाओ धीरज देकर, दे दो उनका अधिकार उन्हें॥

अन्धराज ने भी दिया, इस सम्मति पर जोर।
भीष्म-पिता संकेत कर, झुके विदुर की ओर

बोले-यदि सबकी सम्मति है, तो भक्त विदुर को पहुँचाओ।
द्रुपदेश्वर को पत्रिका लिखो, पांडव लोगों को बुलवाओ॥
धृतराष्ट्र और दुर्योधन भी, उनकी हाँ में हाँ मिला चले।
सानन्द विदुर भी उन सबके, आने का निश्चय दिला चले॥

विदुर भक्त पहुँचे जहाँ द्रुपदेश्वर के धाम।
चरणों पर पड़ने लगे, पाण्डव वृन्द तमाम॥

आपस में कुशल-प्रश्न करके, यह दबा हुआ आल्हाद उठा।
कुछ इधर उधर की बात हुई, फिर चलने का सम्बाद उठा॥
आँखों से आँसू बहा लिये, कण्ठ में रुकावट बढ़ी रही।
गद्गद् होगये हृदय सबके, परभृकुटि भीम की चढ़ी रही॥

कहा विदुर ने कण्ठ भर, मेरे प्राणाधार।
पाण्डु-वंश के धर्म-रवि, भारत के आधार॥

अपनी पिछली करतूतों की, देना मुझको न सफाई है।
ज्वाला से जीवित बचे रहे, बस इस बात पर बधाई है॥
कुरुपति के साथ-साथ मुझको, अपना जीवन हर्त्ता समझो।
उसके सारे षडयन्त्रों का, मुझको कर्त्ता-धर्त्ता समझो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हूँ मित्र-रूप में शत्रु मगर हत्या-कारी हित-कारी हूँ।
ज्ञानी हूँ और अनाड़ी हूँ, धनियों के साथ भिखारी हूँ।
इसमे मैं अपने कर्मों की, करने फरियाद न आया हूँ।
हां भीष्म औ दुर्योधन का, तुम तक सन्देशा लाया हूँ॥
अस्तु सार सन्देश सुन, करलो प्रथम विचार॥
फिर मानो अथवा नहीं, यह तुमको अधिकार।
धर्म-राज कहने लगे, चाचा! चतुर सुजान।
हमें ज्ञात है आप का, धर्म-कर्म विज्ञान॥
उस महा मृत्यु के मुँह में से, दीनों के प्राण उबारे हैं॥
मैं भले प्रकार समझता हूँ, वे सभी रहस्य तुम्हारे हैं॥
तनसे यह पक्ष करो न करो, पर मनमें ममता ठनी रहै।
तुम मेरी ओर रहो न रहो, पर कृपा तुम्हारी बनी रहै॥
उभय ओर से बह चली, प्रेम-नीर की धार।
विदुर भक्त ने फिर कहा, मेरे राज-कुमार॥
जैसे पारे अथवा रज से, दर्पण की ढकी सफाई है।
चाण्डाल-चौकड़ी में मिलकर, त्यों ही वह विदुर कसाई है॥
यह ही वह पहला पापी है, जो धर्म तत्व का ज्ञानी है।
यह ही वह निश्चर साधू है, जिसकी साधना बिलानी है॥
जो है जैसा है अच्छा है, यह भी एक नाम कमाया है।
अब अन्तिम एक संदेश सुनो, कुरु-पति ने तुम्हें बुलाया है॥
कुरु-पति ही नहीं बुलाते हैं, कररहा याद दरबार तुम्हें।
सबका विचार यह ठहरा है, दिया जाय अधिकार तुम्हें॥
मेरी भी इसमें सम्मति है, चलने में आज भलाई है।
बहतर है भाई-भाई की; यह पहली सफल रसाई है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कह न सके थे कुछ अभी, धर्मराज मति धीर।
बोल उठे अध बीच से, बिहँस वृकोदर वीर॥
प्राणों तक नौबत आई थी, पहली बार की रसाई में।
क्या नई सफाई सोची है, अब की बार की सफाई में॥
चाचाजी आप हमारे हैं, तुमसे कुछ छिपा प्रकाश नहीं।
सच तो यह है उन दुष्टों पर, अब हमें रहा विश्वास नहीं॥
चलने को हम सब तत्पर हैं, आज्ञा भी सबकी पालेंगे।
लेकिन वे नीच बुला करके, फिर नया जाल कुछ डालेंगे॥
ऐसे झंझट के जीवन से, यों ही दिन भरना अच्छा है।
या तुम्हीं कहो इस सूरत में, हमको क्या करना अच्छा है।
विदुर भक्त कहने लगे, सुनो वृकोदर लाल।
आन धर्म को सत्य की, साक्षी हैं गोपाल॥
यों तो प्रत्यक्ष देखने में, इस समय वहाँ कुछ चाल नहीं।
हां आत्मामें छल-बल हो तो, यह जाहिर मुझको हाल नहीं॥
फिर छल ही हो तो क्या डर है, जागृत शक्तियां तुम्हारी हैं।
फिर यों ही पक्ष तुम्हारे पर, वे चक्र–सुदर्शन धारी हैं॥
वे ज्यों ज्यों जाल बिछायेंगे, त्यों खुद ही फँसते जायेंगे।
विश्वास रहे उसको कुकर्म, उसके ही कभी डुबायेंगे॥
ऐसे पापी चाण्डाल धूर्त, शीघ्र ही बहैं तो अच्छा है।
मेरी इतनी ही सम्मति है, फिर द्रुपद कहैं सो अच्छा है॥
द्रुपदराज कहने लगे, जाओ प्राणाधार।
सम्मति पंचों की कभी, हुई नहीं बेकार॥
वे सबके सब चाण्डाल नहीं, कुछ धर्म–कर्म वाले भी हैं।
सारा वे–शर्म समाज नहीं, कुछ लाज-शर्म वाले भी हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे धर्म-मूर्ति आज्ञा दीजै, है समय न मोह बढ़ाने का।
दिन है बन ओर सिधाने का, ऋषिवर के वचन निभाने का॥
ब्राह्मण की रक्षा के कारण, वह वचन तोड़ना पड़ा मुझे।
अब वचनों की रक्षा-निमित्त, परिवार छोड़ना पड़ा मुझे॥
वह बन्धु-विरह का व्यथा-वार, यद्यपि बेचारे सह न सके।
पर आन-मान के बन्धन में, रह गये बँधे कुछ कह न सके॥

केवल इतना ही कहा, जाओ धर्म निधान।
घर में वन में सब जगह, कुशल करें भगवान॥
बिदा मांग कर धर्म से, धर्म मूर्ति बल वीर।
पहुँचे मुसकाते हुए, कुन्ती मां के तीर॥
समझाई संक्षेप में, अपनी सारी गाथ।
तथा विदाई के लिए, कहा जोड़कर हाथ॥

कुन्ती पर सिवा आंसुओं के, दूसरा और क्या द्वारा था।
या यों कहिये सारा कुटुम्ब, मर्याद-धर्म का मारा था॥
मां बोली जाओ कर्म-वीर, मत पूछो दुखिया माता से।
सच तो यह है कुछ जोर नहीं, नरका उस वाम विधाता से॥
दो दिन ही से हम दुखियारे, सुख से न बैठने पाये हैं।
उस कुटिल कालने तबतक ही, यह कंटक कठिन बिछाये हैं॥
मालूम हुआ हम दोनों का, विश्राम उसे स्वीकार नहीं।
हे लाल धर्म मर्यादा में, माता का कुछ अधिकार नहीं॥
जाओ कुमार जाओ लाला, प्रभु सदा कामना सुफल करे।
माता यह आशिष देती है, भगवान तुम्हारी कुशल करे॥

माता से लेकर विदा, चले पार्थ बलवान।
भारत अब तेरी कहाँ, वह पहली सन्तान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणिपुर में चित्राङ्गदा, देख रही थी राह।
वहाँ पहुँच कर पार्थ ने, उससे किया विवाह॥
फिर जाकर पाताल में, नाग सुता को ब्याह।
पहुँचे द्वारा वती में, भरे प्रेम उत्साह॥
वहां राज-परिषद-सहित, ब्राजे थे घनश्याम।
भक्त-वश्य को भक्त ने, झुककर किया प्रणाम॥
देखा आगे पार्थ को जहाँ, त्यों ही वे दीनानाथ उठे।
पहले मिलने को देह उठी, पीछे प्रणाम को हाथ उठे॥
क्षण भर तक दोनों लिपट रहे, दोनों के आंसू बहने लगे।
फिर चरणों में गिरकर अर्जुन, करुणा निधान से कहने लगे॥
भुतनी बनकर भटकाया है, इस ममता-मद की माया ने।
क्षण भर भी शान्ति न लेने दी, गोपाल तुम्हारी माया ने॥
अच्छा तो यह था आठ पहर, सम्मेलन का आल्हाद रहे।
यदि यह न सही तो दया-धाम, नाम ही तुम्हारा याद रहे॥
कृष्णचन्द्र कहने लगे, शान्त धनुर्धर वीर।
भक्तों के ही वास्ते, यह है मनुज शरीर॥
जो चिन्ता ममता समझे हो, वह तो कर्म का वसीला है।
हीला है दुःख और सुख का, द्वापर की अन्तिम लीला है॥
जो कुछ भी हम तुम करते हैं, वह इस नाटक का साधन है।
विश्वास रहे यह साधन ही, सारी लीला का कारण है॥
सुख-दुःख तो क्या यह हस्ती भी, सर्वदा नहीं ठहरायेगी।
द्वापर वालों की याद फकत्, गाथाओं में रह जायेगी॥
अच्छा ही हुआ कौरवों ने, जो स्वयं सन्धि कर डाली है।
ताज्जुब है दुष्टों ने अबतक, कुछ नई न चाल निकाली है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस नये-नये शासन में तो, तुमको विशेष कर बन्धन है।
फिर राज काज त्यागकर पार्थ, इस विचरण का क्या कारण है॥

कहा पार्थ ने नाथ से, अपनी सारी गाथ।
ठहराया भगवान ने, उन्हें प्रेम के साथ॥
इस महमानी में छिपा, था क्या गूढ़-विधान।
श्रोताओ! हम कहेंगे, वह विशेष आख्यान॥
कृष्णचन्द्र की बहिन थी, सुघर सुभद्रा नाम।
नव-बाला गुण आगरी, शील रूप छवि-धाम॥
यद्यपि होने लगा था, कुल ब्याह का प्रबन्ध।
लेकिन अब तक कहीं भी, हुआ न था सम्बन्ध॥

कारण! उसमें था गूढ़ भेद, अथवा मत भेद परस्पर था।
जैसी यदुकुल की इच्छा थी, वैसा न मिला अब तक वर था॥
कोई कहता था वर इसको, वैभवी और धनवान मिले।
कोई कहता था सुन्दर हो, गुणवान मिले बलवान मिले॥
कोई विद्या के प्रेमी को, सबसे अच्छा बतलाता था।
राजा या राजकुमारों की, कोई तारीफ़ सुनाता था॥
यानी अपनी इच्छानुसार, हर एक प्रसंग उठाता था।
पर जैसा सभी चाहते थे, वैसा वर नजर न आता था॥

लिया गया था बीच में, अर्जुन का भी नाम।
लेकिन इनके वास्ते, हुई न सम्मति आम॥

वह बोले यह बिल्कुल सच है, अर्जुन सत्पुरुष सयाना है।
पर सबसे बड़ा नुक्स यह है, रोजा का नहीं ठिकाना है॥
आपसी द्वेष उन लोगों का, क्या पता रङ्ग क्या लायेगा।
उस आठ पहर के झगड़े में, बेटी को चेत ना आयेगा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किन्तु कृष्ण का था फकत, अर्जुन ही पर चाव।
किसी वजह से नाथ ने, कहा न अपना भाव॥
रचा गया था प्रथम ही, या वह! भाग्य विधान।
इसी लिये जुड़ने लगा, स्वयं सभी सामान॥
पार्थ सुभद्रा की हुई, ज्यों ही नजरें चार।
एक-दूसरे पर हुए, त्यों ही वे बलिहार॥
होगये परस्पर ही शिकार, एक का शिकारी एक बना।
एक का एक बन गया साहु, एक का भिखारी एक बना॥
दो दिल बाहम कुरबान हुए, उन नाज और अन्दाजों के।
दो तीर कलेजा चीर गये, दोनों उन तीरन्दाजों के॥
या बिना चलाये ही बरबस, दोनों पर दुलरी चोट पड़ी।
वह आह सँभाले लेट गये, वह आह खींच कर लोट पड़ी॥
उड़ गई नींद भोजन भूला, दोनों बन गये बिकाने से।
दिल बदल गये दीवानों से, अपने बन गये बिराने से॥
अन्तर्यामी को विदित, था वह सारा हाल।
अर्जुन से एकान्त में, बोले दीन दयाल॥
भैया अर्जुन किन भावों में, इन रोजों गोता खाते हो।
कमरे में सड़ते रहते हो, इस ओर न आते जाते हो॥
सूरज से चमकीले मुख पर, साया सी आती जाती है।
यह शुद्ध और स्वच्छन्द दृष्टि, सहसा शरमाती जाती है॥
मानसिक ताप कुछ व्याप गया, या पड़ा प्रेम का बन्धन है।
मेरे प्यारे! स्पष्ट कहो, इस चिन्ता का क्या कारण है॥
परम भक्त भगवान के, थे खुद पार्थ सुजान।
भाई-चारे का वहां, था सम्बन्ध-प्रधान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्जुन खुद नहीं चाहते थे, आये विकार शुचि तारे में।
इच्छा न सुभद्रा ही की थी, बल आये भाई-चारे में॥
पर वह तो भावी-बन्धन थी, दैवी माया का चक्कर था।
इसलिये ज्ञान-मर्यादा का, दोनों में रहना दूभर था॥
दोनों बेचारे बेवश थे, अन जाने फँसते जाते थे।
जिस गति पर चलते जाते थे, उस गति ही पर पछताते थे॥
दिल टूटरहा था अन्दर ही, अन्दर कुछ जोड़का तोड़हुआ।
पर अन्तर्यामी के आगे, अन्तर का भण्डाफोड़ हुआ॥

बिलख उठे वह बालवत, पड़े चरण अकुलाय।
दयाधाम अशरण शरण, कृपा करो यदुराय॥

जो कुछ है तुमको जाहिर है, फिर मुँह से क्या कहलातेहो।
हे न्याय मूर्ति अन्यायी को, क्यों सखा मित्र बतलाते हो॥
केशव रोको माधव थामो, कुछ महा प्रलय दरशाती है।
हे दयाधाय दौड़ो दौड़ो, पृथ्वी पाताल सिधाती है॥
मेघों का नाद दबाया है, टूटे-फूटे नरसिंगे ने।
साहस कर सेंध लगाई है, सूरज के यहां पतिंगे ने॥
भैया न कहो बाप से विमुख, मैं कुल-कुपूत हूँ पामर हूँ।
सच्चे स्वामी से कपट करे, वह नमक हरामी नौकर हूँ॥
भगवान काटकर यह गर्दन, भू-तल को हरा भरा करदो।
हा! हा! इस कामी विषयी को, अन्धा करदो बहरा करदो॥
प्रभु के आगे तो पुण्यवान, कठिनाई से ठहराता है।
फिर मुझसा पापी क्या आये, मुँहभी न दिखाया जाता है॥

हाथ पकड़ कर पार्थ का, यों बोले घनश्याम।
मेरी इच्छा पर सखे, चलता है सब काम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं ही मन का मंत्री बन कर, मनमानी राह दिखाता हूँ।
मैं ही तनका मालिक बनकर, जी चाही चाल चलाता हूँ॥
मैं ही अंकुर उपजाता हूँ, मैं ही जमता हूँ मैं बोता हूँ।
मैं पाता हूँ मैं खाता हूँ, मैं हँसता हूँ मैं रोता हूँ॥
मैं यदि-कुल का यदु-कुल मेरा, यह कहने का ही नाता है।
सच तो यह है प्रत्येक जीव, कुछ लेने देने आता है॥
वास्तव में मेरी सृष्टी है, भाई है और न माई है।
यह जो मेरे सम्बन्धी हैं, वह उनकी पूर्व कमाई है॥

उनका हित-अनहित नहीं, मेरे लिये प्रधान।
कर देता हूँ पक्ष कुछ, यथा भाग्य कल्याण॥

मेरा तो तन मन धन अर्जुन, दर असल भक्त का जीवन है।
मेरा जो है मुझ पर जो है, भक्तों के लिये समर्पण है॥
जो हुआ अभी तक अच्छा है, जो हो जाये तो अच्छा है।
अपनी इच्छा में ही समझो, वह इच्छा-धर की इच्छा है॥
इसलिये किसी भी घटना पर, यों झूठा क्षोभ न करो सखे।
मुझको देने में लोभ नहीं, तुम लेते लोभ न करो सखे॥
इस जीवन में संयोग-मात्र, उस पूर्व योग से मिलता है।
विश्वास रहे पत्ता-पत्ता, मेरी इच्छा से हिलता है॥

इच्छा श्री भगवान की, पार्थ गये पहचान।
यादवेन्द्र के पास से, विदा हुए सुखमान॥

यहाँ सुभद्रा ने किया, सरवर पर प्रस्थान।
प्रणय प्रतीक्षा में वहाँ, बैठ रहे बलवान॥

आंखों में आंख मिलाते ही, आंखों ने ही सन्मान किया।
आंखों ही में तालाब बना, आंखों ने ही स्नान किया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आँख ही आँख में दोनों की, कुछ बातें हुई इशारों में।
फिर कुछ बिजली सी कूद पड़ी, उन छिपते हुए सितारों में॥
सारथि ने संकेत से, खींची रथ की डोर।
तथा उछल कर बीच में, पहुँचे पांडु किशोर॥
पार्थ ने जहाँ डोरी खींची, घोड़े चल दिये इशारों से।
द्वारिका यहाँ पर गूँज उठी, यदु-कुल के हा-हा कारों से॥
आलियाँ चीखकर भाग गईं, सारथी सहम कर उतर पड़ा।
भद्रा ने पीछे को देखा, तो दल बादल सा नजर पड़ा॥
बोली हे स्वामी ! सावधान, यदुवंशी सेना आई है।
भूतल-प्रसिद्ध बलवीरों से, अर्जुन की प्रथम लड़ाई है॥
रथ की चाल को सँभालो तुम, मैं बाण सँभाले लेती हूँ।
इस ठसकीले दल बादल की, सब ठसक निकाले देती हूँ॥
बिहँस पार्थ कहने लगे, उलट न दो मज़मून।
अभी पार्थ बलवीर का, ठण्डा हुआ न खून॥
यादव दल तो कितनी शै है, काल भी अगर आ जायेगा।
जो आज पार्थ के बाणों से, वह भी मुँह की खा जायेगा॥
राजसी आज भी बांका है, गो सूरत है भिखारियों की।
मैं जीना नहीं चाहता हूँ, लेकर के शरण नारियों की॥
तुम बैठो अगले हिस्से में, मैं पिछला भाग दबाता हूँ।
देख लो अभी ये दल-बादल, बनकर तूफान उड़ाता हूँ॥
यों कह कर बलवीर ने, खींची यहाँ कमान।
तभी वहाँ से पार्थ पर, लगे बरसने बाण॥
बाण ही नहीं शस्त्रास्त्र सभी, एक ही साथ संचार हुए।
छिप गया यान उस ओर भानु, आँख के तार बेकार हुए॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घुप अन्धकार धर मार नाद, बस यही सुनाई देता था।
हां कहीं कहीं कुछ साया सा, नूर का दिखाई देता था॥
पर वाण पार्थ का चलते ही, वह तेज-राशि सी प्रकट हुई।
उड़ गया मेघ हथियारों का, क्षण भर में काया-पलट हुई॥

हलधर, हलधर भी वहाँ, जा पहुँचे तत्काल।
लेकिन पीछे ही लगे, आये श्री गोपाल॥
उठते ही थे शस्त्र अब, महा वेग के साथ।
तब तक प्रभु ने बन्धु का, जा पकड़ा झट हाथ॥

बोले भैया क्या करते हो, बिष-बेल किसलिये बोई है।
वह अपनी बहन सुभद्रा है, तो अर्जुन भी बहनोई है॥
यदु-वंश मरा तो हमी मरे, अर्जुन से भाई चारा है।
दो पक्षों में से कोई मरे, मरना हर तरह हमारा है॥

विषय क्रोध में कोप कर, बोल उठे बलराम।
ऐसे अवसर पर तुम्हें, शांति सुहाती श्याम॥

हाथी तो इतना प्यारा था, नंगे ही पैर सिधाये हो।
जब धर्म बहिन का जाता है, तब शांति सिखाने आये हो॥
वंश की मान-मर्य्यादा पर, अपना सर्वस्व निछावर है।
इज्जत खो कर जो जान रही, तो जीवन-मरण बराबर है॥
भाई! भाई! कहते---कहते, भाई ने खूब निभाई है।
भाई! भाई कहते क्या हो, वह भाई नहीं कसाई है॥
मोहन! अब मोह न उपजाओ, बाणों पर भाई चारा है।
यों भी संहार हमारा है, त्यों भी संहार हमारा है॥

यादवेन्द्र कहने लगे, विनय मानिये तात।
समझौता की बात पर, नहीं जायगी बात॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह जगत जयी यदुकुल सेना, जिसने क्षण में संहारी है।
भैया इतना विश्वास रहे, यह पुरुष नहीं अवतारी है॥
फिर यह भी तो निर्णय करलो, इसमें किसकी दमसाजी है।
पार्थ की जालसाजी ही है, अथवा दोनों की राजी है॥
यदि अर्जुन की गुस्ताखी है, तो रण की मुख्य समस्या है।
लेकिन दोनों की मर्जी है, तो फिर अपना काबू क्या है॥
फिर गूढ़-रहस्य समझना हो, तो यह भी लीला सारी है।
इस घटना के घटने में भी, पहले से राय हमारी है॥
तुमको वंश के लिये मरना, लौकिक-मत से सर्वोपरि है।
लेकिन मेरा तन, मन, जीवन, भक्तों के लिये निछावर है॥

त्रिभुवन की सुख-सम्पदा, दूं भक्तों पर वार।
वे मुझ पर बलिहार हैं, मैं उन पर बलिहार॥

❀ गायन ❀

विप्र पचि हारे पै न धारे छत्तीसहु भोग,
विदुर बिचारे बेर साग-पात धारे हैं॥
शबरी के बेर बेर के सराहत अजहुँ,
मेवा दुर्योधन केर बेर से बिसारे हैं॥
भनत विनीत नवनीत ग्वाल बालन को,
सुधा सौ सिहाय पाय भाग से तिहारे हैं॥
जानत जहाँन सब साखा पुरान, वेद,
हम हैं भगतन के भगत हमारे हैं॥

यह सुनकर कहने लगे, सकुचा कर बलराम।
अपनी माया को तुम्हीं, जानो माया धाम॥
ऐसी ही शादी करनी थी, तो वहीं हमें जतलाना था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतना बबाल बढ़ता ही क्यों, राजी से ब्याह रचाना था ॥
प्रभु बोले इतनी लीला से, खुल गई वंश की निद्रा है।
सब समझ गये हर हालत में, अर्जुन के योग्य सुभद्रा है ॥
या यों समझो कुछ वंश पाप, यों प्रायश्चित बन निकला है।
या मानव तन के नाते से, यह किसी समय का बदला है ॥
इसलिये पार्थ को लौटा लो, अब अधिक बवाल बढ़ाओ ना।
घर की घर में ही निपटालो, दुनियां में हँसी कराओ ना ॥

हल-धर के संकेत से, समर होगया बन्द।
तथा पार्थ के साथ में, लौटे यादवचन्द ॥

द्वारका द्वारका ही तो है, जिस पर सुर—लोक निछावर है।
फिर आज ब्याहका उत्सव है, और भार श्यामसुन्दर पर है ॥
इसलिये वहाँ की शोभा का, वर्णन न यहां आवश्यक है।
देखना और उसका कहना, सूरज के आगे दीपक है ॥
जो सारा शृङ्गार साज, सब काज नियम के साथ किये।
वैदिक विधान से नर-पति ने, कन्या के पीले हाथ किये ॥
सम्मान दान से कर प्रसन्न, पहुँचाने खुद नर पाल चले।
यान में सुभद्रा बिठला कर, अर्जुन के साथ गुपाल चले ॥

इन्द्रप्रस्थ में जिस समय, पहुँचे यादवनाथ।
धर्मराज चरणों पड़े, परम प्रेम के साथ ॥

सकल भांति सन्मान कर, बिठलाया नरपाल।
हाथ जोड़ कहने लगे, जयति कृष्ण गोपाल ॥

केशव इन चरणों के बलने, अधिकार दिलाया है जनको।
या रावण के जीते जी ही, लङ्का मिल गई विभीषण को ॥
भुज-बल से जीत न पाया है, वीरों ने जान न मारी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो कुछ दासों ने पाया है, वह केवल कृपा तुम्हारी है ॥
लेकिन यह लीला गढ़ करके, जन से मर्याद तुड़ाई है।
बाँध दी रमा भिखमंगे को, सो नहीं दास को भाई है ॥

भक्त वत्स कहने लगे, सुनो भक्त नर-पाल।
भक्तों के ही वास्ते, आया है गोपाल ॥

जिस विश्व-रूप के तीन कदम, पूरे न हुए थे त्रिभुवन में।
वह भक्त-वत्स बनकर राजन्, खेला दशरथ के आँगन में ॥
जिसकी माया के चक्कर में, चतुरानन भी चकराता है।
वह प्रेम सूत्र में बँधा हुआ, ग्वालों में चक्कर खाता है ॥
बलिहार उन्हीं पर हम भी हैं, जो जन हम पर बलिहारे हैं।
सच तो यह है हम उनके हैं, जो सच्चे भक्त हमारे हैं ॥
लेने देने का रिश्ता भी, केवल भक्तों से पालूँ मैं।
बोलिये बहिन सी मुख्य वस्तु, किस निश्चर को दे डालूं मैं ॥

अभी न पूरा हुआ था, यह सम्बाद-विचार।
तब तक हा हा कार से, गूंज उठा दरबार ॥

देखा पावक ब्राह्मण बन कर, हा हा कर लोटा जाता है।
सिर पटक पटक कर पृथ्वी पर, वह त्राह त्राह चिल्लाता है ॥
हे देव मरुत नामी नृप ने, इतनी आहुति दे डाली है।
हो गई क्षीण सम्पूर्ण शक्ति, रह गया पींजड़ा खाली है ॥
गर्मी से जला जारहा हूँ, हे हे धनुधारी ! दया करो।
हे धर्मराज थामो थामो, हे विश्व बिहारी ! दया करो ॥

धर्मराज कहने लगे, पावक धारो धीर।
केवल दीनों के लिये, है यह धर्म शरीर ॥

अपना सर्वस्व लगा कर भी, जो दीनों को अपनाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री दीन-बन्धु के नाते से, वे दीन-बन्धु कहलाते हैं॥
पहले मुझसे कहदो उपाय, वह अपनी तपन बुझाने का।
आगे फिर काम हमारा है, उस पर जी जान लड़ाने का॥
पावक बोला कदली बन में, मेरा प्रवेश यदि होजाये।
तो जीवन फिर से पाजाऊँ, यह तपन देह की खो जाये॥

चले अग्नि के साथ में, पार्थ यथा करुणेश।
कदली वन में अनल ने, तत्क्षण किया प्रवेश॥

चर-चर-की कुछ आवाज उठी, यक भभक लपटकर फूटउठी।
जलउठी सुरुचि क्यारी क्यारी, नभ तक चिनगारी छूटउठी॥
उस वन के जीव जन्तु सारे, बस तड़फ तड़फकर जलने लगे।
फल फूल आपही ढलने लगे, पाषाण ताप से गलने लगे॥
रखवाले भाले डाल चले, सुर-पति के यहाँ पुकार पड़ी।
घन् घन् निनाद से मिली हुई, घन मण्डल की बौछार पड़ी॥
पानी खुद पानी पानी था, पानी ने उलटा काम किया।
बन-बन कर तेल रूप उसने, उस वनका काम तमाम किया॥

कदली बन में था कहीं, मयदानव का वास।
वह विह्वल भागा हुआ, आया प्रभु के पास॥

पैरों पड़कर हा हा खाकर, बोला हे स्वामी दया करो।
हे अशरण शरण दयाल प्रभो, हे अन्तर्यामी दया करो॥
यदि किसी भांति इस ज्वाला से, जन-जीवन बचने पायेगा।
तो भावी पति विश्वास रहे, यह काम किसी दिन आयेगा॥

बचा लिये भगवान ने, मयदानव के प्राण।
ली तब तक नागनी ने, नभ की तरफ उड़ान॥

पार्थ ने बाण से काट उसे, जीवन की डोर छुड़ा डाली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उधर अग्नि ने फूल-फूल, फूलों की धूल उड़ा डाली ॥
देखते देखते घड़ियों में, कदली-बन बंटाढार हुआ।
पावकको जीवन-दान मिला, चुंचुक-शर का अवतार हुआ॥

प्रभु से जीवन-दान ले, हो प्रसन्न सुख मान।
किया अग्नि ने पार्थ को, वस्त्र अलक्त प्रदान॥
एक बार नारद गये, कृष्णचन्द्र के पास।
वहाँ रुक्मिणि भवन में, थे प्रभु जगन्निवास॥

नारद ने गन्धराज नामी, शुच सुमन दिया रुचि दानी को।
प्रभुने वह सहज भाव ही से, दे दिया रुक्मिणी रानी को॥
सतभामा इससे रूठ गई, जा पड़ी कोप दरसाने को।
मनमोहन नटवर ही ठहरे, जा पहुँचे वहीं मनाने को॥

मुखकारुख कुछ बदलकर, लिये झुका कुछ नैन।
जाने अनजाने वचन, बोले माया ऐन॥

उफ प्राण प्रिये हालत क्या है, अनहोनी आज दिशा कैसी।
क्यों सूरजमुखी झुकी सी है, पूनों की मलिन निशा कैसी॥
चौमासी चहल चंचला की, बदली ने रङ्गत बदली है।
सूरज के आगे सूखी सी, क्यों सूरज मुखी-दीखती है॥

सतभामा कहने लगी, रहने दो नट-राज।
समझ लिया तुमको नहीं, बांह गहे की लाज॥

फल दिया निठुर तुमने अच्छा, राधा के नेह लगाने का।
बेवश कलपाने वालों को, पलमिला न फिर कलपाने का॥
फूलों की छड़ी दिखा करके, ग्वालों के प्रती छुरी करदी।
दुःखसे बरी कुबरी करदी, वरनी कर वही बुरी करदी॥
मन मोहन तुमको मोह नहीं, ऊपरी भाव का नाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम ऐसे भ्रमर स्वार्थी हो, जो रस लेकर उड़ जाता है॥
जाओ कठोर मत मान करो, सतभामा नहीं माननी है।
क्यों प्राण प्रिया बतलाते हो, अब प्राण प्रिया रुक्मिणी है॥

❀ गायन ❀

जानती जो पहले से ऐसे निठुर हो तुम,
तो काहे नाहक अस भरम गँवावती।
हेतु सुनि पावती जो गोपिका बिसारन को,
भूल हू तौ नाहिन हौं नेह दरसावती।
सौतिन के जालन सौं तनका हलाल हू है,
ऐसो मन आन कहूँ अन्त मन लावती।
गावतीन तुम्हारे गुन छलिया छल छन्दी के,
देस-देस घर-घर मनादी करबावती।

मन मोहन कहने लगे, मान माननी मान।
सतभामा रुक्मिणी मुझे, दोनों एक समान॥

भामा बोली क्या बात अहो, कैसी मधुरी सी वाणी है।
सारी रानियाँ बराबर हैं, रुक्मिणी मगर पटरानी है॥
रहने दो छली जलाओ ना, क्यों हृदय जलाने आये हो।
जाओ महाराज वहीं फिरसे, जिस जगह फूल दे आये हो॥

यह सुनकर हँसने लगे, नट-नागर गोपाल।
बोले इतनी बात पर, इस प्रकार का जाल॥

कहती ही चोर दूसरों को, तुम खुद ही हृदय चुराती हो।
आप ही जलाती हो उलटा, औरों को दोष लगाती हो॥
ना कुछ फूल के लिये इतना, रूठना और यों मचलाना।
क्यों साफ नहीं बतलाती हो, था इसी बहाने कलपाना॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अच्छा लो उठो मान त्यागो, यह फीका पन न लखाजाये।
कह दो तो खाली फूल ही क्या, वह फूल बाग ही आजाये॥

समझाकर इस भांति प्रभु, गये पार्थ के पास।
तथा किया निज भक्त से, अपना भाव प्रकाश॥

आज्ञा पाते ही पार्थ चले, कारण प्रभु के अनुसंगी थे।
लेकिन उस बनके रखवाले, श्री पवन पूत बजरङ्गी थे॥
जाते ही कहा पार्थ भट ने, हे माली मुझे रास्ता दे।
अथवा अपने हाथ से तोड़, मुझको कुछ गन्धराज ला दे॥
कपि पति बोले ओ मतवाले, यह राम बाग कहलाता है।
मेरी आज्ञा के बिना जहाँ, पत्ती न फड़कने पाता है॥
तलुवे से जीव लगाने में, क्षण भर भी मूर्ख न ठहरा है।
क्या तुझको इसका पता नहीं, यह बजरङ्गी का पहरा है॥

हँस कर अर्जुन ने कहा, ओ बूढ़े बजरङ्ग।
बदल गया है विश्व से, अब राघव का रङ्ग॥

वह त्रेता की गाथा छोड़ो, हद है बानरी रिसाले की।
अब गूंजरही है त्रिभुवन में, मधुरी धुनि मुरली वाले की॥
श्रीराम भक्त की समता में, अब श्याम भक्त की ही धुनि है।
ओ राम उपासक! नजर खोल, आगे बलधारी अर्जुन है॥
ये बारह कला-मात्र-धारी, अवतारी माने जाते हैं।
पर कृष्णचन्द्र को वेद-शास्त्र, षोडशी कला बतलाते हैं॥
देखना किसी दिन राम-बाग, श्री श्याम-बाग कहलायेगा।
धनु-धारी की एवज सब जग, अब कीर्ति कृष्ण की गायेगा॥

पवन-पूत कहने लगे, करो न व्यर्थ बढ़ाव।
अपने-अपने इष्ट का, जाहिर करो प्रभाव॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साकेत-धाम में रामचन्द्र, कृष्ण भी यहां से बाहर हैं।
राम भी नहीं श्याम भी नहीं, दोनों के भक्त यहाँ पर हैं॥
भक्तों-भक्तों की बाजी है, हृदयों की प्रकट प्रीति होगी।
भक्तों की हार-जीत ही में, इष्टों की हार-जीत होगी॥
इतना ही नहीं आज जो भी, इसमें सिकस्त खा जायेगा।
वह बिना कहे आप ही आप, अपना बलिदान चढ़ायेगा॥

कहा पार्थ ने तो चलो, अभी सिन्धु के तीर।
दिखलायेगा शक्ति कुछ, आज पार्थ बलवीर॥

जिसका बन्धान बान्धने को, राघव ने कटक जुटाया है।
जिसकी अगाध गहराई पर, अंगद ने पार न पाया है॥
उस महा सिन्धु को वाणों से, नाली की तरह पाट डालूँ।
या बाणों की दीवार बना, लहरों की नहर काट डालूँ॥
हनुमत बोले तुम पुल बांधो, मैं अपनी शक्ति दिखाऊँगा।
तिनकों की टट्टी की नाईं, क्षण भरमें तोड़ बहाऊँगा॥

इस प्रण पर दोनों गये, महा सिन्धु के तीर।
लगे चलाने बाण तब, पार्थ महा-धनु-धीर॥

सिन्धु के ओर से छोर तलक, बाण ही बाण दरशाने लगे।
रण-रङ्गी के इस जौहर पर, बजरङ्गी भी चकराने लगे॥
फिर रामचन्द्र का ध्यान धार, बजरङ्ग पर्वताकार हुए।
उत्तरा खण्डकी जानिब को, फिर गवनित पवन-कुमार हुए॥
अनगणित पहाड़ उठा करके, प्रत्येक अङ्ग पर साथ लिये।
कुछ यों ही सिर पर साध लिये, कुछ रोम रोम में बांधलिये॥
फिर एक घोर किलकार मार, आ पहुँचे उसी समुन्दर पर।
फिर बाण सेत पर कूद पड़े, जय जय श्री राघवेन्द्र कहकर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह देख पार्थ की आत्मा भी, संभ्रम में लहरें मार चली।
सेतु में हुआ चर्राटा सा, नीर में रक्त की धार चली॥
दो भक्तों की शर्त में, भक्त वत्स को भीर।
कमठ रूप बन कर तले, जा पहुँचे यदुवीर॥
वह धार देखकर बजरङ्गी, आशङ्कित होकर कूद पड़े।
उस ओर सेतु के नीचे से, लीला-धारी भी निकल पड़े॥
भक्तों के भक्त वत्स प्रकटे, त्रिभुवन के त्रिभुवनेन्द्र पहुँचे।
हनुमत के राघवेन्द्र प्रकटे, अर्जुन के यादवेन्द्र प्रकटे॥
उस क्रीट-मुकुट के बीच-बीच, मोरों के पङ्ख सुहाते थे।
मणि-माला में बनमाला के, मृदु नवल सुमन दरसाते थे॥
बाये कांधे पर धन्वी है, दांये मृदु-फबन बिराज रही।
दोनों हाथों पर सधी हुई, मधुरी धुनि मुर्ली बाज रही॥

❀ गायन ❀

मोर पङ्ख वारे कैधौं क्रीट मुकुट धारे हैं,
मुरलि सुधारे कैधौं धनुष सुधारे हैं॥
भृकुटि गँभीर भाव न्यारे-न्यारे दीख रहे,
गोपी पति कैधौं सीता-नाथ अवतारे हैं॥
ब्रजको सिंगार और कौशल की छटा धार,
दशरथ दुलारे वे नन्द के दुलारे हैं॥
भनत विनीत प्रीति साँची परतीति धार,
राम-श्याम दोऊ साहब हमारे हैं॥

दोनों चरणों पर पड़े, हा हा उठे पुकार।
सीता-पति! राधा-रमण, जय जय लीला धार॥
माया-पति कहने लगे, भक्तो करो न मोह।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं समझना चाहिये, राम–श्याम में द्रोह ॥
मैं ही वराह बनकर आया, नरसिंह–रूप प्रकटाया हूँ।
मैं ही फिर पावक का तन धर, बलि के दरवाजे आया हूँ॥
मैं ही त्रेता में राम–रूप, दशरथ नन्दन कहलाया हूँ।
मैं ही द्वापर के चरित हेतु, श्रीकृष्णचन्द्र बन आया हूँ॥
तुम दोनों भक्त हमारे हो, भक्तों की आन निभानी पड़ी।
जब जैसी जहाँ जरूरत थी, तब वैसी मूर्ति बनानी पड़ी॥
प्यारे भक्तो लो गले मिलो, आपस में मानों खेद नहीं।
विश्वास रहे हे प्रण-वीरो !, कुछ राम–श्याम में भेद नहीं॥

यों कह अन्तर्हित हुए, तत्क्षण दया निधान।
मिले परस्पर प्रेम से, पार्थ और हनुमान॥
गन्धराज लेकर चले, पार्थ प्रेम के साथ।
तथा द्वारिका पहुँचकर, दिया नाथ के हाथ॥

केशव बोले हे पार्थ बन्धु !, तुम सच्चे अङ्ग हमारे हो।
हो पाण्डु वंश के उजियारे, मोहन के लिये सहारे हो॥
इसकी क्या तुम्हें बधाई दूं, मैं तो सरवस बलिहारा हूँ।
हे प्राण-रूप प्रिया पार्थ सखे, मन मन से सदा तुम्हारा हूँ॥
द्वापर की अन्तिम लीला में, तुम साधक रूप कहाओगे।
जाओ इस सेवा के बदले, मोहन को सेवक पाओगे॥

मुसकाकर केशव रहे, पार्थ रहे सकुचाय।
कह विनीत आनन्द से, जै श्री यादव राय॥

❀ शुभमस्तु ❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* धर्माश्वमेध *

एक समय आनन्द से, बैठे थे घनश्याम।
द्वारपाल ने भी वहीं, जाकर किया प्रणाम॥
महाराज आज द्विजराज एक, श्रीपति के द्वारे आया है।
एवं कैदी राजाओं का, नाथ पर सँदेशा लाया है॥
यदुपति बोले भेज दे उन्हें, आज्ञा पा दूत लौट आया।
आदर समेत उस ब्राह्मण को, द्वारिका नाथ तक पहुँचाया॥
यदुपति ने अर्द्धासन देकर, आदर से उसको बिठलाया।
फिर हाथ जोड़कर ब्राह्मण ने, आने का कारण समझाया॥
यदुनाथ! द्वारका-नाथ हे देव, जगन्नाथ! सर्वेश प्रभो।
हे दीनबन्धु! हे दया-धाम, हे करुणामय! करुणेश प्रभो॥
इन निर्भय-कारी चरणों में, कुछ हाल सुनाने आया हूँ।
हे देव! विवश राजाओं का, नाथ तक संदेशा लाया हूँ॥

मगध राज ने यज्ञ में, जीते थे महिपाल।
उसने उनको आज तक, रखा जेल में डाल॥

यद्यपि यह राज-नीति मत है, नैतिक बन्दी से काम न ले।
लेकिन उसकी इच्छा यह है, ऐसा कैदी आराम न ले॥
यह पहर राति से दीन बन्धु, छः पहर काम करवाता है।
दो पहर तथा सन्ध्या को वह, सूखा दाना दिलवाता है॥
कुछ नियम नहीं कुछ म्याद नहीं, आज्ञाही [रूल] कहाता है।
कौड़ी के कर्मचारियों से, उनको कोड़े लगवाता है॥
भूपों का आधा वजन रहा, हे दीनबन्धु! घटते-घटते।
पड़ गये फफोड़े हाथों में, रस्सियाँ-मूँज बटते-बटते॥
प्रायश्चित करना चाहते हैं, हा! हा करके चिल्लाते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माफी मांगी पर मिल न सकी, आसन-व्रत करके हार चुके॥
राज्य से गये शक्ति से गये, नाथ से आखिरी आशा है।
करुणाकर हम आश्रय में हैं, उन दासों को क्या आज्ञा है॥

करुणाकर करुणा-कथा, सुन बोले द्विजराज।
आती है ऐसी जगह, लज्जा को भी लाज॥
विप्र-राज! जाकर उन्हें, दे देना विश्वास।
आकर शीघ्र छुड़ाऊँगा, हो जायें न निराश॥
आशिष देकर द्विज चला, बैठे प्रभु हरषाय।
धर्म सभा में उस तरफ, जा पहुँचे ऋषिराय॥

जाते ही कहा धर्म-सुत से, अब तो मुराद बर आई है।
जीवन की प्रथम सफलता पर, हे राजन् तुम्हें बधाई है॥
फिर भी वह क्रांति, क्रांति समझो, जिससे औरोंको क्रांतिमिले।
सच्चा करतब वह है जिससे, माँ और बाप को शान्ति मिले॥
करतूत तुम्हारी सुन-सुनकर, सुर-पुर में पाण्डु सुखारी हैं।
पर देव-सभा में जाने के, वे हुए नहीं अधिकारी हैं॥
सुर-पति कहते हैं धर्मराज, जग राज सूय करवायेंगे।
तब देव-सभा में पाण्डु भूप, अधिकारी आप ही पायेंगे॥
इसलिये हमारी सम्मति पर, आज ही विचार करो राजन्।
अपने कर्मों से भी पहले, उनका उद्धार करो राजन्॥

धर्मराज कहने लगे, करुणा मय ऋषि नाथ।
हम दीनों की डोर है, दीन-बन्धु के हाथ॥
उनकी ही कृपा शक्ति द्वारा, यह राज्य में मिल पाया है।
उनके ही किसी इशारे ने, आपको यहाँ पहुँचाया है॥
हम सब प्रकार से उनके हैं, हे मुनिवर साच उन्हीं की है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब राज सूय भी करवादें, तो कृपा कटाक्ष उन्हीं की है॥
इसलिये हमारे बदले में, यह बात कृष्ण तक पहुँचाओ।
ऋषिराज हमारी जानिब से, यह विनय पत्र लेते जाओ॥

विनय-पत्र लेकर चले, ऋषिवर करुणाधाम।
उग्रसेन की सभा में, बैठे थे घनश्याम॥
वहीं निमन्त्रण-पत्रिका, दी नारद ने जाय।
यादव-पति पढ़ने लगे, उसको हृदय लगाय॥

जय सिद्ध श्री द्वारिकाधीश, अवनीश, अधीश, न्यायकारी।
असुरारी गर्व प्रहारी जय, मङ्गल-कारी जय बनवारी॥
नृप-मुकुट महीपति उग्रसेन, कुछ दया दृष्टि जन पर कीजै।
श्री महाराज दरबार-सहित, जन की जुहार स्वीकृत कीजै॥
यह विनय-पत्र हे दीन बन्धु, श्री चरणों में पहुँचाते हैं।
आपके सहारे ही स्वामी, जन राज-सूय रचवाते हैं॥
दे दिये निमन्त्रण-पत्र नाथ, लेकिन न तनिक तैयारी है।
अथवा सारी सामग्री में, हल्दी की गाँठ हमारी है॥
केवल उन चरणों का बल, जिस बल पर सृष्टि सँभाले हो।
हे दयाधाम, यह याद रहे, इस व्रत के तुम रखवाले हो॥
हम भी उस बल के आश्रित हैं, जिस बल के जगत् सहारे है।
पाण्डु की पाण्डु के बेटों की, अब लज्जा हाथ तुम्हारे है॥

कृष्णचन्द्र कहने लगे, करूँ कौन तदबीर।
एक समय में काम दो, आयें मेरे तीर॥

आज ही मगध से एक विप्र, मेरे लेने को आया है।
आज ही हस्तिनापुर में भी, धर्म ने मुझे बुलवाया है॥
उद्धव बोले—हे दीनबन्धु, क्या काम मगध का भारी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे विचार में तो पहले, यज्ञ की उचित तैयारी है॥
यदुपति बोले यह बात नहीं, वह काम परम आवश्यक है।
बेवश बन्दी बेचारों का, जीवन मेरी आशा तक है॥
फिर काम यहाँ भी घरका है, जो देर करूँ तो कुशल नहीं।
सङ्गठन और शक्ति के बिना, हो सकता हर्गिज सफल नहीं॥
अपने ही एक सहारे पर, वह यज्ञ रचाया जायेगा।
जो विघ्न तनिक भी आपहुँची, तो अपयश हम पर आयेगा॥

उद्धवजी कहने लगे, सुनिये श्रीयदुराय।
यज्ञ सँभाले सरेंगे; एक पंथ दो काज।

उत्सव से पहले महा–काज, है विश्व विजय करवाने का।
अपने परोक्ष में महाराज, डर है परास्त हो जाने का॥
इसलिये दिग्विजय से पहले, यज्ञ का रचाना मुश्किल है।
एक भी काम यदि पड़ा रहा, तो सारा करना निष्फल है॥
इसलिये अगर प्रभु दल–समेत, हस्तिनापुरी अपनायेंगे।
तो यज्ञ-पूर्ति के साथ–साथ, वे बन्धन भी छुट जायेंगे॥

सोच-समझकर अन्त में, ठहर गई यह राय।
सबसे पहले धर्म का, यज्ञ सँभाला जाय॥
अस्तु स्वजन कुलके सहित, समारोह के साथ।
धर्मराज के यज्ञ हित, पहुँचे यादव नाथ॥
चरण चूम कहने लगे, प्रभु से धर्म नृपाल।
इन दीनों के धाम में, आओ दीनदयाल॥

आज्ञा दो सेवक हाजिर हैं, जो कुछ सेवा करवाना हो।
इन कठ पुतलों से नचवालो, जैसा कुछ नाच नचाना हो॥
हम प्रणत दीन कहलाते हैं, तुम प्रणत पाल कहलाते हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेवक केवल प्रण करते हैं, लेकिन तुम उसे निभाते हो ॥
केशव बोलो सबसे पहले, हमको दिग्विजय करानी है।
चुन-चुनकर चार दिशाओं को, चतुरङ्ग सैन पहुँचानी है ॥
इसके पीछे मैं स्वयं कहीं, दिग्विजय कराने जाऊँगा।
जैसा जिस जगह उचित होगा, वैसा प्रबन्ध करवाऊँगा ॥

आज्ञा पाते ही उठे, सज्जित विजय-निशान।
चार भाग दल किया, चारों दिश प्रस्थान ॥

पूर्व को भीम उत्तर अर्जुन, पश्चिम सहदेव सिधाये हैं।
दक्षिण में नकुल वीरवर ने, जय के निशान फहराये हैं ॥
प्रत्येक दिशा प्रत्येक प्रान्त, वीरों का ताबेदार हुआ।
या यों कहिये कुछही दिनमें, धर्मका विश्व अधिकार हुआ ॥
यदि एक-एक गाथा लेकर, सेवक कुछ घटना दरशाये।
तो इससे भी दूना तिगुना, दूसरा ग्रन्थ ही बनजाये ॥
इसलिये इसे कहना सेवक, इस जगह न उचित समझता है।
हाँ जरासिंध लीलाधर की, गाथा थोड़े में कहता है ॥

महा-विजय की खबर सुन, हुआ पूर्ण आल्हाद।
प्रभु बोले आई मुझे, एक विजय की याद ॥

इस महा-यज्ञ की महा विजय, उस रोज कहाई जायेगी।
भूतल के कौने-कौने में, जब ध्वजा फिराई जायेगी ॥
यद्यपि सुलझाव हो चुका है, परफन्दा एक झटकता है।
है जरासिन्धु बलवीर शेष, बस कांटा वही खटकता है ॥
धर्म ने कहा लीलामय हो, पर्वत को धूल बना डालो।
शूल को फूल सा दिखलादो, फूल को बबूल बना डालो ॥
घन हो महा-सिन्धु के तुम, हम उसके तुच्छ पनाले हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम लीला करने वाले हो, हम उसे देखने वाले हैं॥
कुछ दिन पीछे स्वयं ही, भीमार्जुन के साथ।
जरा सिंध की विजय को, गमने यादव नाथ॥
तीनों ने राज–वस्त्र त्यागे, शुचि-साधु वेष विस्तार लिया।
जन के कारण जन-रञ्जन ने, पैदल चलना स्वीकार किया॥
सांवला सलौना सुभट वेश, भस्मी के बीच छिपाये हैं।
उस मोर मुकुट के बदले में, रुच जटा–जूट दरशाये हैं॥
ढीला-ढाला भगवां कपड़ा, सुन्दर देह पर सुहाता है।
मानो शृङ्गार विराग लिये, रौद्र के साथ में जाता है॥
जाकर ड्योढ़ीवान से, यों बोले कमलेश।
जरासिंध के पास यह, पहुँचा दे सन्देश॥
ड्योढ़ीवान ने कहा स्वामी, किस शुभ–स्थान से आते हो।
बाने का कौन अखाड़ा है, किसके चेले कहलाते हो॥
वैरागी हो या वैष्णव हो, अथवा जिज्ञासु उदासी हो।
है कौन वेष बाना क्या है, परिव्राजक या सन्यासी हो॥
योगेश्वर बोले साधू कब, हो सकता आश्रम–धारी है।
हर घर में हमें अखाड़ा है, हर दर पर कुटी हमारी है॥
तू जा केवल सन्देशा ले, सब भेद वहीं खुल जायेंगे।
जो कुछ भी बतलाना होगा, सो राजा को बतलायेंगे॥
ज्यों ही ड्योढ़ीवान ने, प्रभु का दिया संदेश।
अगवानी को चल दिया, त्यों ही मगध नरेश॥
स्वागत–सन्मान सहित प्रभु को, अपने महलों में लाया है।
शीतल जलसे मृदु-पग धोकर, सिंहासन पर बिठलाया है॥
षोडस प्रकार पूजन करके, उन चरणों को चांपने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन वह अमित प्रताप देख, मन ही मन कांपने लगा ॥
सब प्रकार सन्मान कर, कहा सहित अनुराग ।
नाथ पधारे खुल गया, जरा सिन्ध का भाग ॥
यह सच है कभी भाग्य ही से, साधू जन द्वारे आते हैं ।
जो उनकी सेवा करते हैं, वे महा-पुरुष कहलाते हैं ॥
अब कृपा सहित बतला दीजै, करुणा धाम नाम क्या है ।
है कहाँ निवास सन्देश कहाँ, सेवक के योग्य काम क्या है ॥
योगिराज कहने लगे, सुन ले मगध नरेश ।
सहना पड़ता है सदा, व्रत में कठिन कलेश ॥
दानी, योद्धा, या प्रण धारी, कष्टों से कभी न डरते हैं ।
सब चला जाय या बना रहे, पर कह कर नहीं मुकरते हैं ॥
मानी जाती हैं कभी नहीं, विपदायें यहां दानियों की ।
गायी जाती हैं आज तलक, गाथायें यहां दानियों की ॥
इसलिये दान से पहले तू, अपना तन मन यक गति करले ।
मंत्री से अपनी रानी से, मिल जुलकर कुछ सम्मति करले ॥
फिर हमसे अटल प्रतिज्ञा कर, वचनों को मुकर न जायेंगे ।
कह तीन बार हे राजमान, जो मांगेंगे सो पायेंगे ॥
जरासिन्धु कहने लगा, सुनो आत्म-गम्भीर ।
आयेगा ! किस काम में, यह क्षण-भंग शरीर ॥
इस तन से जो कुछ बन आये, तो सफल समझिये सारा है ।
यदि चाम निकाम काम आये, तो यह सौभाग्य हमारा है ॥
ना कुछ ना चीज अनित्य वस्तु, देने में इनकारी क्या ? ।
जो लेते हैं लाचारी से, वह देने में लाचारी क्या ? ॥
मैं दान-धर्म में सम्मति लूं, तो यह है ओछा पन मेरा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि सोचूँ तर्क वितर्कों को, तो टल जायेगा प्रण मेरा ॥
मानिये नाथ जो कहता हूँ, प्रण पूरा करके दम लूँगा।
लो प्रण है जो कुछ मांगोगे, वह सब दूंगा–दूंगा–दूंगा ॥

कृष्णचन्द्र कहने लगे, तो सुन मगध–नरेश।
हम कोई साधू नहीं, समझ न तू दुरवेश ॥

मैं कृष्णचन्द्र हूँ जिस पर तू, सत्रह हमले कर हारा है।
यह पाण्डु-पुत्र भीमार्जुन हैं, जिनको बल एक हमारा है ॥
मुझको एवं इन दोनों को, धन-जन की नहीं जरूरत है।
आज के भिक्षुओं की खातिर, दान की दूसरी सूरत है ॥
यह वेष बनाकर हम तीनों, दिग्विजयी ध्वजा उठाये हैं।
हे दान–वीर ! तेरे द्वारे, रण भिक्षा लेने आये हैं ॥

जरासिन्ध तत्काल ही, समझ गया सब भेद।
समझ गया बस मौत है, पर न किया कुछ खेद ॥

बोला यह जाल डाल करके, बेकार विवाद बढ़ाया है।
जब लड़ने की इच्छा थी तो, क्यों नहीं साफ बतलाया है ॥
लेकिन तुमसे रण करने में, लज्जा सी मुझको आती है।
साधू बाने से लड़ने में, वीरता नहीं कहलाती है ॥
फिर सत्रह बार जिसे मारा, उस पर घर ही में तोड़ कहाँ।
अर्जुन अब दास तुम्हारा है, राजा चेरे का जोड़ कहाँ ॥
इसलिये तुम्हारे जोड़ों से, हर हालत में लाचार हूँ मैं।
हां भीम जरा समता का है, उससे रण को तैयार हूँ मैं ॥

दोनों जानिब से हुई, यही बात स्वीकार।
कई तरह की गदायें, हुईं शीघ्र तैयार ॥

खम ठोक अखाड़े में पहुँचे, भीम ने हाथ जाकर पकड़ा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छब्बीस रोज तक दोनों का, एक भी न बढ़कर दांव पड़ा ॥
दांव से दांव के काट हुए, हिम्मत से कोई हटे नहीं।
हट गई अखाड़े की मिट्टी, पर दोनों पीछे हटे नहीं ॥
कुछ गदा युद्ध कुछ मल्ल-युद्ध, कुछ शुरू रही हाथा पाई।
एक दिन भूप के घूंसे से, भीम को जरा मूर्छा आई ॥

ज्यों त्यों करके शाम को, समर हुआ जब बन्द।
भीमसेन कहने लगे, हे श्री यादव चन्द ॥
भक्त वश्य क्या भक्त की, भूल गये हो आन।
खेल खेल ही में हुई, यहां अधमरी जान ॥

साथ में दास को लाये हो, क्या उलटी हँसी कराओगे।
यक घूंसे में यह दशा हुई, तब कल को क्या दिखलाओगे॥
मुझमें उतनी अब शक्ति नहीं, जो उसपर जयी कहाऊँगा।
जो कल को फिर यह हाल हुआ, तो निश्चय मारा जाऊँगा ॥
मैं पिटते पिटते हार गया, कैसे हो प्रभु रक्षा कारी।
मैं रोता हूँ तुम हँसते हो, ऐसे हँसने पर बलिहारी ॥
जो जय चाहो तो जीवन दो, कोई उपाय बतला डालो।
यदि निन्दा ही करवानी है, तो सुबह मुझे मरवाडालो ॥

जगन्नाथ कहने लगे, मत घबराओ तात।
जरासिन्ध की मौत में, है बस बाकी रात ॥

मैं अब तक यही समझता था, वह साधारण बलधारी है।
पर समझ पड़ा उसके आगे, सब झूंठी धाक तुम्हारी है ॥
अथवा कुछ अहङ्कार होगा, जिससे तुम जीत न पाये हो।
ताज्जुब है ना कुछ योद्धा से, इस तरह सिसकते आये हो ॥
पर खैर, भेद मालूम हुआ, अब कल को देखा जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्ध्या से पहले-पहले ही, वह दो टुकड़े दिखलायेगा ॥
मैं तुम्हें इशारा कर दूंगा, बस वही अमल में ले आना।
मेरे शाबाश शब्द पर ही, दो टुकड़े करके दिखलाना ॥

भीमसेन ने कर लिया, अपना नीचा माथ।
पीड़ा खोई नाथ ने, रख करुणा मय हाथ ॥

दूसरे रोज दोनों योधा, फिर बढ़ कर हाथ मिलाते हैं।
श्री यादवेन्द्र संकेतों में, तिनके को चीर दिखाते हैं ॥
भीम ने इशारा पाते ही, टाँग को पकड़ कर टांग लिया।
दूसरी टांग पर टांग जमा, दोनों हाथों से चीर दिया ॥
कृष्ण ने कहा शाबाश भीम, सुनते ही वहां पछाड़ा है।
दोनों भड़ पड़े तड़पते हैं, लोहू से भरा अखाड़ा है ॥
यदु-पति ने कारागृह जाकर, राजाओं का उद्धार किया।
गिर पड़े चरण पर बन्दीजन, देवों ने जय जयकार किया ॥

करुणा-ध्वनि रनवास में, छाई प्रलय समान।
उन सबकी आवाज पर, पहुँचे दया निधान ॥

बोले हे देवी धीर धार, क्यों रो-रो कर तन खोती है।
पहले इतना तो बतलादे, तू किसके कारण रोती है ॥
नश्वर शरीर ? सो आगे है, जीव को कहे सो व्यापक है।
यह वायु पिण्ड का पुतला है, ईश्वर इसका स्थापक है ॥
यह ब्रह्म प्रकृति का जोड़ा है, सौपाधिक की यह लीला है।
मैं कर्त्ता हूँ यह कारण है, रण का तो एक वसीला है ॥
इसलिये ज्ञानियों को हे रानी, यह लौकिक भेद नहीं अच्छा।
केवल ईश्वर का ध्यान धरो, निष्कारण खेद नहीं अच्छा ॥

रानी ने कर जोड़ कर, कहा सुनो सुख धाम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होते हैं संसार में, भले बुरे सब-काम ॥
परलोक-मार्ग भी समझी हूँ, लौकिक-गति में भी रहती हूँ।
यद्यपि सुख-दुख से हूँ विरक्त, फिर भी अवसर पर कहती हूँ॥
आज ही नहीं पहले ही से, यह लीला मुझ पर जाहिर थी।
लेकिन मैं उसको रोक सकूँ, यह मेरे बल से बाहर थी ॥
मैं भले प्रकार जानती हूँ, जो तुमसे बैर बढ़ायेगा।
वह किसी बहाने और कभी, निश्चय ही मारा जायेगा ॥
जब उन्हें बराबर हठ करके, तुमसे ही यों रण करना था।
तो किसी समय भी इसी तरह, संग्राम-भूमि में मरना था ॥
इसलिये मुझे वह भेद नहीं, अब इतनी कृपा किये जाओ।
सहदेव चरण का चेरा है, इसको अधिकार दिये जाओ ॥
यदि पति का पानी उतर गया, तो यह पानी दाता करदो।
यदि चेरि राज-रानी न रही, तो इसे राज माता करदो ॥

यादवेन्द्र ने शीघ्र ही, साज तिलक का साज।
होनहार युवराज को, दिया मगध का राज ॥
भूपों को ले साथ में, प्रभु ने किया पयान।
यथा-रीति होने लगा, उस यज्ञ का विधान ॥

इस ओर धर्म का धर्मों से, यश वैभव बढ़ता जाता है।
उस ओर दुष्ट दुर्योधन पर, पानी सा पड़ता जाता है ॥
बोला शिशुपाल वीर वर से, भाई न समझ में आता है।
पैरों के तले दबा तिनका, क्यों दिन-दिन बढ़ता जाता है ॥
गलियों-गलियों का टुकड़खोर, इन्द्र का हुआ हमराही है।
शाही आई भिखमंगे पर, शाहों पर पड़ी तबाही है ॥
मैं खाई उसे बनाता हूँ, तो सिंहासन बन जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ना जाने कैसी किस्मत है,कुछ भी न समझ में आता है ॥
दुर्योधन की बात पर, यों बोला शिशुपाल ।
कौरव–पति हर बात में, है काछे की चाल ॥
देखो तो जरासिन्ध को ही, कैसे ढंग से मरवाया है ।
वीर से वीर को भिड़ा दिया, और अपना काम बनाया है ॥
उसकी ही चालों में आकर, बन गया धर्म अधिकारी है ।
इसके बल वैभव बढ़ने में, पहले तो भूल तुम्हारी है ॥
जब पाण्डव निरे भिखारी थे,तब अपना बदला लेना था ।
मर जाते माथा पटक-पटक, पर तिल भर राज्य न देना था॥
लेकिन जो हुआ हो चुका है, अब फिर भी देखा जायेगा ।
दिन आने दो दिनका मारा,फिर दिन-दिन चैन न पायेगा ॥
परामर्श कर इस तरह, चला शीघ्र कुरु मौर ।
माता-पति की वजह से,हुई नजर कुछ और ॥
दरवाजे को दीवार समझ, रुक रहा वहीं कुछ चकरा कर ।
दीवार मानकर दरवाजा, गिर गया जमीं पर टकराकर ॥
जो थोड़ी राह समझता था, वह चलते-चलते ऊब गया ।
पत्थर की चौपल देख बड़ा, लेकिन बढ़ते ही डूब गया ॥
उस आवदार नक्कासी पर, महताब नजर बेताब हुई ।
छिल गई देह सिर फूट गया, शाही पोशाक खराब हुई ॥
खिड़की में से द्रौपदी, देख रही थी हाल ।
बोली अन्धा ही हुआ, उस अन्धे का लाल ॥
वह जलन और उस पर ताना, छू गई आगसी गोले पर ।
बिजली पड़गई विचारों पर, कैंची चलगई फफोले पर ॥
गुदियां चबाकर बोल उठा, द्रौपदी समय वह आयेगा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह रङ्ग-भङ्ग हो जायेगा, यह हँसना तुझे रुलायेगा ॥
तेरी यह हँसी मिटा देना, अब आठ पहर है काम मेरा ।
इतना न करूँ तो झूठा है, जग में दुर्योधन नाम मेरा ॥

बकता झकता इस तरह, चला वहाँ से वीर ।
यहाँ काम प्रत्येक को, सौंप रहे यदुवीर ॥

भीम को अन्न से प्रेम देख, भोजन का काम प्रदान हुआ ।
सब कामों की निगरानी पर, पाण्डव-कुल का दीवान हुआ॥
स्वागताध्यक्ष पार्थ को तथा, धन-पति दुर्योधन किया गया ।
धन-धान्य आदि का दान-भार, कर्ण के हाथ में दिया गया॥
ऋषियों की सेवा करने को, सहदेव सर्वदा तत्पर थे ।
दल लाने के अधिकार सभी, बलवीर नकुल के ऊपर थे ॥
दरवार सजाना, स्वागतादि, विद्वान विदुर के हाथ दिया ।
पत्तलें उठाना, पग धोना, केशव ने अङ्गीकार किया ॥

हृदय ! देख इस भांति से, रखते हैं वे लाज ।
बारी बनवारी बने, अपने जन के काज ॥

विभव देख कर बढ़ चली, दुर्योधन को दाह ।
लगा सोचने किस तरह, करदूं ! इन्हें तबाह ॥

कर्ण से कहा प्यारे भाई ! , अब अनुष्ठान निबटाना है ।
धर्म के हाथ में सब कुछ है, पर अपने हाथ खजाना है ॥
एक ही जगह दश खर्च करो, जो दश मांगे तो सौ पाये ।
बात है तभी जब दो दिन में, दुश्मन दिवालिया हो जाये ॥
जब दान-मान के लिये मित्र, धन ही न पास दिखलायेगा ।
तो धर्म विचारा वंश सहित, खुद लज्जा से मर जायेगा ॥

वाह !! वाह ! के साथ की, पास सभी ने राय ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर विकर्ण कहने लगा, है बेहद अन्याय ॥
औरों की उन्नति देख हमें, उसमें सहाय पहुँचाना है।
या उलटा धक्का देकर के, चढ़ती बेल को गिराना है॥
जिसने हम पर करके यकीन, सौंपदी हाथ में इज्जत है।
हम लोग उसी से दगा करें, यह कैसी भलमनसाहत है॥
मान लें धर्म है शत्रु मगर, आज तो बन्धु कहलायेगा।
जो बात धर्म की डूबेगी, तो नाम तुम्हारा जायेगा॥
फिर याद रहे यह चाल वहाँ, कुछ पेश नहीं पा सकती है।
श्री यादवेन्द्र के सेवक की, इज्जत न कभी जा सकती है॥

किसे भला स्वीकार थी, सत्य न्याय की बात।
प्रातकाल से चल पड़ी, अपनी-अपनी घात॥

चुप चाप मूढ़ धीरे—धीरे, अपनी चालें छाँटने लगा।
एक की जगह दस-दस रुपये, वे मांगे ही बांटने लगा॥
दिनभर बांटा कुछ फेंक दिया, रात को कोष सूना देखा।
प्रात को जहां ताला खोला, पहले दिन से दूना देखा॥

कहा सात्यकी-भीम ने, कृष्णचन्द्र से जाय।
महाराज विश्वास में, खल ने लिया फँसाय॥

ऐसी फिजूल खर्ची से तो, कल निकल दिवाला जायेगा।
धन-पति के खास कोष का भी, पल्ला पलटा दिखलायेगा॥
कीर्ति की जगह कालिमा रेख, डर है लग जाय न हाथ कहीं।
भगवान सँभालो नाव आज, अब कोई भी आधार नहीं॥

कहा नाथ ने जाव तुम, धर्मराज के पास।
उनको धोका दे रहा, उनका ही विश्वास॥
अस्तु पहुँच कर भूप से, कहा गया सब हाल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनते ही उस चाल को, सहम गये नर पाल ॥
बोले-हा हा ! दूसरी बार, भाई से धोखा खाया है।
हे माधव हे हे मायापति, आपकी यहाँ क्या माया है॥
भीम ने कहा-श्री महाराज, निष्कारण कष्ट उठाते हैं॥
पापी तो पाप कमाते हैं, पर सन्त सजायें पाते हैं॥
ऐसी इज्जत, ऐसा संकोच, प्रभु ! डाल भाड़ में दीजियेगा।
इन बटमारों से काम छीन, दासों से काम लीजियेगा॥

धर्मराज कहने लगे, तुम्हें पिता की आन।
करो न अपने यहां पर, कुरु-पति का इतिहास॥

क्या बुरी बात यदि वह धन को, बेजा तौर से उड़ाता है।
ऐसा करना तो अच्छा है, अपना ही नाम बढ़ाता है॥
करने दो यों ही सुखी रहें, वे जले-भुने बेचारे हैं।
बाल भी नहीं बाँका होगा, यदि यादव नाथ हमारे हैं॥
यदि आज वही कंजूसी कर, दीनों को दान नहीं देता।
तो बिला बहस और बिना कहे, कुञ्जियां अवश्य छीन लेता॥
इस लिये तुम्हें सौगन्ध भीम, कुरु-पति का मत अपमानकरो।
जो दिया गया वह काम करो, श्री यादवेन्द्र का ध्यानधरो॥

करुणा-वत्सल समझ कर, सत्य भक्त की टेक।
अब खुद ही करने लगे, इस प्रश्न पर विवेक॥

अष्ट-सिद्ध नव ऋद्धि गण, बुलवाई भगवान।
प्रविश हुईं वे कोष में, प्रभु की आज्ञा मान॥

श्री धर्मराज का धर्म जाय, यह बात ही है मरजाने की।
श्री सिद्ध-रूप के होते क्या, घट जाये सिद्धि खजाने की॥
थक गया खर्च करते-करते, कोष में न पाई का अन्तर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झँपने लगा फेंकने लगा, अब तो दूना धन खिजला कर ॥
पहले था यत्न पाण्डवों का, अब लीला है यदुराई की ।
दिन-रात दुचन्द लुटाई की, पर कमी न आई पाई की ॥

क्रम-गत यों ही आगया, राज तिलक का बार ।
धर्म-सभा सज्जित हुई, जमा हुआ दरबार ॥

पाण्डव-दरबार आज वह है, जिनको महेन्द्र ललचाते हैं ।
इन्द्रों के इन्द्र जहां खुद ही, श्री यादवेन्द्र दरशाते हैं ॥
विप्रों ने वेद मन्त्र गाकर, परम ब्रह्म का ध्यान किया ।
धर्मावतार पांचाली ने, श्री गणपति का आह्वान किया ॥
फिर नवग्रहों का पूजन कर, होमादि यज्ञ का काम हुआ ।
पूजन अर्चन हवनादिक में, उसदिन का काम तमाम हुआ॥

मय दानव ने था किया, सभा-भवन निर्माण ।
सभा सहित श्री धर्म ने, उसमें किया पयान ॥
नियम सहित जब जमगया, अतिथोंका दरबार॥
लगी नाचने अपसरा, छिड़ने लगी बहार ।

❀ गायन ❀

आओ मिलकर के गायें बहार ।
देखें धर्म—राज—दरबार ॥
ठुमकि ठुमकि झुमकि झुमकि नाचें गायें नारि—
जायें बलिहार, साजें सिङ्गार ।
जय जय करतार—आओ ॥
राजत राज-समाज में, यदु-पति त्रिभुवन—राज ।
धर्मराज बोले प्रभो, रही दास की लाज ॥
जो इन चरणों के आश्रित है, उसको सब तरह सुभीता है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब तो यह है यह राज पाट, उन चरणों ने ही जीता है॥
देवाधिदेव ! हे जगन्नाथ, यह सभी तुम्हारी इच्छा है।
अब कृपा-सहित यह बतलाओ, इन दासों को क्या आज्ञा है॥

ऋषियों से कहने लगा, तब तक कौरव राय।
महाराज अब तिलक को, लीजै चरण धुलाय॥
वाल्मीक पर उन्होंने, दिया भार वह डाल।
वाल्मीक ने बात सब, कश्यप पर दी टाल॥
कश्यप ने कुम्भज कहा, ले न सके वह भार।
धर्मराज ने तब कहा, कहैं आप सरदार॥

है कौन सभा में परम पूज्य, जिनका पूजन अपनायें हम।
वह कौन समर्थ महा प्रभु हैं, जिनसे अभिषेक करायें हम॥
कुरु-पति बोला इसके लायक, केवल ऋषिगण कहलाये हैं।
पीढ़ी-दर-पीढ़ी से इन के, हम चरण पूजते आये हैं॥
हम ही क्या सारी सृष्टि आज, इनके ही चरण धो रही है।
पर नहीं समझ में आता है, क्यों टाल-मटोल हो रही है॥
व्यास ने कहा हे कौरव-पति, राजे हैं करुणा धाम यहां।
सोचकर तुम्हींतो बतलाओ, त्रिभुवन पति कहां गुलामकहां॥
उन परम पूज्य प्रभु के आगे, हम क्या पुजने की टेक करें।
अच्छा हो वे पद धुलवायें, और वही राज अभिषेक करें॥
सहदेव मगध का राजा तब, बोला हम इस में सहमत हैं।
हम लोगों के पूजने योग्य, केवल केशव त्रिभुवन-पति हैं॥
पालक पोषक संहारक हैं, सम्पूर्ण सृष्टि के कारण हैं।
सुर-तारण खल-संहारण हैं, धरणी का भार उतारण हैं॥

सुना जहां सहदेव का, कृष्ण हेतु शुभ काज।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाह-वाह करने लगा, सारा राज समाज ॥
शीघ्र ही युधिष्ठिर ने प्रभु को, सिंहासन पर बिठलाया है।
फिर चरण-कमल परिमार्जन को, गङ्गा का जल मंगवाया है॥
नव-वस्त्र भूषण पहिना कर, मणि माल हृदय पर धारी है।
चरणोदक लेकर भक्तों ने, प्रभु की आरती उतारी है॥
छवि खानी आठों पटरानी, सुख दानी सहित बिराज रहीं।
सुर-नाग काम गन्धर्वों की, नारियां आरती साज रहीं॥
कुन्ती इत्यादि देवियों ने, बधुओं की नजर उतारी की।
देवता महीपति बोल उठे, जय हो श्री कुञ्ज बिहारी की॥

चतुर्दिशा से जय-सहित, उमड़ उठा अनुराग।
किन्तु दुष्ट शिशुपाल की, दब न सकी वह आग॥

बोला पुकार कर-मूर्ख गणो! तुम ने अन्धों का कहा किया।
किस महायज्ञ का महाभाग, इस श्याम वर्ण को खिला दिया॥
जानते नहीं हो इस शठ को, जिसने गो वत्स चुराये हैं।
टुकड़े के लिये चेटकी ने, घर-घर चेटक दिखलाये हैं॥
इतना अरसा हो चुका मगर, यह नहीं समझ में आया है।
है कौन जाति या पिता मातु, क्या कुल है किसका जाया है।
धिक्कार तुम्हारी बुद्धि पर, जो इसे अगोचर कहते हो।
मूढ़ो! क्या आँखें फूट गईं, नर को परमेश्वर कहते हो॥

इस कपटी ने हर जगह, किया खूब अधिकार।
वृन्दाबन में इन्द्र का, दिया भाग तक मार॥

यह वेद-शास्त्र से उलटा है, वेद-स्वरूप कहलाता है।
यह नीच जहां भी जाता है, कुछ झगड़ा कर के आता है॥
बैरी के भय से ब्रज छोड़ा, छिप रहा द्वारिका जाकर है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसको ईश्वर बतलाते हो, वह उग्रसैन का चाकर है॥
होसकता था सहन कब, यह अनुचित व्यवहार।
एक साथ दरबार में, खड़ी हुई तलवार॥
भीमार्जुन गदा धनुष लेकर, बोले ओ पापी! शोर न कर।
अब भंग रंग में होती है ज्यादा बातों का जोर न कर॥
यदि यादवेन्द्र की निन्दा में, शब्द भी जबां पर आयेगा।
तो याद रहे बस इसी समय, सिर धड़से अलग दिखायेगा॥
इस धर्म सभा में ओ पापी, दे जा सुहाग मत रानी का।
हम मौन अभी तक बैठे हैं, यह है लिहाज महमानी का॥
भीमार्जुन यों कह उठे, सजे वहां सब वीर।
आज्ञा पाने के लिये, होने लगे अधीर॥
सब केशव का मुँह ताक रहे, पर मन मोहन मुसकाते हैं।
केवल उसके अप-वचनों पर, कुछ चिह्न लगाते जाते हैं॥
उठ गये महीपति निन्दा सुन, लेकिन वह पापी उठा नहीं।
चल दिये बीर अकुला करके, पर गाली देना रुका नहीं॥

श्रीकृष्णचन्द्र बोलेः—

शिशुपाल! न कर अन्धेर बहुत, सब सृष्टि नहीं अन्धेरी है।
फँसी रही भँवर में नव तेरी, एकाध घड़ी की देरी है॥
अपराधों की चाँदनी मूर्ख, बढ़ बढ़ कर अस्ताचल पर है॥
स्मरण रहे तेरा जीवन, अब चुप रहने पर निर्भर है॥
मानी बोला चल अज्ञानी, यों ज्यादा पानी चढ़ा नहीं।
नाचा है अभी गोपियों में, वीरों से पाला पड़ा नहीं॥
बस खबरदार दूसरी बार, जो मुझसे कुछ हुज्जत होगी।
तो यज्ञ-कुण्ड में सर्व प्रथम, अरे धूर्त तेरी आहुति होगी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी भाँति अपराध जब, सौ हो गये तमाम।
मुसकाये माधव तनिक, लिपि पर लगा विराम॥

एक सौ एक दुर्वचन उठा, भवितव्य कुवाचक बाँच उठा।
कंचन-थाली जा मिली गले, खल-माथ मही पर नाच उठा॥
यज्ञ स्थल में कुहराम उठा, धड़ गिर कर पांव पसार उठा।
खल-दल में हाहाकार उठा, सुर-मण्डल में जय कार उठा॥
खल की मां का वरदान हुआ, निश्चर का मुक्ति-निधान हुआ।
यज्ञाहुति की बलि वेदी पर, उस पामर का बलिदान हुआ॥

दुर्योधन से मीत को, फिर थी कहां समात।
खड़ा हुआ तलवार ले, लगा पीसने दांत॥

ओ हो जंगली गंवारों ने, ऐसा अन्धेर मचाया है।
इस धर्मराज के पुतले ने, नेवता दे बैर बिसाया है॥
ऐसे अधर्म के अवसर पर, धर्म है न चुप रहजाने का।
दुःशासन उठो कर्ण सँभलो, है वक्त तेग खटकाने का॥

धर्मराज कहने लगे, करो न यों अन्याय।
अन्यायी के साथ में, किस बात की सहाय॥

शिशुपाल नीच ने अपनी ही, करतूतों का फल पाया है।
गैर के मामले में तुमको, वे वजह जोश बढ़ आया है॥
औरों के पीछे अगर यहां, आपसी ताप चढ़ जायेगा।
तो कृष्ण द्वारिका जायेंगे, घर में झगड़ा बढ़ जायेगा॥
यह तुम्हें-हमें मालूम नहीं, किसके बदले पर कब क्या है।
चुप बैठो, अपना काम करो, तुमको इससे मतलब क्या है॥

दुर्योधन ने खींच ली, एकायक तलवार।
यहाँ सूर-सरदार भी, हुए सभी तैयार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किन्तु बीच में कृष्ण ने, कहा उठाकर हाथ।
ठहरो शूरो ! भटवरो !, ठहरो कौरव नाथ ॥
यह काम पराये घर का है, इस में क्यों विघ्न उठाते हो।
अजमा लूंगा यह बाहु कभी, जो बार-बार फड़काते हो॥
आज ही अगर लड़ना चाहो, तो यज्ञ पूर्ण हो जाने दो।
फिर चलो क्षेत्रमें निकलचलें, फिर अपना बल दिखलानेदो।
इस समय लाश इस राजा की, मैं चंदेरी पहुँचाता हूँ।
शिशुपाल-वंश को इस दिन से, पाण्डव का मित्र बनाता हूँ॥
रोक दिया यों कृष्ण ने, बढ़ता हुआ बवाल।
राजन् सुन शिशुपाल के, जन्म काल का हाल॥
जिस दिन वह पैदा हुआ, पाप रूप शिशुपाल।
चार भुजा त्रै नेत्र मय, था यह महा कराल ॥
उसे देख ज्योतिष वालों ने कहा:—
जिसके आगे आते ही यह, दो भुजा नेत्र गिर जायेगा।
उस महा बाहु के हाथों से, यह बालक मुक्ती पायेगा॥
एक दिन कृष्ण की साया से, दो बाहु यकायक टूट पड़े।
छिप गया तीसरा नेत्र स्वयं, कुछ अंग आप ही छूट पड़े॥
थी महादेवि उसकी माता, उसने जब यह चरित्र जाना।
तो ज्योतिष के आधारों से, लाल का काल प्रभु को माना॥
कृष्ण चन्द्र के चरण पर, पड़ी शीघ्र अकुलाय।
केशव के करुणा सहित, उसको लिया उठाय॥
बोली लीला धर यह बालक, मेरी गोदी का भूषण है।
हे यादव-पति इन हाथों में, इस बेचारे का जीवन है॥
मोहन बोले स्पष्ट कहो, उसने सब कारण बतलाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब दयाधाम ने यह कहकर, उस महादेवि को समझाया ॥
देवी ! मैं तेरे बालक के, सौ तक अपराध बिसारूंगा ॥
जब सौ से भी बढ़ जायेगा, तो बेवश होकर मारूंगा ॥

उसी समय प्रतिज्ञा-बद्ध हो, मौन रहे थे श्याम ।
पापी अपने कर्म से, चला गया सुर—धाम ॥
कुशल-सहित राजेश का, उत्सव हुआ तमाम ।
जन विनीत कह प्रेम से जय श्री राधेश्याम ॥

द्रोपदी चीर हरण

बकता-झकता लौट कर, आया कौरव नाथ ।
परामर्श करने लगा, अन्ध—राज के साथ ॥
शकुनी बोले–हे ज्ञान–चक्षु, अनहोनी सही न जाती है।
जैसी कुछ हम पर बीत रही, वह मुँह से कही न जाती है॥
मिल जुल कर मूर्ख मण्डलीने, गुड़ मिट्टी एक बराबर की।
अफसोस हुई भिखमंगों से, तौहीन राज राजेश्वर की॥
हम लोगों ने टुकड़े देकर, कुत्ते को शीश चढ़ाया है।
अपने घर तो राज ही रहा, वह महाराज कहलाया है ॥
उसकी काली करतूतों से, मिट गई नींव भाई पन की।
हिल गया हृदय कौरव गणका, उड़गई नींद दुर्योधन की॥
इसलिये पूछने आये हैं, बतलाओ हम क्या काम करें।
आज्ञा देदो हे महाराज, तो खुल कर अब संग्राम करें॥

ज्ञानचक्षु कहने लगे, है बूढ़ा लाचार।
इस कारण क्या लाभ है, करने से इनकार॥
यदि धमकाऊं या रोकूं भी, तो तुम न कभी डर सकते हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समरथ हो और सयाने हो, जैसा चाहो कर सकते हो ॥
सुनते हो अगर सचाई को, तो तुम सब मुझे सितारे हो।
वैसे ही वे सब प्यारे हैं, जैसे तुम मुझको प्यारे हो ॥
तुम भी कुछ करके दिखलाओ, जैसी उनकी करतूती है।
जल भुनकर बुरा भला कहना, बतलाओ कौन सपूती है ॥
सौभाग्य कहो कुछ दीन दुखी, समरथ हैं और सुखारे हैं।
मान लो जन्म के शत्रु सही, फिर भी तो अङ्ग तुम्हारे हैं ॥
यदि राज-नीति के द्वारा ही, उनको अपनाते जाओगे।
तो औरों की समता में तुम, दूने समरथ कहलाओगे ॥
तुम लोगों की ऐक्यता देख, बाहरी शत्रु घबरायेंगे।
वरना कौरव-पाण्डव सारे, गिन गिन कर मारे जायेंगे ॥
इसलिये हमारी मानो तो, घर ही में मत धर मार करो।
अपनाये रहो भाइयों को, कुल को मत बंटा ढार करो ॥

खरी बात पर चल दिये, उठ चुपचाप तमाम।
शकुनी-दुर्योधन गये, विदुर भक्त के धाम ॥
पेश हुआ उस जगह भी, कुरुपति का प्रस्ताव।
किन्तु न बदला जा सका, भक्त विदुर का भाव॥

उत्तर में साफ-साफ बोले, कुरु-पति यह काम नहीं अच्छा।
यदि मेरे मन से पूछो तो, रण का परिणाम नहीं अच्छा॥
तुम सौ नहीं करोड़ रहो, हों शंख शस्त्र बरसाने को।
उस ओर फकत कृष्णार्जुन ही, काफी हैं तुम्हें गिराने को ॥
इसलिये डाह में जल न मरो, धर्म भी तुम्हारा भाई है।
हम खुले तौर से कहते हैं, अपनी शान्ति में भलाई है ॥

गान्धारी भट मीष्म से, पाया यही जवाब।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राज सभा में लौट कर, जा बैठा बेताब ॥
पर चैन कहां चाण्डालों को, पानी धार पर चढ़ाने लगे।
हां में हां नीच मिलाने लगे, मन की युक्तियां सुनाने लगे ॥
होता है दुर्बल देह अगर, तो पहले मानस रोगों से।
मिटता है राज-काज मित्रो, झूठे खुशामदी लोगों से ॥
शकुनी बोला श्री महाराज, क्या लाभ? व्यर्थ घबड़ाने से।
लड़का न विवाहा जाता है, घर-घर में हा हा खाने से ॥
युद्ध को किसी की राय नहीं, तो और राह बतलाता हूँ।
खाली फांसे के झांसे से, सारा पांसा पलटाता हूँ ॥
यदि एक बार ही धर्म कहीं, तैयार जुऐं पर हो जाये।
तो तेग म्यान में पड़ी रहे, बे बार काट सा दिखलाये ॥
धोखे की चौपड़ बने एक, धोखे वाला ही पांसा हो।
दुश्मन के लिये दिलासा हो, दुनियां के लिये तमाशा हो ॥

कुछ विवाद के बाद में, मानी गई सलाह।
देश-देश के वास्ते, ली दूतों ने राह ॥

विदुर भक्त के पास फिर, जा पहुँचा कुरुनाथ।
निश्चय अपने हृदय का, कहा जोड़कर हाथ ॥

चाचाजी हम सब लोगों ने, द्यूत की राय ठहराई है।
बन चुका भवन सामान हुआ, हर तरफ खबर पहुँचाई है ॥
यद्यपि मैं खूब जानता हूं, द्यूत की न अच्छी आदत है।
क्या करूं मगर बचपन ही में, बच्चों ही की तो तबियत है ॥
प्रभु से इतनी आशा है, यह द्यूत निमन्त्रण ले जाओ।
श्री धर्मराज को कुल समेत, हे तात! साथ ही ले आओ ॥

कहा विदुर ने जो कहो, सो कर डालूं वीर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पला तुम्हारे नमक से, यह पापिष्ट शरीर।
छोड़ दूं नमक पर नमक मयी, यह देह न छोड़ी जाती है।
इसलिये तुम्हारी आज्ञा भी, वक्त पर न तोड़ी जाती है॥
फिर भी इतना समझा देना, अन्तिम कर्त्तव्य हमारा है।
अत्यन्त घोर विपदा सूचक, राजन्! भवितव्य तुम्हारा है॥
उन भोले-भाले हिरणों पर, जितना ही जाल बिछाओगे।
विश्वास रहे उतने उसमें, उलटे फँसते ही जाओगे॥
जाने को तो जाना ही है, लेकिन फल भी कह जाना है।
ओ दीवाने! टुक आंख खोल, संसार नहीं दीवाना है॥

इन्द्रप्रस्थ को विदुर ने, यों कह दिया पयान।
हुआ धर्म की ओर से, भाव-पूर्ण सन्मान॥

कुन्ती द्रौपदी आदि आकर, चरणों में गिरते आते हैं।
लज्जा के मारे विदुर मगर, धरणी पर गिरते जाते हैं॥
उस ओर प्रेम से पगी हुई, वाणियां सुनाई जाती हैं।
उस ओर शर्म से झुकी हुई, आंखें न उठायी जाती हैं॥

बढ़ता आता है उधर, अधिक अधिक आह्लाद।
चढ़ता आता है इधर, अति संकोच-विषाद॥
कहा धर्म ने अन्त में, धन्य हमारा भाग।
त्याग-मूर्ति ने जो किया, दीनों पर अनुराग॥

जिस समय वंश का वृद्ध पूज्य, कोई घर में आ जाता है।
उस समय पिता ही के समान, वात्सल्य-भाव छा जाता है॥
तुम तो दोनों के दीपक हो, दोनों के लिये प्रकाश करो।
कुछ दिनतक वहाँ निवास करो, कुछ दिनतक यहां विश्राम करो॥

हृदय थाम कर विदुर ने, देखा आँख पसार।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आह खींच कहने लगा, भोले पाण्डु-कुमार ॥
मुझको कुल का दीपक न कहो, मैं दीप बुझाने वाला हूँ।
खो सकता नहीं अन्धेरे को, अन्धेर मचाने वाला हूँ ॥
क्या पता तुम्हें हे मृग-छौने, क्या जाल बिछाने आया हूँ।
कुल लाड़ लड़ाने आया हूँ, या वंश लड़ाने आया हूँ ॥

पद मत धरो बबूल पर, प्रेम बारि से सींच।
सुनो तात जिस बात को, आया है यह नीच ॥

उस कुल-द्रोही दुर्योधन ने, द्यूत का जाल फैलाया है।
उसमें चाल से फँसाने को, हे बेटा तुम्हें बुलाया है ॥
छल की चौसर रचवाई है, छल का पांसा बनवाया है।
छल-बल से तुम्हें मिटाने को, खल ने निश्चय ठहराया है ॥
वह द्यूत निमन्त्रण देने को, मैं आ पहुँचा अन्यायी हूँ।
चाचा ! चाचा ! मत कहो तात, मैं चाचा नहीं कसाई हूँ ॥
उसका संदेशा लाने तक, करणी हो चुकी हमारी है।
अब हे मति धीर चलो न चलो, यह इच्छा मात्र तुम्हारी है॥

धर्मराज कहने लगे, सुनिये ज्ञान-निधान।
बाल न बांका कर सके, जो सहाय भगवान ॥

वे लाख जाल फैलाया करें, पर चाल कहां जा सकती है।
जो सांच हृदय में साबित है, तो आंच नहीं आ सकती है ॥
विश्वास किसे है ? चालों का, पल्टन का और रिसाले का।
हम तो बस यही चाहते हैं, बल रहे द्वारिका वाले का ॥
भीम ने कहा डर ही क्या है, सब में मुकाबला रक्खेंगे।
यों नाहीं कह कर दुश्मन का, होसला नहीं बढ़ने देंगे ॥
क्या होगा ? धन ही जायेगा, पर सत्य सदा ठहरायेगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे तात ! वहाँ चलिये अवश्य, होगा सो देखाजायेगा ॥
भीमसेन की बात ही, की सबने स्वीकार ।
स्वजन तथा सेना सहित, धर्म हुए तैयार ॥
हाथी घोड़े पैदल सवार, चतुरङ्गी सैन सजाई गई ।
कुन्ती द्रौपदी आदि सबकी, आगे पालकी बढ़ाई गई ॥
घर-घर धौंसे पर चोट पड़ी, पीछे सारे सरदार चले ।
बन्धुओं और ब्राह्मणों सहित, धर्म के सिद्ध अवतार चले ॥
कौरव नगरी के निकट, गाजे धर्म निशान ।
दुर्योधन के सुत सहित, लेन चले अगवान ॥
हिल-मिल कर बड़ी बनावट से, बागों में डेरा दिया गया ।
पक्वान मिठाई मेवों से, उपचार भोज्य का किया गया ॥
गलियों-गलियों में नाच रङ्ग, घर-घर आनन्द बधाये हैं ।
मानो इन्द्र के अखाड़े में, भारत—महेन्द्र चल आये हैं ॥
बढ़ता सा तेज प्रताप चला, बढ़ता सा भोग विलास चला ।
कुन्ती देवी से मिलने को, दुर्योधन का रनवास चला ॥
हिल-मिल कर खूब हिलायाकी, वे हिलते हिलती सी आंखें ।
ईश्वर जाने कब मिलती हैं, मिलते अन मिलती सी आंखें ॥
जिनदो हृदयों में छल-बल हो, दिल स्वार्थ क्रोध में जलाकरे ।
उनसे क्यों कर कह आता है, भगवान तुम्हारा भला करे ॥
जो हो दोनों रनवासों का, जी भर कर मेल-मिलाप हुआ ।
कुछ नाच रङ्ग भी जमा रहा, कुछ लौकिक प्रेम-प्रलाप हुआ ॥
मिल जुलकर इस भांति से, विदा हुए रनिवास ।
भानुमती ठहरी रही, द्रुपद-सुता के पास ॥
संजय ने जाकर कहा, सुनिये धर्म नरेश ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्यूत-सभा का सुबह से, होगा प्रथम गणेश ॥
धर्म ने कहा प्रारम्भ करो, मैं अभी न आने पाऊँगा।
दो चार रोज गुरु-वृन्दों के, दर्शन में समय बिताऊँगा ॥
द्यूत में कांति सी फैल चली, पर शान्त कौरवी दल न हुए।
खेल के चार दिन बीत गये, पर धर्मराज शामिल न हुए॥

मिले प्रथम कुरु-राज से, धर्म बन्धु बर मान।
मानो बस-बस एक थे, त्याग और अभिमान ॥

लग रही आग तो लगी रहे, बाहर बनाव का जल तो है।
भाई भाई से पूछ रहा, कहिये नर-राज कुशल तो है॥
कण्ठ से कण्ठ भी मिला दिया, सुख पूछा है दुख पूछा है।
फिर बिना पूंछ की पूंछ रही, जब हृदय प्रेम से छूंछा है॥
हर बात बात की बात लिये, बस वही बात सरबस समझो।
था मिलने का दस्तूर-मात्र, वह विष समझो या रस समझो॥

आज्ञा पाकर धर्म-पति, गये द्रोण के तीर।
पुलकित होने की जगह, जलने लगा शरीर ॥

सोचा उफ मेरे मृग—छौने, व्याध के यहां पर आये हैं।
जिसकी जगह दुरङ्गी चौरङ्गी, चौसर का छाल बिछाये हैं॥
बोले बेटा ! इस आने पर, अपने भाग्य को बधाई दूं।
या तेरी भावी सोच-सोच, विधना के यहाँ दुहाई दूं॥
क्यों आया कपट बुलावे पर, क्या मिला न तुझे बहाना था।
आना था कुछ पीछे आता, इस समय न हरगिज आना था॥
लाखा किस मुँह से बात करूं, जो खल ने कपट विचारा है।
चाण्डाल चौकड़ी में बेटा !, बूढ़ों का नहीं गुजारा है॥

धर्मराज कहने लगे, दो आशीष द्विज-नाथ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम दोनों की लाज है, दीन बन्धु के हाथ ॥
धन चला जाय जन चला जाय, पर धर्म-धर्म का धनी रहे।
बन जाय या मिट जाय सभी, पर बात दास की बनी रहे ॥
छीन लें सभी सारा धन-जन, पर बात न वे लेने पायें।
दो इतनी ही आशीष नाथ, मरते तक धर्म निभा जायें ॥
गान्धारी भीष्म अन्ध नृप से, फिर मिले धर्म सिर धर-धरके।
उन सबने ही आशीश दिया, यक छिपी आहसी भर-करके।

कार्तिक-कृष्ण चतुर्दशी, की आ पहुँची रात।
बाजी बद-बद कर चले, ज्वारी जग विख्यात ॥

कलियुग का घोर प्रताप कहो, या चतुर्दशी की रात कहो।
धन समझो बिना पसीने का, या बिन मांगी सौगात कहो ॥
दस-पांच-बीस के गुट बँध कर, गलियों २ दरसाने लगे।
जीवन की कठिन कमाई को, कौड़ी के साथ उड़ाने लगे ॥
वाहरी! लगन वाहरे! खेल, चार का एक दिखलाता है।
सच ही कहते हैं ज्वारी को, अपना ही दांव सुझाता है ॥
पड़ गये किसी के पौ बारह, गिर रहा तीन काने कोई।
कुछ दरदाने बन निकल चले, चुन उठा चार दाने कोई ॥
बन गये लीख के लाख लाख, भुक्कड़ दुशालिये बन बैठे।
बन गये दिवाले लाखों के, लाखों दिवालिया बन बैठे ॥

नगर-नगर में इस तरह, मची हुई थी चाल।
कहना है हमको यहां, राज-द्यूत का हाल ॥

हट कर बैठे राजा रईस, झुक कर बैठे कुछ हद वाले।
गुड़गुड़ी लगाये बैठ गये, मसनद के साथ सनद वाले ॥
ऐसा प्रकाश जिसके आगे, बिजली झुककर बलिहार उठी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा सजाव वह तैयारी, इन्द्र की सभा झक मार उठी ॥
पांसे पर पांसे पड़े, पड़ी न थी पर पेश ।
तब तक द्यूत समाज में, प्रविशे धर्म-नरेश ॥
अर्धासन पर दुर्योधन ने, श्री धर्मराज को बिठलाया ।
आँख के तनिक इशारे से, फिर छल का पांसा मंगवाया ॥
सब बन्धु बराबर बैठ गये, कुछ दल-बल बाहर बैठगया ।
चतुरङ्गी चौपड़ पड़ते ही, शकुनी समता पर बैठ गया ॥
धर्म ने कहा आओ कुरु-पति, औरों से मेरी होड़ नहीं ।
तुम उठो और पांसा फेंको, शकुनी से मेरा जोड़ नहीं ॥
दुर्योधन बोला—महाराज, शकुनी ही आज सुयोधन है ।
राजन् शकुनी के हाथों ही, आज को हमारा जीवन है ॥
शकुनी करदे सो सच्चा है, बनने मिटने का खेद नहीं ।
इसमें ही भेद समझ लीजै, शकुनी में मुझमें भेद नहीं ॥
मेरे विचार में इस प्रकार, कुछ हानि नहीं पांसा लीजे ।
अथवा अपने बदले में भी, दूसरा व्यक्ति बिठला दीजे ॥
चौपड़ को नर-पाल ने, जहां लगाया हाथ ।
वैसे ही अशकुन सभी, हुए एक ही साथ ॥
कर जोड़ भीम ने कहा बन्धु, चौपड़ का रङ्ग निराला है ।
आसार साफ दिखलाते हैं, कुछ आज दाल में काला है ॥
फँस चुके बीसियों बार जहां, उस जगह जानकर जाओ ना ।
हम हा हा करके कहते हैं, पांसे से हाथ लगाओ ना ॥
तब तक ज्योतिषी—वृन्द बोले, शुभ घड़ी दूर जा पहुँची है ।
तेरह वर्ष के लिये राजन्, संकटा—दशा आ पहुँची है ॥
रविक्रूर वर्ष—पति बिगड़ गये, शनि राहु बक्र दिखलाते हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजन् चौपड़ पर मत बैठो, हम बार-बार समझाते हैं ॥
द्रोण ने कहा संकेतों में, हे पाण्डव-कुल-सिरताज उठो।
परदे-परदे से गूंज उठी, खल-मण्डल से नर-राज उठो ॥

सब रोये धोये बहुत, सब कर चुके पुकार।
पर होनी के सामने, था किसका अधिकार ॥

धर्म ने कहा मैं समझ चुका, धोखा इस जगह सरासर है।
लेकिन उसका प्रभाव होना, मेरी भावी पर निर्भर है ॥
यदि मेरी भावी बिगड़ चुकी, तो किसके हाथ बनाना है।
होनी होकर ही रहनी है, चौपड़ का एक बहाना है ॥
जब विपदा सिर पर आती है, तब मति भी मारी जाती है।
शायद इसलिये किसी की भी, शिक्षा न समझ में आती है ॥
क्यों भीम! तुम्हीं तो बल देकर, लाये हो खेल खिलाने को।
अब आज वक्त पर बैठ गये, यह उलटा पाठ पढ़ाने को ॥

क्या होगा! जाऊँ मगर, मैं सर बस भी हार।
सत्य न हारा चाहिये, है जिसका आधार ॥

माना चौपड़ रण-क्षेत्र नहीं, फिर भी बाजी कहलाती है।
बात की बात में मर्दों की, हर बात परख ली जाती है ॥
तुम भी तो बात-बात ही में, बात के सहारे रहते हो।
मैं बात छोड़कर निकल चलूं, बोलो भैया क्या कहते हो ॥

जो कुछ भी हो मत करो, कायरता की बात।
मेरी भावी बन चुकी, चतुर्दशी की रात ॥

शकुनी बोला श्री महाराज, यदि पड़ा न असर खजाने में।
तो केवल छूछे पाँसों से, क्या लाभ हाथ खलियाने में ॥
धर्म ने कहा लो यही सही, पहले मणि-माल लगाता हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने ही पांसों के द्वारा, अपनी किस्मत अजमाता हूँ॥
पर वह तो छलये के पांसे थे, छलिये के बँधे इशारह थे।
पृथ्वी पर पड़ते पड़ते ही, पौ बारह कच्चे बारह थे॥
शकुनी बोला लो महाराज, पांसे का रङ्ग देखते हो।
मणि-माल हाथ से निकल गई, दूसरी बार क्या रखते हो॥
धर्म ने बिना ही बात किये, रखदीं चाबियां खजाने की।
देरी न निकलने में कुछ थी, देरी थी फकत् लगाने की॥
अब तो धन-दौलत जर जेवर, पट-भूषण सारे निकल गये।
सोना चांदी हीरे मोती, फिर बर्तन सारे निकल गये॥
तीसरी बार शस्त्रास्त्र गये, पशु—हारी चौथी बार हुई।
फिर पत्ती और नौकरों की, बाजी बाजी पर हार हुई॥
रथ-यान सातवीं बार गये, गज आदि आठवीं बार गये।
फिर सभी वस्त्र-भण्डार गया, भूतल के सब अधिकार गये॥

दुर्योधन को जब मिला, भूतल का अधिकार।
तब तो उसके मान का, रहा न पारा वार॥

फौरन बोला दूतो जाओ, जय ध्वजा जगत में फहरादो॥
भूतल के कोने कोने में, मेरी दुहाइयां फिरवादो॥
उन पिछले दावा दारों को, मारो पीटो लूटो खाओ।
इस पर भी सरकस बने रहें, तो बन्दी करके ले आओ॥

यह आज्ञा सुन कर खुले, धर्म राज के कान।
आंखों में फिरने लगा, अपना आप मसान॥

लेकिन बेचारे बेबश थे, क्या करते! हा हा खाने लगे।
जिसको संसार मनाता था, वे उस नीच को मनाने लगे॥
भैया भैया! कुछ कृपा करो, राजों ने कुछ न बिगाड़ा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो चाहे इसे दण्ड देदो, अपराधी धर्म तुम्हारा है ॥
राजन् ! वह प्रजा तुम्हारी है, विश्व में पताका फिरवाओ ।
पर इतनी विनय हमारी है, हाहा बन्दी मत करवाओ ॥

दुर्योधन कहने लगा, जिसे चुके हो हार ।
उसकी बाबत बात का, तुम्हें नहीं अधिकार ॥

हम मारें या पालते रहें, यह मरजी फकत हमारी है ।
तुम तो अपनी ही बात करो, अब क्या रखने की बारी है ॥
वीरो ! संकोच का काम नहीं, शाही हुक्म को कबूल करो ।
मैं आज्ञा तुमको देता हूँ, राजों से चौथ वसूल करो ॥

सिसक गये यह वचन सुन, धर्म वीर नरपाल ।
किन्तु भीम भट-राज को, रही न तनिक सँभाल ॥
गदा मार दी भूमि पर, भरी एक हुँकार ।
चौंक उठे दरबारिये, काँप उठा दरबार ॥

बोले ओ जालिम खबरदार !, जो यह आज्ञा दी जायेगी ।
तो अमल कराने से पहले, वह जबाँ खींचली जायेगी ॥
यज्ञ की लूट में लुटे लुए, अब तक न पनपने पाये हैं ।
भूखों की सूखी हड्डी पर, अब तूने दांत लगाये हैं ॥
तोपड़ का कांधा साध दिया, पर तेग का कांधा सधा नहीं ।
है धर्म-धर्म में बँधे हुए, पर भीम किसी से बँधा नहीं ॥
अन्याय पूर्ण यदि यह आज्ञा, फौरन न बन्द हो जायेगी ।
तो हाथ उठा कर कहता हूँ, अब प्रलय मचा दी जायेगी ॥

कम्पित स्वर से धर्म ने, कहा शान्त बलवान ।
तोड़ो मत इस आन को, तुम्हें पिता की आन ॥
यह दृश्य सामने आया है, केवल मेरे पापी पन का ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस का तो मैं दोषी हूँ, क्या दोष बन्धु दुर्योधन का॥
शकुनी ने कहा बात छोड़ो, क्यों व्यर्थ विवाद बढ़ाते हो।
हां धर्मराज ! सोचकर कहो, क्या अबकी बार लगाते हो॥

दांव लगाने के लिए, हुये धर्म तैयार।
हा हा खाकर भीम ने, कहा दूसरी बार॥

उफ फूल-फूल में फूल-फूल, फूली फूली उड़ धूल गई।
कर्म की भूल के साथ-साथ, क्या नित्य क्रिया भी भूल गई॥
भैया थोड़ी तो फुरसत लो, यक दम मत ध्यान भुलाया करो।
शौचादिकरो जलपान करो, फिर जीभर दांव लगाया करो॥

उठना चाहे धर्म-पति, नीति-वचन पहिचान।
प्रति पक्षी की ओर से, चले व्यंग के बाण॥

क्यों धर्म धीर बाजी पर से, क्या पीठ दिखाये जाते हो।
ओ हो ना कुछ शकुनी ही से, अब दुम दुबकाये जाते हो॥
दांव पर निकल कर चल देना, कायर की हीला-साजी है।
नृप वर ! मरदानी याद करो, वह भी मर्दों की बाजी है॥

रुक सकती थी फिर कहां, क्षत्रिय पन की आन।
फिर से सीधी हो गई, उतरी हुई कमान॥

बोले कुरु-पति क्या कहते हो ? यह मेरी हीला साजी है।
जीवन की अन्तिम घड़ियों तक, अब मेरी तुमसे बाजी है॥
अब ब्रह्म-मण्डली रखता हूँ, इस पर सहदेव पुकार उठे।
हा राजनीति के साथ-साथ, क्या लौकिक-धर्म विचार उठे॥
वह वस्तु गंवाओ या रक्खो, जिस पर अधिकार तुम्हारा है।
जग-देव ब्रह्म के मण्डल पर, बोलो अपना क्या चारा है॥

पर पाँसा पड़ चुका था, थे नर—पति लाचार।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्विजमण्डल परभी हुआ, कुरु-पतिका अधिकार॥
अब तो उजलत खिजलाहटमें, सब राज्य एकही साथ लगा।
वह छल का पासा पड़ते ही, बस दुर्योधन के हाथ लगा॥
अब क्या था केवल झक-झक में, देखने लगे दीवाने से।
मुँह फकथा दिलपर धक-धक थी, बकते थे मगर बिकानेसे॥

उफ! बैठा है जुवाड़ी, सारा पल्ला झाड़।
एक जुवें की चोट से, हिलने लगा पहाड़॥

सहदेव! उठो बलिवेदी पर, दो आन निभा इस भाई की।
फेर लो पाण्डु की आन—बान, या सेवा करो कसाई की॥
बह गया! नकुल! कुल को देखो, पाँसे के पल्ले पर आओ।
भट भीम उठो, प्रिय पार्थ! उठो, इसबलि-वेदीपर चढ़ जाओ॥
हैं? धन्वा-तरकश निकल गया, तो चलो तीर भी रक्खा है।
हां, शकुनी! लो पांसा पकड़ो, मेरा शरीर भी रक्खा है॥

धर्मराज भी बन गये, दुर्योधन के दास।
खिची निराशाको लिये, सिसकाती सी श्वांस॥

पृथिवी सूनी आकाश शून्य, सूनी बाजी सूना तन—मन।
उस सूनी आत्मा से पूछो, कहते हैं किसे शून्य जीवन॥
पहिले जीवन में भिक्षुक थे, पर बू थी सच्चे स्वामी की।
इस जीवन में वह भी न रही, बेड़ी पड़ गई गुलामी की॥
आगे देखा पीछे देखा, सूनी आशा के पांसों को।
सूने कानों ने सुन डाला, छलियों के शून्य दिलासों को॥
हां धर्म-वीर है वक्त यही, साबित कदमी दिखलाने का।
चौपड़ के अन्तिम पासों पर, अपनी तकदीर लड़ाने का॥

इधर-उधर तकने लगे, वे भारत—शिर मौर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब न आप अपने रहे, तब अपना क्या और ॥
यादों का पानी डाल थके, लेकिन आशा का गुल न खिला।
संसार हृदय में छान लिया, पर कोई भी अपना न मिला ॥
जब सब कुछ थे तब सब कुछ था, जब ना कुछ है तब कोई नहीं।
जब कोई थे सब कोई थे, तब कोई थे अब कोई नहीं ॥
सूने नभ में यक शून्य श्वांस, छोड़ कर धर्म बिलखाने लगे।
फन कुचले हुए नाग-पति से, लाचार पड़े लहराने लगे ॥
उस सूनी बस्ती वाले की, आंखों से आंसू बहने लगा।
तब तक उन बहरे कानों में, कोई चुपके से कहने लगा ॥
हैं धर्म वीर क्या समझ लिया, हो चुकी सभी बेबाकी है।
मान लो मान सब चला गया, पर आन वंश की बाकी है ॥
उन भूली-भूली यादों में, आगया मृतक का जीवन सा।
मुख पर छाया योद्धा-पनसा, बात में बड़ा पागल पन था ॥
बोले ओ शकुनी ! चाल चलो, पाली है राह अगाड़ी को।
अबकी बाजी पर बाजी से, रखता हूँ द्रुपद-दुलारी को ॥

पांसा उलटा पुहुमि पर, उलट गये अवनीश।
लिपट-लिपट दीवारों से, लगे पटकने शीश ॥

हा एक जुयें की चालों में, ज्ञानेन्द्र आज ज्ञानी न रहा।
जलती आत्मा को शान्त करे, वह आँखों में पानी न रहा॥
आशाओं का बाजार उठा, महँगी न रही सस्ती न रही।
जो बस्ती बस्ती जाती थी, वह बस्ती भी बस्ती न रही ॥
द्रोपदी दुष्ट के हाथ लगी, आगई चमक बदकारों पर।
पानी पड़ गया पुरानों पर, बिजली टूटी सरदारों पर ॥
झुक गये शीश रुक गये कण्ठ, लज्जा ने अश्रु निकाल दिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाण्डव पृथिवी में लोट गये, हथियार हाथ से डाल दिये ॥
गुरु द्रोण भीष्म सब सिसक उठे, मन में हाहा करते करते ।
चल दिये चीख कर विप्र-वृन्द, दुर्योधन को डरते-डरते ॥
कुछ देर धर्म बकते-झकते, घूमते रहे दीवाने से ।
फिर एक खम्भ से टकरा कर, भू-तल पर पड़े थकाने से ॥

बे होशी में बक उठे, ओ दुर्योधन ! शान्त ।
मेरे-तेरे बीच का, अब हो चुका वृतान्त ॥

जब राजा थे तब दुश्मन थे, अब बे बश हैं बेचारे हैं ।
कर कृपा-दृष्टि अब तो राजन्, सब पाण्डव दास तुम्हारे हैं ॥
उफ ! दास कौन ? मैं धर्मराज, किसका उस नीच कसाईका ।
याचना दुष्ट से करता हूँ, क्या सेवक कुँवर कन्हाई का ॥
केशव आओ माधव आओ, ले आवो चक्र-सुदर्शन को ।
बनवारी चक्र चला तो दो, दो काट क्रूर दुर्योधन को ॥
बस-नहीं नहीं रहने ही दो, यह पाप व्यर्थ में जायेगा ।
चञ्चल चक्र के चलाने में, वह कोमल कर दुख जायेगा ॥

भीमार्जुन ? किस समय को, छिपी रखी है आन ।
बेच चुके हो क्या कहीं, तरकश और कमान ॥

दौड़ो मारो दुर्योधन को, यह मेरे पीछे पड़ता है ।
मालियो अभी से फ़िक्र करो, बन-बन कर बाग उजड़ता है ॥
उफ नहीं नहीं मैं भूलगया, यह इच्छा गामी ठीक नहीं ।
दुर्योधन अपना स्वामी है, यों नमक हरामी ठीक नहीं ॥
लो चरण पकड़ कौरव-पति के, आत्मा से उसे प्रणाम करो ।
हो हाथ बांध कर अलग खड़े, जो आज्ञा दे वह काम करो ॥
तब तक दुर्योधन बोल उठा, अये धर्म सलीके पर आओ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब भूप नहीं हो सेवक हो, आज्ञा हो उसे बजा लाओ ॥
धर्मराज ने मुकुट को, झट रख दिया उतार ।
हाथ जोड़ कहने लगे, हाजिर हूँ सरकार ॥
पीसना–कूटना शुरू करूँ, या रहूँ तेल की घानी पर ।
इस जगह–चरण चाकरी करूँ, या खड़ा रहूँ दरबानीपर ॥
कुरुपति बोला यह सेवायें, सोची जायेंगी अगाड़ी को ॥
सबसे पहले मेरे आगे, ले आओ द्रुपद दुलारी को ॥
टूटे दिल ने जब सुने, यों बे दिल के बैन ।
टूट भूमि पर गिर पड़े, बन्द हो गये नैन ॥
छा गया सभा में चीत्कार, सब हा हा कार पुकार उठे ।
कोई अन्याय निहार उठे, कोई तलवार सुधार उठे ॥
पर बल था जिन बलशालीका, वे पहले ही बल खाये थे ।
सिकुड़े बैठे थे पार्थ अलग, मस्तक भट-भीम झुकाये थे ॥
लाचार कोसते पापी को, सब नीति–वान सरदार चले ।
अथवा आंसू की धारों से, लज्जा का भार उतार चले ॥
छाया था चारों तरफ, दारुण हा हा कार ।
तब तक बोला दूत से, कलयुग का अवतार ॥
जा धर्म शिविर में काल दूत, ला पकड़ बेग पांचाली को ।
देख लूँ आज इन आंखों से, गर्वीली आंखों वाली को ॥
अधिकार तुम्हें सब देता हूँ, इस दिन तू रहा गुलाम नहीं ।
इतना ही फकत इशारा है, उस जगह दया का काम नहीं ॥
बैठी थी जब द्रौपदी, भानु मती के पास ।
धर्म शिविर में उस समय, जा पहुँचा वह दास ॥
बोला-द्रोपदी ! निकल बाहर, कुरुपति ने तुझे बुलाया है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्यूत में तुझे तेरे पति ने, अपने साथ ही हराया है ॥
सुन कड़क किनारे छलक गये, कांचनी-नयन की प्याली के।
उस जोश भरी चितवन ही से, उड़ गये होश पांचाली के ॥
बोली भैया ! मैं चलती हूँ, जब नाथ चुके हैं हार मुझे।
ले चलो कायदे के अन्दर, क्या चलने में इनकार मुझे ॥
वह बोला क्या पालकी सजूँ, या रोपूं साज भेरियों का।
चल निकल कायदा और अदब, होता है कहां चेरियों का ॥
गुञ्जायश नहीं बहाने की, कायदा पूछना नाथों से।
द्रोपदी ! भला है इसमें दे, आबरू न मेरे हाथों से ॥

द्रुपद लाड़ली कांपकर, गिरी वहीं तत्काल।
भानुमती को आगया, लेकिन तनिक उबाल ॥

बोली ओ पाजी नाकारे, क्या शाहीपन दिखलाता है।
ओ दो कौड़ी के टुकड़ खोर, देवी पर आंख चढ़ाता है ॥
सच है जो नीच कमीनों को, कुछ ही आजाद बनाते हैं।
तो वे पैरों को सूंघ सूंघ, मस्तक की घात लगाते हैं ॥
जा नीच अगर गुस्ताखी की, तो सारी ऐंठ भुला दूंगी।
रग-रग का जोड़ तोड़ दूंगी, कोड़े से खाल उड़ादूंगी ॥
पांचाली को ले जाना है, तो नौकर को क्यों भेजा है।
जा कहदे खुद ही ले जायें, यह भानुमती की आज्ञा है ॥

चला दूत की जगह पर, दुःशासन इस बार।
हिला उठी सारी शिबिर, पहली ही ललकार ॥

द्रोपदी देखने आया है, दुःशासन भी आबरू तेरी।
चेरी होकर भी बाकी है, क्या अभी राजसी बू तेरी ॥
भूल जा पुरानी बातों को, बिक चुका आज राजापन है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोड़ दे हवाई छींटों को, अब दूत नहीं दुःशासन है॥
चल फौरन मेरे आगे हो, उत्तर की नहीं जरूरत है।
चूं-चिरा बिना ही कदम बढ़ा,बस यही बचत की सूरत है॥

हाथ जोड़ कर द्रोपदी, चरण पड़ी अकुलाय।
मानो बधिक विलोककर,विलपत कपिलागाय॥

देवर! देवर क्या कहते हो, क्या मुझे वहां ले जाओगे।
उस भरी सभा में लेजा कर, अपनी ही नाक कटाओगे॥
हा हा इतनी न अनीत करो, लज्जित न करो पर-दादाको।
लाला मिट्टी में दो न मिला,शान्तनु-कुलकी मर्य्यादा को॥
गर्दन मेरी कटवाना हो, पहुँचा दो किसी कसाई पर।
पर भरी सभा में ले न चलो, अहसान करो भौजाई पर॥
नरवर कपिला पर रहम करो,बल-धर अबला पर रहमकरो।
हे धर्म-वीर हे कर्म वीर, इस रजस्वला पर रहम करो॥

दुःशासन कहने लगा, मुँह में बांध लगाम।
कौरवेन्द्र के राज्य में, कहां रहम का काम॥

खूँख्वार दलों में बकरी की, सुन पड़ती है फरियाद कहां।
तू दुर्योधन की चेरी है, शान्तनु कुल की मर्य्याद कहां॥
तेरे इन त्रिया-चरित्रों से, हिलता न वीर का सीना है।
भेड़ के भला मिमयाने पर, नाहर को कहां पसीना है॥
ले चल इतनी मुहलत देदी,अब ज्यादा बाद विवाद न कर।
जो कहना हो नृप से कहना, मेरे आगे फरियाद न कर॥
वरना अब यहीं लुढ़कता सा, जग तेरा पांसा देखेगा।
मैं तुझे खींचता जाऊँगा, संसार तमाशा देखेगा॥

द्रुपद सुता ने फिर कहा, हाजिर है यह देह।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किन्तु तनिक सा और भी, मिटा चलो सन्देह ॥
धर्म ने राज्य रहते-रहते, नारी का दांव लगाया है।
या पहले खुद को हार गये, पीछे से मुझे हराया है ॥
यदि पहले मुझको हार चुके, तो चलने में इनकार नहीं।
हार कर हराया है मुझको, तो था उनको अधिकार नहीं ॥
नीतज्ञ ! धर्म मर्यादा को, सहसा तिलांजली दे न चलो।
ले चलो नर्क में पकड़ अभी, पर तात सभा में ले न चलो ॥

खल बोला चण्डालनी !, बना रही है बात।
दुर्योधन के राज्य का, नियम नहीं है ज्ञात ॥
जान ली जायगी जान बूझ, शह जोरी और फजीते से।
चल बाहर जो कुछ कहना है, कहना उस चेर चहीते से ॥
यों कह बाला के बाल पकड़, काल की तरह वह ढीठ चला।
झटके में पटक बिचारी को, घिस्सों में नीच घसीट चला ॥
हाय में सहाय लेखती सी, चीखती हुई असहाय चली।
उस क्रूर कसाई के घर में, कलपायी कपिला गाय चली ॥

आह लिखूँ किस भांति से, उस घटना का हाल।
चूक रही है लेखनी, अपनी चंचल चाल ॥
सूखा मुख रूखे-खुले केश, नयनों में लहर लजावट की।
दूबरी देह रज-दोष-मयी, अङ्गों में अटक थकावट की ॥
कंटकों कङ्कड़ों पर परवश, घिसटायी है विलपाती है।
उस करुणा मयी मूर्ति पर तो, करुणा को करुणा आती है ॥
मन देख समय की लीला को, सम्राट धर्म की नारी है।
प्यारी है कुञ्ज-बिहारी की, जग-जाहिर द्रुपद-दुलारी है ॥
जब करुणा-बयन सुनाते हैं, जब करुणा मूर्ति दिखाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस समय धीर जो धरे रहे, वह किस कठोर की छाती है ॥
गायन--तात चलती हूँ, मुझे सांस जरा लेने दे ।
फूट जायेगा, अरे ! माथ उठा लेने दे ॥
आह ! साड़ी के हुए टूटके धागे-धागे-
अङ्ग खुलते हैं जरा हाथ लगा लेने दे ॥
याद रह जायगी कुछ रोज को जमाने में ।
मौत के वक्त तो फरियाद सुना लेने दे ॥
खोगई गर्च तो पाऊँगी दुबारा न इसे-
जान लेडाल मगर, अब बचा लेने दे ॥
गलियों गलियों में चली, डकराती वह गाय ।
पर डर के मारे वहाँ, करता ? कौन सहाय ॥
रोती चीखती बिलखती थी, जनता द्वारों पर खड़ी हुई ।
वह मीन तड़फती जाती थी, काल के जाल में पड़ी हुई ॥
अन्याय कहा पर एक न था, जो अन्यायी का न्याय करे ।
थी हाय हाय पर किस बल पर, कोई भी वहां सहाय करे ॥
राज-महल के सामने, जब वह उठी पुकार ।
गान्धारी दौड़ी हुई, आई अपने द्वार ॥
किन्तु आनकी आन में, निकल गया मकार ।
गान्धारी भी रह गई, वहीं खड़ी लाचार ॥
लुढ़काती और रंभाती सी, उन आर्यों में कपिला पहुँची ।
या दाद पीर की पाने को, बलवीरों में अबला पहुँची ॥
गुरु देवों की लज्जा पहुँची, अर्जुन की बाम भुजा पहुँची ।
भीमकी प्रेम प्रतिमा पहुँची, शान्तनुकी कीर्ति-ध्वजा पहुँची ॥
धर्म की धर्म-प्रतिभा पहुँची, सीमा पहुँची क्षत्रियपन की ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीला-धर की लीला पहुँची, भावी पहुँची दुर्योधन की ॥
खिली देह साड़ी फटी, बहत रुधिर की धार।
रहे-सहे सरदार भी, हा हा उठे पुकार ॥
जल पड़े कई चल पड़े कई, बांछें खिल गईं कौरवों की।
गुरुओं की आंखें झपक गईं, गर्दन झुक गई पांडवों की ॥
विप्रों की नजरें उठ न सकीं, सिर सहर गये सरदारों के।
मुरकी मूछ की मुरक गई, मुड़ गये म्यान तलवारों के ॥
चकित चित्त तकते रहे, कुछ अबला की ओर।
तब तक मुसकाता हुआ, बोला अन्ध किशोर ॥
ओ हो क्या प्रेम-पुजारी के, यह देवी पाँचाली आई ?।
हम अन्धी आंखों वालों के, या दो आंखों वाली आई ? ॥
हे सत्य-शील की ललित लली, इस जगह सत्य संचार करो।
हे पतिव्रते ! आओ आओ, इन पतियों का उद्धार करो ॥
क्या करें आज तक धुल न सका, वह दाग व्यंगका धोते हैं।
क्यों रानीजी बिल्कुल सच है, अन्धों के अन्धे होते हैं ॥
तब तो इस दरबार में, हैं सब अन्ध-कुमार।
अन्धों के सत्संग से, हैं अन्धे सरदार ॥
जब सब अन्धे ही अन्धे हैं, तब तो यह अन्ध दिवाला है।
द्रोपदी फेंकदे साड़ी को, अब कौन देखने वाला है ॥
भीष्मादि सूझते समझी है, वह मुँह पर परदा डाले हैं।
इतने लोगों में तेरे ही, पति-देव देखने वाले हैं ॥
पतियों से स्त्रिय को परदा क्या, बेणी न झुकी कब कंधे पर।
उलझन क्या है ? फेंकदे चीर, आ बैठ हमारे जंघे पर ॥
अब तो साज-समाज पर, पड़ी और भी गाज।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाप पाप गाने लगा, वह गूंगा सा साज ॥
उस दबी हुई दावानल के, खुल-खुल कर दावे होने लगे।
जो गुप-चुप ही सिसकाते थे, वे फूट-फूट कर रोने लगे ॥
आचार्य विदुर या विप्र-वृन्द, सब अत्याचार पुकार रहे।
पर बँधे हुये थे बन्धन में, क्या करते? मन ही मार रहे ॥

चकित चित्त से द्रोपदी, सुनती थी वह बैन।
विचर रहे चहुँ ओर थे, आशा-धारी नैन ॥

दल बन्दी चारों ओर देख, बल आया तनिक विचारों पर।
कुरुपति की जानिब घूर-घूर, पहुँची निगाह सरदारों पर ॥
देखा स्वार्थ के बन्धन में, सरदार अभी मुरदार हुए।
कुछ आहों का भरतार रहे, भरतार भार के भार हुए ॥
गुरु बृन्दों में गुरुता न रही, रज उतर गई राजाओं की।
गांडीव पार्थ का लिये उड़ी, प्रतिभा भीम की भुजाओं की ॥

भक्त विदुर के कण्ठ से, उठी बोलती हाय।
राजन् अब आ चुका है, सीमा पर अन्याय ॥

राजन् यदि बेवश नारी को, ऐसी ही आज्ञा दैनी है।
तो याद रहे यह मृग-नैनी, तेरे नाश की नसैनी है ॥
विकरण बोला अनीत में तो, साथी भी काम न आयेगा।
हाथ के फूल के अन्दर ही, कांटा पैदा हो जायेगा ॥

किन्तु किया कुरु-नाथ ने, विदुर वचन का काट।
एवं विकरण को दिया, नीच कर्ण ने डाट ॥

कुरुपति बोला क्यों दुःशासन, क्या खड़ा अचम्भे में आकर
नङ्गा करदे इस नारी को, बिठला दे मेरे जंघे पर ॥
सुनते ही क्रूर कमीने ने, अबला नारी को जकड़ लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो चार बार झटका देकर, सिर की साड़ी को पकड़ लिया ॥

हुई राज दरबार में, दूनी हा हा कार।
पर न सामने बढ़ सका, एक शूर-सरदार ॥

भीम की भुजा कुछ उकसानी, रह गई मगर मुरझानी सी।
पार्थ की उठी कुछ पेशानी, लेकिन झुक गई भुलानी सी ॥
गुरुओं ने पर्दा डाल दिया, सर हुआ न कुछ सरदारों से।
धर्म एक हिलकी भर कर, सिर मार लिया दीवारों से ॥
फन-पति की फन फुङ्कारों पर, फन खाई हुई मयूर उठी।
चकचूरि चूरि में सनी हुई, फिर से दुखियारी विसूर उठी ॥
ओ धर्म ! धर्म की आन रखो, ओ गदा धीर वह शान कहां।
दौड़ो दौड़ो दादा ! चाचा, अर्जुन वह तीर कमान कहां ॥
देखो बेइज्जती नारियों की, ओ गुरु वृन्दो धिक्कार तुम्हें।
ओ बल-धारियो ! भला होता, नारी करता करतार तुम्हें ॥

अबलाओं के साथ में, यह उलटा मजबून।
सूख गया क्या हिन्द में, आर्य-वंश का खून ॥

ओ विप्रो तुम्हीं सहाय करो, मैं अबला दीन दुखारी हूँ।
आन का आज कुछ ध्यान करो, दादा मैं बहू तुम्हारी हूँ ॥
दुर्योधन ! ओ मद के अन्धे, क्या दाग इस तरह धोता है।
मैं बीच सभा में कहती हूँ, अन्धे का अन्धा होता है ॥
पापी पायेगा चैन नहीं, अबला का हृदय दुखाने से।
खल जीवन भर कलपायेगा, इन दुखियों को कलपाने से ॥
मैं तुझे चुनौती देती हूँ, दिखला जो शक्ति तिहारी है।
बल-धारी सारी-धारी की, सारी पर बाजी सारी है ॥

दीख पड़ा दुखियारि को, अन्धकार चहुँ ओर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भर पुकार कहने लगी, आओ नन्द-किशोर ॥
यदि पहुँचे उस कान तक, दुखिया की झनकार।
तो दुखिया की खबर लो, ओ ब्रजके रखवार ॥
पाकर गजेन्द्र का कमल पत्र, जो नंगे पांव सिधारे हो।
रुक्मिणी प्रिया की पाती पर, जो सरबस छोड़ पधारे हो ॥
नरसिंह-रूप प्रकटाये हो, जो प्रह्लाद की पुकारों पर।
तो बनवारी! आओ आओ, अबला की हा हा कारों पर ॥
जो नाथ तुम्हारी गाथाऐं, सचमुच ही विपदा-हारी हैं।
तो द्रवो वेग हे असुरारी!, दुखियारी द्रुपद दुलारी है ॥
दुखिया के लिये दाद देना, मधु-सूदन बान तुम्हारी है।
जब जिसकी थी तब किसकी थी, अब आज हमारी बारी है ॥
सिर की सारी सरकी जो कहीं, तो आन गई प्रभु के सिरकी।
सरकार! तुम्हारे ही सर है, अब लाज हमारी बेसर की ॥

❀ गायन ❀

आये ना मुरारी प्रभु सुरति बिसारी,
हे-हे गिरधारी! आओ हा! हा! कर हारी मैं।
सोये असुरारी कित, खोये दुःखहारी बान,
खोट कछु आई कैधौं खग की सवारी में ॥
कमठ उदधि में औ खंभ में नरसिंह बने,
अजहू बनि आओ त्यों कूल कोटि धारी में।
आओ बनवारी! बेग वारी जाऊँ बार बार,
द्रुपद-दुलारी हेतु सारी की किनारी में ॥
हा हा कर हारी थकी, विवस विचारी बाम।
किन्तु किसी के सामने, प्रकट न आये श्याम ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आये न सामने श्याम मगर, महिमा ही और बदलने लगी।
तन पर से द्रुपद-दुलारी के, सारी की चरखी चलने लगी॥
तन में सारी कर में सारी, ऊपर सारी नीचे सारी।
महि में सारी नभ में सारी, आगे सारी पीछे सारी॥
सारी नारी में सारी है, या सारी ही की नारी है।
अथवा सारी समाज ही में, सारी सारी ही सारी है॥
बेंगनी कपासी नारङ्गी, ऊदी पचरङ्गी प्याजी है।
मानो जग के बाजीगर ने, फैलादी आज बजाजी है॥

सच है कोई क्या करे, जो सहाय रघुवीर।
दससहस्र गज-बल घटा, घटा न दसगज चीर॥

खींचते खींचते नीच थका, सर्वाङ्ग पसीना छूट गया।
सारी का तार न टूट सका, बलधारी का बल टूट गया॥
छँट गई आप ही छुद्र-शक्ति, सतवन्ती की प्रतिभा न छटी।
हट गया वीर अबला न हटी, घट गई सभा सारी न घटी॥

पृथ्वी से आकाश से, गूँज उठी जयकार।
चक्कर खाकर गिर पड़ा, दुःशासन बलधार॥

तार-तार के साथ में, जमा राग का तार।
जय गिरधर-नटवर हरे, जय प्रभु नन्द कुमार॥
चकित चौंक चहुँ ओर को, ताक रहे सरदार।
पर न तार में आसका, उस नारी का तार॥
वहाँ दौड़ कर विदुर ने, कहा महल में हाल।
गान्धारी के साथ में, आये अन्ध नृपाल॥

डाटकर कहा ओ कुल कुठार, क्यों कुल की मौत बुलाता है।
साड़ी बनकर बनवारी का, अब चक्र सुदर्शन आता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओ कुल कलङ्क तू करता है, बट्टा कुल भर को आता है।
अपनी भी जड़ें काटता है, मेरी भी नाक कटाता है॥
मदहोश! होशकी आंख खोल, यह जोश नहीं ठहरायेगा।
यह अबलाओं का रुदन तुझे, नाश की ओर ले जायेगा॥
लाड़ली द्रोपदी खेद न कर, शान्तनु-कुल को पाप से बचा।
दे भीख प्राण की बेटे को, इस बूढ़े को शाप से बचा॥

धर्म-कुँवर घर को चलो, गिनो न खल का पाप।
जो चाहो मुझसे कहो, करो न अब सन्ताप॥
पति ने अपनी भूल से, दी पत्नी तक हार।
पर पत्नी ने कर दिया, पति का भी उद्धार॥
यह सतीत्व की शक्ति है, हे कृष्ण की सहाय।
जन विनीत पर सर्वदा, कृपा करो यदुराय॥

❀ शुभमस्तु ❀

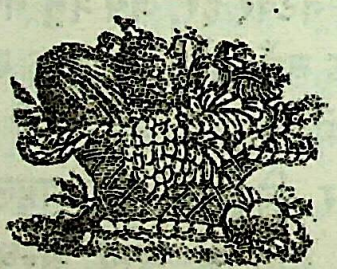

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ महाभारत ॥

॥ वन-पर्व ॥

॥ प्रार्थना ॥

जगा दो इस तरह स्वामी, कि सोना-जागना-छूटे।
करो यों माँग को पूरा, कि घर-घर माँगना छूटे॥
अगर वैराग देना हो, तो अपना राग भी देना।
हमारे त्याग में जिसमे, तुम्हारा त्याग ना छूटे॥
बुलाते हो तो आता हूँ, बुला कर पर वहाँ रखना।
जहाँ से इस जहाँ का अब, भटकना—भागना छूटे॥
कन्हैया! लो लगा गोविन्द, को उस लाग में अपनी।
लगें जिसकी लगन में तो, जगत् का लागना छूटे॥

॥ पाण्डवों का बनवास ॥

पाण्डव-गण करने लगे, विदुर भवन में बास।
दुर्योधन कहने लगा, भर कर वहाँ उसास॥
बतलाओ भैया कर्ण वीर, अब क्या तदवीर लड़ाते हो॥
वह राह यहीं से बन्द हुई, आगे क्या राय लगाते हो?॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यशभीनमिला रसभीनमिला,वनभीनमिला गृहभी न मिला।
मिलते २ अन मिले रहे, यह भी न मिला वह भी न मिला॥
कर्ण ने कहा क्या करें बन्धु, किस्मत ही नहीं निभाती है।
हम लाख उपाय सोचते हैं, पर प्रभु से पेश न जाती है॥
देखो तो किस महिमा-द्वारा, बन-बनकर बात बिगाड़ी है।
ना कुछ साड़ी की धारी पर, नारी ने किया अनाड़ी है॥

सौबल बोला—है कहाँ, महाराज का ध्यान।
उस ना कुछ सी बात को, प्रभु लीला ली मान॥

मान लो कृष्ण लीला ही थी, तो पहले दिखलाई होती।
बाजी क्यों धर्म हार जाते, यदि चाल समझ पाई होती॥
साड़ी-धारी का बढ़ जाना, यह तो चेटकियों का फन है।
इसको लीला-हीला न कहो, उसका ही बहुरुपिया पन है॥
लीला ही है तो आज सही, हम और समस्या धरते हैं।
देखें अपनी लीला पर वे, लीलाधारी क्या करते हैं॥

यों कहकर सौबल उठा, गया विदुर के धाम।
धर्मराज के चरण पड़, करने लगा प्रणाम॥

धर्म ने कहा आओ सौबल, बोलो कुरु-पति क्या करते हैं।
भैया हम विपदा के मारे फिर, वही रात दिन भरते हैं॥
इसकी कोई परवाह नहीं, भूप से बने भिखमंगे हैं।
सपने में जेवर पाये थे, फिर से नंगे के नंगे हैं॥
राजसी भुला दूं पर उनकी, चालें न भुलाई जाती हैं।
भैया दुनियां के लोगों से, आंखें न मिलाई जाती हैं॥
यह बिना ताज की शाही है, या बेसर के सरदार कहो।
हथियार लिये बे हाथ कहो, मुरदारों से मुरदार कहो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौबल बोला धर्म-पति, करो न टूटी बात।
लायेगा भगवान फिर, सुख सुहाग की रात॥

जब तक हथियार हाथमें हैं, जब तक सच्चे सरदार हो तुम।
मैं शपथ सहित कह सकता हूँ, मुरदार नहीं दमदार हो तुम॥
कुरु-पतिके यहां काम क्या है, बिन जल की धारा बहती है।
हैं पता तुम्हें उस जगह सदा, चण्डाल चौकड़ी रहती है॥
जो हो मैं तो इन दिनों देव, पुतला हूँ इन्हीं विचारों का।
क्यों कर बदला ले लिया जाय, उस खलके अत्याचारों का॥
धर्म ने कहा सौबल भाई, दे रहे दोष का भार किसे।
करके गुलाम आजाद किया, समझे हो अत्याचार उसे॥
दुश्मन पर दया दिखानी ही, गुण है सच्चे क्षत्रियपन का।
आजीवन भूल न सकता हूँ, इतना अहसान सुयोधन का॥
सौबल बोले भोले नृपाल, बलिहारी बुद्धि तुम्हारी की।
क्या इतनी जल्दी भूल गये, विपदा उस द्रुपद-दुलारी की॥
धन जाता फिर से मिल जाता, मिल जाते लाख सहाय यहां।
लेकिन कलङ्क के धोने को, बतलाओ रहा उपाय कहां॥
धर्म ने कहा यह भी सच है, धन-दौलत आती जाती है।
जन-जीवन आता जाता है, पर बात न वापिस आती है॥
मेरी गति-मति तो नष्ट हुई, भिखमंगा हूँ इज्जत क्या है।
अब तुम्हीं बताओ नीति-निपुण, दूसरी यहाँ सूरत क्या है॥

सौबल बोला यदि मुझे, दो अपना अधिकार।
तो लौटा कर आज ही, दिखला दूँ दरबार॥

धर्म ने कहा अधिकारों को, अब क्या जागीर हमारी है।
खाता हूँ अन्न दूसरे का, कपड़ों तक की लाचारी है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौबल बोला-सब देकर भी, मर्द की बात रह जाती है।
हर चीज मोल मिल सकती है, पर बात अमोल कहाती है॥

तीस भार सुवरण मिला, हरिश्चन्द्र का मोल।
लेकिन उनकी बात ही, तुली स्वर्ग की तोल॥

एक ही बार के पांसे में, बातों की आज मार होगी।
बात की बात में महाराज, बातों से जीत हार होगी॥
बाजी न हाथ में आती है, सीधे--सीधे से ढांचे से।
हाँ यहाँ जबाब तमाचे का, मिलता है फकत तमाचे से॥
मेरे कहने से आज अगर, वैसी फिर वृत्ति तुम्हारी हो।
तो मैं दावे से कहता हूँ, वह पापी आज भिखारी हो॥

था सबकुछ नर-राज को, कपटनीति का ध्यान।
पर भावी के सामने, रहा न कोई ज्ञान॥
जा पहुँचे दरबार में, बिना ताज नर-नाथ।
बोले-पांसा फेंकिये, आज बात के साथ॥

कुरुपति बोला बात ही सही, पर हो कुछ बात ठिकाने से।
जो पहली ही सी बातें हों, तो फल क्या बात बढ़ाने से॥
धर्म ने कहा यह बात नहीं, धर्म पर विश्व विश्वास करे।
जो बाजी हारे वह बन में, बारह वर्ष तक निवास करे॥
दुर्योधन-बोला यही नहीं, और भी दण्ड भरना होगा।
तेरहवीं वर्ष कहीं जाकर, फिर गुप्त-वास करना होगा॥
यदि कहीं पता लग जायेगा, तो वही दण्ड पाना होगा।
तेरह वर्ष के लिये बन में, फिर से वापिस जाना होगा॥

धर्मराज ने कर लिया, वह कहना स्वीकार।
शकुनीको फिर से दिया, कुरु-पतिने अधिकार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ धर्म की ओर से, खल शकुनी तैयार।
समाचार पाकर वहां, आये सब सरदार॥
गिर पड़े चरण पर पार्थ-भीम, फिर हा हा-कार पुकार उठे॥
उस समय नीति समझाने को, गिन-गिन कर सरदार उठे॥
दे चुके लाज खो चुके राज्य, अब क्या पल्ले दिखलाता है।
खा चुके ठोकरां पर ठोकर, फिर भी न समझ में आता है॥
चिउटी भी ठोकर खाकर के, फिर वहां न मुँह दिखलाती है।
मति मासे की भी तो राजन्, यों बुद्धि न मारी जाती है॥
हे नीति-रीति के जानकर, वह ज्ञान कहां बिसराये हो।
हे वंश-विभूषण क्या अब से, वंश भी डुबाने आये हो?॥
जो तुम्हें हलाल करचुका है, चौपड़ यह वही अनी तो है।
ओ-ज्ञान-धाम आंखें खोलो, यह वही दुष्ट शकुनी तो है॥

उत्तर में नर—नाथ ने, आंसू दिये बहाय।
भैया मरने के समय, चलता कहां उपाय॥
मैं पहले ही से जान रहा, यह खल मण्डल की माया है।
बातों में मुझे भुला कर के, पापी सौबल ले आया है॥
लेकिन मैंने भी सोचा है, ऐसी गति से तो दास भला।
रहता हूँ शरण पराई में, इस रहने से बन-बास भला॥
दूसरे देखना है इतना, प्रभु कब तक साथ न देते हैं?।
जो धर्म, सत्य के साथी हैं, वे कब तक हाथ न देते हैं?॥
जिन आशाओं पर जीवन था, वे सब आशायें छूट चुकीं।
भैया अब अधिक न समझाओ, धर्म के हिये की फूट चुकी॥

थके रोकते-रोकते, गुरु-जन सब सरदार।
पर सिर पर हो चुका था, भावी भूत सवार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक बार पर खतम था, हार जीत का काम ।
पांसा पड़ते ही हुआ, वह फैसला तमाम ॥
ताली पीटदी कौरवों ने, खल-मण्डल में उपहास हुआ ।
बाजी पाई दुर्योधन ने, पाण्डव-गण को वन-वास हुआ ॥
शकुनी बोला देखलो धर्म, या फिर सन्देह मिटा डालो ।
लो लगा और कुछ या अपना, बिस्तर बोरियां उठा डालो॥
उठ गया खेल सरदार उठे, चौपड़ वाला बाजार उठा ।
चुप-चाप धर्म अवतार उठे, उस ओर शल्य किल्कार उठा ॥
चल दो सीधे ही धर्म राज, अब फल का शीश झुकाने से ।
दांत ही टूट कर रहते हैं, लोहे के चने चबाने से ॥

धर्म अभी तक शान्त थे, अब जल बैठी ज्वाल ।
आया स्थिर-सिन्धु में, यक बारगी उबाल ॥

उठते—उठते उठ पड़े, प्रण—धारी के हाथ ।
बोले-ठहरो झुकेंगे, अब माथों पर माथ ॥
हो चुकने दो मियाद पूरी, तेरह बरषों का साधन है ।
पापियो कान देकर सुनलो, बस वही तुम्हारा जीवन है ॥
चौपड़ संग्राम—भूमि होगी, पांसे होंगे हथियारों के ।
नदी की तरह गर्द होंगे, कट-कट कर सर सरदारों के ॥
नादान शल्य ! क्या समझा है ?, पृथ्वी को छोड़े जाते हैं ।
लोहे के चने कौरवी हैं, पाण्डवी मोम के पुतले हैं ? ॥
यह लोहा है तो याद रहे, अब बज्र पाण्डवी दल होगा ।
उस हल-चल वाली चकी में, चोकर सब भू-मण्डल होगा ॥

एक-एक से बढ़ेंगे, बाजी सब सरदार ।
पर उस रण में करूंगा, मैं तेरा संहार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तू मेरी मां का भाई है, मेरा मामा कहलाता है।
मेरी ही हितू--सगा बन कर, मेरी ही हँसी उड़ाता है॥
बाजी मेरी कुरु-पति की थी, वह जीत उठे मैं हार उठा।
पर पामर तू किस नाते से, खिल्लियां मार किलकार उठा॥
बस इस अनीत का बदला ही, उस महा समर में पायेगा।
कोई बल-वीर मरे न मरे, पर तू मारा ही जायेगा॥

अर्जुन का हो रहा था, कम्पित उधर शरीर।
धर्म-राज के बाद में, बोल उठे बल-वीर॥

ओ भीष्म द्रोण गुरु नीच कर्ण, तुम दुर्योधन के चेरे हो।
कण्ठी माला में छिपे हुए, या बगुला--भगत लुटेरे हो॥
अन्याय-न्याय जानते हुए, साजिश तुमने करवाई है।
स्वार्थ-वश दुष्ट की बातों पर, हां में हां सदा मिलाई है॥
दुखियों का लोहू बहा किया, पर दिल पर आई नमी नहीं।
हम आज प्रतिज्ञा करते हैं, अब तुम्हीं नहीं या हमीं नहीं॥
तुम तीनों का यदि गिन२कर, कर डालूं काम तमाम नहीं।
तो भरी सभा में कहता हूँ, यह अर्जुन मेरा नाम नहीं।
दौड़ी आई पांचाली भी, बेड़ियां सभा में खोल उठी।
मानों नारी की वाणी में, भारत की भावी बोल उठी॥
ओ दुष्ट दुःशासन! सावधान, मेरी भी अटल प्रतिज्ञा है।
दुखिया भूल नहीं सकती, साड़ी की जटिल समस्या है॥
जिस दिन बाहुएं उखड़वा कर, तेरे रक्त से नहा लूँगी।
मैं भरी सभा में कहती हूँ, उस दिन यह केश सँभालूँगी॥
भीम ने कहा और भी सुनो, मैं यह प्रण पूर्ण कराऊँगा।
खींच कर भुजायें नीच कर्ण, देती के केश बँधाऊँगा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेता था जिस जाँघ पर, रख अबला की लाज।
तोड़ूंगा इस जांघ को, सुन ले कौरव-राज॥
जोश में नकुल भी बोल उठे, कर्ण न कुल में छोड़ूँगा।
सहदेव उबल ललकार पड़े, शकुनी का रक्त निचोड़ूँगा॥

मुसका कर कुरु-नाथ ने, कहा व्यङ्ग के साथ।
प्रथम बचन पूरा करो, प्रण धारी नर राज॥
तेरह बर्षों की मुद्दत में, क्या जाने क्या दिखलायेगा।
आगे का काम करो आगे, जो होगा देखा जायेगा॥
बेकार अभी क्यों खोते हो, रक्खो सँभाल इन गोलों को।
मरहम लौट कर लगा देंगे, फोड़ो मत अभी फफोलों को॥

महाराज? रख दीजिये, यह पोशाक उतार।
वन वासी के वास्ते, खिलअत है तैयार॥
बैसा बाना भी ग्रहण करो, जो बान निभाने जाते हो।
बन बालो अपने साथ-साथ, क्यों पोशाक को लजाते हो॥
मन मार रहे थे, भीम अभी, अब मार उठे ललकार वहीं।
ओ निर्दई आज्ञा देने का, तुझको कोई अधिकार नहीं॥
भैया! भैया आज्ञा तो दो, पापी बढ़ता ही आता है।
उफ उबल-उबल कर वीरों का, ये खून सूखता जाता है॥

धर्मराज कहने लगे, ये उबाल बेकार।
अपराधी पा नृपति को, है सारा अधिकार॥
यों कह कर रखदी वहीं, वो पोशाक उतार।
योगी बन कर चल दिये, पांचों पाँडु कुमार॥
ये पांच किनारे लिये हुए, मानो करुणाकी नदी चली।
रण धीर पांच सरदारों में, या रणचण्डी द्रोपदी चली॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस प्रजा-वत्स के चलते ही, घर छोड़ प्रजा भी शान्त हुई।
उन धर्म नाथ के साथ-साथ, मानो सब सृष्टि अनाथ हुई॥
धर्म ने तनिक ऊपर चढ़ कर, उन सबको धीरज बँधवाया।
अपनी ही शपथ दिलाकर के, वापिस आने को समझाया॥
मित्रो इतने अवगुण पर भी, यह नीच प्रेम अधिकारी है।
इस के मानी यह होते हैं, केवल शीलता तुम्हारी है॥
जाने दो भावी के दिन हैं, यह भी न सदा ठहरायेंगे।
जो जगह हृदय में रक्खोगे, तो दास यहां फिर आयेंगे॥
अपने वश भर तन, मन, धन से, राजा से सदा सुलह कीजै।
यदि इस पर भी अन्याय रहै, तो खुल कर सत्याग्रह कीजै॥

खड़े रहे सरदार सब, पड़ी रही तलवार।
सत्याग्रह के सामने, काम न दे हथियार॥
यों कह कर आगे बढ़े, वे दुखिया बल-धाम।
देखा आगे बन्द हैं, गढ़ के द्वार तमाम॥
लड़ने को तैयार थे, द्वार-द्वार सरदार।
कहा कर्ण ने बिहँस कर, कहो धर्म अवतार॥

धर्म ने कहा हो राह में, कर्ण ने कहा अधिकार नहीं।
कुरु-पति की आज्ञा मिले बिना, खुल सकता कोई द्वार नहीं॥
या तो उनकी आज्ञा लाओ, या बढ़ आओ संग्राम करो।
या जब तक दरवाजे न खुलें, तब तलक यहीं आराम करो॥
या फिर नारी की साड़ी को, लो ओढ़ और घिघयाने लगो।
मरदाने हो तो युद्ध करो, कायर होतो बिल-पाने लगो॥

भला भीम को थी कहां, कुछ सहने की शान।
वहीं खौलते खून में, आया एक उफान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोले भैया बस आज्ञा दो, रखदो अब शांति किनारे पर।
यह कोट साथ ही लिये चलूँ, उँगली के एक इशारे पर॥
बन जायेंगे तब जायेंगे, बन--बन का इन्हें किये जायें।
बन से पहले या बन जायें, या जीवन यहीं दिये जांये॥

धर्मराज ने फिर कहा, वीर वृकोदर लाल।
भूल गये हो फिर यहां, राज-नीति की चाल॥

यह अपने साधन या व्रत में, पहली धर्म की परीक्षा है।
इस लिये आज को शान्त रहो, भैया यह मेरी इच्छा है॥
क्या मांग-मांग का स्वाँग रचें, क्या मांगें नीच व्यभिचारी से।
मांग ही अगर आवश्यक है, तो मांगो कुञ्ज बिहारी से॥

ध्यान बांध सबने कहा, जै प्रभु लीला धाम।
वहीं घटोत्कच ने किया, आकर उन्हें प्रणाम॥

बोला प्रभु किसी प्रेरणा से, इस जगह मुझे पहुँचाया है।
कानों में कोई कहता था, धर्म ने तुझे बुलवाया है॥
धर्म ने कहा प्रेरणा चक्र, लीला--धाम ने चलाया है।
अन्तर पट का संकट बेटा, अन्तर पति ने बतलाया है॥
भटवर! वास्तव में संकट है, हम दुखियों का उद्धार करो।
इस अगम कोटसे किसी तरह, यह छहों वीर उसपार करो॥

वीर घटोत्कच ने उन्हें, कांधे लिया चढ़ाय।
धर्मराज ने विदुर से, कहे वचन समझाय॥

चाचा जी किस मुँह को लेकर, मुँह पर हर बार सफाई दूँ।
खुद ही अन्याय कर रहा हूँ, तो न्याय की दुहाई दूँ?॥
क्या कहूँ सहारा देने को, जब आप गढ़े में डाला है।
डसने को क्या फरियाद करूँ, खुद बैर नाग से पाला है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं तो वह करम कर रहा हूँ, नर्क भी नाम से हारा है।
पर इस पर भी कृपा बनाए हो, यह सरलस्वभाव तुम्हारा है॥
इन अधरम के कठ पुतलों का, केवल आधार तुम्हीं पर है।
हम पाप भार ले निकल चले, भैया का भार तुम्हीं पर है॥

विदुर-राज कहने लगे, बेटा करो न खेद।
भली भांति से ज्ञात है, हमें तुम्हारा भेद॥

हम भले प्रकार समझते हैं, जैसे कुछ बाजी हारे हो।
जाओ प्यारे वह काम करो, जिसके कारण अवतारे हो॥
अपना कर्त्तव्य जानकर भी, मैं साथ न तेरे जाता हूँ।
लज्जा है तो केवल इतनी, इस पर भी चचा कहाता हूँ॥
चाचा-सहाय ही वश की है, सो सुनो महा प्रभु कुशल करे।
जाओ भारत भूषण! जाओ, जगदीश तुम्हारी सफल करे॥
हे त्याग मूर्तियो गमन करो, इन रोगों की ममता न करो।
मैं सब प्रकार से हाजिर हूँ, कुन्ती की कुछ चिंता न करो॥

उतरे पांडव द्रोपदी, कम्यक बन के तीर।
रहताथा उस विपिन में, खल किरमिक बलवीर॥

देखने मात्र की देरी थी, देरी न लगी पर आने में।
आते ही बोला अरे भीम, मैं फिरता रहा जमाने में॥
क्योंरे क्या तूने ही सचमुच, बलधर हिडम्ब को मारा है।
नादान तुझे यह पता नहीं, हम सबका भाई-चारा है॥
भीम ने कहा हां मैंने ही, पापी हिडम्ब को मारा है।
उस नाते से तुम साले हो, यह भट भानजा तुम्हारा है॥
इसलिये वीर दाना होकर, मत काम करो नादानों का।
अपना कर्तव्य जानते हो, तो मान करो महमानों का॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किरिमक ने हँस करकहा, करता हूँ सरकार।
भेजा है भगवान ने, छः जीव का अहार॥
यों कह कर बलवीर ने, खींचा वृक्ष उखाड़।
बढ़ा यहाँ से भीम भी, देता हुआ दहाड़॥
किन्तु आन की आन में, टूट गई वह आन।
एक हाथ में नीच के, हुये पखेरू प्रान॥
वन देकर भी था नहीं, कौरव पति को चैन।
दुर्वासा से एक दिन, बोला पापी बैन॥
रिषि राज! आप से पुरुषों का, जन कृपापात्र कहलाता है।
अफसोस दर्द दिलकी लेकिन, कोई न दवा बतलाता है॥
पापी पाण्डव पीछे पड़ कर, नित नये प्रपंच रचाते हैं।
उन के षड़यन्त्रों से कौरव, सुख नींद न सोने पाते हैं॥
उनकी विपदा पर गम खाकर, मैंने जो राज दिलाया है।
मिल-जुल कर उसे ज्वारियों ने, फिर मटिया मेट मिटाया है॥
अब फिर जंगलको निकल गये, कुछ स्वांग बना कर आयेंगे।
ना जाने किससे मिल-जुलकर, अब क्या तूफान उठायेंगे॥
आप के दरशनों का स्वामी, अच्छा था पौधा फल जाता।
सेवक बे खटके हो जाते, वह कांटा अगर निकलजाता॥
दुर्वासा हैं विदित ही, जग में क्रोध निधान।
कपट-वचन सुन नीचके, पलट गया झटध्यान॥
बोले—ओहो इतनी चालें, भू—तल के धर्म धुरन्धर में।
हैं! हैं! यह छिपी हुई ज्वाला, उत्तर ध्रुव के हिम-सागर में॥
ठहरो उस काली हंडी की, आज ही कलई धुल जायेगी।
तपसी के एक तमाचे में, ढोल की पोल खुल जायेगी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं अभी वहीं पर जाता हूँ, सारी असलियत निकालूँगा।
या ठीक राह पर लाऊँगा, या भस्म वहीं कर डालूँगा॥

यों कह कर ऋषि राज ने, उसे बँधाया धीर।
साठ सहस ऋषिजन लिये, गये धर्म के तीर॥
हुई न प्रेम प्रणाम कुछ, सुना न पूछा हाल।
सबसे पहले था वहाँ, तो अन्न का सवाल॥

राजन् ये साठ सहस ऋषि—जन, तेरे द्वारे पर आये हैं।
पानी न पेट में पहुँचा है, दाने न कहीं पर पाये हैं।
उत्तर हो तो बस इतना हो, हाँ पद पखार बैठो बाबा।
या सीधा एक जवाब मिले, दूसरा द्वार देखो बाबा॥
इसके पहले कुछ ब्राह्मण भी, धर्म के यहाँ पर आये थे।
वे सब वास्तव में भूखे थे, एवं भाग्य के सताये थे॥
पर बेचारे करते तो क्या, जोड़ ही नहीं तो छोड़ें क्या।
वह मसल याद आजाती है, जब नंगे खड़े निचोड़ें क्या॥

द्रुपद-सुता ने उस समय, धरा सूर्य का ध्यान।
किया सूर्य्य भगवान ने, भोजन पात्र प्रदान॥

वह पात्र सुबह से सन्ध्या तक, अन्न से भरा दिखलाता है।
लाखों जन भोजन पा जायें, पर खत्म न होने पाता है॥
सन्ध्या को द्यालू के पीछे, जब पात्र धो दिया जाता था।
तो फिर प्रभात तक बरतनमें, वह असर नहीं दिखलाता था॥

धर्मराज की थी फकत, उसी पात्र तक आश।
दौड़े पहुँचे शीघ्र ही, द्रुपद-सुता के पास॥

बोले पांचाली पात्र उठा, ऋषि—पति दुरवासा आये हैं।
वे साठ सहस ऋषियों समेत, बेहद भूख से सताये हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिंच पड़ी आह पांचाली की, बोली सर्वस्व खो चुका हूँ।
हे प्राणनाथ कुछ ही पहले, वह भोजन पात्र धो चुकी हूँ॥
चक्कर खाकर गिर पड़े धर्म, उस वाणी को सुनते सुनते।
हो गये आप ही होश बिदा, सारा उपाय गुनते गुनते॥
राज्य भी गया लाज भी गई, ज्यों त्यों कर धर्म बचाया है।
पर जान पड़ा अब उसका भी; स्वाहा होने पर आया है॥
ओविश्व-भरण मोहन आओ, ओ यशुदा-नन्दनखबरलीजै।
ओअशरण-शरण खबर लीजै, ओ सङ्कटहरण खबरलीजै॥

❀ गायन ❀

हम तेरे नाम का आधार लिये बैठे हैं।
द्वारका–नाथ तेरा द्वार लिये बैठे हैं॥
माल–दौलत है कहां अन्न का दान कैसा?।
एक विश्वास का भण्डार लिये बैठे हैं॥
कौन पहुँचेगा वहां आह से जल्दी मोहन!।
एक बे–तार का यह तार लिये बैठे हैं॥
विवश विनीत के पीछे हजार आशाऐं।
कुटी की कांख में संसार लिये बैठे हैं॥
उसी समय प्रकटे वहां, माया–धर गोपाल।
वही सुरीली बांसुरी, वही माधुरी चाल॥

दुखियों पर ढलने वाले भी, उलटे ढलाब में ढलते हैं।
बोले कुछ खाने को लादे, पांचाली प्राण निकलते हैं॥
पांचाली बोली बहुरूपिये, क्या तुम्हें ठठोल सुहाया है।
घावों पर नमक छिड़कने को, क्या मैंने तुम्हें बुलाया है॥
है समय मुझे अजमाने का, दुनियां–वाले हाँ अजमाओ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे साठ सहस ऋषि बैठे हैं, तुम भी गोपाल बैठ जाओ ॥
हरि बोले बाई हँसी न कर, जो कुछ हो वह मुझको लादे।
अच्छा २ कुछ भी न सही, सूर्य्य पात्र ही दिखलादे ॥

पांचाली ने पात्र वह, दिया सामने डाल।
लगे देखने ध्यान से, लीला मय गोपाल ॥
अन्न-रूप में सिद्धियां, प्रकटाईं ततकाल।
क्षण ही भर में पात्र वह, लेने लगा उबाल ॥

अन्न का अंश कुछ बरतन के, होंठ से न धुलने पाया है।
बस उसी अंश की महिमा को, महिमा-धर ने प्रकटाया है ॥
बोले द्रोपदी बे समय की, यह हँसी न मुझे सुहाती है।
बरतन जो उबला जाता है, खाली खाली चिल्लाती है ॥

यों कह कर नट राज भी, लगे मारने हाथ।
ऋषियों का भोजन हुआ, समारोह के साथ ॥
एक रोज सहदेव भट, गये सरोवर तीर।
निकल ग्राह ने नीर से, कहा कौन मत धीर ॥

जो कोई मेरे प्रश्नों का, उत्तर यथार्थ दे जायेगा।
बस वही धीर इस सरवर के, तट से पानी ले जायेगा ॥
सहदेव विचारे सीधे थे, उसका कुछ उत्तर दे न सके।
ग्राह ने उन्हें झट निगल लिया, बाहर श्वांस भी ले न सके ॥

नकुल भीम भट पार्थ का, हुआ यही परिणाम।
गये अन्त में तीर पर, धर्म राज गुण-धाम ॥
ग्राह ने कहा ओ घट वाले, पहले घट के पट खोले जा।
इस जग में कौन जी रहा है, दो दो बोल इसी पर बोले जा॥
धर्म ने कहा सत्य सौम्य, सेवा में समय बिताता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो परम भक्त है प्रभु का वह, मर कर भी अमर कहाता है ॥
ग्राह ने इस पर खुश होकर, छोड़ा सहदेव दुलारे को ।
दूसरी बार फिर समझाया, भ्राताओं के हत्यारे को ॥
जिसके जीवन का अंश-अंश, गुरु-जन सेवा में बीता है ।
वह धर्मवान निश्चल सज्जन, मरकर भी अब तक जीता है॥

अब से छोड़ा नकुल को, फिर से किया सवाल ।
कहा धर्म ने हैं अमर, वे माई के लाल ॥

जो वेद विधान जानते हैं, इन्द्रिय-जित हैं अधिकारी हैं ।
विश्व को बन्धु वत् समझे हैं, उपकारी हैं हितकारी हैं ॥
फिर पार्थ वीर की मुक्ति हुई, तब कहा धर्म ने ओ पामर ।
जीते हैं योगी-ज्ञानी ही, मर चुके नीच तुझसे निश्चर ॥

यह सुनते ही भीम को, दिया ग्राह ने छोड़ ।
धर्मराज के चरण पर, आन पड़ा मुँह मोड़ ॥
रज पाते ही धर्म की, पाया तत्त्व—शरीर ।
हाथ जोड़ उसने कहा, अहो आत्म-गम्भीर ॥

यह सेवक कभी यक्ष-पति था, स्वामी था एक रिसाले का ।
दैवात् होगया जङ्गल में, देहान्त पालकी वाले का ॥
मेरे नौकर जङ्गल में से, साधू को कहीं पकड़ लाये ।
साधू बेचारे बिना कहे, पालकी धरे घर तक आये ॥
मैं तकियों पर पड़ के सोया, पाहरू द्वार पर खड़े रहे ।
वे शान्ति मूर्ति चुप चाप वहीं, कोने में भूके पड़े रहे ॥

प्रथम पहर पर जाग कर, रह न सका मैं मौन ।
पूंछा मैंने इस समय, जाग रहा है कौन ॥

साधू बोला जो है अशान्त, भूख से विकल हो रहा है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल वह पुरुष जागता है, बाकी संसार सो रहा है ॥
दूसरे पहर वह बोला, जो द्वन्द-विरक्त हो रहा है।
वह योगी फक्त जागता है, बाकी संसार सो रहा है ॥
तीसरे पहर पर कहा जहां, निशि का जागरण हो रहा है।
वे विरही ज्ञानी जाग रहे, बाकी संसार सो रहा है ॥

मैंने चौथे पहर पर, फिर से किया सवाल।
शान्ति-मूर्ति को आगया, तब क्रोध का उबाल॥

बोले—अन्धे जिसके द्वारे, भूखा बे-चैन हो रहा है।
अब सारा जगत जागता है, केवल वह मूर्ख सो रहा है॥
रे स्वारथी बेहद चिन्ता थी, अपनी पालकी उठाने की।
पर घर आकर सुधि भी न हुई, भूखे को नीर पिलाने की॥
जा पामर-आह रूप धर कर, फल भोग तृषितकी आहों का।
हो जाय भङ्ग सारा गौरव, इस जीवन के उत्साहों का॥

अबतो मैं मतिमन्द भी, पड़ा चरण अकुलाय।
करुणाकर कहने लगे, करुणा कर मुनिराय॥

जा भूप शाप-वश होगा ही, आह की भांति आकार तेरा।
कुछ दिन में धर्म राज द्वारा, हो जायेगा उद्धार तेरा॥
वह समय आज लीलाधर ने, इस भांति नाथ दिखलाया है।
इस चरणों की रज के द्वारा, अपना शरीर फिर पाया है॥

चला यज्ञ-पुरके लिये, यज्ञ मान उपकार।
तथा द्वैत बन के लिये, गया धर्म परिवार॥
जा पहुँचे उस विपिन में, व्यास देव मुनिराय।
द्रुपद-सुता कहने लगी, बार बार बिलखाय॥

अंतर्यामी! जीवन भर से, पाण्डव-कुल दीन दुखारी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों महाराज क्या मरने तक, यों ही तकदीर हमारी है ॥
पीने को नीर न मिलता है, अमृत की सरिता बहती है ।
स्वामी यह कैसा चक्कर है, रोटी न हाथ की रहती है ॥

व्यास देव कहने लगे, विदुषी-ज्ञान-निधान ।
महिमा उन भगवान की, क्या जाने अन-जान ॥

तू दुखिया या दुर्भागिन है, यह बिलकुल झूठा ध्यान तेरा ।
दानी भी आज चाहते हैं, हे देवी ! दया दान तेरा ॥
यह विपदा नहीं परीक्षा है, सब भेद सामने आयेंगे ।
सूरज सूरज कहलाएगा, दीपक दीपक रह जायेंगे ॥

बेटी कर इस मन्त्रका, नियम-सहित नित जाप ।
मिट जायेंगे आप ही, सकल शोक—संताप ॥
जाप किया कुल वंश ने, वही मान-विश्वास ।
उसी मन्त्र की सिद्धि को, पार्थ गये कैलास ॥

हिम-मय कुटीर में शङ्कर की, अविरल धूनी थी रमी हुई ।
श्री कैलासी के आगे थी, अर्जुन की आसन जमी हुई ॥
जब अनुष्ठान वह पूर्ण हुआ, तो अवढर दानी प्रकटाये ।
लेकिन कुछ कारण सोच समझ, प्रत्यक्ष न प्रभु सन्मुख आये॥
देखा पार्थ ने एक शूकर, आगे ही शोर मचाता है ।
उसके पीछे अहेरियों का, कुल गोल उमड़ता आता है ॥

विघ्न देख कर उस तरफ, बढ़े पार्थ बलवान ।
किन्तु किसी ने यों कहा, छोड़ न देना बाण ॥
पर उतनी ही बार में, छूट चुका था बार ।
बार गया बेकार ही, बढ़ी व्यर्थ तकरार ॥

बोला अहेरियों का नायक, क्योंरे आज्ञा को टाल दिया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रे ढीट! वार के साथ-साथ, हाथ से शिकार निकाल दिया ॥
अभिमानी फिर धन्वा सँभाल, बार का जवाब बार होगा।
उसका शिकार यदि निकल गया, तो अब तेरा शिकार होगा॥

उत्तर में बलवान ने, छोड़ दिया बस बाण।
पर कमान उलटी हुई, खाली गया निशान॥

उलटी कमान चूका निशान, खींची कृपाण वह भी टूटी।
रह गई मूठ बल गया रूठ, कर हुए ठूंठ आशा छूटी॥
पर ताल धाल बैताल रूप, चौगुनी चाल से उछल पड़ा।
भुवनों में एक भभक फैली, भूमण्डल पर भू-चाल पड़ा॥
अति क्रुद्ध विरुद्ध-युद्ध होकर, कुछ देर हुई हाथा पाई।
पर पल ही भर में बलधर का, बल टूट गया मूर्छा आई॥
मूर्छा टूटी चैतन्य हुए, नाटक समझा भट ने नट का।
अथवा डग-पग के साथ साथ, पट पलट गया अन्तर-पट का॥

पड़े चरण पर पार्थ भट, उठी उधर मुस्कान।
माया–पट को पलट कर, प्रकटे शम्भु भवानि॥

वह शूकर अब शूकर न रहा, शुक-रूप देव दरशाते थे।
एवं अहेरियों के नायक, प्रत्यक्ष शम्भु दिखलाते थे॥
वह भूत जमात शिकारी थी, शक्ती समेत त्रिपुरारी थे।
नभ मण्डल में जयकारी थी, उन चरणों पर अधिकारी थे॥

हाथ जोड़ कर पार्थ ने, कहा विनय के साथ।
जयलीलाधर जगत्-धर, जय जय-गिरिजानाथ॥

यह माया माया–चेरों पर, यह ज्ञान घात अज्ञानों पर।
यह महा–नाट्य जड़ जीवों पर, यह जांदारी बे जानों पर॥
प्रभु के आगे न मोड़ खाये, भगवन वह माथ फोड़ डालो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाथ के साथ युद्ध को उठा, स्वामी वह हाथ तोड़ डालो।
मुसकाकर शिव ने कहा, घबरा मत बलवान।
केवल तेरी शक्ति की, करनी थी पहिचान॥
बस समझ लिया अपने बलसे, होगा तू कभी निराश नहीं।
तेरा विश्वास हुआ पर है, हथियारों का विश्वास नहीं॥
यह मार काट के अवसर पर, निश्चय धोखा दे जायेंगे।
हथियार हाथ के यार नहीं, यह यार मार दिखलायेंगे॥
इसलिये पाशु-पत देता हूँ, यह तेरा हाथ बटायेगा।
विश्वास रहै यह महा-अस्त्र, संकट में साथ निभायेगा॥
यों कह कर प्रभु ने किया, वह पाशुपति प्रदान।
विधि बतलाकर शम्भुने, किया शीघ्र प्रस्थान॥
उसी समम सुर-राज भी, आये सहित समाज।
बदन चूम कहने लगे, ओ भारत सिर ताज॥
भू तल के दुष्ट दानवों को, हे दानव दलन! मिटाना है।
हे भारत--भूषण याद रहै, भारत का भार हटाना है॥
तेरे बल पर सब देव-वृन्द, अपनी शक्तियां लगायेंगे।
जब जो कुछ तुझे जरूरत है, वह पूरी करते जायेंगे॥
गाण्डीव-वज्र दो शस्त्रों को, सुरपति ने उन्हें प्रदान किया।
काल ने कालका दंड दिया, जल-पतिने भी जल-बाण दिया॥
नान्दीरथ देकर लिया, अर्जुन को भी साथ।
इन्द्रलोक में दल सहित, जा पहुँचे सुर-नाथ॥
यहाँ धर्म बृहदश्व-मुनि* कर सत्सङ्ग सुपास।
आत्मशान्ति हित परस्पर, कहा किये इतिहास॥

*बृहदश्व-मुनि द्वारा कहा हुआ नल चरित्र अगले भाग में पढ़िये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा भीम ने एक दिन, है क्या भाग्य-विधान।
अब अर्जुन का भी कहीं, मिलता नहीं निशान॥
सन्देशा कोई मिला नहीं, वह स्वयं न अब तक आया है।
भाई! क्या जाने दुश्मन ने, भाई को कहां फँसाया है॥
आज्ञा दे दो ढूँढ़न चलें, चुप की अब नहीं जरूरत है।
पत्थर का उत्तर पत्थर को, बस यही विजय की सूरत है॥

धर्मराज कहने लगे, भीम कहूँ के बार।
क्या उसकी प्रकृति के, हो तुम ठेकेदार॥
उत्थान, पतन, संयोग, विरह खुद ही सब होते जाते हैं।
उस शक्तिमान् की शक्ती में, हम व्यर्थ शक्ति दिखलाते हैं॥
अर्जुन न कहीं खाजायेगा, मिलने के दिन मिल जायेगा।
हिल गई अगर पार्थ की भृकुटी, तो इन्द्रासन हिल जायेगा॥
इसलिये शांति से दिन काटो, इस तरह मोह ममता न करो।
जायें जायें आयें आयें, आते-जाते चिन्ता न करो॥

लोमश ने आकर दिया, उसी समय सन्देश।
सुर-पुर में हैं इन दिनों, अर्जुन और सुरेश॥
अर्जुन को इन्द्र अखाड़े में, शस्त्रास्त्र भेद दिखलायेगा।
रण कौशल पूरा होते ही, आप ही पार्थ आ जायेगा॥
इसलिये न उनकी फिक्र करो, हे धर्म तीर्थ-परियटन करो।
जो बिगड़ी बात बनाते हैं, उन केशव का चिन्तवन करो॥

विचरण करते धर्म-पति, गये बद्रिका धाम।
एक नदी के तीर पर, किया गया विश्राम॥
एक फूल बहता हुआ, चला धार के साथ।
पांचाली ने भीम से, कहा जोड़ कर हाथ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे नाथ! अगर इन फूलों का, अपने ही हाथों हार बने।
तो रसिक-मूर्ति नट-नागर प्रभु, मन मोहन का शृङ्गार बने॥
आशा है नाथ पधारेंगे, या यहीं सुमन मँगवायेंगे।
उन इष्ट—देव के पूजन में, प्राणेश्वर हाथ बटायेंगे॥
यह फूल वही था गन्ध—राज, थे बजरङ्गी रखवार जहां।
पार्थ की तरह वह लेने को, अब पहुँचे पवन कुमार वहां॥
वैसा ही कुछ संवाद हुआ, फिर पथ माँगा रण—रङ्गी ने।
कह दिया पड़े ही पड़े तनिक, बजरङ्गी से बजरङ्गी ने॥
भैया बूढ़ा ना धारा हूँ, अब इतना काम तुम्हीं कर दो।
लो पूंछ पकड़ खींच के मुझे, रास्ते के एक तरफ धरदो॥

पच—हारे न्यारे परे, झक मारे बल छूंछ।
तिलमिलाय आंखें उठी, उठी न तिलभर पूंछ॥

जिसके अंकुर का पता न था, वह अंकुर नहीं झाड़ निकला।
बूढ़ा जवान का सर निकला, समझे थे तिल पहाड़ निकला॥
तर बतर पसीने में होकर, सीने को भीम थकाने लगे।
बजरङ्ग बली की ओर देख, बजरङ्ग बली मुसकाने लगे॥
उस महा शक्ति पर भौंचक हो, तब भटवरने भी ध्यान दिया।
खुल गये भीम के हृदय पटल, बजरङ्गी को पहिचान लिया॥

झुक कर पवन कुमार से, बोले पवन कुमार।
राम दूत रण—बाँकुरे, रिद्ध—सिद्ध—आगार॥

जो खुद भावी को भटक रहे, क्या लाभ उन्हें भटकाने से।
भूले हैं आप आपही जो, क्या फल है? उन्हें भुलाने से॥
बल देखलिया ली बुद्धि परख, अब कृपा अञ्जनी लालकरो।
यह दीन द्वार पर आया है, दाया हे, दीन—दयाल करो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बजरङ्गी कहने लगे, जाओ हे बल—धाम।
श्यामलाल के लाड़ले, कृपा करें श्री राम॥
जाओ बल-धाम फूल लेलो, द्वापर का अन्तिम काम करो।
अवकाश और वन जीवन है, कुछ दिनों यहीं विश्राम करो॥
तुम से साधन है याद रहे, द्वापर के सारे साधन का।
बल वीर तुम्हीं पर निर्भर है, बलतेज देवकी-नन्दन का॥

ठहर गये कुछ समय को, यह सुन पवन-कुमार।
वहाँ धौम्य कहने लगे, चलो धर्म अवतार॥
शीघ्र ही भले दिन आते हैं, चिंता छोड़ो विश्वास करो।
उसका गन्ध-मादन-वनमें, कुछ दिन तक तुम्हीं निवास करो॥
आज्ञा पाकर उस जगह धर्म, सुख पूर्वक समय बिताते हैं।
श्रोताओ अब हम इसे छोड़, अर्जुन का चरित सुनाते हैं॥

लगा हुआ था एक दिन, सुर-पति का दरबार।
इन्द्रासन के निकट थे, बैठे इन्द्र—कुमार॥
शशि सुधर सुरीली किरणों से, सुर-पति का साज धोरहा था।
गन्धरवी राग जम रहा था, परियों का नाच होरहा था॥
उन कसा—कसी के तानों में, दीखे आसार बेकसी के।
उर्वशी उर बसी अर्जुन के, अर्जुन उर बसे उर्वशी के॥
लेकिन मर्यादा और अदब, दोनों के सर थे पड़े हुए।
उर्वशी बे बशी में बैठी, अर्जुन बे बश उठ खड़े हुए॥

शून्य समय एकांत थल, मृदु-चितवन की घात।
विरही से ही पूंछिये, वह विरही की रात॥
खुलती आंख में अन्धेरी सी, लगती में एक उजाली सी।
नजरों में चौ नजरों वाली, दांतों की दिव्य दिवाली सी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नव यौवन पर काम की कसक, मन पर मन-हारी पीड़ा है।
होंठ पर हिलन ज्यों दबा हुआ, प्यार के हाथ का बीड़ा है॥
भोजन छूटा मृदु चितवन पर, निद्रा टूटी मृदु लाली पर।
सच है सुहावनी लगती है, शैया भी शैया वाली पर॥
मन हारे मन को रिझा रहे, मन था अलमस्त मचलने में।
कटती जाती थी रात वहां, क्षण क्षण करवटें बदलने में॥

उसी समय ध्वनि सुन पड़ी, लिये द्वारकी आड़।
बिरहिन बौरानी खड़ी, खोलो नाथ किवाड़॥

खुल गई आंख सिर घूम गया, कसती सी उठी बेकसी है।
उर-बसी मूर्ति ने यही कहा, उठ बैठो नाथ उरबशी है॥
भूखे ने पाया सुधा-सिन्धु, या निध मिल गई भिखारी को।
सञ्जीवन कोई हाथ लगी, जीवन के दीन दुखारी को॥

उस प्रमोद आनन्द का, है प्रेमी तक तार।
कवि-गण पा सकते नहीं, उस सीमा का पार॥

मन बोला अब क्या उलझन है, मौका है सारा साधन है।
बुद्धि ने कहा क्या करते हो, राजसी नहीं वन-जीवन है॥
जा देव-लोक में रह कर भी, व्यभिचार बढ़ाया जायेगा।
तो उन्नति की आशाओं पर, पानी फिरता दिखलायेगा॥

बस इतने ही भाव से, बदल गया वह भाव।
एक धर्म के चाव से, मिटा प्रेम का चाव॥

उस ओर प्रेमिका द्वारे पर, क्षण-क्षण आवाज लगाया की।
इस ओर धर्म की वृत्ति उन्हें, पल-पल पर ज्ञान दिखाया की॥
सोचा पार्थ ने अगर कुछ भी, अब प्रेम विषय दरसायेगा।
तो उँगली के छूते ही बस, पहुँचा भी पकड़ा जायेगा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये साफ बोले-देवी, घर जाओ कुछ धर्म से डरो।
कोई देवता तलाश करो, अर्जुन से यह आशा न करो॥
मैं खुद वह गदला पानी हूँ, जिससे न मैल धुल सकता है।
जाओ या खड़ी रहो देवी, पर द्वार नहीं खुल सकता है॥

धधक उठा यह वचन सुन, आशाओं का बाग।
गयी राग अनुराग की, लगी यकायक आग॥

ओ नाकारे अर्जुन! तूने, मुझको आशा में मारा है।
धुमकार लगा कर हत्यारे, द्वारे लाकर दुतकारा है॥
इस धोखा देही का बदला, ओ छलिये तू भी पायेगा।
जा इसी समय से मति मारे, पुरुषार्थ हीन हो जायेगा॥

लौट पड़ी यों कह परी, पार्थ रहे चुपचाप।
यह सुनकर सुर-राजको, हुआ अधिक संताप॥

उर्वशी वहीं पर बुलवा कर, इन्द्र ने कहा ओ ना-कारी।
बट्टे दारी पर बटमारी, यारी के साथ रिया कारी॥
अपने पाप का भार पापिन, औरों के सिर पर डाला है।
हत्यारी साफ साफ बतला, यह क्या से क्या कर डाला है॥
बोली उर्वशी नाथ! कोई, औरों की मौत न मरता है।
करता-धरता जो करता है, सो सब अच्छा ही करता है॥
अर्जुन भट को कुछ दिन पीछे, अब गुप्त वास में जाना है।
राजा विराट के घर जाकर, तेरहवां वर्ष बिताना है॥
इसके बल पर वह गुप्तवास, निर्विघ्न पूर्ण हो जायेगा।
तेरहवां वर्ष बीतते ही, पुरुषार्थ आप ही आयेगा॥

मौन हुए सुर-राज भी, भावी भाव विचार।
धर्म राज के पास में, गमने इन्द्र-कुमार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौरव पति ने कर्ण से, कहा चलो बलवीर।
पाण्डव-गण हैं इस समय, कम्यक-वन के तीर॥
मौका है उन्हें खिजाने का, अपना प्रभाव जतलाने का।
खूनी को खून रुलाने का, आँखों की तपन बुझाने का॥
जी भर कर जो चाहो कहलो, उस भारत के अधिकारी से।
लो चुका व्यंग का बदला भी, दुखियारी द्रुपद-दुलारी से॥

बांधे मन के बांध में, भांति २ बन्धान।
पर न किसी को ज्ञात था, वह दैवीय-विधान॥

उस वन के एक सरोवर पर, चित्ररथ स्वतन्त्र विचरता था।
एक दिन नारी से लपट-झपट, नीर में किलोलें करता था।
दुर्योधन इसे न देख सका, झट बाण चढ़ाकर छोड़दिया।
गन्धर्व सँभलकर निकल पड़ा, कुरु-पति का बाजू तोड़दिया॥
वह मार मार की धूम हुई, खल कौरव चीख मार भागे।
कर दिये सैन्य के तार तार, तारे से तार तार भागे॥
कानों की राह निकाल दिया, दानी कर्ण के वीर पन को।
अधकुचला छोड़ कौरवों को, लेचला बांध दुर्योधन को॥

समाचार यह धर्म से, कहा भीम ने जाय।
भैया बिना उपाय हो, की दैव ने सहाय॥

जो सर पर चढ़ता आता था, उसको पैरों में डाल दिया।
जो कांटा हमें खटकता था, वह कांटा आज निकालदिया॥
दीन से खार खाने वाला, हीनों की मार खारहा है।
कुरु-राज चित्ररथ के रथ में, देखो बँधा जा रहा है॥

कहा धर्म ने भीम है, तुम पर बल का रङ्ग।
किन्तु न तुमको याद है, राज नीति का अङ्ग॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपस में लड़ो और झगड़ो, वचनों की बांधे टेक रहो।
घर में जो चाहो किया करो, लेकिन बाहर को एक रहो॥
भाई से बदला लेने को, यदि ये छल नीति हमारी है।
तो आज फँसा कौरव-पति है, अगले दिन अपनी बारी है॥
प्रण को भी पूर्ण न कर सकना, सच्चा अपमान हमारा है।
बल-राज याद क्या भूल गये, कुरु-राज शिकार तुम्हारा है॥
इसलिये हर्ष का समय नहीं, चुप रहो न बस धाओ अर्जुन।
शत्रु के हाथ से किसी तरह, बन्धु को छुड़ा लाओ अर्जुन॥

आज्ञा पाकर उस तरफ, गमने कुन्ती लाल।
कुरु-पति को गन्धर्व से, छुड़ा लिया तत्काल॥
धर्मराज के पास जब, पहुँचा कौरव-नाथ।
तो लज्जा-वश नीच का, ऊँचा हुआ न माथ॥

धर्म ने कहा-आओ राजन्, कुछ दिन करो विश्राम यहीं।
यह रहे ध्यान हर जगह बन्धु, एक ही चालका काम नहीं॥
बल विक्रम के अनुमान बिना, जो लोग लड़ाई लड़ते हैं।
वे बहुधा विजय न पाते हैं, मुफ्त की बुराई लेते हैं॥
दुख छोड़ो-द्वादश वर्षों का, अब विरह वियोग बुझायेंगे।
वह जीवन आगे आता है, मिलने का समय न पायेंगे॥

दुर्योधन कहने लगा, सुनो धर्म—अवतार।
तुम्हें मान अपमान का, होता नहीं विकार॥

पर हम तो अहम्-मूर्ति ठहरे, बातों में जीते मरते हैं।
ना कुछ टक्कर का काम पड़े, तो चक्कर खाया करते हैं॥
मैं पिटा किया या बँधा रहा, इसकी चिंता न कर रहा हूँ।
सच कहलाते हो तो राजन्, लज्जा से आज मर रहा हूँ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन जन जीवन धाम ले, लेले तन मन प्राण ।
पर न किसी को देव दे, दुश्मन का अहसान ॥

जिसको मैंने अपने वंश भर, जन्म का शत्रु ठहराया है ।
यह बात डूब मरने की है, वह पार्थ बचाकर लाया है ॥
बन्धन कर्त्ता पर दोष नहीं, गन्धर्व-राज पर रोष नहीं ।
पर प्राण बचाये दुश्मन ने, इस पर आता सन्तोष नहीं ॥
सहलूंगा मार बज्र की भी, अहसान न सहने पाऊँगा ।
यदि महा भार यह टला नहीं, तो निश्चय ही मरजाऊँगा॥
इसलिये प्राण मिलवाये हों, तो धर्म मान भी मिलवादो ।
वरदान दिला दो अर्जुन को, बदले का बदला दिलवादो ॥
धर्म ने कहा कौरव नरेश, रण में अपमान नहीं होता ।
बेटे पर ऋण न कहाता है, घर का अहसान नहीं होता॥

फिर भी जाता है अगर, बन्धु तुम्हारा मान ।
तो रहने दो वक्त पर, दे देना वरदान ॥
कुछदिन को उस विपिन में,ठहर गया कुरुनाथ ।
बन–विहार होने लगा, वहाँ साथ ही साथ ॥
ऊपर से बिनती रही, बनी अनबनी बात ।
पर भीतर से नीच-खल, लगा रहे थे घात ॥
गई द्रोपदी एक दिन, करने को स्नान ।
ले भागा जयद्रथ उसे, देख वहां सुनसान ॥
किन्तु पार्थ ने नीच का, दिया कलेजा तोड़ ।
माथा फोड़ी देखकर, भागा खल रथ छोड़ ॥
यहां धर्म ने फिर किया, व्यासदेव का ध्यान ।
तथा कहा कर जोड़कर, कहिए कृपा निधान ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारहवाँ वर्ष पूर्ति पर है, तेरहवाँ आगे आया है।
अब गुप्त बास के लिये हमें, प्रभु क्या निश्चय ठहराया है॥
हम पांच अनाथ विपिन-बासी, वह दल-पति है अधिकारी है।
फिर पैरों की बेड़ी-स्वरूप, साथ में हमारे नारी है॥

व्यास देव कहने लगे, तजो सोच नर नाह।
अब विराट नृप के यहां, कर डालो निर्बाह॥

है समय दीनता संकट का, राजसी नहीं दिखलाना है।
छल-बल से और चतुरता से, विपदा का समय बिताना है॥
वह प्रभु ही भार सँभालेंगे, जो सारी सृष्टि सँभाले हैं।
हे धर्मराज! प्रस्थान करो, श्री यादवेन्द्र रखवाले हैं॥

धौम्य पुरोहित व्यास मुनि, बिदा हुए सुखमान।
धर्मराज ने फिर कहा, सुनो वीर बलवान॥

धर दो राजसी अमानत में, यह सगी नहीं अनुगामी की।
रख दो बाना आजादी का, पहनों जंजीर गुलामी की॥
जी हाँ हुजूर कहना सीखो, हुक्मों पर बँधा रहे बिस्तर।
जो चाकर है तो नाचा कर, ना नाचा कर तो ना चाकर॥
सरदारी का अब समय नहीं, सर का झुकाव स्वीकार करो।
यह जीवन के सच्चे साथी, सारे हथियार उतार धरो॥

शमी वृक्ष पर अस्त्र धर, टांग दिया मुरदार।
आन बांध कर मन्त्र से, गमने पाण्डु-कुमार॥

गायन-जमाना देख ले आकर, जमाना इसको कहते हैं।
बनी ऐसी बिगड़ती है, बनाना इसको कहते हैं॥
तबाही इस तरह आती है, शाही पर अमीरी पर।
तबाही के जमाने में, निभाना इसको कहते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बली नर न है नर-पति है, बली तो भाग्य केवल है।
गिराना इसको कहते हैं, उठाना इसको कहते हैं॥
किसी की दैनगी से कुछ नहीं, हासिल यहां होगा।
अरे 'गोविन्द' देना या दिलाना, इसको कहते हैं॥
श्रोता गण! अब है यहाँ, उचित प्रथम विश्राम।
कहो प्रेम के साथ में, जय श्री राधेश्याम॥

नल चरित्र

बृहदश्व-वचन

भारत में मशहूर था, पहले नैषिध देश।
विद्या बुद्धि विचार निधि, थे नल वहाँ नरेश॥
एक बार निश्चिन्त हो, पहिन शिकारी साज।
जंगल में आखेट को, जा पहुँचा नल-राज॥

उस वन के किसी सरोवर पर, हंसों का जोड़ दिखाता था।
उन जोड़ों में प्रत्येक जोड़, बे जोड़ नजर में आता था॥
उन जोड़ों में से राजा ने, झट एक हंस को पकड़ लिया।
हंस ने मानवी—शब्दों में, राजा को यों संकेत किया॥
राजन् मुझसे क्या पायेगा, नाहक का भार बढ़ायेगा।
जो मुझे मार भी डाला तो, पंखों का ढेर दिखायेगा॥
जो कहीं पालना भी चाहा, तो भी कुछ लाभ न पायेगा।
जिस रोज मौत आजायेगी, उस दिन वियोग हो जायेगा॥
मुझसे तेरे लाभ की नृपति, कुछ सूरत नजर न आती है।
व्यर्थ का भार ही बढ़ता है, मेरी स्वतन्त्रता जाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये अगर छोड़ दे मुझे, तो मैं भी कुछ बदला दूंगा।
मेरा जोड़ा मिल जाने पर, तेरा जोड़ा मिलवा दूंगा॥

राजा ने यह शब्द सुन, छोड़ दिया तत्काल।
भीम राज के देश को, चला प्रतिज्ञा-पाल॥
वहाँ एक तालाब पर, उतर पड़ा वह हंस।
आता था स्नान को, वहाँ फक्त नृप-वंश॥

दयमन्ती राज-कुमारी भी, उस रोज नहाने आई थी।
जिसके सर्वाङ्ग सुघरता पर, बलिहार गई सुघराई थी॥
पहिचान हंस उसके आगे, धीरे-धीरे कुछ चलने लगा।
एवं मीठे से शब्दों में, मुड़कर देवी से कहने लगा॥
बलिहारी अहो विधाता की, जिसने यह देह सँभारी है।
जिसके हर एक अङ्ग पर खुद, काम की कामिनी वारी है॥

यह सुन्दरता यह छटा, यह यौवन का भार।
अहो! एक भरतार बिन, है सारा निस्सार॥

मोती मुक्ता माणिक यद्यपि, प्रत्येक व्यक्ति रख सकता है।
लेकिन उनका वास्तविक मोल, जौहरी फक्त कर सकता है॥
पावे यदि उसे योग्य माली, तो फूल-फूल खिल जायेगा।
देवों का मान बढ़ायेगा, माथे पर शोभा पायेगा॥
गुल ही समझे चिराग अपना, जब तक गुलसे खिले नहीं।
क्या खाक तोड़ना जोड़ मिले, जो जोड़-जोड़कर मिले नहीं॥

यह सुनकर कहने लगी, सुन्दर-राज-कुमारि।
बतला कोई योग्य वर, खगपति मुझे विचारि॥

हंस ने कहा इस सम्मति में, मेरी ही मति सम्मति समझो।
जो अपनेको रति समझी हो, तो उसनृपको रति-पति समझो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नैषिध प्रदेश में इन रोजों, केवल नल राज दिखाते हैं।
जिनकी निकाम सुघराई पर, वे काम काम बन जाते हैं॥
जो गुल से वह गुल टकराये, तो गुलशन का गुल खिलजाये।
मिल जाये पूर्व जोड़ मानो, जो उनसे जोड़ा मिल जाये॥

दमयन्ती कहने लगी, सुन प्रिय राज-मराल।
राज-स्वयम्बर में उन्हें, डालूंगी जय माल॥

निश्चय समझो विश्वास रखो, जो चाहो प्रतिज्ञा करवाओ।
मेरे इन आत्म-विचारों का, उन तक संदेशा पहुँचाओ॥
जिस समय सूचना दी जाये, दर्शन देने अवश्य आयें।
नृप-मण्डल में शोभा पायें, अपनी दासी को ले जायें॥

हंस वहां से चल दिया, कहा भूप से हाल।
आठ पहर रहने लगी, अब उदास यह बाल॥

खाना, पीना, सोना, हँसना, उसको पहाड़ दिखलाता है।
वह मान पिता का राज-भवन, मरघट बन खाये जाता है॥
वह साज नहीं आवाज नहीं, लाज के साथ लजवन्ती है।
वह राग-बाग का राग गया, शैया है या दमयन्ती है॥

यहां स्वयम्बर के लिये, जुड़ने लगा समाज।
भये उपस्थित सभा में, राज पुत्र-नर-राज॥
छिपा हुआ है बीच का, थोड़ा सा आख्यान।
प्रकट करेंगे हम उसे, यहां यथा स्थान॥
इन्द्र अग्नि यम वरुण भी, चले स्वयम्बर काज।
मिले मार्ग में सुरों को, एक जगह नल-राज॥

इन्द्र ने कहा हे हे नरेन्द्र, कुछ देवों पर उपकार करो॥
हम लोगों की ओर से भूप, दूत का काम स्वीकार करो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपको कष्ट करके नर-पति, दमयन्ती तक पहुँचाना है।
एवं उससे मिलकर मेरा, इतना संदेश सुनाना है॥
आये हैं इन्द्र ब्याह करने, वह व्यर्थ न मण्डप में जाये।
अथवा जाये तो उनका ही, अपनी जयमाला पहिनाये॥
दमयन्ती या उसकी माता, कहने पर ध्यान न लायेगी।
तो कह देना—मेरे द्वारा, निष्कारण हानि उठायेगी॥

क्षमा-शील नल ने कहा, जाना है स्वीकार।
राज-भवन में पहुँचना, है लेकिन दुश्वार॥

दमयन्ती एवं रानी से, बात भी न होने पायेगी।
दरवानों के द्वारा मेरी, पहिले चटनी हो जायेगी॥
पहले इसका प्रबन्ध कीजे, फिर सेवा बतला दीजेगा।
हे देव-राज! पहले मुझको, देवी तक पहुँचा दीजेगा॥

देव राज कहने लगे—जाओ निस्सन्देह।
देखेगा कोई नहीं, भूप तुम्हारी देह॥
महाराज नल शीघ्र ही, पहुँचे आज्ञा मान।
बैठी थी जिस जगह पर, दमयन्ती छवि-खान॥

नव बाला बाला नव-यौवन, पावन-बालेन्दु बढ़ाई पर।
बाला-ललाट, बाली विराट, रस वाला काम चढ़ाई पर॥
वह भ्रमर गुञ्ज या नाग कुंज, कल केश पुञ्ज दिखलाते हैं।
मानो चांद ने निकल पीछे, पतले पौनियां सुहाते हैं॥
सिन्दूर पूर सोहली मांग, मानो सुहाग की सूचक है।
मद-भरी आंख मृगनैनी की, मद-मय मृग-पतिकी इच्छुक है॥
भृकुटी झुकाव धन्वा तनाव, नासा-बनाव पर बलिहारी।
वेणी खिचाव यौवन चढ़ाव, मन की हिलोर न्यारी-न्यारी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह कर्ण फूल कान में झूल, फूलों का दृश्य दिखाते हैं ॥
प्रेमी पर प्रेम-प्रहारों से, रह-रहकर शूल चुभाते हैं ॥
निर्मल-शशि-सरिस विशाल भाल, बेंदी कमाल दिखलाती है।
मानो चन्द्रिका चूमने को, चन्द्र से कान्ति लिपटाती है ॥
कुंकुम कपोल कुछ गोल गोल, मुसकान अमोल सुहानी है।
जिसके सामने अनार कली, कल-कुन्द कली शरमाती है ॥
आंखों में वह जहरीला पन, बैठ जायें जो आंख भर कहीं।
तो आंखों वाला आंख खोल, उठकर पानी भी पीये नहीं ॥
स्फुटित कली से अधराधर, रस-धर के अधर चुराये हैं।
कुच कलित मनों भौंरों समेत, अंचल में कमल छिपाये हैं ॥
शुचि-बाहु-बल्लि केहरी कमर, रुचि-भरी जंग मदहारी है।
सर्वाङ्ग-सुघड़ मोहनी मूर्ति, नल ने कामिनी निहारी है ॥

उसे देखते देखते, बढ़ी प्रमोद तरङ्ग।
भूल गया दूतत्व सब, हुए स्वयं मति भङ्ग ॥

उस ओर देख नल की मूर्ति, दमयन्ती भी बे होश हुई।
क्षण भर के लिये प्रेमवाणी, दोनों जानिब खामोश हुई ॥
वह मौन रहे वह मौन रही, झुक कर आंसू की झड़ी झड़ी।
वह कह न सके वह कह न सकी, वह वहां पड़े वह वहां पड़ी ॥

सखियों ने देखा जहां, यह दोनों का हाल।
पंखा तथा गुलाब जल, ले धाईं तत्काल ॥

जल डाल डाल कर कर बयार, चैतन्य उन्हें करने पाया।
फिर नल से पता पूछने पर, यह हाल उन्होंने बतलाया ॥
क्य कहूँ असल या नकल कहूँ, आकिल हूँ लेकिन बे कल हूँ।
यानी विरहानल का बिदग्ध, आली मैं ही राजा नल हूँ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस समय इन्द्र का धावन हूँ, उनके ही कारण आया हूँ।
वह दमयन्ती के ग्राहक हैं, इतना संदेशा लाया हूँ॥
वे इसे विशेष चाहते हैं, तो वह भी उनकी चाह करे।
उनकी आज्ञा है दमयन्ती, मेरे ही साथ विवाह करे॥
हां यह भी उनका कहना है, जो ध्यान न इसपर लाओगी।
तो किसी रोज उनके द्वारा, निष्कारण हानि उठाओगी॥

दमयन्ती कहने लगी, उनसे कहो प्रणाम।
इतना मेरी ओर से, दे देना पैगाम॥

दमयन्ती के दम का बीमा, हम-दम नल राज ले चुके हैं।
क्या देकर तुम्हें प्रसन्न करूँ, जो कुछ था उन्हें दे चुके हैं॥
मेरे इस जीवन का साथी, जीवन है या नैषधि-पति हैं।
जिससे पति व्रत पर दाग लगे, उस इन्द्रासन पर लानत है॥
जो सत् व्रत के प्रति-पालक हों, तो पति व्रतकी महिमा रक्खें।
जो सतियों के हों मददगार, तो मेरी भी लज्जा रक्खें॥

जाकर के नल राज ने, सभी सुनाया हाल।
दमयन्ती का शील सुन, हुए मौन सुरपाल॥

अस्तु लगा था भीम का, शानदार दरबार।
कर में ले जय माल को, आई राज कुमारि॥

वह झुके हुए सुस्ताने से, उझकाने आन दिखाने लगे।
उसकाने से मुसकाने से, ऊँचे को माथ उठाने लगे॥
बगलों में खड़े नकीब लोग, जोरों से यश चिल्लाने लगे।
बाजों में से और भी मधुर, आनन्द सुहाने आने लगे॥
राजाओं के चंचल-नयना, उस मृगनैनी की आश में थे।
मृग नैनी के अधझुके नेत्र, हृद-पति नल की तलाश में थे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तनिक अध-झुकी दृष्टि से, देखा आंख पसार।
तो देखे नल की तरह, पांच वहां सरदार॥
वे इन्द्र वरुण यम या अग्नि तथा, नलका स्वरूप बन आये हैं।
दमयन्ती के बहकाने को, अपनी माया फैलाये हैं॥
जब समझ न पाई दमयन्ती, वास्तव में नल हैं कौन वहां।
लगी सोचने मन ही मन, डालूँ जयमाल महेश कहां॥
हे इन्द्र देव? हे वरुण देव, दोनों से क्या अजमाते हो।
हे इन्द्र लोक के अधिकारी, क्या मृत-लोक पर लुभाते हो॥
हे सत्य मूर्ति, हे धर्म राज, क्या बहुरूपियापन करते हो।
अपना सत तेज प्रभाव नाम, क्यों भङ्ग व्यर्थ में करते हो॥

दमयन्ती की विनय पर, प्रकटे सुर तत्काल।
तब प्रियतम के कण्ठ में, डाल सकी जयमाल॥
स्वागत एवं उपनियम, हुए पूर्ण सब भांति।
भीम राज से बिदा हो, लौटी नृप बारात॥

चारों देवों ने हो प्रसन्न, नल को कुछ अस्त्र प्रदान किये।
एवं धर्म ने धर्म—रुचि दे, इच्छानुसार वरदान दिये॥
या ज्ञान धर्म का एक मेल, या न्याय नीति का जोड़ा था।
विश्वास तथा श्रद्धा ये थे, या पुन्य प्रीति का जोड़ा था॥

कुछ दिन तक नलराजको, रहा पूर्ण आल्हाद।
वहां इन्द्र की सभा में, उठा कहीं सम्बाद॥
इन्द्र ने कहा नल के आगे, देवों की नीची नाक हुई।
ना कुछ मृत-लोकी कीड़े से, हम सबकी इज्जत खाक हुई॥
क्या करें वहीं की कर्ण धार, वह सत्य मूर्ति सतवंशी है।
दम मूर्ति कहो पति रूप कहो, जो कुछ है वह दमयन्ती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके सत शील सत्यव्रत से, हमको अपना प्रण खोना पड़ा।
उसके सत्कार शान्ति ही से, देवों को बेवश होना पड़ा॥
वरना क्या कहें कि क्या होता, वह सुखकी सेज कहां होती।
या सुरपति आज वहीं होते, या देवी आज यहां होती॥

बैठे थे उस सभा में, द्वापर-युत-कलिराज।
बोल उठे महाराज का, रहे सलामत ताज॥

क्या कहूँ मेरा शासन न हुआ, वरना सत् राज दिखा देता।
सतवन्ती को प्रणवन्ती को, वेश्या की भांति घुमा देता॥
आ जाने दो मेरा शासन, ऐसी माया फैला दूंगा।
सतियों से भीख मंगा दूंगा, राड़ों को रमा बना दूंगा॥
अब भी कुछ ज्यादा हर्ज नहीं, द्वापर से भाई-चारा है।
सतयुग त्रेता की समता में, ज्यादा अधिकार हमारा है॥
वह हाथ जमा कर दिखला दूं, दम्पति को औघट-घाट करूँ।
नल कहीं फिरे वह कहीं फिरें, घर भार का बारह बाट करूँ॥

इन्द्र देव ने भी उसे, दिया मुबारिक बाद।
द्वापर! से कहने लगा, वह बानिये-फसाद॥

भाई अपना भाई-चारा, भाई से मिलकर दिखलाओ।
मैं ब्राह्मण रूप बनाता हूँ, तुम यत्न आज को बन जाओ॥
दोनों पुष्कर के पास चलें, आन की बाजियां लगवा दें।
पुष्कर द्वारा नल राजा से, बन-बन की मिट्टी छनवा दें॥

लोगों का शैतान है, केवल एक कुसङ्ग।
पुष्कर पर भी चढ़ गया, आखिर उनका रङ्ग॥

दोनों ने प्रबल-प्रलोभन से, हर तरह उसे बहकाया है।
उस ओर पहुँचकर कलियुग ने, नल पर अधिकार जमाया है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन भर फिरना रात भर मौत, जीवों से जान बचाने की।
हे प्यारी तुम में शक्ति नहीं, बन में वह कष्ट उठाने की॥
तुम भी मायके चली जाओ, दोनों का प्रति पालन होगा।
यदि ईश्वर को स्वीकार हुआ, तो फिर से सम्मेलन होगा॥

प्रियतम के मीठे वचन, मानो चुभी कटार।
फूट—फूट रोने लगी, वह खुलवन्ती नार॥

हे आर्य पुत्र क्या कहते हो? हे धर्म नाथ क्या कहते हो।
हे हृदय नाथ के इष्टदेव!, तुम उस मन्दिर में रहते हो॥
जिस मन्दिरके आराध्य हो तुम, यदि वह सूना कर जाओगे।
तो याद रहे वापिस आकर, खंडहर भी यहाँ न पाओगे॥
बन—बयार सर्दी गर्मी, जितना ही दुखड़ा सारा है।
इष्टदेव के साथ—साथ, सो सब कुछ हमें गवारा है॥
ज्ञान के साथ भी मोह रहे, धिक है ऐसी आचारी पर।
पति की सेवा में त्रुटि आये, लानत है उस सुकुमारी पर॥
मेरी सौगन्ध दुबारा अब, रहने की मत आज्ञा कीजै।
जो ऐसा करना स्वीकृत हो, तो मेरे टुकड़े कर दीजै॥

दमयन्ती के शब्द सुन, भूप हुए लाचार।
उसी समय ननिहाल को, भेज दिये सुकुमार॥

क्या दशा कहें? उस जाने की, भावी के बाल छूटते हैं।
अथवा दो भाग्य फूटते हैं, माई के लाल छूटते हैं॥
चिल्ला कर बेटे कहते हैं, मायरी? कहां को जाती हो।
बे रोटी के बे पानी के, किस जगह हमें पहुँचाती हो॥
माता बेचारी हिलकी भर, छाती से उन्हें लगाती है।
एवं उनको समझाने को, ऊपर से बात बनाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेटा ! मामाजी के जाओ, वे तुमको खूब पढ़ायेंगे।
राजकी नीति धर्म के नियम, सब भांति तुम्हें सिखलायेंगे ॥

अच्छा कह कर चल दिये, भोले-भाले बाल।
गये दीन की गोद से, बचे बचाये लाल ॥
बेटा बेटी बिदा कर, बिदा हुए वे दीन।
बिना अन्न जल पान के, बीत गये दिन तीन ॥

हो गये शिथिल राजा-रानी, टिक गये पेड़ की साया में।
कोई ही क्या कर सकता है, इस माया धर की माया में ॥
पत्नी आया आगे बैठा, नल ने यह हृदय विचार किया।
ईश्वर ने भूखा देख हमें, दिन भर के लिये अहार दिया ॥
लेकिन पकड़ें तो जाल कहां, दौड़ें तो इतनी ताब कहाँ।
चुमकारें तो वह बुद्धि कहाँ, छोड़ें तो और हिसाब कहाँ ॥
आखिर को एक सूझ सूझी, धोती खींची फेंकी उस पर।
उड़ गया दाबकर धोती भी, पत्नी नल से इतना कह कर ॥
रे मूर्ख जुवाड़ी नालायक, सुख से न पेट भर सकते हैं।
घर-बार बेच कर खाते हैं, जङ्गल में नंगे फिरते हैं ॥
पापी तेरे पासों का ही, यह सभी जमाना साकी था।
ले अब नङ्गा ही घूमा कर, यह दण्ड अभी तक बाकी था ॥

चकमक-चकित विलोक कर, यह पत्नीका हाल।
खा पछाड़ रोने लगे, बेचारे भूपाल ॥
रोने धोने से मगर, क्या चलता था काम।
उसे कहां आराम है, जिसे विधाता बाम ॥
चारों जानिब से हुए, जब नर राज निराश।
पत्तों से तन ढांकि के, गये देवि के पास ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहां पहुँच कर दुखी ने, मारी एक दहाड़ ।
लाज बचाई नारि की, आधी साड़ी फाड़ ॥
एक दुराहे पर वहीं, बैठे थकित नरेश ।
देवी को करने लगे, इस प्रकार उपदेश ॥
महिले अब भी कहना मानो, नैहर के लिये चले जाओ ।
विपदा के मारे स्वामी को, दूनी विपदा मत दिखलाओ ॥
राह में जहां दुखियारों पर, कोई आफत दिखलाती है ।
तो सबसे पहले दुखियों को, स्त्री बन्धन हो जाती है ॥
निर्द्वन्द्व हुए सब छोड़-छाड़, जी चाहे जहां चले जायें ।
स्त्री बच्चे हों साथ अगर, तो वह सब कहां किये जायें ॥
मैं अगर अकेला हो जाऊँ, तो अपने होश सँभाल सकूँ ।
तेरी चिन्ता भी मेट सकूँ, कुछ और उपाय निकाल सकूँ ॥
सुन-सुन के पति के वचन, विलपाई सुकुमारि ।
जंघे पर रख शीश को, रोई हाय पुकारि ॥
हे देव ! आपको दुख देने, जङ्गल में दासी आई है ।
यह नई बात भी ब्रह्मा ने, भावी—वश ही कहलाई है ॥
लीजै साथ या छोड़ दीजै, स्वामी दासी का नाता है ।
इन शब्दों का उत्तर क्या दूँ, यह नहीं समझ में आता है ॥
रोते-रोते सो गई प्रिया, नल ने मस्तक को सरकाया ।
छोड़कर वहीं सुकुमारा को, फिर मुँह न लौटकर दिखलाया ॥
तोड़ मोह घर बार से, प्राण प्रिये को छोड़ ।
चले गये नल दूर तक, माया से मुँह मोड़ ॥
प्राण प्रिया को छोड़कर, निकल गये नल दूर ।
दमयन्ती जागी यहां, बेपति उठी बिसूर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ गायन ❀

ओ प्रीतम प्राणाधार ! यों मँझधार न छोड़ो ।
तुम पर दासी ने तजे, मातु पिता संसार ॥
मान लिया आजन्म को, एक तुम्हें आधार ।
ओ मेरे प्रण-पतवार, यों मँझधार न छोड़ो ॥
अपराधिन दासी सही, पै स्वामी हितकार ।
आओ २ प्राणपति, दुखिया रही पुकार ॥
आओ आओ ए भर्तार, यों मँझधार न छोड़ो ॥

पति गये हाथ से लाल गये, बन का भय खाये जाता है ॥
ऐसे ही आगे से वह, विषधर फुंकारता आता है ॥
जिस तरफ बेचारी झुकती है, वह सर्प वहीं झुक जाता है ।
उस बेचारी का सभी तरह, सारा उपाय रुक जाता है ॥
अब घबरा कर अकुलाहट का, और भी ठिकाना रहा नहीं ।
क्या करे बिचारी की हिम्मत, एक भी निशाना रहा नहीं ॥
आंखों को मूँद ध्यान धरकर, देवी क्षण में गिरजाती है ।
नाटक के पर्दे की नाईं, माया दूसरी दिखाती है ॥
आता है व्याधा एक वहां, विषधर को मार गिराता है ।
फिर मीठे शब्दों के द्वारा, देवी को होश दिलाता है ॥

किन्तु शोक उलटा बढ़ा, उसका शोक अगाध ।
सर्प व्याधिसे सौगुनी, हुई व्याध की व्याधि ॥

दमयन्ती का लावण्य देख, वह व्याधा भी ललचाता है ।
मीठे मीठे शब्दों द्वारा, पापी इच्छा प्रकटाता है ॥
प्यारी ! कैसी दुखियारी है, कैसी आफत की मारी है ।
तू तो इतनी सुकुमारी है, रति भी तुझ पर बलिहारी है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चल मेरे घर उस नारी को, चलते ही अलग हटाऊँगा।
सारी सम्पति का चन्द्रमुखी, अधिकारी तुझे बनाऊँगा॥

दमयन्ती कहने लगी, ओ पापी शैतान।
मत निकालना शब्द यह, मुझको कन्या मान॥

जब भय-त्राता तू बनता है, एवं प्राण का सहारा है।
तब मैं तेरी कन्या ही हूँ, तू सत् का पिता हमारा है॥
यदि पिता तुल्य बनकर पापी, बेटी पर नियत दिखायेगा।
तो फूट जायेंगी यह आंखें, रग-रग से कोढ़ चुचायेगा॥
मैं अपने सत्-पति के पीछे, संसार छोड़ कर आई हूँ।
राज्य से पिता से माता से, सम्बन्ध तोड़ कर आई हूँ॥
पाप से मिले खाने को जो, भिष्टा समान वह भोजन हो।
थू है सत-पति व्रत के आगे, कुटिया हो या इन्द्रासन हो॥

मतवाला कहने लगा, जरा जबान संभाल।
महा-सर्प से सौ गुना, खड़ा हुआ है काल॥

जो अब से टुक इनकार हुआ, तो एक बार पर वार हुआ।
एक ही वाण में तेरा भी, सारा किस्सा बस पार हुआ॥
चुप-चाप हमारे आगे हो, जो अब इनकार सुनायेगी।
तो बस एक ही निशाने में, दो टुकड़ों में दिखलायेगी॥

दमयन्ती रोने लगी, दीनबन्धु! भगवान।
बहरे होकर सुन रहे, क्या दुखिया की तान॥

कैसे मानें तुमने माधव, ब्रज की आपत्ति निवारी है।
कैसे समझे? द्रोपदी दीन, तुमने ही देव उवारी है॥
गौ ब्राह्मण पृथ्वी के कारण, शायद अवतार बनाया हो।
क्या जाने किस स्वार्थ के लिये, हाथी का फंद छुटाया हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या पता कौनसी नीति धार, सुग्रीव सुकण्ठ लगाया हो।
जानें किसलिये ? कहाँ ? कैसे, दीनों को हाथ बटाया हो॥
यदि उसमें कोई स्वार्थ न था, तो मेरी बार अबारी क्यों।
श्री कुञ्ज-बिहारी के होते, रोती है ? अबला नारी क्यों॥
कोई विशेष अपराध नहीं, जिस पर न दया हो सकती है।
यह कोई ऐसा रोग नहीं, जिसकी न दवा हो सकती है॥

इस प्रकार हरि ध्यान में, थी स्थिर मति-मान।
छोड़ दिया उस नीच ने, वहाँ हृदय पर बाण॥
क्या जाने किस तरह की, की माया भगवान।
चक्कर खाकर बाण ने, लिये दुष्ट के प्राण॥

पापी का काम तमाम हुआ, आकाश में जय घनश्याम हुआ।
सतवन्ती सती-साध्वी का, सच्ची सतियों में नाम हुआ॥
इस आफत से फुरसत पाकर, दूसरे मार्ग पर आ पहुँची।
चलते-चलते भावी वशात्, उत्तम नगरी में जा पहुँची॥
ठिठकी सी कुछ चलती सी कुछ, मस्तानी सी दीवानी सी।
गलियों कूचों में घूम रही, बिधकानी सी बौरानी सी॥
बालक पगली जान कर उसे, पत्थर लाठियां चलाते हैं।
पापी लोलुप कामी कमीन, जी चाही हँसी उड़ाते हैं॥
मुँह सूख रहा ठिठकी बोली, भूखों से क्षीण देह सारी।
लेकिन आंखों में स्वामि मूर्ति, ऐसी देवी पर बलिहारी॥
ताने देना खाका उड़ना, देवी को कुछ न सुहाता है।
जैसे तपसी को सिद्ध समय, चुप रहने तक से नाता है॥

नृप सुबाहु की वृद्धा माँ, देख रही थी हाल।
पहुँचाया उस देवि ने, बांदी को तत्काल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

वृद्धा ने मुँह चूम कर, रक्खा सिर पर हाथ।
दुखियारी ने मातु को, वहीं झुकाया माथ॥
वृद्धा बोली प्यारी बेटी, किस तरफ बिलपती जाती है।
तेरी ऐसी सुघराई तो, पृथ्वी पर दृष्टि न आती है॥
यह रूप-भार यह नई उम्र, यह कठिन मार्ग अनजाना है।
इस तरह अकेली मत घूमो, बेटी अब बुरा जमाना है॥

सतवन्ती कहने लगी, उन्हें जोड़ कर हाथ।
रहती है सतवन्ती की, बात प्राण के साथ॥
जो जाये तो सर्वस्व जाय, वरना न बात जा सकती है।
भारत-रमणी पर कामी की, टुक हवा नहीं आसकती है॥
ऐसा अवसर आही जाये, तो दो–दो हाथ दिखा देंगे।
या शाप अग्नि से पापी को, क्षण में खाक में मिला देंगे॥
वह स्वामि-भक्त सत्-निष्ठों को, इस तरह शास्त्र भी कहते हैं।
ऐसी अबलाओं के बल तो, श्रीकृष्ण मुरारी रहते हैं॥

वृद्धा ने फिर से कहा, कहो नाम कुल ग्राम।
इच्छा हो तो कुछ दिनों, करो यहीं विश्राम॥
दमयन्ती बोली माताजी, कहने में पति की आन नहीं।
इतना ही पता निशान है बस, विरहिन का पता निशान नहीं॥
यदि सत-सङ्गति मिल जायेगी, भर पेट अन्न भी पाऊँगी।
तो माता तेरी आज्ञा से, मैं भी अवश्य रह जाऊँगी॥

वृद्धा बोली लाड़ली, है तू देवि समान।
रक्खूं पुत्री की तरह, मुझसे नाता मान॥
अस्तु वहां पर रह गई, दमयन्ती फिलहाल।
यहाँ भटकते फिर रहे, बन में नल भूपाल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावी-वश बन में आग लगी, घिर गया आग में सांप वहीं।
उस समय किसी ऊँचे थल पर, राजा नल भी थे खड़े कहीं॥
सांप ने मचाया हाय ! हाय, राजा ने उसे निकाल दिया।
होकर प्रसन्न उस विषधर ने, इस तरह उन्हें वरदान दिया॥
राजन् मैंने नारद जी का, धोके से पैर चबाया है।
इस कारण ऋषि ने क्रोधित हो, मुझको भी अचल बनाया है॥
दस कदम और बाहर करदो, तो जान मेरी बच जायेगी।
वह विद्या तुम्हें बताऊँगा, जो काम हमेशा आयेगी॥

नल ने दसवें कदम पर, उसको दिया उतार।
उसी समय पर सर्प ने, काट लिया फन मार॥

हो गया शरीर श्याम सारा, फिर एक वस्त्र दो मन्त्र दिये।
पश्चात् सर्प ने समझा कर, उन मन्त्रों पर उपदेश किये॥
राजा ! तू श्याम शरीर हुआ, पहिचान न कोई पायेगा।
वस्त्र को पास में रखने से, कोई भय नहीं सतायेगा॥
पहले मन्त्र के स्मरण से ही, तू असल रूप पा जायेगा।
दूसरे मंत्र के द्वारा ही, अधिकार राज्य का पायेगा॥
जब तक तेरे दिन बिगड़े हैं, तू ऋतुपर्ण के यहां जाना।
सारथी वेष में नौकर बन, बाहुक अपने को बतलाना॥

नल पहुँचे ऋतुपर्ण के, उसकी आज्ञा मान।
एवं उनको मिल गया, सारथि का अस्थान॥

वहाँ भीम के यहाँ जब, पहुँचे पुत्री—पूत।
नल—दमयन्ती के लिये, नृप ने भेजे दूत॥

चलते—चलते वे दूत जहां, उत्तम नगरी में आये हैं।
तो दमयन्ती की दशा देख, बेचारे बहुत लजाये हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोचने लगे क्या कहा जाय ?, कहते भी लज्जा आती है।
यह राज-कुमारी राज-देवि, दासी बन समय बिताती है॥
दोनों वंशों को बट्टा है, लेकिन वश क्या ? कहना ही है।
है समय इन दिनों सहनेका, जो सिर आये सहना ही है॥

जहां आमने-सामने, मिली आंख थक साथ।
दमयन्ती के माथ से, उठ न सकी फिर माथ॥

घण्टों तक रोया किये सभी, फिर नृप को घटना समझाई।
जिसको सुन कर बेचारों से, बात भी न करते बन आई॥
अफसोस! एक इन्द्राणी को, मैंने दासी कर रक्खा है।
धिकार एक चिन्ता-मणि को, काँच के बराबर समझा है॥

दमयन्ती कहने लगी, राजन् आपद—काल।
सज्जन, ज्ञानी, चतुर, नर, यों देते हैं टाल॥

जब घर में विपदा आती है, तो वह परदेश निकलते हैं।
बाहर जाकर हर एक कदम,कुछ सोच समझकर चलते हैं॥
कुल तथा लोक की रीति समझ,हर जगह न परिचय देते हैं।
मुफ्त का किसी के घर खाके, अहसान न सिर पर लेते हैं॥
मेरा मय का रजधानी है, मैं भी उस जगह चली जाती।
लेकिन दुनियां इस हालत में, सच्ची न साध्वी बतलाती॥

बिदा हुई उस जगह से, दमयन्ती सुकुमारि।
क्या बतलायें किस तरह,घर पहुँची दुखियारि॥

रोती धोती माता आई, आगये कुटुम्बी जन सारे।
मस्तक को ऊँचा कर न सकी, दमयन्ती लाजों के मारे॥
माता ने धीरज बँधवाया, पुर—जन सारे समझाते हैं।
प्यारी पुत्री इस दुनियां में, सुख-दुःख सभी को आते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वामी का साथ निभा करके; तूने सीता का काम किया।
हे सुकुमारी यह दुख सहकर, सतियों में उँचा नाम किया॥
अब धैर्यधरो आनन्द सहित, उस जगदीश्वर का ध्यान धरो।
चतुराई से मुक्तियां सहित, स्वामी का अनुसन्धान करो॥

दमयन्ती ने विप्र-गण, बुलवाये तत्काल।
एवं उनको युक्ति-मय, समझाया कुछ हाल॥
बिदा हुए द्विज-वृन्द सब, अन्वेषण के हेतु।
जा पहुँचे सब विप्रगण, ऋतुपर्ण के निकेत॥

दरबार आम में बैठ विप्र, दमयन्ती चरित सुनाने लगे।
एवं गाथा गाते—गाते, चहरों पर दृष्टि लड़ाने लगे॥
बाहुक की आंखें स्वयं एव, झुक गईं कथा सुनते सुनते।
आँसू की धारा बह निकली, वह विरह व्यथा सुनते सुनते॥

ताड़ गये तब विप्र गण, है अवश्य नल-राज।
दो दिन तक उस जगह पर, ठहरी रही समाज॥

लेकिन बाहुक से नाम छोड़, ज्यादा कुछ भेद न पाया है।
विप्रों ने वह दमयन्ती को, सारा किस्सा बतलाया है॥
दमयन्ती ने तब निश्चय कर, यक नया चरित्र रचाया है।
अपने विवाह का समाचार, अवधेश्वर तक पहुँचाया है॥
उसमें तिथि इतनी जल्दी थी, सारथी न रथ ला सकते थे।
केवल नल ही उतनी जल्दी, शादी के दिन आ सकते थे॥
यह समाचार पाकर राजा, यात्रा का साज सजाने लगे।
सारे सारथी विनय करके, जाने से जान छुड़ाने लगे॥
इतनी जल्दी पहुँचें क्यों कर, राजा को इतनी चिन्ता थी।
इस ओर चरित्र देखने की, नल के मन में भी इच्छा थी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोले महाराज न सोच करें, मैं ही रथ का जिम्मा लूँगा।
ऐसी युक्ति से काम लूँगा, तिथि के अंदर पहुँचा दूँगा॥

अस्तु भूप भी आगये, वहां शर्त अनुसार।
भीम भूप की ओर से, हुआ पूर्ण सत्कार॥

बाहुक को भी दमयंती ने, सारी सामग्री भिजवा दी।
लेकिन भोज को चीजों में, पानी और अग्नी रुकवा दी॥
बाहुक ने मंत्र प्रयोगों से, जल और अग्नि संचार किया।
एवं बातों ही बातों में, सारा भोजन तैयार किया॥
दासी ने आकर हाल कहा, कुछ भोजन भी लेती आई।
दमयन्ती ने उनको चक्खा, तो वही स्वाद पटुता पाई॥

राजा नल का देवि ने, पाया पूर्ण प्रमाण।
रथ-शाला में खुद गई, लिये हुई संतान॥

राजा नल के पैरों पर गिर, हा हा कर रुदन मचाने लगी।
गोदी में बेटों को रखकर, अबला नारी घिघियाने लगी॥
आराध्य-देव! हे हृदय-नाथ, दासी ने क्या अपराध किया।
जो दुश्मन की नाईं भगवन!, जङ्गल में इसे बिसार दिया॥
नल बोले प्रभु की इच्छा है, जैसा चाहे सो कर सकती है।
यह सारा जगत जानता है, विपदा में बुद्धि न रहती है॥
लेकिन इससे अबमतलब क्या, यह दुखभी कल बिसराओगी।
अब तक नलकी कहलाती हो, कलको किसकी कहलाओगी॥
पैरों में देवी लोट गई, बोली स्वामी यह माया है।
केवल प्रभु के ही दर्शन को, यह सब षट-राग बढ़ाया है॥
देखिये इसी कारण कोई, दूसरा न राजा आया है।
शादी के एक बहाने से, मैंने आपको बुलाया है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे नाथ कृपा कर अब अपना, वास्तविक रूप प्रकटाइयेगा।
यह दोनों लाल पालियेगा, अरु दासी को अपनाइयेगा॥

दिया हुआ उस नाग का, पढ़ा यन्त्र नल भूप।
तीन बार के जाप से, पाया असली रूप॥

आश्चर्य तथा आनन्द–मोद, सारी नगरी में छाया है।
ईश्वर ने बिछुड़ा हुआ आज, फिर से यह जोड़ मिलाया है॥
ऋतुपर्ण क्षमा मांगते हुए, फिर वापिस हुए अयोध्या को।
नल ने फिर से द्यूत के लिये, बुलवाया अपने भ्राता को॥
दूसरे मंत्र के पढ़ते ही, फिर राजा का उद्धार हुआ।
अपने पर पुष्कर के धन पर, दो गुना राज्य अधिकार हुआ॥
कांपने लगा पुष्कर डरसे, पर करुणा–मय ने करुणा की।
सान्त्वना सहित सन्मान किया, जागीर वहीं पर लगवादी॥
द्यूत के बुरे परिणामों से, यों जङ्गल की मिट्टी छानी।
हर इच्छा फिर नल-राज हुए, दमयन्ती हुई राज-रानी॥
हे धर्म-राज जो लालच में, पाँसे से हाथ लगाते हैं।
वे मूर्ख हमेशा उसी तरह, घर-बार बेच खा जाते हैं॥
ऐसी विपदा में जो मनुष्य, केशव से ध्यान लगायेंगे।
वे इसी तरह गोविन्द स्वयं, मन की मुराद पाजायेंगे॥

नल दमयन्ती के हुए, जैसे पूरण काम।
उसी तरह हम सबों पर, कृपा करें भगवान्॥

❀ शुभमस्तु ❀

—:::❀:::—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ श्रीगणेशायनमः ❀

❀ महाभारत ❀

॥ विराट-पर्व ॥

❀ प्रार्थना ❀

सिवा दया के नहीं, और सहारा कोई ।
बिना तुम्हारे नहीं और हमारा कोई ॥
सच तो बोलो, कभी तुमको भी खबर आती है ।
तड़प रहा है कहीं दर पर बिचारा कोई ॥
हमने माना कि नहीं, बात का वह मौका था ।
बात की क्या थी, जो कर जात इशारा कोई ॥
लोग कहते हैं कि भक्तों को प्राण प्यारे हो ।
तुम्हें भी और नहीं भक्त प्यारा कोई ॥
विश्व पति ! विश्व दुखी है तो दुखी हो तुम भी ।
तुमको कहता नहीं है विश्व से न्यारा कोई ॥
जरा इधर भी नजर डालदो, गरीब-नवाज ।
कि रो रहा है यहां भाग्य का मारा कोई ॥
डूबने जारही गोविन्द की जीवन नैया ।
दिखा दो नाथ इसे, एक किनारा कोई ॥

कीचक-बध

सजा हुआ था शान्ति से, वह विराट दरबार ।
बैठे थे राजा सहित, सचिव शूर सरदार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शास्त्रार्थ कहीं पर होता था, छिड़ रहीं कहीं गायनकी लय।
तब तक आगे आवाज उठी, नर राज अन्नदाताकी जय॥
द्विज-वेष देख दरबार उठा, सिंहासन से नर-राज उठा।
द्विज-देव पधारो यों कह कर, संग्राम में सचिव समाज उठा॥
पूछा नृप ने हे देव कहो, किस कारण कष्ट उठाया है।
किस तपोभूमि से चरण धार, कुटिया का मान बढ़ाया है॥

धर्म-राज कहने लगे, है यह बात यथार्थ।
सुर नर मुनि को जगत में, भटकाया है स्वार्थ॥

श्री व्यासदेव का रखा हुआ, राजन् है कङ्क नाम मेरा।
जो राजस्थान किसी दिनथा, वह इन्द्रप्रस्थ है धाम मेरा॥
धर्म पर विपद आ जाने से, मुझ पर भी विपदा छाई है।
दो रोटी और एक कपड़ादो, इतनी आशा ले आई है॥
राजा बोला-सौभाग्य नाथ, दास भी तुम्हारा अनुचर है।
रहिये भगवन् शान्ति के साथ, यह-धर्म-राज का ही घर है॥

क्षण ही भर पीछे यहां, पहुँचे पवन कुमार।
वह आकार निहार कर, सहम उठा दरबार॥

सब समझ गये अब गड़बड़ है, झगड़ा मचने में देर नहीं।
लेकिन तब तक यह दीख पड़ा, वह है खिजलाना शेर नहीं॥
दल-शाली है बल-शाली है, लेकिन वक्त का सताया है।
अपनी किस्मत का मारा है, खुद भीख माँगने आया है॥

पूछा नृपति विराट ने, हो भाई तुम कौन।
नाम-ग्राम कुछ तो कहो, खड़े हुए हो मौन॥

भीम ने कहा क्या कहूँ नृपति, कहने में लज्जा आती है।
जो कथा उठाई जाती है, वह व्यथा आज बनजाती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह जन जयन्त कहलाता है, धर्म का तुच्छ अनुचारी है।
उन के पीछे बेकारी है, पेट के लिये लाचारी है॥
भोजन भट्टों में गिनती है, है याद उसी का काम मुझे।
हे दया-धाम हो धाम अगर, तो मिले यहां विश्राम मुझे॥

नृप बोले जब धर्म की, है तुमको पहिचान।
तो मेरे भी बन्धु वर, हो तुम अङ्ग समान॥

इस जगह रहो भोजन पाओ, शांति के साथ विश्रामकरो।
यह भी घर अपना ही समझो, जो बन आये वह कामकरो॥
नृप ने भीम को रसोई का, सबसे ऊपर मुख्तार किया।
तब तक बहन्नडा बने हुए, अर्जुन ने उन्हें जुहारकिया॥
परिचय पूरा पार्थ ने कहा, स्वामी मैं एक गवैया हूँ।
गंधरवी राग जानता हूँ, सुर तालों का परखैया हूँ॥
धर्म के द्वार का याचक हूँ, अब याचक हूँ इस द्वारे पर।
रह जाऊँगा यदि आज्ञा हो, केवल पेट के सहारे पर॥
नृप बोले सब प्रबन्ध होगा, भैया जीविका तुम्हारी को।
जाओ रागिनी सिखादो कुछ, प्यारी उत्तरा दुलारी को॥
सहदेव इसी विधि ठहर गये, फिर सैनगुप्त ग्वाले बनकर।
आरहे नकुल कुछ समय बाद, नृप के घोड़े वाले बनकर॥

पांडव—गण इस भांतिसे, हुए नृपति के दास।
पांचाली पहुँची वहां, रानी जी के पास॥

दासी वेष में रमा पहुँची, या गति में रति विरागनी है।
छवि ने सन्यास किया धारण, या ममता हुई त्यागनी है॥
रानी वह तेज पुनीत देख, खुद दौड़ पड़ी पानी लेकर।
पग धोने को झुकना चाही, आंखों से अगवानी देकर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन पांचाली पिछड़ गई, कर पकड़ रह गई रानी के।
उस पानी की अगवानी पर, छींटे डाले मृदुबानी के॥
रानी-रानी किस भ्रम में हो, मैं देवी नहीं हूँ-खलुनी हूँ।
रानी न नौकरानी समझो, मैं ललना नहीं टहलनी हूँ॥
माता मेरा स्वागत न करो, दासी हूँ कोई आज्ञा दो।
हे दया-मयी यदि देवी हो, तो कुछ सेवा की भिक्षा दो॥

रानी जी कहने लगी, इस छबि पर बलिहार।
जो तुमको दासी कहै, उसे लाख धिकार॥

तुम दासी हो या रानी हो, या छिपे रूप इन्द्राणी हो।
अथवा भावों से भरी हुई, भारत-भारती-भवानी हो॥
बेटी इस सुलझी चितवन में, लज्जा कैसी उलझन क्या है।
खुलकर लाड़ली बताओ तो, इसका असली कारण क्या है॥

पांचाली बोली जहां, फिरती है तकदीर।
काम न देते हैं वहां, धन जल बल तदवीर॥

माता जी कैसे बतलाऊँ मैं, दुखिया कौन कहां की हूँ।
हूँ जहां वहीं की समझो मैं, न यहाँ की हूँ न वहाँ की हूँ॥
श्री धर्मराज की दासी हूँ, था थाल सजाना काम मेरा।
शुभ इन्द्रप्रस्थ है धाम मेरा, समझो सैरिन्ध्री नाम मेरा॥
उन लोगों के वन होने से, मुझको बन-बन भटकाया है।
यह पापी पेट लुभा करके, द्वार पर तुम्हारे लाया है॥
जो देवि तुम्हारी साया में, जीवन का साया पाऊँगी।
तो तुम्हें और राजाजी के, रुचि पूर्वक थाल लगाऊँगी॥
रानी बोली प्रेम के साथ, घर समझो यहाँ रहो बेटी।
जो काम हमारे लायक हो, वह निःसंकोच कहो बेटी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सैरिन्ध्री कहने लगी, रहती हूँ मैं तात।
अच्छी होती है मगर, खुली खुलाई बात॥
मैं जाहिर यहाँ अकेली हूँ, पर पंच—देव रखवाले हैं।
जिन लोगोंने क्षणके क्षणमें, अगणित योधा बध डाले हैं॥
मैं भले प्रकार जानती हूँ, दस्तूर चन्द रजवाड़ों का।
जिनमें पांड़े को पूंछ नहीं, कब्जा है रांड़ों भाड़ों का॥
नव युवक हुए राजा–रईस, नव–युवती चेरी भी पाली।
पस खाल–बाल के चसके में, चेरी पर फेरी कर डाली॥
बनवाये महल लौंडियों के, घर की उखाड़ डाली छानी।
रानी को लौंडी कर डाला, लौंडी बन गई महारानी॥
कितने ही ऊँचे वंश आज, क्यों निस्सन्तान हो रहे हैं।
सच पूछो तो उनके घर पर, बस यही निधान हो रहे हैं॥
आर्यों का तेज और विक्रम, नीचों के यहां जा रहा है।
शूद्रों की प्रभा बढ़ रही है, आर्यों का पतन आ रहा है॥
मैयाजी! मैंने इस कुल पर, चर्चा यह नहीं उठाई है।
राजाजी पिता बराबर हैं, उत्तर कुमार प्रिय भाई है॥
हां कहदो कर्मचारियों से, यदि मुझ पर नजर उठायेंगे।
तो पता न चलने पायेगा, बिन मारे मारे जायेंगे॥

रानी बोली लाड़ली, ईश्वर राखे लाज।
मेरे जीते जी कभी, होगा नहीं अकाज॥
कुछ दिन पीछे नृपति की, हुआ पुत्री का ब्याह।
तथा महीनों तक रहा, वहाँ पूर्ण उत्साह॥
उसी समय आया वहां, एक मल्ल बलवान।
भारी सभा में इस तरह, दे डाला ऐलान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजन् ! है कोई वीर बबर, जो इस बराबरी पर आये।
है क्या कोई दमबाज यहां, जो मुझसे बाजी ले जाये॥
भूतल के कौने कौने पर, मैंने भी गश्त लगाया है।
लेकिन कोई माई का लाल, अब तक न सामने आया है॥
हो अगर यहाँ बल-धर कोई, तो कुश्ती का अवसर दे दो।
घर बैठे विश्व-विजय ले लो, या विजय पत्र लिख-कर देदो॥

मुड़कर देखा नृपति ने, वीर सभा की ओर।
पर चोरी हो चुका था, शहजोरों का जोर॥

पहले तो भेष भयङ्कर ही, उनकी भटवरी भुलाता है।
फिर वीर प्रशंसा सुन सुनकर, आप ही होश उड़ जाता है॥
हर तरफ नृपति की नजर गई, पर चौनजरी की नजर न थी।
बे खबरी कैसा आलम था, वीरों को अपनी खबर न थी॥
हरचन्द हिले राजा विराट, प्रति भटकी आसन हिल न सकी।
बातें थीं हृदय हिलाने की, पर कोई गरदन हिल न सकी॥

अब तो बढ़ा विराट को, जोश और अफसोस।
हाथ पटक कहने लगे, है मेरा ही दोष॥

यह बँधे हुए घोड़े रखकर, दानों में रक्खी त्रुटी नहीं।
भर पेट खिलाया नीचों को, पर काम किसी से लिया नहीं॥
मर्द के सामने ना मर्दो, उफ गर्दन भी ऊँची न करो।
शर्म के आँसुओं में नीचो, अच्छा है मिलकर डूब मरो॥
मरजाते यदि मरना होता, कौनसा अमर-पद पाया था।
इतना ही नाम कमा जाते, वह वीर सामने आया था॥

लाख जोश देते रहे, लाख दिया धिक्कार।
किन्तु न साहस कर सका, एक शूद्र सरदार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा अन्त में भूप ने, है किस जगह जयन्त ।
समाचार सुनकर उठा, उसी समय बलवन्त ॥
नृप बोले वीर जयन्त आज, अवसर है नगक बजाने का ।
वीरों की आन निभाने का, मालिक की लाज बचाने का ॥
भीम ने फकत् सिर झुका दिया, फिर कहा वीर बलधारी से ।
भैया दुनियां में कहते हैं, बेगार भली बेकारी से ॥
तुम भी महमान यहाँ पर हो, मैं भी महमान यहां पर हूँ ।
या यों समझो सीधा-सादा, नृप की इच्छा का नौकर हूँ ॥
उनकी रुचि इच्छा रखने को, सामने तुम्हारे आना है ।
आपस में खेल खेलना है, लोगों का चित्त रिझाना है ॥
इसलिये जरा हिल मिल करके, नाटक सी लीला ठनी रहे ।
सांप भी बहम का मरजाये, लाठी भी साबित बनी रहे ॥

भट बोला जानूं नहीं, हेल-मेल का खेल ।
अगर खेल मंजूर है, तो सच्चा ही खेल ॥

यह सुनकर भट भीम को, आई कुछ मुसकान ।
ताल ठोंक आगे बढ़ा, वो बांकुरा जवान ॥
खम ठोक तनिक दम रोक२, दम बाज कदम दर कदम बढ़े ।
दम बढ़ा इधर दम बाजों का, दम-दार उधर दम ब-दम बढ़े ॥
भिड़ गये धूल देकर दोनों, झूल में झुलाई होने लगी ।
फूलों में कुछ भिड़न्त ठहरी, फिर हाथा पाई होने लगी ॥
मल्लका एक घूंसा खाकर, बल-धर जयन्त कुछ विचल गया ।
पर भटका घूंसा पड़ते ही, प्रति भटका दम ही निकल गया॥

छाया सब दरबार में, सहसा जय-जय कार ।
नृप विराट ने वीर का, किया आत्म सत्कार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी भांति हाथी वहां, बिगड़ गया इक बार।
भट जयन्त ने पकड़कर, सब मद दिया उतार॥
कीचक भी था उन दिनों, नरपति का महमान।
था वह भी बल में अतुल, सौ गजराज समान॥

वह नृप विराट का साला था, कीचक पुर का अधिकारी था।
तेजसी बिक्रमी सब कुछ था, लेकिन मदान्ध व्यभिचारी था॥
एक दिन गई पांचाली जब, उसके आगे थाली लेकर।
तो थाली के बदले खल की, रुचि पहुँची थाली वाली पर॥
भर गया पेट छवि दर्शन से, व्यञ्जन की थाली हुई नहीं।
जल उठी दीप माला मानो, पर दिव्य दिवाली हुई नहीं॥
पाये दो चार निवाले भी, या था दिल का ताना बाना।
था इसी बहाने देख रहा, उस देवी का आना जाना॥

रूप-सुधा से शांत कर, अपनी क्षुधा पियास।
डेरे को गमनित हुआ, कीचक निपट उदास॥

आंखों से आंखें दूर हुईं, तो आंखें आंसू भरने लगीं।
उस मद मय आंखों वाली की, आंखें ही स्वागत करने लगीं॥
जिसमें न प्रेमिका नजर पड़े, वह राहगीर की राह न थी।
जिसमें न चाह की बू निकले, ऐसी कोई भी आह न थी॥
हर बार मारता था मनको, पर मरे हुए पर मार कहाँ।
मन बोला वह मृदुमार कहां, दिल बोल उठा दिलदार कहाँ॥

ज्यों त्यों कर कुछ समय तक, लेता रहा उसास।
बे बश होकर अन्त में, गया बहिन के पास॥

कम्पित तन सूखे बदन, बोला क्रूर-कमीन।
बहिन भीख को मांगने, आया है यह दीन॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुस्ताखी है बे अदबी है, कारण तू बहिन हमारी है।
है बात शर्म की परदे की, क्या करूं मगर लाचारी है॥
तेरी चेरी सैरिन्ध्री ने, मेरे चित्त को चुराया है।
हाथों में होश हवास नहीं, ऐसा कुछ जहर पिलाया है॥
हर बार हृदय समझाता हूँ, लेकिन वह हाथ न आता है।
क्या जाने कोई छिपे हुए, रह रह कर याद दिलाता है॥
मेरे आशा के फूलों में, कोई मोहनी झूलती है।
चाहे अच्छा या बुरा कहो, सैरिन्ध्री नहीं भूलती है॥
उसका मिलाप गर हो जाये, तो हाजिर हूँ मरजाने को।
देवी कुछ नहीं चाहता हूँ, दे यही दान दीवाने को॥

रानी ने उत्तर दिया, ओ पागल नादान।
उसको चेरी मत समझ, है भानजी समान॥
मैं बेटी उसे मानती हूँ, दासी क्या सती शिरोमणि है।
इस चेरि-वेष में रहने का, ईश्वर जाने क्या कारण है॥
मैं उसकी स्वामिन होकर भी, उसके संयम पर मरती हूँ।
कुछ ऊँच-नीच कर्म के लिये, आज्ञा देने से डरती हूँ॥
वह पञ्च देव की साया में, देवी सर्वदा विचरती है।
उसकी दिन चर्या के आगे, चतुराई काम न करती है॥
इसलिये तुझे समझाती हूँ, यदि उस पर नियत डिगायेगा।
तो याद रहे उन देवों के, द्वारा ही मारा जायेगा॥

सुनते ही फटकार वह, लौट पड़ा तत्काल।
पर न दबाये से दबी, जले हृदय की ज्वाल॥
गई देवि फिर थाल ले, वहीं झुकाये माथ।
मौका पाकर नीच ने, पकड़ लिया झट हाथ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कांटे वाली कट कर न काट, यह दिल है कोई रूख नहीं।
भूखा हूँ तेरे भोगों का, इन भोगों की अब भूख नहीं॥
रहने दे प्रणय-पुष्प प्रणय का, इस प्रेम-मूर्ति मन-हारी पर।
हो तनिक दया सी दृष्टि प्रिये, अपने प्रेम के पुजारी पर॥

सैरिन्ध्री कहने लगी, नर—पति छोड़ो हाथ।
उफ अनुचित सम्बन्ध यह, पर-नारी के साथ॥

पर नारी जूठी पत्तल है, जिसको कुत्ते ललचाते हैं।
पर—नारी ही वह खूनी है, जिस पर कि खून बह जाते हैं॥
राजा होकर भी विषय भोग, करते हैं और नारियों से।
उसका सीधा मतलब यह है, यह है व्यभिचार बेटियों से॥
अपना सरबस न काटना हो, यदि छलकी छिपी कटारी से।
दोनों ही लोक निभाना हो, तो दूर रहो पर—नारी से॥

कीचक ने उत्तर दिया, है मुझको सब ज्ञात।
पर मन के अन मन हुए, नहीं हाथ की बात॥

मैं मन मौजी का चेरा हूँ, जो मचल गया मुसकाने पर।
नीति की रीति का असर कहां, प्रीति के किसी दीवाने पर॥
उसको तो केवल प्रेम—पात्र, या प्रेम—पंथ दिखलाता है।
यह तो संसार जानता है, प्रेमी अन्धा हो जाता है॥
इसलिये माननी मान छोड़, मान ले अमाने का प्रण है।
प्रियतमे प्राण रहते तू है, एवं प्रेमी का जीवन है॥

सैरिन्ध्री कहने लगी, हूँ राजन् लाचार।
मुझको अपनी देह पर, आप नहीं अधिकार॥

जिन पंच देव की साया में, यह काया विचरण करती है।
वह साया ही बस आठ पहर, मेरा संरक्षण करती है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि मेरे कर्म कुकर्मों का, हे देव पता पा जायेंगे।
तो मैं भी मारी जाऊँगी, आप भी न बचने पायेंगे॥
इस लिये अगर मेरी मानो, तो इस प्रकार घबराओ ना।
कुछ शुद्ध प्रेम का सुख लूटो, दोनों के प्राण गँवाओ ना॥
वे बातें ऐसी बातें थीं, जिन में छल का आसार न था।
आशा भी थी झांसा भी था, इकरार न था इनकार न था॥

उसी समय कुछ राज्य की, हुई समस्या पेश।
कीचक को जाना पड़ा, वापिस अपने देश॥

पर तन ही तन लेगया वहां, मन छोड़ गया सैरिन्ध्री पर।
चल दिया धनी निर्धन बनकर, धन छोड़ गया सैरिन्ध्री पर॥
मिलने वाले मिलने आये, पर मेल मेल का मिला नहीं।
क्या झड़े धूलरूखे मुँहकी, जब फूल हृदय का खिला नहीं॥

पूँछ ताछ कर जल्द ही, खींच सांस का तार।
जा लेटा एकान्त में, वह प्रेम का शिकार॥

जब तक प्रेमी से प्रेमी की, चौ नजरी होती जाती है।
तब तक कुछ काम बने न बने, पर आशा बँधती जाती है॥
लेकिन जब घोर निराशा का, सहसा वियोग आ जाता है।
तो इसमें कुछ संदेह नहीं, तब टूट कलेजा जाता है॥
कीचक कामी क्रूर ही सही, पर ये हालत तो घर-घर है।
जो विरह-बाण का घायल है, उसका मालिक परमेश्वर है॥

पानी भी मांगा नहीं, हुआ न घर का ध्यान।
दूती को पहले गया, कीचक का फरमान॥
सैरिन्ध्री के पास जब, भेज दिया पैगाम।
तब काम के गुलाम ने, किया दूसरा काम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब तो रानी के महलों में, वह हवा ख्वार दूती पहुँची।
कामी की रजपूती पहुँची, या कीचक की ही दूती पहुँची॥
एकान्त और मौका पाकर, सैरिन्ध्री को फुसलाने लगी।
विपदा के फक्त बहाने से, वह त्रिया चरित्र दिखलाने लगी॥
बोली उफ यह अनुराग मूर्ति, किस जगह बिरागी बागों में।
कुंजों में कू-कू करन हार, कोकिला कहाँ इन कागों में॥
लाड़ली लली तेरी रेखा, रानी कैसी दरसाती है।
अचरज है मगर न जाने क्यों, गैरों के टुकड़े खाती है॥

सैरिन्ध्री कहने लगी, बाची नीति निधान।
मनुज नहीं बलवान है, समय होत बलवान॥

जब रानी थी हैरानी थी, अब दासी हूँ हैरानी है।
उस समय भ्रांतिका शरबत था, इन दिनों शान्ति का पानी है॥
सम्पति भी ठहर न पायी है, विपदा भी नहीं ठहरायेगी।
जो सब सम्पति ही ले बैठे, तो विपति कहां को जायेगी॥
मेरा तो निश्चय है! मेरी, वे लीला-धाम बनायेंगे।
जो सदा निभाते आये हैं, तो मेरी क्यों न निभायेंगे॥

दूती ने उत्तर दिया, इस मति पर बलिहार।
तू है ज्ञान विवेक में, देवी का अवतार॥

जिस महा-काल निर्माता ने, भावी का चक्र बनाया है।
शायद उस विश्व-विधाताने, मुझको तुझ तक पहुँचाया है॥
तदवीर और तकदीर लली, एक ही भाव प्रकटाती है।
तदवीर जिसे कर देती है, तकदीर वही कहलाती है॥
चल मेरे साथ अगर बेटी, तो विपदा को पानी करदूं।
पट बदलेगी तब बदलेगी, पहले तो पटरानी—करदूं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सैरिन्ध्री बोली किस प्रकार ?, दुती बोली कीचक द्वारा ।
बस क्या था तनिक इशारेसे, खलका खुल गया भेद सारा ॥
चट उचट लपट चट-पटकरके, झट झटक-पटक झटकामारा ।
घूंसा लातों से स्वागत कर, लट खींच २ लटका मारा ॥

हा हा चिल्लाती हुई, भागी वह बिलखाय ।
भगवन् दुखिया देश की, कुछ तो करो सहाय ॥

पशु-तुल्य भोग या वेश्यायें, युवकों को खाये जाती हैं ।
उस से भी ज्यादा भारत को, दूतियां मिटाये जाती हैं ॥
देश पर राम-नामी साड़ी, कर में माला मुख में स्वाहा ।
बहनो बचियो नागनियों से, आगे आहा ! पीछे हा ! हा ॥

सैरिन्ध्री का जब सुना, कीचक ने व्यवहार ।
तो विराट-पुर के लिये, चला दूसरी बार ॥
पाते ही एकान्त में, पकड़ गया तत्काल ।
थाल फेंक कर हाथ से, कहा कृपाण निकाल ॥

हत्यारिन जल्दी से बतला, क्या मेरा कहना करती है ।
या मरने वाले के हाथों, बे मौत आप ही मरती है ॥
मेरी इस माया के आगे, बुला सभी माया वाले ।
मेरी कृपाण की साया में, हैं ? कहां आज साया वाले ॥

सैरिन्ध्री ने ली समझ, है कुसमय की आड़ ।
क्षण भर में बन जायगा, तिलकी ओट पहाड़ ॥

यदि मुँह से हाँ ही निकल गई, तो धर्म-कर्म सब जायेगा ।
जो नहीं कहा तो इसी समय, वह कामी द्वन्द मचायेगा ॥
द्वन्द के साथ ही पाण्डव गण, इसको कब जीता छोड़ेंगे ।
यह खबर फैलते ही कौरव, फौरन तलाश को दौड़ेंगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जायेगा तनिक में, सारा बंटा—ढार।
अस्तु मारनी चाहिये, खल पर मीठी मार॥

बोली यदि यही बात है तो, नाहक ही क्यों घबराते हो।
यदि विषय-भोग ही करना है, तो दिन को क्यों ठहराते हो॥
भोजन पाओ विश्राम करो, भगवान् रात भी लायेंगे।
मन को कुछ समय मनाये रहो, फिर हम आप ही मनायेंगे॥

निकल गई यों द्रोपदी, कर कीचक को शान्त।
कहा धर्म से देवि ने, पाकर कुछ एकान्त॥

धर्मेश धर्म की फिक्र करो, अब धर्म हाथ से जाता है।
गैर की गुलामी महाराज, भिक्षा से भी दुख पाता है॥
पति-देव विपतिका पता कहां, यदि रहे विपतिमें पत नीकी।
अब हे पत के पतबार चली, पत आगे पति के पत्नी की॥

द्रुपद-सुता ने धर्म को, बतलाया सब हाल।
नजर झुका कर रह गये, धर्म-राज प्रणपाल॥

भर कर आह को यही बोले, देवी न मुझे लाचार करो।
जो सबकी सुनने वाले हैं, उन प्रभु से विनय पुकार करो॥
यदि हम कुछ करही सकते तो, कौन से काम आसान न थे।
जब भरी सभा में रोती थी, क्या वहां हमारे कान न थे॥
पति के आगे पत्नी पर ही, हो रही हजारों घातें हैं।
हम नीची नजरों से देखें, यह मर जाने की बातें हैं॥
सच तो ये है तेरे सत के, वास्तव में काल-दूत हम हैं।
क्या और किसीपर दोष धरें, जब खुद ही कुल कुपुत्र हम हैं॥
इसलिये हमारा बल लेकर, फिर चौपड़ का पांसा न करो।
अपने सतव्रत पर अटल रहो, हम दासों की आशा न करो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो प्रकटे थे साड़ी बन कर, फिर प्रकट कला धारी होंगे।
हे प्यारी उनसे आशा कर, फिर आड़े बनवारी होंगे॥

इतना कह कर धर्म ने, तत्क्षण किया पयान।
गई पार्थ के पास में, देवि निराशा जान॥

बोली ओ प्रण-धारी सचेत, अब कर से नारा जाती है।
ओ आन-बान वाले स्वामी, अब आन तुम्हारी जाती है॥
यह नाक-धारी होवे न खाक, दासी नाथ के सहारे है।
हे लज्जा पति यह याद रहे, अब लज्जा हाथ तुम्हारे है॥

अर्जुन ने भी अन्त में, मस्तक लिया झुकाय।
कहा प्रिये असहाय हूँ, क्यों कर करूँ सहाय॥

जो कान आन को सुनते थे, पार्थ के रहे वे कान नहीं।
जिसपर अभिमान मानका था, वे तरकस और कमान नहीं॥
दे दिया जवाब धर्म तक ने, तब धर्म-कर्म की चलती क्या।
सिक्का न रहा सम्राटों का, तब कलदारों की गिनती क्या॥
इन करुणा भरी पुकारों से, दिल हिला न अन्तर्यामी का।
तो जान पड़ा होगा न अन्त, भारत से कभी गुलामी का॥
बल्लभे! यही मैं कहता हूँ, बेकार किसी पर जाओ ना।
तुम खुदही लज्जा मूरति हो, लज्जित को और लजाओ ना॥

दिया नकुल-सहदेव ने, इसी भांति से टाल।
देवी ने तब भीम से, कहा सुना कर हाल॥

भटराज-भीम केवल तुमतक, अब इस दुखिया की आशा है।
अन्यथा मुझे विश्वास हुआ, दुनियां का एक तमाशा है॥
धर्म से धीर पार्थ से वीर, जब स्वार्थ-मात्र के चेरे हैं।
संकट में मेरे हुए नहीं, तब क्या समझूं? वे मेरे हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनका उत्तर ले आई हूँ, अब अपनी इच्छा प्रकटा दो।
प्रण करो प्रिया की लज्जा पर, या जहर कहीं से मंगवादो॥

भीमवीर विख्यात को, हो किस तरह समात।
धीरज दे कहने लगे, बस इतनी सी बात॥

जिसके पीछे नाहक ही में, तुम इधर उधर क्यों बिलपाई।
जिस समय बखेड़ा फैला था, सीधी क्यों यहीं नहीं आई॥
डरते हैं धर्म-पार्थ इस पर, छिपने का भेद न खुलजाये।
मतलब के पुतले की मिट्टी, बन-बन कर कहीं न धुलजाये॥
मेरे आगे तेरह तो क्या, तेरह सौ बरस प्रवास मिले।
पीने को गम के आंसू हों, खाने को सूखी घास मिले॥
शौकत हशमत पर धूल पड़े, जो साबित अपनी इज्जत है।
बे इज्जत से यदि जिया किये, तो उस जीने पर लानत है॥
तुम अपने वादे पर जाओ, मैं भी कुछ पीछे आऊँगा।
लो प्रिये प्रतिज्ञा करता हूँ, कीचक को मार गिराऊँगा॥

पहुँचे आधी रात पर, भट कीचक के पास।
जगा रहा था नीच को, आशा मय विश्वास॥

आशा की मूर्ति इधर पहुँची, मौत का मुहूर्त उधर पहुँचा।
निश्चर का बिन पहुँची पहुँचा, पहुँची के पहुँचे पर पहुँचा॥
पहुँचा पहुँची के अरसे में, डेरे में हुआ तड़ाका सा।
धम्-धम् मच गई अंधेरे में, भूतल पर पड़ा धड़ाका सा॥

राजा-रानी चौंक कर, करने लगे विचार।
बाहर जाने के लिये, हुए नृपति तैयार॥

लेकिन रानी ने रोक लिया, बोली प्रभु नादानी न करो।
अन जानेजो कुछहुआ हुआ, पर जानेपर अनजानी न करो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कामी कीचक सैरिन्ध्री पर, मुद्दत से दाँत जमाये है।
इस कारण आने जाने का, यह पापी तार लगाये है॥
गो कीचक मेरा भाई है, मेरे मयके का भूषण है।
लेकिन मैं तो ये समझी हूँ, मेरे कलंक का कारण है॥
सब कहती हैं मेरा---भाई, कुछ कर जाये तो अच्छा है।
मैं कहती हूँ ऐसा पापी, यदि मर जाये तो अच्छा है॥
उसने ही आज समय पाकर, कुछ माया जाल रचाया है।
लेकिन देवी के देवों ने, दानव को आन दबाया है॥
इस कारण बाहर जाओ ना, जाने में लाभ न पाओगे।
उस पापी को मरना ही है, तुम नाहक कष्ट उठाओगे॥

खींच खांच कर कीचका, चूरा दिया निकाल।
वापिस आये भीम भट, उसे खोह में डाल॥

प्रातकाल जाहिर हुआ, सब लोगों को हाल।
लाश देख कहने लगे, इस प्रकार नर-पाल॥

कीचक की मौत हुई सो हुई, अब अपनी मौत दिखाती है।
यह कुम्भकरण की तरह लाश, किसतरह जलाई जाती है॥
इस नगरी के वीरों में भी, साहस है नहीं उठाने का।
जब लाशा ही उठने न सका, क्या चर्चा कहाँ जलाने का॥
भटवर जयन्त तुम ही जाओ, यह लाश उठाकर लेजाओ।
अपने घर ही का काम समझ, पापी की मिट्टी देआओ॥

सीधा कहा जयन्त ने, हम हैं एक गुलाम।
मुरदों का ढोना मगर, नहीं हमारा काम॥

हम नौकर हैं भंडारे के, सौ गुनी रसोई बनवालो।
लेकिन मुरदे ढुलवाना है, तो मरघटियों को बुलवालो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कहना है और गुलामों का, मालिक को कहाँ गवारा है।
राजा विराट भी बोल उठे, कौन सा यहाँ भंडारा है॥
हक है! ये कहाँ गुलामी में, आज्ञा देने से उबल पड़े।
बू थी इस कदर रईसी की, तो टुकड़ों को क्यों निकल पड़े॥
यह धर्म-राज का है लिहाज, जो तुम्हें यहां ठहराया है।
जो हुआ खैर अब दोष किसे, जो किया उसी को पाया है॥

धर्म-राज का नाम सुन, हुआ वीर को ध्यान।
हाथ जोड़ भटवर वहीं, लगा पकड़ने कान॥

हे क्षमा-धाम मैं? भूलगया, जो पेट पालना चाहेंगे।
तो मुरदों का ढोना तो क्या, मल मूत्र उठाने जायेंगे॥
हक कहाँ उन्हें कुछ कहने का, पेशा ही जिन्हें सलामी है।
मैं भूल गया हूँ याद पड़ा, आजादी नहीं गुलामी है॥

गायन—देखो गुलाम लोगो, तासीर गुलामी की,
करना न भूल कर भी, तदवीर गुलामी की।
नाहर से घूमते थे आजादियों के वन में,
पाबन्द कर चुकी है, जंजीर गुलामी की।
हो लाख भलामानुष लेकिन है खता सर पर,
सच पूछिये तो यह है, तकसीर गुलामी की।
गोविन्द हिन्द में क्या आये? बुए आजादी,
घर-घर में लग चुकी है, जंजीर गुलामी की॥

जो हुआ खैर कुछ खाने का, हे दया धाम मँगवा दीजै।
फिर कीचक क्या उसका कुलभी, इस सेवक से उठवालीजै॥
भोजन पाकर वह महावीर, कीचक की लाश निकाल चला।
नगरी से बाहर एक जगह, बस एक चिता में डाल चला॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन इससे न वह, किस्सा हुआ तमाम।
कीचक के सौबन्धु थे, उसी तरह बलधाम॥

वह सब मिल करके आ पहुँचे, घर-घर में कलह मचाने लगे।
भाई के मरने का बदला, दीनों को मार चुकाने लगे॥
तब तक विराट आकर बोले, वीरो क्या करने आये हो।
क्या कीचक ही के साथ साथ, तुम सब भी मरने आये हो॥
डाकू डाका दे निकल गया, उस पर कुछ चला उपाय नहीं।
घेरना मुहल्ले वालों को, मुँह जोरी है कुछ न्याय नहीं॥
वह वीर नहीं कहलाते हैं, जो घर में जोर जताते हैं।
जाओ ढूढ़ो बदला लेलो, हम खूनी को बतलाते हैं॥
गन्धर्व-जाति के योद्धा ने, बलधर कीचक को मारा है।
जाओ उससे संग्राम करो, वह असली शत्रु तुम्हारा है॥

वह डरने वाला नहीं, था भाई का लाल।
फिर सैरिन्ध्री दीन के, पकड़ लिये झट बाल॥

बोले बस हाथ शिकार लगा, अब इसको ही ले जायेंगे।
अब इसकी आन बचाने को, गन्धर्व आप ही आयेंगे॥
भाई ने इसका हाथ छुआ, इससे यह उसकी नारी है।
उस भाई पन के नाते से, ये भावज हुई हमारी है॥
अब भाई ही के साथ साथ, हम इसको सती करायेंगे।
या किसी बन्धु से शादी कर, अपने घर में ठहरायेंगे॥

फिर से पहला सा उठा, करुणा भरा विलाप।
पर अबलाके रुदनपर, हुआ न सबलप्रताप॥

उस समय एक दुःशासन था, अब सौ दुःशासन आये हैं।
वह साड़ी हरता था ये सब; प्राणों की घात लगाये हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिलपाती अबला नारी को, कीचक के भाई खींच चले।
डकराती कपिला को मानो, मति मन्द कसाई खींच चले॥
राजा विराट मुँह डाल रहे, गर्दन न उठी सरदारों की।
पड़ गई खाक बलवीरों पर, मुड़ गई नोंक तलवारों की॥

किसी तरह से जब नहीं, मिला दया का तार।
लगातार तब उठ चली, करुणा भरी पुकार॥

❀ गायन ❀

है क्या कोई बलधारी, जो सुने पुकार हमारी।
पापी-खल अत्याचारी, पकड़े हैं बांह मुरारी॥
बिलपात सती दुखियारी।
जो सुने पुकार हमारी॥
सुर रहे न सुर-मण्डल में, या वीर नहीं भू-तल में।
या जग से दया सिधारी।
जो सुने पुकार हमारी॥
सुर नर मुनि कोई आओ, दुखियारी की लाज बचाओ।
व्रत राखो कुञ्ज बिहारी!॥ जो०॥

भट जयन्त उस टेर पर, फिर न रहा खामोश।
निकल गया दरबार से, बिना जताये जोश॥
भटवर ने भय प्रद भेष धार, भुर भुरी भभूत रमाई है।
किलकारी भर बलधारी ने, केवल धर मार मचाई है॥
यह सिसक रहा वह तड़प रहा, यह यहां पड़ा वह वहाँ पड़ा।
जा सका न कोई यहां वहां, जो जहां पड़ा सो तहां पड़ा॥
देवों का पता लगाने में, दानव खुद ही लापता हुए।
आये थे सती कराने को, पर सती नहीं वह सता हुए॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक ही एक हुंकार मार, सबका हौसला निकाल दिया।
फिर सबको जोड़ बटोर वहीं, एक ही चिता में डाल दिया॥
सैरिन्ध्री को महल में, भेज गया बलराय।
फिर पहुँचा दरबार में, असल रूप प्रकटाय॥
भट जयन्त को देखकर, यों बोला नरपाल।
कहो वीर-वर! क्या हुआ, उन लोगों का हाल॥
वीर ने कहा कुछ पता नहीं, क्या माया जाल रचाया है।
एक ही देव ने प्रकटा कर, उन सबको मार गिराया है॥
उन वीर हौसला मन्दों का, खो गया हौसला पल में है।
वे नीच नरक में रोते हैं, सैरिन्ध्री देवि महल में है॥
कुम्हलाने से बदन पर, आया विमल विकास।
कह विनीत आनन्द से, जय२ जगत निवास॥

गौ-रक्षण

कीचक-बध का हाल सुन, बोला कौरव-राय।
कर्ण बन्धु इस विषय में, दो कुछ अपनी राय॥
कर्ण ने कहा मेरी तो क्या, सबकी आत्मायें कहती हैं।
यदि कीचक का मरना सच है, तो लाख तरह पाण्डव ही हैं॥
बहतर है अपना दल लेकर, उस नगरी पर घेरा डालें।
फिर वक्त वक्त की चालों से, उन सबका पता लगा डालें॥
सम्मति सुनकर दल सहित, बढ़े वीर मुँह जोर।
नृप विराट के नगर को, घेर लिया चहुँओर॥
पहले से गुप्तचरों द्वारा, घर घर का पता लगाया गया।
कुछ लोगोंको फुसलायागया, कुछको लालच दिखलायागया॥
जब साम दाम बेकार हुए, तो दण्ड-नीति दिखलाने लगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गौ दल को छीन छिना करके, ग्वालों को मार भगाने लगे।
ग्वालों ने जाकर कहा, नृप विराट से हाल।
मन मसोस नृप ने कहा, जाओ मेरे लाल॥
इस समय वीर वर कीचक की, रह रह कर याद आरही है।
कोई स्मृति बल-बाहों की, कानों में कीर्ति गारही है॥
हो बुरा भला पर घर का हो, तो काम समय पर आता है।
घर का कूड़ा भी जुड़ २ कर, खाद के काम आ जाता है॥
सच है जब चीज न रहती है, तब कद्र समझ में आती है।
हाथ से वस्तु खो जाने पर, याद ही याद रह जाती है॥
यदि आज वही भट-वर होता, तो खल-घट फूट गये होते।
हथियार छूटने से पहले, दल-बादल टूट गये होते॥
लेकिन इस पर चारा क्या है, हो तुम्हीं अकेले जाने को।
जाओ बेटा! जाओ लाला! जननी की लाज बचाने को।
मेरे कुमार देश के लिये, सर देने को बैताल बनो॥
जनता के लिये नृपाल बनो, उन गौओं के गोपाल बनो।

आज्ञा पाकर भूप से, चले शूर सरदार।
पहले ही से था वहां, कौरव दल तैयार॥
मच गई परस्पर मार-मार, दल विचल पड़ा सरदारों का।
लेकिन जयन्त की मारों से, दम टूट गया दमकारों का॥
कुछ वीर लड़ाके लड़ा किये, कुछ बल-धर गौ-धन हाँक चले।
कुछ भाग चले कुछ त्याग चले, कुछ खोल चले कुछ ढाँक चले॥

सैन गुप्त ने मन्त्र से, गौ-दल अचल बनाय।
मार-मार कर सेल से, दी सेना विचलाय॥
तब तक विराट भी आ पहुँचे, सहसा विराट संग्राम हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितने वीरों का नाम हुआ, कितने का काम तमाम हुआ ॥
रण वीर सुशर्म्मा भाग गया, रण-धीर शंख बे होश हुआ ।
बँध गये विराट बन्धनों में, वीरों का ठण्डा जोश हुआ ॥
लेकिन फिर गुप्तसैन ग्वाला, आगे को बढ़कर आया है ।
दल मल कर सारा खल मण्डल, भूप को छुड़ाकर लाया है॥
लौटा जयन्त पहले दल से, तो सब दल बादल तोड़ चला ।
हाथी पर हाथी छोड़ चला, घोड़ों के जोड़े फोड़ चला ॥

ज्यों ही यहां विराट की, छाई जय जयकार ।
त्यों ही उत्तर की तरफ, फैल गई धर-मार ॥

उस ओर वीर दुर्योधन था, जमघट था कुल सरदारों का ।
बस असली वह मुकाबिला था, राजों का राजकुमारों का ॥
कर्ण ने मन्त्र से गौओं के, पैरों में कीड़े उपजाये ।
उस दल की महा मार खाकर, ग्वाले बेचारे चिल्लाये ॥

लौट चुके थे उस समय, इस दल के सरदार ।
कहा विराट कुमार ने, सुन पुकार इस बार ॥

उस ओर लड़ाई वह लेगा, जो हर जौहर में सच्चा है ।
मैं तो साहस करता लेकिन, क्या करूँ सारथी कच्चा है ॥
सैरिन्ध्री बोली इस निमित्त, साथ में वृहन्नल जायेंगे ।
इच्छा से बढ़ कर रथवानी, वे आज कुँवर दिखलायेंगे ॥
यह केवल नहीं गवैये हैं, परमारथ लिये स्वारथी हैं ।
हिन्द के प्रसिद्ध लड़ाके हैं, पारथ के सिद्ध सारथी हैं ॥

ताक उठे उत्तर उन्हें, सुन दासी के बोल ।
कहा वृहन्नल ने मगर, करो न व्यर्थ ठठोल ॥

सैरिन्ध्री पोल खोल मत दे, फल अच्छा नहीं ठिठोली का ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस हालत में मेरा—तेरा, नाता है दामन–चोली का ॥
भैया हम भांड नचैये हैं, हम से मत ऐसी आश करो।
जो तुम्हें युद्ध में जाना है, तो कोई वीर तलाश करो ॥

उत्तर तो ये वचन सुन, मौन हुआ मन मार।
पर सैरिन्ध्री देवि का, बदला नहीं विचार ॥

उत्तरा देवि के पास गई, बोली बहिना क्या करती हो।
कुछ देश काल की भी सुधि है, या फकत राग पर मरती हो॥
क्या खबर नहीं है बहिन तुम्हें, घर बैठे आफत आई है।
राजा जी कठिन चक्र में हैं, काल के गाल में भाई है ॥

कहा उत्तरा ने अली, सुनती हूँ सब बात।
पर क्या करने योग्य है, यह अबला की जात ॥

रींधना भूँजना पड़ रहना, शिशु पालन काम हमारा है।
बहिना तुम स्वयं जानती हो, रण में अपना क्या चारा है ॥
सैरिन्ध्री बोली गलत बात, यह कब माना जा सकता है।
देश के काम में अबला क्या ?, मुरदार काम आ सकता है॥
अबलाओं से कुछ भी न बने, तो बल के बोल मिला डालें।
अपनी हिलती आवाजों से, भू-तल के खण्ड हिला डालें ॥
सङ्गठन करें भिक्षा मांगें, भारत के लिये लगा जायें।
वह बली नहीं कर सकते हैं, जो कर सकती हैं अबलायें ॥

आ पहुँचा है आज ही, एक तुम्हारा काम।
उत्तर को उत्तर तरफ, करना है संग्राम ॥
अपने गुरु से विनय कर, करदो वचन सहाय।
बने बृहन्नल सारथी, तो सङ्कट कट जाय ॥
गई उत्तरा वेग ही, बृहन्नला के पास।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल इतना ही कहा, गुरु–वर तेज निवास ॥
बोले वृहन्नल चहरे पर, उलझन की कौन समस्या है ? ।
आधा कहकर क्यों मौन हुई, लाड़ली कहो कारण क्या है॥
बोली उत्तरा सुना है प्रभु, कुरु–राज यहां पर आया है ।
कवियों ने उसके महाबल का, कितना ही यश बतलाया है॥
विश्वास मुझे है यदि गुरु ही, संग्राम भूमि की दिश जायें ।
तो कौरव-पति के पट भूषण, इन आंखों के आगे आयें ॥

वृहन्नडा ने अन्त में, किया सारथी भेष ।
उत्तर–भट के सामने, रण में किया प्रवेश ॥

लेकिन उत्तर का दल देखा, तो उत्तर से उत्तर न बना ।
धन्वा साधा तरकस न सधा, तरकस साधा तो सर न बना ॥
चौकन्ना होकर चौंक पड़ा, बोला भैया रथ लौटाओ ।
मेरा जीवन रखना हो तो, काल के आगे न ले जाओ ॥
इस टिड्डी–दल के आगे अब, जम सकते मेरे पैर नहीं ।
मैं भली भांति से समझ गया, इस रण में मेरी खैर नहीं ॥

वृहन्नल कहने लगे, क्या कहते हो ? तात ।
काया पाकर मर्द की, नामर्दों की बात ॥

ऐसा ही दल हर तरफ हुआ, तो कहो कहां को जाओगे ।
मान लो प्राण ले भाग गये, तो अमर नहीं हो जाओगे ॥
क्षत्रिय कुल में जीवन पाकर, जो पीठ शत्रु को दिखलायें ।
अच्छा है पैदा होते ही, वे वंश कलङ्की मर जायें ॥
ऐसे दिन की तो क्षत्रिय गण, जीवन भर आश लगाते हैं ।
योद्धा-गण परम भाग्य ही से, युद्ध में वीर–गति पाते हैं ॥

भय छोड़ो संग्राम लो, बढ़ो वीर–सरताज ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज तुम्हारे हाथ है, वीर वंश की लाज ॥
उत्तर ने उत्तर दिया, छोड़ गया बल साथ।
धनुष उठे किस हाथ से, नहीं हाथ का हाथ ॥
रण में जाने से पहले ही, यह धन्वा खिसका जाता है।
उस महा चक्र के चक्कर में, जाने से सिर चकराता है ॥
संग्राम वीरता या समता, नर की शक्ती पर निर्भर है।
भैया ! इस ज्वाला में जाना, मेरे साहस से बाहर है ॥
वीर वृहन्नल ने कहा, है आगे संग्राम।
नहीं चलेगा अब यहां, बातों ही से काम ॥
मुझको सारथी बनाया है, तो रथ न लौटने पायेगा।
या दुश्मन वापिस जावेगा, या लाशा वापिस जायेगा ॥
भैया ! तुम बैठे रहो फकत, हाथ में गहो हथियार नहीं।
मैं सारा काम बना लूंगा, तुम पर आयेगा वार नहीं ॥
लेकिन वास्तव में उत्तर का, था होश हाथ से विचल गया।
वह कूद पड़ा फौरन रथ से, रण भूमि छोड़कर निकल गया ॥
लेकिन कूद कर वृहन्नल ने, उत्तर कुमार को पकड़ लिया।
दी हाथ पैर की मुश्क बांध, रथ के बाजू से जकड़ दिया ॥
बोले ओ कायर ! युद्ध छोड़, क्या मां का दूध लजायेगा।
बाप का नाम ले डूबेगा, मेरी भी आन मिटायेगा ॥
यदि यही हाल दिखलाना था, तो साथ न मुझको लाना था।
अये बुजदिले किसी जनाने को, अपना सारथी बनाना था ॥
वहां द्रोण कहने लगे, देखो कौरव—नाथ।
रथ भागा आ रहा है, किस कमाल के साथ ॥
आंखें स्पष्ट कह रही हैं, वह निश्चय भारत-भूषण है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा अनुमान अगर सच है, तो लाख तरह यह अर्जुन है॥
कर्ण ने कहा बिलकुल सच है, यह खास पार्थ का ही फन है।
भीष्म भी यकायक बोल उठे, बेशक यह कुन्ती नन्दन है॥
सब बोल उठे तैयार रहो, कुन्ती का लाल आरहा है।
आत्माओं ने संकेत किया, वीरों का काल आरहा है॥
दल-मण्डल में हल--चली मची, चैतन्य शूर-सरदार हुए।
हथियार लिये बलबीर उठे, कितने ही दिल मुरदार हुए॥

पर न गया रथ उस समय, दल मण्डलकी ओर।
एक विपिन की तरफ को, जा पहुँचा शहजोर॥
टँगे हुए थे जिस जगह, अर्जुन के हथियार।
मुश्क खोलकर वीर से, बोला पाण्डु-कुमार॥

भैया इतने कायर न बनो, है वक्त मारने--मरने का।
जो करना है वह काम करो, यह समय नहीं है डरने का॥
इन टँगे हुए शस्त्रों में से, तरकश एवं कमान लेलो।
या अड़ड़--खड़ड़ रहने दो, केवल दो-चार बाण लेलो॥
इन बाणों में एक ही बाण, सारा रण विजय करायेगा।
जिस समय प्राण पर बीतेगी, तब वही काम में आयेगा॥
उत्तर कुमार यह सुनते ही, शस्त्रों पर हाथ बढ़ाने लगा।
लेकिन हर एक शस्त्र उनमें, सर्प की तरह दिखलाने लगा॥

चीख मार कर भूमि पर, गिरा नृपति का लाल।
अर्जुन ने हँसते हुए, उनको लिया सँभाल॥
फिर बढ़ कर खुद डालसे, खींच लिये हथियार।
हाथ जोड़ कहने लगा, तब भूप का कुमार॥

भाई! यह चरित देखने से, कुछ भी न समझ में आता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतना ही मुझको बतलादो, यह क्या रहस्य दिखलाता है ॥
तुम वीर बृहन्नला ही हो या, भारत-भूमि के सितारे हो ।
या लीला-धारी बने हुये, देव-स्वरूप अवतारे हो ॥
तब अर्जुन ने भी कहा, दिली गुबार निकाल ।
भैया हम भी हैं किसी, वीर जननि के लाल ॥
भावी-वश वेश बृहन्नल में, हम ही अर्जुन बल धारी हैं ।
वे धर्म भीम सहदेव नकुल, सैरिन्ध्री द्रुपद दुलारी हैं ॥
इस नीच छली दुर्योधन के, हम भी हे कुँवर ! सताये हैं ।
तेरहवां बरस बिताने को, द्वार पर तुम्हारे आये हैं ॥
लेकिन अब कुछ चिंता न करो, केवल मेरे अगवान बनो ।
मैं रथ से बाण चलाऊँगा, यदि तुम मेरे रथ-वान बनो ॥
उत्तर बोला छल गये देव !, अफसोस ! दैत्य के छल-बल में ।
हिन्द के पांच छिप गये चन्द्र, ना कुछ विपत्ति के बादल में ॥
बलवीर तुम्हारा भू तल पर, दस नामों से सम्बोधन है ।
हे बन्धु दया कर बतलाओ, उन नामों का क्या कारण है ॥
अर्जुन बोले जन्म से, था अर्जुन बल धाम ।
वायु कवच के बाद से, पाया विजया नाम ॥
ऐरावत के अवतरण समय, मैं पार्थ पुकारा जाने लगा ।
पांचाल समर के बाद कुँवर, जग में वीभत्स कहाने लगा ॥
धन पति जीत कर धनञ्जय हूँ, ताज धर किरीटी कहलाया ।
अपना कर्तव्य दिखा डाला, तब नाम स्वेत् बाजी पाया ॥
बजरङ्ग बली का बल पाकर, कपिध्वज कहलाया जाता हूँ ।
शब्द-पर निशान लगाने से, मैं शब्द भेद कहलाता हूँ ॥
उत्तर ने हंस कर तभी, पकड़ी रथ की डोर ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों बल धर बढ़ चले, युद्ध भूमि की ओर ॥
द्रोण ने कहा संभलो वीरो, बेशक अर्जुन ही आता है।
मेरी ही ओर ताक कर के, वह देखो चाप चढ़ाता है ॥
तब तक अर्जुन का एक बाण, आ पड़ा द्रोण के पैरों पर।
दूसरा बाण मंडराय उठा, चक्कर में उनके कानों पर ॥
यह हाल हुआ भीषम का भी, गुरु बोले कुछ सुन पाया है।
अर्जुन ने बाणों के द्वारा, हम को संदेश पठाया है ॥
यह बाण कान में कहते हैं, आप जब वंश के गुरु-वर हैं।
तब पाण्डव हों या कौरव हों, तुम को सब एक बराबर हैं ॥
उस सबल-पक्ष की समता में, दीनों की हुई सहाय नहीं।
यह बाण बराबर कहते हैं, यों करो पूज्य अन्याय नहीं ॥

तभी कलिङ्ग—नरेश के, लगे बरसने बान।
किन्तु पार्थ के बाण ने, कर डाला मैदान ॥

दूसरे बार से अर्जुन ने, विकरण का माथा खोल दिया।
विकरण न लौटने पाया था, रवि-सुत ने धावा बोल दिया॥
कर्ण ने चलाया अग्नि बाण, अर्जुन ने वरुण बाण छोड़ा।
कर्ण के बाण से अर्जुन का, वह सारा घन-मण्डल तोड़ा ॥
इस ओर सर्प फूंकार उठे, उस ओर मोर मंडराने लगे।
उसने घन-घोर रात करदी, तो पार्थ सूर्य्य चमकाने लगे ॥
गिरि-शर पर पहुँचा बज्र-बाण, यम-शर पर मृत्यु-बाण मारा।
उत्तर का बार बचा कर के, कर्ण का सारथी संहारा ॥

मार—मार से हो विकल, भागा कर्ण पुकार।
कुरु-पति बोला व्यंग से, आ बैठो सुकुमार ॥

क्या घर बैठे ही बड़ी बड़ा, शेखियां बघारा करते थे ?।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कागजी समर में कलमों से, मुरदों को मारा करते थे ॥
ओ हो ! तुम यही समझते थे, भट पार्थ मोम का पुतला है ।
अब आज केहरी मचला है, तब यहां दिवाला निकला है ॥

यों कह कर खुद ही बढ़ा, युद्ध-भूमि की ओर ।
किन्तु यकायक सुन पड़ा, स्यार-वृन्द का शोर ॥

दुर्योधन सहसा ठिठक गया, गुरु बोले नरपति ! खैर नहीं ।
है बैर वीर अर्जुन से यह, कोई बाजारी सैर नहीं ॥
कर्ण ने कहा बस रहने दो, अशकुन पर यह मर्दानी है ।
तुम रहो कर्णको यह अपनी, अब धमकी जाल बुझानी है ॥

कर्ण बढ़ा पर मार से, फिर लौटा लाचार ।
द्रोण वीर के पार्थ पर, हुए वार पर वार ॥

अर्जुन ने नमस्कार करके, शुभ-आशिष पाया गुरु-वर का ।
फिर बाणों से उत्तर देकर, वह कर्ज चुकाया गुरुवर का ॥
पार्थ ने द्रोण का रथ तोड़ा, दूसरा यान तैयार हुआ ।
कुछ समय बाद दो तरफों से, दिव्यास्त्रों का संचार हुआ ॥
था अग्नि बाण पर वरुण-बाण, ब्रह्मास्त्र-दमन नारायण था ।
था वज्र बाण द्रोण के पास, तो यहां दूसरा शासन था ॥
लेकिन जब काल बाण देखा, तो चौंक दिया रण रङ्गी ने ।
रथ पर ही से मुंह फैलाकर, वह लील लिया बजरङ्गी ने ॥

लौटे गुरु हैरान हो, बढ़े और बल धाम ।
चौतरफा से मच गया, महा घोर संग्राम ॥
बिचलितकर दल-बल सभी, बढ़ा पार्थ रण-धीर ।
पर कुरु-पति की आड़ से, चला भीष्म का तीर ॥

अर्जुन ने उन्हें प्रणाम किया, आशिष पाया संग्राम लिया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पार्थ ने उन्हें भी लौटा कर, सैना का काम तमाम किया॥
सब एक-एक कर हार चुके, तो हारे कायर जुड़ने लगे।
मूसला धार नीर की तरह, हथियार पार्थ पर पड़ने लगे॥

❀ गायन आल्हा ❀

हार हार के इकठे है गये, भट पै दौरि परे सरदार।
हल्ला परिगौ सिगरे दल मां, बहुधां चलन लगे हथियार॥
तेगा बरछी भाला बिछुआ, कहुँ-कहुँ बानन की बौछार।
पारथ चढ़िगा जब जोधन पै, भूल गये खल मारा मार॥
रुण्ड-मुण्ड इकठे सब हुइगये, हथियन सुंड परै चिंघार।
हिन हिन हरिगी अबघुड़लनकी, जो बह चली रक्तकी धार॥
उड़िगे भुज सिर छत्र मुकुट नभ, दल में छाया हा हा कार।
भागड़ परिगा छत्रिय दल में, भुतवा करन लगे सिंगार॥
नाचत ताल वेताल जोगिनी, लै लै खप्पर कै करतार।
स्वानशृगाल गिद्ध जुरि जुरिके, जिउ भरकरन लगे जिउनार॥
कांपत हांपत कुरु पति भाज्यो, राज्यो रन में इन्द्र कुमार।

सुला दिया दल पार्थ ने, मोहन—अस्त्र प्रचार।
उत्तर ने कुरु राज के, भूषण लिये उतार॥
खींचा मोहन-मन्त्र जब, आया सबको होश।
कुरु-पति फिर देने लगा, टूटे दिल से जोश॥
किन्तु भीष्म कहने लगे, डूब मरो नादान।
कुछ रोजां तक तो रहो, दुनियां में महमान॥

उस खीजे हुए केहरी को, यदि अब की बार खिजाओगे।
तो याद रहे अये मुरदारो, पीछे न लौटने पाओगे॥
यदि रोते-धोते दुनियां में, जीवन की और जरूरत है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो खामोशी से लौट चलो, बस यही बचत की सूरत है॥
दुर्योधन बोला वृद्ध-पिता, तुम कहते हो हम रण न करें।
तो कहीं समन्दर बतलादो, जिसमें मिलकर सब डूब मरें॥
उड़ती हवाइयों के खातिर, घूंघट के सिवा हवा क्या है।
इन जलते हुये फफोलों की, मरने के सिवा दवा क्या है॥

भीष्म पिता कहने लगे, रण है इसका नाम।
हार जीत दो काम ही, हैं इसके परिणाम॥

तुम हार गये वह जीत गया, इसमें लज्जा की बात नहीं।
खतरे का मौका टाल दिया, घट गई हमारी जात नहीं॥
केवल आज की लड़ाई से, हो चुका न कुछ निबटारा है।
अर्जुन ही क्या कुल पांडव-दल, जीवन से शत्रु तुम्हारा है॥
आज के समय को टाल चलो, फिर भी तो मौका आयेगा।
हौसला आज का बढ़ा हुआ, फिर से दिखलाया जायेगा॥

लौटा कुरुपति दल सहित, थकित झुकाये शीश।
कह विनीत आनन्द से, जयति द्वारिका धीश॥

❀ शुभमस्तु ❀

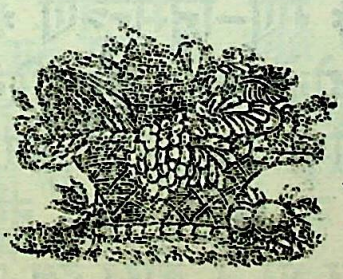

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ महाभारत ॥

॥ उद्योग-पर्व ॥

॥ प्रार्थना ॥

कृपा-कोर मोहन ! तुम्हारी रहेगी।
तो हर बात में जय हमारी रहेगी ॥
अगर भक्ति की ढाल आगे रहेगी—
तो फिर क्या किसी की कटारी रहेगी ॥
अगर जा रहे हो तो ले जान जाओ—
कहो तो कहां यह विचारी रहेगी ॥
न झटको मेरे नाथ ! पीताम्बरी को—
खटकती हृदय में किनारी रहेगी ॥
करेंगे भला क्या यहाँ जन्म लेकर—
अगर मोहनी—मूर्ति न्यारी रहेगी ॥
निभाये रहो नाथ ! गोविन्द पापी—
यहाँ कीर्ति यह भी तुम्हारी रहेगी ॥

॥ रण-निमन्त्रण ॥

लौट पड़े दोनों सुभट, इधर मिलाये हाथ।
खेल रहे चौपड़ उधर, नृपति धर्म के साथ ॥
तब तक सैरिन्ध्री जा पहुँची, बोली, नर-नाथ बधाई है।
युद्ध स्थल में उत्तर भट ने, कौरव दल पर जय पाई है ॥
धर्म भी छूटते बोल उठे, दासी यह बात स्वार्थ की है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौरव दल पर जय पा जायें, यह शक्ति फकत् पार्थ की है॥
यह सुनकर नर-राज को, आया एक उबाल।
बोले ओ नाकार! तू, द्विज है या चाण्डाल॥
दासी स्पष्ट कह रही है, उत्तर भट ने जय पाई है।
इतने पर भी तेरे दिल में, अर्जुन की कीर्ति समाई है॥
सैरिन्ध्री के सच कहने में, ओ स्वार्थी बतला स्वार्थ कहाँ।
राजा विराट की नगरी में, उत्तर के आगे पार्थ कहाँ॥
धर्म ने कहा यह बात फकत, है कहने और कहाने की।
पर कुरु-पति से बाजी ले ले, दम नहीं किसी मर्दाने की॥
मैदान न था खिलवाड़ों का, वह बच्चों का संग्राम न था।
उन पर जय पाना पार्थ बिना, उत्तर-कुमार का काम न था॥
अब विराट ने भभक कर, किया कंक पर वार।
पांसा ही था हाथ में, दिया उसी को मार॥
लोहू की धारा बह निकली, लाली ने पेशानी भरदी।
पर पृथ्वी तक आते-आते, सैरिन्ध्री ने चुल्लू करदी॥
आने न बूंद दी पृथ्वी पर, रह गई रोक कर लोहू को।
या यों समझो दे दिया हाथ, भूल के भयंकर कोल्हू को॥
अब तो नृप का और भी, बढ़ा खून पर खून।
बोल उठे उफ! होगया, सब उलटा मजमून॥
मेरे टुकड़े खाने पर भी, इसने पार्थ की बजाई है।
फिर सैरिन्ध्री ने भी बढ़ कर, अपने साथ की निभाई है॥
अब वृहन्नडा भी आयेगा, बे वजह हाथ मटकायेगा।
सुन लेगा अगर जयन्त कहीं, तो और उपद्रव ढायेगा॥
मैं समझा छलिया तुम समान, दुनियां में नमक हराम नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पापियो ! दूसरा घर देखो, इस जगह तुम्हारा काम नहीं।
सैरिन्ध्री कहने लगी, क्षमा कीजिये नाथ !।
लोहू है संसार का, इस लोहू के साथ ॥
यदि इस लोहू की एक बूँद, पृथ्वी तक आने पायेगी।
तो जल का बारह बरषों तक, फिर बूँद न पड़ने पायेगी ॥
जल जायेंगे जल-चर थल-चर, इन आहों में इतनी लू है।
राजन् ! कुछ ध्यान सहित देखो, यह धर्मराज का लोहू है॥
उसी समय अर्जुन सहित, आया भूप-किशोर।
बोला तात ! निहारिये, इन देवों की ओर ॥
जो बने वृहन्नल फिरते हैं, वे पार्थ वीर बलधारी हैं।
यह कङ्क देव हैं धर्मराज, यह आगे द्रुपद—दुलारी हैं॥
जिनको जयन्त हम समझे हैं, वे भट वर पवन दुलारे हैं।
कौरव दल के लाखों योधा, पार्थ ने आज संहारे हैं ॥
अर्जुन ही के बल-विक्रम पर, बच आये प्राण हमारे हैं।
हे तात ! कंठ से लिपटा लो, यह तो कुल पूज्य तुम्हारे हैं॥
उत्तर के सुन कर वचन, खुले भूप के नैन।
उत्तर में नर राज से, बने न कहते बैन ॥
गिर पड़े धर्म के चरणों पर, लज्जा का एक भार लेकर।
टूटे-फूटे दो बोल उठे, बिन तारों का सितार लेकर ॥
क्यों महाराज यह छल घर में, उफ दासों की यह सेवायें।
ओ देव धर्म को नौकर रख, दुनियां को क्या मुँह दिखलायें॥
हा ! द्रुपद दुलारी देवी को, दासी समझा मति-मारे ने।
इसके ही साथ अनर्थ किया, कामी कीचक हत्यारे ने ॥
ओ कौरव-दल भञ्जन अर्जुन, मुझ खल का मान तोड़ डालो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री धर्मराज के बदले में, मेरा भी माथ फोड़ डालो ॥
धर्मराज कहने लगे, तजो सोच नर-पाल ।
इसी तरह था काटना, यह विपदा का काल ॥
यदि हम परिचय देकर राजन्, आपके यहाँ आश्रय पाते ।
तो लाख उपाय लगाकर भी, आखिर को जाहिर हो जाते॥
महमान समझकर नित्य-नित्य, घर कैसा मान यहाँ होता ।
तो भ्रम अथवा निश्चय बनकर, यह चर्चा यहां-वहां होता ॥
वह सुधि कुरु-पतिके कानों तक, करती बिलम्ब क्या जाने में ।
क्या कसर लगाते ? गुप्त दूत, फिर मेरा पता लगाने में ॥
इसीलिये चलनी पड़ी, राज-नीति की चाल ।
लाचारी की भूल वह, क्षमा करो नर-पाल ॥
नृप बोले यद्यपि हुआ, अनजाने यह दोष ।
फिर भी मेरे हृदय को, दो राजन् ! सन्तोष ॥
हल्की करदो भगवन् गठरी, सेवक पर यह महान ऋण है ।
उन सेवाओं के बदले में, अर्जुन को सुता समर्पण है॥
अर्जुन बोले क्या कहते हो, क्या बिल्कुल ही मति मारी है ।
मैं गुरु हूँ राज दुलारी का, वह कन्या-रूप हमारी है ॥
नृप बोले तो तुम रहने दो, अभिमन्यु कुँवर को बुलवाओ ।
बेटा सुत-बधू समान मान, सम्बन्ध लाल से करवाओ ॥
इस सम्पति पर हो गये, सहमत धर्म-नरेश ।
दिया द्वारिका नाथ को, उसी समय सन्देश ॥
बहिन भानजे के सहित, चले द्वारका-नाथ ।
हुआ ब्याह अभिमन्यु का, समारोह के साथ ॥
शुभ विवाह के बाद ही, हुआ एक दरबार ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शामिल थे जिसमें सभी, मुख्य मुख्य सरदार ॥
रुचि पाकर दरबार की, सुन प्रभु का आदेश ।
हाथ जोड़ करुणेश से, बोला धर्म—नरेश ॥

हे नाथ ! यथा-विधि पूर्ण हुई, सारी शर्तें कुरु-राई की ।
लेकिन तारीख न आई है, इन दुखियों की सुनवाई की ॥
यदि इच्छा हो तो दुखिया भी, हक के अधिकारी बने रहैं ।
आज्ञा दे दो यदि न्याय मूर्ति, जो जनम भिखारी बने रहैं ॥

धर्मराज की बात पर, बोले द्रुपद नृपाल ।
किया चाहिये था उन्हें, पहले ही यह ख्याल ॥

तेरहवीं बरस बीतते ही, धर्म को उन्हें बुलवाना था ।
दो चार बुजुर्गों के आगे, इनका हक इन्हें दिलाना था ॥
लेकिन इतने दिन बीत गये, लेकिन सब चाल बराबर है ।
इससे यह साबित होता है, उनकी नियतों में अन्तर है ॥

प्रभु बोले यदि नियत में, होता नहीं विकार ।
तो बढ़ती किस वजह से, आये दिन तकरार ॥

मैं अब भी निश्चय कहता हूँ, वह दे सकता अधिकार नहीं ।
संहार भले ही हो जाये, लेकिन मानेगा हार नहीं ॥
इसलिये हमारी सम्मति है, अपने सम्बन्धी बुलवाओ ।
पहले विचार घर में करलो, फिर कोई निश्चय ठहराओ ॥

श्री धर्मराज बोले—

लकड़ी तक का आसरा, ले लेता है अन्ध ।
इसी भांति हम सबों का, है तुम तक सम्बन्ध ॥

जो मुख्य सजन सम्बन्धी हैं, उनकी भी यहां उपस्थिति है ।
उन सबकी भी हे दया-धाम, प्रभुकी सम्मति पर सम्मति है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये नाथ ही श्री मुख से, अपने विचार को प्रकटायें।
एवं यह धर्म हमारा है, आज्ञा पर प्राण लगा जायें॥

दिया धर्म की बात पर, नृप विराट ने जोर।
सम्पति पाकर सभा की, बोला नन्द किशोर॥

मैं धर्म—पक्ष के नाते से, कौरवी सभा में जाता हूँ।
चारों प्रकार की विधियों से, दुर्योधन को समझाता हूँ॥
इस पर भी यदि हामी न हुआ, वह मेरे नीति-विचारों का।
तो याद रहे दिन आयेगा, अब सरे आम तलवारों का॥
मैं सन्धि युद्ध के बारे में, अब राय न लेने आऊँगा।
हां जो मेरा निश्चय होगा, फैसला वहां दे आऊँगा॥
इसलिये कृपा कर कह डालें, इसमें कितने जन यक दिल हैं।
उस भले बुरे में तन मन से, कितने सम्बन्धी शामिल हैं॥

तलवारें लेकर सभी, बोल उसे सरदार।
महाराज! हम हैं सभी, आज्ञा पर बलिहार॥

हम चुपकी साधे बैठे हैं, केवल विश्वास तुम्हारे से।
प्राणों पर तुलने बैठे हैं, उङ्गली के तनिक इशारे से॥
आज्ञा हो चुपकी धरे रहें, आज्ञा हो आगे आजायें।
आज्ञा हो तन मन धन जीवन, चरणों में भी अभी चढ़ाजायें॥
या भूतल भर के राजों में, धर्म का प्रथम आसन होगा।
अथवा सारे भू-मण्डल में, अब केवल दुर्योधन होगा॥

प्रभु पहुँचे, नृप ने किया, यथा रूप सन्मान।
कुशल प्रश्न के बाद में, बोले कृपानिधान॥

राजन्! वह तेरह वर्षों की, पूरी हो चुकी समस्या है।
अब उन हकदार पाण्डवों को, हक देने में विलम्ब क्या है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो चुकी मियाद खतम लेकिन,तुमने अब तक न बुलाया है।
इस कारण याद दिलाने को, धर्म ने मुझे पहुँचाया है॥
कुरु-पति बोला मोहन ठहरो, महमान बनो महिमा न धरो।
होने दो हास–बिलास वहाँ, इन बातों की चर्चा न करो॥
हक यहां जताने आये हैं, बतलाओ कौन कटौती है।
अपना था अपना लिया गया, उनकी कौनसी बपौती है॥
हक तो वह है जिसके पीछे, हकदार जान दे जाता है।
पुरुषों की कठिन कमाई को, चौपड़ पर कौन उड़ाता है॥
सोचो तो राज्य चला जाता, उनको दुःख तलक नहीं होता।
सच तो यह है मुफ्त का माल, जाने में कलक नहीं होता॥

यादवेन्द्र कहने लगे, यों ठहरी थी नीति।
तो उन भोले भूप को, दे दी व्यर्थ प्रतीति॥

हकदारी अगर पूछते हो, तो हक यह है उनका हक है।
हकदार धर्म है पांडव हैं, बक–झक तुम सबकी नाहक है॥
उसके जाने का सुख-दुख तो, वह जाने जिसने पाया है।
यदि उनको कलक नहीं होता, तो क्यों वन-कष्ट उठाया है॥
आबादी में शकुन के साथ, कोई अशकुन भी होता है।
जिसमें हजार गुण होते हैं, कोई अवगुण भी होता है॥
एक सौ पाँच भ्राताओं में, मान लो पाँच नाकारे हैं।
उनकी भी तुम्हें निभानी है, आखिर के बन्धु तुम्हारे हैं॥

दुर्योधन कहने लगा, निभा चुके हम खूब।
अब वे मेरी तरफ से, मरें कहीं पर डूब॥

पहले घर छोड़ निकल भागे, तब बरसों तक ढुँढवाया था।
बे मांगे और बिना पूछे, आधा अधिकार दिलाया था॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन उस मूर्ख अनाड़ी ने, द्यूत के भेंट कर डाला है।
घर मत समझो दिवालियों का, शान्तनु वंश का दिवाला है॥
ऐसा नादान जुआड़ी यदि, फिर से उस हक को पायेगा।
जो आज हमीं ने पाया है, कल औरों को दे डालेगा॥
कह देना मेरी जानिब से, बेकार न झगड़े लिया करें।
जङ्गल ही उन्हें सुहाता है, जङ्गल में मङ्गल किया करें॥

केशव ने उत्तर दिया, सुनते हो कुरुनाथ।
नहीं रहेगी इस तरह, शान्तनु कुल की लाज॥

उनको असहाय अनाथ समझ, निष्कारण अगर सताओगे।
तो आज जताये जाता हूँ, इस करणी का फल पाओगे॥
जो कुल को लौटा डालेगी, इस दल की वह गाड़ी तुम हो।
नादान उन्हें बतलाते हो, नादान और ज्वाड़ी तुम हो॥
तुमने ही उन्हें भुला करके, अपने घर पर बुलवाया है।
तुमने ही जाल फरेबों से, उनका धन-धाम छुड़ाया है॥
इस जानिब से एक भी बात, उस तरफ रियायती हुई नहीं।
मैं दावे से कह सकता हूँ, धर्म की ज्यादती हुई नहीं॥
आगे के लिये ज्यादती का, अब फिर ठेका मत ले डालो।
मत दो आधा अधिकार उन्हें, दो चार गाँव ही दे डालो॥

कुरु-पति बोला और को, दिखलाना यह झोंक।
अधिकारों के नाम पर, नहीं सुई की नोंक॥

यह जर जमीन जोरू तीनों, मिलते हैं कब घिघियाने से।
इन पर कब्जा मिल सकता है, वीरों का खून बहाने से॥
ममता है अगर राज्य की तो, रण में राजा बनकर आयें।
हा हा से रती न पायेंगे, तलवारों से सब ले जायें॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यादवेन्द्र ने तब कहा, रक्खो नर–पति धीर।
उसी रोज के वास्ते, पाले रहो शरीर॥
नर-राज समय वह दूर नहीं, दल बल ही सजकर आयेगा।
भूखे भिखारियों का ही अब, गढ़ पर झण्डा फहरायेगा॥
वे मान हीन ही किसी रोज, अभिमान तुम्हारा तोड़ेंगे।
आधा देना मंजूर नहीं, तो पूरा लेकर छोड़ेंगे॥

यों कहकर दरबार से, गमने जगन्निवास।
पहुँचे मुसकाते हुए, कुन्ती जी के पास॥
कम्पित तन विचलित बदन, उठी देवि लरजाय।
झट-पट हाथों से लिया, प्रभु को कण्ठ लगाय॥

कुन्ती बोली–

आओ वृज-चन्द! नन्द नन्दन, हम तुम तक आशा धारे हैं।
इतना सन्देश कहे जाओ, जिस जगह हमारे बारे हैं॥
वे बनवासी बन से मोहन, क्या कभी लौटने पायेंगे।
यह नयन बन्द होते होते, क्या उन्हें देखने पायेंगे॥

कृष्णचन्द्र कहने लगे, फूफी! धारो धीर।
हैं दुःखों के ही लिये, प्रण-वीर का शरीर॥
हैं प्रसिद्ध संसार में, फूफी! अवध-प्रदेश।
हरिश्चन्द्र रवि वंश में, हुए प्रसिद्ध नरेश॥
वे केवल दानवीर एवं, थे धर्म शील नर–पाल नहीं।
हम कहते हैं उनसा कोई, भारत में हुआ भुवाल नहीं॥
था न्यायशील-संयम-स-शांति, सम-दम का पूर्ण पसारा था।
आदर्श रूप में उन्हीं दिनों, यह भारत देश हमारा था॥

ब्रह्म-सभा में एक दिन, चल बैठा सम्वाद।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वामित्र-वशिष्ठ में, हुआ विशेष-विवाद ॥

बोले वशिष्ठ नृप हरिश्चन्द्र, सच्चा धर्म का सहारा है।
भारत का नहीं भूमि भर का, सच्चा सौभाग्य-सितारा है॥
धर्म का आन का इन रोजों, चौदह भुवनों में द्वारा है।
अभिमान हमें भी इतना है, मुनिवर वह शिष्य हमारा है॥

गाधि-तनय कहने लगे, रहने दो यह भाव।
यों सारे संसार को, अन्धा मुनि! न बनाव॥

सत् होता है व्रत होता है, पर सीमा सबकी रहती है।
सावन भादों के दिन पाकर, सरिता भी बाहर बहती है॥
सोना क्या खूब चमकता है, जबतक कि दिखाओ आंचनहीं।
मुनिवर! यह घर की बातें हैं, की गई किसी से जांचनहीं॥
बोले वशिष्ठ जांच ही सही, जिस भांति तुम्हारी इच्छा हो।
भावी लोगों की शिक्षा हो, भूपति की प्रथम परीक्षा हो॥

इसी शर्त पर चलदिये, गाधि तनय तत्काल।
लौटे वहाँ अहेर से, धर्म धीर नर-पाल॥

छल-वेशी शूकर के पीछे, लौटे नृप-राज थकाये हुए।
मिल गये मार्ग में गाधि-नन्द, ब्राह्मण का वेष बनाये हुए॥
राजा ने दण्ड-प्रणाम किया, मुनिवर ने आशीर्वाद दिया।
थोड़े से शब्दों के द्वारा, मन्तव्य वहीं पर प्रकट किया॥
राजन्! मैं तेरे ही कारण, जाता था अवध-राजधानी।
अच्छा ही हुआ राह ही में, पूर्ति की निशानी दिखलानी॥
राजा बोले उपकार नाथ, कुटिया को पावन कीजैगा।
जो उस चेरे के लायक हो, करुणा कर! आज्ञा दीजैगा॥

गाधि तनय कहने लगे, दान-वीर नर-पाल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस कन्या–वर का मुझे, है ब्याह का खयाल ॥
सुनता हूँ दीनों की सहाय, करना है केवल काम तेरा ।
धर्म–ध्वज–धीर–धुरन्धर है, शुभ दान–वीर है नाम तेरा ॥
इससे अपनी मर्यादा पर, कुछ इच्छा दान चुका राजन् ।
याचक की दीन बालिका के, बस पीले हाथ करा राजन् ॥

दान–वीर कहने लगे, घर चलिये द्विज राय ।
अपने हाथों करूँगा, वर कन्या का काज ॥

मुनिवर बोले घर क्या होगा, घर २ मालिक के साथ समझ ।
जो कुछ भी तेरे घर में है, वह सारा अपने साथ समझ ॥
संकल्प–मात्र करके राजन् , बस वाचा–दान कहायेगा ।
फिर यह याचक इच्छानुसार, कारज में उसे लगायेगा ॥

नृप बोले सङ्कल्प क्या ?, करदूं करुणा धाम ।
केवल मेरे हाथ है, कुञ्जी और लगाम ॥

जैसी कुछ भी आज्ञा दीजे, आज्ञा–कारी आज्ञा में है ।
यदि इससे काम निकलता है, कुञ्जी लगाम सेवा में है ॥

गाधि तनय ने उसी को, किया शीघ्र स्वीकार ।
पढ़ सङ्कल्प कहा तथा, हे हे भूप उदार ॥

हो चुकी दान कुञ्जी लगाम, तो दे सङ्कल्प पढ़ाई भी ।
बस साठ भार सोना केवल, कर स्वीकृत सफल बुलाई भी ॥

भोले पन में भूप ने, किया उसे स्वीकार ।
आ पहुँचे सामोद नृप, विप्र सहित दरबार ॥
अभी न हो भी सका था, स्वागत का सामान ।
गाधिनन्द ने प्रथम ही, कर डाला आख्यान ॥

राजन् स्वागत का समय नहीं, पहले दक्षिणा अदा करदे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारा स्वागत इसमें ही है, मुझको शान्ति से बिदा कर दे ॥
कोषाध्यक्ष को इशारे से, आज्ञा दी सोना लाने की।
विश्वामित्र ने मुसकाकर, तब कहदी बात ठिकाने की ॥
राजन् होश ठिकाने कर, सेवा किससे करवाता है ?।
यह तेरा सेवक रहा नहीं, तू जिस पर हुक्म चलाता है ॥
यह राज-कोष-सैना-शासन, कुञ्जी लगाम पर निर्भर है।
यह जनता मेरी जनता है, यह नौकर मेरा नौकर है ॥
इसलिये न इनकी चरचा कर, कर्त्तव्य धर्म के भीतर हो।
देना है तो दे वह राजन्, जो इन चीजों से बाहर हो ॥

अब तो खुली नृपाल की, वह आखें सुन बात।
पड़ा हृदय पर यकायक, मानों बज्रा-घात ॥
कुछ क्षण तक मद होशसे, सके न देह सँभाल।
किन्तु सोचकर धर्म को, बोले धर्म-नृपाल ॥

अब समझा नाथ क्षमा कीजे, पहले कुछ निर्णय किया नहीं।
दे दिया राज-शासन सारा, पर यह शरीर तो दिया नहीं ॥
कोष पर रहा अधिकार नहीं, पर शेष कुँवर महारानी हैं।
हे महाराज ! बेच दो कहीं, हम हाजिर तीनों प्रानी हैं ॥

बोले विश्वामित्र तब, राजन् जरा विचार।
भूतल पर मेरा हुआ, चक्रवर्ति अधिकार ॥

यह ठीक सही बेच कर तुझे, रुपया अवश्य भर जायेगा।
पर जो कुछ भी धन आयेगा, वह सब मेरा कहलायेगा ॥
फिर शायद ही कोई मूरख, तेरा लेना स्वीकार करे।
आराम ऐश के बन्दों का, बेकार कौन सिर भार धरे ॥
इसलिये उचित है रवि-कुल की, मर्य्यादा यहीं से रहने दे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो चुकी दान-दक्षिणा भूप, मुँह से केवल नाहीं कह दे ॥
हरिश्चन्द्र कहने लगे, सुनिये नीति–निधान ।
जीवित है जब तक यहां, रवि-कुलकी सन्तान ॥
तब तक उसके द्वारा भगवन, सद्-पथ गति उलट न सकती है ।
पृथ्वी पलटे पलटे जहान, पर बाचा पलट न सकती है ॥
बिक जाऊँ पुत्र—नारि बेचूँ, दर दर के धक्के खाऊँगा ।
सुकुमारी राजस-भाव छोड़, नीचों की टहल बजाऊँगा ॥
मिट जाऊँगा अधिकारों से, पर सत्य–स्वधर्म निभाऊँगा ।
चुक जाऊँ चाहे ऋण ही में, पर ऋण नाथ का चुकाऊँगा ॥

❀ गायन ❀

सम्भव है जो सुमेरु, धरा पर से विचल जाय ।
हो जाय शान्त सूर्य्य, वहां चन्द्र भी जल जाय॥
फूले कमल पहाड़ पै, पत्थर भी पिघल जाय ।
जल जाय प्रकृति जीवसे, या बेत भी फूल जाय॥
आशक गिरे भूमि पै, या भूमि निकल जाय ।
बकरा कदाचि सिंह की, गोदीमें भी पल जाय॥
टल जाय सृष्टि-काज, हो गति उद्धव नीर की ।
टल सकती मगर आन, नहीं दान–वीर की ॥

इतना ही नहीं उऋण होना, बस एक–मात्र है काम मुझे ।
जबतक न उऋण हो जाऊँगा, तबतक जलपान हराम मुझे॥
मुनिवर बोले वक्त है अभी, सोच ले समझ ले मन भर ले ।
अपने ही आगे वचन न दे, कुछ घर में भी सम्मति कर ले ॥
इतना सुन कर महल को, गँवने श्री महिपाल ।
स्वागत को रोव्या उठी, लिये कांचनी थाल ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा ने कहा बीच ही में, भद्रे बस थाल अलग धर दो।
राजसी-भाव पर धूल डाल, सारा शृङ्गार अलग कर दो॥
इन महलों में इस वसुधा पर, अब कहीं सहारा रहा नहीं।
महिले यह ठाठ उठाओ मत, अधिकार हमारा रहा नहीं॥
आया है एक विप्र सरले !, जिसने यह वचन हराया है।
वर-कन्या के ब्याह हेतु, सब राज कोष हर आया है॥
अब विप्र-दक्षिणा शेष रही, वह भार हमें निबटाना है।
अन्न-जल ग्रहण पीछे होगा, पहिले ऋण मात्र चुकाना है॥

अंग-अंग पुलकित हुई, देवी सुन कर बैन।
धर्म-सत्य की बाढ़ में, बढ़े अश्रु धर नैन॥

सौभाग्य नाथ कृत कृत्य नाथ, यह समय दैव दिखलाया है।
ब्राह्मण के लिये महीपति ने, भिक्षुक का वेश बनाया है॥
चलिये नरेन्द्र चलिये हृदपति, दासी को प्रथम बेच दीजै।
ब्राह्मण का कर्ज अदा कीजै, रवि-कुल में दान कीर्ति लीजै॥

तब तक आया वहां से, रोहिताश्व सुकुमार।
गद् गद् हो कहने लगा, हे हे देव उदार॥

कह कर इतनी देर तक पूज्य, क्यों वचन नहीं निबटाया है।
निष्कारण यहाँ निराशा में, ब्राह्मण को क्यों बिठलाया है॥
चलिये बेचकर मुझे भगवन, ब्राह्मण का ऋण निबटा दीजै।
रवि-कुल की आन बचा लीजै, यह चोला सफल बना दीजै॥

सुन कर वचन कुमार के, राजा-रानी साथ।
बार बार बानी लगा, लगे चूमने माथ॥

सौभाग्य आज हम तीनों का, वास्तविक रत्न प्रकटाया है।
गाढ़े दिन पर सच्चा सुपुत, पतवार-रूप बन आया है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसके बाद भी न उद्यम हो, ऐसे प्रभात से साँझ भली ।
जिसके नाम से न नाम चले, ऐसे बेटे से बाँझ भली ॥
लाला तैयार खड़ा ही हूँ. हां चलो यहाँ भी देर नहीं ।
पर सोच रहा हूँ मिल जाये, बिक जाने का स्थान कहीं ॥
यह चक्रवर्ती–पद आज मुझे, कंटक की भांति खटकता है ।
किस ओर चलूँ बस यही सोच, चलता मन आज अटकता है॥

रानी बोली प्राण–धन, प्रण जीवन प्राणेश ।
हर उलझन की राह भी, रखते हैं करुणेश ॥

शास्त्रों की ऐसी अनुमति है, काशी त्रिशूल के ऊपर है ।
वह वसुधा से ही नहीं नाथ, तीनों लोकों से बाहर है ॥
शिव–पुरी पुण्य थल जग–तारण, हम दीनोंको भी तारेगी ।
त्रैलोकों की उद्धार–करण, हम दुखियों को उद्धारेगी ॥

उसी काशिका–धामकी, धरिये हृद–पति राह ।
हम दुखियों का भी वहीं, होगा अब निर्वाह ॥

इस प्रकार निश्चय हुआ, सत्य धर्म के साथ ।
कुँवर तथा रानी सहित, निकल पड़े नर नाथ ॥

नृपमुकुट मौर्य त्यागकर मुकुट, निकला धर्म पर उदासीबन ।
वह इन्द्र विलासी राजेश्वर, चल पड़ा आज सन्यासी बन ॥
जनता समुद्र सी उबल पड़ी, हा हा की एक पुकार उठी ।
साथ ही भूमि नभ मण्डल से, देवों की जयजय कार उठी ॥
धन्यहो भूप ! सूर्य कुल सूर्य, शौर्य्या शुचिकिरण तुम्हारी है ।
दोनों का अंश तेज बनकर, आया कुमार प्रण धारी है ॥
बेटा लाला ! बस सावधान, केवल प्रण का आधार रहे ।
तेरे पूर्वज तेरे पुरुषे, हे प्रण––धर तुझे निहार रहे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टूटे न आन का ध्यान कहीं, श्वांसा तक टूट जाय लाला।
प्राणों का तांता छूट जाय, पर सत्य न छूटजाय लाला॥

चकित देख चहुँओर को, कर्म-वीर प्रण वीर।
प्रजा बिलखती देखकर, लगे बँधाने धीर॥

रवि-कुल पोषित पुण्यात्माओ, जाता अब दास तुम्हारा है।
रखियो जीवन भर राज भक्ति, इतना सन्देश हमारा है॥
जिस आन और मर्यादा पर, रवि कुलने जीवन लगा दिया।
जिसके पीछे इस सेवक ने, भूप से भिखारी भेष किया॥
वह मर्यादा स्थिर रखियो, सर्वाङ्ग जाति के वर्णों में।
हे अवध-देश तुम अर्पित हो, श्री विप्र देव के चरणों में॥

❀ गायन ❀

जय जय जन्म-भूमि सुख दानी॥
स्वर्गित-सुख-सौभाग्य-सुकृति-निधि, शुभ-सौजन्य निशानी।
सार-रूप संसार-सिद्धि सब, तेरे सदन सिरानी। जयजय०॥
जगत ज्योति जगति-गति-दायनि, भारत भूमि-भवानी।
कर प्रणाम चाहत अशीष यह, अनुचर तीनों प्रानी॥जय०॥

धीरज दे द्विजके सहित, कर भूमि को प्रणाम।
तीनों प्रानी हर्ष भर, चले काशिका-धाम॥

रानी का सब शृङ्गार छूटा, केवल यक साड़ी मोटी है।
राजा पर एक धोती है, बेटे पर एक लंगोटी है॥
वह कठिन कंटकाकीर्ण मार्ग, वह कमल चरण चलने वाले।
वह आतप-ताप वि-शून्य-वायु, पाषाण-पुञ्ज जलने वाले॥
पड़ गये फफोले पैरों में, घुटनों तक सूजन बढ़ आई।
रुँध गये प्यास से कण्ठ अहो! होठों पर पपड़ी पड़ आई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घट गई घटा सी देहछटी, छट गई कान्ति रस छटा नहीं।
घट गई चाल बे हाली में, उत्साह किन्तु वह घटा नहीं॥

विह्वल व्याकुल देख कर, मुसकाये द्विज राज।
क्यों राजन् कर रहा है, शुभ काज में अकाज॥

यदि कोई प्राणी प्यासों से, मारग में मारा जायेगा।
तो फिर ऋण कौन चुकायेगा, ये हत्या कौन उठायेगा॥
चलनाही है मत हठकर चल, कुछ ठहर विहाल शांति जीकर।
दम ले ले कदम रोक थोड़ा, बढ़ आगे कुछ पानी पीकर॥

धर्म धीर कहने लगे, चलिये माया धाम।
ऋषियों को संसार में, झूंठा है विश्राम॥

ऋणियां तो मरे तुल्य ही हैं, हां ऋण देकर जी सकते हैं।
मुझ को रहने दो यदि चाहैं, तो ये पानी पी सकते हैं॥
रानी पुत्र ने जबाब दिया, आप तो विप्र वरज्ञानी हैं।
पानी की यहाँ जरूरत क्या, हम खुद ही पानी पानी हैं॥
विश्रामशांति सुखशयन मान, ऋण-भारी लेखनहीं सकते।
पानी पीना तो दूर रहा, पानी को देख नहीं सकते॥

इस प्रकार कहते हुए, पहुँचे काशी धाम।
तीनों ने झुककर किया, शिव धामको प्रणाम॥

हे शिव—शूलाग्र शोभनीये, जग धारण सेवक धारणकर।
संसार निवारण मुक्तिनिधे, जनकाऋण भार निवारण कर॥
गंगे! उद्धारन द्वार देवि, यह आश्रित भी उद्धारो मां।
जग-तारनि! वैतरणी तरणी, ये ऋण का भार उतारो मां॥

स्तुति कर बाजार में, करने लगे पुकार।
बिकने को हैं बन्धुओं, तीन जीव तैयार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई सज्जन धन-वान बढ़े, हम तीनों का उपकार करे।
दे साठ भार सोना द्विज को, भार से हमें उद्धार करे॥
अपनी शक्तिभर जन्म भर हम, उस की सेवा स्वीकारेंगे।
नीच से नीच भी टहलों में, मुँह से न नहीं उच्चारेंगे॥

गायन—धर्म के नाम पै कोई दास बनाये आये।
सत्य के काम में कोई हाथ बंटाने आये॥
दीन के साथ दया-भाव दिखाने आये।
गिरती नौका को कोई हाथ लगाने आये॥
सूर्य्य-कुल के लिये भी सूर्य्य का स्वरूपबने।
सूर्य वंशी की कोई लाज बचाने आये॥
विनीत धैर्य से उस ओर दृष्टि तो डालो।
कि कौन रूप में प्रभू काम निभाने आये॥

दोहा—इसी भांति कहते हुये, हुई वहां पर शाम।
पर अबतक उसटेरका, हुआ न कुछपरिणाम॥
पर हैं मालिक सभी के, जग धारण जग-पाल।
आ पहुँचा सौभाग्य से, वहां एक चाण्डाल॥
सौदा तै कर विप्रसे, बोला कहो नरेश।
क्या तुम करने सकोगे, मरघटिये का वेश॥

जो इस काम के योग्य पाऊँ, तो आधा ऋण निबटाना है।
मरघटमें निश दिन रहना है, पैसा और कफन चुकाना है॥
राजा बोले मरघटिये से, घटता भी काम दीजियेगा।
पर महा प्रभो इस ब्राह्मण के, ऋण से उद्धार कीजियेगा॥

ज्योंही बिकने को हुये, धर्म वीर तैयार।
त्योंही रानी ने कहा, सहसा इन्हें पुकार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उफ महा भूल बेहद गलती, क्या पहले आप बिकाते हो ?।
फिर यह आधा ऋण दान-वीर, किसके सिर छोड़े जाते हो॥
तुम दास हुए फिर मुझपर कुछ, रहगया तुम्हें अधिकार नहीं।
कोई भी सूरत कर देखो, चुक सकता यह ऋण भार नहीं॥
यदि पीछे मुझे बेच भी दो, तो वह धन अपना रहा नहीं।
लो सोच नाथ फिर मत कहना, यह पहले तूने कहा नहीं॥

अब तो तुल कर रह गये, सभी धर्म की तोल।
तब तक रानी का दिया, एक विप्र ने मोल॥
कुँवर तथा रानी चली, यहाँ विप्र के साथ।
चले वहाँ मरघट तरफ, दान-वीर नर-नाथ॥

क्या कहें और किस भांति कहें, जो प्रेम प्रताप प्रचण्ड हुए।
बिछड़े हैं ज्ञान-भक्ति दोनों, या हृदय के दो खण्ड हुए॥
तरसीली आँखें देख देख, राजा ने केवल यही कहा।
हे सूर्य-वंश की लाज-धरणि, हे भिक्षुक की लक्ष्मी महा॥
जाओ मरते मरते भी नर, नारी को नहीं बेचते हैं।
हम ही वह पहले पापी हैं, जो यह मर्याद मेटते हैं॥
पर धर्म-धुरे सन्तोष रहे, यह भी धर्म की निशानी है।
धर्म पर धर्म-प्रिय की पत्नी, ब्राह्मण के हाथ बिकानी है॥

रानी ने रोकर कहा, जाओ प्राणाधार।
प्रभो ? तुम्हारे सत्य का, है रक्षक कर्तार॥
इस तन पर है अधिकार तुम्हें, टुकड़े टुकड़े करवा दीजै।
बेचना कौनसी नई बात, चाहे सो दशा करा दीजै॥
फिर भी बस इतना याद रहे, अब ध्यान हमारा करियो ना।
दासी दास का भाव रखियो, धर्म का विचार बिसरियो ना॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोहित कुमार की यादों से, आँसू न बहाये जायें कहीं।
प्राचीन-प्रभुत्व विचारों के, नूतन उद्गार न आयें कहीं॥

गाधि-तनयसे अधिकथा, द्विजका क्रोध-विकार।
बोला तत्क्षण डांट कर, चल आगे मक्कार॥

पहले धर्म की दुहाई दे, निर्लज्जा बिकने आई है।
अब लेन देन की बात चली, तो स्वामि स्वामि चिल्लाई है॥
इस ओर देख मैं मालिक हूँ, वह एक दास मरघटिया है।
मूर्ख ने जरा सी बातों में, चाण्डाली कर्म धर लिया है॥
चल आगे बढ़ अब बात न कर, अन्यथा बिगड़ सब जायेगी।
जो यों ही आँसू ढालेगी, तो क्या नौकरी बजायेगी॥

धन पाया द्विजराज ने, देकर चले अशीष।
मरघट पर रहने लगे, हरिश्चन्द्र-अवनीश॥
यहाँ धर्म—धर बन गये, मरघट के रखवार।
वहाँ पुष्प लेने गया, रोहिताश्व सुकुमार॥
काट गया उस लाल को, वहां यकायक नाग।
रहा सहा भी मिट गया, दुर्भागिन का भाग॥

संवाद सुना खाई पछाड़, पर भय से रोने भी न सकी।
जी चाहा खोदूं प्राण मगर, करतब वश खोने भी न सकी॥
आँसू पीकर हिलकी रोकी, मालिक से कर का प्रश्न किया।
निर्दयी ने आखें दिखलाकर, तत्काल वहां से टाल दिया॥
साड़ी में लाश लपेट चली, मरघट पर चिता बनाती है।
पाठक-गण बस हो चुकी शांति, छाती फटती सी जाती है॥
वह चक्रवर्ति की महादेवि, हा हा मशान की दूतिन हो।
वह राज-लक्ष्मी सौभागिन, यों दुर्भागिनी निपूतिन हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जननेश लालकी महियत हो, हाहा पर साथी स्वजन न हो।
अनगणित दफ़ीने वाले के, बेटे को भगवन् कफन न हो॥

क्या बल लेकर कहे कवि, वह मसान का हाल।
वह माता का हृदय है, वह मैया का हाल॥

वह हिलकी यहाँ दहाड़ बनी, सिसकी आह की पुकार बनी।
मानो मरघट की चिता चिंता, करुणा क्रन्दन का द्वारबनी॥
भादौं की घोर निशा काली, ऊपर से बादल की गरजन।
बिजली का चकचौंध आना, बर बस घन बज्रों की बरजन॥
चहुँओर चिताओं की चटकन, स्यारोंकी सभी ओर लपकन।
भैरव पिशाच डायन ताण्डव, बूँदों की बज्र वेग टपकन॥
अबला का वहाँ रुदन करना, देखे प्रभु! किसकी छाती है।
बीचको इसी में सब समझो, वह दुखियारी की थाती है॥
छाती से कभी लगाती है, गोदी में कभी लिटाती है।
करती तैयार चिता भी है, चित्त भी भुलाती जाती है॥

उसी समय कानों पड़ी, एक घोर हुँकार।
बिना चुकाये कफन कर, जल न सके मुर्दार॥

देखा कांधे लठ धरे हुए, मरघटिये महाराज आये।
रवि कुल की लज्जा के आगे, रवि कुल के धर्म ताज आये॥
गिर पड़ी देवि सुत छूट गया, लुढ़कादो कदम लोढ़ बनकर।
गिर पड़ा देखने वाला भी, बेटे के पास जोड़ बनकर॥
कब तक क्या दशा रही उनकी, यह वही जानने वाले हैं।
वह देवि वहाँ फिर बैठी है, वह देव मांगने वाले हैं॥

देवि लक्ष्मी दे प्रथम, इस मसान का दान।
पीछे करने पायेगी, अग्नि दाह सन्धान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवी बोली—धर्मेश ! रहो, आगे न कदम बढ़ने पाये।
हां सावधान ? मोह का तुम्हें, बीजी न कहीं चढ़ने पाये॥
मत देखो ओ धर्मावतार, इस ओर अदेख गिरानी है।
यह हरिश्चन्द्र की रानी है, यह रविवंश की निशानी है॥
मांगो कर इधर न आंखें कर, करलो छाती पहले पत्थर।
पर सोच समझकर कहो नाथ, क्या रक्खा है दुखियारी पर॥

राजा बोले ज्ञात है, पर क्या बढ़ाऊँ मोह।
उसी रोज था हो चुका, मेरा कुँवर विछोह॥

यह भी मैं खूब जानता हूँ, पैसे पर नहीं जोर तेरा।
पर देवी ! यही प्रार्थना है, तुड़वा मत दे ईमान मेरा॥
मत दे पैसा आधी साड़ी, फाड़कर धर्म निभवा देवी।
हे रवि-कुल की लज्जा धारे, अब अन्तिम लाज बचा देवी॥

ज्योंही शैव्या देवि ने, साड़ी पर कर धार।
फाड़ा चाहा उसी क्षण, उठी एक जयकार॥

मरघट पलटा पलट गया, वह भूमि नहीं वह रात नहीं।
रोहित—कुमार मुर्दार नहीं, भैरव भूत की जमात नहीं॥
फैला आलोक दिव्य सहसा, मरघट उद्यान स्वरूप बना।
आगे श्रीविष्णु देव देखे, हो गया यथार्थ रूप सपना॥
वह ब्राह्मण वंशी गाधि नन्द, जयकारे आज मचाते हैं।
चाण्डाल वंश धारी यम पति, धर्म के रूप दिखलाते हैं॥

बदल गया क्षण मात्र में, भूप दशा का रूप।
साया साया में मिली, हुई धूप की धूप॥
चरणों पर तीनों पड़े, कह जय श्री भगवान।
विष्णुदेव कहने लगे, सुनिये नीति निधान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूतल पर कोटों जीव नित्य, ऐसे ही आते जाते हैं।
आप से मगर दानी-मानी, बिरले ही नर प्रकटाते हैं॥
चलिये विमान तैयार खड़ा, चल स्वर्गिक राज्य कीजियेगा।
सुकुमार सलौने रोहित को, भारत का राज्य दीजियेगा॥

विनय प्रेम भर भूप ने, करके तिलक विधान।
सुर विमान चढ़ प्रिया युत, किया वहीं प्रस्थान॥

गायन-जिस को धरा धरे रहे, वह धारणा धरो।
रह जाय नाम लोक में, उस नाम पै मरो॥
करणी का करण रूप हो, वह करणियां करो।
गोविन्द जो डरना है, तो पाप से डरो॥

जो प्रभु पर निर्भर हैं उनको, भय कभी नहीं हो सकता है।
विश्वास रहे सतवंतों का, क्षय कभी नहीं हो सकता है॥
धर्म ने विराट नृपति के घर, तेरहवां वर्ष बिताया है।
अपना अधिकार मांगने को, इस जगह मुझे पहुँचाया है॥
लेकिन पापी दुर्योधन की, यह देने से इनकारी है।
बस फूफी जी थोड़े दिन में, अब लड़ने की तैयारी है॥
देखना शीघ्र ही नष्ट-भ्रष्ट, कुरु-सैन्य अन्न-दाता होगी।
भारत-सम्राट धर्म होंगे, तू यहाँ राज-माता होगी॥

यादवेन्द्र दरबार में, गये दूसरी बार।
बात बात में बढ़ चली, बातों की तकरार॥

शकुनी इस पर ही अकड़ पड़ा, बोला बस हमने जानी है।
मनमानी तक महमानी थी, अब घर जानी मनमानी है॥
घर बाँधो नीच नचैये को, यह हाथों की मटकन न रहे।
चलती चञ्चल चितवन न रहे, कलगी पर की लटकन न रहे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शकुनी की इस बात पर, कही न प्रभु ने बात।
केवल भकटाया वहाँ, वह माया—मय गात॥
त्रिभुवन त्रिकाल त्रैगुण त्रिदेव, उस काया में दरशाने लगे।
अनगणितसूर्यशशिसिंधुसरित, अनगणितमेघउमड़ानेलगे॥
देखा अनगणित ब्रह्माण्ड वहाँ, बन बनकर मिटते जाते हैं।
उस महा क्षेत्र के कौने में, कौरव पाण्डव दरशाते हैं॥
छोटा सा एक खेल लेकर, हो रहा सर्व संहारन है।
पृथ्वी का थोड़ा सा टुकड़ा, उस संहारण का कारण है॥
चकित थकित सब रहगये, देख उन्हीं की ओर।
झपक गये सबके नयन, बन्द हो गया शोर॥
भीष्म विदुर ने हृदय में, प्रभु को किया प्रणाम।
समझ गये अब है यहाँ, निश्चय ही संग्राम॥
यह बैर विश्व—नायक से है, कुछ धर्म—राज से बैर नहीं।
इस भारत में सबसे पहले, दुर्योधन ही की खैर नहीं॥
उस माया मय की माया में, सपने कैसे वे दर्शन थे।
जब लोग तनक चैतन्य हुए, तो वहाँ नहीं मनमोहन थे॥
फिर विराट दरबार में, जा पहुँचे जगधार।
पहले ही से थे जमा, वहाँ भूप सरदार॥
कहा आदि से अन्त तक, सारा भाव प्रभाव।
तथा युद्ध के वास्ते, किया गया प्रस्ताव॥
रण ही होना चाहिये, यों कह उठे तमाम।
किन्तु बात को काटकर, बोल उठे बलराम॥
मोहन खटपट करवाने की, पड़ गई न जाने क्या लत है।
हम घर की तरह पूछते हैं, क्या यह भी भजमनसाहत है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो सोते हुए नाहरों को, बैठे वे वजह जगाना है।
अनगणित आर्य्य ललनाओंको,विधवा करके बिलपाना है॥
शांति के समय में भ्रांति बढ़ा, क्रांतिकी लहर उपजाना है।
नाहक का खून बहाना है, हक के खून का बहाना है॥
हक की मुझ से कहलाते हो, तो हक है उसी सुयोधन का।
बालिग बेटा अधिकारी है, बाप की जगह सिंहासन का॥
यह लोग चचेरे भाई हैं, तो प्रेम चित्र में जड़े रहैं।
जो भूप कहें वह किया करें, खायें पहिनें और पड़े रहैं॥

किन्तु सात्यकी ने कहा, कहो सोचकर तात।
कह बैठे हो इस समय, पक्षपात की बात॥

यदि इनका कुछ अधिकार न था,तो पहले क्योंदिलवायाथा।
अधिकारों का लालच लेकर, बन बन क्यों भटकाया था॥
जब यह वचनों को डरते हैं, तो उसको भी डरना होगा।
जो वचनों को टल जायेगा, तो खुलकर रण करना होगा॥

तब केशव कहने लगे, हम तो हैं तैयार।
पर दाऊ ? यह बात भी, उसे नहीं स्वीकार॥

जब सुई की नोंक बराबर भी,उस जगह न हक मिलवाना है।
तब खाने और पहनने का, इनका क्या यहाँ ठिकाना है॥
तुम कहते हो उनका हक है, मैं समझे हूँ हकदार इन्हें।
पाण्डु के राज्य के नाते से, है शासन का अधिकार इन्हें॥
मैं क्रांति कराने वाला हूँ, तो तुम्हीं शांति कुछ करवादो।
जितना समझो जैसे समझो,इन लोगों को हक दिलवादो॥

दाऊ बोले यह विषय, तुम जानो घनश्याम।
फकत तुम्हारे हाथ है, शांति क्रांति का काम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन जब बात पक्ष पर है, तो मैं उस दल में जाऊँगा।
इस पक्ष पात कहने का ही, सात्यकी मजा दिखलाऊँगा॥
यों कह कर दाऊ चले गये, तब धर्मराज बोले भगवन्।
वन वन में हमें घुमा बैठी, यह अपने ही घरकी अनबन॥
अब है ठन-बनकर ठना-ठनी, बन बनकर हमें बिगाड़ेगी।
भारत का बीज उखाड़ेगी, बसती बस्तियाँ उजाड़ेगी॥
फिर यही सही तो टुकड़ों पर, बाजी बदली है सट्टे की।
दो ही हल्दी की गांठों पर, रखली दुकान पसरट्टे की॥
महाराज! कहाँ कुरु-राज बीर, फिर प्रबल पक्षदलवालोंका।
दूसरी ओर असहाय धर्म, जमघटा चार कङ्गालों का॥
वे कौरव अपने दल बल से, बल-सहित जहाँ को मुड़जांये।
तो उनकी फूँक-फूँक ही से, गिरबर सुमेरु तक उड़जांये॥
उन दल बालों बलवालों से, क्या देकर विजय दिलाते हो।
हे निर्बल के बल! बतलाओ, किस बलपर समर रचाते हो॥

नटवर ने उत्तर दिया, गये धर्म फिर भूल।
बज्र-मूर्ति के शीश पर, चढ़ जाता है फूल॥

रहने दो फूल धूल ही जब, पैरों की ठोकर खाती है।
तो अपना बदला लेने को, नर के सिर पर चढ़ जाती है॥
पशु-पक्षी तक अपना बदला, लेने की युक्ति लड़ाते हैं।
हे नीतिवान! फिर सोचो तो, हम तो मनुष्य कहलाते हैं॥
जिस समय धर्म की वीणापर, रागिनी अलापी जायेगी।
संगठन और सत्याग्रह की, जब रूह फूँक दी जायेगी॥
तब काला मुँह हो जायेगा, पलटन का और रिसालों का।
उलटा देगा दल वालों को, जमघटा यही कङ्गालों का॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कीर्ति यहाँ बलिदानों में, डरने से नाम नहीं चलता।
हक मिलता है संग्रामों से, हा हा से काम नहीं चलता॥

देश-देश को समर का, पहुँचाओ सन्देश।
आयेंगे इस पक्ष में, निश्चय साधु-नरेश॥
गमने अपने धाम को, द्रुपद और भगवान।
यहां एक होने लगे, धीर वीर बलवान॥
दुर्योधन के दूत ने, दिया उसे सन्देश।
नर-पति आंखें खोलिये, है दुश्मन परदेश॥

धर्म ने निमन्त्रण दे-देकर, महिपालों को बुलवाया है।
तुम से विरुद्ध रण लेने को, सारा समाज जुड़ आया है॥
वह चन्देरी का धृष्टकेतु, सहदेव मगध का आया है।
काशी-पति दुपद विराट आदि, राजों ने दल पहुँचाया है॥

सैन्य सप्त अक्षौहणी, नृप चालीस हजार।
धर्मराज के पास में, हैं इतने सरदार॥
सुनते ही सम्बाद यह, कांप उठा कुरु-राज।
पर धीरज देने लगा, कर्ण वीर सिरताज॥

ओ हो! नरेन्द्र ना कुछ टोली, आने पर दिल दहलाया है।
धीरज बांधो हे महाराज!, कौन सा काल चढ़ आया है॥
इन सब बलवीरों का तुम पर, हे बलधर! खून निछावर है।
जिसको तुम नाहर समझे हो, वह टोली भेड़ बराबर है॥
आने दो चलो भले आये, आने का भी फल पायेंगे।
आने वाले आवेंगे ही, आकर न लौटकर जायेंगे॥

पर द्रोणी कहने लगा, क्या कहते हो वीर।
उन वीरों को जीतना, है कुछ टेढ़ी खीर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल अर्जुन ही के मारे, तुम नाकों चने चबाते हो।
फिर सेना सहित भेड़ उसको, किस बूते पर ठहराते हो॥
शकुनी बोला बिलकुल सच है, जो भाई द्रोणी कहते हैं।
घर बैठे ही भट अर्जुन से, हम लोग कांपते रहते हैं॥
यदि केवल बातों बातों का, पुल यहां बांधते जाओगे।
तो कुल बेड़ा ले डूबोगे, बातों से पार न पाओगे॥
तुम भी सन्देशा पहुँचाओ, अपनी सेनायें सजवाओ।
लड़ना हो तो इस तरह लड़ो, वरना इक देकर गमखाओ॥

शकुनी की दरबार को, उचित जँची यह राय।
दुर्योधन की ओर भी, जुड़ा वीर-समुदाय॥
दिया दूत ने तब तलक, कुरु-पति को सन्देश।
धर्म-पक्ष में जा रहा, दल मय शल्य नरेश॥
शकुनी बोला है यहाँ, भेद नीति का काम।
ले लो अपने पक्ष में, शल्य वीर बल धाम॥

दुश्मन का दोस्त फोड़ लेना, दूनी ताकत बढ़वाता है।
अपना दल भी बढ़ जाता है, रिपुदल निर्बल पड़ जाता है॥
कुरु-पति बोला यह सच तो है, लेकिन मसला कुछ बेढव है।
जब वह उस ओर जा रहे हैं, तब आना इधर असम्भव है॥
शकुनी बोला द्विज झुकते हैं, बल भर भोजन मिलजाने से।
क्षत्रिय गण रीझा करते हैं, कुछ आव भगत दरशाने से॥
इसलिये अगर तुम जाओ तो, हल अभी समस्या होती है।
सोच लो हमारा मतलब है, मतलब की दुनियां होती है॥

दुर्योधन ने शल्य को, दिया निमन्त्रण जाय।
तथा विनय करता हुआ, यों बोला सिरनाय॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मामा जी ! मेरी जानिब से, कैसे कर लिया किनारा है ।
हो कृपा न केवल एक तरफ, यह भी मानजा तुम्हारा है॥
तुम सबके ही बलबूते पर, यह भार शीश पर धारा है ।
यदि मेरी इसमें हार हुई, तो पहले अयश तुम्हारा है ॥
फिर राज–नीतिके नाते से, यह परम धर्म क्षत्री का है ।
उस धर्मराज से भी पहले, यह मेरा रण का बीणा है ॥

वहीं ठिठक कर रह गया, शल्य वीर लाचार ।
फँसा चाल के जाल में, भागा हुआ शिकार ॥

शल्य ने कहा कुरु–पति मुझको, धर्म की ओर ही जाना था ।
उनके चरणों में शिर देकर यह जीवन सफल बनाना था ॥
लेकिन जब तुमने बांध लिया, इस राज–नीति के तांते से ।
तब चलता हूँ, मैं इसी ओर, क्षत्रिय-करतब के नाते से ॥
पर मेरी सेना रख छोड़ो, जाने दो मुझको मुहलत से ।
यह समझ रहो जा रहा है, शल्य का शरीर जमानत से ॥
वे तेरह बरसों के बिछुड़े, सपने में लाल दिखाते हैं ।
अन्दर से हृदय तरसता है, बाहर नयना अकुलाते हैं ॥
अब केवल दर्श-पर्श ही से, यह जलता ज्वाल बुझाने दो ।
ललकार लगाने से पहले, जी भर लाला कह आने दो ॥

शल्य छोड़कर सैन्य सब, गया धर्म के पास ।
लिपट गया झट कण्ठ से, होकर निपट उदास ॥

बोला–ओ धर्म न मुँह देखो, मैं पापी हूँ हत्यारा हूँ ।
भोले कुमार ! मामा न कहो, जीवन का शत्रु तुम्हारा हूँ ॥
हे धर्म ! धर्म के बन्धन में, मामा बँध गया तुम्हारा है ।
रण में सहायता देने का, यह वचन वहां पर हारा है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं बिना निमन्त्रण पाये ही, इस ओर निशान बढ़ाये था।
पर जाने ? वह छलिया कब से, मेरी ही घात लगाये था ॥
यक बयक राह में कुरु-पति ने, रण का बीणा दे दिया मुझे।
फिर राज—नीति के नाते से, अपने दलमें कर लिया मुझे॥
यह जीवन तो तब सार्थक था, जब काम तुम्हारे आ जाता।
इस तनका बूँद-बूँद लोहू, इन चरणों पर बहता जाता ॥
लेकिन मतलबही बदलगया, तबतक क्याथा अबतक क्या है।
ओ धर्म ! तुम्हीं तो बतलादो, मेरा इसमें करतब क्या है ॥

धर्म राज कहने लगे, है वह परम सुजान।
जिसको प्राण समान है, अपने प्रण की आन॥

टल जाये विश्व विधान सभी, पर कायम सत्य विधान रहे।
यह अपने प्राण रहें न रहें, पर एक वचन की आन रहे॥
छोड़ो इस जगकी ममताएँ, उन प्रभु की शरण गहो मामा।
मेरे पक्ष में रहो न रहो, पर प्रण पर अटल रहो मामा॥
मेरी भी अगर निशानी है, तो जब रण का अवसर आये।
उस समय कर्ण की समता में, पार्थ की प्रशंसा की जाये॥
केवल यह वचन सहाय मुझे, संकट के समय उबारेगी।
उतनी ही वाणी मामाजी, उस समय कर्ण को मारेगी॥

शल्य वीर यह वचन सुन, चला शीघ्र हर्षाय।
कहो वाचको ! प्रेम से, जय श्री यादव राय॥

प्रभु को लेने के लिये, अर्जुन कौरव नाथ।
पहुँचे द्वारावती में, उभय साथ ही साथ॥

प्रभु का स्वभाव संकोची है, वे शील धाम कहलाते हैं।
अपने शत्रु के सामने भी, वह सच्चा शील निभाते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तर्यामी सोचने लगे, दोनों ही साथ सिधारे हैं।
इसलिये नीति के नाते से, दोनों ही मित्र हमारे हैं॥
यदि अर्जुन का रुख रखता हूँ, तो पक्ष पात कहलायेगा।
दुर्योधन से मिलता हूँ तो, अर्थ व्यर्थ हो जायेगा॥
इसमें मेरा निद्रा-नाटक, निश्चय ही हाथ बँटायेगा।
जो कुछ जिसकी किस्मत में है,वह बिना दिये मिल जायेगा॥

रङ्ग भवन में सोच यह, लौट गये करुणेश।
दोनों ने कुछ देर में, भीतर किया प्रवेश॥
सिरहाने श्रीकृष्ण के, जा बैठा कुरु-नाथ।
पार्थ चरण की शरण धर, रहे झुकाये माथ॥

शोभा धारी की शोभा पर, शोभा बलिहारी जाती है।
वह सुभट छटा छवि-सागर की, कवियों को अमर दिखाती है॥
वह चित्र-विचित्र-चित्रसारी, चित्रित शैया मनहारी है।
शुभ पीताम्बरी बिछाने में, रुचती ही हरी किनारी है॥
पीताम्बर ओढ़े हुए नाथ, कुछ तिरछे पड़े सुहाते हैं।
है चन्द्र-वदन कुछ खुला हुआ, जिस पर का कुल दरशाते हैं॥

अपने-अपने भाव में, बैठे थे वे लोग।
योगिराज का तब तलक, टूटा निद्रा-योग॥
त्रिभुवन का परमार्थ या, उन दोनों का स्वार्थ।
उठते ही पैरों पड़े, अकुलाने से पार्थ॥

प्रभु ने छाती से लगा लिया, बोले कैसे अकुलाये हो।
मैं तो आने ही वाला था, तुम नाहक भागे आये हो॥
पार्थ ने कहा नाहक कैसा?, जब भार तुम्हीं पर डाला है।
अब आगे को किस तरह चलें, यह कौन बताने वाला है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री धर्म तुम्हारे आने पर, मछली जैसे तड़पाते हैं।
वीरों में एक निराशा है, राजा-गण सब अकुलाते हैं॥
कृष्ण ने कहा होगई मुझे, क्या आये अधिक अबार अभी।
तुम उठो और भोजन पाओ, मैं होता हूँ तैयार अभी॥

उठे न थे अर्जुन अभी, बोल उठा कुरु-नाथ।
यह कैसे दुहरी नजर, महमानों के साथ॥

मैं अर्जुन से पहले आकर, बैठा हूँ कृष्ण! प्रतीक्षा में।
फल निकल चुका है स्वयं एव, वे पूछे हुए परीक्षा में॥
दो की ममता में क्यों मोहन, एक को वचन दे बैठे हो।
अब मैं बेकार कहूँ तो क्या, जब एक भार ले बैठे हो॥

प्रभु ने आदर कर कहा, क्षमा करो कुरु-नाथ।
आये होंगे दर असल, यहाँ साथ ही साथ॥

पर मैंने उठ कर उसी ओर, पहले पार्थ निहारा है।
इसलिये बात करते करते, युद्ध का वचन भी हारा है॥
लेकिन दोनों के आने से, मुझ पर तुम दोनों का बल है।
अब समर-भूमि को चलने को, मैं हूँ एवं मेरा दल है॥
या एक पक्ष यादव-सेना, शस्त्रास्त्र सहित पाबन्द करो।
या बिना अस्त्र के इसी भांति, मुझको ही फकत् पसन्द करो॥

दुर्योधन कहने लगा, तुम न चलो घनश्याम।
भारत में होगा नहीं, हिजड़ों का संग्राम॥

उस वीर-भूमि में वीरों को, अपना बलिदान चढ़ाना है।
नट-नागर तुमको ले जाकर, कुछ नाटक नहीं कराना है॥
यह विश्व-मोहनी मूर्ति लिये, जिस ओर खड़े हो जाओगे।
उस ओर वीरता के बदले, कायरता ही फैलाओगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दे चुके दैनगी अर्जुन को, उनको वह देना ही दे दो।
तुम पाण्डव दल की ओर रहो, हमको तो सेना ही दे दो॥

कौरव-पति गमनित हुआ, यादव-दल के साथ।
लिये पार्थ को चल दिये, भक्त-वत्स यदुनाथ॥
जाते ही प्रभु ने कहा, अब न देर का काम।
या फौरन ही सन्धि हो, या रोपो संग्राम॥

निष्कारण देर हो रही है, नाहक दिन चलते जाते हैं।
सुस्ती सी छाती जाती है, रण धीर पड़े अकुलाते हैं॥
अब नियम सहित दूसरी बार, सन्देश वहाँ पर पहुँचा दो।
या राजतिलक का साज सजो, या रण का धौंसा बजवादो॥

धौम्य—पुरोहित द्रुपद-नृप, चुने गये इस बार।
दुर्योधन की ओर से, हुआ पूर्ण सत्कार॥

पर बात तोड़ पर जब आई, तो फिर मुँह तोड़-जवाब दिया।
लाखों की गिनती लिख डाली, लेकिन शून्य का हिसाब मिला॥
तब धौम्य पुरोहित गरमाये, बोला कुरु-पति! चेताता हूँ।
उन भभके हुए नाहरों का, अन्तिम सन्देश सुनाता हूँ॥

बैठे हैं दरबार में, मुख्य मुख्य सरदार।
धर्म—राज की ओर से, है आखिरी पुकार॥

बरसों ही बीती जाती हैं, यों करते हुए पुकार उन्हें।
अब घर की कुशल चाहते हो, तो दे डालो अधिकार उन्हें॥
अन्यथा पुकारों के बदले, तलवार उठाई जायेगी।
ललकार व्योम तक गूँजेगी, घर-घर मार दिखायेगी॥
हे भीष्म विदुर! हे द्रोण नृपति, अब दुर्योधन को समझादो।
जो कुल की कुशल चाहते हो, तो दीनों का हक दिलवादो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिकारों का दे देना ही, संधि या शांति का कारण है।
या कुरुक्षेत्र के मैदां में, यह रण के लिए निमन्त्रण है॥

भीष्म द्रोण कहने लगे, दे दो प्रिय अधिकार।
कर देगी तकरार यह, कुल का बंटाढार॥

गरदन पर काल आ चुका है, लेकिन अब भी टल सकता है।
बिछ चुका जाल चौतर्फा से, फिर की काबू चल सकता है॥
इस वक्त काम बन सकता है, थोड़ा सा त्याग दिखाने से।
पर आगे सुलझ न पायेगी, लाखों का खून बहाने से॥
घर की खट-पट के होने से, फिर कुछ भी हाथ न आयेगा।
जायेगा यह राज-ताज, पछताना ही रह जायेगा॥

दुर्योधन कहने लगा, दादा! घर को जाव।
भक्त मण्डली में कहीं, रखना यह प्रस्ताव॥

तैयारी करो लड़ाई की, आपस ही में संग्राम न लो।
मरने-कटने की बात करो, लेने-देने का नाम न लो॥
द्विजराज! धर्म पति से कह दो, बातों से ही पेटा न भरें।
शुभ कुरुक्षेत्र तक आने की, दल-बल समेत तकलीफ करें॥
इस समर निमन्त्रण ही पर बस, स्वीकृति की मोहर हमारी है।
संग्राम भूमि में स्वागत को, कौरव दल की तैयारी है॥
यह राज-ताज लेना देना, उनकी शक्ति पर मुनहसिर है।
मांगे दमड़ी के चने नहीं, लड़ने पर सब कुछ हाजिर है॥
ग्यारह अक्षौहिणी दल सने, रण-धीर कर्ण से आशा है।
यह गीदड़ भभकी यहाँ न दें, दुर्योधन नहीं बतासा है॥

बिलख कहा धृतराष्ट्र ने, बेटा कहना मान।
इसना कुलको बात पर, कर न विश्व बलिदान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह हां में हां कहने वाले, कोई भी काम न आयेंगे।
तू अलग पड़ा तड़पायेगा, ये अलग पड़े बिलपायेंगे॥
भूतल की अगणित ललनायें, बिधवा बनकर बिलपायेंगी।
भारत की महान आत्माएँ, सारी स्वाहा हो जायेंगी॥
आर्यों का गुण गौरव वैभव, सब बल विक्रम खो जायेगा।
इस वीर युद्ध में याद रहे, निर्वीर्य हिन्द हो जायेगा।

संजय ने कुरुनाथ को, दिया सन्देशा आय।
तुम्हें कुछ समय के लिये, माता रही बुलाय॥

दुर्योधन गमनित हुआ, रङ्ग-महल की ओर।
कह विनीत आनन्द से, जयश्री नन्द किशोर॥

* कुरुक्षेत्र पर सैन्य समागम *

गान्धारी कहने लगी, कुरुपति को समझाय।
बेटा अब तक है सभी, अपने हाथ उपाय॥

पहले तो भीमार्जुन दोनों, योद्धाओं के अधिनायक हैं।
फिर नन्द-नन्द आनन्द कन्द, उनके वृजचन्द सहायक हैं॥
प्रभु से विपरीत खड़े होना, जग से विपरीत कहाना है।
त्रिभुवन-पति से उलटे चलकर, त्रिभुवन में कहाँ ठिकाना है॥
इसलिये पिता का कहा करो, भूलो मद यह योधापन का।
दे दो अधिकार पाण्डवों के, आसरा गहो वृजनन्दन का॥

कुरु-पति बोला क्या करूं, तुम सबसे व्यवहार।
इसी अन्ध विश्वास में, पलट गया संसार॥

मैया! वह त्रिभुवन नाथ नहीं, ग्वालों का नाथ कहाता है।
हां एक हुनर भी है उनमें, मीठी बांसुरी बजाता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ राग-रागिनी का प्रभाव कुछ चेटक भी दिखलाता है।
बन दो ही बातों को लेकर, दुनियाँ को ठगता जाता है॥
उसने ही अभी पाण्डवों को, भर भर कर जोश दिलाया है।
घर बैठे हुए नाहरों का, वे बजह कान खुजलाया है॥
मैं वीर-नाद को सुनकर भी, जननी! बतला क्या मौन रहूँ।
यह भी न करूँ वह भी न करूँ, तो आज कहांका कौन रहूँ॥
पड़ गया अन्ध-विश्वासों में, अन्धा हो गया जमाना है।
वरना मोहन कुछ चीज नहीं, ग्वाला है और जनाना है॥

गान्धारी कहने लगी, ओ कुपूत नादान।
आ पहुँचा है शीश पर, काल-रूप शैतान॥

वह बनसी ही बनसी बनकर, तुझको मीन सा फँसायेगी।
उस नटवर की नाटकी चाल, तुमको भी नाच नचायेगी॥
काल के समय सञ्जीवन भी, उलटा प्रभाव कर जाती है।
दोपहरी में चमगीदड़ को, दुनियां अन्धी दिखलाती है॥
आचुकी काल की दूती है, बज पड़ी धर्म की तूती है।
जाना तेरी रजपूती है, होना ही मुझे निपूती है॥
वह महा-कालका महा-काल, जीवन का जीवन माना है।
रे अन्ध तेरी नजरों में, वह ना कुछ और जनाना है॥
मान ले अमाने! मौका है, बूढ़ी मातु की मनौती है।
संहार-काल आ पहुँचा है, मोहन की तुझे चुनौती है॥

खिजलाना कुरु-पति चला, भानुमती के पास।
भानुमती कहने लगा, उसको देख उदास॥

कौनसी मुसीबत की आँधी, इस तरफ खींच ले आई है।
रुख की सुरखी बे रुखी हुई, मुँह पर उड़ रही हवाई है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुरु-पति बोला क्या कहूँ प्रिये, अपने हो गये बिगाने हैं।
मुखिया करते मनमानी हैं, अन्धे अन्धी शठियाने हैं॥
ना कुछ ना चीज जनाने को, प्रभु का अवतार बताते हैं।
दिल को पहाड़ दिखलाते हैं, मेरा उत्साह गिराते हैं॥
तबियत कहती है इन सबको, हथकड़ी बेड़ियां पहनादूं।
वह निकलेगा तब निकलेगा, यह कांटा अभी निकलवादूं॥

भानुमती कहने लगी, उन्हें नहीं है दोष।
करो ठिकाने नाथ कुछ, खुद अपना ही होश॥

लोगों ने सोच समझ कर ही, अवतार कृष्ण को माना है।
यह बात हमेशा याद रहे, संसार नहीं दीवाना है॥
जिसने बालक पन से अब तक, इतनी लीला विस्तारी है।
इतना तो मैं भी कहती हूँ, वह मनुज नहीं अवतारी है॥

गायनः—गोपिका बिहार यदि माने व्यभिचार कोई,
पांच वर्ष वाले कब होते काम-धारी हैं।
यदि थे मुरारी तब प्रकृति बिजेता हुए,
ऐसे तन-धारी जग सिद्ध-कला धारी हैं॥
कितने पिशाच-बधे, विश्व-रूप दरशाया,
विविध प्रकार लाख महिमा विस्तारी है॥
ऐसे ही प्रमाण देख सिद्ध यह साफ ही है,
कृष्ण रास-धारी नहीं, आदि अवतारी हैं॥

इस कारण मेरी विनय मान, कुछ बंटाढार कराओ ना।
मत करो निपूती माता को, दासी को रांड़ बनाओ ना॥
है आज बन्धुता का नाता, फिर दुनियां का नाता न रहे।
बल-दाता हैं मत-दाता हैं, आगे पानी दाता न रहे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन कहने लगा, ओ कायर ! नाबकार ।
है तेरी भी समझ में, वह अलिया अवतार ॥
मेरी अर्द्धाङ्गिन कहलाकर, मोहित है उसकी हरकत पर ।
लग जाय आग इस सत्पन में, बिजली टूटे पतिव्रत पर ॥
तू वीर प्रिया कहला कर भी, कायरता मुझे दिखाती है ।
ओ नीच कमीनी बाहर चल, यह काला मुँह दिखलाती है॥

भानुमती भयभीत सी, भाग पड़ी तत्काल ।
वहां कहा धृतराष्ट्र ने, सुनिये द्रुपद नृपाल ॥
वह सब संसार जानता है, वह मूढ़ बड़ा हठ वादी है ।
कुछ नहीं समझ में आता है, पागल है या उन्मादी है ॥
फिर भी तुम जाओ हम उसको, जैसे होगा समझायेंगे ।
दो चार रोज के भीतर ही, दूसरा दूत पहुँचायेंगे ॥

उत्तर पाकर चल दिये, द्विजवर द्रुपद नरेश ।
कहा धर्म दरबार में, कुरुपति का सन्देश ॥
सञ्जय से धृतराष्ट्र ने, वहां कहा हे तात ।
बिगड़ न जाये बात में, बनी बनाई बात ॥

दुर्योधन साफ मुकरता है, सिर पर दल चढ़ता आता है ।
संग्राम शुरू होते ही बस, संसार साफ दिखलाता है ॥
इस कारण ऐसी युक्ति करो, यह लज्जा शीश से टलजाये ।
दल-बादल वापिस हो जाये,अपना भी हाथ निकल आये॥
आ जांय न वे मैदानों में, फिर खाली मैदां भी न रहे ।
ऐसे विचार का उत्तर हो, हां भी न रहे ना भी न रहे ॥

यह सिर पर आया हुआ, दो यदि भार उतार ।
लगे आठवें रोज फिर, उठा हुआ बाजार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सञ्जय गया विराट पुर, पहुँचा प्रभु के पास ।
शान्ति सदन में उस समय, सोते थे घनश्याम ॥
जाग पड़े कुछ देर में, उठ बैठे सुखधाम ।
सञ्जय ने अवसर समझ, प्रभु को किया प्रणाम ॥

प्रभु बोले सञ्जय बतलाओ, अब क्या निश्चय ठहराया है ।
अधिकार-पत्र पहुँचाया है, या रण-सन्देश पठाया है ॥
सञ्जय बोला प्रभु ! दो में से, कोई भी विषय न लाया हूँ ।
केवल धृतराष्ट्र महीपति की, कुछ विनय सुनाने आया हूँ ॥
उस हठवादी से अन्धे की, हे प्रभु ! मति पेश न जाती है ।
फिर मात पिता के नाते से, ममता भी खाये जाती है ॥
मैं हरगिज नहीं चाहता हूँ, धर्म का राज्य अधिकार न हो ।
लेकिन अधिकारों के पीछे, घर बैठे की घर मार न हो ॥
इसलिये क्षमानिधि क्षमा करो, यकायक नाथ न रोष करो ।
जैसे इतने दिन शान्त रहे, कुछ दिनों और सन्तोष करो ॥
भर जाय न खूनी नालों से, फुलवारी सुरुचि सुगन्धों की ।
लज्जापति हाथ तुम्हारे है, लज्जा उन अन्धी अन्धों की ॥

कुरु-पति की इस विनय पर, द्रवित हुए भगवान ।
चले धर्म दरबार को, केशव कृपा-निधान ॥

सञ्जय ने फिर सन्देश कहा, सरदारों में उत्साह उठा ।
लेकिन वह विनय वचन सुनकर, करुणा का एक प्रवाह उठा ॥
आँसू बह चले युधिष्ठिर के, माधव की मीठी आह उठी ।
सञ्जय के मन में छिपी हुई, उत्तर पाने की चाह उठी ॥
प्रभु बोले मैं भी जानता हूँ, उस पर न भूप का चारा है ।
लेकिन हम हक पर लड़ते हैं, तो क्या अपराध हमारा है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाओ शांतिकी प्रतीक्षा में, कुछ दिनों शांति भी धारेंगे।
रक्खेंगे बन्द लड़ाई को, उत्तर की तरफ निहारेंगे॥

जब न मिलेगा अन्त तक, राज्य नीति अनुसार।
तब अपने उद्योग का, है हमको अधिकार॥

तब तक भीम ने कहा सञ्जय, कह देना क्रूर-कमीने से।
खून का पसीना निकलेगा, सीना जोरों के सीने से॥
अब सारी कुशल इसी में है, अधिकार हमारा दिलवाये।
ईश्वर न करे वह दिन आये, वह हठ चौपट सी दिखलाये॥
फिर धर्म बीच से बोल उठे, भैया हम फिर समझाते हैं।
वे जितना हमें झुकाते हैं, हम उतना झुकते जाते हैं॥
चाचा की आज्ञा से पहले, शान्ति की यहां तैयारी है।
लेकिन फिर भी कुछ फल न मिला, तो दोनों की लाचारी है॥

सञ्जय ने जाकर कहा, सभी यहां का हाल।
कुछ दिन पीछे धर्म ने, कहा कहो गोपाल॥

चाचा की सन्धि प्रतीक्षा में, दिन पर दिन बढ़ते जाते हैं।
यह भी न सोचने पाते हैं, वह भी न सोचने पाते हैं॥
बलवीर पड़े अकुलाते हैं, क्या जाने देर दार क्या है।
हे सूत्रधार अब बतलाओ, आगे प्रभु का विचार क्या है॥
मेरे विचार में एक बार, फिर कष्ट उठाना ही होगा।
जो भला बुरा तै हो जाये, वह आगे आना ही होगा॥

कौरव पति दरबार में, फिर पहुँचे गोपाल।
किन्तु वहां तो सन्धि का, था ही नहीं सवाल॥

कौरव-पति ने प्रभु से पूछा, तो सब बबाल की बातें थीं।
यक तरफ चाल की बातें थीं, यक तरफ टाल की बातें थीं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुसकाकर कहा अन्ध नृपने, केशव ! पहले भोजन पाओ ।
जो सुन आये हो कह जाओ, जो कह आये सो सुन जाओ ॥

प्रभु बोले जिन में नहीं, प्रेम–प्रणय का तार ।
उनमें हो सकता नहीं, भोजन का व्यवहार ॥

पहिले तो प्रेम–ऐक्यता के, शुभ सूत्रों का संचाल करो ।
बँध जाओ आत्म-बन्धनों में, पीछे भोज्य का सवाल करो ॥
दुर्योधन बोला—भला यहां, यह कैसे भोजन पायेंगे ।
मिल जाये ग्वालों की जूठन, तो रुचिकर भोग लगायेंगे ॥
केशव बोले–रे अभिमानी, तू क्या समझे उस भोजन को ।
यदि आज भाग्यसे मिल जाये, तो छुऊँ न षट्-रस व्यञ्जनको ॥
उस भोली रसिक-मंडलीसी, मद-मय व्यञ्जन में स्वाद कहां ।
लादो लादो ओ भूप ! शीघ्र, ग्वालों का प्रेम–प्रसाद कहां ॥

भक्त वश्य रोने लगे, कर ग्वालों की याद ।
किन्तु विदुर के ध्यान से, उठे सहित आह्लाद ॥

विदुर भक्त ने प्रेम से, प्रभु के चरण पखार ।
पत्तल में रखकर दिये, शाक पात आहार ॥

वे प्रेम-मूर्ति प्रभु प्रेम-सहित, रुचि-रुचि कर भोजन पाने लगे ।
उसके प्रत्येक निवाले पर, स्वाद की प्रशंसा गाने लगे ॥
प्रिय विदुर ! न ऐसे स्वाद मिला, रुक्मिणी प्रियाके व्यञ्जनमें ।
ऐसा आनन्द न प्राप्त हुआ, यशुदा के परसे भोजन में ॥
हां मिलता था यह स्वाद कभी, भोले ग्वालों की जूठन में ।
या कभी कभी सुख मिलता था, राधा के मिश्री माखन में ॥

विदुर भक्त कहने लगे, रहने दो भगवान ।
भला तुच्छ जुगनू कहां, रवि के तेज समान ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीनों की बात निभाने से, तुम दीन—बन्धु कहलाते हो।
बस उसी विरद के नाते से, दीन की प्रशंसा गाते हो॥
हां! यह झंझट मय जनम कहां, वह ब्रजकी अठखेलियां कहां।
ओ गोपी-पति! बतलाओ तो, यह नीच कहां गोपियां कहां॥

यादवेन्द्र ने फिर कहा, प्यारे विदुर सुजान।
त्रिभुवन में कोई नहीं, मुझको भक्त समान॥
छिड़ा हुआ था इस तरह, भक्ति भरा संवाद।
आ पहुँची कुन्ती तभी, बोली सहित विषाद॥

क्यों केशव! अब विलम्ब क्या है, क्या फिर संदेशा लायेहो।
मेरे केहरी किशोरों को, बोलो तो कहां बिठाये हो॥
खुद हैं औरों की साया में, मां को टुकड़े खिलवाते हैं।
ऐसे कमजोर हुए हैं तो, क्यों वहीं नहीं मर जाते हैं॥
क्या मैंने उन नर-राजों को, हाड़ा खाने को जाया था।
हा! यही कलङ्क कमाने को, क्या मैंने दूध पिलाया था॥
बेटे हैं वीर सिंहनी के, तो क्यों नहीं वे आगे आयें।
डरते हों अगर सियारों से, तो वहां डूब कर मरजायें॥

कृष्णचन्द्र ने फिर कहा, फूफी! हो न अधीर।
बाजेंगी रण भेरियां, इसी नगर के तीर॥
विश्वास रहे उस प्रभु के घर, देर है मगर अन्धेर नहीं।
मेरे जाने में देरी है, उनके आने में देर नहीं॥
यह कह कर केशव विदा हुए, घर गये कर्ण बलधारी के।
रवि-सुत आनन्द मनाने लगा, पद चूम—चूम बनवारी के॥
कृष्ण ने कहा हे कर्म वीर, तुम किस धोखे में रहते हो।
अचरज है अब तक अपने को, अधिरथ का बेटा कहते हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वास्तव में सूर्य कुमार हो तुम, कुन्ती के प्रथम दुलारे हो।
श्री धर्मराज के भाई हो, पाण्डव-कुल के उजियारे हो॥
कुन्ती ने मन्त्रों के बल पर, क्वारे पन में ही जाया था।
लेकिन लौकिक—कलंक भयसे, गङ्गा में तुम्हें बहाया था॥
कुरु-पति ने अपना दल जोड़ा, तुम भी अपना समुदाय करो।
है समय धर्म के संकट का, तो प्रिय धर्म की सहाय करो॥

चरण पकड़ कर कर्ण ने, कहा झुकाये माथ।
तुम्हें सिखा सकता नहीं, नीत धर्म के साथ॥

बेशक हूँ बन्धु युधिष्ठिर का, कुन्ती-नन्दन कहलाता हूँ।
पर नीति-वान जीवन भर से, मैं नमक यहां का खाता हूँ॥
अब गाढ़ा संकट आने पर, छोड़ दूँ साथ यदि स्वामी का।
तो तुम भी साथ नहीं दोगे, उस दिन इस नमक हरामी का॥
मैं भले प्रकार जानता हूँ, कुरु—पति ने पाप कमाया है।
धीरे धीरे उन पापों का, अब प्याला भी भर आया है॥
इस कारण भार उतारन प्रभु, अब तुम भी देर लगाओ ना।
यह मद के मटके तुड़वा दो, पर मेरा प्रण तुड़वाओ ना॥

यादवेन्द्र कहने लगे, धन्य प्रतिज्ञा—पाल।
आज तुम्हारी वृत्ति का, है कायल गोपाल॥

भारत में भारत होना है, धर्म को विजय भी पाना है।
लेकिन यह रत्न गँवाना है, जिनका न जोड़ फिर आना है॥
होना चाहिये वीर नर को, इस तरह ध्यान अपने प्रण का।
मैं भी अब तुमसे कहता हूँ, दो साथ भूप दुर्योधन का॥

वीर कर्ण के पास से, विदा हुए गोपाल।
अपने दल में पहुँच कर, यों बोले तत्काल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल अर्जुन ही के मारे, तुम नाकों चने चबाते हो।
फिर सेना सहित भेड़ उसको, किस बूते पर ठहराते हो॥
शकुनी बोला बिलकुल सच है, जो भाई द्रोणी कहते हैं।
घर बैठे ही भट अर्जुन से, हम लोग कांपते रहते हैं॥
यदि केवल बातों बातों का, पुल यहां बांधते जाओगे।
तो कुल बेड़ा ले डूबोगे, बातों से पार न पाओगे॥
तुम भी सन्देशा पहुँचाओ, अपनी सेनायें सजवाओ।
लड़ना हो तो इस तरह लड़ो, वरना हक देकर गमखाओ॥

शकुनी की दरबार को, उचित जँची यह राय।
दुर्योधन की ओर भी, जुड़ा वीर-समुदाय॥
दिया दूत ने तब तलक, कुरु-पति को सन्देश।
धर्म-पक्ष में जा रहा, दल मय शल्य नरेश॥
शकुनी बोला है यहाँ, भेद नीति का काम।
ले लो अपने पक्ष में, शल्य वीर बल धाम॥

दुश्मन का दोस्त फोड़ लेना, दूनी ताकत बढ़वाता है।
अपना दल भी बढ़ जाता है, रिपुदल निर्बल पड़ जाता है॥
कुरु-पति बोला यह सच तो है, लेकिन मसला कुछ बेढव है।
जब वह उस ओर जा रहे हैं, तब आना इधर असम्भव है॥
शकुनी बोला द्विज झुकते हैं, बल भर भोजन मिलजाने से।
क्षत्रिय गण रीझा करते हैं, कुछ आव भगत दरशाने से॥
इसलिये अगर तुम जाओ तो, हल अभी समस्या होती है।
सोच लो हमारा मतलब है, मतलब की दुनियां होती है॥

दुर्योधन ने शल्य को, दिया निमन्त्रण जाय।
तथा विनय करता हुआ, यों बोला सिरनाय॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मामा जी ! मेरी जानिब से, कैसे कर लिया किनारा है ।
हो कृपा न केवल एक तरफ, यह भी भानजा तुम्हारा है॥
तुम सबके ही बलबूते पर, यह भार शीश पर धारा है ।
यदि मेरी इसमें हार हुई, तो पहले अयश तुम्हारा है ॥
फिर राज–नीतिके नाते से, यह परम धर्म क्षत्री का है ।
उस धर्मराज से भी पहले, यह मेरा रण का बीणा है ॥

वहीं ठिठक कर रह गया, शल्य वीर लाचार ।
फँसा चाल के जाल में, भागा हुआ शिकार ॥

शल्य ने कहा कुरु–पति मुझको, धर्म की ओर ही जाना था ।
उनके चरणों में शिर देकर यह जीवन सफल बनाना था ॥
लेकिन जब तुमने बांध लिया, इस राज–नीति के तांते से ।
तब चलता हूँ, मैं इसी ओर, क्षत्रिय-करतब के नाते से ॥
पर मेरी सेना रख छोड़ो, जाने दो मुझको मुहलत से ।
यह समझ रहो जा रहा है, शल्य का शरीर जमानत से ॥
वे तेरह बरसों के बिछुड़े, सपने में लाल दिखाते हैं ।
अन्दर से हृदय तरसता है, बाहर नयना अकुलाते हैं ॥
अब केवल दर्श-पर्श ही से, यह जलता ज्वाल बुझाने दो ।
ललकार लगाने से पहले, जी भर लालो कह आने दो ॥

शल्य छोड़कर सैन्य सब, गया धर्म के पास ।
लिपट गया झट कण्ठ से, होकर निपट उदास ॥

बोला–ओ धर्म न मुँह देखो, मैं पापी हूँ हत्यारा हूँ ।
भोले कुमार ! मामा न कहो, जीवन का शत्रु तुम्हारा हूँ ॥
हे धर्म ! धर्म के बन्धन में, मामा बँध गया तुम्हारा है ।
रण में सहायता देने का, यह वचन वहां पर हारा है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं बिना निमन्त्रण पाये ही, इस ओर निशान बढ़ाये था।
पर जाने ? वह छलिया कब से, मेरी ही घात लगाये था ॥
यक बयक राह में कुरु-पति ने, रण का बीणा दे दिया मुझे।
फिर राज-नीति के नाते से, अपने दलमें कर लिया मुझे॥
यह जीवन तो तब सार्थक था, जब काम तुम्हारे आ जाता।
इस तनका बूँद-बूँद लोहू, इन चरणों पर बहता जाता ॥
लेकिन मतलबही बदलगया, तबतक क्याथा अबतक क्या है।
ओ धर्म ! तुम्हीं तो बतलादो, मेरा इसमें करतब क्या है ॥

धर्म राज कहने लगे, है वह परम सुजान।
जिसको प्राण समान है, अपने प्रण की आन॥

टल जाये विश्व विधान सभी, पर कायम सत्य विधान रहे।
यह अपने प्राण रहें न रहें, पर एक वचन की आन रहे॥
छोड़ो इस जगकी ममताएँ, उन प्रभु की शरण गहो मामा।
मेरे पक्ष में रहो न रहो, पर प्रण पर अटल रहो मामा॥
मेरी भी अगर निशानी है, तो जब रण का अवसर आये।
उस समय कर्ण की समता में, पार्थ की प्रशंसा की जाये॥
केवल यह वचन सहाय मुझे, संकट के समय उबारेगी।
उतनी ही वाणी मामाजी, उस समय कर्ण को मारेगी॥

शल्य वीर यह वचन सुन, चला शीघ्र हर्षाय।
कहो वाचको ! प्रेम से, जय श्री यादव राय॥

प्रभु को लेने के लिये, अर्जुन कौरव नाथ।
पहुँचे द्वारावती में, उभय साथ ही साथ॥

प्रभु का स्वभाव संकोची है, वे शील धाम कहलाते हैं।
अपने शत्रु के सामने भी, वह सच्चा शील निभाते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तर्यामी सोचने लगे, दोनों ही साथ सिधारे हैं।
इसलिये नीति के नाते से, दोनों ही मित्र हमारे हैं॥
यदि अर्जुन का रुख रखता हूँ, तो पक्ष पात कहलायेगा।
दुर्योधन से मिलता हूँ तो, अर्थ व्यर्थ हो जायेगा॥
इसमें मेरा निद्रा-नाटक, निश्चय ही हाथ बँटायेगा।
जो कुछ जिसकी किस्मत में हैं, वह बिना दिये मिल जायेगा॥

रङ्ग भवन में सोच यह, लौट गये करुणेश।
दोनों ने कुछ देर में, भीतर किया प्रवेश॥
सिरहाने श्रीकृष्ण के, जा बैठा कुरु-नाथ।
पार्थ चरण की शरण धर, रहे झुकाये माथ॥

शोभा धारी की शोभा पर, शोभा बलिहारी जाती है।
वह सुभट छटा छवि-सागर की, कवियों को अमर दिखाती है॥
वह चित्र-विचित्र-चित्रसारी, चित्रित शैया मनहारी है।
शुभ पीताम्बरी बिछाने में, रुचती ही हरी किनारी है॥
पीताम्बर ओढ़े हुए नाथ, कुछ तिरछे पड़े सुहाते हैं।
है चन्द्र-वदन कुछ खुला हुआ, जिस पर का कुल दरशाते हैं॥

अपने-अपने भाव में, बैठे थे वे लोग।
योगिराज का तब तलक, टूटा निद्रा-योग॥
त्रिभुवन का परमार्थ या, उन दोनों का स्वार्थ।
उठते ही पैरों पड़े, अकुलाने से पार्थ॥

प्रभु ने छाती से लगा लिया, बोले कैसे अकुलाये हो।
मैं तो आने ही वाला था, तुम नाहक भागे आये हो॥
पार्थ ने कहा नाहक कैसा?, जब भार तुम्हीं पर डाला है।
अब आगे को किस तरह चलें, यह कौन बताने वाला है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री धर्म तुम्हारे आने पर, मछली जैसे तड़पाते हैं।
वीरों में एक निराशा है, राजा-गण सब अकुलाते हैं॥
कृष्ण ने कहा होगई मुझे, क्या आये अधिक अबार अभी।
तुम उठो और भोजन पाओ, मैं होता हूँ तैयार अभी॥

उठे न थे अर्जुन अभी, बोल उठा कुरु-नाथ।
यह कैसे दुहरी नजर, महमानों के साथ॥

मैं अर्जुन से पहले आकर, बैठा हूँ कृष्ण! प्रतीक्षा में।
फल निकल चुका है स्वयं एव, वे पूछे हुए परीक्षा में॥
दो की ममता में क्यों मोहन, एक को वचन दे बैठे हो।
अब मैं बेकार कहूँ तो क्या, जब एक भार ले बैठे हो॥

प्रभु ने आदर कर कहा, क्षमा करो कुरु-नाथ।
आये होंगे दर असल, यहाँ साथ ही साथ॥

पर मैंने उठ कर उसी ओर, पहले पार्थ निहारा है।
इसलिये बात करते करते, युद्ध का वचन भी हारा है॥
लेकिन दोनों के आने से, मुझ पर तुम दोनों का बल है।
अब समर-भूमि को चलने को, मैं हूँ एवं मेरा दल है॥
या एक पक्ष यादव-सेना, शस्त्रास्त्र सहित पाबन्द करो।
या बिना अस्त्र के इसी भाँति, मुझको ही फक्त पसन्द करो॥

दुर्योधन कहने लगा, तुम न चलो घनश्याम।
भारत में होगा नहीं, हिजड़ों का संग्राम॥

उस वीर-भूमि में वीरों को, अपना बलिदान चढ़ाना है।
नट-नागर तुमको ले जाकर, कुछ नाटक नहीं कराना है॥
यह विश्व-मोहनी मूर्ति लिये, जिस ओर खड़े हो जाओगे।
उस ओर वीरता के बदले, कायरता ही फैलाओगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दे चुके दैनगी अर्जुन को, उनको वह देना ही दे दो।
तुम पाण्डव दल की ओर रहो, हमको तो सेना ही दे दो॥

कौरव-पति गमनित हुआ, यादव-दल के साथ।
लिये पार्थ को चल दिये, भक्त-वत्स यदुनाथ॥
जाते ही प्रभु ने कहा, अब न देर का काम।
या फौरन ही सन्धि हो, या रोपो संग्राम॥

निष्कारण देर हो रही है, नाहक दिन चलते जाते हैं।
सुस्ती सी आती जाती है, रण धीर पड़े अकुलाते हैं॥
अब नियम सहित दूसरी बार, सन्देश वहाँ पर पहुँचा दो।
या राजतिलक का साज सजो, या रण का धौंसा बजवादो॥

धौम्य—पुरोहित द्रुपद-नृप, चुने गये इस बार।
दुर्योधन की ओर से, हुआ पूर्ण सत्कार॥

पर बात तोड़ पर जब आई, तो फिर मुँह तोड़-जवाब दिया।
लाखों की गिनती लिख डाली, लेकिन शून्य का हिसाब मिला॥
तब धौम्य पुरोहित गरमाये, बोला कुरु-पति! चेताता हूँ।
उन भभके हुए नाहरों का, अन्तिम सन्देश सुनाता हूँ॥

बैठे हैं दरबार में, मुख्य मुख्य सरदार।
धर्म—राज की ओर से, है आखिरी पुकार॥

बरसों ही बीती जाती हैं, यों करते हुए पुकार उन्हें।
अब घर की कुशल चाहते हो, तो दे डालो अधिकार उन्हें॥
अन्यथा पुकारों के बदले, तलवार उठाई जायेगी।
ललकार व्योम तक गूँजेगी, घर-घर धर मार दिखायेगी॥
हे भीष्म विदुर! हे द्रोण नृपति, अब दुर्योधन को समझादो।
जो कुल की कुशल चाहते हो, तो दीनों का हक दिलवादो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिकारों का दे देना ही, संधि या शांति का कारण है।
या कुरुक्षेत्र के मैदां में, यह रण के लिए निमन्त्रण है॥

भीष्म द्रोण कहने लगे, दे दो प्रिय अधिकार।
कर देगी तकरार यह, कुल का बंटाढार॥

गरदन पर काल आ चुका है, लेकिन अब भी टल सकता है।
बिछ चुका जाल चौतर्फा से, फिर की काबू चल सकता है॥
इस वक्त काम बन सकता है, थोड़ा सा त्याग दिखाने से।
पर आगे सुलझ न पायेगी, लाखों का खून बहाने से॥
घर की खट-पट के होने से, फिर कुछ भी हाथ न आयेगा।
जायेगा यह राज-ताज, पछताना ही रह जायेगा॥

दुर्योधन कहने लगा, दादा! घर को जाव।
भक्त मण्डली में कहीं, रखना यह प्रस्ताव॥

तैयारी करो लड़ाई की, आपस ही में संग्राम न लो।
मरने-कटने की बात करो, लैने-देने का नाम न लो॥
द्विजराज! धर्म पति से कह दो, बातों से ही पेटा न भरें।
शुभ कुरुक्षेत्र तक आने की, दल-बल समेत तकलीफ करें॥
इस समर निमन्त्रण ही पर बस, स्वीकृति की मौहर हमारी है।
संग्राम भूमि में स्वागत को, कौरव दल की तैयारी है॥
यह राज-ताज लैना देना, उनकी शक्ति पर मुनहसिर है।
मांगे दमड़ी के बने नहीं, लड़ने पर सब कुछ हाजिर है॥
ग्यारह अक्षौहिणी दल सने, रण-धीर कर्ण से आशा है।
यह गीदड़ भभकी यहाँ न दें, दुर्योधन नहीं बतासा है॥

बिलख कहा धृतराष्ट्र ने, बेटा कहना मान।
इतना कुबसी बात पर, कर न विश्व बलिदान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह हां में हां कहने वाले, कोई भी काम न आयेंगे।
तू अलग पड़ा तड़पायेगा, ये अलग पड़े बिलपायेंगे॥
भूतल की अगणित ललनायें, बिधवा बनकर बिलपायेंगी।
भारत की महान आत्माएँ, सारी स्वाहा हो जायेंगी॥
आर्यों का गुण गौरव वैभव, सब बल विक्रम खो जायेगा।
इस वीर युद्ध में याद रहे, निर्वीर्य हिन्द हो जायेगा।

संजय ने कुरुनाथ को, दिया सन्देशा आय।
तुम्हें कुछ समय के लिये, माता रही बुलाय॥

दुर्योधन गमनित हुआ, रङ्ग-महल की ओर।
कह विनीत आनन्द से, जयश्री नन्द किशोर॥

* कुरुक्षेत्र पर सैन्य समागम *

गान्धारी कहने लगी, कुरुपति को समझाय।
बेटा अब तक है सभी, अपने हाथ उपाय॥

पहले तो भीमार्जुन दोनों, योद्धाओं के अधिनायक हैं।
फिर नन्द-नन्द आनन्द कन्द, उनके वृजचन्द सहायक हैं॥
प्रभु से विपरीत खड़े होना, जग से विपरीत कहाना है।
त्रिभुवन-पति से उलटे चलकर, त्रिभुवन में कहाँ ठिकाना है॥
इसलिये पिता का कहा करो, भूलो मद यह योधापन का।
दे दो अधिकार पाण्डवों के, आसरा गहो वृजनन्दन का॥

कुरु-पति बोला क्या करूं, तुम सबसे व्यवहार।
इसी अन्ध विश्वास में, पलट गया संसार॥

मैया! वह त्रिभुवन नाथ नहीं, ग्वालों का नाथ कहाता है।
हां एक हुनर भी है उनमें, मीठी बांसुरी बजाता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ राग-रागिनी का प्रभाव कुछ चेटक भी दिखलाता है।
बन दो ही बातों को लेकर, दुनियाँ को ठगता जाता है॥
उसने ही अभी पाण्डवों को, भर भर कर जोश दिलाया है।
घर बैठे हुए नाहरों का, वे बजह कान खुजलाया है॥
मैं वीर-नाद को सुनकर भी, जननी! बतला क्या मौन रहूँ।
यह भी न करूँ वह भी न करूँ, तो आज कहांका कौन रहूँ॥
पड़ गया अन्ध-विश्वासों में, अन्धा हो गया जमाना है।
वरना मोहन कुछ चीज नहीं, ग्वाला है और जनाना है॥

गान्धारी कहने लगी, ओ कुपूत नादान।
आ पहुँचा है शीश पर, काल-रूप शैतान॥

वह बनसी ही बनसी बनकर, तुझको मीन सा फँसायेगी।
उस नटवर की नाटकी चाल, तुमको भी नाच नचायेगी॥
काल के समय सञ्जीवन भी, उलटा प्रभाव कर जाती है।
दोपहरी में चमगीदड़ को, दुनियां अन्धी दिखलाती है॥
आचुकी काल की दूती है, बज पड़ी धर्म की तूती है।
जाना तेरी रजपूती है, होना ही मुझे निपूती है॥
वह महा-कालका महा-काल, जीवन का जीवन माना है।
रे अन्ध तेरी नजरों में, वह ना कुछ और जनाना है॥
मान ले अमाने! मौका है, बूढ़ी मातु की मनौती है।
संहार-काल आ पहुँचा है, मोहन की तुझे चुनौती है॥

खिजलाना कुरु-पति चला, भानुमती के पास।
भानुमती कहने लगा, उसको देख उदास॥

कौनसी मुसीबत की आँधी, इस तरफ खींच ले आई है।
रुख की सुरखी वे रुखी हुई, मुँह पर उड़ रही हवाई है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुरु-पति बोला क्या कहूँ प्रिये, अपने हो गये बिगाने हैं।
मुखिया करते मनमानी हैं, अन्धे अन्धी शठियाने हैं॥
ना कुछ ना चीज जनाने को, प्रभु का अवतार बताते हैं।
दिल को पहाड़ दिखलाते हैं, मेरा उत्साह गिराते हैं॥
तबियत कहती है इन सबको, हथकड़ी बेड़ियां पहनादूं।
वह निकलेगा तब निकलेगा, यह कांटा अभी निकलवादूं॥

भानुमती कहने लगी, उन्हें नहीं है दोष।
करो ठिकाने नाथ कुछ, खुद अपना ही होश॥

लोगों ने सोच समझ कर ही, अवतार कृष्ण को माना है।
यह बात हमेशा याद रहे, संसार नहीं दीवाना है॥
जिसने बालक पन से अब तक, इतनी लीला विस्तारी है।
इतना तो मैं भी कहती हूँ, वह मनुज नहीं अवतारी है॥

गायनः—गोपिका बिहार यदि माने व्यभिचार कोई,
पांच वर्ष वाले कब होते काम—धारी हैं।
यदि थे मुरारी तब प्रकृति बिजेता हुए,
ऐसे तन—धारी जग सिद्ध—कला धारी हैं॥
कितने पिशाच—बधे, विश्व—रूप दरशाया,
विविध प्रकार लाख महिमा विस्तारी है॥
ऐसे ही प्रमाण देख सिद्ध यह साफ ही है,
कृष्ण रास—धारी नहीं, आदि अवतारी हैं॥

इस कारण मेरी विनय मान, कुछ बंटाढार कराओ ना।
मत करो निपूती माता को, दासी को रांड़ बनाओ ना॥
है आज बन्धुता का नाता, फिर दुनियां का नाता न रहे।
बल-दाता हैं मत-दाता हैं, आगे पानी दाता न रहे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन कहने लगा, ओ कायर ! नाबकार ।
है तेरी भी समझ में, वह छलिया अवतार ॥
मेरी अर्द्धाङ्गिन कहलाकर, मोहित है उसकी हरकत पर ।
लग जाय आग इस सत्पन में, बिजली टूटे पतिव्रत पर ॥
तू वीर प्रिया कहला कर भी, कायरता मुझे दिखाती है ।
ओ नीच कमीनी बाहर चल, यह काला मुँह दिखलाती है॥

भानुमती भयभीत सी, भाग पड़ी तत्काल ।
वहां कहा धृतराष्ट्र ने, सुनिये द्रुपद नृपाल ॥
वह सब संसार जानता है, वह मूढ़ बड़ा हठ वादी है ।
कुछ नहीं समझ में आता है, पागल है या उन्मादी है ॥
फिर भी तुम जाओ हम उसको, जैसे होगा समझायेंगे ।
दो चार रोज के भीतर ही, दूसरा दूत पहुँचायेंगे ॥

उत्तर पाकर चल दिये, द्विजवर द्रुपद नरेश ।
कहा धर्म दरबार में, कुरुपति का सन्देश ॥
सञ्जय से धृतराष्ट्र ने, वहां कहा हे तात ।
बिगड़ न जाये बात में, बनी बनाई बात ॥

दुर्योधन साफ मुकरता है, सिर पर दल चढ़ता आता है ।
संग्राम शुरू होते ही बस, संसार साफ दिखलाता है ॥
इस कारण ऐसी युक्ति करो, यह बला शीश से टलजाये ।
दल-बादल वापिस हो जाये, अपना भी हाथ निकल आये॥
आ जांय न वे मैदानों में, फिर खाली मैदां भी न रहे ।
ऐसे विचार का उत्तर हो, हां भी न रहे ना भी न रहे ॥

यह सिर पर आया हुआ, दो यदि भार उतार ।
लगे आठवें रोज फिर, उठा हुआ बाजार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सञ्जय गया विराट पुर, पहुँचा प्रभु के पास।
शान्ति सदन में उस समय, सोते थे घनश्याम॥
जाग पड़े कुछ देर में, उठ बैठे सुखधाम।
सञ्जय ने अवसर समझ, प्रभु को किया प्रणाम॥

प्रभु बोले सञ्जय बतलाओ, अब क्या निश्चय ठहराया है।
अधिकार-पत्र पहुँचाया है, या रण-सन्देश पठाया है॥
सञ्जय बोला प्रभु! दो में से, कोई भी विषय न लाया हूँ।
केवल धृतराष्ट्र महीपति की, कुछ विनय सुनाने आया हूँ॥
उस हठवादी से अन्धे की, हे प्रभु! मति पेश न जाती है।
फिर मात पिता के नाते से, ममता भी खाये जाती है॥
मैं हरगिज नहीं चाहता हूँ, धर्म का राज्य अधिकार न हो।
लेकिन अधिकारों के पीछे, घर बैठे की घर मार न हो॥
इसलिये क्षमानिधि क्षमा करो, यकायक नाथ न रोष करो।
जैसे इतने दिन शान्त रहे, कुछ दिनों और सन्तोष करो॥
भर जाय न खूनी नालों से, फुलवारी सुरुचि सुगन्धों की।
लज्जापति हाथ तुम्हारे है, लज्जा उन अन्धी अन्धों की॥

कुरु-पति की इस विनय पर, द्रवित हुए भगवान।
चले धर्म दरबार को, केशव कृपा-निधान॥

सञ्जय ने फिर सन्देश कहा, सरदारों में उत्साह उठा।
लेकिन वह विनय वचन सुनकर, करुणा का एक प्रवाह उठा॥
आँसू बह चले युधिष्ठिर के, माधव की मीठी आह उठी।
सञ्जय के मन में छिपी हुई, उत्तर पाने की चाह उठी॥
प्रभु बोले मैं भी जानता हूँ, उस पर न भूप का चारा है।
लेकिन हम हक पर लड़ते हैं, तो क्या अपराध हमारा है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाओ शांतिकी प्रतीक्षा में, कुछ दिनों शांति भी धारेंगे।
रक्खेंगे बन्द लड़ाई को, उत्तर की तरफ निहारेंगे॥

जब न मिलेगा अन्त तक, राज्य नीति अनुसार।
तब अपने उद्योग का, है हमको अधिकार॥

तब तक भीम ने कहा सञ्जय, कह देना क्रूर-कमीने से।
खून का पसीना निकलेगा, सीना जोरों के सीने से॥
अब सारी कुशल इसी में है, अधिकार हमारा दिलवाये।
ईश्वर न करे वह दिन आये, वह हठ चौपट सी दिखलाये॥
फिर धर्म बीच से बोल उठे, भैया हम फिर समझाते हैं।
वे जितना हमें झुकाते हैं, हम उतना झुकते जाते हैं॥
चाचा की आज्ञा से पहले, शान्ति की यहां तैयारी है।
लेकिन फिर भी कुछ फल न मिला, तो दोनों की लाचारी है॥

सञ्जय ने जाकर कहा, सभी यहां का हाल।
कुछ दिन पीछे धर्म ने, कहा कहो गोपाल॥

चाचा की सन्धि प्रतीक्षा में, दिन पर दिन बढ़ते जाते हैं।
यह भी न सोचने पाते हैं, वह भी न सोचने पाते हैं॥
बलवीर पड़े अकुलाते हैं, क्या जाने देर दार क्या है।
हे सूत्रधार अब बतलाओ, आगे प्रभु का विचार क्या है॥
मेरे विचार में एक वार, फिर कष्ट उठाना ही होगा।
जो भला बुरा तै हो जाये, वह आगे आना ही होगा॥

कौरव पति दरबार में, फिर पहुँचे गोपाल।
किन्तु वहां तो सन्धि का, था ही नहीं सवाल॥

कौरव-पति ने प्रभु से पूछा, तो सब बवाल की बातें थीं।
यक तरफ चाल की बातें थीं, यक तरफ टाल की बातें थीं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुसकाकर कहा अन्ध नृपने, केशव ! पहले भोजन पाओ ।
जो सुन आये हो कह जाओ, जो कह आये सो सुन जाओ ॥

प्रभु बोले जिन में नहीं, प्रेम–प्रणय का तार ।
उनमें हो सकता नहीं, भोजन का व्यवहार ॥

पहिले तो प्रेम–ऐक्यता के, शुभ सूत्रों का संचाल करो ।
बँध जाओ आत्म-बन्धनों में, पीछे भोज्य का सवाल करो ॥
दुर्योधन बोला—भला यहां, यह कैसे भोजन पायेंगे ।
मिल जाये ग्वालों की जूठन, तो रुचिकर भोग लगायेंगे ॥
केशव बोले–रे अभिमानी, तू क्या समझे उस भोजन को ।
यदि आज भाग्यसे मिलजाये, तो छुऊँ न षट्-रस व्यञ्जनको ॥
उस भोली रसिक-मंडलीसी, मद-मय व्यञ्जन में स्वाद कहां ।
लादो लादो ओ भूप ! शीघ्र, ग्वालों का प्रेम–प्रसाद कहां ॥

भक्त वश्य रोने लगे, कर ग्वालों की याद ।
किन्तु विदुर के ध्यान से, उठे सहित आह्लाद ॥

विदुर भक्त ने प्रेम से, प्रभु के चरण पखार ।
पत्तल में रखकर दिये, शाक पात आहार ॥

वे प्रेम-मूर्ति प्रभु प्रेम-सहित, रुचि-रुचि कर भोजन पाने लगे ।
उसके प्रत्येक निवाले पर, स्वाद की प्रशंसा गाने लगे ॥
प्रिय विदुर ! न ऐसे स्वाद मिला, रुक्मिणी प्रियाके व्यञ्जनमें ।
ऐसा आनन्द न प्राप्त हुआ, यशुदा के परसे भोजन में ॥
हां मिलता था यह स्वाद कभी, भोले ग्वालों की जूठन में ।
या कभी कभी सुख मिलता था, राधा के मिश्री माखन में ॥

विदुर भक्त कहने लगे, रहने दो भगवान ।
भला तुच्छ जुगनू कहां, रवि के तेज समान ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीनों की बात निभाने से, तुम दीन-बन्धु कहलाते हो।
बस उसी विरद के नाते से, दीन की प्रशंसा गाते हो॥
हां! यह झंझट मय जनम कहां, वह ब्रजकी अठखेलियां कहां।
ओ गोपी-पति! बतलाओ तो, यह नीच कहां गोपियां कहां॥

यादवेन्द्र ने फिर कहा, प्यारे विदुर सुजान।
त्रिभुवन में कोई नहीं, मुझको भक्त समान॥

छिड़ा हुआ था इस तरह, भक्ति भरा संवाद।
आ पहुँची कुन्ती तभी, बोली सहित विषाद॥

क्यों केशव! अब विलम्ब क्या है, क्या फिर संदेशा लायेहो।
मेरे केहरी किशोरों को, बोलो तो कहां बिठाये हो॥
खुद हैं औरों की साया में, मां को टुकड़े खिलवाते हैं।
ऐसे कमजोर हुए हैं तो, क्यों वहीं नहीं मर जाते हैं॥
क्या मैंने उन नर-राजों को, हाहा खाने को जाया था।
हा! यही कलङ्क कमाने को, क्या मैंने दूध पिलाया था॥
बेटे हैं वीर सिंहनी के, तो क्यों नहीं वे आगे आयें।
डरते हों अगर सियारों से, तो वहां डूब कर मरजायें॥

कृष्णचन्द्र ने फिर कहा, फूफी! हो न अधीर।
बाजेंगी रण भेरियां, इसी नगर के तीर॥

विश्वास रहे उस प्रभु के घर, देर है मगर अन्धेर नहीं।
मेरे जाने में देरी है, उनके आने में देर नहीं॥
यह कह कर केशव बिदा हुए, घर गये कर्ण बलधारी के।
रवि-सुत आनन्द मनाने लगा, पद चूम-चूम बनवारी के॥
कृष्ण ने कहा हे कर्म वीर, तुम किस धोखे में रहते हो।
अचरज है अब तक अपने को, अधिरथ का बेटा कहते हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वास्तव में सूर्य कुमार हो तुम, कुन्ती के प्रथम दुलारे हो।
श्री धर्मराज के भाई हो, पाण्डव-कुल के उजियारे हो॥
कुन्ती ने मन्त्रों के बल पर, क्वारे पन में ही जाया था।
लेकिन लौकिक-कलंक भयसे, गङ्गा में तुम्हें बहाया था॥
कुरु-पति ने अपना दल जोड़ा, तुम भी अपना समुदाय करो।
है समय धर्म के संकट का, तो प्रिय धर्म की सहाय करो॥

चरण पकड़ कर कर्ण ने, कहा झुकाये माथ।
तुम्हें सिखा सकता नहीं, नीत धर्म के साथ॥

बेशक हूँ बन्धु युधिष्ठिर का, कुन्ती-नन्दन कहलाता हूँ।
पर नीति-वान जीवन भर से, मैं नमक यहां का खाता हूँ॥
अब गाढ़ा संकट आने पर, छोड़ दूँ साथ यदि स्वामी का।
तो तुम भी साथ नहीं दोगे, उस दिन इस नमक हरामी का॥
मैं भले प्रकार जानता हूँ, कुरु-पति ने पाप कमाया है।
धीरे धीरे उन पापों का, अब प्याला भी भर आया है॥
इस कारण भार उतारन प्रभु, अब तुम भी देर लगाओ ना।
यह मद के मटके तुड़वा दो, पर मेरा प्रण तुड़वाओ ना॥

यादवेन्द्र कहने लगे, धन्य प्रतिज्ञा-पाल।
आज तुम्हारी वृत्ति का, है कायल गोपाल॥

भारत में भारत होना है, धर्म को विजय भी पाना है।
लेकिन यह रत्न गँवाना है, जिनका न जोड़ फिर आना है॥
होना चाहिये वीर नर को, इस तरह ध्यान अपने प्रण का।
मैं भी अब तुमसे कहता हूँ, दो साथ भूप दुर्योधन का॥

वीर कर्ण के पास से, विदा हुए गोपाल।
अपने दल में पहुँच कर, यों बोले तत्काल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजन् विलम्ब का काम नहीं, निष्कारण समय जारहा है।
वह मूर्ख न जाने किस धुन में, किस बनकी हवा खारहा है॥
रण धीरों को आज्ञा देदो, खुल कर वहाँ लड़ाई हो।
बात से सफाई हुई नहीं, तो अब लात से सफाई हो॥

बजा न था धौंसा अभी, हुआ न था ऐलान।
तब तक आया दल सहित, रुक्म वीर-बल धाम॥

बोला क्यों देर हो रही है, राजन् अब जल्दी कीजेगा।
जय ध्वजा हाथ में लीजेगा, मुझ को नायक-पद दीजेगा॥
मेरी ही देख रेख में बस, भारत के सारे शूर करो।
यदि तुम्हें विजय अभिलाषा है, तो छली कृष्णको दूर करो॥

धर्म राज कहने लगे, है कोई फिलहाल।
कान पकड़ इस नीच को, जो दे अभी निकाल॥

रे पामर! जो सच्चे दिल से, इमदाद पराई करते हैं।
वे स्वार्थ और ममताओं में कब, नामवरी पर मरते हैं॥
हीरा एवं कांच की लड़ी, साथ ही न तोली जाती है।
हर तरह परख कर भली-भांति, अब बोली बोली जाती है॥
इस जग मोहन की समता में, यह कौवे की सी सूरत है।
ओ निश्चर जा दूसरी जगह, इस दल में नहीं जरूरत है॥

❀ गायन ❀

शेष से शील समर्थ महेश से, सुरेश के वैभव को तज डारों।
मेघसे दानि कुबेर से साहब, स्वर्ग की शांति पै ठोकर मारों॥
चन्दसे शीतल तेज दिनेश से, तीनहुँ लोककी सम्पति हारों।
अरि मीत कहा सुर सिद्ध महा, मनमोहनके पंदकञ्जपै वारों॥

—:❀:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पकड़ भीम ने नीच को, बाहर दिया निकाल।
कुरु-पति के दरबार में, जा पहुँचा तत्काल॥
बोला भीषम के बदले में, यदि नायक का पद पाऊँ मैं।
तो दो ही दिन में बाजी के, शत्रु को विजय करवाऊँ मैं॥
दुर्योधन बोला अरे नीच, हम तोल रहे हैं प्राणों को।
होगी पसन्द क्या मातहती, आजादी के दीवाने को॥
सरदार मानना ही होता, तो क्यों करते यों तैयारी।
नादान बुरी थी क्या हमको, श्री धर्मराज की सरदारी॥
भीष्म के महा-पद के ग्राहक, ओ नालायक हैवान निकल।
ओ घर फोड़े चल बाहर जा, चमगीदड़ के महिमान निकल॥

निकला दोनों ओर से, नीच रुक्म तत्काल।
कह विनीत आनन्द से, जयति कृष्ण गोपाल॥

पांडव-दल होने लगे, चलने को तैयार।
वहाँ द्रोण से इस तरह, बोला अन्ध कुमार॥
गुरुवर जिस दिनसे कृष्ण गये, कुछ मनसा बढ़ता जाता है।
मैं लाख तरह समझाता हूँ, पर दिल न ठिकाने आता है॥
कानों में कोई बार-बार, कहता है अब न भलाई है।
पांडव लोगों से रण लेकर, घर बैठे मौत बुलाई है॥
लेकिन ऐलान हो चुका है, अब अपना चारा ही क्या है।
भगवान आपके सिवा मुझको, दूसरा सहारा ही क्या है॥
इसलिये लड़ाई के पहले, बल दे दो प्रभु! हम राह बनो।
जो पार लगाना चाहो तो, इस नैया के मल्लाह बनो॥

कहा द्रोण ने भूप सुन, अपना साफ खयाल।
जय तो है उस तरफ ही, जिधर रहें गोपाल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं तो क्या त्रिभुवन भी मिलकर, केशव से पार न पायेंगे।
कौरव-दल मारा जायेगा, पांडव झंडा फहरायेंगे॥
मैं स्वयं जानता हूँ इसमें, मेरी भी नहीं भलाई है।
इसमें कोई सन्देह नहीं, घर बैठे मौत बुलाई है॥
फिर भी अपना जीवन देकर, तेरे धान्य को बजाऊँगा।
मरते मरते अपने दम से, तेरे पक्ष को निभाऊँगा॥

यह सुनकर कुरु-पति गया, भीष्म पिता के पास।
हाथ जोड़ कहने लगा, लेकर गहरी सांस॥

दादाजी! बिना विचार किये, संग्राम मोल ले बैठा हूँ।
हे वंश-वृद्ध इस नैया का, सब भार तुम्हें दे बैठा हूँ॥
पतवार नहीं आधार नहीं, भंवरों में बिना सहारे है।
अब पार करो या दो डुबाय, भगवन् यह साथ तुम्हारे है॥

भीष्म पिता कहने लगे, कुरु-कुल के पतवार।
ले पहुँचा है आप ही, तू नैया मँझधार॥

यह नहीं धर्म की नैया है, जो पार किसी से जायेगी।
खुद डूबेगी साथ ही साथ, सारे वंश को डुबायेगी॥
तेरी चांडाल-चौकड़ी ने, कर दिया तुझे ही बे घर है।
शायद भगवान कुशल करदे, अन्यथा प्रलय का चक्कर है॥
मुझसे यदि मेरी सुनते हो, तो अपना नमक बजादूंगा।
खाया है धान्य तुम्हारा सो, तुम पर ही देह बढ़ादूंगा॥

सुन न सका झट कर्ण यह, भीष्म पिता के बोल।
बोल न पाया पर वहाँ, स्वारथ-वश मुँह खोल॥
इस कारण चुप-चाप ही, चला गया मन मार।
उठा कर्ण के बाद ही, कुरु-पति समय निहार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहीं राह में रोक कर, पकड़ कर्ण का हाथ।
लगा मनाने अन्ध-सुत, बड़ी विनय के साथ॥

भैया! बूढ़े—खुर्राटों को, ऐसे ही गाये जाना है।
मरते-मरते मर जाना है, पर सीधी बात न लाना है॥
पर हमें-तुम्हें उन बातों पर, सुनकर भी क्रोध न लाना है।
जैसे हो तैसे यह किश्ती, उस पार तुम्हें ले जाना है॥
वास्तव में केवल तुम पर ही, सब बल विश्वास हमारा है।
हो नाम भले ही कुरु-पति का, पर सारा काम तुम्हारा है॥

कहा कर्ण ने व्यर्थ में, भटकाते हो नाथ।
धावा कर दो धर्म पर, निर्भयता के साथ॥

घर बैठे रहें द्रोण भीषम, कोई भी साथी साथ न दे।
भाई भी आज छूट जायें, भावी भी अपना हाथ न दे॥
फिर भी मैं अपने बल बूते, यह सारा भार संभालूँगा।
कुरुपति विश्वास रहे तुम पर, अपना जीवन दे डालूँगा॥
निर्भय होकर धावा बोलो, हर दल के झण्डे चढ़वा दो।
दूत के हाथ से तुम भी अब, अन्तिम सन्देशा पहुँचादो॥

गया धर्म दरबार में, बनकर दूत उलूक।
बोला नर-पति हो चुकी, आज बात दो टूक॥

अब काम नहीं चल सकता है, बातों की फकत चलाचल से।
अधिकार अगर लेना चाहो, तो लो तलवारों के बल से॥
वरना अब लेने देने का, जो कोई प्रश्न उठायेगा।
तो सब से पहले इस दल का, मुखिया ही मारा जायेगा॥
फिर पकड़-पकड़ सरदारों को, बेड़ियाँ डाल दी जायेंगी।
नेताओं के मुँह बांध-बांध, तालियां डाल दी जायेंगी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे मारने भीम भट, बढ़े जोश के साथ।
लेकिन यादव चन्द्र ने, पकड़ लिया झट हाथ॥
यों कहो भीम! क्या करते हो, शान्ति को भुलाये देते हो।
दूतों पर सख्ती दिखला कर, क्या नीति मिटाये देते हो॥
यदि आज धर्म के द्वारे पर, दूत को दण्ड मिल जायेगा।
तो फिर आगे भय के मारे, कोई भी खबर न लायेगा॥
फिर दूत पराया नौकर है, अपने न आसरे रहता है।
जो कहा जाय सो सुनता है, जो सुनता है सो कहता है॥
जाओ उलूक! नृपसे कहना, समझें बिलकुल तैयार हमें।
मिलना भी है स्वीकार हमें, लड़ना भी है स्वीकार हमें॥
कल कुरु-क्षेत्र के डेरों पर, अपना झण्डा चढ़ जायेगा।
या सन्धि वहीं हो जायेगी, या समर वहीं मढ़ जायेगा॥

बिदा किया उस दूत को, यों कहकर यदुराज।
सेनायें सजने लगीं, अपना-अपना साज॥

हाथी घोड़े पैदल सवार, सब नये साज को साज चले।
राजों से हिलते मिलते से, बीच में धर्म नर-राज चले॥
धौंसे पर धर धर चोट पड़ी, धरणी की धुरियां घूम चलीं।
बलवीरों की बर्छियां उठीं, या चन्द्र चोटियां चूम चलीं॥
गाड़ियाँ वृषभ पाढ़े खच्चर, भर भर कर सब सामान चले।
द्विज-वृन्द चले नारियाँ चलीं, दर्शक बनकर महमान चले॥
धुनि गूँज उठी नभ-मंडलमें, पृथ्वी-पति पाण्डु-नन्दकी जय।
श्रोताओ तुम भी प्रेम सहित, बोलो श्रीकृष्ण चन्द्रकी जय॥

अपने अपने साज में, गमने सकल नरेश।
किन्तु कहेंगे हम यहाँ, कृष्णार्जुन का वेष॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नटवर ने अपने हाथों से, अर्जुन का साज सजाया है।
सुर-पतिका सुभगमुकट रखकर, शिवका सनाह पहनाया है॥
रक्षा मन्त्रों से रच-पच कर, भूषण सर्वाङ्ग सजाये हैं।
गांडीव और तूणीर आदि, दैवीय अस्त्र बँधवाये हैं॥

नख-सिखतक रस-राजने, साज पार्थ का साज।
कहा मधुर आवाज में, कुशल करें गण-राज॥

बलवीर! तुम्हारे बल बूते, बलवीरों का दल निर्भय हो।
हम दिल से आशिष देते हैं युद्ध में तुम्हारी ही जय हो॥
फिर तिलक और बीड़ादेकर, सन्मान किया बलधारी का।
अर्जुन ने चरण पकड़ करके, आधार लिया बनवारी का॥

ठहर गये मैदान में, सेना सहित नरेश।
किया यहाँ रस राजने, स्वयं सारथी वेश॥

उस ओर मुकुट से मिली हुई, दुलड़ी पगड़ी दरशाती है।
अलकावलि गोल कपोलों पर, कुंडल से केलि मचाती है॥
पीताम्बर पर ढीला जामा, जामे पर फेंटा कसा हुआ।
फेंटे में मुरली कसी हुई, मुरली में त्रिभुवन बसा हुआ॥

रसिक राज क्या उचित है, तुम्हें सारथी साज।
अथवा आती ही नहीं, किसी काज में लाज॥

बलि के द्वारे पर काम पड़ा, भीख को हाथ फैलाने लगे।
धर्म के यज्ञ में बारी बन, जूठी पत्तलें उठाने लगे॥
बिकगया आज क्यागरुण-यान, चल दिया कहां को दारुकहै।
है एक हाथ में डोर आज, दूसरे हाथ में चाबुक है॥

❀ गायन ❀

भक्तों की आन निभाने को, प्रकटा अवतार बिहारी का।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुण गान इसी से करता है, सारा संसार बिहारी का ॥
बल वैभव की परवा न उन्हें, प्रभुता पद की चिंता न उन्हें।
है केवल भक्तों के हित ही, सरबस बलिहार बिहारी का॥
होजाय, प्रलय क्षणही भरमें, पड़जाय चलाचल भू-तल में।
जो रह न जाय जग जीवों को, कुछ भी आधार बिहारी का॥
गोविन्द जहाँ चाहो बिचरो, श्रीकृष्ण कहो हरगिज न डरो।
त्रिभुवन है और त्रिकालों में, जब है अधिकार बिहारी का॥

दोहा-जय श्री सिद्ध गणेशकर, गवने कृपा निधान।
पीछे से चलने लगे, धीर-वीर-बलवान॥

राजे प्रधान गाजे निशान, नभगूँज उठा जय कारों से।
बिजली की छटा छिटक बैठी, बर्छियों और तलवारों से॥
धौंसकी हुमक धुमक सुनकर, धरणी की धुर धड़कानेलगी।
नभ मण्डल तक छारही रेणु, सूरजकी किरन छिपाने लगी॥

वीर-नाद में वीर गण, गाते थे जय-गान।
बलि-वेदी की ओरको, बढ़ो वीर बलवान॥

गायन-बढ़ो बहादुरो! बलिदान चढ़ाने के लिये।
उठो स्वदेश को आजाद बनाने के लिये॥
पिया है दूध अगर सिंहनी माताओं का।
चलो तो आज वही बजाने के लिये॥
न काम आयेगा ये चाम कभी मरने पर।
लगा चलो इसे निज-धर्म बचाने के लिये॥
विनीति हिन्द की सन्तान तुम कभी तो हो।
यही है वक्त तुम्हें कर्ज चुकाने के लिये॥

दोहा-ठहर गये कुछ दूर चल, सैनिक और नरेश।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म राज कहने लगे, दीन बन्धु करुणेश ॥
मोह त्याग कर चल पड़ा, वीरों का समुदाय ।
अब कहिये करुणा सहित, जयके लिये उपाय ॥
कहा कृष्ण ने नृप करो, जगदम्बा का ध्यान ।
वही करेगी समर में, हम सब का कल्यान ॥
अस्तु धर्म पति ने किया, वहीं देविका ध्यान ।
अखिल लोक कल्याणकर, प्रकटी अम्बनिदान॥

कल्याण मूर्ति तेजो निधान, त्रिभुवन स्थिर अनुशासनपर ।
वहकांति कारिणी शांतियुक्त, शोभित शक्ति सिंहासनपर ॥
षोडशी बाहु आयुध अनेक, जगमगित ज्योति अरुणारी है ।
खप्पर त्रिशूल फूल की माल, भूरे सिंह पर सवारी है ॥

धर्म राज पद पकड़ कर, पड़े रहे कुछ देर ।
फिर विनती करने लगे, माता जन पर हेर ॥

❀ गायन ❀

जाते हैं तेरे वारे मां ! बलि वेदी पर बलिदानों को ।
बल दो साहस दो दया-मये आजादी के दीवानोंको ॥
होक्रांति शांतिकी नयी लहर, हो निर्णय अब तलवारोंपर ।
खूनी गङ्गा में नहला दो, अब भारत की सन्तानों को ॥
ममता न रहे स्वारथ न रहे, रहजाय आनका ध्यान फकत ।
जेबर माने जञ्जीरों को, समझें जय हार कृपानों को ॥
मर जाना अमर मार्ग कहकर, चढ़ जायें तेरे चरणों पर ।
वह निर्भयतादो दान देवि !, अपनोंको और बिरानों को ॥

जगज्जया कहने लगी, मान नृपाल प्रतीत ।
होगी इस संग्राम में, निश्चय तेरी जीत ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कात्यायिन से धर्म ने, पाकर यह वरदान।
किया शूर-सेना सहित, आगे को प्रस्थान॥
इसी भांति गर्वान्वित हुआ, कौरव-राज-समाज।
वही निराली शान थी, वही निराला साज॥

धर्म की ओर से गांव-गांव, धन-धान्य बँटाया जाता था।
कौरव-पति की आज्ञानुसार, हर नगर लुटाया जाता था॥
धर्म-पति किसी जङ्गल की भी, हरियाली नहीं मिटाते थे।
वे दीन किसान विचारों की, जबरन रोटियां चुराते थे॥
धर्म की राह के ग्रामों में, बेगार प्रथा-तक छूटी थी।
उस तरफ लूट के साथ साथ, पड़ रही आग रँगरूठी थी॥
इस ओर प्रेम से भरा हुआ, हरिकीर्तन होता जाता था।
उनकी पियालियां चलती थीं, रांड़ों भांड़ों से नाता था॥

जो हो पहुँचे उभय-दल, कुरुक्षेत्र दरम्यान।
अपनी अपनी ओर के, गड़ने लगे निशान॥

उत्तर-पश्चिम में तांते थे, धर्मज के वीर वितानों के।
दायीं ओर को अनोखे से, कुछ तम्बू थे महमानों के॥
बाईं दिश डेरा ताना था, यदु-पति द्विज कुलाचार्यों का।
डेरों के बीचों-बीच ठीक, डेरा था सभी नारियों का॥

एक ओर को बीच में, थे श्री धर्म नृपाल।
बायें जिनके भीम थे, दायें थे गोपाल॥
व्यासदेव पहुँचे वहां, दुर्योधन के पास।
बोले राजन् हो चुका, अब रण का विश्वास॥

समता पर दल आ पहुँचे हैं, घर-भारी छिड़ने वाली है।
दस पांच घड़ी के भीतर ही, अब बनी बिगड़ने वाली है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहतर है और समय भी है, यह आई विपद हटाने का।
बीती पर धूल डालने का, भाई को गले लगाने का॥

दुर्योधन कहने लगा, हे प्रभु दया निधान।
अब करने ही दीजिये, अपना वचन प्रमाण॥

मैं भले प्रकार समझता हूँ, संहार समय चल आया है।
मेरे ही जीवन लेने को, प्रभु ने संयोग मिटाया है॥
पर प्राण-मोह में पड़ जाऊँ, ऐसी आशा मैं रहो न प्रभु।
कह दो तो जीवन दे डालूँ, पर समझौते की कहो न प्रभु॥

लड़-लड़ कर संग्राम में, दे दूं तन साह्लाद।
दया धाम दो अन्त में, इतना आशीर्वाद॥
कहा व्यास ने वीर वर, लड़ो सहित अभिमान।
टूट जाय धन धाम तन, किन्तु न टूटे आन॥
व्यास देव गमनित हुए, दे कर यों आशीष।
यहाँ धर्म दरबार में, जुड़े सभी अवनीश॥

केशव बोले अये रण धीरो, अब रण-क्षेत्र आ पहुँचा है।
बस एक हृदय से कह डालो, अपना अन्तिम करतब क्या है॥
वीरों ने एक जवान कहा, प्रण है नैया खे जाने का।
या विजय हार ले जाने का, या जीवन ही दे जाने का॥
अधिकार नहीं मिल सकते हैं, जब तक होगा संग्राम नहीं।
आज्ञा दे दो हे दया धाम, बस अब विलम्ब का काम नहीं॥

आज्ञा पाकर नाथ की, वीर हुए तैयार।
कुन्ती मां के पास में, पहुँचे पाण्डु-कुमार॥
लिपट चरण पर गिर पड़े, आंसू दिये बहाय।
हाथ जोड़कर धर्म ने, कहा विदा दे माय॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरा ऋण आज चुकाने को, तेरे सुकुमारे जाते हैं।
हिन्द को स्वतन्त्र बनाने को, हिन्द के दुलारे जाते हैं॥
उसी वीर दूध का घूँट मिले, मिल जाये प्रेम प्रसाद हमें।
उस बलिवेदी पर जाने को, कर विदा सहित आह्लाद हमें॥
माता ने चुम्बन किया, छाती से लपटाय।
तिलक लगाकर प्रेम से, कहे वचन उमड़ाय॥
केहरी—कुमारो भू-तल पर, सब आते हैं सब जाते हैं।
पर आना उनका सार्थक है, जो कुछ करतब दिखलाते हैं॥
भारत के लिये प्राण देना, मरना न कहाया जाता है।
जो जन्म भूमि पर मरता है, वह वीर अमर कहलाता है॥
इसलिये बड़ो आनन्द सहित, बलिहारी बूढ़ी माई है।
उस अमर-भूमि में जाने को, सुकुमारो! तुम्हें बिदाई है॥
बढ़आओ मोहन तनिक, लो निज हाथ सँभाल।
अब तुम जुम्मेदार हो, इस धन के गोपाल॥
बेटों को रण में भेज रही, यह क्षत्राणी की छाती है।
यह आंसू माँ की ममता है, इस भिखारिनी की थाती है॥
रह गईं अँतड़ियां यही पाँच, इस टूटी फूटी काया में।
लो जाती हैं यह आत्माएँ, गोपाल! तुम्हारी साया में॥
केशव बोले-फूफी मत रो, इन पर विश्व की जमानत है।
विश्वास रहे कृष्ण के लिये, प्राणों की जगह अमानत है॥
जिस भांति इन्हें ले जाऊँगा, वैसा ही लौटा जाऊँगा।
इन वचनों में अन्तर आया, तो मुँह न कभी दिखलाऊँगा॥
यों कहकर प्रभुने लिया, उनको अपने साथ।
कह विनीत आनन्द से, जयति द्वारकानाथ॥

❀ शुभमस्तु ❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

❀ महाभारत ❀

॥ भीष्म-पर्व ॥

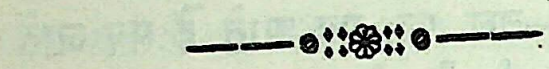

❀ प्रार्थना ❀

रहो हमारे सरकार वृजबिहारी।
आंखों में घर बनाओ सरदार वृजबिहारी।
जब मौत की घड़ी हो यमदूत सामने हों।
तब नाम तुम्हारा हो हथियार वृजबिहारी॥
वह आत्म-भाव भरदो भगवान आत्मा में।
संसार को दिखाये संसार वृजबिहारी॥
यदि पार लगादो प्रभु! इस भूल भुलैयां से।
भूलूँगा तो न हरगिज उपकार वृजबिहारी॥
इस नाव के बहने में गोविन्द दोष किसका।
जब हैं हरेक उनके आधार वृजबिहारी॥

❀ भगदत्त-बध ❀

जा पहुँचे मैदान में, दोनों दल तत्काल।
गुरु-वृन्दों को देखकर, उतरे धर्म नृपाल॥
रथ त्याग दिया पैदल भागे, भीष्म की ओर को जाने लगे।
यह दशा देखकर नर-पतिकी, सरदार सभी चकराने लगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्जुन बोला माधव देखो, भोले भैया की यह गति है।
सेना की क्या हालत होगी, जब यों सीधा सेनापति है॥
यदि कपटी-क्रूर पकड़ इनको, बन्दी करने पर अड़ जाये।
तो सारे करने धरने पर, क्षण भर में पानी पड़ जाये॥

प्रभु बोले—है धर्म का, यही महा गुण वीर।
इससे उनका जगत में, है दुर्भेद्य शरीर॥

जो केवल तन-बल रखते हैं, वे रिपु की शङ्का खाते हैं।
जिनमें आत्मिक बल होता है, वे अमर तुल्य हो जाते हैं॥
उनकी नजरों में शत्रु-मित्र, सब एक रूप दिखलाते हैं।
अपने घर और पराये घर, उनको समान हो जाते हैं॥
इस कारण धर्म महात्मा को, अपनी मर्याद निभाने दो।
बाल भी नहीं बाँका होगा, निर्भय रिपु दल में जाने दो॥

उधर कमीने कह उठे, यह देखो अन्धेर।
भागा आता है इधर, बकरी बनकर शेर॥

वह देखो सब सेना वाले, चक्कर में हिले जा रहे हैं।
निश्चय समझो डरके मारे, शरणागत धर्म आ रहे हैं॥
कोई बोला होश में रहो, डरने से धर्म न आते हैं।
हां इस प्रकार निर्भय चलकर, अपना प्रभाव जतलाते हैं॥
है जहाँ सत्य का दिव्य-अस्त्र, या क्षमा शांति का बख्तर है।
उस महा पुरुष की नजरों में, पक्ष या विपक्ष बराबर है॥
ऐसे पुरुषों की समता में, ताकत लग जाय जमाने की।
लेकिन उनके ऊपर किसमें, दम है हथियार चलाने की॥

इसी भांति चल रहा था, सबका वाद विवाद।
पड़े भीम के चरण पर, धर्म सहित आह्लाद॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीष्म की वहीं झुकगई नजर, संकोच और लज्जा लेकर।
दादा ने उन्हें दुलार किया, श्रद्धा के दो आंसू देकर॥
धर्म ने कहा हे पूज्य पिता, यदि यों ही बदला लेना था।
तो पालन पोषण करते ही, चुपचाप जहर दे देना था॥
जब बलि के बकरे पाल-पाल, खुद ही बलिदान चढ़ाओगे।
बेटों पर हाथ उठाओगे, उन से मर्याद तुड़ाओगे॥
आज्ञा दे दो हे पूज्य देव, हम लौट यहीं से जायेंगे।
हे वंश वृद्ध बालक क्यों कर, तुम पर हथियार उठायेंगे॥

भीष्म पिता कहने लगे, प्यारे धर्म कुमार।
इस बूढ़े को इस तरह, करो न अब लाचार॥

यों ही मेरे करतब मुझको, बरछी की तरह चुभाते हैं।
उस पर यह विनय वचन बेटा, मिर्च का काम दिखलाते हैं॥
मैंने चाण्डाल-चौकड़ी का, जो नमक आज तक खाया है।
उसके ही लिये बहाना ले, फल पाने का दिन आया है॥
मैं यहाँ और तुम वहाँ तात, अब इस विचार का काम कहाँ।
निश्चय समझो है विजय वहां, हैं विजयरूप घनश्याम जहाँ॥
इस धर्म युद्ध की समता में, हरगिज न अनीति कहायेगी।
तुम निर्भय मुझ पर वार करो, मर्यादा कभी न जायेगी॥
होने को तो वह होना है, जो ईश्वर ने निर्धारा है।
इस रण में विजय तुम्हारी हो, यह आशीर्वाद हमारा है॥

धर्मराज गमनित हुए, पाकर यों आशीष।
तथा द्रोण के चरण पर, वहीं झुकाया शीश॥

द्विज-वर ने भी यों कहकर, अपनी लाचारी जतला दी।
फिर और जनों से मिल करके, आ पहुँचे दल में नर-राई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों दल खड़े बराबर थे, आज्ञाओं की तैयारी थी।
हां वार न होने पाया था, वैसे तलवार उघारी थी॥
वहाँ भीष्म कहने लगे, सुनते हैं सरदार।
होना है बस युद्ध में, अपना ही संहार॥
इस धर्म यज्ञ की वेदी पर, अपना बलिदान चढ़ाना है।
इस तरफ हार रह जाना है, जय-हार धर्म को पाना है॥
प्राणों की जिसको ममता हो, या जो मरने से डरपाये।
बहतर है वह रण से पहले, केशव की शरण चला जाये॥
इतना सुनते ही चला, शीघ्र युयुत्स नृपाल।
प्रणत पाल गोपाल के, चरण पड़ा तत्काल॥
दुर्योधन कहने लगा, यह है? कौन उपाय।
इसी तरह से करोगे?, क्या सर्वदा सहाय॥
कोई औरों को बहका कर, अपने पक्ष में मिलाता है।
या यों बहकावे में लाकर, दल को बदलाया जाता है॥
इससे तो साबित होता है, मिल करके मुझे मिटाना है।
खाना है नमक कौरवों का, लेकिन धर्म की बजाना है॥
मेरी है विनय फकत् यह, उलटा जहर चढ़ाओ ना।
जाना है तुम्हीं चले जाओ, दल का उत्साह गिराओ ना॥
भीष्म पिता कहने लगे, हे कुरु-पति नादान।
वीरों की पहचान को, है यह जांच प्रधान॥
हों सेना में डरपोक लाख, तो सेना नहीं बराबर है।
हो एक वीर पर सच्चा हो, तो वह लाखों से बढ़कर है॥
डरपोक समय आजाने पर, निश्चय धोखा दे जायेगा।
जायेगा प्राण बचा करके, औरों को भी ले जायेगा॥

वह क्या तुम सभी चले जाओ, पर रुक सकता संग्राम नहीं।
मैं ही न अकेले पलटा दूं, तो भीषम मेरा नाम नहीं॥

दुर्योधन कहने लगा, है कोई सरदार।
करे एक ही बार में, जो दल का संहार॥

भीष्म ने कहा दिन ही भर को, मुझको यह सेना सारी है।
पाँच दिन लगेंगे दल बध में, यदि पड़े कर्ण की बारी है॥
द्रोण को लगेंगे तीन दिवस, अर्जुन पल में संहार सके।
कुल तीन घड़ी में द्रोण कुँवर, यह सारी सेना मार सके॥

कुरु-पति बोला पार्थ है, जब इतना बल-धार।
तो चलिये घर लौट कर, लड़ना है बेकार॥

अपने ही मुँह से दादाजी !, जब उसे बली बतलाते हो।
तो फिर किसके बल-बूते पर, उसके मुकाबिले जाते हो॥
भीष्म ने कहा यह सब सच है, पर आन न तोड़ी जायेगी।
जिसको जितनी जो करनी है, उतनी करणी की जायेगी॥

भीष्म पितामह ने किया, ज्यों ही शंख निनाद।
त्यों ही सारे वीर गण, बड़े सहित आह्लाद॥

फिर क्या था सब सेनानायक, शंखों पर शंख बजाने लगे।
ललकारों से जयकारों से, पृथ्वी आकाश हिलाने लगे॥
धर्म के शंख से मिल जुलकर, पांडव दल की झनकार उठी।
दोनों ही दल थे साथ-साथ, पर अलग २ जयकार उठी॥

केशव से कहने लगे, तब तक पार्थ सुजान।
मेरा रथ दल बीच में, ले चलिये भगवान॥

कुछ ममता की झिझकन सी है, सो यह संशय खो जायेगा।
एक ही नजर में राजों से, कुछ कुछ परिचय हो जायेगा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुरुपति के सगे कौन से हैं, उनको भी पहिचान सकूँ ।
किन किन से मुझको लड़ना है, इसको भी केशव जान सकूँ ॥

उभय दलों के बीच में, जा पहुँचे भगवान ।
अर्जुन से कहने लगे, देखो वीर सुजान ॥

यह दुर्योधन के साथी हैं, जो तुम से लड़ने आये हैं ।
इनकी ही सम्मति के कारण, अधिकार न मिलने पाये हैं॥
केशव की वाणी सुनते ही, अर्जुन ने एक नजर डाली ।
तो देखा डाली—डाली पर, बैठा है ममता का माली ॥
जिसको देखा अपना देखा, जिसको समझा अपना समझा ।
अपनों ही को सपना समझा, या अपने को सपना समझा ॥
उत्साह और क्रोध की जगह, छा गई एक मुरदारी सी ।
उड़ गया ध्यान कर्तव्यों का, आ गई आप बेकारी सी ॥

हाथ जोड़कर पार्थ ने, कहा देव सुख धाम ।
करवाना है इस जगह, किस किस से संग्राम ॥

यह दादा है यह ताऊ है, यह चाचा है यह भाई है ।
यह मामा है यह साले हैं, यह द्रोण—देव द्विज—राई हैं ॥
जिनके जीवन से जीवन के, सुख चैन जगत में पाये हैं ।
वह जान हथेली पर रख कर, संग्राम—भूमि में आये हैं ॥
वह धन न कभी फल सकता है, जिसको तांता हो सांसों पर ।
गुरु-वृन्दों को मारकर मिलें, तो धिक है भोग विलासों पर॥
दुर्योधन और सगे उसके, ममता मोह में फँसाये हैं ।
जो अपने भाई के विरुद्ध, हथियार बांधकर आये हैं ॥
पर ऊँच-नीच का ईश्वर ने, स्वामी दे दिया विचार हमें ।
फिर भी अनजाने काम करें, लाखबार धिक्कार हमें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौरव मारें भी मुझे, यदि अनीति के साथ।
वार करें मिलकर मगर, मैं न लड़ूंगा नाथ॥

यह तो पृथ्वी का टुकड़ा है, हो सुर-पुर का अधिकार मुझे।
पर बधकर स्वजन सखाओं को, स्वर्ग भी नहीं स्वीकार मुझे॥
तोला है जिसको फूलों पर, अब क्यों तोलूँ तलवारों पर।
गुरु-जन का खून बहाना है, लानत है उन अधिकारों पर॥
भगवन् यह दृश्य न जाने क्यों, उलटा सा जहर चढ़ाता है।
मैं खड़ा नहीं रह सकता हूँ, गाण्डीव फिसलता जाता है॥
गाण्डीव पार्थ ने फेंक दिया, रथ की आड़ में छिपाने लगे।
अबला की तरह रुदन करके, वे बलधारी बिलपाने लगे॥

मोहन के मुख पर उठी, मन्द मन्द मुस्कान।
योगिराज कहने लगे, सावधान बलवान॥

बातों की झड़ी लगाकर तो, तुम पण्डित पन दरशाते हो।
लेकिन करणी के करने में, केवल कायर दिखलाते हो॥
क्यों अर्जुन सूर्य-तेज को क्या, खा लिया चैत्रकी सरदी ने।
पाण्डव-वंश के पौरुष को, क्या दबा दिया नामरदी ने॥
युद्ध के समय यह कायरता, क्षत्रिय को नहीं सुहाती है।
जीवन में दाग लगाती है, अन्त में नर्क ले जाती है॥
तुम वीर वंश के बल धर हो, वीरों की नाईं काम करो।
यह बात भला वीरों को है?, हे पार्थ उठो संग्राम करो॥

कहा पार्थ ने प्राण भी, हैं हाजिर सुख-धाम।
पर अब लड़ने के लिये, कहो न मेरे श्याम॥

जिनके चरणों का पूजन कर, स्वर्ग भी सुलभ हो जाता है।
उनके विरुद्ध धनवा लेते, मेरा तो मन थर्राता है॥

CC-0.-Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ नहीं समझ में आता है, जब क्या था एवं अब क्या है।
हे ज्ञान निधान शीघ्र बोलो, हम सेवक का करतब क्या है॥
अपने पथ से जन गिरता है, ओ मोहन इसे उठाओ तुम।
यह नैया डिगी जा रही है, ओ केशव हाथ लगाओ तुम॥

योगिराज कहने लगे, पार्थ न बन यों पोच।
यह अशोच सब विषय हैं, इनको व्यर्थ न सोच॥

मैं मारूंगा मर जाऊँगा, यह नाहक ही विचारता है।
सोचकर बता तो कौन यहाँ, मरता है कौन मारता है॥
है जीव अमर तन तत्व-ग्रन्थि, दोनों का नाशक होता है।
फिर नहीं समझ में आता है, तू किसके कारण रोता है॥
मैं तुम एवं यह राजा-गण, थे हैं फिर भी आगे होंगे।
हम होंगे या कि नहीं होंगे, पर कार-चार योंही होंगे॥
जीवात्मा तन से जाने पर, कुछ भी न कहीं खो जाता है।
हां जीवों का कर्मानुसार, कुछ देहान्तर हो जाता है॥
इसलिये पुरुष को मरने की, चिन्ता से लाभ न होता है।
हां है खोता यदि नर कोई, तो कर्मों ही से खोता है॥

कहा पार्थ ने कर्म क्या, होते हैं भगवान।
एवं उनका जीव पर, है क्या भाव प्रधान॥

प्रभु बोले कोई तन पाकर, निष्कर्म न हर्गिज रहता है।
जैसे जब कर्म कमाता है, वैसे ही सुख-दुख सहता है॥
जो लोग किसी भी करतब को, फल की इच्छा से करते हैं।
वे उनके विषय भोगने को, भू-तल पर जीते मरते हैं॥
पर जो फल की इच्छा तजकर, करतब का पालन करते हैं।
वे सब करते रहने पर भी, करने का भार न धरते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये हमारे कहने से, क्षत्रिय का करतब कर अर्जुन।
मन से फल की इच्छा तज दे, करने से कभी न डर अर्जुन॥

गायन—करते हैं यहां कर्म जो कर्तव्य समझ कर।
दुःख सुख भोगते हैं वे भवितव्य समझ कर॥
शुभ और अशुभ कर्म उन्हें व्यापते नहीं।
चलते हैं जो कि शास्त्र का मन्तव्य समझकर॥
त्रैगुण त्रिदोष—पूर्ण त्याग मोह के झगड़े।
अध्यात्म—बोध पै झुको ज्ञातव्य समझ कर॥
'गोविन्द' दिये जाते हैं सन्देश लोक को।
गीता ज्ञान पढ़ो ब्रह्म का वक्तव्य समझ कर॥

दोहा—समा गया जिस हृदय में, सम्यकता का ज्ञान।
उसे जगत के दुःख सुख, सब हैं एक समान॥
दिया पार्थ को नाथ ने, उस गीता का ज्ञान।
जो इस भारत का, है एक ग्रन्थ प्रधान॥

भारत का सारा ज्ञान-तत्व, वेदों के ऊपर निर्भर है।
गीता वेदों से बढ़कर है, अथवा गागर में सागर है॥
कोई मजहब कोई फिरका, ऐसा न हमें दिखलाता है।
जो गीता सा अध्यात्मवाद, जग-जीवों को सिखलाता है॥
युवकों को सच्चा कर्म योग, वह पूज्य ग्रन्थ बतलाता है।
डूबते हुए पथ-भ्रष्टों को, गीता ही पार लगाता है॥
यह जन्म-मुक्ति की कुञ्जी है, जीवन की जीवन दायन है।
करुणायन की करुणायन है, भारत की अमर रसायन है॥

नहीं कहीं भी ग्रन्थ है, इस ग्रन्थ के समान।
इस पर होना चाहिये, हम सबको अभिमान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किन्तु शोक ! समझे नहीं, इस हीरे का मोल।
तोल रहे हैं रत्न को, कंकड़ियों की तोल ॥

इसका कारण केवल यह है, हम उसका मूल्य न जानते हैं।
वह एक धार्मिक पुस्तक है, केवल इतना ही मानते हैं॥
इस निष्ठा से कुछ लोग इसे, मरने के समय सुनाते हैं।
एवं ऐसी कर देने को, मुक्ति का हेतु बतलाते हैं॥
सेवक भी उनकी श्रद्धा का, आत्मा से यहाँ सहायक है।
ऐसा होना सम्भव है क्यों ?, विश्वास-मात्र फलदायक है॥

पर क्यों कथा के समय में, करदें यदि कुछ फेर।
तो असली फल में कभी, लगे न हमको देर॥
वैद्यक-ग्रन्थों से यथा, है तन का संयोग।
मिटते हैं इस ग्रन्थ से, त्यों ही मानस रोग॥

औषधि का नाम जानने से, तन को अराम नहीं होता।
त्यों ही गीता रट लेने से, मन को विश्राम नहीं होता॥
जब युक्ति सहित औषधि होगी, तब तनका रोग नशायेगा।
शिक्षानुसार जब चला जाय, तब शांति मार्ग मिल जायेगा॥
इसलिये हमारी सम्मति में, गीता का अमल किया जाये।
वृद्धों से पहले युवकों को, इसका उपदेश दिया जाये॥
कुछ कहते हैं गीता पढ़कर, नर अकर्मण्य दरशाते हैं।
मैं कहता हूँ वे गीता का, कुछ उलटा अर्थ लगाते हैं॥
मेरे अनुभव से तो गीता, वह कर्म-योग सिखलाता है।
जिसके द्वारा कायर नर भी, कर्म के योग बन जाता है॥

था केवल वैराग्य ही, यदि गीता का काम।
तो करते क्यों अन्त में, पार्थ-महा संग्राम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्तु दशम अध्यायतक, हुआ न भट को ज्ञान।
प्रकट हुए तब अन्त में, विश्वरूप भगवान॥

वह महाकार—विस्तार-पूर्ण, पृथ्वी आकाश मिलाता है।
जिसके प्रत्येक रोंगटे में, ब्रह्माण्ड बँधा दरशाता है॥
अनगणित सूर्य अनगणितचन्द्र, ब्रह्माशिव विष्णु दिखातेथे॥
अनगणित बाहु उर नेत्रज्वलितगिर, सरित सिन्धु दरसातेथे॥
लाखों ब्रह्माण्ड बन रहे थे, लाखों मिटते भी जाते थे।
काल के गाल में पड़े हुए, सब राजा गण दिखलाते थे॥

दिव्य दृष्टि से पार्थ ने, देखा विश्व—स्वरूप।
मुसका कर कहने लगे, जगन्नाथ सुर भूप॥

अर्जुन तू जिनको रोता है, उनका तो अन्तिम जीवन है।
भावी तो उनको मार चुकी, रण केवल उस का कारण है॥
इस लिये वीर वर! धनुष उठा, इन नीचों का संहारन कर।
क्षत्रिय है क्षत्रिय-करतब कर, संकोच छोड़ भटवर रण कर॥
तू त्रिगुणात्मक धर्म को त्याग, केवल मेरे शरणागत हो।
मैं तुझ को पार लगा दूंगा, हे महावीर चिन्तित मत हो॥

योगिराज के वचन सुन, हुआ पार्थ को ज्ञान।
चरण पकड़ कहने लगा, हे हे ज्ञान-निधान॥

मैं क्या सब जगत भुलाया है, भगवान् तुम्हारी माया ने।
त्रिभुवन को नाच नचाया है, भगवान् तुम्हारी माया ने॥
देवादि देव यह दिव्य रूप, माया के पुतले क्या जाने।
ममता मोह रँगी आंखें, क्या आदि ब्रह्म को पहिचाने॥
चित चोर किसी ने समझा है, कुछ माखन-चोर जानते हैं।
कोई नटवर ही कहता है, कुछ नन्द किशोर मानते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर जिस विभूति के ज्ञान हेतु, चतुरानन भी चकराते हैं।
उस माया-गत भेष का भेद, माया चेरे क्या पाते हैं॥

जो कुछ भी अनजान में, सखा सहायक जान।
कहा सुना है दास ने, चमिये क्षमा निधान॥

मैं हाजिर हूँ युद्ध के लिये, जो आज्ञा हो वह काम करूँ।
जिससे कहिये भगवन उससे, अब हृदय खोल संग्राम करूँ॥
यों कह कर पार्थ वीर वर ने, तरकश से तीर निकाला है।
सारथी-वेष लीलाधर ने, लीला मय यान सँभाला है॥

प्रभु बोले दल से लड़ूँ, केवल पवन किशोर।
बढ़ो पार्थ संग्राम में, भीष्म पिता की ओर॥
वीर पार्थ ने भीष्म पर, छोड़ दिये दस बाण।
कहा बिहँस कर भीष्म ने, ओ ओ कृपानिधान॥

पार्थ के सारथी बने रहो, पर रथ विश्व का चलाना है।
जग के पतवार याद रखियो, पापी भी पार लगाना है॥
आओ मधु-सूदन लीलाधर, यह समय भाग्य से आया है।
हे विश्व विमोहन तुम जानो, जो यहां तुम्हारी माया है॥
मैं भी इच्छा पर नाचूँगा, जैसा जब नाच नचाओ प्रभु।
हां पार्थ सजग हो वार करो, हां बढ़कर आगे आओ प्रभु॥

यों कह कर भट भीष्म ने, किये शस्त्र सन्धान।
बीस बाण हनुमान पर, दिये कान तक तान॥

सौ सहस लाख शर एक साथ, छोड़े अर्जुन बलधारी पर।
दस बाण बराबर छोड़ दिये, उन नट-नागर बनवारी पर॥
पीताम्बर नील-कमल तन पर, फिर-रक्त विन्दु दरसाते हैं।
मानो परागपर अम्बुज के, कुंकुम के कण छवि पाते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्जुन ने बाण चला करके, अधमरा सारथी छोड़ दिया।
काटदी ध्वजा भीष्मके बाण, फोड़कर अश्व रथ तोड़ दिया॥

इतना कर अर्जुन मुड़े, कौरव दल की ओर।
फैल गया चारों तरफ, मार मार का शोर॥
किन्तु भीष्म की ओर से, बढ़ा बाण विज्ञान।
अर्जुन भी करने लगे, उसका उचित निदान॥

भीषम ने ज्वाला फैलादी, अर्जुन ने पानी बरसाया।
उड़ चला धर्म दल आंधी से, पर उसको सांपों ने खाया॥
भीष्म ने गरुण-शर के द्वारा, सांपों का बंटाढार किया।
तब तक अर्जुन ने बाणों से, कुछ वीरों का संहार किया॥

यहां किया भट राज ने, दलमें कठिन अकाज।
वहां भीष्म के सामने, मुसकाये नट-राज॥

लग गई आगसी भीषम को, बोले बस नाथ तात वह है।
होश में सँभालो घोड़ों को, मुसकाने का जवाब यह है॥
वह बाण चलाया भीषम ने, जिससे ज्वाला संचार उठी।
दिगपालों में नरपालों में, सुरपालों में चिक्कार उठी॥
प्रभु बोले अर्जुन क्या अब तक, इन्द्रका न बाण निकाला है।
ओ वीर शीघ्रता कर वरना, सब चौपट होने वाला है॥
उस ओर भीम दूशासन थे, जयद्रथ नकुल मुकाबिल थे।
धर्म की शल्य से बाजी थी, भगदत्त द्रुपद के शामिल थे॥

अपने अपने जोड़ पर, था हर भट का जोड़।
किन्तु भीम ने कटक को, डाला घट सा फोड़॥

जिसकी जानिब हुँकार भरी, वह उसी जगह बेहोश हुआ।
मारदी गदा जिस पर भरकर, वह जीवन को खामोश हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गरदन धर मरदन कर डाला, कुछ कुचले और मरोड़ दिये।
कुछ पकड़ पकड़कर जोड़दिये, कुछ जोड़ जोड़कर तोड़दिये॥

तब तक डाले भीष्म ने, दस सहस्र नृप मार।
युद्ध रोकने के लिये, हुई शंख झनकार॥
अपने अपने शिविर को, लौटे वीर तमाम।
नर पति से भोजन समय, बोले श्रीघनश्याम॥

नर राज आज की विजय ध्वजा, बलवीर भीष्मने पाई है।
जिसने केवल अपने बल पर, नृप सेना मार गिराई है॥
अब प्रातकाल सेनापति का, शंख पर भृकुट धरना होगा।
बाकी कौरव बलवीरों से, तुम सबको रण करना होगा॥

प्रातकाल प्रभुने किया, फिर वह प्रकट विचार।
नृप विराट कहने लगे, हे हे जगदाधार॥

आपकी भृकुटि का सीधापन, भिक्षुक को भूप बनाता है।
आपका तनिक ही कृपा भाव, मुरदे को विजय दिलाता है॥
शङ्ख को बनाया सेनापति, दीनों को राज्य दिलाना है।
सौभाग्य एक भिखमंगे को, सुरपति के सायक माना है॥

शङ्ख वीर के शीश पर, रखा कृष्ण ने ताज।
चरण पकड़ भट ने कहा, शक्ति सिन्धु नटराज॥
नहीं पार्थ की डोर ही, है प्रभु-कर के हाथ।
बँधा हुआ कुल विश्व है, इस इच्छा के साथ॥

हे जगत नाट्यशाला मोहन, जग-व्यापक निर्विकार तुम हो।
हम नाट्य-कार कहलाते हैं, नाटक के सूत्र-धार तुम हो॥
पक्ष भी तुम्हारे बल पर है, शत्रु भी तुम्हारे बल पर है।
हे समदर्शी! इन नजरों में, सब पक्ष-विपक्ष बराबर है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि यह बाना पहनाते हो, तो कीजो मोहि निशङ्क प्रभो ।
दे दीजो वीर मुक्ति स्वामी, दीजो मत वीर कलङ्क प्रभो ॥
पूरी कर दीजो प्रथम देव, जिसके कारण आरथी मुझे ।
इस महारथी पद पर दीजे, पार्थ की भांति सारथी मुझे ॥

देखा प्रभु ने लौट कर, वीर सात्यकी ओर ।
सात्यकि ने संकेत पर, पकड़ी रथ की डोर ॥

तब तक बाहर सुन पड़ा, कौरव-दल का शोर ।
शंख शूर सेना सहित, बढ़ा भीष्म की ओर ॥

दस बाण देह पर पड़ते ही, आगया उबाल पितामह को ।
चिन्ताथी दल सँभालने की, थी खुद न सँभाल पितामहको॥
कारण श्रीकृष्ण और अर्जुन, भीष्म के न आगे आये थे ।
वे और भीम भट मिल जुलकर, दलमें हलचली मचाये थे ॥
दुर्योधन उधर चीखता था, वीरो पहले यह काम करो ।
नाहर का काम तमाम करो, फिर स्यारों से संग्राम करो ॥

सिमट पड़ा कुरु-दल सभी, कृष्णार्जुन की ओर ।
हथियारों के मेघ में, छिपा दिये शह जोर ॥

किन्तु चला जब पार्थ का, माया हारी तौर ।
लगे लोटने भूमि पर, लाखों वीर शरीर ॥

उड़ गये हाथ हथियार सहित, कट-कट कर राजकुमार गिरे ।
धड़ उधड़ गये भागड़ आया, सर लिये हुए सरदार गिरे ॥
बढ़चले भीष्म उस हल-चल में, पर द्रोण उन्हें अटकानेलगे ।
पर भीष्म पितामह आते ही, द्विजवर को यों समझाने लगे॥
द्विजवर शंख की ओर जाओ, लो नायक से संग्राम वहां ।
भीमार्जुन आज इकट्ठे हैं, है कुछ संकट का काम यहां ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़े द्रोण द्विज उस तरफ, पड़ी यहां धरमार।
भीष्म पिता कहने लगे, संभल पार्थ सरदार॥

मेरे परोक्ष में आज वीर, तूने अन्धेर मचाया है।
ओ नये सिंह हो सावधान, अब बूढ़ा नाहर आया है॥
पार्थ ने कहा आओ दादा, मैं क्या अन्धेर मचाता था।
इनको दर असल खिलाकर के, तुमको ही यहां बुलाता था॥
इन मेंढ़कियों से लड़ने में, वैसे ही मजा न आता है।
दिल का जौहर खुलता है जब, जोड़ से जोड़ मिलजाता है॥

इस प्रकार होने लगा, दोनों में संग्राम।
भिड़ा द्रोण द्विज वीर से, वहां शंख बल धाम॥

शंख ने एक ही शर-द्वारा, द्रोण का सारथी मार दिया।
रथ तोड़ दिया सर फोड़ दिया, घोड़ों का भी संहार किया॥
द्रोण भी भवक कर बोल उठे, खो दूंगा मूढ़ नाक तेरी।
मैं भी ब्राह्मण का विन्दु नहीं, जो पड़ी न रहे खाक तेरी॥

ब्रह्म-बाण को द्रोण ने, जहां किया सन्धान।
वहीं सात्यकी ने कहा, ओ मेरे बलवान॥

यह बाण नहीं यम धारा है, जो तेरा माथ उड़ायेगी।
ओ पाण्डव दल के नाथ! सँभल, सेना अनाथ होजायेगी॥
वह देख ज्वाल बरसा करता, ब्रह्म-शर बदन फैलाता है।
ओलाल! श्रवण कर सुर-मण्डल, हा-हा! कर भागा जाता है॥
आज्ञा दे-दे रण-धीर! मुझे, तो रथ को तनिक हटालूँ मैं।
कहदे ओ लाल! प्राण तेरे, तो इस काल से बचालूँ मैं॥
इस ब्रह्म अस्त्र को कोई भी, हीला न रोकने पायेगा।
हां वीर अगर मुड़ जायेगा, तो शस्त्र व्यर्थ हो जायेगा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शङ्ख धीर कहने लगा, सुनो सात्यकी वीर।
इसी अस्त्र के वास्ते, है वीर का शरीर॥
सब देखकर भी दें नहीं, क्षत्रिय बालक ढीठ।
दीठ पराई नार को, तथा शत्रु को पीठ॥
यदि सेनापति का पद पाकर, लूँ वार न अपने सीने पर।
तो धिक है मेरी प्रभुता पर, लानत है मेरे जीने पर॥
यह मरना वीर कीर्ति होगा, वह मरना नादानी होगा।
मेरी बदनाम खाक होगी, वह चुल्लू भर पानी होगा॥
मरजाना वीर नाम पाकर, इस कायर पन से अच्छा है।
मां पर बलिदान चढ़ा देना, नाहक जीवन से अच्छा है॥
इसलिये सामने बढ़े चलो, चिन्ता न करो इस जीवन की।
यदि मेरे रथ को मोड़ो तो, सौगन्ध तुम्हें मनमोहन की॥
चीख उठा आकाश से, देवों का समुदाय।
उफ बालक के साथ में, महा घोर अन्याय॥
ना कुछ फूल के कुचलने को, ब्राह्मण ने चक्र सँभाला है।
ओ द्रोण जरा से बालक पर, बल का खुलगया दिवाला है॥
तुमसा बुजुर्ग तुमसा योधा, नन्हे कुमार की समता पर।
फिर यह प्रहार यह खल विचार, धिकार तुम्हारी प्रभुता पर॥
किन्तु छूट ही था गया, ब्रह्म बाण का वार।
वहां झुका था सामने, वीर विराट कुमार॥
उस महा धीर को बार बार, सात्यिक समझाता जाता था।
उस ओर ब्रह्म शर दल भर में, ज्वाला फैलाता जाता था॥
सात्यिक ने शपथ टाल कर भी, रथको आगेको मोड़ दिया।
शङ्ख चूर झट कूद पड़ा, शर से सीने को जोड़ दिया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर क्या था ! था काल ही, उसमें निस्सन्देह ।
गया वीर वैकुण्ठ को, त्याग भूमि पर देह ॥
खो गया हिन्द का एक लाल, बदले में हा-हाकार मिला ।
शत्रु को देव उपहार मिला, द्रोण को वीर धिक्कार मिला ॥
हाहा खाया पाण्डव-दल में, बिलखा कर वीर समाज रहा ।
वह वीरों का सरताज वहाँ, उस अमर-लोक में राज रहा ॥

❀ गायन ❀

बता दे भारत ! वीर निधान, कहाँ है वह तेरी सन्तान ।
बाल-वयस पर रण में जाना,
जान बूझ कर मौत बुलाना,
मातृ-भूमि पर हँसते-हँसते, हो जाना बलिदान ।
जीवन की मीठी आशायें,
प्रथय-तीर मय वह श्वासायें,
एक आन पर किस प्रकार वे, दे जाते थे प्रान ।
ओ "गोविन्द" कहां वह दिन हैं,
हम तो इतने नीच मलिन हैं,
आह ! आज वे वीर कथाऐं, हैं ? क्या स्वप्न समान ।

दो०—बढ़ कर धृष्टद्युम्न ने, कहा सजग हो वीर ।
आता है अब शीश पर, समर-धीर का तीर ॥
यों कह कर तीन बाण मारे, द्रोण के शीश को फोड़ दिया ।
भीमार्जुन ने कौरव-दलको, मक्खी की तरह निचोड़ दिया॥
तब तक भीष्म की घोषणा पर, बुझ गईं बीच की ज्वालायें ।
रण बन्द हुआ धीरे-धीरे, डेरों पर पहुँची सेनायें ॥
धर्म आदि के साथ में, नृप विराट के पास ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धीरज देने के लिये, पहुँचे जगन्निवास ॥
बोले राजन् ! जो कहना है, वह मुँह से कहा न जाता है ।
लेकिन लौकिक मर्यादा है, वे बोले रहा न जाता है ॥
दुश्मन का वार बचाने को, धीरज से बढ़कर ओट नहीं ।
नर–जीवन की कुल चोटों में, बेटे से बढ़ कर चोट नहीं ॥
पर ज्ञान–निधान तुम्हें हम क्या, इसके बदले में समझायें ।
हीरे को हाथों से खोकर, बातों से क्या मन बहलायें ॥

नृप विराट कहने लगे, है यह यज्ञ महान ।
एक शङ्ख क्या ? कोट भट, होना है बलिदान ॥

माधव ! इस दल-बल को केवल, नहीं दिखाने लाये हैं ।
सङ्कल्प–सहित इतने प्राणी, बलिदान चढ़ाने आये हैं ॥
विश्वास रहे ये सारा दल, केवल धर्म पर समर्पण है ।
फिर शोक मोह का काम कहां ? यह तो पहला ही पूजन है॥
भगवान ! शङ्ख भट मरा नहीं, वीरों में अमर होगया है ।
मिल गया महा–फल बेटे का, मत कहिये रत्न खोगया है ॥

यह अविचल गत देखकर, सकुचगये घनश्याम ।
प्रातकाल फिर मढ़ गया, महा-घोर संग्राम ॥
आज वीर भगदत्त का, हुआ मुख्य संग्राम ।
गदा घुमाकर सामने, डटे भीम बलधाम ॥

भगदत्त भूप भीम की ओर, बिजली की नाईं टूट पड़ा ।
छिप गया शरों से पवन–पूत, खूनी फौवारा छूट पड़ा ॥
तब तक हाथी ने रथ मरोड़, कोश भर दूर तक पहुँचाया ।
भट भीम स्वयं लज्जित होकर, ज्यों त्यों दलमें वापिस आया"
हाथी पर फिर से वार किया, भट छोड़ चला फिर तीरों को ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बे होश किया क्षण ही भर में, द्रुपदेश आदि बलवीरों को।
भीम शिखण्डी आदि सब, कर डाले बेहोश।
धर्म सैन्य पर वीर फिर, लगा दिखाने जोश॥
किन्तु एक ही बार में, बिगड़ चले बलवान।
टूट गई दल-मण्डली, भूला रण का ध्यान॥
धर्मराज यह देखकर, होने लगे अधीर।
हाथ उठा कर इस तरह, बोले वचन गम्भीर॥
ना कुछ जवान के जोशों से, खो बैठे जोश जवानी में।
जानत है इस योधा-पन पर, लग जाय आग मरदानी में॥
क्या फकत मोम के पुतले हो, जो गरमी से पिघलाये हो।
यदि यही हाल है तो नाहक, क्या स्वांग रचाने आये हो॥
करना हो करो करोगे क्या, जब समय न होगा करने का।
वीरो डरने का काम नहीं, है वक्त मारने मरने का॥
धर्मराज की बात पर, लौट पड़े सरदार।
आये भट भगदत्त पर, घन बन कर हथियार॥
किंतु तनिक भी जगहसे, बिचलित हुआ न वीर।
बोला बज्र शरीर पर, यह फूलों के तीर॥
क्यों भीम दूर हो खड़े खड़े, फर्जी घोड़े दौड़ाते हो।
औरों को खूब लड़ाते हो, खुद नहीं सामने आते हो॥
है कोई भट पाण्डव दल में, जो आज वीरता दिखलाये।
भगदत्त वीर मरदाने से, जो बद कर बाजी ले जाये॥
बढ़ा धर्म की ओर को, यों कहकर बलधाम।
आ पहुँचे यह देखकर, पार्थ और घनश्याम॥
पार्थ ने कहा ओ बड़ बोले !, नाहक गोगा फैलाया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ले सँभल सामना करने को, रणधीर पार्थ बढ़ आया है।
बोला भगदत्त-पार्थ आओ, हमको बस खोज तुम्हारी थी।
इन मुरदों की मरदानी में, बेकारी की दम मारी थी॥

बढ़ने भी पाये नहीं, अभी पार्थ रण धीर।
तब तक भट भगदत्त के, लगे बरसने नीर॥

जैसा कि काम है हाथी का, वैसा बढ़ कर संग्राम नहीं।
जब फेंक दिया रथ कुञ्जरने, तब पार्थ कहीं घनश्याम कहीं॥
बस इसी बीच में भटवर ने, लाखों भट मलकर छोड़ दिये।
हाथी ने मस्तक तोड़-फोड़, जोड़ के जोड़ मरोड़ दिये॥

फिर कृष्णार्जुन पर किया, ऐसा गहरा वार।
हुए एक ही बार में, मूर्छित पाण्डु-कुमार॥
बदल चला घनश्याम का, धीरे-धीरे रङ्ग।
गिरते-गिरते यों कहा, सावधान बजरङ्ग॥

मैं मूर्छित होने वाला हूँ, इस रथ के तुम रखवाले हो।
यह याद रहे यान ही नहीं, सेना का भार सँभाले हो॥
मान लो आज अञ्जनीलाल, राम की सैन्य मन मारे है।
यह पड़े सुमित्रा-नन्दन हैं, सञ्जीवन हाथ तुम्हारे है॥

हुए अचेतन कृष्ण भी, अर्जुन ही के सङ्ग।
वहाँ वीर भगदत्त ने, भर कर कहा उमङ्ग॥

बस सेना की कट चुकी नाक, भारत की हुई सफाई है।
वह पड़ा पार्थ बलधारी है, वह तड़प रहा यदुराई है॥
जब जड़ ही रही न झगड़े की, तो अपने हाथ सफाई है।
अब बाकी पिस्सू मच्छर हैं, कितनी देर की लड़ाई है॥

बिहँस कहा बजरङ्ग ने, व्यर्थ न जोश बघार।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूर्ख! यान रक्षवार है, कपि-पति पवन-कुमार ॥
तूतो क्या त्रिभुवन मिल करभी, यदितिल भर रथ टिसका जाये।
तो पवन-पूत बजरङ्गी भी, अञ्जनी कुमार न कहलाये ॥
क्या करूँ ? न प्रभु की आज्ञा है, वरना अब तलक उछलजाता।
इस सारी सेना को पल में, गूलर की तरह निगल जाता ॥
फिर भी जा तुझे चुनौती है, रथ को रत्ती भर टिसका दे।
है आन गुरू की जननी की, जितनी ताकत हो दिखलादे ॥

यों कहकर लांगूर से, घेर लिया कुञ्ज आय।
रामचन्द्र का नाम ले, बैठ गया हनुमान ॥

भगदत्त वीर भी बढ़ बढ़कर, बाणों की झड़ी लगाता है।
पर तीर वीर बजरङ्गी से, लगकर टुकड़े हो जाता है ॥
हाथी के सूड़ लगाते ही, अवकाश दिया बजरङ्गी ने।
रथ और पूँछ के बीच उसे, झट फांस लिया बजरङ्गी ने ॥
फिर एक कसीला कस देकर, कपि-वरने कुञ्जर छोड़ दिया।
चूरा कर दिया पसलियों का, दोनों दांतों को तोड़ दिया ॥

तब तक अर्जुन के सहित, जाग पड़े घनश्याम।
कहा पार्थने-सजग हो, ओ गज-पति बलधाम ॥

एक ही बार में यदि तेरे, हाथी की जान न ले डालूँ।
तो आन मुझे है केशव की, अपना भी जीवन दे डालूँ ॥
यों कहकर पार्थ भड़ाभट ने, जब ब्रह्म बाण को छोड़ दिया।
तो गजने एक चिकार मार, तत्काल प्राण को छोड़ दिया ॥
गज उछल गया दम निकल गया, टिक बैठी लाश किनारेसे।
लेकिन भगदत्त सँभाले था, उसको जांघ के इशारे से ॥
भेद न समझा पार्थ ने, दिया धनुष को डाल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किन्तु उन्हें संकेत कर, बोले यों गोपाल ।
अर्जुन ! धोके में आते हो, हो चुका पूर्ण जीवन-जल है ।
यह जो कुछ लहर देखते हो, उस छलिये का छल ही छल है ॥
खींचो कमान भट सावधान, बस यही बाण का अवसर है ।
विश्वास रहे आज का काम, तेरे तीरों पर निर्भर है ॥

अर्द्ध-चन्द्र-अवकाश-शर, मारा भट ने तान ।
तड़प उठा सिर धड़ उड़ा, हुए पखेरू प्रान ॥

बारह कोस तक हथियारों के, टीले से नजर आ रहे हैं ।
खूनी दरिया उमड़ाता है, घोड़े रथ बहे जा रहे हैं ॥
अनगणित शूर सरदार शस्त्र, आभूषण मुकुट दिखाते हैं ॥
खूनी जामे में डोर लिये, बनवारी शोभा पाते हैं ॥

उसी समय भट राज ने, रोक दिया संग्राम ।
लौट पड़े सेना सहित, पार्थ तथा घनश्याम ॥
रक्तविन्दु जल जात तन, अमल विमल दरशात ।
जन 'विनीत' पर द्रवित हों, बलदाऊ के तात ॥

* भीष्म-पराक्रम *

भोजन करने के समय, बोले धर्म नरेश ।
नाथ भीष्म के सामने, क्या जायेगी ? पेश ॥

जब दश सहस्र राजा यों ही, प्रति दिन संहारे जाना है ।
तो इने-गिने दिन ही पीछे, पानी देवा न दिखाना है ॥
यद्यपि हम इसे जानते हैं, यह लीला सभी तुम्हारी है ।
फिर भी हे नाथ जानते हो, कितनी सी बुद्धि हमारी है ॥
थोड़ा भी लाभ देखते हैं, तो फूले नहीं समाते हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किञ्चित भी घाटा आता है, तो मछली से तड़पाते हैं ॥
या यों कहिये कठपुतली को, अपना ही नाच दिखाता है।
आगे किसको क्या करना है ?, यह सूत्रधार बतलाता है ॥
केवल सन्देह मिटाने को, यह प्रश्न सामने डाला है।
हे अन्तर्यामी ! बतलाओ, आगे क्या होने वाला है ॥

उत्तर में भगवान ने, दिया तनिक मुसकाय।
पांचाली कहने लगी, गये अभी घबराय ॥

लीला भी कहते जाते हो, हीला भी भरते जाते हो।
श्रद्धा भी करते जाते हो, शङ्का भी करते जाते हो ॥
संग्राम-भूमि में पहुँचे हो, तो जय-हार का विचार कहां।
जब डोर नाथ को सौंप चुके, तब हम सबका अधिकार कहां ॥
क्या पता ? हार के पर्दे से, क्या जीत छिपाये बैठे हैं।
कौनसा फूल खिलवाने को, यह खून सिंचाये बैठे हैं ॥
था किसे पता ? चीर के समय, मुझको वह खून रुलायेंगे।
फिर रुला-रुला कर परदे में, वह नाटक नया रचायेंगे ॥

गायन—नाथ की भृकुटी तले संसार है।
कृष्ण ही का विश्व को आधार है ॥
जिस जगह ब्रह्मादि का चारा नहीं।
जीव का फिर क्या वहां अधिकार है ॥
क्या पता ? यह एक ही परदा लिये।
छिप रहा किसके जिये क्या तार है ? ॥
इसलिये शंका नहीं अच्छी विनीत।
एक प्रभु के ही भजन में सार है ॥

शयन हुई हर शिविर में, होकर यों सम्वाद।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रातकाल फिर से हुआ, वही समर का नाद ॥
हुई सुशर्मा भीम की, उस दिन प्रथम भिड़न्त ।
अस्त्र-शस्त्र सब तरफ से, चलने लगे तुरन्त ॥

सौ या सहस्र बाणों तक तो, भीम ने ध्यान भी किया नहीं ।
वे बार बराबर हुआ किये, पर कोई उत्तर दिया नहीं ॥
उन छिदे हुए बाणों से तन, ऐसी कुछ शोभा पाया है ।
जैसे चलताऊ पर्वत पर, कुछ घास खड़ा दिखलाता है ॥
जब लाख बाण एकही साथ, बल-वीर सुशर्मा छोड़ चला ।
तब गदा उठाकर भीम वीर, दल के दल-बादल तोड़ चला ॥
एक ही बार वह बार हुआ, शर्म्मा का चूरा निकल पड़ा ।
बकरी बनकर मिमियाय पड़ा, मुँह फेर वहां से बदल पड़ा॥

कहा भीम ने जोर से, ओ कायर रण-चोर ।
दिखला जा कुछ देर ही, वीर-दूध का जोर ॥

एक ही हाथ में भाग चला, क्षण ही भर रहा न इज्जत पर ।
चूड़ियां पहिन ले नाकारे ! थू है तेरी इस ताकत पर ॥
सब कहा सुशर्मा फिर न फिरा, हां भूरिश्रवा आगे आया ।
एक ने एक पर वार किया, एक ने एक को लटकाया ॥

❀ गायन ❀

परत बान बौछार भीम पर, जथा मेघ की झड़ी-झड़ी ।
लगत लपक लप-लपात शर, लहलहात जनु लड़ी-लड़ी ॥
छुटत सहस शर सङ्ग भङ्ग ह्वै, टूक-टूक है भूमि परी ।
गरज बरस धरि घात चलावत, खैर मनावत घड़ी-घड़ी ॥

भूरिश्रवा से भीम का, मचा इधर संग्राम ।
उधर अलम्बुक से भिड़ा, भीम पुत्र बल धाम ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों ही निश्चर कुलके हैं, दोनों की नई जवानी है।
दोनों ही वीर लड़ाके हैं, दोनों की एक निशानी है॥
बाणों की पहले मार हुई, फिर सुन्दर वीर चलाने लगे।
रथ छोड़ दिया फिर दोनों ने, हाथापाई दिखलाने लगे॥

वीर घटोत्कच ने जहाँ, दी अन्तिम झटकान।
नीच अलम्बुश के हुए, वहीं पखेरू प्रान॥
वहाँ पार्थ से भीष्म का, मचा रहा संग्राम।
थम न पितामह का हुआ, होते आई शाम॥

अटकाया ऐसा केशव ने, भीषम न सँभलने पाये हैं।
हरचन्द कोशिशें किया किये, पर भट न निकलने पाये हैं॥
आखिर बोले--प्रभु! सावधान!, बूढ़े की करामात देखो।
जो बात बात पर अटक रही, बातों में वही बात देखो॥

यों कह रथ लौटा दिया, करके घोर प्रहार।
उसी समय दस सहस नृप, कर डाले संहार॥
अभी सँभलने भी नहीं, पाये थे घनश्याम।
शंख-नाद पर हो गया, बन्द वहीं संग्राम॥
धर्म राज ने रात में, फिर पूछा हे नाथ।
क्या चारा चल सकेगा, दादाजी के साथ॥

दस सहस भूप वे वृद्ध सिंह, क्षण ही भर में निबटायेंगे।
तो किसी रोज क्या ताज्जुब है, सब दल चौपट करजायेंगे॥
मुझको तो यह अन्देशा में, हम विजय न हर्गिज पायेंगे।
संहार सभी हो जायेंगे, नाथ हो नाथ रह जायेंगे॥

कुन्ती माता ने कहा, बेटा--धारो धीर।
दीन बन्धु यदुवीर को, है दीनों की पीर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब दीन बन्धु के हाथों में, हम सब दीनों की इज्जत है।
तब हमें हानि पहुँचा जाये, यह किस दुश्मन की ताकत है॥
इन हाथों में डोरी दे दो, इन पर ही श्रद्धा किये रहो।
जो होता है देखते रहो, इन चरणों में चित दिये रहो॥

❀ गायन ❀

निज भक्त की विपदा करें, भगवान का यह कर्म है।
श्रद्धा करें भगवान पर, सद्-भक्त का यह धर्म है॥
हैं चकित चतुरानन तथा शिव, शेष-शारद भी जहां।
है मर्म की यह बात इनका, ज्ञात इनको मर्म है॥
इन दिव्य दैवी-शक्ति पर, शक्ति क्या जड़ जीव की।
चैतन्य हैं भगवान अपनी, आंख पर यह चर्म की॥
बेकार हो 'गोविन्द' चिन्ता, शोक में डूबे हुए।
विश्वास रखना चाहिये, प्रभु को तुम्हारी शर्म है॥

धर्म आदि सब सैन्य ने, किया रात विश्राम।
सुबह हुआ होने लगा, जहां तहां संग्राम॥
कहा पार्थ ने भीष्म से, दादा जी! खामोश।
अब लड़कों के सामने, यह न रहेगा जोश॥

कर चुके चार दिन मनमानी, अब कहीं शान्तिका घर देखो।
बूढ़ा करतब हो चुका खतम, अब लड़कों का करतब देखो॥
हमको इतने दिन बहका कर, इतना दल मार गिराया है।
विश्वास रहे उस माया का, अब अन्त यहां से आया है॥
यदि आज कहीं दश सहस भूप, तुम से फिर मारे जायेंगे।
तो हम भी सच्ची आत्मा से, तुमको योधा ठहरायेंगे॥

भीष्म वीर कहने लगे, चुप लड़के नादान।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूढ़े करतब की नहीं, अभी तुझे पहिचान ॥
घर में बूढ़ा ही होता है, भगवान वंश की गाड़ी का।
बूढ़ा वैद्य ही समझता है, कुछ ज्ञान रोग की नाड़ी का ॥
यदि तुम दोनों के झगड़े में, बूढ़ों की कुछ चलने पाती।
तो हँसी-हँसी की बातों में, क्यों रोने की बारी आती ॥
हो गया जमाव छोकड़ों का, बूढ़े सब वैद्य गये रोकर।
देखना नाश हो जाओगे, कौड़ी के तीन-तीन होकर ॥
लड़कों के बल कितने बल हैं ?, सुरमयी आंख के काजल हैं।
आँसू बन कर ढल जाते हैं, हम लोग पुराने चावल हैं ॥
यदि दस-सहस्र राजाओं का, संहार न करने पाऊँगा।
सौगन्ध कृष्ण बनवारी की, तो यहां न मुँह दिखलाऊँगा ॥

यह कह कर झट भीष्म पर, किया पार्थ ने वार।
एवं उत्तर दे चले, उसका गङ्ग कुमार ॥

कौरव दल में ज्वाला फैली, रह सका न भय हथियारों का।
सरदार विचारे भाग उठे, कुछ बल न रहा बलकारों का॥
भीष्म ने सैन्य की दशा देख, तत्काल मेघ शर पहुँचाया।
कुछ उमड़-घुमड़ व्योम में हुई, बिन बादल पानी बरसाया ॥
कौरव दल की बुझ गई आग, पार्थ दल पड़ा बौछारों में।
सरदार सरासर भाग गये, आ गई शील हथियारों में ॥
अर्जुन ने वायु बाण द्वारा, वह सारा नीर सुखाया है।
कौरव-दल के रथ घोड़ों को, पत्तों की तरह उड़ाया है ॥
भीष्म के सर्प शर चलते ही, रुक गई हवा दल चिल्लाया।
अर्जुन ने केकी बाण मार, सांपों का अंश मिटा पाया ॥
भीष्म पितामह ने कहा, सावधान गोपाल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आता है इस बार में, पाण्डव दल का काल ॥
अर्जुन ने भी रण-कौशल से, मुझको अब तक अटकाया है।
संध्या सिर पर आ पहुँची है, पर प्रण न पूर्ण कर पाया है॥
यों कहकर मेरु बाण छोड़ा, वरषा करदी पाषाणों की।
हड्डी-पसली टूटने लगी, पाण्डव दल के बलवानों की ॥

सुझ-बूझ सब उड़ गई, उठा घोर कुहराम ॥
अर्जुन का मुँह देखकर, यों बोले घनश्याम।

अर्जुन क्या अक-बक भूल गये, या हा! हा! नहीं सुनाता है।
वह देखो दल को मलता सा, भीम का मेरु शर आता है ॥
जल्दी ही बज्र-बाण खींचो, अन्यथा प्रलय दिखलायेगी।
यह शक्ति-भक्ति-ताकत-हिकमत, फिर कुछभी काम न आयेगी॥

अर्जुन ने ज्यों ही किया, बज्र बाण सन्धान।
चूर-चूर होकर गिरे, त्यों ही सब पाषाण ॥
इसी बीच में भीष्म ने, कर डाला सब काम।
शंख-नाद के साथ ही, बन्द हुआ संग्राम ॥
चकित-थकित से पार्थ ने, देखा चारों ओर।
बोले यह क्या बात है, मेरे नन्द किशोर ॥

दिन भरसे भीष्म पिताजी को, पलभर की मुहलत मिली नहीं।
मेरे बाणों के उत्तर से, रुकने की फुरसत मिली नहीं ॥
केवल यह क्षण ही ऐसा है, जिसमें मुझको अटकाया है।
क्या इसी एक क्षण के अन्दर, दादा ने प्रण निबटाया है ॥

यादवेन्द्र कहने लगे, तुम्हें नहीं है होश।
नहीं समझते हो अभी, ब्रह्मचर्य का जोश ॥
भीषम फौलादी योधा है, कच्ची चूड़ी का कांच नहीं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत का सच्चा नाहर है, कुछ सारङ्गी का ढांच नहीं ॥
तन का बूढ़ा--बूढ़ा न कहो, मन का बूढ़ा कहलाता है।
वास्तव में तो बूढ़ा वह है, जिसका कि वीर्य्य खो जाता है ॥
वीर्य्य की हीनता होने से, शक्ति भी हीन हो जाती है।
शक्ति की हीनता के कारण, कांति भी क्षीण हो जाती है॥
काला भी और कलूटा भी, वीर्य्य से कांति पा जाता है।
गोरा चिट्टा भी वीर्य्य बिना, फीका नीरस दिखलाता है ॥

अर्जुन ! नर की देह में, है वीर्य ही प्रधान।
है उसकी ही शक्ति से, शक्ति-मान अविमान ॥

भीषम की देह से एकबिन्दु, जीवन भर खिसलित हुआ नहीं।
वह महा-पुरुष अपने प्रण से, क्षण भर भी विचलित हुआ नहीं॥
उनको इतना दल बध करना, बच्चों का छोटा नाटक है।
हे पार्थ ! कुशल हमझो उनका, पौरुष इतनी सीमा तक है॥
अन्यथा कहीं सीमा तजकर, वह महा क्रोध में आ जाये।
तो सारा दल सुर-मंडल भी, क्षण ही भर में लोटा जाये॥
अर्जुन ! मुँह देखी बात नहीं, मैं ठीक प्रशंसा करता हूँ।
सच है कि ब्रह्मचारी नर के, पौरुष से मैं भी डरता हूँ ॥

कारण है संसार में, काम महा बलवान।
कामदेव का जीतना, नहीं काम आसान ॥

कण-कण पत्ता-पत्ता जगका, रति-पति का मुख्य सहायक है।
या यों समझो जड़-चेतन का, केवल मन्मथ ही नायक है ॥
क्या पता ? कौन से परदे में, वह परदे वाला मुसकादे।
कब किससे आंखें लड़वादे, किस पर तबियत को मचलादे ॥
इसलिये काम से जय पाना, विश्व से विजय पा जाना है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनको अपने वशमें करना, मुझपर अधिकार जमाना है॥
जिनको तुम बूढ़ा समझे हो, वह नौजवान से बढ़कर है।
अर्जुन कुछ तुम्हें पतामी है, भीषम शम्भु के बराबर है॥

आह वीर्य की शक्ति यह, यह भारत का हाल।
कठिनाई से कट सके, जिनके बारह साल॥

तेरहवां वर्ष जहां आया, पहुँचे मन चले सखाओं में।
आह किस मुँहसे क्या कहडालें, फँस बैठे कौन प्रथाओं में॥
बचपन की तरल तरङ्गों में, नीचों के निपट कुसङ्गों में।
खो दिया हाय! हीरा अपना, अनजानी कुटिल उमङ्गों में॥

मातु-पिताओ! इस तरफ, देखो आंखें खोल।
हैं माटी के मोल में, यह हीरे अनमोल॥

स्कूल और बोर्डिंग हाउस, विद्यायें नहीं पढ़ाते हैं।
हम खुले तौर से कहते हैं, खुलकर व्यभिचार सिखाते हैं॥
यों ही नाटक शृङ्गार-पूर्ण, या नौटङ्की के मण्डल हैं।
हाथ में रसीले नाविल हैं, साथ में छबीलों के दल हैं॥
तुम कहते हो लालाजी पर, घी शकर असर न लाता है।
हम कहते हैं वह घी शकर, पानी में बहता जाता है॥
बचपन में पत्थर भी खाओ, तो वहां भस्म हो जायेगा।
भाजी-भूसी का भोजन भी, चेहरे की कान्ति बढ़ायेगा॥
पर दुराचार की टेवों का, जिनको घुन सा लग जाता है।
घी-शकर तो क्या उनको फिर, अमृत भी असर न लाता है॥

भोले भाले पिताओ, करो न आंखें बन्द।
फँस बैठे हैं ग्रहण में, तात तुम्हारे चन्द॥

मत इस चक्कर में पड़े रहो, दूषित शिक्षा या भोजन है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पष्ट बात है यही फकत, लड़का नादान बदचलन है ॥
यदि इन गोदी के हीरों को. भारत माँ के आधारों को ।
बलवान बनाना चाहते हो, यदि अपने नयन सितारों को ॥
तो मेरी भी सम्मति मानो, एकान्त कभी मत जाने दो ।
नव-युवक छैल-गुण्डों से मिल,बागों की हवा न खाने दो ॥
सुन्दर कोमल गोरे चिट्टे, बच्चों का जहाँ दिवाला है ।
एकान्त और अवसर भी है, फिर कौन रोकने वाला है ॥

आठ पहर रखिये नजर,लुट न जाय यह माल ।
मोल न मिट्टी के बिकें, तो भारत के लाल ॥

❀ गायन ❀

दृग खोल सखा ! लखिये मुख लाल के, सूख परे कहुं जाल में खीरे ।
मन व्याप गई कोउ ताप की बात, परे तन काम कलोल के कीरे ॥
उड़ जीरे गये तब बीरज के, रहिगे लहि पंजर के पट—छीरे ।
टुक काँटी टटोल के मोल करो, कस माटी भये यह हिन्द के हीरे ॥

मचा दूसरे दिवस फिर, वह दारुण संग्राम ।
भीष्म—शरों के सामने, चले पार्थ—घनश्याम ॥
भीष्म ने कहा कुछ मुसकाकर,हां श्याम आज आगे आओ ।
मेरे इन बूढ़े हाथों का, थोड़ा सा काम देख जाओ ॥
बाणों की बरसा के मारे, घोड़ों के शीश फोड़ डाले ।
बजरङ्गी का तन छेद दिया, रथके कुछ भाग तोड़ डाले ॥

अर्जुन भी करते रहे, उन वारों पर वार ।
किन्तु भीष्म बलवीर का,था और ही विचार ॥
नारायण शरका किया, उसी समय सन्धान ।
काँप उठे दिकपाल सब, भागे सुर भय मान ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दलमें बिजली सी चौंक पड़ी, बादल में हुआ तड़ाका सा।
दोनों दल मंडल बिचल पड़े, भूतल पर हुआ तड़ाका सा॥
भीष्म ने कहा सम्राटे में, बस हो जाओ सावधान अर्जुन।
धर ध्यान कृष्ण के चरणों का, आता है काल बाण अर्जुन॥

उसी समय कहने लगे, माया-पति भगवान।
सावधान होकर सुनें, धीर-वीर बलवान॥

यह भीष्म वीर का तीर नहीं, प्रत्यक्ष काल ही आता है।
जिसकी समता में जाने को, कालका काल घबराता है॥
हां एक और गुण इसमें है, चलता है अस्त्र धारियों पर।
अपना न प्रभाव दिखाता है, निःशस्त्र अधीन नारियों पर॥
इसलिये अगर एक ही बार, बलिदान न अपना करना हो।
कुछ दिली उमङ्ग बुझाना हो, अनचाही मौत न मरना हो॥
तो शस्त्र छोड़ दो मुँह मोड़ो, दूसरा न कोई चारा है।
यह याद रहे मन्त्र में बँधा, यह तेज प्रताप हमारा है॥

सुनते ही यह सूचना, कांप उठे हरदार।
एक साथ मुँह मोड़कर, छोड़ दिये हथियार॥

प्रभु बोले अर्जुन क्या धुन है, यह धनुष बाण रथमें धरलो।
जो धर्म विजय करवानी हो, तो क्षण भरको पीछा करलो॥
अन्यथा अभी जतलाता हूँ, चारा न एक चल पायेगा।
मैं हाथ न देने पाऊँगा, यह माथ पड़ा रह जायेगा॥

अर्जुन ने तत्काल ही, डाल दिये हथियार।
चला भीष्म की ओरसे, महा बाण बिषियार॥
किन्तु मिले जब अस्त्रको, सब सूने सरदार।
चला भीम की ओर तब, वह विषियर फुङ्कार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्णचन्द्र कहने लगे, सजग वृकोदर वीर।
गदा हाथ से डाल दो, आता है यह तीर॥
तुम और पार्थ के बल-बूते, भारत धर्म ने रचाया है।
वा यों समझो पाण्डव दलमें, तुम दोनों ही की माया है॥
इसलिये तुम्हारे जीवन की, हम लोगों को अभिलाषा है।
विश्वास रहे यह विषम-बाण, उस जीवन का ही प्यासा है॥

कहा भीम ने क्या कहा, दीनबन्धु यदुनाथ।
कर डाला है? क्या मुझे, निपट दीन असहाय॥
मैं दीन और क्षीण ही सही, लेकिन जातिका कमीन नहीं।
तन हीन सही धन हीन सही, पर क्षत्रियता से हीन नहीं॥
सेवक हूँ मगर तुम्हारा ही, भिक्षुक हूँ मोहन स्वामी का।
झुकता हूँ तो इन चरणों में, आश्रित हूँ अन्तर्यामी का॥
कृष्ण का दास कहला करके, मातु का दूध न लजाऊँगा।
बाण को पीठ दिखला करके, नाथ को न नाम धराऊँगा॥
यदि आज मौत का भय खाकर, सेवक भी पीठ दिखायेगा।
तो भारत को कलङ्क होगा, श्रद्धा में बट्टा आयेगा॥
यह कहने को रह जायेगा, द्वापुर में कोई सुधीर न था।
था नाम 'महाभारत' लेकिन, उसमें कोई बलवीर न था॥
इसलिये दयामय सेवक को, यह जीवन अङ्गीकार नहीं।
मरजाना है स्वीकार मगर, पीछे हटना स्वीकार नहीं॥

बढ़ा भीम की ओर को, महा-अस्त्र विकराल।
यहां भक्त की टेर पर, द्रवित हुए गोपाल॥
झट कूद पड़े रथ छोड़ दिया, उस महा-बाण पर बीच किया।
तत्काल पकड़ कर केशव ने, अपने प्रभाव को खींच लिया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिंच गया सारके पास सार, वह महा अस्त्र निस्सार हुआ।
बच गये प्राण शरणागत के, त्रिभुवन में जय२ कार हुआ॥

भीष्म पिता कर जोरकर, बोले जय गोपाल।
प्रणतपाल करुणा अयन, भक्त-वत्स नन्दलाल॥

पग पग पर सिद्ध हो रहा है, भक्तों के तुम्हीं सहारे हो।
सच तो यह है भू-मंडल पर, जन के कारण अवतारे हो॥
सौभाग्य आज कुन्ती मां का, जिसने ये बेटे जाये हैं।
जिसके कारण जग तारण हरि, सारथी रूप बन आये हैं॥
प्रत्यक्ष धर्म का रूप धर्म, अर्जुन श्रद्धा का दीपक है।
भट भीम भक्तकी क्यों न सुनो, जिसकी सब टेक तुम्हीं तक है॥
बस यही तुम्हारी लीलायें, भक्तों को विवश बनाती हैं।
इस गुण पर ही मोहित होकर, आत्मायें तुम्हें मनाती हैं॥

❀ गायन ❀

यदुकुल में चन्द्र समान हो तुम, हे श्याम तुम्हारी जय होवे।
देवों में देव प्रधान हो तुम, हे घनश्याम तुम्हारी जय होवे॥
जिस ओर तुम्हारी नजर उठी, उस ओर शांति की लहर उठी।
कमलापति कांति-निधान हो तुम, हे श्याम तुम्हारी जयहोवे॥
आरत के आरत हरण हरे, शरणागत अशरण-शरण हरे।
भव-बन्धन से निर्वान हो तुम, हे श्याम तुम्हारी जय होवे॥
तुम मुरली-धर माया-धर हो, तुम धरणी-धर जगदीश्वर हो।
गोविन्द विश्व-कल्याण हो तुम, हे श्याम तुम्हारी जय होवे॥

भक्त वत्स ने हृदय से, दिया उन्हें आशीष।
मारे क्षण में भीम ने, दस सहस्र अवनीश॥
शङ्ख घोषणा पर वहीं, समर होगया बन्द।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म पार्थ के साथ में, गवने यादव चन्द ॥
सुबह हुआ फिर मचगया, मार-मार का शोर ।
अबके बढ़ा कलिंग-पति वीर-भीम की ओर ॥
बोला नृप भीम होश में आ, बल-धरका गज-समाज यह है ।
रण-वीर वीरता दिखला ले, रणधीर कलिंग राज यह है ॥
यदि आज भीम । खण्डन करदे, जो मैंने व्यूह रचाया है ।
तो मैं भी आत्मा से कहदूं, सच्ची जननी का जाया है ॥
कहा भीम ने तो सुनें, सभी शूर-सरदार ।
करता है प्रण सैन्य में, खुलकर पवन कुमार ॥

❀ गायन ❀

गह-गह मर्द मरोर गर्द के नद ले बोरों ।
फर्द फर्द कर नर्दतूल गज मस्तक फोरों ॥
भट मरकट वत पटक कटक कै फाटक तोरों ।
गज-बाहन इन बल बाहन सों जोर मरोरों ॥
धर-पकर गुत्थ गजराज के, महिं तें फेंक्यों गगन नहीं ।
यह न करों तो जानियो, हौं कुन्ती-नन्दन नहीं ॥
जब देखा प्रणपाल ने, जन के प्रण का हाल ।
दिव्य-रूप से बज्र में, प्रविशे श्री गोपाल ॥
सारथी-वेश में एक रूप, अर्जुन का यान संभार रहा ।
बज्र के रूप में एक तेज, कौरव-दल को संहार रहा ॥
जिस समय गदा की मार उठी, सब सेना बिदा पुकार उठी ।
वह गज-मंडली चिकार उठी, दल भरमें हाहाकार उठी ॥
पिच गये लाख खिंच गये कोट, कच मद न उड़ा लड़ाकों का ।
उड़ चले आप उनचास पवन, काबू उड़ गया उड़ानों का ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रथ से हाथी को मार दिया, हाथी घोड़ा से टकराया।
घोड़े को जोड़ सवारों से, दल से भी बाहर पहुँचाया॥
हाथी यों उड़ने लगे, नभ-मंडल की ओर।
जैसे फाहे रुई के, उड़ें पवन की जोर॥
योजन भरका वह दल बादल, आंधी के साथ उड़ाया है।
जो जाकर लौट न पाया है, अब तक न पता चल पाया है॥
कुछ हाथी लेकर एक साथ, भट ने इस भांति चलाये हैं।
जो काले दूतों की नाईं, लङ्का-गढ़ पर मँडराये हैं॥
उन्हें देख मन्दोदरी, हुई हृदय हैरान।
भेद जान कहने लगी, धन्य भीम बलवान॥
यह सच है लङ्का के रण में, संख्या में वीर निकाले थे।
जितना दल कुरुक्षेत्र में है, उतने तो बाजे वाले थे॥
वानर दलका निश्चर दलका, लेखे से बाहर लेखा था।
लेकिन इतना बिलकुल सच है, ऐसा न पराक्रम देखा था॥
कहते हैं वे हाथी अब भी, नभ-मण्डल में मँडराते हैं।
लेकिन भ्रम के चश्मे द्वारा, वे हमें नहीं दिखलाते हैं॥
तब तक पश्चिमी हवाओं की, लग रही हवाई आंखों में।
तब तक अपने विज्ञानों की, लो समझ सफाई आंखों में॥
अस्तु द्रोण ने दौड़कर, कर डाली बौछार।
किन्तु भीम की मार से, लौट चले सरदार॥
यहाँ भीष्म का पार्थसे, मचा रहा संग्राम।
अर्जुन ने धावा किया, लेकर प्रभु का नाम॥
तथा युक्ति के साथ में, ऐसा मारा बाण।
पग हजार पीछे हटा, भीष्म वीर का यान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा भीम ने क्रोध में, सावधान यदुनाथ।
रङ्ग दिखायेगा यहाँ, इस बूढ़े का हाथ॥
भीष्म के बाणसे अर्जुन का, यान भी तीन डगपिछल गया।
साथ ही बिहारी के मुख से, धन्य हो वीर वर! निकलगया॥
अर्जुन बोले लीला धारी, लीला भी खूब रचाते हो।
सूर्य को तुच्छ कह देते हो, जुगनू को बड़ा बनाते हो॥
मैंने हजार डग रथ फेंका, तो एक न शब्द निकाला है।
भीष्म ने तीन डग फेंक दिया, तो वाह-वाह कह डाला है॥
कृष्ण ने कहा इस कीर्ति कभी, मुँह देखी नहीं सुनाते हैं।
सच्चे वीर की बड़ाई तो, शत्रु भी हृदय में गाते हैं॥
सोचो तो अर्जुन प्रथम तुम्हीं, नामी हो धनुर्धारियों में।
फिर बजरङ्गी की गिनती है, भू-तल के ब्रह्मचारियों में॥
धारे हैं भार पहाड़ों का, नीचे शेष का सहारा है।
धर्मादि शक्ति के साथ साथ, त्रिभुवन का बोझ हमारा है॥
इतने रक्षित रथ को थल से, चावल भर नहीं डिगाना था।
भीष्म की जगह तुम होते तो, बतलाओ कहाँ ठिकाना था॥

ब्रह्मचर्य का है फकत, यह बल तेज प्रताप।
पार्थ काम चालू करो, करो न व्यर्थ प्रलाप॥

अर्जुन ने शर खींचकर, करना चाहा वार।
किन्तु भीष्म के बाण से, धनुष हुआ बेकार॥

धनुष सुधारा जब तलक, उलझनमें सरदार।
दस हजार नृप तब तलक, किये भीष्म संहार॥

शङ्ख-नाद के साथ फिर, बन्द हुआ संग्राम।
कहविनीत आनन्द से, जयति जयतिघनश्याम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* भीष्म का पराक्रम और वीरगति *

दुर्योधन के शिविर में, हुआ रात दरबार।
कुरु-पति बोला भीष्म से, हे दल के पतवार॥
लड़ते भिड़ते दिन सात हुए, पर कोई बात न पाई है।
खूं खुचर हुआ गरीबों का, दुश्मन पर हवा न आई है॥
मुझको न लाभ हो सकता है, सेना की फकत सफाई से।
वे पांवों ही यदि शेष रहे, तो फल क्या हुआ लड़ाई से॥
केवल पत्ते झड़ जाने से, तरु-वर न उखाड़ा जायेगा।
जड़ बनी रहे तो कुछ दिनमें, फिर हरा भरा दिखलायेगा॥
जो कुछ करने को आये हो, तो करके दिखलादो दादा।
नैया को हाथ लगाया है, तो तट पर पहुँचा दो दादा॥

भीष्म पिता कहने लगे, रख दाढ़ी पर हाथ।
क्या कहते हो? फिर कहो, प्यारे कौरव नाथ॥
मैं खुद ही इसे समझता हूँ, जो चली न बाजी हिकमत की।
तो सेना वालों से पहले, बदनामी है सेनापति की॥
दुर्योधन मैं सच कहता हूँ, लाखों युक्तियां लगाता हूँ।
पर केशव के हथकण्डों से, कोई भी पेश न पाता हूँ॥
कुरु-पति बोला दादा! सच है, केशव से पेश न जाती है।
इससे ज्यादा ये भी सच है, कुछ दया पार्थ पर आती है॥
यदि दया छोड़कर दया धाम, कुछ आज प्रतिज्ञा करजायें।
तो दादाजी के आगे क्या, फिर पापी पांडव ठहरायें॥

कहा भीष्म ने तो सुनें, सभी शूर बलवान।
यह भीष्म का बाण है, वे पाण्डव के प्राण॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बस यही बाण है भीषम पर, जो विश्व विजय करवायेगा।
काल भी अगर कल आयेगा, तो निश्चय मारा जायेगा॥
बस इसी एक शरके बल पर, अर्जुन भट से संग्राम करूं।
रह जाये झगड़ा क्यों बाकी, कल सारा काम तमाम करूं॥

पाण्डव पाण्डव सैन्य सब, करदूं काम तमाम।
शपथ कृष्णगोपालकी, तो न भीष्म मम नाम॥

भीष्म प्रतिज्ञा पर हुआ, पूर्ण वहां दरबार।
यहाँ धर्म के सामने, बोले जगदा-धार॥

नर-पति न समझमें आता है, भीषम की विषम मार क्या है।
कुछ तुम्हीं बताओ धर्मराज, अब आगे को विचार क्या है॥
सहदेव बिहँस कर बोल उठे, इसका उत्तर भाई क्या दें।
प्रभु के विचार पर है विचार, इससे आगे क्या बतलादें॥
हां अभी रमल से सेवक ने, युद्ध का भविष्य निकाला है।
कल प्रातःकाल पांडव दलमें, कुछ गड़बड़ होने वाला है॥
भीषम के पास एक शर है, जो विश्व विजय दिखलायेगा।
ज्योतिष कहता है प्रात काल, वह बाण काम में आयेगा॥
वह बाण भीष्म पर बना रहा, तो कुशल नहीं दिखलाती है।
इससे आगे हरि की इच्छा, सबके ऊपर कहलाती है॥

यह सुनकर दरबार में, गया सनाका खाय।
बिन मारे मर से गये, दल बल गया बिलाय॥

उड़ गये होश मर गये जोश, दे सर मानों सरदार हुए।
रह गये मौन से धर्मराज, जीते ही सब मुरदार हुए॥
हथियार हाथ से छूट गये, भावी सी मानो लूट गई।
साहस की क्यारी फूट गई, सैन्य की कमर सी टूट गई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगे ताकने वीर सब, प्रभु के मुख की ओर।
मुसका कर कहने लगे, नागर नन्द किशोर॥
वीरो बोलो अब क्या होगा, भीषण भीष्म की प्रतिज्ञा है।
उनके आगे जय पाजायें, यह सचमुच कठिन समस्या है॥
भीषम का भीषण प्रण करना, निश्चय अपना संहारण है।
उस वीर ब्रह्मचारी भट का, वास्तव में ऐसा ही प्रण है॥
कहा भीम ने विहँस कर, तुम जानो सुर-नाह।
बच्चों को होती नहीं, सुख दुख की परवाह॥
बालक सोना एवं ज्वाला, एक ही समझ लपटाता है।
पर पिता जानकर लाभ-हानि, बाल को राह पर लाता है॥
हम लोगों को चिन्ता क्या है, चरणों में शरण ले चुके हैं।
इसकी चिन्ता अब उसको हो, जिसका हम भार दे चुके हैं॥
जैसा हमको वैसा कहदो, जो इच्छा हो वह प्रगटादो।
चाहे देदो प्राण का दान, चाहे संहारन करवादो॥
जगन्नाथ कहने लगे, उठो वीर वर पार्थ।
करना होगा इस समय, स्वार्थ रूप परमार्थ॥
जो बाण हमें भय दाता है, वह भीष्म पिता से ले आयें।
जिससे विषके फल लगना है, वह जड़ ही क्यों न मिटाजायें॥
धर्म ने कहा हे न्याय मूर्ति, यह तो धोका कहलायेगा।
क्यों नर कोई राजी राजी, अपना हथियार दिलायेगा॥
फिर सभी पुरुष अपना-अपना, आधार कहीं बतलायेंगे।
क्या इसी तरह वे सभी वीर, निःशस्त्र बनाये जायेंगे॥
तब तो सबसे अच्छा यह है, सबके शस्त्रास्त्र मँगा लीजे।
यक तरफी मार मार करके, बस विजय ध्वजा फहरा दीजे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्णचन्द्र कहने लगे, सुनो धर्म प्रतिपाल।
चलनी पड़ती है हमें, यहां चाल पर चाल॥
संग्राम समय चारों प्रकार, हर चाल चलाई जाती है।
हे नीति धाम क्या याद नहीं, यह भेद नीति कहलाती है॥
युद्ध ही व्यर्थ में करते हो, यदि कौरव-राज नीति पर है।
या इसे सोच सन्तोष करो, पत्थर के बदले पत्थर है॥
अर्जुन जाओ दुर्योधन से, वरदान उधार तुम्हारा है।
बस वही आज के लिये तुम्हें, जीवन का एक सहारा है॥
ले आओ कुण्डल और मुकुट, फिर भीष्म पिता पर जाना है।
राजसी-वेष की ओट लिये, वह प्राण मांग कर लाना है॥

बैठा था कुञ्ज हर्ष में, दुर्योधन बल-धाम।
अर्जुन ने जाकर वहां, नृप को किया प्रणाम॥
दुर्योधन ने पार्थ को, छाती लिया लगाय।
तथा प्रेम सन्तान से, कहा पास बिठलाय॥
आधी रात के अन्धेरे में, भटके फिरते हो पार्थ कहां।
पार्थ ने कहा है पार्थ वहां, दिखलाता है कुञ्ज स्वार्थ जहां॥
जो स्वार्थ मुझे भटकाता है, तुमको रात भर जगाता है।
उस स्वार्थ सिद्धि का एक अङ्ग, इस जगह मुझे दिखलाता है॥
है? याद कभी का देना है, तुमको कोई वरदान हमें।
राजन यह कुण्डल और मुकुट, करदो बस आज प्रदान हमें॥
इन दोनों ही से कौरवेन्द्र, अपना कुछ काम बनाऊँगा।
फिर प्रातकाल से पहले ही, दोनों चीजें दे जाऊँगा॥

दुर्योधन कहने लगा, धन्य आज तकदीर।
जो दुश्मन के कर्ज से, हुआ विमुक्त शरीर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लो भैया कुण्डल और मुकुट, अपनी आन पर निछावर हैं।
तन धन जीवन दल राज्य, कोष जो कहो वीर वर हाजिर हैं॥
जिस राज्य-कोष के लिये आज, मढ़ चुका महाभारत रण है।
वह राज्य-कोष भी आज तुम्हें कहदो तो तात समर्पण है॥

कहा पार्थने नृप! नहीं, अभी राज्य का काम।
केवल कुण्डल मुकुट ही, दे डालो बल-धाम॥

राज्य के लिये कह चुके प्रथम, रत्ती भर शत्रु न पायेगा।
है प्रण मेरा कि बाहु बलसे, वह सभी ले लिया जायेगा॥
इसलिये राज्य के लिये सभी, प्रण पर ही तुले रहो राजन्।
जो मैंने तुम से मांगा है, बस उतना ही दे दो राजन्॥

कुरु-पति ने कुण्डल मुकुट, दोनों दिये उतार।
जन विनीत जायें न क्यों, दोनों के बलिहार॥

हम किसी शत्रु से मिलने में, एकान्त समय घबराते हैं।
ये शङ्का भय को तोड़ ताड़, बैरी के दल में जाते हैं॥
हम पाजायें शत्रु को कहीं, तो सारी लगी बुझाते हैं।
ये प्रेम और सन्मान सहित, बैरी को हृदय लगाते हैं॥
हम शरणागत पाने पर भी, बैरी पर क्षमा न लाते हैं।
ये अपना सरबस देकर भी, बचनों की आन निभाते हैं॥
हिन्दियों! सीखने के दिन हैं, वह तब सीखा यह अब सीखो।
जो कृष्णार्जुन के प्रेमी हो, तो उन ऐसे करतब सीखो॥

सकुचाकर अर्जुन चले, कर भूप को प्रणाम।
वहीं शिविर के पास थे, छिपे हुए घनश्याम॥

वह भूषण धारण करते ही, छवि बदल गई बलधारी की।
कुछ शोभा थी उन गहनों की, कुछ महिमा थी बनवारी की॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीष्म ने उन्हें कुरु-पति समझा, अर्जुन ने उन्हें प्रणाम किया।
दो-चार वचन यौंहीं कहकर, फिर कूटनीति का काम किया॥
अर्जुन बोले हे दादाजी, जो आन आपने धारी है।
उसकी पूर्ति के लिये भगवन्, कुछ सम्मति और हमारी है॥
यद्यपि आपके हाथ से कल, पाण्डवदल मारा जायेगा।
लेकिन ऐसा होने पर भी, मुझको सन्तोष न आयेगा॥
श्री महाराज! भारत में तो, यश होगा तभी कौरवों का।
हो हाथ दास दुर्योधन का, माथा हो नीच पाण्डवों का॥
इस कारण जिस शरके द्वारा, प्रभुकी वह भीष्म प्रतिज्ञा है।
वह बाण दास को हो प्रदान, भगवन् यह जनकी इच्छा है॥

भीष्म पिता ने पार्थ को, दे डाला वह बाण।
त्योंही मुसकाते हुए, आ पहुँचे भगवान॥
अब तो सारा भीष्म पर, प्रकट होगया भेद।
हुआ एकदम हृदयमें, विषय क्रोध मय खेद॥

बोले ओ मोहन पहले तुम, मर्याद नीति की तोड़े हो।
द्वारकानाथ होने पर भी, ब्रज की ही तरह छिछोड़े हो॥
यह बल-बल और दगाकरके, अर्जुन को विजय दिलाओगे।
पर याद रहे जय पाकर भी, भारत में नाम न पाओगे॥
त्रिभुवनपति भी है पतित तुल्य, लौकिक मर्याद त्यागने से।
मोहन यश प्राप्त न होता है, छुप छिपकर भीख माँगने से॥
तुम समदर्शी कहलाते हो, यह वृत्ति कौनसी धारी है।
हे भक्त-वश्य! क्या भक्ती की, अर्जुन की ठेकेदारी है॥

खड़े हुए थे सामने, जब अर्जुन हनुमान।
तब क्यों कमठ शरीर धर, प्रगटे थे? भगवान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब दो भक्तों के झगड़े में, दोनों की आन निभाते हो।
जो आज भीष्म की समता में, क्यों अर्जुन को अपनाते हो॥
कहना पड़ता है मैंने भी, तुम पर सरबस बलिहारा है।
क्या बात है फिर मैं कोई नहीं, अर्जुन सर्वस्व तुम्हारा है॥
तुम नहीं जानते हो इसको, यह दोष तुम्हीं पर आयेगा।
जायेगा प्रण प्राण के साथ, तो मेरा क्या लेजायेगा॥
मैं अपना वचन तोड़ने पर, चाहता कभी संहार नहीं।
लो बाण प्राण साथ ही साथ, अब जीवन भी स्वीकार नहीं॥

कृष्णचन्द्र कहने लगे, बलधर धारो धीर।
केवल भक्तों के लिये, है यह मनुज शरीर॥

हे परम भक्त तुमको तो सब, जाहिर है वेद पुराणों से।
भक्तों को कीर्ति दिलानी है, भारत में इन्हीं बहानों से॥
ऐसा न करूं तो भक्तों की, दुनियां की होगी जांच नहीं।
विश्वास रहे त्रिभुवन में भी, आयेगी सांच पर आंच नहीं॥
अर्जुन की उतनी सेवा की, तो तुम भी सेवा करवालो।
जो वचन तुम्हारा टूटा है, तो मेरा प्रण भी तुड़वालो॥
करलो दूसरी प्रतिज्ञा कुछ, जिसकी कि मुझी से टक्कर हो।
मैं झुक जाऊँ तुम बढ़े रहो, दोनों की बात बराबर हो॥
लो सुनो तात! मेरा प्रण भी, जिस प्रण पर आन लगाऊँगा।
कलरक्खूँगा, प्रण भीषम का, अपना प्रण तोड़ दिखाऊँगा॥
हे-भक्तशिरोमणि! अपने पर, समझो जीवन-बलिहार मुझे।
जो बात तुहारी रहे नहीं, तो लाख बार धिक्कार मुझे॥

भीष्म पिता कहने लगे, तो सुनलो गोपाल।
बातों से बुझती नहीं, इस बूढ़े की ज्वाल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह दशों दिशायें सुनती हैं, हामी है भूमि-समर मेरी।
है शपथ तुम्हारे चरणों की, साक्षी है दीन कुटीर मेरी॥
जो प्रात बाण की मारों से, फैला डालूँ भू-चाल नहीं।
जो प्रण न तुम्हारा तुड़वा दूं, तो नाम जान्हवी लाल नहीं॥

❀ गायन ❀

जो पै प्रात चोपैं धरि रोपौं ना घोर समर,
तापों न पाण्डव—दल रोपैं पन जाऊँ मैं।
सैना बिचलाऊँ न गिराऊँ यान बानन सों,
कपि-ध्वज उड़ाऊँ न अश्व अवधाऊँ मैं॥
हल चल मचाऊँ, ना नचाऊँ वीर बाने पै,
हे हे गोपाल तुमहिं अस्त्र न धराऊँ मैं।
तो पै तुम्हारिहि आन, गहौं ना धनुष-बान,
जननी लजाऊँ वीर भीष्म ना कहाऊँ मैं॥
कृष्ण चन्द्र कहने लगे, हो प्रसिद्ध परमार्थ।
तात! तुम्हारी आन का, है साथी पुरुषार्थ॥

❀ गायन ❀

भक्तन की टेक पै विवेक ज्ञान भूल जात,
नेकु न समात गात धीरज हिराऊँ मैं।
कमला बिसरो स्वर्ग त्याग कैं सिधारों बेगि,
गरुड़ ना सँभारौं ना सोच पोच लाऊँ मैं॥
तीन लोक तीन भाव तीन देव तीन काल,
एती दै साखी अजहुँ आन ठान जाऊँ मैं।
आपन तन तोपों प्रात भीष्म पन रोपों नाहिं,
तो पै आन भक्तन की कृष्ण ना कहाऊँ मैं॥

चले भीष्म को धीर दे, पार्थ और भगवान ।
धर्मराज के सामने, ला रक्खा वह बाण ॥
वह बाण मिला या प्राण मिले, आगई जान बजवानों में ।
जागती ज्योति सी चमक उठी, उन झुकती हुई कृपानों में ॥
प्रत्येक व्यक्ति ने जय कह कर, उस शर को हृदय लगाया है ।
मानों विषधर के दाँत खींच, खिलवाड़ खेल ले आया है ॥

दुर्योधन ने जब सुना, निकल गया वह बाण ।
तड़प उठा बेकल-विवश, निकलगये ज्यों प्राण ॥

कुछ उठा वहीं फिर बैठ गया, फिर उठा चला फिर लौट पड़ा ।
गिर रहा रहा कुछ चक मकसा, फिर करवट लेकर हुआ खड़ा ॥
भीतर--बाहर घूमने लगा, निद्रा ने नाता तोड़ दिया ।
साहस ने भी मुँह मोड़ लिया, धीरज ने पल्ला छोड़ दिया ॥

इस उधेड़ बुन में हुआ, फिर प्रभात का शोर ।
शंख-नाद के साथ ही, बढ़े वीर शहजोर ॥
अपनी अपनी घात पर, पहुँचे वीर तमाम ।
यहाँ भीष्म के सामने, आये श्री घनश्याम ॥
भीष्म पिता कहने लगे, सुनें सभी सरदार ।
आज कृष्ण के सामने, आया हूँ प्रण धार ॥

प्रण है माधव का भारत में, अस्त्र को न हाथ लगाऊँगा ।
मैं भी कहता हूँ आज उन्हें, हथियार दिखाकर जाऊँगा ॥
जो आज चला चल के मारे, सारी सेना बिचला न सकूँ ॥
तो शपथ इन्हीं के चरणों की, क्षत्रिय की गतिको पा न सकूँ ॥

इस प्रकार कहते हुए, बढ़े पार्थ की ओर ।
हँसकर नन्दकिशोर ने, खींची रथ की डोर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चकराये दोनों दल वाले, थी विकट समस्या उलझन की।
देखें रहती है आज आन, जन की या जन-मन-रञ्जन की॥
आपस का लड़ना भूल गया, दोनों दल लड़े उचाटे से।
तब तक पार्थ का बाण पहुँचा, भीष्म की ओर सन्नाटे से॥
एक के बाद शर लक्ष-लक्ष, लक्ष के साथ मँडराय चले।
मानों स-पक्ष के नाग यूथ, भक्ष के लिये उमड़ाय चले॥
भीष्म की ओर से बाणों का, बाणों के द्वारा काट हुआ।
पार्थ का बनाया बाण-व्यूह, क्षण भर में बारह बाट हुआ॥

अब तो दोनों ओर से, लगे बरसने बाण।
बाणों ही से व्योम में, छाया मेघ महान॥

दिशि विदिशबाण महिव्योमबाण, बाणोंका एकवितानबना॥
छिप गया भान विश्व से अलग, मानो भारत मैदान बना॥
घुप अन्धकार टंकार धार, हा हा पुकार ही आती है।
धर मार—मार के बदले में, बेकारी सी दरसाती है॥

किया भीष्म के बाण ने, सहसा दिव्य प्रकाश।
प्रकट हुआ उस तेज में, मोहन तेज निवास॥

तन-वदन लाल पट-वसन लाल, कर-निकर लाल दरशाये हैं।
मानों होलिका के रसिक राज, रण-रङ्ग खेलने आये हैं॥
पीताम्बर-फेंटा भीग गया, अलकें लोहू से लिथड़ गईं।
रग-रग से रक्त चुचाय चला, चौपटी मुकुट की उखड़ गई॥
कुण्डल कपोल वह चिबुक गोल, रक्त में सना दरशाया है।
मानों कामेन्दु ईंगुरी के, सिन्धु से नहा कर आया है॥
घोड़ों का माथा फोड़ दिया, बल तोड़ दिया रण रङ्गी का।
विष-भर बाणोंको जोड़-जोड़, मुख मोड़ दिया बजरङ्गी का॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीष्म पिता रणधीर ने, नारायण शर तान ।
नारायण की ओर को, किया शीघ्र प्रस्थान ॥

त्यों ही त्रैलोक पुकार उठे, ओ अर्जुन होश सँभालो तुम ।
यह बाण कृष्ण के ऊपर है,जल्दी कृष्णास्त्र निकालो तुम ॥
कृष्णास्त्र और नारायण–शर, प्रेमका दृश्य दरशाय चले ।
आपस में भेंट-मिलाप किया, फिर पृथ्वीपर उमगाय चले ॥

जब नारायण–शर हुआ, इस प्रकार बेकार ।
तब जान्हवी–कुमार ने,कर डाली धर–मार ॥

भाथ में एक हाथ में लाख, साथ ही धनुष के शङ्ख बने ।
बन गये असंख्य छूटते ही, शर मिटे सर्प–मुख पङ्ख बने ॥
वह विषम-बाण बौछार पड़ी, धीरज का धीरज टूट गया ।
बनगया खण्ड खुद रण-मण्डल,सम्बन्ध विश्वसे छूटगया ॥
दल मण्डल का प्रत्येक वीर, बाणों से घिरा दिखाता है ।
सूरज का केवल थोड़ा सा, झुरमुट में साया आता है ॥
रुक गया यान कृष्णार्जुन का, रह गईं कृपाणें धीरों की ।
उड़ गया ध्यान संग्रामों का, हिम्मत न रही बलवीरों की ॥

फैलादी जब भीष्म ने, यों भीषण धर–मार ।
तब त्रिभुवन आधार को,त्रिभुवन उठे पुकार ॥

कुछ पांडवदल ही विकल न था, कौरवदल परभी चक्कर था ।
था एक सर असर सरासनका, या पक्ष विपक्ष बराबर था ॥
थे पंच–तत्व तत्व से शून्य, तत्वज्ञ तत्व–पद हार उठे ।
सुर असुर नाग झकमार उठे,चर अचर त्राहि चिक्कार उठे ॥
बेवश बालक की तरह पार्थ, रथ में बैठे सिकुड़ाते हैं ।
कौरव पाण्डव गिरते पड़ते, जकड़े से खड़े लखाते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिद गई देह बनवारी की, धिज्जियां उड़ी पीताम्बर की।
कीलियां हिलीं महि मण्डलकी, बाछें खिलगईं समुन्दर की॥
सुर बोले हे सुर-राज! सजग, सुर तल बिचलाने वाला है।
दिक्पाल पुकारे पृहुमिपाल!, भू-मण्डल जाने वाला है॥
शेष ने कहा विश्वेश? उठो, अब विश्व नहीं ठहराता है।
सूर्य ने कहा-यदु सूर्य! बढ़ो, अब तेज हाथ से जाता है॥

सकल जगत में मच गया, इस प्रकार कुहराम।
मार बराबर कर रहे, भीष्म वीर बलधाम॥

इकरार करारे तीरों से, आ पहुंचा बे करार बनकर।
भारत के कर्णधार धाये, भारत के कर्णधार बनकर॥
छोड़ दी डोर झट घोड़ों की, कोड़ा झकोर में छूट गया।
चक्कर के साथ उतरते ही, रथ चाक अचानक टूट गया॥
बस वही चक्र कर में लेकर, लीला हित लीलाकार चले।
वे त्रिभुवन के आधार चले, या भारत के पतवार चले॥
कलगी बिलगी से लटक पड़ी, फेटे की ऐंठ सँभार चले।
पीताम्बर लहरा मार चला, त्रिभुवन जयकार पुकार चले॥

भृकुटिकुटिल रिसमयनयन, रसिकहृदयरसराज।
कर विराज रथ चक्र पर, अतुल सारथी साज॥

कुण्डल कपोल पर लहर उठे, साथ ही वीर गण सहर उठे।
देख कर चक्र कर में प्रभु के, ब्रह्म के चक्र भी थहर उठे॥
सब चीख उठे बस प्रलय हुई, अब विश्व छोड़कर जायें कहां।
विश्वेश्वर ही जब रूठ उठे, तब और पुकार लगायें कहाँ॥
भीष्म के विषम बाणों ही से, क्या से क्या होने वाला है।
अब प्रभु ने चक्र सँभाला है, तो कौन यहां रखवाला है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेष की जबानें निकल पड़ीं, पृथिवी पत्ते सी डोल उठी।
मुँह खोलदिये दिकपालोंने,सब सृष्टि त्राहि प्रभु! बोल उठी॥

वहाँ चक्र कर में लिये, चक्रपाणि भगवान।
बढ़े भीष्म की ओर को, भक्त हेतु पहिचान॥
किन्तु एक क्षण मात्र में, बदल गया वह रङ्ग।
पड़े नाथ के चरण पर, भीष्म पार्थ यक सङ्ग॥

लोगों ने पलक उठाते ही, भाव ही दूसरा पाया है।
वह चक्र-सुदर्शन धारी कर,अब करुणा कर बन आया है॥
प्रभु पदसे पारथ लपटगये,यों कहा शांतिनिधि!शांतिधरो।
हे प्रणतपाल! प्रण पाल चुके, बूढ़े दादा पर दया करो॥
इन त्याग मूर्ति के त्यागों पर, कहिये तो युद्ध त्यागता हूँ।
पर आज दयामय! दादा के, प्राणों की भीख मांगता हूँ॥
भीष्मने कहा बस शांत देव, पा आत्मा आज प्रतीत चुका।
होचुकी प्रीति की रीत पूर्ण, तुम हार चुके मैं जीत चुका॥
इस जय पर और सफलता पर,विश्व की विजय नौछावर है।
इसके आगे हे त्रिभुवनपति!,त्रिभुवन सुख नहीं बराबर है॥
अपना प्रण खण्डन कर प्रभुने, दास के वचन को रक्खा है।
अब मारो या पालो स्वामी!, दोनों में मेरी प्रभुता है॥
हो चुका महाभारत पूरा, अब तो ये खेल खिलौना है।
अब होना है लेकिन ऐसा, संग्राम न हरगिज होना है॥

❀ गायन ❀

जन तिल भर झुक जाय, नाथ महि तक झुकजावें।
जन त्यागे घर बार, नाथ कमला बिसरावें॥
जन बन भस्म रमाय, नाथ सङ्ग जूट बनावें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन लेवे यक नाम, नाथ रट नाम लगावें ॥
अगवानी प्रभु करत हैं, जन बन जन अगवान की ।
निभती है इस भांति से, भक्त और भगवान की ॥

त्रिभुवन उन दोनों सहित, सहसा उठे पुकार ।
दया करो हे दया मय, कांप रहा संसार ॥

❀ गायन ❀

हेविश्व-आधार ! ओविश्व-हारी, हेकृष्ण हेकृष्ण हेहेमुरारी ।
निःशोक त्रैलोक्य-आलोक-हारी, हेकृष्णहेकृष्ण हेहेमुरारी ॥
त्रैताप-संताप--उत्ताप सारे, हों दूर जो नाम ही से तुम्हारे ।
तो देर क्यों आज हेहे बिहारी, हेकृष्ण ! हेकृष्ण ! हेहेमुरारी॥
हा! हा! हिली जारही सृष्टिसारी, छाई हुई व्योममेंचीत्कारी ।
लोकांत-कारी हरो दुःखभारी, हेकृष्ण ! हेकृष्ण ! हेहेमुरारी॥
गोविन्दकीराखियेलाजस्वामी, हेआत्मगामी नमामीनमामी ।
भूले न ये भाव-धारे भिखारी, हेकृष्ण ! हेकृष्ण ! हेहेमुरारी॥

चक्रपाणि ने चक्र को, दिया भूमि पर डाल ।
विहँस जान्हवी लाल से, यों बोले गोपाल ॥
भीषम भीषम में नीर जमे, खिलजाय कमल पाषाणों पर ।
चिनगारी चुए चन्द्रमा से, बन जाय चरू चट्टानों पर ॥
टलजाय सृष्टि चतुराननकी, ब्रह्मकी प्रकृति चल सकती है ।
लेकिन त्रिकालमें किसी तरह, जनकी न आनटलसकती है ॥

शंख नाद के साथ फिर, बन्द हुआ संग्राम ।
गमने कोलाहल-सहित, पार्थ और घनश्याम ॥
पांचाली ने रात में, फिर छेड़ा सम्वाद ।
पार्थ वीर कहने लगे, उस दिन सहित विषाद ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज तो भीष्म के बाणों ने, सबको समान ठहराया है।
सारे दल को उलटाया है, प्रभु का भी प्रण तुड़वाया है॥
पांचाली बोली जिस प्रभुने, गज पर वैकुण्ठ भुलाया है।
जानकी छोड़ दी जनता पर, कुञ्जी पर ब्रज बिसराया है॥
शबरी पर क्षत्रिय पन छोड़ा, तुम पर तजदी वह प्रभुता है।
भीष्म के लिये प्रण तोड़ दिया, तो इसमें अचरज ही क्या है॥
यह लीला ही लीलाधर की, दीनों को आश बँधाती है।
जिस दिन की हमें प्रतीक्षा है, वह घड़ी शीघ्र ही आती है॥

नवें दिवस फिर से हुई, महा घोर-धर मार।
धर्म राज कहने लगे, वह संहार निहार॥
हाथ जोड़ कहने लगे, हे प्रभु! जगदाधार।
ले जाओगे किस तरफ, नैया बिन पतवार॥

नौ दिन में नव्वे सहस्र भूप, दादा ने मार गिराये हैं।
हम लोग मुख्य सरदारों का, बाल भी न छूने पाये हैं॥
आधा दल साफ हो चुका है, भावी भी यही दिखाती है।
हे कर्णधार बतलाओ तो, यह नाव किधर को जाती है॥
आगे चलकर जो भी फल हो, वह तो समझें जीवनधन हैं।
हम उतना ही कह सकते हैं, इस समय न अच्छे लक्षण हैं॥

केशव ने उत्तर दिया, राजन् है? कुछ ध्यान।
किस की समता में यहाँ, फँसे हुए हैं प्राण॥

तन बल हो जन या धन बल हो, तो सब जीता जा सकता है।
पर आत्मिक-बलसे त्रिभुवन भी, मिलकर न पारपासकता है॥
वह आत्म शक्ति भी शून्य नहीं, भक्ति के लिये जीवन रस है।
ऐसे योधा से जय पाये, बोलो ये किस का साहस है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन बाल ब्रह्मचारीका दिल, गुण-ज्ञान-भक्ति का सागर है।
जीना मरना या हार जीत, उनकी इच्छा पर निर्भर है॥
यह कृपा कहो या भाग्य कहो, जो पूर्ण तेज वह दिये नहीं।
वरना सारे सरदार उन्हें, एक ही बाण के लिये नहीं॥

दो भक्तों की रार में, हूँ मैं भी लाचार।
धर्म! तुम्हारी नाव को, वही करेंगे पार॥

इस जगह सफलता पाने को, उन तक ही तुम्हें सहारा है।
कह देना काम हमारा है, कर लेना काम तुम्हारा है॥
इसलिये तुम्हें जो कहना हो, खुद जाओ झट भीष्मसे कहो।
उनका ही बल विश्वास करो, कुछ मेरे बल बूते न रहो॥
वे त्यागी हैं सज्जन भी हैं, शरणागत को न भुलायेंगे।
धर्म का न पल्ला छोड़ेंगे, जय की कुछ राह बतायेंगे॥

धर्मराज कहने लगे, समझ लिया करुणेश।
भक्त-पक्ष का इस तरह, दे डाला सन्देश॥
सच है देना है तुम्हें, सभी जनों का साथ।
वास्तव में हर बात है, भक्तों के ही हाथ॥
चलिये दादा के निकट, है सेवक तैयार।
तुम्हें तुम्हारे भक्त को, नमस्कार प्रति वार॥
पार्थ धर्म माधव-सहित, चले सहित आह्लाद।
दिया दूत ने भीष्म को, वह सारा सम्वाद॥
भीष्म भक्त ने द्वार से, लिया नाथ को आय।
पद पखार कहने लगे, ब्राजो यादव-राय॥

चित चोर तीसरा चोर लिये, क्या नये बहाने लाये हो।
ले गये चुरा कर शर उस दिन, अब किसे चुराने आये हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मेन्दु ! रात में आज कहां, चहरे की जटिल समस्या है।
हे तात ! खोलकर बतलाओ, मेरे लायक सेवा क्या है ॥

चरण पकड़ कर धर्म ने, कहा सहित अनुराग।
आया है जन शरण में, दिखलाने निज भाग ॥

जन्म के समय से आज तलक, जो मेरे शिर पर आई है।
हे पूज्य तुम्हारी नजरों में, वह मुझसे अधिक समाई है ॥
इस लिये मुझे गाथा कहकर, वह सभी न रोना रोना है।
केवल यह बात पूछनी है, अब आगे को क्या होना है ॥
नाथ का इशारा पाकर ही, यह सब षटराग जमाया है।
पर आज तुम्हारे ही हाथों, वह खुद उखाड़ पर आया है ॥
जिसको कि पकड़कर चढ़ना है, वह उलटी हुई नसैनी है।
है दर्द तुम्हारे ही दम पर, अब दवा तुम्हीं से लैनी है ॥

भीष्म पिता कहने लगे, क्या कहते हो ? तात।
नहीं समझ में आरही, आज तुम्हारी बात ॥

भावी या भाग्य जानने को, भावी-पति साथ तुम्हारे हैं।
त्रैलोक विजय दिलवाने को, यह निजयी हाथ तुम्हारे हैं ॥
इस रण की बात पूछते हो, तो सीधी राय हमारी है।
प्रारम्भ मध्यमें कुछ भी हो, पर अन्तिम विजय तुम्हारी है॥
जिस ओर स्वयं सारथी रूप, जय मूर्ति कृष्ण बनवारी हैं।
उस दलके नीच निकम्मे भी, सच्ची जय के अधिकारी हैं ॥
धर्म ने कहा प्रभु के हाथों, जब यों मच रहा तमाशा है।
तो भला आप ही बतलायें, जय पाने की क्या आशा है ॥

भीष्म वीर कहने लगे, पाण्डव कुल मणि मौर।
लीला धर भगवान की, यह लीला है और ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वापर का अन्त आ रहा है, चक्कर में सभी जमाना है।
केशव को किसी बहाने से, सब का संहार कराना है॥
मैं और पार्थ या नायक-गण, उस परिवर्तन के द्वारे हैं।
इन सूर्य-देव की ज्योति लिये, या छिटके हुए सितारे हैं॥
जब परिवर्तन-प्रभात होगा, तब स्वयं सभी छिप जायेंगे।
रह जायेंगे चरचे केवल, हम तुम कोई न दिखायेंगे॥

मेरे बारे में अगर, पूछ रहे हो तात।
तो मुझको बाकी रही, फकत् आज की रात॥

यों तो केशव को छोड़ मुझे, सारा दल एक खिलौना है।
फिर भी भारत के वीरों को, अपनी मर्याद न खोना है॥
जिस समय शिखंडी नारि-रूप, अपने आगे आ देखूंगा।
बस उसी समय रण स्थल में, अपने हथियार डालदूंगा॥
उस समय उसी की आड़ लिये, जो अर्जुन बाण चलायेगा।
तो इसी युक्ति के द्वारा वह, मुझको घायल कर पायेगा॥
इस रङ्ग-मंच के नाटक को, मिल-जुल कर पूर्ण कराना है।
दुनियां के भाव झुकाने को, झुकना है और झुकाना है॥
इस लिये धैर्य के साथ धर्म, इन चरणों में चित दिये चलो।
इनकी इच्छा पर मरे चलो, इनकी इच्छा पर जिये चलो॥

चकितथकित मुखदेखकर, सब शिर रहे झुकाय।
भीष्म-पिता से भेंट कर, गमने यादव राय॥

गायन-कहाँ हैं? हिन्द! तेरे लाल कहाने वाले।
भीषम की भांति कहां भूमि हिलाने वाले॥
लाख आयेंगे यहां खून बहाने वाले।
कहां मिलेंगे? मगर खून लगाने वाले॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बतायें विश्व का इतिहास कहीं वे त्यागी।
कि जो हों आप निज मौत बताने वाले॥
हिन्द के पूत! तेरा नाम क्यों न हो रोशन।
क्यों न रोयें तुझे "गोविन्द" जमाने वाले॥

किया लेखनी भी चहे, यहां रात विश्राम।
कह विनीति आनन्द से, जय जय राधेश्याम॥
प्रात हुआ धौंसा बजा, चले शूर-सरदार।
दुःशासन के सामने, पहुँचे पवन कुमार॥

बलधारी का रथ रोक दिया, दुःशासन ने बौछारों से।
कर दिया अचल धनुधारी को, भीम ने गदा की मारों से॥
दोनों भट रथ से कूद पड़े, हठ लपट गये झटका देकर।
लटकाया वीर दुशासन को, भीम ने एक लटका देकर॥

गदा-घात से जब हुआ, दुःशासन बेहोश।
द्रोण वीर आगे बढ़े, लगे बढ़ाने जोश॥

द्विजवर पर गदा उठाते ही, कुछ उलटा असर दिखाता है।
कट जाता है काठ भी वहीं, कुछ चोट हाथ खाजाता है॥
द्रोण की विजय बौछारों ने, सारथी मार रथ तोड़ दिया।
घोड़ों का माथा फोड़ दिया, बल-धर ने धीरज छोड़ दिया॥

जब देखा अभिमन्यु ने, वीर भीम का हाल।
द्रोण वीर के सामने, जा पहुँचा तत्काल॥

एक ही वार में चार अश्व, सारथी-सहित संहार दिये।
फिर तरल तीर की नोकों से, सरदार अनेकों मार दिये॥
उस ओर वीर से वीर भिड़े, अपने जौहर दिखलाते हैं।
एक पर एक चढ़ जाते हैं, एक से एक झुक जाते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जयकार कहीं हुँकार कहीं, ललकार कहीं हाहा कारी।
धर-मार कहीं संहार कहीं, शर धार कहीं पर सिसकारी॥
कुछ उलट पुलट भिड़जायवहीं, कुछ लपटझपट गिरजायवहीं।
कुछ उचट उचट किलकाय वहीं, कुछ सिसक२ तड़पांयवहीं॥
घन घोर मार हाहा पुकार, लाखों हथियार उड़ाते हैं।
सरदार लाख बे सर होकर, लाशों पर शीश चढ़ाते हैं॥

रुण्ड-मुण्ड महि खण्ड पर, कुछ उड़ानके साथ।
आ पड़ते हैं नाच कर, नहीं रुक रहे हाथ॥

रथ टूट रहे शर छूट रहे, मणि मुकुट उड़ाते जाते हैं।
जय जय कहने वाले क्षण में, क्षय २ कहकर लय पाते हैं॥
बह रही रक्त की धारायें, बह चले अनेकों बल-धारी।
धर धर में धरा धरकती है, वह मची मचल कर धरमारी॥

वहां मचा इस भांति से, मार मार का शोर।
श्रोतागण! चलिये तनिक, भीष्म वीर की ओर॥
भीष्म पिता कहने लगे, अरे सारथी वीर।
आता है किस भांति से, तुझे यहां पर धीर॥

वह सुनो पार्थ का शंख नाद, भीषम को वही बुलाता है।
कम्पित करके नभ मंडल को, धन्वे की याद दिलाता है॥
इस जगह न तबियत लगती है, समता का वीर बुलाता है।
शेरों से लड़ने वालों को, स्यारों से मजा न आता है॥

जब खींची रथवान ने, कुछ झुकाव से डोर।
स्यारों का यक बारगी, हुआ सामने शोर॥

कुछ गिद्ध यकायक झपट पड़े, कौवे आगे मँडराय उठे।
सारथी आपही कांप उठा, घोड़े सहसा बिचकाय उठे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारथी वहां पर ठिठक गया, बोला कुछ खास घुटाला है।
महाराज आज के लड़ने में, कुछ अनरथ होने वाला है॥
इन महा भयानक दृश्यों का, निश्चय फल आगे आयेगा।
इतना मैं भी कह सकता हूँ, अपशकुन न खाली जायेगा॥
इसलिये दास की विनय मान, मत अर्जुन से संग्राम करो।
जो प्रति दिन करते आये हो, केवल उतना ही काम करो॥

विहँसि भीष्म कहने लगे, ओ सारथी अजान।
अशकुन क्या? जब है वहां, शकुन-रूप भगवान॥

कृष्णके विमुख यदि अमर बनूं, तो वह मौत के बराबर है।
उनके आगे हो जाय मौत, तो सौ जीवन से बढ़कर है॥
जो जीवन ही को मरते हैं, वे अशकुन-शकुन मानते हैं।
जो जीते हैं मरने ही को, वे दोनों एक जानते हैं॥
ना जाने कैसे पुण्यों से, यों अवसर मिलने पाये हैं।
सारथे! तुम्हें भी ध्यान रहे, हम मरने ही को आये हैं॥
इसलिये मुझे ले चलो शीघ्र, व्यर्थ का बहाना ठीक नहीं।
यदि स्वर्ण योग मिल सकता है, तो समय गँवाना ठीक नहीं॥

❀ गायन ❀

जयकार लिये रन-भेरि बजे, चहुँओरते वीर-निनाद सुनावै।
इकधावै इतै इक धावै उतै, जितही तित जौनके होम दिखावै॥
भरिरङ्ग उमङ्ग निषङ्ग, षड़ङ्ग, मनौ भव रागसों त्याग सिखावै।
प्रभुआगे रहें भट वार करें, अस मीच कहूँ बड़ भाग ज्यों पावै॥

वायु-वेग से बढ़ चला, रथ अर्जुन की ओर।
हहरि-हहरि हिलने लगे, भू-मण्डल के छोर॥
भक्त भीष्मने पहुँचकर, प्रभु को किया प्रणाम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर ऊँची आवाज से, कहा--सजग घनश्याम।
अर्जुन की बहुत निभाई है, अब जन वृद्ध की निभाना है।
इसका रथ तो ले आये हो, अब मेरा रथ ले जाना है॥
बतलादो कोई युक्त इसे, जो मुझे मुक्ति का द्वारा हो।
होजाय प्रकाशित धर्म-सूर्य, कुरु-कुल का अस्त सितारा हो॥

भक्त भीष्म को देखकर, रोये यादव चन्द।
सर नीचेको करलिया, नयन कर लिये बन्द॥

फिर कहा भक्त भीष्म आओ, मैं सदा तुम्हारा चाकर हूँ।
इस जगहकहो उस जगहकरो, हरजगह हुक्म पर हाजिर हूँ॥
स्वर्ग के लिये मुक्तिके लिये, सीढ़ी आप ही लगाई है।
हां इतना ही कह सकते हो, कुछ हाथ दिये यदुराई है॥
उस सेवा को इच्छानुसार, आज्ञा के साथ बजाऊँगा।
इस जगह सामने हाजिर हूँ, उस जगह हुक्म पर आऊँगा॥

वचन मान पूरा हुआ, उठी बाण की आन।
चटकी दोनों ओर से, चढ़ती हुई कमान॥

सर सर सर सर वायु की तरह, तरकश यकशर शर छोड़ चले।
धन्वाओं के सर जोड़ चले, बलवानों के मुँह तोड़ चले॥
सौ सहस लक्ष एक ही साथ, जोड़ों पर जोड़ा जोड़ चले।
घोड़ों के जोड़े फोड़ चले, जोड़ों का जोड़ा तोड़ चले॥
एक ही तीरकी तरह ज्योति, मैलीभी बनी उजलीभी बनी।
पानीभीबनी ज्वालाभी बनी, बादलभीबनीबिजलीभीबनी॥
कुछ समय भीष्म बलधारी ने, पार्थके बाण पर बाणदिया।
फिर एक विषम वरषा करके, बाणों का तान बितानकिया॥
बेबश बेकस से हुए, तब अर्जुन बलधाम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीर रुके तूणीर में, कर में रुकी कमान ॥
दल मंडल वहां चलाचल में, चलने की चाल विचारचला ।
कुञ्जर-दल दलमें दल फँस कर, बस हाहाकार पुकारउठा ॥
पारथ के रथ की चाल रुकी, सारथी कृष्ण सकुचाते थे ।
घोड़ों से रक्त चू रहा था, बजरङ्गी सिकुड़े जाते थे ॥
पृथ्वी पर लाशें रुधिर कीच, नभ में बाणों का मंडल था ।
हल चल की दशों दिशाओं में, वीरों में एक चलाचल था ॥

उस हल चल में जब हुई, सारी चालें बन्द ।
इन्द्र-नन्द से उस समय, बोले यादव चन्द ॥

अर्जुन अब समय दूसरा है, सन्मुख छेड़ो संग्राम नहीं ।
यह बाण तो क्या बज्रभी आज, दे सकता कोई काम नहीं ॥
यह दीपक की अन्तिम लौ है, जो तनिक तेज पाजायेगी ।
तो खेल खेल की बातों में, मरने का मेल मिलायेगी ॥
जो युक्ति रात में भीषम ने, हम लोगों को बतलाई है ।
हे पार्थ होश में काम करो, यह घड़ी उसी की आई है ॥
ठहरो अब कुछ कोशिश न करो, मैं अपना शङ्ख बजाता हूँ ।
भीषम के काल खिलाड़ी को, मैं इसी जगह बुलवाता हूँ ॥

पार्थ वीर कहने लगे, नीति-धाम यदुवीर ।
यों हिजड़े की आड़ से, लड़ते नहीं सुधीर ॥

दादा ने शुद्ध सरलता से, बेशक वह युक्ति बताई है ।
लेकिन वैसा ही करने में, आपकी कहां प्रभुताई है ॥
इस में कोई सन्देह नहीं, वह युक्ति सफल है नामी है ।
लेकिन स्वारथ है छल बल है, प्रभु की पहले बदनामी है ॥
इस लिये वीरता के नाते, यह कायरता सिखलाओ ना ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन वीर-केहरी-साधू का, छल से संहार कराओ ना ॥
विहँस कहा भगवान ने, बस रहने दो पार्थ।
अब न बघारो हर जगह, स्वार्थ और परमार्थ॥
परमार्थ स्वार्थ तो इसमें था, कुरु-पति को सरबस दे देते।
एकान्त कहीं मृग-छाल डाल, हाथ में सुमरनी ले लेते॥
किन्तु जब राज्यका लोभ तुम्हें, संग्राम-भूमि तक लाया है।
तब वही यत्न करना होगा, जो भीषम ने बतलाया है॥
अपने कलङ्क कायरता से, यदि युक्ति टाल दी जायेगी।
तो क्या ऐसा कर देने से, वह शाप न फल दिखलायेगी॥
शाप भी मुझे भरनी होगी, ताप भी मुझे हरनी होगी।
मुक्ति की यही करणी होगी, युक्ति भी वही करनी होगी।

यों कहकर प्रभु ने किया, शङ्ख-नाद तत्काल।
चला शिखण्डी-रूप में, वीर भीम का काल॥
बाणों की वर्षा बन्द न थी, भट ने सब भट बेहाल किये।
पर जहां शिखण्डी को देखा, हथियार हाथ से डाल दिये॥
बस जहां सूर्य ने परदा ली, रौनक आगई सितारों में।
सिंह को जहां जकड़ा देखा, हुल्लड़ सी छाई स्यारों में॥
अर्जुन हिजड़े की आड़ लिये, छिपते से तीर चलाते हैं।
मोहन नीची नजरें करके, केवल आंसू बरसाते हैं॥
पावस की मानों मेघ झड़ी, बूढ़े मेंढ़े पर झड़ती है।
या सूर्य-चन्द्र के बीच-बीच, किरणों की साया पड़ती है॥
वे वीर केहरी बँधे हुए, मोहन-मोहन चिल्लाते हैं।
सब बलधारी संग्राम छोड़, बस खड़े खड़े पछताते हैं॥
रुक गया आप रणका बाजा, आपसी बैर की याद उठी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बे कसी और लाचारी में, बेबसी लिये फरियाद उठी ॥
हृदय हिलोरें प्रेम की, मुँह पर वचन कठोर ।
कहा भीष्म ने देखकर, नन्द नँदन की ओर ॥

जब मोह न हो तब मोहन हो, तुम ऐसे ही मन-मोहन हो ।
मन रञ्जन हो मन-रञ्जन हो, तुम ही वह जन मन रञ्जन हो॥
क्यों नीति धाम बेवश करके, बकरे की बलि चढ़वाते हो ।
क्षत्रिय कुमार के हाथों से, क्षत्रीपन नाश कराते हो ॥
अर्जुन हिजड़े की ओट लिये, नाहर पर चोट चलाता है ।
मरजा डूबकर कहीं कायर, क्यों रण में मुँह दिखलाता है॥
ओ श्याम तनिक दम लेने दो, आई उमङ्ग भर जाऊँ मैं ।
मरना है मरने से पहले, मनकी चाही कर जाऊँ मैं ॥

यहाँ बराबर उठ रही, टूटे दिल की आह ।
बाणों की बौछार से, टुकड़े हुआ सनाह ॥

इस ओर लाजकी गाज पड़ी, शर झुण्ड वहां पर छूट चला ।
मनमोहन का बल टूट चला, भारत-धन का तन टूट चला॥
बिंद गये शरों से रोम रोम, पृथिवी पर पद लरजाने लगे ।
झुकगई देह कुछ पीछे को, उलटे लक्षण दरशाने लगे ॥

कहा भीष्म ने अन्त में, सुनलें सब सरदार ।
भारत को सन्देश है, अपना अन्तिम बार ॥

यह भक्त वश्य करुणा कर हैं, इतने कठोर दिखलाते हैं ।
इसका कारण करुणेश नहीं, हम अपना दोष बताते हैं ॥
यदि मैंने पाप पक्ष लेकर, न्याय को न कभी ठुकराया होता ।
तो न्याय मूर्ति के ही आगे, यह दिन न कभी आया होता॥
मैंने ही लाखों मन तोड़े, बे माने भी मन मानी में ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाखों जवान कर दिये खाक, उस उठती हुई जवानी में॥
मैंने ही नमक-नमक कहकर, स्वामी से नमक हरामी की।
की चरण-चाकरी स्वारथ की, ली शरण न अन्तरयामी की॥
मैंने ही एक कुमारी का, जीवन धूल में मिलाया है।
मैंने ही गुरुवर के आगे, तन-बल का गर्व दिखाया है॥
वह अम्बालिका देवि ही अब, काल का रूप धरलाई है।
गद गई गरुअता गिरवर सी, यह गुरुवर की गुरुताई है॥
गर्वाहारी ने यह पिछला, बे वश कर गर्व गिराया है।
यारो! अब क्या पछिताने से, यह सङ्गति का फल पाया है॥

इस कारण संसार में, अहङ्कार बेकार।
है केवल नर देह में, कृष्ण नाम ही सार॥

ओ अम्बालिके क्षमा करदे, अब घड़ी क्षमा की आई है।
ओ भारत जननी नमस्कार, भारत पूत की बिदाई है॥
मन मोहन! सीधी नजर करो, मोह में नजर घिरते-घिरते।
भारत भैया आंचल पसार, इस गोदी में गिरते गिरते॥

भीष्म पिता के वचन थे, यह चुभती सी मार।
सहर उठे त्रिभुवन-रमण, थहर उठे सरदार॥

सुर-मण्डल त्राह पुकार उठा, देवियां फूल बरसाने लगीं।
धरणीकीधुरिया हिलने लगीं, बिजलियां व्योममेंआनेलगीं॥
नट नागर की नीची नजरें, खुलकर आंसू बरसाने लगीं।
दोनों ही दल से एक साथ, त्राह की पुकारें आने लगीं॥

अर्जुन कम्पित करों से, रहे चलाते बान।
विह्वल पृथिवी पर पड़े, भीष्म वीर बलधाम॥
दोनों दल के सरदारों में, दोनों दल का सरदार गिरा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भू-मण्डल पर मुरझा करके, भू मण्डल का शृङ्गार गिरा ॥
दुर्योधन का आधार गिरा, पार्थ का प्राण—दातार गिरा ।
धर्मका धर्म-पतवार गिरा, कृष्ण का भक्त प्रण-धार गिरा ॥
गुण संयमका आगार गिरा, इन्द्रिय-जित रणकासार गिरा ।
भारत मां का लाड़ला गिरा, अथवा जान्हवी कुमार गिरा॥

गिरते ही भट भीष्म के, गिरे सभी सरदार ।
गिर कर रथ से वेग ही, दौड़े जगदाधार ॥
भक्त गोद में भर लिया, प्रभु ने बांह पसार ।
बिलख बिलख लखने लगे,जन मुख बारम्बार॥

भीषम ने कहा—हे कमल नयन,यह समय नहीं बिलपाने का ।
कलपाने से कुछ लाभ नहीं, आधार करो कल पाने का ॥
मेरा शरीर शर-जालों से, पृथिवी तक नहीं पहुँचता है ।
झुक रही कमर कुछ नीचेको, अवनी पर शीश लटकता है ॥
इसलिये किसी से कह करके, कुछ मुझे आसरा करवादो ।
सूखा जाता है कण्ठ कृष्ण, थोड़ा सा पानी दिलवादो ॥
कुरु-पति के कहने से नौकर,मखमल का तकिया ले आया ।
देखकर घृणा के साथ उसे, वह वीर केहरी मुसकाया ॥
दुर्योधन ! जिसने जीवन भर, बाणों के साथ गुजारा हो ।
उस बाण प्रिये के अन्त समय,मखमल का खाक सहारा हो॥
विजयी शृङ्गार सजाते हैं, बल वीर न शोभा गिनते हैं ।
लोहे का साज बनाते हैं, कांटों का ताज पहिनते हैं ॥

❀ गायन ❀

विविध बिछौने और सोने के पात्र अमित,
व्यञ्जन विशेष बहु विषयी को भाइये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तनिक पियाल और कामार को वस्त्र डाल,
सूखो सो भोजन नीर दीन को दिलाइये।
साधू और सन्तन को डालिये मृगासन ले,
कन्द मूल फूलन सों सेवा सर साइये।
भनत 'विनीत' नीत लोक रीत माने धीर,
वीर सेज वीर साज वीरन को चाहिये।
ओ धनुर्धार भट पार्थ उठो, इन खाली जगहों को भरदो।
बलवीर वीर के नाते से, बूढ़े को वीरासन करदो॥
रणधीर पार्थ के हाथों से, फिर तीन शरों की मार हुई।
अधमरे केहरी भीषम की, तब वीर सेज तैयार हुई॥

एक बाण बलवीर ने, दिया भूमि में मार।
पहुंची मुख तक प्रकट हो, गङ्गाजी की धार॥
शर शैया गङ्गा निकट, शोभित शान्तनु लाल।
वीर बन्धु चारों तरफ, सन्मुख श्री गोपाल॥
तनिक शांति के बाद फिर, बोले यों बलवान।
शक्तिसिंधु शोभा सदन, हे प्रभु शांति निधान॥

ले जाओ इन कठपुतलों को, कल इसी मंच पर फिर आना।
हे सिद्ध साधको मिलजुलकर, फिर नया तमाशा दिखलाना॥
मेरा न मकर के सूर्यों तक, करुणानिधि अभी मरण होगा।
यह वीर भूमि, वीरों का दल, एवं यह वीरासन होगा॥
जिस तरह समरमें आते हो, उस तरह यहां भी आया करो।
जीवनकीअन्तिमघड़ियोंतक, यहप्रतिमादिखलाजायाकरो॥
इन लोगों से कुछ भी कहना, नाहक है कोरी बक झक है।
फिर भी मनुष्य के नाते से, यह कह देना आवश्यक है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि हो जीता जागता, कुछ हृदयों में ज्ञान।
तो दोनों को शान्ति दे, बूढ़े का बलिदान॥

भगवान न वह दिन दिखलाये, दोनों का चौपट होजाये।
यह खटपट का पट पलट कभी, सरपट में मरघट होजाये॥
इतना खोकर ही खाने को, पहिचान जाँय तो अच्छा है।
मिल जांय गले अपने हितको, पहिचान जाँय तो अच्छा है॥

पर यह कहना मात्र ही, है यह मेरे हाथ।
होनी करना है फकत, हरि इच्छा के साथ॥
जाओ मेरे सांवरे, जाओ लीला धार।
बना रहे इस दीन को, चरणों का आधार॥
जब ममता की आड़ से, काल चलावे चोट।
कर लीजो तब सांवरे, पीताम्बर की ओट॥
विकलबिलखकर दलसहित, लौटपड़े घनश्याम।
जन विनीत जय प्रेमसे, दया सिन्ध सुखधाम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* श्रीगणेशायनमः *

* महाभारत *

॥ द्रोण-पर्व ॥

* प्रार्थना *

प्राण प्यारे हैं मगर प्राण से प्यारे तुम हो।
किसी को कोई रहे एक हमारे तुम हो॥
यह तो कहना है वृथा तुमको मेरी याद नहीं।
याद है नाथ! मगर दाद बिसारे तुम हो॥
गूँजने लगती हैं कानों में सुरीली तानें।
आज भी कृष्ण! क्या जमुनाके किनारे तुमहो॥
विश्व के दुःख भी आनन्द से बढ़कर हैं हमें।
अगर विनीत के हे नन्द-दुलारे तुम हो॥

* वीर-अभिमन्यु *

दोनों पक्षों में रहा, उस दुख का आघात।
चिन्तामणि की भी कटी, चिन्ता ही में रात॥
बन्धुओं और रनिवास-सहित, इस ओर धर्म बिलपाते थे।
उस ओर दुखी दुर्योधन को, सब धीरज वीर बँधाते थे॥
कुरु-पति शैया पर पड़ा पड़ा, दादा-दादा चिल्लाता था।
दुःशासन हवा कर रहा था, बलवीर कर्ण समझाता था॥
राजन्! इसमें सन्देह नहीं, कुरु-दल का बाजू टूट गया।
पर क्या इसका मतलब है, बिलकुल ही झगड़ा फूट गया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने कितने ही वीर अभी, बल में भट भीष्म बराबर हैं।
दस-बीस पुरुष तो खुले हुए, भीमार्जुन से भी बढ़कर हैं॥
रहने दो बात दूसरों की, मैं अपना दावा करता हूँ।
दोनों दल वालों के आगे, लो रण का बीड़ा धरता हूँ॥
जो सुबह अकेले ही सबसे, कर सकूँ विजय संग्राम नहीं।
तो शपथ पिता की माता की, रविनन्दन मेरा नाम नहीं॥
दो मुकुट मुझे सेनापति का, जो कहदो वह पूरा करदूं।
पाडव दल का कूड़ा करदूं, भीमार्जुन का चूरा करदूं॥

अश्वत्थामा ने कहा, सोच जरा औकात।
बस रहने दे बँट चुकी, बातों की खैरात॥

उन वीर भीष्म के हमसर हो, किस बलधारी की ज्ञाती है।
तू नायक पद के लायक है, नालायक लाज न आती है॥
यह बात सभी को खटकेगी, राजसी मिले घर फोड़ों को।
मुँह ताका करें वीर बूढ़े, मिल जाये ताज छिछोड़ों को॥
राजन्! अच्छा या बुरा लगे, कहना कर्तव्य हमारा है।
कर्ण को नायकी दे देना, घर के झगड़े का द्वारा है॥
इसके विरुद्ध सबसे पहले, मैं ही आवाज उठाऊँगा।
फिर इतना भी जतलाता हूँ, जी चाहा विष फैलाऊँगा॥
घर में घर मार दिखायेगी, सब दल बादल गारत होगा।
वह भारत इति पर आयेगा, यह अलग महाभारत होगा॥

दुर्योधन कहने लगा, शान्त वीर द्विजराज।
कर्ण वीर के हाथ से, होगा नहीं अकाज॥

यह तो क्रोध के उबालों में, धैर्य्य के लिये कह डाला है।
इस त्यागमूर्ति ने लालच में, यह वचन न कभी निकाला है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो मरता हो आन के लिये, वह कब पद को मर सकता है।
जिनको न कामना हो कोई, यह काम वही कर सकता है॥
विश्वास रहे कहने ही से, कोई न राजसी पायेगा।
जिसको समाज ठहरायेगा, बस वही नायकी पायेगा॥

मीठे वचनों से दिया, उसका क्रोध बुझाय।
कहा कर्ण से भूप ने, इस प्रकार समझाय॥

भैया! यह सभी जानते हैं, हम तुम तक ही सारा रण है।
उस ओर कृष्ण हैं अर्जुन हैं, इस ओर कर्ण दुर्योधन हैं॥
राजसी एक पर रहती है, अधिकारी लाख दिखाते हैं।
उन सबके किये हुऐ करतब, राजा ही के कहलाते हैं॥
मैं राजा तुम्हें समझता हूँ, सैनिक का पद क्या जेवर है।
नायकी-मुकुट को रहने दो, लो राज मुकुट यह हाजिर है॥
जैसे हो भैया! मिलजुल कर, यह नैया पार लगानी है।
इस प्रण की सब जिम्मेवारी, बलवीर! तुम्हीं पर आनी है॥

इन बातों से दब गया, कर्ण वीर का जोश।
एक घड़ी भर तक रहे, सभी लोग खामोश॥

समझा नृप ने अन्त में, सब समाज का भाव।
द्रोण वीर के नाम पर, हुआ पास प्रस्ताव॥

दुर्योधन ने रख दिया, गुरु के सिर पर ताज।
हाथ जोड़कर यों कहा, वीर-देव द्विज-राज॥

दादा जी! थकित होगये हैं, छोड़कर आज मँझधार हमें।
लेकिन उनके ही समान, तुमसे गुरुवर आधार हमें॥
लो मेरी लाज सँभालो तुम, करदो प्रभु पार अनाड़ी को।
जिस ओर उचित हो पहुँचादो, इस कौरव-दलकी गाड़ीको॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्रोण वीर कहने लगे, सुनते हैं सरदार।
पाँच रोज के वास्ते, लेता हूँ यह भार॥
मैं दावा कभी न करता हूँ, रण को जय करके आऊँगा।
हाँ जितना मेरा साहस है, उतनी युक्तियां लड़ाऊँगा॥
यों तो सारे पाण्डव दल की, परवाह न राजन् करता हूँ।
फिर भी यह कहनी पड़ती है, श्रीकृष्ण चन्द्र से डरता हूँ॥
दो-चार रोज को पार्थ अगर, लड़ने अन्यत्र चला जावे।
तो खटका एक निकल जाये, कुछ विजय हाथ में आ जावे॥

कहा सुशर्मा ने करो, वे खटके संग्राम।
पार्थ वीर का टालना, रहा हमारा काम॥
जाकर अर्जुन वीर से, यों बोला बलधाम।
मेरा-तेरा सुबह से, है अर्जुन! संग्राम॥
अर्जुन ने भी कर लिया, वह कहना स्वीकार।
प्रात समय होने लगा, वीरों का जयकार॥
कहा पार्थ ने सैन्य से, हे भारत-सरताज!।
आज तुम्हारे हाथ है, धर्मराज की लाज॥

माधव उस ओर जा रहे हैं, इस ओर नया सेनापति है।
है नया जोश कुछ नया ढङ्ग, क्या पता कौनसी हिकमत है॥
गुरुवर साधारण वीर नहीं, भृगु-पति के घर खेले हैं।
आचार्य आज समता पर हैं, हम सभी उन्हीं के चेले हैं॥
यह याद रहे सरवस देकर, जननी की आन बचाना है।
बलिदानों का सङ्कल्प किये, उस समर-भूमि में जाना है॥

एक साथ सबने कहा, जाओ इन्द्र-कुमार।
यहां वहां सर्वत्र ही, है प्रभु का आधार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बलिदानों का सङ्कल्प किये, घर से पहले ही आये हैं।
हर समय और हर जगह यहाँ, सङ्कट के बादल छाये हैं॥
उनकी कब तक परवाह करें, है समय कहाँ अब डरने का।
किसको मालूम नहीं यह है, मैदान मारने मरने का॥

दे जायेंगे युद्ध में, जन-जीवन-सरताज।
किन्तु न जाने पायगी, धर्मराज की लाज॥
अस्तु चले इस ओर को, पार्थ और घनश्याम।
यहां दलों में बढ़ गया, महा घोर संग्राम॥
यहां द्रोण बढ़ने लगे, धर्मराज की ओर।
किन्तु आ पड़े बीच में, शूरसेन सहजोर॥

भट शूर सेन के बाणों से, यद्यपि कौरव दल बिचल पड़ा।
पर द्रोण वीर का एक तीर, शीश को फोड़कर निकलगया॥
गिर पड़े तड़प कर शूरसेन, द्रोण ने कटक संहार दिया।
दलकी उलझन को सुलझाकर, फिर धर्मराज पर वार किया॥

किया धर्म ने भी वहां, ठीक वार पर वार।
पर उन बाणों की विषम, सह न सके वह मार॥
अस्तु भागने के लिये, थे तत्पर नर-पाल।
डाल दिया पर द्रोण ने, नाग-पाश का जाल॥

श्री धर्मराज के फँसते ही, सब सेना हाय पुकार उठी।
हथियार हाथ से छूट गये, चौ तरफा हाहाकार उठी॥
जो जीवन-रस का दाता था, उन में वह जीवन रस न रहा।
सरबस देने को तत्पर थे, पर सर देने को बस न रहा॥

प्रणत पाल गोपाल को, सब दल उठा पुकार।
चली नाव मझधार में, लो सुधि जगदाधार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ गायन ❀

नाव मझधार में है, नाथ हमारे आओ।
धर्म की आन बचाने को मुरारे! आओ॥
गजेन्द्र से भी कहीं आज है जल्दी का समय।
वृजेश! हाथ में वह चक्र सँभारे आओ॥
यह घड़ी है कि जिस वक्त काम आते हो।
आओ जल्द आ दीनों के सहारे आओ॥
"विनीत" डूब न जाये यह धर्म का बेड़ा।
हिन्द की टेर पे आ नन्द-दुलारे आओ॥

यहाँ धर्म की सैन्य में, फैला हाहाकार।
वहाँ पार्थ से इस तरह, बोले जगदाधार॥
अर्जुन! वह मानस शर खींचो, धर्मपति बँधे बिलपाते हैं।
हथियार हाथ से छूट चुके, सेना वाले चिल्लाते हैं॥
पार्थ की ओर से मानस शर, ज्यों ही कुरु-दल पर छूट गया।
रह गये चकित से खड़े द्रोण, नर पति का बन्धन टूट गया॥

इसी तरह संग्राम में, होने आई शाम।
अपने-अपने दल सहित, गमने वीर तमाम॥
दुर्योधन भट-कर्ण मिल, गये द्रोण के पास।
कौरव पति कहने लगा, होकर निपट उदास॥
गुरुराज आज दसवां दिन है, एक तरफी मची लड़ाई है।
पर पाण्डु-वंश में से अब तक, चुहिया भी हाथ न आई है॥
दादा जी जान लड़ा बैठे, पर फल न हुआ दम मारी का।
एक दिन व्यतीत हो चुका है, अब प्रभुकी भी सरदारी का॥
भगवन् वह उलझन कहदो, क्यों काम न देती हिकमत है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह पाण्डव दल की ताकत है, या दुर्योधन की किस्मत है॥
कर्ण ने कहा कुछ बात नहीं, है मेल प्रेम के मेले का।
रण है दुरङ्गी रङ्गत का, खेल है गुरु से चेले का॥
पार्थ के करारे तीरों पर, हम सब दुहाइयां देते हैं।
पर गुरुवर उनको सहकर भी, उल्टी बधाइयां देते हैं॥
यह करुणा अगर न होती तो, रिपुका मुँह आज टूट जाता।
हाथों में आते-आते क्यों, हाथ का शिकार छूट जाता॥
उनके तन के यह रक्षक हैं, अथवा इनका प्रण उनका है।
राजन् लो समझ इसीमें सच, तन अपना है मन उनका है॥

सुन कर्ण का कटाक्ष यह, उबल गये गुरु राज।
डाल दिया तरकश-धनुष, फेंक दिया सिर-ताज॥

बोले ओ छुद्र-बली-छोरो, मुझको छल-छिद्र न आता है।
जितना बल बूता चलता है, उतना ब्राह्मण कर जाता है॥
यदि भिक्षा भगत दिखलाती है, तो धोके में न रहो राजन्।
मैं अपना भार उतार चुका, अब नायक और करो राजन्॥
यह धनुवा लो यह तरकश लो, यह राज-मुकुट देखो भालो।
जिस पर हर तरह भरोसा हो, यह ताज उसी को दे डालो॥
ओ पापी पेट! सहाता है, कैसी? कैसी बौछार मुझे।
ना कुछ स्वारथ में डूब गया, ओ द्रोण लाख धिक्कार तुझे॥
पापी मलेच्छ की बातों में, ब्रह्मत्व बेच कर खाया है।
उफ अपना सब कुछ देकर भी, यश तक न हाथमें आया है॥
पाण्डालो जब आपस ही में, यह चोरों की सी यारी है।
तो त्रिभुवन और त्रिकालों में, निश्चय ही हार तुम्हारी है॥

धनुष मुकुट सब फेंक कर, चले द्रोण तत्काल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चरण पकड़ कर रह गया, दुर्योधन नरपाल ॥
ओ शान्ति मूर्ति ओसत्य-निधे,यह क्या विप्लव फैलाते हो ।
नेया को हाथ लगा करके, क्यों योंही छोड़े जाते हो ॥
हम सब दर असल लोकड़े हैं, अपनी आदत पर जाते हैं ।
लेकिन यह गुरु को उचित नहीं,जो बच्चों पर रिस खाते हैं॥
जब तुम्हें सहारा मान चुके, तब अपनी टेर लगायें कहां ? ।
अपने से ही अपना न कहें,तब सुख दुःख और सुनायें कहां॥

इतने ही में देवता, सब रिस गये भुलाय ।
हाथ पकड़ कहने लगे, तो सुन ले कुरु-राज ॥

साक्षी है पृथ्वी माता की, आन है उन्हीं बनवारी की ।
कल निश्चय होगी मौत किसी पाण्डव-दल के बलधारी की॥
सुनते हैं चन्द्र और तारे, मैं किसी वीर को मारूँगा ।
यदि इतना करतब कर न सका,तो अस्त्र न करमें धारूँगा ॥

❀ गायन ❀

एकहि बार के बारन धार, महा जम-धार के बार प्रचारौं ।
देत हुँकार बिडार सबै, सरदार बिदार कै दार उतारौं ॥
आन अहै द्विज मान रहै,न गहै जिय मोह न छोह विचारौं।
पाण्डव-वीर न मारौं रने,कलतौ प्रभु आन न अस्त्रहिं धारौं॥

वाह–वाह करने लगे, वे दोनों मक्कार ।
यहाँ धर्म–दरबार में, बोले नकुल पुकार ॥

भ्राता भ्राता ! होगया गजब, प्रण हुआ द्रोण बलधारीका ।
कल निश्चय मारा जायेगा, कोई भट सैन्य हमारी का ॥
वह चक्र–व्यूह रचना करके, सेना पर रोक लगायेंगे ।
फिर किसी वीर को झांसे से,लड़-भिड़ कर मार गिरायेंगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतना सुनते ही हुए, धर्म राज खामोश।
फिर ठण्डे पड़ने लगे, उठे उठाये जोश॥

बोला—अपना क्या चारा है, निश्चय ही क्षय आ पहुँचा है।
जिसको हम लोग हिचकते थे, यह वही समय आ पहुँचा है॥
बस चक्र व्यूह का भेदन तो, केवल अर्जुन को आता है।
पर वह संसप्तक वीरों से, क्षण भर न निकलने पाता है॥
करुणा निधान केशव को क्या, इसका कुछ नहीं पता होगा।
हा हा हम दीन अनाथों का, मट भीम कहो तो क्या होगा॥
भीम ने कहा—वह होना है, जो कुछ होनी बतलायेगी।
निश्चय है जीवन जायेगा, पर अपनी बात न जायेगी॥
जितनी अपनी चल जायेगी, चलती भर उसे चलायेंगे।
भारत माता की गोदी में, लड़ते-लड़ते मर जायेंगे॥
पार्थ की तरह जिस विद्या का, हे तात! नहीं है ज्ञान हमें।
पर अपनी वीर भुजाओं पर, है गर्व और अभिमान हमें॥

धर्म-राज कहने लगे, क्या कहते हो तात?।
शक्ति दूसरी बात है, युक्ति दूसरी बात॥

लाखों वीरों की शक्ति-जहां, झकमार विफल दिखलाती है।
उस जगह एक सीधी-सादी, तदवीर काम कर जाती है॥
मतवाला और मस्त हाथी, वीरों के हाथ न आता है।
लेकिन छोटे से अंकुश से, गज-पति बकरा बन जाता है॥
पाओगे नहीं प्रवेश युक्ति, तो कहां शक्ति दिखलाओगे।
हम समझ गये फँस जाओगे, धोके में मारे जाओगे॥

कहा वीर अभिमन्यु ने, शान्त रहें प्रभु आप।
बेटा सुन सकता नहीं, गुरु-जन का सन्ताप॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे तात ! न इसे समझियेगा, हर बात पार्थ पर निर्भर है ।
यदि पार्थ वीर इसजगह नहीं, तो पार्थ-अंशतो हाजिर है ॥
यह भट उन अत्याचारों में, हरगिज न मौन रह सकता है ।
हे आर्य हमारी मारों को, काल भी नहीं सह सकता है ॥
अपने धन्वे से जोड़-जोड़, बिन जोड़े जोड़ जोड़ दूंगा ।
मैं भी प्रण करके जाता हूँ, वह चक्र-व्यूह तोड़ दूंगा ॥

धर्मराज कहने लगे, क्या कहते हो लाल ।
देखा भी होगा नहीं, ऐसा व्यूह विशाल ॥

उस चट्टानी पहाड़ से तो, अपना ही माथा फोड़ोगे ।
उन बिना जोड़ के जोड़े में, क्या जोड़ोगे ? क्या तोड़ोगे ॥
द्रोण से वीर बलवानों में, क्या गिनती कुँवर तुम्हारी है ।
वह बल है खूनी शेरों का, यह बाली उमर तुम्हारी है ॥
जिस जगह बुद्धि चकराती है, बूढ़े जवान नादानों की ।
उस जगह पहुंच कैसे होगी, बेटा तुझसे नादानों की ॥
सैकड़ों दुखों के साथ-साथ, यह दुखड़ा और दिखाओ ना ।
मेरे सपूत ! मेरे कुमार !, तुम व्यूह भेदने जाओ ना ॥

बिहँस कहा अभिमन्युने, घबराओ मत तात ।
चक्र व्यूह का भेदना, है मुझ को भी ज्ञात ॥

जिन दिनों गर्भ में सेवक था, माता जी कुछ अलसाई थीं ।
उस समय पिताजी ने उनको, गाथायें कई सुनाई थीं ॥
व्यूह की गाथा में मां जी को, निद्रा ने आन दबाया था ।
जाना-जाना ही जाना था, आना न जानने पाया था ॥
वह विद्या मुझको आज तलक, वैसी ही याद पिताजी ! है ।
बल के बल बूते पर मैंने, हे तात ! प्रतिज्ञा भी की है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये विनय है सबक की, यह बढ़ता जोश गिराओ ना।
जो अपना लाल समझते हो, तो अपना प्रण तुड़वाओ ना॥
धर्म ने कहा व्यूह से तात, आना भी बहुत जरूरी है।
आना-जाना यदि याद नहीं, तो विद्या अभी अधूरी है॥

वय किशोर इस हाल में, कौन कहो तो लाल।
तुम्हें काल के गाल में, भेजेगा चाण्डाल॥
कहा वीर अभिमन्यु ने, क्या कहते हो? तात।
तब जाना आसान है, तब आना क्या बात॥

आना है ऐसी हालत में, जब वे ताजे गुरदे होंगे।
आना है ऐसी सूरत में, जब सभी शत्रु मुरदे होंगे॥
फिर जाऊँ या मर जाऊँ मैं, लेकिन अवश्य ही जाऊँगा।
जब मुँहसे वचन निकाल चुका,तो उसकी आन निभाऊँगा॥
हे पूज्य! बहस का समय नहीं, अब लहरें हृदय खारहा है।
द्रोण का धनुष व्यूह का द्वार, आंखों में भरा जारहा है॥

कहा भीम ने ठीक है, हैं हम भी तो सङ्ग।
तात! बुझाने दीजिये, बढ़ती हुई उमङ्ग॥

यह सच ही है अभिमन्यु अभी, नन्हा अजान है बालक है।
पर जाने भी दो तात! इसे, भगवान वहां भी मालिक है॥
अपने काबू भर हम इससे, केवल मुखबरी करायेंगे।
यह राह बताता जायेगा, हम राह बताते जायेंगे॥
धर्म ने कहा तो ले जाओ, भैया! युवराज हमारे को।
अर्जुन बन्धु की धरोहर को, सुभद्रा के राज दुलारे को॥
उत्तरा देवि के भूषण को, पाण्डव कुल के उजियारे को।
भारत माता के प्यारे को, कुन्ती के नयन सितारे को॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते हो प्रण ठान कर लाल, तो यह भी प्रण ठाने जाना।
आना तो विजय हार लेकर, हारकर बदन मत दिखलाना॥

वीर लाल को धर्म ने, इस प्रकार समझाय।
सेनापति का मुकुट वह, दिया उसे पहिचान॥
धर्मराज के पास से, विदा हुआ बलवीर।
हर्ष और आनन्द से, गया मातु के तीर॥
माता ने देखा जहां, अपना राज-कुमार।
हृदय लगा कहने लगी, बार-बार चुमकार॥

आओ लाला! आओ कुमार, हे भद्रा के भूषण? आओ।
हे वीर पार्थ नन्दन आओ, इस जीवन के जीवन आओ॥
बेटा बोला धर्म ने मुझे, सेना नायक ठहराया है।
इस कारण तेरा लाल आज, बस बिदा मांगने आया है॥
जो अमर ज्योति जागृत करदे, वह सञ्जीवनी मिलादे मां।
जय हार लिये लौटे सुपूत, वह विजयी दूध पिलादे मां॥

हक्की बक्की सी हुई, सुन माता यह हाल।
बदन चूम कहने लगी, धन्य हिन्द के लाल॥

पाण्डव दल का नायक होना, कुछ भारत की दीवानी है।
कीर्ति है पिता की माता की, तेरे तेज की निशानी है॥
पर बाली उमर देखने से, कुछ हृदय हिचकसी खाता है।
उफ! एक सिरसका सुमन आज, क्या बज्र बींधने जाता है॥

वह तीखे शर द्रोण के, यह सुकुमार शरीर।
सही जायेगी किस तरह, इन तीरों की पीर॥

हँसकर लाल ने कहा मैया, इस मुशकिल में आसानी है।
हे सिरस सुमन सुन्दर अवश्य, लेकिन फौलादी पानी है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीखे तीरों को सहने का, सत्य का सनाह सँभारा है।
जो वहां विजय दिलवायेगा, वह आशीर्वाद तुम्हारा है॥
जब रावण पर चढ़ धाये थे, तब बारे राम दुलारे थे।
जिस समय कंस को मारा था, उस समय कन्हैया बारे थे॥
उनकी ही तरह लाज तेरा, मैया! रिपुदल संहारेगा।
तेरी अशीष मिल जायेगी, तो वीर न हरगिज हारेगा॥

माता ने मुँह चूमकर, कहा सिधारो लाल।
तात! तुम्हारी शक्ति के, हैं सहाय गोपाल॥

जाओ बेटा! निर्भय होकर, पर जाकर हँसी करैयो ना।
इस कुल को दाग लगैयो ना, मैया को नाम धरैयो ना॥
जीवन की अन्तिम घड़ियों तक, जीवन से मोह बढ़ैयो ना।
जी दे दीजो पर जीते जी, रण थल में पीठ दिखैयो ना॥

भुजा पूज टीका किया, चूम तात का गात।
धीरे धीरे विश्व में, होने लगा प्रभात॥

ज्योंही प्रभात की किरण फटी, त्योंही वीरों का गान उठा।
धन्वे कमान को कर प्रणाम, वह वीर सहित अभिमान उठा॥
जैसे ही बाहर कदम उठा, वैसे ही हृदय पुकार उठा।
उत्तरा प्रिये से मिलने को, दो चार कदम सरदार उठा॥

ठिठक कहा अभिमन्यु ने, ओ मेरे सरदार।
है? किस कुशल कटार की, यह मीठी सी मार॥

रण की भेरियां बुला करके, भालों की याद दिलाती हैं।
मन हरिणी की मधुरी तानें, महलों में मुझे बुलाती हैं॥
मैं आगे कदम बढ़ाता हूँ, पर कोई खींचे जाता है।
वीरते! ठहर तेरे ऊपर, इस समय प्रेम जय पाता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो वीर भेटने जाता है, वीरों की क्रूर कटारों से।
वह घायल यहाँ हो चुका है, प्रेम की रसीली मारों से॥
पर भाग भाग ओ प्रेम भाग!, तू कायर मुझे बनाता है।
क्षत्रिय कुमार पर जाल डाल, करतब से मुझे गिराता है॥
पर नहीं नहीं यह प्रेम मुझे, कामाशा नहीं बढ़ाता है।
हां मोह-द्रोह के फन्दे से, निर्द्वन्द बनाने जाता है॥
यह राग रङ्ग का ध्यान मुझे, रागों की याद भुलायेगा।
अपना कर्त्तव्य पालने में, दूना उत्साह दिलायेगा॥

क्षणभर द्विविधा में रहा, व्रत प्रिय वीर-किशोर।
रण दूलह गमनित हुआ, रङ्ग स्थल की ओर॥
प्राण प्रिया के जब पड़े, प्राणनाथ पर नैन।
हाथ जोड़ कहने लगी, आओ करुणा ऐन॥

मुखकी शोभा कान्ति की छटा, कुछ और भाव उपजाती है।
हे नाथ फबन में मिली हुई, कुछ उलझन सी दरशाती है॥
यह दासी ना जाने कब से, दर्शन के लिये पिपासी है।
सौभाग्य पातकी किरण लिये, आने की आज कृपा की है॥
वीर ने कहा रण से बढ़कर, हे प्रिये और उलझन क्या है।
जिसके साथ में बँधी हुई, जीवन की जटिल समस्या है॥
प्राणों की लगी बाजियां हैं, लाखों के खून हो रहे हैं।
लाखों रण में तड़पाते हैं, लाखों असहाय हो रहे हैं॥
लाखों की खबरें लेनी हैं, लाखों को धीर बँधाना है।
प्रत्येक बात सुलझाने को, हर तरह उपाय लगाना है॥

आना जाना दौड़ना, लगा रात दिन काम।
प्रिये किसे है? इन दिनों, क्षणभर भी विश्राम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह मत समझो हम लोगों तक, केवल इस भारत का फल है।
हे विदुषे यह विश्वास रहे, यह विश्व-व्यापनी हलचल है॥
व्यापार देश–देशान्तर के, ठण्डे से पड़े जा रहे हैं।
कितने ही होनहार सत्जन, घर में ही सड़े जा रहे हैं॥
घर-घर में चिन्ता भय द्विविधा, हर जगह मची घर-मारी है।
खेतियां सूखती जाती हैं, पड़ उठी विषम बीमारी है॥
अस्तकी खबर आजाती है, तो रवि का उदय नहीं मिलता।
ऐसी अशांति में बार-बार, मिलने का समय नहीं मिलता॥
आज भी प्रियतमे अधिक न अब, बातों की और सफाई दो।
मैं बिदा मांगने आया हूँ, सुकुमारी मुझे बिदाई दो॥
श्री धर्मराज ने आज मुझे, नायक का मुकुट बँधाया है।
मैंने व्यूह के भेदन को, बीड़ा हे प्रिये उठाया है॥

प्राण प्रिया के नयन से, लगा बरसने नीर।
हाथ जोड़ कहने लगी, जाओ हे रण धीर॥

सौभाग्य सुभद्रा माता ने, फल पाया तुमको पाने का।
मुझको भी प्रभु ने योग दिया, प्रभु वीर प्रिया कहलाने का॥
यह बाहु विशाल सहाय करें, वह शक्ति सत्यमय सुफल करे।
जाओ प्राण-धन प्राण-जीवन, भगवान तुम्हारी कुशल करे॥

तिलक लगाने के लिये, चली प्रिया सुख लूट।
त्योंही बेंदी भाल से, पड़ी थाल में टूट॥
कांप गई वीर प्रिया, यह अपशकुन निहार।
चरण पकड़ कर रह गई, सतवन्ती सुकुमार॥

ओ प्राणनाथ हो प्रण जीवन, क्या अनर्थ दिखलाता है।
हैं! हैं कौनसा पिशाच नाथ, यह दृश्य खींचता जाता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओ देव ! देव रोको थामो पृथिवी चक्कर सी खाती है ।
ओ नाथ संभालो दासी को, यह देह नहीं ठहराती है ॥
कहते कहते चरण पर, पटक दिया निज माथ ।
प्राण-नाथ ने बीच में, लगा दिया झट हाथ ॥
वीर ने कहा ओ वीर प्रिये, वह धीरज कहां खोगया है ।
हैं ! हैं क्षण ही भर के भीतर, क्या से क्या तुम्हें होगया है॥
उत्तर में कहा उत्तरा ने, बस इतना ही कह सकती हूँ ।
हे देव तुम्हारे बिना यहां, क्षण–मात्र नहीं रह सकती हूँ ॥
यह अशकुन और कुअवसर पर, प्रत्यक्ष कुफल दरशाते हैं ।
हे नाथ ! शपथ से कहती हूँ, अब चरण न छोड़े जाते हैं ॥
इसलिये आज जाओ न देव, कुछ ओट दिया को कियेचलो ।
या समर भूमि का नाम न लो, या मुझे साथमें लिये चलो॥
प्राण प्रिया के वचन सुन, बोला वीर-कुमार ।
उठें न ये कायर बचन, प्रिये दूसरी बार ॥
क्या कहा ? समर में जाऊंना, अपशकुन देखकर डर जाऊँ ।
इससे अच्छा तो यह होगा, मैं यहीं डूब कर मर जाऊँ ॥
जिस भारत की बलि-वेदी पर, वीरों की बलि दी जाती है ।
उस पुण्य–भूमि में वीर–प्रिये, जाने से मुझे डराती है ॥
क्या होगा ? जीवन ही लेंगे, अपशकुन अपने आतंकों से ।
पर दैव बचाये रहो मुझे, वीरों में वीर–कलङ्कों से ॥
क्यों वीरांगने ! शान्ति होगी, वीरों की गति पा जाने में ।
या तुझे सुहाग सुहायेगा ?, कायर की प्रिया कहाने में ॥
जिसके रुख पर विश्व हो, मरने को तैयार ।
वह डर जाये मौत से, तो डूबे संसार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म को आन विश्व का मान, इस समय मुझी पर निर्भर है।
पाण्डव-दल का सारा साहस, मेरे ही इतने प्रण पर है॥
ना कुछ जीवन के लालच में, सब अपर नीचे आता है।
बोलो वीरे! बोलो महिले, क्या यही तुम्हारी आज्ञा है॥
सच्चा स्नेह और तप है, तो मुझको फिर पाजाओगी।
पर लाख जन्म धरने पर भी, यह दाग न धोने पाओगी॥
ले चलूं समर में तुम्हें प्रिये, यह अनुचित नहीं कहायेगा।
फिर भी मेरे बल-वीरों पर, थोड़ा सा बट्टा आयेगा॥
संसार कहेगा हो न सका, जब भारत शक्ति-धारियों से।
तो लेनी पड़ी सहाय उन्हें, अपनी कुल-व्रती नारियों से॥

रक्खो भद्रे हर तरह, देश वंश की आन।
फिर आगे भगवान की, है मरजी बलवान॥

कहा उत्तरा देवि ने, तो जाओ हृदयेश।
रहें सहायक सर्वदा, कमलापति करुणेश॥

जाओ प्रण धन! समराङ्गण में, मैं भी आनन्द मनाती हूँ।
तुम बढ़ो विजय की माल लिये, मैं उसी ओर को आती हूँ॥
जो विजयी होकर लौटोगे, तो विजय-माल पहनाऊँगी।
पा गये वीर गति जो स्वामी, तो वहीं सती हो आऊँगी॥

प्राण बल्लभा ने किया, बिदा उसे तत्काल।
वीर सैन्य के सामने, जा पहुँचा प्रण-पाल॥
वीर सैन्य गमनित हुई, उठी गिरा गंभीर।
प्रमथ द्वार पर व्यूहके, था जयद्रथ बलवीर॥

अभिमन्यु कुंवर को देख कहा, पूँजी की हुई सधाई है।
हो चुके समाप्त बड़े बूढ़े, बच्चों, की बारी आई है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नादान उँटेरे क्यों तूने, यह ऊँटों का दल जोड़ा है।
सेना की क्या हालत होगी, जब नायक आप बिछोड़ा है॥
क्योंरे! छोरे कितने दिन से, छोड़दी गोद है दायन की।
दूध के दांत तक गिरे नहीं, छूटी न बास अजवाइन की॥
बेटा इन दिनों यहाँ आकर, वंश की कटावो बेल नहीं।
वीरों का यहाँ अखाड़ा है, छोटे बच्चों का खेल नहीं॥

हँस बोले अभिमन्यु झट, झटवर! खींच कमान।
तेजस्वी की उम्र पर, कर न व्यर्थ का ध्यान॥
शक्ति तेज के विषय में, यों समता अनुमान।
पाण्डु-वंश का छोकड़ा, कुरु-वंश का जवान॥

अज्ञान बराबर पिटकर भी, मुझको नादान बताता है।
बेशर्म ठोकरें खाकर भी, वीरता बघारे जाता है॥
अब यह बतक्कड़ी रहने दे, बल हो तो करतब दिखलाजा।
डरता हो अगर मौत से तो, हथियार डाल आगे आजा॥

जयद्रथ ने उत्तर दिया, ओ नन्ने नादान।
कुछ दिन तो संसार में, आने का सुख मान॥
क्या समझेगा पागल मरकर, दुनियाँ में क्या? क्यों होता है।
भोले कुमार! आते-आते, लोक से बिदा क्यों होता है॥
है एक तमाचे की बाजी, करनी धरनी कुछ होड़ नहीं।
संकोच इसी पर होता है, मेरा-तेरा कुछ जोड़ नहीं॥
इसलिये लाल तू घर को जा, सामने भीम को आने दे।
दिलकी जोड़ी से जोड़ बाँध, कुछ दिलकी तपन बुझाने दे॥
यह कायर प्राणों के भय से, तुझको आगे कर लाये हैं।
या रण वेदी पर देने को, बलि का बकरा ले आये हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विहँस कहा अभिमन्यु ने, सीख चुका हूँ ज्ञान।
है केवल संसार में, पतन और उत्थान॥
पतझाड़ कहीं पर आती है, आती है तभी बहार कहीं।
हार की जीत जीत की हार, इस से आगे कुछ सार नहीं॥
देख ले नमूना बच्चों का, तब बूढ़ों के आगे जाना।
रह जाये तपन यहाँ बाकी, तब दवा भीम से करवाना॥

यों कह कर अभिमन्यु ने, खींची जहाँ कमान।
जयद्रथ बरसाने लगा, बरसा के से बाण॥
बाणों की झड़ियाँ इस प्रकार, सुकुमार पर दरशाती हैं।
मानों सूर्य से निकल कर के, किरणें चन्द्र में समाती हैं॥
पर क्षण ही में पट पलट गया, कोई बिजलीसी आन गिरी।
अभिमन्यु वीर के बाणों से जयद्रथ की टूट कमान गिरी॥
खिलवाड़ खेलमें दबादिया, खिल कर अधखिले खिलौने ने।
धावा नाहर की गर्दन पर, कर दिया हिरन के छौने ने॥

चाहा भट अभिमन्यु ने, दूं निकाल सब जोश।
पर देखा जयद्रथ स्वयं, है बिलकुल खामोश॥
बोला इस नीच अनाड़ी की, आप ही नाड़ियां नहीं रहीं।
बेहोश वीर पर वार करें, यह वीरों का कर्त्तव्य नहीं॥
इस लिये छोड़ कर इसे यहीं, यह धोके की टट्टी देखूं।
ऊँची देखूं नीची देखूं, मीठी देखूं खट्टी देखूं॥
उफ यह बेहोश शत्रु पाकर, मार को न हाथ उठाते हैं।
हम अपने बैरी को पाकर, पहले बेहोश बनाते हैं॥
भारत वासियो! सत्य-व्रत में, इतना विज्ञान तुम्हारा है।
अब भी न आँख को खोल सको, तो ग्रन्थोंका क्या चारा है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्तु जयद्रथ को वहीं, छोड़ दिया रण-धीर।
तीर चढ़ाये धनुष पर, गया द्रोण के तीर॥
धीरे धीरे आ गया, जयद्रथ को भी होश।
झाड़फूँक कर अङ्ग सब, बैठ गया खामोश॥

फिर इधर उधर देखकर कहा, हैं हैं वह नाहर किधर गया।
जिसने बे होश बनाया है, वह जहर उतर कर किधर गया॥
वाहरे वीर! वाहरे शेर!, रग-रग के जोड़ तोड़ जाना।
लेकिन बेहोश देखते ही, बैरी के प्राण छोड़ जाना॥
जिसको पाकर वह वीर बढ़ा, हे चीर नीर तेरी जय हो।
मेरा भी हृदय कह रहा है, अभिमन्यु वीर! तेरी जय हो॥
मैं दिल से आदर करता हूँ, भट वर! तेरी मरदानी का।
लेकिन यह एक नमूना है, लड़के तेरी नादानी का॥
अधमरा नाग अधमरा शत्रु, जब कभी दाँव पा जाता है।
तो याद रहे पहले से भी, दो गुना जहर फैलाता है॥
तूने तोड़ा मैंने जोड़ा, रुक गया द्वार तेरे पथ का।
तू पटक गया मैं उठ बैठा, क्या बिगड़ा वीर जयद्रथ का॥
शङ्कर बरदानी के बल से, पाण्डव-दल पलम बराबर है।
डर है तो केवल अर्जुन का, लेकिन वह दल से बाहर है॥

व्यूह-द्वार को वीर ने, क्षण में लिया सुधार।
तब तक पहुँचे सामने, भीम आदि सरदार॥
इस में कोई शक नहीं, थे वे सब बलवान।
पर खाली जाता कहाँ, है शिव का वरदान॥

हर तरह बिचारे किये रहे, हथियारों की मारा मारी।
फिर भी जयद्रथ के बाणों से, बच सके न भीम गदा धारी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काबू भर लाख कोशिशें कीं, पर जय जयद्रथ से पा न सकी।
अभिमन्यु व्यूह में पहुँच गया, पर सेना भीतर जा न सकी॥
इसलिये धर्म की सेना ने, द्वारे पर ही संग्राम किया।
अभिमन्यु वीर ने बाणों से, गुरुवरको प्रथम प्रणाम किया॥

देकर द्रोणाचार्य ने, दिल से आशीर्वाद।
एक आह के साथ में, बोले सहित विषाद॥

समझा था कोई समता का, बलधारी मारा जायेगा।
मालूम न था मृग-छौना ही, मेरी कमान पर आयेगा॥
उफ! आज कमान उठानी है, सुकुमार सुभद्रा-नन्दन पर।
लग जाय आग उन बाणों में, पड़ जाय बज्र मेरे प्रण पर॥
तैयार नहीं हूँ मैं बेटा, सुकुमारों की खूं रेजारी को।
इस अधरम से द्रोण को बचा, यह दे दे भीख भिखारी को॥
वीर ने कहा हे दादा गुरु!, जो ऐसा खून बहाना था।
तो फिर पार्थ के पीठ पीछे, ऐसा प्रण ही क्यों ठाना था॥

गुरु बोले मेरा बचन, हुआ मुझे ही भार।
उफ! मेरे ही नाथ से, बेटे का संहार॥

लाड़ले लाल मान ले कहा, मौत का स्वयं आह्वान न कर।
मेरे प्रणका अपमान न कर, अपने तनका बलिदान न कर॥
जा चला व्यूह से आज लाल!, मैं तेरी हा हा करता हूँ।
डर नहीं मुझे है मरने का, पर इस हत्या से डरता हूँ॥

अभिमन्यु बोला—

धर आये प्राण हथेली पर, हम आजादी के दीवाने।
संग्राम भूमि से मुड़ जाना, सिखलाया नहीं बिधाताने॥
त्यागी-निर्मोह हृदय में यों, कायर-ममता मत उपजाओ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर असल दया यदि आती है, तो तुम्हीं सामने मत आओ।
मैं भी अपनी इस धनुहीं से, गुरु-हत्या नहीं चाहता हूँ।
जीवन देने ही आया हूँ, ये भिक्षा नहीं चाहता हूँ॥
मेरे हाथों बाल पर, होगी नहीं अनीति।
इस से मेरे सामने, बेटा तेरी जीत॥
यों कहकर गुरुवर चले, निकल दूसरी ओर।
दुःशासन के सामने, पहुँचा पार्थ-किशोर॥
दुःशासन बोला आह आज, बजरङ्गी नजर न आता है।
उसके बदले में छोटा सा, छोकड़ा नाच दिखलाता है॥
अभिमन्यु युद्ध के क्षेत्रों में, खैरात न बाँटी जाती है।
जीवन का सौदा होने में, फिर दया नहीं दिखलाती है॥
हां तेरी बाली उमर देख, क्षत्रियता कुछ सकुचाती है॥
बच्चों पर हाथ उठाने में, वीरों को लज्जा आती है॥
इस लिये दया के नाते से, बेटा देता हूँ सीख तुझे।
लौटजा अभी मिल सकती है, अभिमन्यु प्राणकी भीख तुझे॥
कहा केहरी-पूत ने, ओ कायर छल-धाम।
बार-बार लेना न अब, दया हया का नाम॥
अबला के बाल पकड़ने में, निर्दयी दया का साज कहां?।
जो नहीं लजाये चीर खींच, अब उन हाथों में लाज कहां॥
युद्ध में उतरने वाले को, कुछ सीख भीख का काम नहीं।
सीधी कमानकर खींच बाण, इस जगह दया का नाम नहीं॥
दुःशासन ने क्रोध कर, किया वीर पर वार।
किन्तु यकायक होगये, धनुष बाण बेकार॥
अभिमन्यु कुँवर ने धनुष धार, जब वह जौहर दरसाया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो धनुषबाण दुःशासन का, पृथिवी पर तोड़ गिराया है।
रथ छोड़ उतर दोनों योधा, हाथापाई दरशाय चले।
दुःशासन नीचे लोट गया, कुरुवे कमीन बिलपाय चले॥
एक बार की बार थी, शेष न रहते प्राण।
लगा सोचने पर तभी, नीतिवान बलवान॥
यह नीच एक ही धक्के में, अब निश्चय मारा जायेगा॥
लेकिन फिर भीम चचाजी का, प्रण पूर्ण न होने पायेगा॥
भारत के सारे भारत में, यह मुख्य शिकार उन्हीं का है।
इसलिये इसे बध करने में, सारा अधिकार उन्हीं का है॥
यह सोच उसे भी छोड़ दिया, सामान हुआ दुर्योधन का।
पर एक वार भी सह न सका, वह वीर सुभद्रा-नन्दन का॥
भट बोला कायर दुर्योधन, क्या चोट पार्थ की खायेगा।
जब बेटे से ही हार गया, तो उनसे क्या जय पायेगा?॥
लक्ष्मण भटने पहुँचकर, तत्क्षण दिया जवाब।
ओ अर्जुन के टहलुये, मुझसे चुका हिसाब॥
बाजी है बूढ़ों—बूढ़ों की, बच्चा है बच्चे की धुन का।
देखले जगत है रक्त गर्म, दुर्योधन का या अर्जुन का॥
यों कहकर दोनों राज-कुमर, अपने जौहर जतलाने लगे।
बाणों पर बाण चलाने लगे, तेग पर तेग चमकाने लगे॥

❀ गायन ❀

सुकुमार शरीरन कीरसे साज, भिरे बलवीर सुभाय सलौने।
कर बान गहैं कर बान लहैं, जुग जोरके जोर जुराब जुरौने॥
लघु गोरेहिलोरेसे भोरे भये, बिन मोरे मुखैं नहिं जानत गौरे।
जब एकलसे जनु कामकी जोट, कि दीसत हैं मृगराजके छौने॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चढ़ गया शरीर पर पार्थ कुमर, लक्ष्मण कुमार नीचे आया।
वीर ने एक ही मुक्के से, वीर को वीर-पुर पहुँचाया॥
अब बात अटकके अटक पड़ी, झट लटक पटक के वार हुए।
कुछ झटक गये कुछ सटक गये, कुछ भट कटकर संहार हुए॥
खटकी कृपाण छुट चले बाण, बलवानों की धर-मार पड़ी।
अभिमन्यु कुँवर के वाणों से, वीरों में हाहा-कार पड़ी॥
उड़ चले शीश धड़ नाच चले, खूनी नाले उमड़ाय चले।
हाथी-घोड़े चिंघार चले, अधमरे क्रूर सिसकाय चले॥

तोड़ मोड़कर सकल दल, बढ़ा महा बलवान।
वहां हांपते काँपते, जुड़े सात शैतान॥
दुर्योधन कहने लगा, गुरुवर राखो लाज।
जाता है सब आज ही, वरना राज-समाज॥

मेरा ख्याल था भारत में, यदि है तो अर्जुन का डर है।
अब समझ पड़ा अर्जुन-कुमार, अर्जुन से भी कुछ बढ़कर है॥
गुरुदेव शीघ्र कुछ जतन करो, वह रण की कहां बड़बड़ी है।
अन्यथा समझ में आता है, रणकी आखिरी यह घड़ी है॥
द्रोण ने कहा सम्भव ही है, अर्जुन का ढलता पानी है।
यह बढ़ते हुए हौसले हैं, फिर चढ़ती हुई जवानी है॥
क्या जतन करूँ क्या रण देखूँ, जब रही एकभी चाल नहीं।
किसकी सँभाल? क्या देखभाल, जब अपनी आप सँभाल नहीं॥

उसी समय शकुनी वहां, गिरा पीटकर हाथ।
भैया! भैया हो गय, कौरव-वंश अनाथ॥

युवराज लखन सुकुमार लखन, सुर-पुर के लिये सिधारा है।
हा! हा! उस वीर भयंकर ने, संग्राम-भूमि में मारा है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकने कहा लक्ष्मण ही क्या, अन्त है आज सारे रणका।
वह अभी अभी संहार हुआ, सुकुमार वीर दुःशासन का॥

इतना सुनते ही हुआ, दुर्योधन बेहोश।
किन्तु कर्ण भट थामकर, लगा दिलाने जोश॥

उफ राजन् ऐसी मौतों पर, जो इतना शोक दिखाओगे।
तो रण होने से पहले ही, रोते--रोते मर जाओगे॥
युवराज सही नर राज सही, युद्ध में ओस के पानी हैं।
राजन् आगे ईश्वर जाने, होंगी क्या क्या कुरबानी हैं॥
यह वार वही सह सकता है, जिस का फौलादी भेजा हो।
युद्ध में वही टिक सकता है, जिसके वज्र का कलेजा हो॥
दुर्योधन बोला अभी-अभी, भुगतूंगा मैं अपनी धुन को।
धिक्कार मुझे जो इसी समय, करदूं न निपूता अर्जुनको॥

गुरुवर शकुनी कर्ण भट, फैलाओ वह जाल।
फँस जाये जिससे अभी, विषम नागका लाल॥

गुरुवर बोले क्या कहा, एक बाल पर जाल।
चण्डालो रण छोड़ दो, मुँहपर धूंघट डाल॥

ना कुछ सुकुमार छोकड़े से, ठुकराये भागे आते हैं।
अब यहाँ जनाने मिल जुलकर, चालोंकी बात बनाते हैं॥
कायरो समर से निकल चलो, जो कर सकते संग्राम नहीं।
यह चाल और धोके वाला, ब्राह्मण से होगा काम नहीं॥
कर्ण ने कहा क्या कहते हो, क्या घर जानी मन मानी है।
जो आज्ञा दे वह काम करो, पंचायत नहीं करानी है॥
संग्राम भूमि है यहां हमें, उपदेशों की दरकार नहीं।
काम में सम्मति देने का, सेनापति को अधिकार नहीं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभी न था पूरा हुआ, उन सब का संवाद ।
तब तक कानों में पड़ा, वही केहरी नाद ॥
सिटपिटा गये सब अलग अलग, बेखिसकाये ही खिसक पड़े।
मानो बिलाव की म्याऊँ सुन, बिन मारे चूहे सिसक पड़े ॥
सब बोले कान लगा कर के, यह किसका नाद सुनाता है ।
कुछ आँख फाड़कर बोल उठे, शायद वह नाहर आता है ॥
रह गये दांत ऊपर नीचे, सब हिकमत हुरमत भूल गई ।
रह गया ताक में हुक्म धरा, शाही पंचायत भूल गई ॥
शकुनी बोला हो चुकी राय, है यही राय मत राव करो ।
यह जल बल रचने से पहिले, चलने का कहीं उपाय करो ॥
जो यहीं इकट्ठे खड़े खड़े, यों मन्त्र विचारे जायेंगे ।
तो इसके एक झपेटे में, सातों संहारे जायेंगे ॥

दुर्योधन कहने लगा, शकुनी मारो धीर ।
काम वहाँ दे जायेगी, मेरी ही तदबीर ॥
बेशक वह शूर दिलावर है, मरने जीने का ध्यान नहीं ।
लेकिन उसमें भोला पन है, इस कूटि नीति का ज्ञान नहीं॥
बस इसी कचाई के अन्दर, हम अपनी चाल चलायेंगे ।
देगा न काम इस जगह जोश, कुछ और जाल फैलायेंगे ॥

यों कह कर आगे बढ़ा, चली नीच कुरु-राज ।
जा पहुँचा उस ओर से, विश्व-वीर सिर ताज ॥
केहरी हांक देकर बोला, क्या है कोई कौरव---दल में ।
दे रहा दहाड़े खड़ा खड़ा, नाहर वीरों के दङ्गल में ॥
जो विजय तीसरी बार विजय, अब अन्तिम हाँक लगाता है ।
हौसला जिसे हो बढ़ आये, अन्यथा केहरी जाता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब तक आगे आगया, दुर्योधन बदकार।
बोला मेरे लाड़ले, मैं तुझ पर बलिहार॥
यह उम्र और इतना साहस, इतनी दम और सचाई है।
मेरे कुमार बतला तो दे, यह शक्ति कहाँ से पाई है॥
मेरी रग रग में नस नस में, तेरा यह समा गया गुण है।
कह तो क्या तू अवतारी है, या बाल रूप में अर्जुन है॥
वीर ने कहा कुछ बात नहीं, केवल स्वदेश की भक्ती है।
तुम शक्ती जिसे समझते हो, वह सत्याग्रह की शक्ती है॥
है वही गुनी है वही बली, जिस को अपने प्रण की धुन है।
विश्वास रहे पाण्डव दल का, बच्चा बच्चा भी अर्जुन है॥

दुर्योधन कहने लगा, ओ मेरे युवराज।
इस जौहर पर आज है, नेछावर यह ताज॥
जो द्वेष अग्नि माधव ने भी, आकर न बुझाने पाई है।
इतने बलिदान चढ़ाकर भी, जिस लौ में कमी न आई है॥
वह अग्नि आज तेरे गुण पर, ठण्डी ढलती सी जाती है।
वह क्रोध वैर की चिनगारी, मोह में बदलती जाती है॥
दिल कहता है सब राज ताज, दूं लाल आज बलिहार तुझे।
मेरे कुमार आ चाचा की, गोदी है आज तयार तुझे॥

कहा वीर अभिमन्यु ने, धन्य दास का भाग।
जो थोड़ी सी लाग में, बुझी जन्मकी आग॥
सच्चा अनुराग आपका है, तो त्यागी भी नेछावर है।
हां चाचा पसारो प्रेम गोद, बेटा आने को हाजिर है॥
दुर्योधन बोला वीर लाल, यह संशय भरी समस्या है।
जो सच्चे दिलसे आते हो, तो शस्त्रों का मतलब क्या है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दे छोड़ वीर हथियारों को,जो दिल से रञ्जिश खो दी है।
फिर आ मेरे लाड़ले लाल, तैयार चचा की गोदी है॥

भोले राज कुमार ने, कर तेग को प्रणाम।
कहा चेतनो ! चण्डिके !, कर जीवन विश्राम॥

पी चुकी रक्त रण-वीरों का, अब घड़ी शांति की आई है।
बिछुड़े हृदयों का स्वागत है, हे अम्बे तुझे बिदाई है॥
लड़चुके बहुत बढ़चुके बहुत,बस अब न व्यर्थ संग्राम करो।
बैठो तरकश शांति के सहित, हे धन्वे ! तुम विश्राम करो॥
पृथ्वी माँ तेरी साक्षी पर, बन्धन में वीर बँधाता है।
हे हृदय ! वीर हृदयी तेरा, उस प्रेम—गोद में जाता है॥

यों कह कर अभिमन्यु ने,त्याग दिये हथियार।
त्योंही भट से लिपट कर, लगा भूकने स्यार॥

शूरो ! दौड़ो वीरो दौड़ो !, हथियार हाथ धारो—धारो।
पड़ गया फेर मत करो देर, फँस गया शेर मारो—मारो॥
पोनियाँ नाग जल्दी बतला, कैसा सन्मान चाहता है।
अपना बलिदान चाहता है, या जीवन—दान चाहता है॥
छोकड़े याद रख इसी समय, वह सन्धि रङ्ग दिखलायेगी।
क्या समझा है जीवन भरकी,ज्वाला क्षण में बुझ जायेगी॥

कहा वीर अभिमन्यु ने, मर जाओ खल-जात।
एक बाल के शीश पर, यह भीषण आघात॥

स्वार्थियो वंश ही की सोचो, सकुचो कुछ विश्व-विधाताको।
मैं खुले तौर से कहता हूँ, धिक्कार तुम्हारी माता को॥
ओ बत बनिये इतने ही में, मान लूँ प्राण दातार तुझे।
जो एक साथ ही बिना कहे, करवा डाले संहार मुझे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँगूँ किससे ? तुझ पापी से, क्या ? प्राण-दान चुप हत्यारे ।
जन्म से प्रथम ही मरते हैं, रे खल ! वीरों के सुकुमारे ॥
पापी क्या यही समझना है, यों क्षत्रिय-वृत्ति टल जायेगी ।
लालच का दानादिखलाकर, चिड़िया चंगुल में आयेगी ॥
उफ़ ! न्याय-नीतिकी आशा क्या, अन्यायी और अनारी से ।
सत्य की दया की भिक्षा क्या, स्वारथी और व्यभिचारीसे॥

दुर्योधन कहने लगा, यों आशा मत त्याग ।
दान-वीर कुरु-राज से, जो चाहे सो मांग ॥

शत्रु भी आज तेरा माँगा, बे बहस किये दे जायेगा ।
ओ सुर-पुर के जाने वाले, जो मांगेगा सो पायेगा ॥
वीर ने कहा दे सकता है, यदि ओ मेरे दातार मुझे ।
तो दे दे फकत उठा करके, वह टूटी सी तलवार मुझे ॥
शकुनी बोला भैया ! भैया, यह दान कहीं स्वीकार हुआ ।
तो याद रहे क्षण ही भरमें, सब कुरु-दल बंटाढार हुआ ॥
यह वीर इसी बन्धन में भी, हम सब को मार गिरायेगा ।
उलटा शिकार हो जायेगा, कुछ भी न हाथ में आयेगा ॥
कुरु-पति बोला क्या कहते हो, दुर्योधन क्या दीवाना है ।
क्या इतना मुझको ज्ञान नहीं, यह इसका जाल बिछाना है॥
अभिमन्यु एक तलवार छोड़, सब देने को तैयार हूँ मैं ।
पर ऐसा दुष्कर-कठिन दान, देने से तो लाचार हूँ मैं ॥

कहा वीर ने है अगर, तू इससे लाचार ।
तो करवा दे शौक से, अब मेरा संहार ॥

झूंठे दानी कुल के कलंक, माँ के कुठार-धिक्कार तुझे ।
बलिये कुपूत स्वार्थ के दूत, भूमिके भार धिक्कार तुझे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन बोला सरदारो, सुन रहे गालियाँ छोरे की।
पीस दो पकड़कर पापी को, काट दो जीभ मुँह जोरे की॥
बस क्या था चलने लगे, सात तरफ हथियार।
बन्धन में जकड़ा हुआ, बालक रहा पुकार॥

क्यों दादा गुरु क्यों बलवीरो, क्या यही न्याय कहलाता है।
वीरों के द्वारा वीर-बाल, क्या यों ही मारा जाता है॥
गुरुवर के अश्रु चल रहे थे, हथियार भी चलता जाता था।
कर्त्तव्य भी पाला जाता था, प्रेम भी उबलता जाता था॥
हथियार चलाते ही बोले, ओ बेटा मुझे लजाओ ना।
मैं खुद ही जला जा रहा हूँ, बातों से व्यर्थ जलाओ ना॥
सूरज पर साया पड़ जाये, हो जाये स्याह मयंक सभी।
पर नहीं छूटने पायेगा, यह मेरा वीर-कलंक कभी॥
हाहा ओ स्वर्ग लोक यात्री, गुरु और ब्राह्मण भूल मुझे।
ले जा मेरा ब्रह्मत्व वीर, दे जा चरणों की धूल मुझे॥
विवश ब्राह्मण रुदन कर, चला रहा हथियार।
बँधा केहरी लाज भी, करता रहा पुकार॥

हे सूर्य देव! पृथिवी अम्बे, हे दशों दिशाओं के स्वामी।
हे पवन अनल आकाश तत्व, हे हे केशव अन्तर्यामी॥
तुम साक्षी हो मैं मरा नहीं, कुछ कायरता दिखला करके।
सेवक बलिदान हो रहा है, अपना कर्त्तव्य निभा करके॥
हे तात मातु हे चचा बन्धु, सुकुमार तुम्हारा जाता है।
उत्तरा प्रिये अन्तिम प्रणाम, शृङ्गार तुम्हारा जाता है॥
हे हे मधुसूदन नमस्कार, यह ताबेदार जा रहा है।
हे भारत अम्ब विदाई दे, तेरा आधार जा रहा है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे चचा भीम ? लाजिये कभी, बदला इस क्रूर कसाई से।
तब तक शरीर में प्राण रहें, मत मुँह मोड़िये लड़ाई से॥
यह नाहक खूँन बिसारियो ना, तबतक कि सुफल फरियाद न हो।
करियो कुरबानी लगातार, जब तक कि हिन्द आजाद न हो॥

ओम्-नाद करते हुए, हुआ वीर-अवसान।
क्रूर-कौरवी सैन्य के, बजने लगे निशान॥
सुर-मण्डल में साथ ही, हुई एक जयकार।
आओ भारत लाड़ले, आओ पार्थ कुमार॥

गायन-वीर शृङ्गार! शेरे हिन्द दुलारे आओ।
पार्थ के पूत! श्रीकृष्ण के प्यारे आओ॥
अमर हुए हैं तुम्हें पाके समर भी लाला।
धर्म आधार ओ भू-तल के सहारे आओ॥
आज भारत से उठा जाता है असली सरदार।
देव कहते हैं ओ सरदार? हमारे आओ॥

वीर—मृत्यु के साथ में, बन्द हुआ संग्राम।
जय विनीत इस कुछ जगह, लेने दे विश्राम॥

गायन-केशव कहो, यह चाल जाल किसके हैं।
महिमा तुम धारे, या करणी हमारी है॥
धर्म फँसने लगे तो पार्थ को बतलाया भेद।
किन्तु अभिमन्यु की बात न अनुसारी है॥
गज की पुकारों पर उतने आ सकते थे।
कुरुक्षेत्र केशव? क्या देखा दूर भारी है॥
हम तो विनीत यही समझे हैं लीलाधर!।
हीला है उन पर सब लीला तुम्हारी है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* जयद्रथ बध *

कुरु-पति की जयकार जब, पड़ी धर्म के कान ।
लगे पूछने भीम से, यह क्या है बलवान ॥
क्षणभर पहले अभिमन्यु अभी, सिंहनी दहाड़ सुनाता था ।
कौरव दल का हा हा निनाद, कानों को फाड़े जाता था ॥
लेकिन क्षण ही भर पीछे, यह क्या है ? वीर बिदाई सी ।
सुनता हूँ किसी दुहाई में, कौरव-सैन्य की बधाई सी ॥

उसी समय आये नकुल, करते हुए पुकार ।
भैया ! भैया हो गया, कुल का बंटा ढार ॥
जिससे हम धनी कहाते थे, वह अपना रतन खोगया है ।
हा हा किस मुँह से ?, क्या कहदूं बेटे का पतन होगया है ॥
कर चुका व्यूह जय तीन वार, छोड़ा न वीर सैना भर में ।
आगया मगर भोला कुमार, खल दुर्योधन के चक्कर में ॥
अभिमन्यु आज लोक का नहीं, सुर-पुर का बना उजाला है ।
हा ! उसे सात सरदारों ने, मिल-जुलकर बध कर डाला है॥

गूँज उठी उस सैन्य में, वाह धीर अभिमन्यु ।
धर्म यहीं तक कह सके, आह वीर अभिमन्यु ॥
आह को आगे आह मिली, वाणी के पुरजे छूट पड़े ।
तिल-मिल होकर झप गईं आंख, श्री धर्म भूमि पर टूट पड़े॥
पड़ गई प्रलय के चक्कर में, वह छाया हाहाकार वहां ।
जिसकी न आंख में आंसू हों, था कौन शूर सरदार वहां ॥
त्रिभुवन से उमड़ी आती थी, जयकार वीर अभिमन्यु की ।
पत्ते पत्ते में छाई थी, जयकार वीर अभिमन्यु की ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीम आदि ने उस समय, ज्यों ज्यों धीरज धार।
मूर्छित धर्म नृपाल को, दिया तनिक आधार॥
धर्म को सहारा दिये हुए, मन मारे सैन्य जा रही है।
'उत्तरा' वहां जय-हार लिये, स्वागत को बढ़ी आ रही है॥
लेकिन दिल टूटा दल देखा, रुख बदल गया दिल टूट गया।
जयमाल भूमि पर बिखर पड़ी, वह थाल हाथ से छूट गया॥
सेन के मुख से एक साथ, हा! वीरों के वीरेश! उठा।
उसके मुखसे गिरते-गिरते, हा प्राणनाथ! प्राणेश! उठा॥

इधर बन्धु बेहोश है, उधर बहू बेहोश।
बेहोशी खुद कौन दे!, किसको कैसे होश॥
कुछ सखियों ने दौड़कर, लिया देविको थाम।
शिवि-शिविर है लहरकर, आया वह कुहराम॥
गिर पड़ी सुभद्रा चीख मार, कुन्ती को अपनी खबर न थी।
जो नजर नजर के आगे हो, ऐसी कोई भी नजर न थी॥
बे हवा स्वयं सारा दल था, नर-पति की हवा हो रही थी।
सुरवृन्द वहाँ खुश होते थे, पृथिवी मां यहां रो रही थी॥

लौट पड़े थे उस तरफ, पार्थ और यदुनाथ।
एक बारगी वीर का, लगा ठनकने माथ॥
बोले हे नाथ बधाई है, संसप्तक—विजय दिलाने पर।
पर शकुन, रूप बतलाओ यह, अशकुन कैसा घर आने पर॥
यह बांया दृग बाँया बाजू, भगवन! साथ ही फड़कता है।
सरदी बिन हृदय कांपता है, बिन बादल व्योम कड़कता है॥
जयकारा नहीं सुनाती है, फीकी सी दीपक माला है।
सरदार न आते जाते हैं, शिविरों में नहीं उजाला है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगिराज कहने लगे, फिर ममता का जाल।
कभी एक रहती नहीं, पार्थ प्रकृति की चाल॥
क्षण में रङ्ग बदलता है, कब तक सोचूं फल गुण क्या है।
दल का संहार हो रहा है, इससे बढ़कर अशकुन क्या है॥
होनी होकर ही मानेगी, होनी का असर न जायेगा।
क्या सोच अभी से करते हो, होगा सो आगे आयेगा॥
यों सोच कर आगे बढ़े, पार्थ और करुणेश।
धर्मराज के शिविर में, प्रभु ने किया प्रवेश॥
तब तक कुछ था आ चुका, धर्मराज को होश।
निकल रहा था हृदय से, बक झक में वह होश॥
तब तक देखा धर्म ने, अपना साहूकार।
जिसकी सम्पति का हुआ, रण में बंटाढार॥
बस क्या था विलपा उठे, हाय हाय चिल्लाय।
धर्मराज ने वस्त्र में, मुँह को लिया छिपाय॥
बोले ओ भीम! रहम करदे, करदे पथ यम के द्वारे का।
अर्जुन मुँह देखे लेता है, इस पापी का हत्यारे का॥
मार दे मारदे तात छुरी, मैं तेरी हा हा खाता हूँ।
ओ भैया! साहु आ रहा है, मैं नीचे गड़ता जाता हूँ॥
ओ-यम हा हा! खींचले प्राण, दे ठौर मुझे पृथिवी मैया।
कहना न पड़े कुछ अर्जुन से, सुनले न कहीं कुन्तीमैया॥
हा! हा! वह पास आचुका है, अब चलती एक न आधी है।
स्वर्ग के जवैये! कहता जा, यह धर्म नहीं अपराधी है॥
लिपट गये प्रिय पार्थ से, धर्म राय बिलपाय।
ओ भैया मुझ नीच के, दे अवगुण बिसराय॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौरवी सात सरदारों ने, अभिमन्यु कुमर को मारा है।
तेरी सौगन्ध आन हरि की, यह धर्म नहीं हत्यारा है॥
खोया है तेरी पूंजी को, उसका बदला ले ले भैया।
मैं हाजिर हूँ ले काट गला, चाहे फांसी दे दे भैया॥

दृढ़-व्रत अर्जुन वीर ने, देख धर्म का रङ्ग।
धीर सहित सहदेव से, पूछा सभी प्रसङ्ग॥

बोले सहदेव आज गुरु ने, चक्र-व्यूह को रचाया था।
फिर उसके भेदन करने का, बीड़ा लाल ने उठाया था॥
वह गया साथ में लोग गये, पर जयद्रथ ने जाने न दिया।
पहले ही द्वारे रोक लिया, कुछ जौहर जतलाने न दिया॥
बेहोश जयद्रथ को कर के, लाल ने सैन्य को छोड़ दिया।
क्या कहूँ अकेले ही भट ने, उस चक्रव्यूह को तोड़ दिया॥
फिर धोके से दुर्योधन ने, भट को निःशस्त्र बनाया है।
उफ साथ महारथियों ने मिल, फिर उस को मार गिराया है॥

कहा पार्थ ने कर गया, यदि वो अपना काम।
भैया तो क्यों ले रहे, उसका रोकर नाम॥

रोओ उस पर जो कुल-कलङ्क, पुरुषों की पूंजी खाता हो।
नारि का सहारा लेता हो, अपनी पाई न कमाता हो॥
रोओ जिस पर जो जाति सिद्ध, कर्त्तव्यों से घबराता हो।
रोओ उस पर जो ममता में, रण छोड़ भागा आता हो॥
उस हीरे पर रोते क्या हो, वह तो कुल दाग धोगया है।
खो गया बीज पौदा देकर, वह मर कर अमर हो गया है॥
ओ धर्म-मूर्ति! क्या रोने में, इस वीर-वंश के जौहर हैं?।
अभिमन्यु सरिस लालों बेटे, इन चरणों पर नौछावर हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोने से मिटता नहीं, वीरों का संताप।
क्षत्रिय-गण करते नहीं, ऐसा कभी प्रलाप॥
क्षत्रिय अपनी तलवारों से, हृदयों की जलन बुझाते हैं।
रिपु के रक्त के नहाने से, वीरों के दुःख नशाते हैं॥
खेद की नहीं इस बदले की, अपने सामने समस्या है।
बतलाओ भीम वीर बध का, सबसे पहला कारण क्या है॥
भीम ने कहा जड़ तो वह है, जिसने रोका दल का पथ है।
यदि मेरी नजरों से पूछो, तो असली मूल जयद्रथ है॥
यदि उसके बन्धन से छुट कर, वह मार्ग हमें मिलने पाता।
तो मैं निश्चय से कहता हूँ, अभिमन्यु न यों मारा जाता॥

कहा पार्थ ने मिलगया, असली शांति निशान।
सुनते हैं सरदार सब, साक्षी हैं भगवान॥

हे वीर-पूत हे वीरात्मे! कल, तुझे शांति साधन होगा।
जयद्रथ के ताजे लोहू से, वीर का वीर तर्पण होगा॥
सुलझावा कल हो जायेगा, जीवन मृत्यु की समस्या का।
हे कृष्ण मौन मत धरे रहो, कुछ सोचो जतन प्रतिज्ञा का॥

जब तक माधव मौन थे, था आपसी हिसाब।
लेकिन पड़ा दबाव तो, देना पड़ा जवाब॥

हे पार्थ सोचकर बात करो, इस प्रण का मतलब क्या होगा।
जयद्रथ न शामतक मार सके, अर्जुन बोलो तब क्या होगा॥
पार्थ ने कहा यदि सन्ध्या तक, जयद्रथ को मार न पाऊँगा।
तो शपथ तुम्हारी करता हूँ, जीते जी ही जल जाऊँगा॥

यह सुनकर दरबार का, बदल गया सब रङ्ग।
तेवर बदले पार्थ के, फड़क उठे सब अङ्ग॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीधा करके धन्वे पर शर, घूमने लग दावाने से।
चल दिये अकेले एक तरफ, भटके से और भुलाने से॥
जयद्रथ ओ जयद्रथ! सावधान, आपहुँचा सिरपर कालतेरा।
त्रिभुवन में से ले बुला नीच, जो कोई हो प्रतिपाल तेरा॥
ब्रह्मा आयें महेश आयें, तो उनसे भी रण ठानूंगा।
केशव भी उनका पक्ष करें, तो बात न हरगिज मानूंगा॥
यह अपनी लगी बुझानी है, कुछ स्वार्थ नहीं परमार्थ नहीं।
या सुबह जयद्रथ दुष्ट नहीं, या इस भूतल पर पार्थ नहीं॥

अकुलाहट में भक्त जन, प्रण लेते हैं ठान।
पर रहता है भक्त का, भक्त-वश्य को ध्यान॥
क्षण ही भर में क्रोध वह, बसा मोह की फांस।
अर्जुन की चलने लगी, उलटी सीधी श्वांस॥
बोले जयद्रथ मार कर, क्या करलूंगा? आह।
क्या इससे मिल जायगी, तात! तुम्हारी राह॥

प्राण-प्रिय तभी मिल सकता है, जब अपने प्राण पठादूं मैं।
वह गले तभी लग सकता है, जब अपना गला कटादूं मैं॥
ओ लाल ठहर ओ वीर ठहर, क्यों मुझसे प्रथम जारहा है।
अभिमन्यु ठहर अभिमन्यु ठहर, यह पापी पिता आरहा है॥
मैं तुझे छोड़कर चला गया, तू मुझे छोड़कर जा न कुँवर।
मैंने मर्य्यादा तोड़ी है, तू उसे तोड़कर जा न कुँवर॥
अपने अपराधों के बदले, आप ही दण्ड ठहराता हूँ।
तू वीर-मुक्ति को प्राप्त हुआ, मैं आत्म घात कर आता हूँ॥

बिलख बिलखकर पार्थ भट, करने लगे विलाप।
अहो पिता का हृदय वह, बेटे का सन्ताप॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ गायन ❀

कब संभव है जरिज्वाल उठे, जितही तितही पर धूम न होये ।
विसयार महा फन मारकरे, गुनियां नमिलेतऊ जीव न सोये॥
किहिभांतिरहे मल-हीन शरीर, यथाविधिसों नितहू बिनधोये ।
कहुँनीति-कलाअसमीत कहां, मरजायलला अरु बाप न रोये॥

क्या जाने ? क्या उस समय, था होने को हाल ।
किन्तु उसी क्षण पर वहां, आ पहुँचे गोपाल ॥

जड़ के समान थे पार्थ वीर, ऐसी करुणा ने जकड़ लिया ।
पर सावधान अर्जुन कह कर, झट हाथ नाथने पकड़ लिया ॥
पर पार्थ यहां तक थे अचेत, समझे उन को गोपाल नहीं ।
बेहोशी में ही बोल उठे, कुछ ठहरो जाओ लाल नहीं ॥
हाँ हाथ पकड़ कर तुम खींचो, मैं अपना जोर लगाऊँगा ।
तब कहीं पाप के गढ़हे से, हे तात ! निकलने पाऊँगा ॥

कहा कृष्ण ने जोर से, सुनते भी हो ? तात ।
नहीं पहुँचती है सखे, या कानों तक बात ॥

पार्थ ने कहा हाँ सुनता हूँ, वह मेरा लाल पुकार रहा ।
हा हा मेरे सुकुमारे को, वह दुष्टों का दल मार रहा ॥
बेटा ! बेटा मत चिल्लाओ, आ पहुँचा पिता तुम्हारा है ।
ओ राज दुलारे बतलाओ, तुमको किस खल ने मारा है ॥
जयद्रथ ने उफ ! क्या कहते हो, वह पापी बदला पायेगा ।
चुप रहो लाल वह काल अभी, इस शर से मारा जायेगा ॥

मोहन ने फिर जोर से, दिया उन्हें झकझोर ।
तब अर्जुन दृग खोलकर, चितये प्रभु की ओर ॥

फिर बोले मुझको जाहिर है, केवल कृष्ण ही बुलायेंगे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह मोह देखकर उसी समय, गीता का ज्ञान सिखायेंगे ॥
लेकिन माधव इन घावों पर, वह मरहम देगा काम नहीं।
इस सन्निपात के रोगों को, त्रिकुटी देगा आराम नहीं ॥
नहीं छिपेगा मेरु-गिरि, गिरधर तिल की ओट।
यह आत्मा है बाप की, वह बेटे की चोट ॥
मेरे जीवन-धन बतलाओ, मेरा जीवन-धन किधर गया।
प्यारे मन-मोहन बोलो तो, मेरा मन मोहन किधर गया ॥
मोहन बोले-कैसा मोहन, फिर मोह हुआ बलवान तुझे।
ताज्जुब है गीता सुनकर भी, यह बना रहा अज्ञान तुझे ॥
अये पञ्चतत्व के पुतले कह, किससे किसका क्या नाता है।
सब एक खाक के बासन हैं, बेटा किसको बतलाता है ॥
गोरी चिकनी मिट्टी चाहे, रण भूमि में मिलवादूं मैं।
जीवात्मासे मिलना होतो, चल चन्द्र-लोक दिखलादूं मैं ॥
कोई भी नहीं बाप-बेटा, मालिक या चेरा कोई नहीं।
था लोक-सूत्र सो टूट गया, अब मेरा तेरा कोई नहीं ॥
जो करना है करना होगा, चाहे तब कर चाहे अब कर।
हे पार्थ! व्यर्थ का मोह छोड़, जो करना है वह करतबकर ॥
कहा पार्थ ने दो मुझे, दिखा जीव कर्तार।
खुल जायेगा तो वहीं, नर-जीवन का सार ॥
गरुड़ध्वज ने गरुड़ का, किया वहीं आह्वान।
पार्थ-सहित शशि लोकको, प्रभुने किया पयान ॥
देखा निश्चर समर में, है तन्मय वह बाल।
रोकर अर्जुन ने कहा, आजा मेरे लाल ॥
तेरे वियोग में लाल! गत, तात को न निद्रा आती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे छैया मैया तेरी, गैया, बनकर डकराती है ॥
उस विरहिन देवि उत्तरा ने, चुल्लू भर पानी पिया नहीं ।
कुन्ती को तन की खबर नहीं, सेना ने भोजन किया नहीं ॥
बल टूट चुका पांडव दल का, अब जय पाने की आश नहीं ।
आगे कुछ और जतन होगा, यह रहा मुझे विश्वास नहीं ॥
इस कारण तेरे लेने को, केशव ने कष्ट उठाया है ।
हे भारत के आधार चलो, ये पिता बुलाने आया है ॥

रोना सुनकर पार्थ का, बोला चन्द्र-कुमार ।
अर्जुन ! रो धो कर यहाँ, कर न विघ्न बेकार ॥

सृष्टिके आदि से आज तलक, सौ तरह जीव के नाम बने ।
तुम कभी हमारे बाप बने, हम कभी तुम्हारे बाप बने ॥
मैं चन्द्र लोक का वासी हूँ, चन्द्र का पुत्र कहलाता हूँ ।
जितनी थी अवधि पूर्ण करके, फिर चन्द्रलोक में आया हूँ ॥
केशव ही मुझे ले गये थे, केशव ने ही पहुँचाया है ।
तेरा अज्ञान मिटाने को, केशव ने कष्ट उठाया है ॥
घनश्याम ! भक्त को ले जाओ, ममता में मुझे फँसाओ ना ।
रो चुका खूब हे दया धाम, अब ज्यादा इसे रुलाओ ना ॥

❀ गायन ❀

भक्तों को भक्त-वश्य ! रुलाना नहीं अच्छा ।
दीनों को दीन-बन्धु ! सताना नहीं अच्छा ॥
माया में फँसे आप हैं, सन्ताप सह रहे ।
त्रैताप पै यह ताप बढ़ाना नहीं अच्छा ॥
जिस नाम के पतवार बने श्याम खलौने ।
हर बार ले भौंर में जाना नहीं अच्छा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'गोविन्द' मुझे यों ही सहारा दिये चलो।
झोंके लगा लगा के, झुकना नहीं अच्छा॥

नयन खुल गये पार्थ के, दूर हुआ अज्ञान।
कुरुक्षेत्र में पहुँच कर, फिर बोले भगवान॥

अर्जुन अब तो विश्वास हुआ, या कुछ और भी समस्या है।
बोला प्रण पूरा करने को, हे वीर बाहु! सोचा क्या है॥
पार्थ ने कहा सोचना काम, है केवल सोच-विमोचन का।
बन जायेगा तो अर्जुन का, बिगड़ेगा तो मधुसूदन का॥
जो पीर पराई हरता है, इस जन की होगी दाह उसे।
जो प्रण-पालक कहलाता है, प्रण की होगी परवाह उसे॥

यों कहकर झट पार्थ ने, सिर को लिया झुकाय।
तथा शिविर से निकल कर, गमने यादवराय॥

एक जगह एकान्त में, पहुँचे माया धाम।
माया ने आकर वहीं, प्रभु को किया प्रणाम॥

प्रभु बोले देवी अर्जुन ने, जयद्रथ बध का प्रण ठाना है।
पर द्रोण वीर को रक्षा कर, सन्ध्या तक उसे छिपाना है॥
सन्ध्या होने से पूर्व कभी, जयद्रथ न सामने आयेगा।
उस हालत में अर्जुन खुद ही, जीते जी ही जल जायेगा॥
प्रण भङ्ग हुआ यदि भक्तों का, तो अपनी ही बदनामी है।
वह पार हमें ले जानी है, जो नाव हाथ से थामी है॥
कल अर्जुन के प्रण के पीछे, हम तुम दोनों की इज्जत है।
हे नटनी कल के नाटक में, बतलाओ तो क्या हिकमत है॥

माया ने उत्तर दिया, हे हे माया नाथ।
सारा नाटक मात्र है, हम इच्छा के साथ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रण तुम से है जन तुम से है, तुम से ही बँधी समस्या है।
मुझ से तो केवल यह कहदो, मेरे लायक सेवा क्या है ?॥
प्रभु बोले तो कल सन्ध्या से, पहले ही सूर्य छिपा जाये।
जब मैं तुमको संकेत करूँ, तब बादल में से प्रकटाये॥
दूसरे जयद्रथ का मस्तक, आने न दीजियो पृथिवी में।
उसको सीधा पहुँचा दीजो, मुनि वृद्धक्षेत्र की गोदी में॥
मेरे कहने पर हो प्रभात, तुमको रखना है ध्यान यही।
हे देवि पार्थ प्रण पालन को, हो सकता है सामान यही॥

जो इच्छा कहकर नटी, चली गई तत्काल।
यहां पार्थ के शिविर में, फिर आये गोपाल॥
उन्हें साथ लेकर चले, कैलासी के धाम।
मिले परस्पर प्रेम से, कर के प्रणय प्रणाम॥
कैलासी कहने लगे, कहां आज ब्रजराज।
कहाँ पधारे हैं चरण, वनखण्डी के काज॥

यह कुञ्जों के किलोल-कारी, यह बीहड़ और उजाड़ कहाँ।
यह ब्रज-रज में बिहार कर्त्ता, यह पाहन मयी पहाड़ कहाँ?॥
प्रभु बोले ब्रज या कुञ्जों में, यह शोभा का विस्तार कहाँ।
गौरी समेत गौरी वल्लभ, करते हैं स्वयं बिहार जहाँ॥
जिस भक्ति-भाव में भोलेश्वर, भव-पति भगवान भुलाये हैं।
बस वही भक्ति के भाव मुझे, खींच कर यहाँ तक लाये हैं॥
कल जयद्रथ को बध करने को, अर्जुन ने प्रण कर डाला है।
इस अनुष्ठान की पूर्ति हेतु, प्रभु का पाशुपत निकाला है॥
इसलिये सिद्ध वर दे इसको, वह महा-शक्ति अक्षय करदो।
भर दो भवेश! विशाल भाव, इस सेवक को निर्भय करदो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिव बोले हैं जिस तरफ, सिद्ध-सदन घनश्याम।
वहां सिद्ध है स्वयं ही, क्या मन्त्रों का काम ॥
जा अर्जुन तू निर्भय होकर, शस्त्र की शक्ति अक्षय होगी।
माया धारी को माया से, जयद्रथ पर तेरी जय होगी ॥
वर और सिद्धि दोनों पाकर, पार्थ के साथ घनश्याम चले।
छोड़कर शिविर में अर्जुनको, फिर बाहर करुणाधाम चले॥

बैठ न पाये थे अभी, किसी जगह घनश्याम।
समर-भूमि की ओर को, खींच चला कुहराम ॥
वाचक-गण चलिये उधर, रैन-नींद बिसराय।
दुखिया माता का हृदय, जिधर रहा बिलपाय॥

गायन—चलिये वा ठांय जहां ठांय हू न दाबै शान्ति।
कांय-कांय भांय भांय भासै हर कोने हैं ॥
कोऊ कराहत कोऊ आह भर चीख देत।
लाशन के तकिये हैं लाश ही बिछौने हैं ॥
नाचत पिशाच भूत नाचत केलि तारी दै।
रक्त-कीच के उलीच खींच खात बौने हैं ॥
शूकर शृगालन में छोड़ बाल बालक कूं।
सोये हैं समारे जहाँ भारत के छौने हैं ॥

घनघोर रात संग्राम भूमि, या चिता रहित शमशान कहो।
वह भैरव का साम्राज्य कहो, या भूतों का मैदान कहो ॥
जिस जगह देश के नौ निहाल, काल के गालमें रोते हैं।
जिस जगह हिन्द के वीर रत्न, मुर्दों में मिलकर सोते हैं॥
जिस जगह रक्त की कीचड़ में, आभूषण बहते जाते हैं।
जिस जगह भूमि में पड़े हुए, राजसी मुकुट दिखलाते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस जगह पार्थ के जीनेकी, वह भंग मूर्ति दरशाती है।
जिस जगह सुभद्रा दुखियारी, बेटा—बेटा चिल्लाती है॥

खुले केश रूखा बदन, नयन-धार बे रोक।
आया अबला-वेश धर, पुत्र विरह का शोक॥

वह मूर्ति जिसे दुनियां वाले, काम का रूप बतलाते हैं।
इस जगह देखकर आंख फेर, सीधा मुँह भी न मिलाते हैं॥
कामनी किलोलें रङ्ग-भूमि, था जीवनका आधार जिन्हें।
उफ! आज घसीटे जाते हैं, यह कूकर और सियार उन्हें॥
है मन सब मनका सौदा है, यह ऊपर नीचे कुछ भी नहीं।
जीते जी की सब माया है, मरने के पीछे कुछ भी नहीं॥

धरे पुत्र को गोद में, माता रही बिसूर।
जा पहुँचा ओ लाड़ले, क्यों मैया से दूर॥

बूढ़ी माता का बल आजा, आंखों का उजियाला आजा।
जीने आजा ललना आजा, बेटा आजा लाला आजा॥
मैया तेरी बिलपाती है, क्यों तुझको दया न आती है।
ओ बेटा इतनी निठुराई, दुखिया पर धरी न जाती है॥
हा हा उन क्रूर कमीनों ने, छोड़ा न देह पर छाला है।
हा हा मेरे सुकुमार का, जलती शरीर कर डाला है॥
उफ मेरी आत्म पुकार देव, विश्व में न अबतक गूँजी है।
ओ क्रूर जगत तू क्या जाने, यह दुखियारी की पूँजी है॥
मत जान पूत तेरा साथी, कोई भी काम न आयेगा।
कोई न जाय प्रिय साथ तेरे, पर प्राण मातु का जायेगा॥

दुखी सुभद्रा यात के, लिये हुई तैयार।
किन्तु उसी क्षण सामने, पहुँचे जगदाधार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्काल बहिन का हाथ पकड़, बोले—बाई ! दीवानी है।
ऊपर इतनी मरदानी थी, भीतर इतनी नादानी है॥
तूने ही तो बातें देकर, लड़के के लिये पठाया था।
जो इतना मोह समाया था, तो नाटक व्यर्थ रचाया था॥
बिलखाकर कहा सुभद्रा ने, भैया ! ब्रजचन्द्र तुम्हीं आओ।
अपनी इस बहिन-भानजे की, माटी को हाथ लगा जाओ॥
भैया ! वह भक्त-वत्सता की, जोड़ दी कहां रजपूती है।
अपनी ही आंखों के आगे, करवा दी बहिन निपूती है॥
वीर को समर में भेजा था, तो क्षत्राणी के खाते से।
अब दुखी हृदय बिलपाता है, भैया ! माता के नाते से॥

हुआ न था पूरा अभी, दुखनी का आख्यान।
तब तक रोने की झनक, पड़ी दूसरी कान॥

देखा-करुणा की मूर्ति लिये, करुणित देवियां लखाती हैं।
उत्तरा बिलपती आती है, आलियां सँभाले आती हैं॥
चीखकर सुभद्रा बोलउठी, ओ श्याम ! उधर जाओ जाओ।
मेरी ज्यादा चिन्ता न करो, उस दुखियारी को समझाओ॥
जीते जी आंखों के आगे, बिधवा बेटी को लाओ न।
इन फूटे हुए फफोलों पर, अब राई मिर्च बढ़ाओ न॥
भैया ! भैया ओ श्याम ! श्याम, यह नाव किनारे लगवादो।
बेटी के आने से पहले, परलोक बहिन को पहुँचादो॥

भाग पड़े भगवान भी, उसे बँधा कर धीर।
किन्तु आ चुकी थी वहां, देवी पति के तीर॥

उस भरी विरह दीवानी का, मानस झनकार उठ रही थी।
मानो प्रियतम के आगे ही, वह प्रेम पुकार उठरही थी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओ तारो ! जल्दी बतलाओ, वह मेरा मानस तार कहाँ ।
ओ सजी हुई रजनी बोलो, मेरा जीवन शृङ्गार कहाँ ॥
लहराते हुए पवन कहदो, प्रिय पवन कहाँ लहराया है ।
चंचला ! बता किस अंचल में, मेरा चित-चोर छिपाया है॥
प्राणेश कहा था पहले ही, अशकुन में कदम बढ़ाओ ना ।
बिन आये नहीं मानते हो, तो मुझे छोड़कर जाओ ना ॥
यदि आज साथ में मैं होती, तो दुष्टों की क्या ताकत थी ।
लेकिन अब मैं भी समझगई,यह मेरी भी बद किस्मत थी ॥
जो जीवन निधिका जीवन में,जीवन से बचन निभा न सकी।
इसजगह साथमें जा न सकी,उस जगह साथमें जा न सकी॥
तुम नेह छोड़कर निकल गये, लेकिन मैं नेह न तोडूगी ।
तुम छोड़ छोड़कर भाग चलो, मैं पीछा कभी न छोडूगी ॥
बहिनों बिलम्बका काम नहीं, बस चिता यहीं पर बनवादो ।
पहले प्रभात से पहले ही, मुझको प्रियतम पर पहुँचादो ॥

चल सकती थी क्या वहाँ,किसी चतुरकी चाल ।
तब तक आगे पहुँचकर, बोल उठे गोपाल ॥

उत्तरा मोह में पड़ी हुई, बक झक में समय बिताती है ।
किसके साथ में सिधाती है, या किस को यहाँ बुलाती है ॥
मैं आज रात में एक जगह, क्षणभर भी बैठ न पाया हूँ ।
पर तुझको यह भी खबर नहीं, मैं कौन कहाँ से आया हूँ॥
बोली–उत्तरा जानती हूँ, लीलाधर ! लीला लाये हैं ।
बहुअर को राँड़ बना करके, यह भेष देखने आये हैं ॥
आओ मामा आओ जगपति,बेपति का भाग्य लेख जाओ ।
इस परदे वाली देवी का, यह नङ्गा बेष देख जाओ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों मामा तुम अवतारी हो, तुमको ही दीन बुलाते हैं।
क्या जगन्नाथ के आगे भी, इस तरह जुल्म हो जाते हैं॥
कृष्णचन्द्र भी रो पड़े, सके न बात बनाय।
शीश थामकर देविका, यों बोले बिलखाय॥
उत्तरा! शपथ से कहता हूँ, इस जगह न मेरा चारा था।
वह मृत-लोकका कुमर न था, वास्तव में चन्द्र दुलारा था॥
थी जितनी अवधि यहाँ उसकी, वह उसे भोगकर चलागया।
तुम कहती हो यह बुरा हुआ, मैं कहता हूँ वह भला गया॥
जो विजय न मिलने पाती है, विद्वान और बलवानों को।
वह विजय यहाँ मिल जाती है, दो एक मुख्य बलिदानोंसे॥
अभिमन्यु वीर का बध होना, वह असर यहां दिखलायेगा।
जिसके कारण भू-मण्डल पर, अपना झण्डा फहरायेगा॥
कहा उत्तरा देवि ने, मामा दीन दयाल।
दीन बहू को दो मिला, वह मेरे प्रण-पाल॥
झण्डा फहरे या आग लगे, पर चिह्न न वे विश्राम के हैं।
जब प्राण-नाथ ही चले गये, तो प्राण यहां किस कामके हैं॥
मैं यहाँ न प्रणको निभा सकी, तो यहाँ निभा दीजै मामा।
मेरी सब लाज इसी में है, अब सती करा दीजै मामा॥

❀ गायन ❀

बिना पति पत्नी का क्या काम।
यम-पुर से भी कहीं बुरा है, शान्ति-सदन सुख-धाम।
प्रेत-पिशाच समान सृष्टि है, रिपु है वंश तमाम॥बि०॥
भोग नहीं अब रोग मात्र है, आग सरिस आराम।
हृदय-नाथ के बिना हृदय को, हो क्योंकर विश्राम॥बि०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वही शान्ति है वहीं भोग है, वही वंश अभिराम।
जहां नारि के नारायण वे, राजे हैं सुख-धाम ॥वि०॥
कृष्णचन्द्र कहने लगे, कर न बहुत विस्तार।
जीवित जलने का तुझे, रहा नहीं अधिकार॥
कारण ? तू अभी स-गर्भा है, जिससे वह वज्रधारी होगा।
जो एक छत्र धारी बनकर, भारत का अधिकारी होगा॥
देवी बोली सतीत्व-कष्टक, मेरा तुम हर डालो भाया!।
तुम अवतारी हो समरथ हो, तो खण्डन कर डालो भाया!॥
कृष्णचन्द्र कहने लगे, है यह भी आसान।
लेकिन क्या टल जायगा, इससे भाग्य-विधान॥
लाखों विधान लाखों जादू, इस जगह काम में आते हैं।
फिर भी गिरते गिर जाते हैं, होने वाले हो जाते हैं॥
है बात लाज की परदे की, इससे मैं नहीं बढ़ाऊँगा।
इसका उत्तर उत्तरे! तुझे, पति के द्वारा दिलवाऊँगा॥
यों कहकर भगवान ने, देखा नभ की ओर।
प्रकट हुआ त्यों व्योम में, प्यारा पार्थ किशोर॥
बोला उत्तरे! सती होकर, क्या केशव से हठ ठानी है।
तू स्वामी मुझे समझती है, तो मेरी वहां निशानी है॥
यदि जगदाधार की आज्ञा से, कुछ भी विरुद्ध बन आयेगा।
तो याद रहे मेरा तेरा, सर्वस्व नाश हो जायेगा॥
इतना कह कर होगई, जाया अन्तर्धान।
बहिन बहू को धीर दे, घर लाये भगवान॥
पांडव-दल ही में फकत, था न आज कुहराम।
तड़फ रहे थे उस तरफ, कौरव-वीर तमाम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब जयद्रथ के कान में, पहुँचा यह संवाद।
तो पृथ्वी आकाश की, छूट गई बुनियाद॥
भीम प्रतिज्ञा पर सभी, तड़फ रहे थे वीर।
शिविर छोड़कर चल पड़ा, जयद्रथ निपट अधीर॥

है कौन देव। त्रै देवों में, जो रोके अर्जुन के पथ को।
है कौन वीर भू-मण्डल पर, जो राखे शरण जयद्रथ को॥
ओ वीर पूत अभिमन्यु कुँवर, मैंने तुझको कब मारा है।
फिर तेरे तात पार्थ भट ने, मुझ पर क्यों क्रोध उतारा है॥
ओ ओ उदार तू ही आकर, ले बचा दीन के प्राणों को।
देजा देजा ओ शान्ति वीर, कुछ शान्ति पार्थ के बाणों को॥
तूने तो जीवन दान दिया, पर पार्थ उसे ले जायेगा।
तेरा वह रहम बता दाता, क्या काम भला फिर आयेगा॥

सूझ पड़ा बस आप ही, मुझको एक उपाय।
जलजाऊँ खुद ही न क्यों अपनी चिता बनाय॥

जब निश्चय ही मरना है, तो अभी रात में क्यों न मरूँ।
अपने अनहित के साथ-साथ, बैरी का अनहित क्यों न करूँ॥
मेरे मरने से अर्जुन का, जब प्रण न पूर्ण हो पायेगा।
तब वह भी अपनी आनों पर, जीते जी ही जल जायेगा॥

जयद्रथ की होने लगी, वहीं चिता तैयार।
द्रोण कर्ण के साथ में, पहुँचा अन्ध-कुमार॥

जयद्रथ का हाथ पकड़ करके, बोला भटवर क्या करते हो।
दुश्मन के मरने से पहले, क्या बिना मौत के मरते हो॥
जयद्रथ बोला गुरुवर प्रणाम, आ पहुँचा काल जयद्रथ का।
राजन् तुम नहीं समझते हो, क्या होगा हाल जयद्रथ का॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब साथ नहीं दे सकते हो, अवनीश-फणीश जयद्रथ का।
होगा तो होगा पार्थ बाण, या होगा शीश जयद्रथ का॥
इस कारण मेरा निश्चय है, खुद ही जीवन देता जाऊँ।
जब दुनियां से जाता ही हूँ, तो दुश्मन भी लेता जाऊँ॥
कुरु-पति बोला घबराहट में, गुरुवर! जयद्रथ बलधारी है।
है इसे निराशा जीवन से, अब केवल शरण तुम्हारी है॥
कल ही की तरह आज कोई, प्रण करके आन निभाना है।
भगवन अर्जुन के बाणों से, जयद्रथ का प्राण बचाना है॥

कहा द्रोण ने भूप हूँ, रक्षा को तैयार।
चल न सकेगा किन्तु अब, मुझसे प्रण का भार॥

कल शकट व्यूह रचना करके, जयद्रथ के प्राण बचाऊँगा।
पर यह न कभी कह सकता हूँ, अर्जुन को मार गिराऊँगा॥
सन्ध्या तक जयद्रथ अर्जुन का, सामना न होने पायेगा।
तो मैं विश्वास दिलाता हूँ, यह कभी न मारा जायेगा॥

उथल पुथल में इस तरह, बीत गई वह रात।
जगत किलोलों के लिये, होने लगा प्रभात॥
किया द्रोण गुरु ने वहाँ, शकट व्यूह तैयार।
यहाँ कृष्ण के साथ में, गमने इन्द्र कुमार॥
शकट व्यूह की ओर को, बढ़ने लगे सुधीर।
किन्तु द्रोण ने रोककर, कहा ठहर प्रण वीर॥

जिससे जयद्रथ को मारेगा, वह शक्ति यहाँ दिखलायेजा।
इस दल में जाने से पहले, गुरु के ऋण को भुगतायेजा॥
पार्थ ने बाण से कर प्रणाम, यह कहा तुम्हारा ही बल है।
आजकी विजय आजकोशक्ति, नाथकी कृपाही का फल है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप की शक्ति पर ही भगवन्, बेटा कर दिया निछावर है।
इन चरणों में चढ़ जाने को, अब दास पार्थ भी हाजिर है॥
गुरुदेव स्वयं मैं हाजिर था, प्रभु का वह क्रोध बुझाने को।
क्यों दया-धाम! क्या बचा यही, पाया बलिदान चढ़ाने को॥

द्विजवर बोला धीर वर!, बातों से मत मार।
मेरे अत्याचार का, साक्षी है करतार॥

हा हा! बेटा! क्या उत्तर दूं मुँह भी न दिखाया जाता है।
हे वीर न लज्जित करो बहुत, यह बूढ़ा हा हा खाता है॥
बलवीर तुझे सौगन्ध मेरी, यम-पुर की सी फरियाद किया।
पर उस सुकुमार सलौने की, इस पापी को मत याद दिला॥

उसी जगह चलने लगे, गुरु चेले के बाण।
पर न काम दिखलासकी, द्विज द्रोण की कमान॥

कुछ उलटे-सीधे बाणों से, अटकान पार्थ को दिये रहे।
बाजू को ऊँचा रख कर भी, नजरों को नीचा किये रहे॥
आप ही आप फिर बोल उठे, मत ठहर पार्थ! बेकार यहां।
धन्वा सँभाल कर देख-भाल, तेरा है आज शिकार जहाँ॥

अस्तु पार्थ को छोड़कर, लौट गये द्विज वीर।
तब तक आया सामने, दुर्योधन रण धीर॥

बोला भट! किसे खोजता है, क्या कोई हितू हिराया है?।
या मृतक पुत्र के लाशे पर, अब पानी देने आया है?॥
अच्छा हो यदि साथ साथ, बाप के प्राण भी पहुँचायें।
साथ ही साथ हो जाय गमी, साथ ही चितायें बनजायें॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पार्थ ने कहा रे बाल-बधिक, आगे बढ़ तीर बराबर कर।
आप ही आप मरजायेगा, जो आजायेगा निशाने पर ॥
मैं ढूंढ रहा हूँ जयद्रथ को, तुझसे युद्ध का विचार नहीं।
हे दावादार दूसरा ही, तू मेरा आज शिकार नहीं ॥
फिर भी बढ़ बल धर तीर चढ़ा, मैं भी समता को तत्पर हूँ।
जो भी आगे लड़ने आये, उससे लड़ने को हाजिर हूँ ॥

एक दूसरे पर हुआ, जब बाणों का वार।
तब माधवको छोड़ कर, लौटा अन्ध-कुमार ॥
अपने काबू भर किये, लाख पार्थ ने वार।
शकट व्यूह में पर कहीं, छिपा रहा मक्कार ॥

उस ओर व्योम ने रङ्ग बदल, सन्ध्या की रङ्गत प्रकटा दी।
सूर्य की चमकती किरणोंपर, काली चादर सी फैलादी ॥
फिरक्याथा सबकौरव दलने, खुल कर जय जयकार किये।
इस ओर पार्थने मुरझा कर, हाथसे डाल हथियार दिये ॥

बन्द युद्ध भी होगया, शङ्ख-नाद के साथ।
रथ लौटा कर शिविरको, लौट पड़े यदुनाथ ॥
पर चलकर कुछ दूर ही, यों बोले प्रण-पाल।
इसी जगह अब यान को, ठहरा दो गोपाल ॥

कृष्णने कहा क्यों कहते हो, राह में यान ठहराने को।
अर्जुन बोले क्या और चलूँ, यह हारा मुँह दिखलानेको ॥
जब पहला प्रण पूरा न हुआ, तो वचन दूसरा पालूंगा।
ले सका न प्राण जयद्रथ के, तो स्वयं प्राण दे डालूंगा ॥

यों कहकर रथसे उतर,ली यक चिता बनाय।
किन्तु बीचमें बिहँसकर, बोल उठे यदुराय ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्जुन ! ठहरो, जल्दी क्या है, इस समय हुई सन्ध्या ही है।
उस क्षणको दिनभर बाकी था, इस क्षण को रजनी बाकी है॥
पार्थने कहा बाकी कैसी, अब तो रजनी यह जीवन है।
सारी करतूत अँधेरी है, हाँ कुछ प्रकाश अपना क्षण है॥
तुमसा सहाय होनेपर भी, जब जयकी हुई तमीज नहीं।
सब समझ पड़ा है भाग्य प्रबल, पुरुषारथ कोई चीज नहीं॥
जो हुआ खेर अब अच्छा है, रोने में क्या कुशलाई है।
क्यों कहूँ बुराई मरने को, इसमें भी कहीं भलाई है॥

आओ हिल-मिलकर गले, मिलो गिरगोपाल।
नहीं मिलेगा फिर कभी, यह जातीका साल॥

इस पापीने कठोर बनकर, केशव से रथ हँकवाया है।
बस उसी पापके बदले में, यह प्रायश्चित ठहराया है॥
मेरे कृपालु ! मेरे मोहक, वह अवगुण मत मन में धरियो।
इसनीच अजान अनाड़ीको, अब मरते समय क्षमा करियो॥
उस सखा भावमें कही हुई, बातों पर नाथ ! रिसैयो ना।
पछतावो जो पछताना हो, मेरे पीछे पछतैयो ना॥
तुम लीलाधर कहलाते हो, यह लीला सभी तुम्हारी है।
इसलिये आखिरी घड़ियोंमें, इतनी याचना हमारी है॥

जिस प्रकार रण पूर्तिमें, गये यहाँ मुँह मोड़।
त्योंही वैतरणी निकट, दीजो हाथ न छोड़॥

कह दीजो पाण्डव लोगों से, है यही समय बलिदानों का।
यदि धर्म-युद्धमें आये हैं, तो लायें मोह न प्राणों का॥
यातो शत्रु को मिटाकरके, भारत आजाद बना जायें।
या जय भारत कहते-कहते, अपना बलिदान चढ़ा जायें॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं भी मरने के बाद अभी, सुर-पुरमें बैठ न जाऊँगा।
इन क्रूर कौरवों से फिर भी, बदला लेने को आऊँगा॥
अपनी चाल में चलाकर के, चल जाना है सुख-धाम तुम्हें।
हे नट नागर! अब बरजाओ, है अन्तिम बार प्रणाम तुम्हें॥

यहाँ कह रहे इसतरह, अर्जुन सहित विषाद।
आया दल लेकर वहाँ, कौरवेश साह्लाद॥

बोला बस अब खतरा क्या है, तुमको रिपु सता न सकता है।
अब पार्थ तुम्हें क्या मारेगा, धन्वा भी उठा न सकता है॥
भाई जयद्रथ निर्भीक चलो, अब अर्जुन का जलना देखें।
जो क्षण-क्षण चाल चलाताथा, उस चंचलका चलना देखें॥

यों कह कर जयद्रथ-सहित, गया पार्थ के तीर।
दुर्योधन कहने लगा, क्या विलम्ब है? वीर॥

नादान पार्थ! इस कालेको, समझा तूने उजियाला है।
यह जितना ऊपर काला है, उतना ही भीतर काला है॥
इसने छलबलसे छल बल करके, जिस जिसको भी अपनाया है।
उसको सिखला-फुसला करके, सब मटिया मेट मिटाया है॥
क्या जाने कितनी आत्मायें, इसके दागों को धोती हैं।
ब्रज वाले अब तक कोस रहे, गोपियाँ आज तक रोती हैं॥
मर गये हजारों मर-मर कर, यहमरा आजतक मुआ नहीं।
लाखों को सगा बना डाला, पर सगा किसीका हुआ नहीं॥

लपटा जाता है आज भी, तू इससे नादान।
अरे मूढ़! तज मूढ़को, कर अगला सामान॥

अर्जुन बोले अंध सुत, बस न बढ़े अब बात।
वरना मेरी शाम है, तेरी आधी रात॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तोड़ूँगा आन इष्ट प्रभु पर, अपने हित वचन न तोड़ूंगा ।
छोड़ूंगा शत्रु जयद्रथ को, पर तुझे न जीता छोड़ूंगा ॥
अंधे कुरु-पति क्या पता तुझे, इस तनमें छिपा तत्व क्या है ।
गूदड़ में लाल कौनसा है ?, एवं इसका महत्व क्या है ? ॥
जा भैया अपना करतब कर, मुझको भी करतब करने दे ।
हो चुकी शान्ति तेरे जी को, अब मुझे शांति से मरने दे ॥

कौरव-दल भट पार्थ को, खिल्ली रहा उड़ाय ।
एक ओर माधव खड़े, रहे मन्द मुसकाय ॥

जयद्रथ बोला माधव तुम तो, अवतारी माने जाते हो ।
फिर भक्त वत्स कहला कर भी, अपने भक्त को रुलाते हो ॥
या मित्र रूप में पूरब का, कुछ बदला लेने आये हो ? ।
या मरने वाले के पीछे, कुछ अञ्जलि देने आये हो ? ॥
लीला धारी ! कैसे चुप हो ? दिन है लीला दिखलाने का ।
जन-मन रञ्जन क्या सोच रहे, अवसर है आन निभाने का ॥
प्रभु बोले यही सोचता हूँ दोनों के प्राण हरूं न हरूं ।
तेरा बलिदान कराने में, कुछ और बिलम्ब करूं न करूं ॥
पर जब तू ही जल्दी करके, मुझको वह याद दिलाता है ।
तो जा यम-पुर जाने वाले, इसमें मेरा क्या जाता है ? ॥
अर्जुन क्या रुदन मचाता है, वह देख सूर्य दिखलाता है ।
दुश्मन को आगे पाकर भी, धन्वा क्यों नहीं उठाता है ॥

इन शब्दों के साथ ही, बदल गया आकाश ।
बदली रही न नाम को, छाया स्वच्छ प्रकाश ॥

बदली की रङ्गत बदल गई, सूरज मुसका कर चमक उठा ।
जयद्रथ दुर्योधन कांप उठे, अर्जुन का बाजू तमक उठा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ उछल पिघलके साथ-साथ, जीवन जुड़ गया जयद्रथका।
अर्जुन के एक बाण ही से, माथा उड़ गया जयद्रथ का॥
सुरथ जयद्रथ का पिता, एक सरित के तीर।
विजय-मन्त्र में लीन था, भर अञ्जलि में नीर॥
यहीं हाथ में सुरथ के, टपक पड़ा वह माथ।
पिता पुत्र की मृत्यु यों, हुई साथ ही साथ॥
कारण था शाप सुरथ को यह, जब सुत का सिर तू पायेगा।
फिर उसे भूमि पर फेंकेगा, तो तू भी मारा जायेगा॥
संयोग वही आ पहुँचा था, रुक गये द्वार उस पथ के भी।
वह शीश हाथ से गिरते ही, टुकड़े उड़ गये सुरथ के भी॥
पृथिवी, पर आकाश पर, छाया जय जय कार।
कह "विनीत" आनन्द से, जय जय जगदाधार॥

❀ गायन ❀

तुम्हारे खेल में किस-किस के इशारे न हुए।
न हुए नाथ! तो यक हम ही तुम्हारे न हुए॥
हुए न वे तुम्हें प्यारे कभी जीवन भर में।
जो जीवन में कभी हिन्द के प्यारे न हुए॥
स्वर्ग में नर्क में भू-खोड़ या रसातल में।
कौन है? जिसके लिये, कृष्ण सहारे न हुए॥
"विनीत" भज के भी भक्ति न की मोहन की।
फिर भी कहते हो कि घनश्याम हमारे न हुए॥

❀ शुभमस्तु ❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ द्रुपद-वध ॥

यद्यपि कुरुपति ने लिये, बचा भागकर प्राण ।
पर मरने से भी कहीं, दुःख कलेश महान ॥
चरण पकड़कर द्रोणके, रोया अन्ध कुमार ।
चली नाव मँझधार में, ओ मेरे पतवार ॥
जयद्रथ वध भी होगया, दोषी हुए न आप ।
खेत गधों ने चर लिया, पुरुष कहें या पाप ॥
भगवन् अबभी सीधी कहदो, आगे क्या होनी होनी है ।
कुछ पाने की आशा भी है, या लुटिया यहीं डुबोनी है ॥
गुरु बोले राजन् ! तेरे हो, कहने पर चलता जाता हूँ ।
क्या करूं ? मगर लीलाधर की, लीला से पार न पाता हूँ ॥
केवल बलपर बल चलता है, क्यों ? बलसे बलका जोड़ा है ।
पर ब्रह्म रूप अपने बलपर, जो कर बायें सो थोड़ा है ॥
दलसे दल को रोके रहना, नरका बल है या हिकमत है ।
हर सूर्य छिपाकर प्रगटाना, बोलो यह किसकी ताकत है ॥
क्या होनी होने वाली है, यह प्रश्न न मुँहपर आने दो ।
जो आगे है उसको देखो, जो गुजर गई सो जाने दो ॥
क्या है समझे हो है फकत, तुमको ही संताप ।
जला जा रहा है यहाँ, हृदय आपही आप ॥
इतना प्रयत्न करने परभी, जयद्रथका जीवन रह न सका ।
इसके मानी यह होते हैं, खुद मेराही प्रण रह न सका ॥
भोजन पानी की याद नहीं, निद्रा हो गई हराम मुझे ।
धन्वे पर हाथ जारहा है, दिखलाता है संग्राम मुझे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहदो मेरी ओर से, आयें वीर तमाम।
आज रात में ही यहां, होना है संग्राम॥
शङ्खनाद से सूचना, फैल गई चहुँ ओर।
अपने अपने दांव पर, जा पहुँचे शहजोर॥

हर रथपर और सवारी पर, मणियों की सी डजियाली है।
तारे पृथ्वी पर लिटके हैं, या चलती हुई दिवाली है॥
भुज बंद मुकुट ऊपर उड़कर, नीचे की तरफ आ रहे हैं।
मानों तारागण टूट टूट, भूतल पर गिरे जा रहे हैं॥
यों ही घनघोर अंधेरी है, फिर दल बल उमड़ा आता है।
जिसके मारे सारा प्रकाश, जुगनू की तरह दिखाता है॥

यहां काट पर थे जुझट, काट छांट के साथ।
वहां द्रोण के सामने, गये पार्थ यदु—नाथ॥

अन्दाज और अटकल ही से, दोनों हथियार चलाने लगे।
या यों समझो शोकका जोश, मदहोश में जतलाने लगे॥
दो चार वार करके अर्जुन, सेना की ओर निकल आये।
द्रोणके साथ दश पाँच हाथ, फिर द्रुपद राज ने दिखलाये॥
हर एक हाथके पड़ते ही, नृपका शरीर तक फिसल गया।
हाथ तो सँभाले हाथ रहा, पर माथ हाथसे निकल गया॥

लड़ता हूँ किस वीर से, था न द्रोणको ज्ञान।
पर गिरते ही द्रुपद के, हुई इन्हें पहिचान॥

बस क्या था? एक चीखमारी, हा! मित्र! मित्र चिल्लानेलगे।
करदिया वहीं से युद्ध बंद, मुर्दे को कंठ लगाने लगे॥
दुर्योधन बोला महाराज, कुछ लीला अजब रचाते हो।
पहिले धर मार मचाते हो, पीछे हा! हा! चिल्लाते हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह शत्रु-पक्ष का प्रथम मित्र, मारकर रुलाई आई है।
कुछ नहीं समझ में आता है, क्या असली लगन समाई है॥

कहा द्रोणने क्या तुम्हें, लगन किसी की ज्ञात।
घायल के दिल से सुनो, घायल दिल की बात॥

तुम दुश्मन जिसे समझते हो, वह असली मित्र हमारा था।
राजा किरात ने एक बार, इसको तख्त से उतारा था॥
मैंने ज्यों-त्यों यत्न से इसे, सिंहासन पर बिठलाया था।
फिर ईश्वर को साक्षी देकर, जीवन का मित्र बनाया था॥
उफ स्वारथ की बलवेदी पर, किस-किस का रक्त चढ़ाना है।
हे भगवन् इस हत्यारे का, क्या पड़ना कहीं ठिकाना है?॥

दुर्योधन कहने लगा, तुम हो ज्ञान निवास।
रवि के आगे क्या करूँ, फिर दीपक प्रकाश॥

जब एक आन का ऋण लेकर, हम लोगों ने रण ठाना है।
तो एक मित्र क्या लाखों का, यों ही बलिदान चढ़ाना है॥
भाई को भाई मारेंगे, मित्र से मित्र मर जायेंगे।
भगवन् बोलो हम क्षण २ पर, किसको किसको बिलखायेंगे॥
आप ही मुझे समझाते थे, होनी का प्रश्न न आने दो।
जो आगे है उसको देखो, जो गुजर गई सो जाने दो॥

द्रोण भूप के साथ में, गमने सहित विषाद।
यहाँ द्रौपदी ने सुना, वह दारुण सम्वाद॥
उलट द्रौपदी भी गिरी, एक आह के साथ॥
किन्तु भीम कहने लगे, वहीं पकड़कर हाथ।
तुम वीर प्रिया कहलाकर भी, यह कायरता दिखलाती हो।
दल को उत्साह दिलाती हो, या उलटा हमें रुलाती हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उफ ! एक जरा से झोंके में, वह वीर प्रतिज्ञा भूल गई ।
दुःशासन के रक्त से प्रिये, क्या वेणी धोना भूल गई ॥
जो भारत के रण-मण्डल में, हो रहा आज संहारण है ।
पांचाली ! तुमको पता नहीं, वह सभी तुम्हारे कारण है ॥
यह दौड़-धूप यह खुं-खबर, तुम पर निर्भर कहलाता है ।
इसलिये समर में पहुँचा कर, अब रोना नहीं सुहाता है ॥

भीम द्रोपदी को यहाँ, रहे बँधाते धीर ।
कुरु-पति ने जाकर वहाँ, कहा द्रोण के तीर ॥

गुरुवर कोई ऐसा बल दो, जो आज पार्थ पर जय पाये ।
वह लाख कोशिशें किया करे, पर मुझपर असर न दिखलाये ॥
द्रोण ने वीर दुर्योधन को, नारायण कवच प्रदान किया ।
फिर राम कवच पहिना कहके, मङ्गल-कारी वर-दान दिया ॥

हुआ पार्थ-कुरुराज का, महा-घोर संग्राम ।
उस दिन अर्जुन-शक्ति ने, दिया न कोई काम ॥

बन गई प्रत्यंचा धनुषे की, पड़ गई खरास अङ्गुलियों में ।
पर एक तीर भी छिद न सका, कौरव राजकी पसलियों में ॥
अर्जुन का तरकश तीर चला, पर बस न चला दुर्योधन पर ।
चल सकी किसी भी भटवर की, कोई न कला दुर्योधन पर ॥

अर्जुन ने प्रभु से कहा, यह क्या है घनश्याम ।
एक बाण भी तो यहां, नहीं दे रहा काम ॥

कृष्ण ने कहा ऐसा ही है, वह राम-कवच धर आया है ।
यह बाण व्यर्थ हो जाने में, केवल इसकी ही माया है ॥
इसलिये इसे छोड़ो अर्जुन !, इसके घोड़ों पर वार करो ।
इसका सारथी मार डालो, फिर घोड़ों का संहार करो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज्ञा पाकर पार्थ ने, दिया सारथी मार।
फिर घोड़े संहार कर, भरी एक हुँकार॥

हुँकार मात्र के सुनते ही, दिल कांप उठा दुर्योधन का।
उस एक हांककी धाक देख, बल निकल गया योधापन का॥
दुर्योधन की वह दशा देख, आचार्य द्रोण आगे आये।
गुरु पर चेले के बाणों ने, बढ़ चढ़कर जौहर दिखलाये॥
सारथी मार रथ तोड़-ताड़, घोड़ों का जोड़ा फोड़ दिया।
उस ओर भीमने जोड़-जोड़, मुँह जोरों का मुँह मोड़ दिया॥

शङ्ख नाद के साथ फिर, युद्ध हो गया बन्द।
कहा धर्म ने रात में, हे हे यादव—चन्द॥

अभिमन्यु सरीखे वीरों का, रण में बलिदान चढ़ाया है।
चौदहदिन जान खपाकर भी, गुरुवर को जीत न पाया है॥
प्रभु बिना नहीं कुछ भी होगा, चाहे जग भी सहाय होगा।
दादा के लिये जतन वह था, गुरुवर को क्या उपाय होगा॥

कृष्णचन्द्र कहने लगे, करो न सोच नृपाल।
कल द्विज द्रोणाचार्य का, है बस अन्तिम काल॥

कल भीम और अश्वत्थामा, अपनी शक्तियां दिखायेंगे।
उस समय जरूरत जो होगी, वह हम भी करते जायेंगे॥

* कर्ण बध *

फिर सुबह हुआ धौंसा बाजा, दल उमड़ उठा बलवानों का।
आ गये वितान रण स्थल में, बाणों का और कृपाणों का॥
पैदल पर पैदल टूट पड़े, असवारों पर असवार चले।
कुछ मार चले कुछ हार चले, कुछ द्वारों का संहार चले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्रोण के साथ फिर पार्थ वीर, अपने जौहर दिखलाते हैं।
या गुरुवर अपने चेले को, आखिरी कला सिखलाते हैं॥
दो-चार हाथ बढ़ जाते हैं, दो-चार हाथ खिंच आते हैं।
आप ही आप कुछ चलते हैं, आप ही आप रुक जाते हैं॥

अश्वत्थामा भी भिड़ा, वहाँ भीम के साथ।
लगे दिखाने उभड़-खर, एक एक पर हाथ॥

"द्रोणी" विख्यात वीर ही था, भीम पर धर्म-दल निर्भर था।
या यों कहिये भारत भर में, दोनों का जोड़ बराबर था॥
द्रोण ने ऐसा वार किया, भीम के न होश ठिकाने थे।
भीम की चोट से चकराकर, द्रोणी के बाहू थकाने थे॥
उस समय एक ही साथ वहाँ, माया मय काम हो रहा था।
कृतवर्मा का पार्थ के साथ, डटकर संग्राम हो रहा था॥

अश्वत्थामा नाम का, नामी एक मतङ्ग।
लड़ने आया था वहाँ, कृतवर्मा के सङ्ग॥

जिस समय पार्थ ने बाण मार, उस हाथी का संहार किया।
बस उसी समय द्रोणी का रथ, भीम ने उठाकर फेंक दिया॥
रथ टूट गया सारथी मरा, घोड़े घुट कर दम तोड़ गये।
इन दोनों ही के जोड़ तोड़, गुरुवर की किस्मत फोड़ गये॥
नौ सौ कोस पर पड़ा रथ था, पर अश्वत्थामा मरा न था।
इतना विक्रम कर डाला था, पर हृदय भीम का मरा न था॥
अश्वत्थामा तर गया फकत, इतना चरचा हर मुँह पर था।
पर यह न किसी को ज़ाहिर था, वह नर था अथवा कुञ्जर था॥

अश्वत्थामा मरण का, चलने लगा प्रसङ्ग।
पर न किसी को ज्ञात था, कृष्णचन्द्र का रङ्ग॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धीरे-धीरे द्रोण तक, पहुँचा यह सम्वाद।
असमंजस में युद्ध का, उतर गया अह्लाद॥
द्रोण ने दौड़ कर लोगों से, पूछा क्या शोर मचाया है।
लोगों ने कहा भीम भट ने, द्रोणी को मार गिराया है॥
इस चरचा पर इस कारण से, विश्वास हमें भी आता है।
कुछ क्षण से कौरव सेना में, वह वीर नहीं दिखलाता है॥

अर्जुन से भी द्रोण ने, जाकर किया सवाल।
कहा पार्थ ने विप्र वर, है यह सच्चा हाल॥
जिस समय हमारी समता पर, कृतवर्मा भट तैयार हुआ।
बस उसी समय रणमण्डल में, अश्वत्थामा संहार हुआ॥
भीम से द्रोण ने प्रश्न किया, तो यों उत्तर पाया है।
हाँ मैंने अश्वत्थामा को, सेना से फेंक गिराया है॥

कहा द्रोण ने कृष्ण से, तो बोले गोपाल।
अश्वत्थामा हाल ही, गया काल के गाल॥
गुरु बोले तुम हो भक्त-वश्य, भक्तों का पक्ष निभाओगे।
भक्त से विपक्षी लोगों को, असली भेद न बतलाओगे॥
ज्योतिष से साबित होता है, वह वीर नहीं मर सकता है।
इसलिये हृदय मेरा इस पर, विश्वास नहीं कर सकता है॥
रण में गोपाल तुम्हारा भी, कहना न सत्य मैं मानूंगा।
हां धर्मराज जो कहदेंगे, उसको बिलकुल सच जानूंगा॥
धर्म के सत्य पर ही सारी, इस दलकी नैया ठहरी है।
अन्यथा भँवर का चक्कर है, यह धार नदी की गहरी है॥
वे सत्य-मूर्ति सब देकर भी, मुँह से न असत्य उचारेंगे।
मिट जाय धर्म पर देह गेह, हर कभी न पाप विचारेंगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यों कहकर बढ़ने लगे, धर्मराज की ओर।
पर गुरुवर से भी प्रथम, पहुँचे नन्दकिशोर॥
बोले नृपाल! द्रोण के लिये, सामान सभी तैयार हुआ।
केवल उनसे इतना कह दो, अश्वत्थामा संहार हुआ॥
धर्म ने कहा राज्य की जगह, फांसी पर पहुँचाओ मोहन।
पर सेवक से मरते-मरते, कुछ झूंठ न कहलाओ मोहन॥
नीच से नीच सेवा को, हाजिर यह देह हमारी है।
पर झूठ बोलने से स्वामी, इस सेवक की लाचारी है॥

❀ गायन ❀

प्राण ले लो पर मुझे धर्म से टालो न प्रभो।
यहाँ वहाँ से मुझे आज निकालो न प्रभो॥
यही है अस्त्र जो हर वक्त काम देता है।
जरासे स्वार्थमें इसको भी बिना लो न प्रभो॥
डाल दो नर्क में इन्कार न होगा मोहन।
सत्य के मार्ग से नीचे मुझे डालो न प्रभो॥

कृष्ण ने कहा हे धर्मवान्, मैं झूठ नहीं बुलवाता हूँ।
जो असली किस्सा गुजरा है, उतना ही तो कहलाता हूँ॥
धर्म ने कहा अश्वत्थामा, सच यह है आज गया मर है।
लेकिन मुझको यह पता नहीं, वह नर है अथवा कुञ्जर है॥
कृष्ण ने कहा बस यही शब्द, द्रोण के सामने दोहरा दो।
मैं तुम से यह कब कहता हूँ, तुम सत्य मार्ग को बिसरा दो॥

सत्य मूर्ति ने वह वचन, दिये वहीं दुहराय।
अन्तिम-पद पर कृष्ण ने, दिया शंख बजवाय॥

अश्वत्थामा का मरण-मात्र, द्रोण के कान तक आया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकाश-मार्ग से ऋषियों ने, द्विजको उपदेश सुनाया है॥
हे द्रोण! विप्र-कुल में होकर, पापी का साथ कर रहे हो।
ओ गायत्री के परम भक्त, क्यों खूनी हाथ कर रहे हो॥
यदि क्षत्रिय की नाईं लड़कर, इस रण में मारे जाओगे।
तो याद रहे-ऋषि-मण्डल में, हरगिज़ स्थान न पाओगे॥

यह सुनकर द्विज द्रोण ने, छोड़ दिये हथियार।
ध्यान धार गोविन्द का, बैठ गये मन मार॥

राजा विराट ने उसी समय, द्रोण पर बाण प्रहार किया।
द्रोण ने वहीं धन्वा सँभाल, बाण से उन्हें संहार किया॥
अब तो ऋषियोंने और अधिक, चीखकर कहा धिक्कार उन्हें।
सारांश सभी ने हिल-मिलकर कर डाला लाचार उन्हें॥
द्रोण ने अन्त में यही कहा, ऋषियो मेरा कुछ दोष नहीं।
यह क्षत्रियता का जोश कभी, रह सकता है खामोश नहीं॥
वीरों की वीर-हाँक सुनकर, वीरत्व मौन क्यों कर होगा।
मेरी करनी का अन्तिम फल, इन केशव पर निर्भर होगा॥

हाजिर है सेना सभी, सुनते हैं सरदार।
उतर चुके हैं अब यहां, हृद-वीणा के तार॥

यह तार ब्रह्म का तार धार, ओंकार रूप में आते हैं।
भीष्म की भांति टूटे दिल के, कुछ बोल सुनाये जाते हैं॥
यह मन मोहन के हाथों से, माया पट-परिवर्त्तन है।
भारत भारत ही मत समझो, भारत भारत का लक्षण है॥
चार ही रोज में लड़-भिड़कर, सब योधा मारे जायेंगे।
इस वीर भूमि के जमघट में, चीलें कौवे मड़रायेंगे॥
होगा अधिकार युधिष्ठिर का, कौरव दल मारा जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वापर का वहीं अन्त होगा, कलियुग प्रभाव दिखायेगा ॥
इसलिये इसे भावी समझो, कर्त्ता कारण इनको मानो।
इस ओर रहो उस ओर रहो, पर केशव को अपना मानो॥
माधव! इस बूढ़े ब्राह्मणकी, अब करणी को बिसरा दीजो।
जो दया वहाँ आ जाये तो, वैतरणी पार लगा दीजो॥
वीरो! वीरता बहुत करली, अब बूढ़े को विश्राम कहो।
भारत माता! अन्तिम प्रणाम, सब मिलकर राधेश्याम कहो॥

कहते कहते इस तरह, साध समाधि—अखण्ड।
प्रणाम—वायु गुरु द्रोणका, फोड़ गया ब्रह्मण्ड॥

था उन्हें शाप जब पुत्र मरण, तुमको सुनने में आयेगा।
तो उसी समय उस दुःख ही में, प्राण का अन्त हो जायेगा॥

❀ इति ❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

❋ महाभारत ❋

॥ कर्ण-पर्व ॥

❋ प्रार्थना ❋

घड़ी वह कब होगी ? घनश्याम ! !
हमें भी जब होगा विश्राम ॥
हो जाती है यह हाय-हाय में, यहाँ सुबह शाम ।
याद नहीं आता है क्षण भर, नाथ ! तुम्हारा नाम ॥
घड़ी वह कब होगी ? घनश्याम ॥
अन्न-वस्त्र की चिन्ता ही में, जीवन हुआ तमाम ।
तुम्हीं बताओ करें ? किस समय, परमारथ का काम ॥
घड़ी वह कब होगी ? घनश्याम ॥
भाग्य और पुरुषार्थ अस्त्र हैं, है जीवन—संग्राम ।
पर न पता है-कौन ? किस समय, क्या करता है काम ॥
घड़ी वह कब होगी ? घनश्याम ॥
शोक मोह द्विविधा, द्वन्द्वों में, है "विनीत" बदनाम ।
क्यों कर है सुख-धाम ! करोगे ? इसका शुभ परिणाम॥
घड़ी वह कब होगी ? घनश्याम !
हमें भी जब होगा विश्राम ॥

❋ कर्ण-वध ❋

अश्वत्थामा को वहाँ, आया अपना होश ।
सोचनका सा कुछ समय, पड़ा रहा खामोश ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर उठकर करने लगा, महादेव का ध्यान।
प्रकट हुए तत्काल ही, आशुतोष भगवान॥

द्रोणी बोला हे दया धाम, मुझको भीम ने उड़ाया है।
मालूम नहीं मेरे पीछे, उसने क्या जाल रचाया है॥
इसलिये जहाँ तक जल्दी हो, सैन्य में मुझे पहुँचा दीजे।
मैं बिना यान के पहुँच सकूँ, इतनी ही देव दया कीजे॥

शक्ति-सिन्धु न सैन्य में, दिया उसे पहुँचाय।
दुर्योधन रोने लगा, द्रोणी से लिपटाय॥

भैया! भैया! हो गया नाश, क्षणभर न तुम्हारे रहने से।
आचार्य देह को छोड़ गये, उस धर्मराज के कहने से॥
कृष्ण ने तुम्हारे मरने का, दल भर में शोर मचाया है।
एवं उस नीच युधिष्ठिर ने, गुरु को विश्वास दिलाया है॥
बस उसी शोक में गुरुवर ने, अपने प्राणों को त्याग दिया।
हम दीनों से मुँह मोड़ लिया, सेना का बाजू तोड़ दिया॥
इससे भी घोर—पाप पापी, धृष्टद्युम्न ने विचारा है।
योगस्थ विप्र पर वार किया, नीच ने मरे को मारा है॥

अश्वत्थामा क्रोध में, लेने लगा उबाल।
बोला पछताओ नहीं, समझ गया हूँ चाल॥

मैं समझा था यह धर्मराज, पर असल धर्म अवतारी है।
मालूम हुआ वह छलिया है, झूठा है अत्याचारी है॥
वह बगुला भगत दिखाने को, धर्म की ध्वजा फहराता है।
लेकिन खल भीतर ही भीतर, दुनियाँ में विष फैलाता है॥
ओ ठेकेदार सत्य व्रत के, खुल गई आज सब करणी है।
पापी! हाथ में सुमरनी है, लेकिन पेट में कतरनी है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस धृष्टद्युम्न का जो रण में, कर डालूं काम तमाम नहीं।
तो शपथ पिता की करता हूँ, द्रोणी मेरा नाम नहीं॥

जबतक धृष्टद्युम्नका, करूं न रण में काम तमाम।
पूज्य पिता का तब तलक, तर्पण मुझे हराम॥
कर्ण वीर को दो नृपति, सेना पति का भार।
इस जलमग्न की नाव को, वही करेगा पार॥
द्रोणी की वह राय भी, की सबने स्वीकार।
तीन दिवस का कर्ण को, मिला सैन्य का भार॥
उसी समय कुरुराज ने, दिया कर्ण को ताज।
कहा सँभालो वीर वर, कौरव-दल की लाज॥

कर्ण ने कहा हे महाराज !, सर्वदा सलामत ताज रहे।
दोनों की लाज इसी में है, जो अपने प्रण की लाज रहे॥
इस मान और पद के अन्दर, नर की श्वांसों का तांता है।
काल का गाल है जन्म भूमि, मीत से सखी का नाता है॥
जितना होगा जैसे होगा, यह सेवा भार उठाऊँगा।
अपना सरबस दे डालूंगा, कुरु-दल की आन निभाऊँगा॥

पर है मेरे सामने, एक बड़ी अटकान।
नहीं कृष्ण की भांति है, चतुर योग्य रथवान॥

कृष्णकी भांति यदि मुझको भी, कोई सुयोग्य रथवान मिले।
भूमि पर लोटता तो कलको, वह अर्जुन सा बलवान मिले॥
शकुनी बोला यह काम फकत, शल्य वीर से ले सकते हैं।
यदि यत्न करें तो क्षणभर में, कृष्ण को मात दे सकते हैं॥
शल्य ने कहा क्या कहते हो ?, पद धारूं ताबेदारी का।
नौकरी करे नृप नौकर की, रथ हांके भूप भिखारी का॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन बोला मामाजी, इस ओर तुम्हीं गुण सागर हो।
सच पूछो तो सेना भर में, तुम ही कृष्ण के बराबर हो॥
इस ओर कृष्ण की तरह तात, हम माने हैं पतवार तुम्हें।
अब पार करो या ले डूबो, यह सारा है अधिकार तुम्हें॥

दुर्योधन की विनय पर, बदल गया यह भाव।
शल्य वीर ने नृपति का, मान लिया प्रस्ताव॥

सोचा कर्ण ने मारने को, धर्म ने उपाय बतलाया है।
बस वही उपाय लड़ाने को, प्रभु ने यह योग दिलाया है॥
सानन्द इसलिये उस पद को, शल्य ने वहाँ स्वीकार किया।
इस ओर धर्म ने केशव से, जाहिर फिर वही विचार किया॥
केशव गुरुका वध करवाके, कर दिया विजय अधिकारी है।
लेकिन आत्मा यह कहती है, यह सच्ची हार हमारी है॥
उन बल-धारी का वध करके, बैरी निर्बल कर पाया है।
लेकिन उस बल के बदले में, अपना आत्म-बल गँवाया है॥
तुच्छ से स्वार्थ के लिये आज, मानस का रत्न हराया है।
हे नाथ आज किस कारण से, बल-पूर्वक झूठ बुलाया है॥

कहा कृष्ण ने हो नृपति, नीति ज्ञान-शिरमोर।
मगर धर्म से नीति में, है कुछ अन्तर और॥

केशव सत्य के किनारे पर, धर्म की नींव बन जाती है।
सत्य में झूठ मिल जाता है, तो राज-नीति कहलाती है॥
जो झूठ पराये हित में हो, तो पाप न माना जाता है।
ऐसा असत्य सत्य से वहीं, बढ़कर प्रभाव दिखलाता है॥
हाँ झूँठ अगर स्वारथ-वश है, तो ऐसा सन्ताप नहीं।
फिर तो वह खास कहावत है, झूठ के बराबर पाप नहीं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि पर हित यहाँ पूजते हो, तो विषय सोचने लायक है।
पाप की मूल दुर्योधन है, वीरों की सैन्य सहायक है॥
पापी ऐसा ही बल पाकर, पापों की बेल बढ़ाता है।
धर्मों की आड़ पकड़ता है, अधरम का जाल रचाता है॥
यदि मेरे यत्नों के द्वारा, इन दुष्टों का संहार न हो।
तो याद रहे भू-मण्डल पर, धर्म का कभी उद्धार न हो॥
कांटे से काँटा खिंचता है, विष से विष मारा जाता है।
सीधी उंगलियों से जमा हुआ, घी नहीं निकाला जाता है॥
इसलिये नीति की राहों में, इन विषयों को न डरो राजन्।
कल कर्ण करेगा सरदारी, कुछ उधर विचार करो राजन्॥

धर्मराज कहने लगे, यह है तुम पर भार।
अपना तो भ्रम भार था, सो यों लिया उतार॥

भीष्म सा वीर ब्रह्मचारी, द्रोण सा शस्त्र-विद्या ज्ञानी।
कर्ण सा हठी, जयद्रथ सा भट, दुर्योधन ऐसा अभिमानी॥
फिर धन बल श्री सम्पन्न सभी, जिनके आगे दम भी गुमहो।
इस ओर हजारों महावीर, इस ओर फकत तुमही तुम हो॥
चूहे बिल्ली के दांत पकड़, मन माना नाच नचाते हैं।
यह केवल शक्ति तुम्हारी है, जुगनू सूर्य को दबाते हैं॥
केशव बोले तो और सुनो, अमला रण सीधी खीर नहीं।
भीषम अथवा द्रोण की तरह, ममता वाले बलवीर नहीं॥
अब जो हैं सच्चे बैरी हैं, काबू भर कर दिखलायेंगे।
जो कुछ भी कर सकते होंगे, करने में कसर न लायेंगे॥

कर्ण वीर के पास हैं, पाँच करारे बाण।
उन बाणों पर ही यहाँ, निर्भर है कल्याण॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे बाण अगर कर्ण पर रहे, तो पाण्डव-दल संहारण है।
उन बाणों को ले लेना ही, कर्ण की मौत का कारण है॥
इसलिये हमारी सम्मति में, कुन्ती माता को अपनाओ।
उस दान वीर से किसी तरह, वे बाण आज ही मँगवाओ॥

कहा धर्म ने हे प्रभो! हैं माता तैयार।
पर क्यों कोई हाथ का, दे देगा? हथियार॥

फिर दादा जी की तरह यहाँ, दूसरी समस्या आती है।
हे देव इस तरह की जय भी, हार से बुरी कहलाती है॥
कृष्ण ने कहा तो घर बैठो, या जय का प्रश्न उठाओ ना।
लड़-भिड़कर जीवन दे डालो, राज्य के लिये चिल्लाओ ना॥
हे पता तुम्हें कैसे— कैसे, यह नर्द तोड़ता जाता हूँ।
तुमको नाम वर बनाता हूँ, बदनामी आप उठाता हूँ॥
जो लोग अधर्मी से मिलकर, उसके पक्ष की निभाते हैं।
उनसे धर्म के अङ्ग योंहीं, धीरे-धीरे खिंच जाते हैं॥
इसलिये बहस का समय नहीं, पहले माँ को पहुँचाओ तो।
मेरा कहना कितना सच है, उस दानी से अजमाओ तो॥
मैं कहता हूँ दान के समय, उस त्याग वीर को द्रोह नहीं।
बाणों की तो हस्ती क्या है, जब प्राणों तक का मोह नहीं॥

कुन्ती भी गमगित हुई, अपना स्वार्थ विचार।
सूर्य कुँवर पैरों पड़ा, माँ को मूर्ति निहार॥

बोला जीवन की दबी हुई, ममतायें हुई उघारी हैं।
बेटे का भाग्य बढ़ाने को, माताजी किधर पधारी हैं?॥
कुन्ती बोली बेटा! मनकी, कुछ लगी बुझाने आई हूँ।
जो तुम्हें आज तक ज्ञात नहीं, वह भेद बताने आई हूँ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेटा ! तुम अब तक अपने को, अधिरथ का पुत्र मानते हो।
वंश की तुम्हें पहिचान नहीं, मां को भी नहीं जानते हो॥
कर्ण ने कहा माताजी ! मैं, अपना कुल खूब जानता हूँ।
जानता हूँ पिता दिवाकर को, माता जो तुम्हें मानता हूँ॥
श्री सूर्य देव ने पहले ही, इसका रहस्य समझाया है।
फिर "अनल-वीर" से मां मैंने, सारा प्रणाम भर पाया है॥
जो विषय लिखा था ब्रह्मा ने, वह तुमसे मैया मिटा न था।
थी आयु और सुखमय-जीवन, पर दूध भाग्यमें लिखा न था॥
इससे यह कहना पड़ता है, अधिरथ जीवन-दाता है।
जिसने गोदी में रक्खा है, माता अब तो वह माता है॥
फिर भी नौ मास पेट में रख, तुमने जो कष्ट उठाया है।
उस ऋणके बदले बोलो मां, इस सेवक को क्या आज्ञा है॥

कुन्ती बोली जब तुम्हें, है रहस्य सब ज्ञात।
तो कल से रहना अलग, है अरचन की बात॥

छोड़कर सगे भ्राताओं को, मिल रहे लाल ! क्यों रिपुदल में।
खाते हो घर का भात तात, बैठकर पराई पत्तल में॥
मैं कह देती सब खोल-खोल, पर लज्जासे कुछ कह न सकी।
लेकिन यह अन्तिम ममता है, जो बिना कहे भी रह न सकी॥
जो नहीं कहा सो नहीं कहा, अब कहना है सो कहती हूँ।
रहती हूँ उनकी ओर मगर, तेरी चिन्ता में रहती हूँ॥
आजतक न कोई उलझन थी, अब प्रश्न प्राण का आयेगा।
पार्थ या कर्ण में से कोई, अब निश्चय मारा जायेगा॥
इससे मेरा यह कहना है, भाई से भाई मिलजाओ।
मत भूले रहो विधानों में, अपनों को बेटा ! अपनाओ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों दल सदल चाहती है, दोनों फल सुफल चाहती है।
बेटा! इस बुढ़िया की आत्मा, दोनों की कुशल चाहती है॥

कहा कर्ण ने हो चुकी, खतम यहाँ खैरात।
मातु! पराई चीज पर, अब न जमाओ दांत॥

रहना रखना तो तब तक था, जब कर्ण किसीका रहा न था।
कहना था तो तब तक कहना था, मैंने कुछ कहा न था॥
जो रहा दूसरे का बनकर, उसकी आशा में रहो न मां।
कह दो मरने को मरजाऊँ, पर छल करने को कहो न माँ॥
यह देह हुई उसकी जिसने, जीवन भर नमक खिलाया है।
मैया! तुम आप जानती हो, यह कर्ण गुलाम पराया है॥
इसलिये देह रहते-रहते, कुरुपति का पक्ष निभाऊँगा।
हां माता के नाते बाकी, तेरा भी कर्ज चुकाऊँगा॥
मेरे हाथों पार्थ को छोड़, पांडव न पराजय पायेंगे।
तेरे कुमार फिर भी माता, पांच के पांच रह जायेंगे॥

कुन्ती बोली बदल दे, प्रभु पृथिवी-पाताल।
पर जीवन रहते हुये, वचन न बदलो लाल॥

जो वचन तुम्हारा जायेगा, तो दोष मुझे भी आयेगा।
मिल जायेगा जीवन फिरसे, पर वचन न मिलने पायेगा॥
इसलिये न अब मैं कहती हूँ, हाँ और दान दे दो बेटा।
मत दो पारथ के प्राणों को, पार्थ-हर बाण दे दो बेटा॥

दान-वीर ने बाण वे, दिये चरण पर डाल।
हाथ जोड़ कहने लगा, फिर भारत का लाल॥
माता! ये पांच बाण यह हैं, आज्ञा हो तो तरकश दे दूं।
धन्वा दे दूं कृपाण दे दूं, रग-रग दे दूं नस-नस दे दूं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माताजी ! यह विश्वास रहे, यह फकत न बाण जा रहे हैं।
अर्जुन के प्राण आरहे हैं, मेरे ही प्राण जा रहे हैं॥
मैं भले प्रकार जानता हूँ, इन पर यह जीवन निर्भर है।
पर वचनों पर जीवन तो क्या, जीवन-धन भी न्योछावर है॥
यदि प्राण जांय चिन्ता नहीं, जायेंगे फिर आयेंगे।
पर आन गई यदि हाथ से, तो न प्रलय तक पायेंगे॥
कह देना कायर अर्जुन से, जब मरने से यों डरता है।
तो क्षमा मांगकर बैठ रहे, यह स्वांग किसलिये करता है॥
अपने जीतेजी माता को, भिक्षमंगी अगर बनाना था।
तो कहीं डूब मर जाना था, वीरों में मुँह न दिखाना था॥
माताजी ! यह न कभी समझो, कृष्ण का कलङ्क धोगया है।
मरचुका पार्थ यह कर्ण आज, मरकर भी अमर होगया है॥
क्या दिया गया? कुछ समझी हो, केवल न बाण दे डाले हैं।
दे दिया पार्थ को प्राणदान, कर्ण ने प्राण दे डाले हैं॥
कुन्ती की हिचकी बन्द हुई, उठने तक का न हिसाब बना।
आंखें भी सीधी कर न सकी, मुँहसे कोई न जवाब बना॥

ज्यों-त्यों कर चलती हुई, देकर आशीर्वाद।
वहाँ इन्द्र के कान में, पड़ा यही सम्वाद॥
भाग पड़े सुर लोक से, गये कर्ण के द्वार।
दान-वीर ने इन्द्र का, किया उचित सत्कार॥

फिर हाथ जोड़कर खड़ा हुआ, वह त्याग मूर्ति इच्छा दानी।
आंखों से आंखें मिलते ही, होगया इन्द्र पानी-पानी॥
कर्णने कहा देवेन्द्र ! कहो, किस कारण कष्ट उठाया है।
आधी रात में कृपा करके, कुटिया का मान बढ़ाया है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्र ने कहा हे दान-वीर, मैं सुर-पति नहीं भिखारी हूँ।
कर्ण के द्वार का याचक हूँ, कुछ भिक्षा का अधिकारी हूँ॥
जो दे सकता हो तो पहले, देने की वीर—प्रतिज्ञा दे।
यदि किसी तरह लाचारी हो, तो घर जाने की आज्ञा दे॥

कहा कर्ण ने हो चुका, आज दान का पार।
देवराज भिक्षुक हुए, दीन कर्ण के द्वार॥
हमने माना है तुम्हें, सुर-पुर का अधिकार।
पर तुमने देखे नहीं, दानी और उदार॥

देखे भी हैं तो दानी की, कर सके अभी पहिचान नहीं।
क्या यह भी नहीं जानते हो, दानी की और जबान नहीं॥
धन वाले शान मानते हैं, थैली मुँह से भर जाने में।
दानी जन मान जानते हैं, पर-हित को प्राण लगाने में॥
मैं समझा था सुर-लोक-कर्म, इस मृत्यु लोक से बढ़कर है।
अब ज्ञात हुआ सुर-पुर में भी, धर जा मर जा का चक्कर है॥
देने के लिये वचन कैसा?, देने ही को झट तत्पर है।
मांगो तो मुँह से इन्द्रदेव!, जो मांगोगे वह हाजिर है॥

कहा इन्द्र ने है अगर, देना ही स्वीकार।
तो अपने कुण्डल कवच, दे दो मुझे उतार॥
दान—वीर ने आन पर, दोनों दिये उतार।
साभिमान कहने लगा, फिर यों सूर्य—कुमार॥

जो देवराज यह हाजिर है, मांगो कुछ दान और माँगो।
यह क्या मांगा जीवन मांगो, अथवा पार्थ के प्राण मांगो॥
मघवे! हम तुम्हें जानते हैं, परिचित हैं प्रकृति तुम्हारी से।
है कपट-नीति में कमी नहीं, तुम में छल कुञ्ज-बिहारी से॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमने ही बलि बेचारे को, बलकर पाताल मिलाया था।
तुमने ही हरिश्चन्द्र नृप को, मरघट का काम कराया था॥
तुमने ही नारद से ऋषि को, कामी की तरह फिराया था।
तुमने ही नृपति त्रिशंकु फांस, उलटा भूमि पर गिराया था॥
पर याद रहे यह कपट नीति, उलटा प्रभाव दिखलाती है।
जितना स्वर्ण को तपाते हो, उतनी ही चमक दिखाती है॥

इस प्रकार जाता नहीं, दानी का सत्कार।
सुर-पति तुम्हें कलङ्क है, ऐसे नीच विचार॥

बेटे की ममता रखते थे, तो स्वयं सामने आ जाते।
हम योधा तुम्हें मान लेते, जो इस पर भी जय पा जाते॥
सिंहों को फुसला-फुसला कर, फांसना कौन करतूती है।
भिक्षा मांगकर विजय पाना, क्या यही यहां रजपूती है॥
हा हा भी करते जाते हैं, आंसू भी चढ़ाये जाते हैं।
ऐसे कमीन कपटी कायर, योधा न कहाये जाते हैं॥
फिर भी जो कुछ है, अच्छा है तुम पर भवितव्य तुम्हारा है।
हम अतिथि मान कर मान करें, इतना कर्त्तव्य हमारा है॥

सुर-पति के भी शर्म से, उठे न ऊपर नैन।
मन समझाने के लिये, लगे बनाने बैन॥

हे दानवीर सच कहते हो, कुछ प्रकृति हमारी खोटी है।
पर याद रहे यह खोटा पन गुणियों के लिये कसौटी है॥
हीरे की इज्जत होती है, घन की चोटें सह लेने पर।
मानुष पहिचाना जाता है, कुछ कठिन परीक्षा देने पर॥
जांचकी बिना गर्मी पाये, यशकी न कली खिल सकती थी।
तुम लाख दीनता दिखलाते, पर कीर्ति न यह मिल सकती थी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओ आत्म वीर ! क्या भूलगये, यह किस पहलूपर नाटक है।
क्या तुमको इतनी याद नहीं, यह होना ही आवश्यक है ॥

यह सुनते ही कर्ण ने, दिया वहीं मुसकाय।
आंसू भरकर यों कहा, जय केशव यदुराय ॥

भीष्म के लिये प्रण खण्डनकर, प्रण-वीर उन्हें कहलाया है।
पार्थ के लिये रथ हांक हांक, भक्तों में उसे गिनाया है ॥
पांचाली के बन तीन-रूप, सतियों में उसे लिखाया है।
कच्छप बनकर बजरङ्गी का, भक्तों में मान बढ़ाया है ॥
गुरुवर के लिये झूठ बोले, कुरुपति को किया मानियों में।
इस नाटक से कर देना है, सेवक का नाम दानियों में ॥

दोनों हिल मिल रो पड़े, प्रेम उठा उमगाय।
फिर बोले भट कर्ण से, इस प्रकार सुर-राय ॥

हे त्याग मूर्ति ! यद्यपि कुछ भी, दे देना है बेकार तुम्हें।
इस निराधार जीवन-पथ में, है अपना ही आधार तुम्हें ॥
फिर भी मेरी यह इच्छा है, इसका प्रतिकार किये जाऊँ।
यह कुण्डल-कवच लिये जाऊँ, लेकिन कुछ तुम्हें दिये जाऊँ॥
इसलिये उचित जो कुछ समझो, वह मुझसे भी ले लो भैया।
वह लेना भी देना समझो, यह भीख और दे दो भैया ॥

कहा कर्ण ने है मुझे, यह गुरुओं की सीख।
दुश्मन से क्या दोस्ती, भिक्षुक से क्या भीख॥

भगवान करे मरते-मरते, आभारी मेरा माथ न हो।
लेने-देने के विषयों में, ऊँचे से नीचा हाथ न हो ॥
फिर भी जब स्वयं कह रहे हो, तो इतना यश लेते जाओ।
जो कुण्डल-कवच ले रहे हो, तो बज्र शक्ति देते जाओ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्र ने कहा यह हाजिर है, वक्त पर मदद पहुँचायेगी।
मारकर किसी बलधारी को, फिर लौट मुझी पर आयेगी॥

देव-राज गमनित हुए, धर्मराज के पास।
उनसे कुण्डल-कवच का, सभी कहा इतिहास॥

प्रातकाल साजा गया, नया निराला साज।
मानो भारत-समर का, था पहिला दिन आज॥

सुन्दर सफेद घोड़ों वाले, पथ पर पार्थ की सवारी है।
दो रङ्गी लक्षित पताका पर, बजरङ्गी की किलकारी है॥
उस ओर कर्ण का आधा रथ, बाणों से भरा दिखाता है।
रण-रङ्ग रङ्गीले रवि-सुतका, झंडा फहराता आता है॥
श्री धर्म भीम सरदार सभी, नव साज बनाये आते हैं।
दुःशासन और सभी कौरव, रण-मूलह से दरशाये हैं॥
दुर्योधन एक नई धज से, सज धज दिखलाता आता है।
मानो बलिदानी वीरों का, नेता उमड़ा आता है॥

मधुसूदन ने भीम से, कहा—बढ़ो बलराज।
समर तुम्हें ही कर्ण से, करना होगा आज॥

धृष्टद्युम्न को साथ लेकर, कर्ण का सामना किये रहो।
उन चोटों की चिन्ता न करो, धर्म को सहारा दिये रहो॥
पार्थ ने कहा कर्ण के साथ, लड़ना तो काम हमारा है।
फिर आज भीम के मत्थे पर, क्यों अपना भार उतारा है॥
कृष्ण ने कहा कर्ण के पास, वह बज्र शक्ति बलकारी है।
इसलिये सामने जाने में, इस समय न कुशल तुम्हारी है॥
वह शक्ति शाम से पहले ही, कर्ण के हाथ से जायेगी।
तब कहीं तुम्हारी शक्ति वहां, कुछ करतब करने पायेगी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहाँ कर्ण कहने लगा, देकर एक दहाड़।
आगे आ ओ इन्द्र-सुत, ओ रण के खिलवाड़॥

शेर के शिकारी देर न कर, हाजिर शेर का शिकार है यह।
सरदार आज आगे तो आ, सरदार बिना हथियार है यह॥
पर कटी पतङ्ग बना अर्जुन, कतराया हुआ जा रहा है।
उस ढीठ केहरी के बदले, यक भैंसा नजर आ रहा है॥
भीम ने कहा सिंह की जगह, भैंसे ही से तबियत भरले।
जो उससे किया चाहता है, वह करणी मुझ ही से करले॥
कर्ण ने कहा यदि अर्जुन को, अब भी कुछ शङ्का भारी है।
तो और भीख मँगवा डाले, सारा वंश तो भिकारी है॥
तू तो है भोजन-भट्ट फक्कत, रण की नीति में छिछोड़ा है।
जोड़ा है कर्ण से अर्जुन का, मेरा तेरा क्या जोड़ा है॥
भीमने कहा नादान न बक, यह मद न काम दे सकता है।
पाण्डव-दल का बच्चा-बच्चा, कर्ण से जोड़ ले सकता है॥
बैरी दल का कोई भी हो, अर्जुन से क्या अटकाई है।
है लाग धर्म की सेना से, या कोई निजी लड़ाई है॥

कहा कर्ण ने ठीक है, यह विचार बलधाम।
पर शोभा देता नहीं, मुझे तुच्छ संग्राम॥

सरदारों की हार—जीत, सरदारों पर ही निर्भर है।
सरदार अगर मारा जाये, तो सेना मरे बराबर है॥
वृक्ष के काटने पर मनुष्य, पत्ते पत्ते न गिराते हैं।
जड़ जहाँ काट दी जाती है, पत्ते खुद मुरझा जाते हैं॥
पर जो कुछ है अच्छा है, मुझ से ही आज सफाई हो।
विष में दोनों ही हैं समान, नाग या नाग का भाई हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चले चलाचल में अचल, चञ्चल-गति से बाण ।
दोनों वीरों ने लिया, चढ़ बढ़कर मैदान ॥
भीम ने बाण बरसा के, कर्ण के कवच को तोड़ दिया ।
कर्ण ने करारे तीरों से, भीम के आन को तोड़ दिया ॥
रथ बिना भीम घूमने लगे, पड़ गई मुसीबत प्राणों की ।
धृष्टद्युम्न ने वहीं बढ़कर, यक झड़ी लगा दी बाणों की ॥
मुड़ चला भीम की ओर द्विरद, भटवर भी उसे दहाड़ चला ।
मानों आंधी से उड़ा हुआ, पेड़ों की ओर पहाड़ चला ॥
था द्विरद बीस भाई समेत, वह दल दल बदल उखाड़ चला ।
भट पटक-पटक झटका देकर, पल-पल में उन्हें पछाड़ चला ॥
भीम सुभट ने जब किया, बीसों का संहार ।
तो बलधर की ओर फिर, दौड़ा सूर्य कुमार ॥
हुए वीर पर वीर के, बार-बार बहु बार ।
बिसर गये वह पवन गति, अपनी पवन कुमार ॥
गायन—पौन नन्द रवि-नन्द, बन्द चौके गयन्द से ।
धरत परत लहि एक-एक कहँ, फरक फन्द से ॥
लपट जात पुनि छुटत, विकट भट टरत न टारे ।
हुमक हुमक भरि मुक्क देत, उँमगत बलधारे ॥
बहु छांड़-छांड़ छर छीन शर, छय छाल छिति जाल सो ।
अति मारन सूर कुमार सों, बिहरत वीर बिहाल सो ॥
आखिर सूर्य-कुमार की, सह न सके वह मार ।
बेकल होकर अन्त में, लौटे पवन कुमार ॥
तब तक बढ़ कर धर्म ने, किया कर्ण पर वार ।
मुसका कर बलवीर ने, छोड़ दिया हथियार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर कहा-धर्म क्या करते हो, अच्छा है आगे मत आओ।
जो मेरा हुनर देखना हो तो, पार्थ वीर को पहुँचाओ॥
भोले भगती! बतलाओ तो, कब-कब रण देखा-भाला है।
है शांति तुम्हारी डाल फकत, तलवार तुम्हारी माला है॥
धर्म ने कहा प्रभु ने मुझको, वंचित रक्खा सिवकाई से।
जेठे भाई की खातिर में, क्यों चूकूँ? आज लड़ाई से॥
भैया! है आन तुम्हें मुझपर, दिखलाओ जितनी ताकत है।
मर जाना मेरी इज्जत है, बच जाना मेरी किस्मत है॥

नाग-पाश लेकर बढ़ा, उन पर सूर्य-कुमार।
धर्म सैन्य से इस तरह, बोला वीर पुकार॥

सरदारो कर्ण जा रहा है, फांस में फँसाये राजा को।
है! कौन वीर पांडव दल में, जो आज बचाये राजा को॥
तब तक खुद धर्मराज ही ने, वह गरुण-बाण सन्धान किया।
जिसने करदिया विकल दलको, उस नाग-पाश को काटदिया॥

धर्मराज के बाद ही, बढ़ा घटोत्कच वीर।
उस विकराल शरीर पर, लगे बरसने तीर॥

क्षण ही भर में चारा न रहा, तीरों का या तलवारों का।
हथियार हाथ से छूट गये, दम टूट गया सरदारों का॥
पाहन उखाड़ दे-दे पहाड़, पेड़ों की ओर पहाड़ चला।
धर-धर अधीर कम्पित शरीर, वीरों को वीर पछाड़ चला॥
घुप अन्धकार घर मार-मार, मिट चले जोश योधापन के।
सर उतर चले सरदारों के, उड़ गये होश दुर्योधन के॥

कुरु-पति बोला चीखकर, बढ़ो कर्ण! बल-धाम।
लेना होगा इस समय, वज्र-शक्ति से काम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्यथा घटोत्कच के हाथों, सारे घर टूटे जाते हैं।
इस अन्धकार की मारों में, लाखों भट छूटे जाते हैं॥
भैया! सँभाल वह वज्र शक्ति, इस योद्धा का मर्दन करदे।
सारा दल हा हा करता है, वीरोंमें नव-जीवन भर दे॥
कर्ण ने कहा-यदि वज्र शक्ति, इस समय काममें लाऊँगा।
तो कल अर्जुन से लड़ने में, कौनसी शक्ति दिखलाऊँगा॥
बलिया ने छल से सभी शक्ति, करदी खोखली हमारी है।
है यही एक ताकत ऐसी, जिस पर सारी अरदारी है॥
कुरु-पति बोला मारा जाऊँ, जब मैं इस तरह कसाकसमें।
तो वज्र शक्तिको बेजाकर, रख देना किसी नुमायश में॥
भैया! यह सारे अस्त्र-शस्त्र, मेरे ही लिये कहायेंगे।
मेरा ही काम तमाम हुआ, तो काम किस समय आयेंगे॥

विवश कर्ण को शक्तिका, करना पड़ा प्रहार।
वीर घटोत्कच का हुआ, उसी समय संहार॥

संहार हुआ अधियार मिटा, फिर बन्द वहीं घर-मार हुई।
इस दलमें हा हा कार मचा, उस दलमें जय जयकार हुई॥
गिर पड़े बिलखकर वीर भीम, बेटा बेटा चिल्लाने लगे।
जगकी असारता बतलाकर, घनश्याम उन्हें समझाने लगे॥
ओ पांडव दलके कर्णधार, क्या फल है विह्वल होने से।
सारा भू-लोक रो पड़ेगा, हे! तात तुम्हारे रोने से॥
हे त्याग मूर्ति! खुद त्यागी हो, तो और त्याग सिखलायेंक्या।
तुम औरों को समझाते हो, तब तुम्हें तात! समझायेंक्या॥

कहा भीमने बिलखकर, सच कहते हो श्याम।
पर दुख में देता नहीं, अपना धीरज काम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औरों पर विपदा आती है, तो हम उनको समझाते हैं।
जब अपने ही सिर पड़ती है, तो खुद चौकड़ी जाते हैं॥
फिर भी सेवक के रोने में, मोह का नाथ, ! अवश्य नहीं।
सच पूछो तो इस आत्मामें, बेटेका तनिक कलेश नहीं॥
दुख है तो केवल इतना ही, युद्ध का न बाकी अवसर है।
बेटे का बदला लेने को, बारह घण्टे का अन्तर है॥
चख ही भर समय और होता, तो धीरजका कारण होता।
मृत्यु के साथ ही बैरी के, रक्त से वहीं तर्पण होता॥

प्रभु बोले इसके लिये, रोने का क्या काम!
आँख मीचते-खोलते, है आगे संग्राम॥
भीमने कहातो शक्ति सिन्धु, इतनी ही शक्ति प्रदानकरो।
इस बलिदानी के बदले में, सैकड़ों वीर बलिदान करो॥
धर्म ने कहा अर्जुन! तुमको, अच्छा सरदार बनाया है।
मेरी यह गति करवा दी, बेटे को उधर गँवाया है॥
प्रभु सा सारथी वीर तुमसा, कुछ कर जाने की बातें हैं।
इस पर बैरी जय पायें, तो मर जाने की बातें हैं॥

सुन सकते थे पार्थ कब, इस प्रकार फटकार।
धनुष खींच कहने लगे, रहने दो सरदार॥
तुम लोगों की सम्मति ही से, सेवक अन्यत्र सिधाता है।
उतनी देर में, यहाँ भैया, कोई अनिष्ट हो जाता है॥
जोहुआतात!,होचुका आज,कल इसका फल दिखलाऊँगा।
इन खूनी जख्मों के ऊपर, खूनी मरहम चढ़वाऊँगा॥
यदिसमर नीतिसे विमुख न हो,तो अभी दृश्यदिखलाडालूँ।
रात ही रात में कुरु-दलका, भूतल से नाम उठा डालूँ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उमड़ उठा उर पार्थ का, पर प्रभु ने समझाय ।
किया शान्त फिर शान्ति से, सोवे यादवराय ॥
सुबह हुआ फिर मढ़ गया, उसी भाँति संग्राम ।
अपने--अपने दाव पर, पहुँचे वीर तमाम ॥

इस ओर भीम ने हांक मार, ललकारा वीर दुशासन को ।
उस ओर धनुष टंकार मार, कर्ण ने पुकारा अर्जुन को ॥
लेकिन कर्ण के बुलातेही, सारथी शल्य मुसकाता है ।
ओ हो समता के लिये आज, कौवा हंस को बुलाता है ॥

सुनते ही इस व्यंग को, उबल उठा बलधाम ।
जोश न दे खामोश रह, अरे नीच नाकाम ॥

ओ दुष्ट सहायक समझ तुझे, अपना सारथी बनाया है ।
आया है हाथ बँटाने या, उत्साह गिराने आया है ? ॥
शल्य ने कहा यह तो सच है, इससे साहस गिर जाता है ।
पर असली बात सुनाने में, मुझको तो चैन न आता है ॥
रण धीर पार्थ ने तुझे कर्ण !, सैकड़ों बार ठुकराया है ।
इतने पर भी निर्लज्ज वीर, उसके मुकाबिले आया है ॥
पत्थर लाठी खाने पर भी, टुकड़े खाने की इच्छा है ।
ऐसा बे शर्म और कपटी, कौवे के सिवा और क्या है ? ॥
कर्ण ने कहा मैंने तुझको, सारथी काम पर रक्खा है ।
यह तर्क-वितर्क उठाने का, फिर मूर्ख बता मतलब क्या है ॥
जितना ही तुझ से कहा जाय, उतने ही करतब दिखला दे ।
हे शल्य बहस का वक्त नहीं, अर्जुन के आगे पहुँचादे ॥

गया पार्थ के सामने, ज्योंही सूर्य-कुमार ।
बोला अब आया नजर, रे कायर मक्कार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल एक शक्ति ही से डरकर, आ सका न आँख मिलाने को।
अब हाथ बाँध कर नाहर के, आ गया हाथ मटकाने को॥
क्यों माखन चोर आजतक तुम, आदत से बाज न आते हो।
खुद तो चोरी करते ही हो, औरों से भी करवाते हो॥
निःशस्त्र बना कर योधा को, क्या अर्जुन शान दिखाता है।
भिक्षा माँ-बाप माँगते हैं, लड़का लड़ने को आता है॥
इतने पर भी जो मरो कृष्ण, दल भर में खर-भर भर डालूँ।
तुम अपने मन की कर डालो, मैं अपने मन की कर डालूँ॥

उसी समय होने लगा, उनका शस्त्र-प्रहार।
क्षण में रण थल बन गया, एक नया संसार॥

बाणों का अलग समन्दर था, बाणों का ही गिर बसता था।
बाणों का मेघ उमड़ता था, बाणों का मेह बरसता था॥
पृथिवी न नजर आती थी, सूरज का कहीं निशान न था।
जो घिरा न हो उन बाणों से, ऐसा कोई बलवान न था॥
यह चीत्कार के साथ--साथ, छाया सर्वत्र अँधेरा था।
मानो सूर्य को निगल करके, काल ने जगत को घेरा था॥

नजर न आया पार्थको, जब एक भी निशान।
तब छोड़ा बल वीर ने, विषमय पावक-बाण॥

घेरा मिट गया अँधेरे का, तो अब ज्वाला का घेरा था।
आँख का अँधेरा दूर हुआ, जीवन बन रहा अँधेरा था॥
कर्ण ने मेघ-शर के द्वारा, पावक का तेज बुझा डाला।
साथ ही धर्म की सेना को, रथ-वाहन सहित बहा डाला॥
पार्थ ने वायु-शर से त्यों ही, मेघों को जोर मिटाया है।
कौरव-दल के बलवीरों को, पत्तों की तरह उड़ाया है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण ने चलाया सूर्य-शस्त्र, पार्थ ने गरुण-शर छोड़ दिया।
चल उठा दुतर्फा काल-बाण, बाण ने बाण को मोड़ दिया॥

चुंचुक शर कहने लगा, ठहर कर्ण बलवान।
रहने दे यह बाण अब, कर मेरा सन्धान॥

जल्दी कर मेरे कर्ण वीर !, पापी पार्थ के प्राण हर लूँ।
खाण्डव-बन में मन भरन सका तोअब रणही में मन भरलूँ॥
कर्ण ने कहा जाते तो हो, पर कुछ करके वापिस आना।
या तो पार्थ को गिरा आना, या वहीं टूट कर गिर जाना॥
चुंचुक बोला अर्जुन तो क्या, लूँ खबर आज मनमोहनकी।
मुद्दत में बुझने आई है, अभिलाषा मेरे जीवन की॥

कर्ण वीर ने जब किया, चुंचुक को सन्धान।
पंख बढ़ा कर नाग वह, दौड़ा काल समान॥

दल-बल का वह बल बदल गया, सूरजकी साया पलट गई।
घोड़े रुक गये बिना रोके, अर्जुन की काया पलट गई॥
बोले केशव अन्तर नायक !, बतलाओ यह क्या माया है।
बलबीर कर्ण ने दया-धाम, यह कैसा अस्त्र चलाया है ?॥

केशव बोले—

खाण्डव-बन में नागिनी, जो डाली थी मार।
बना बाण के वेश में, उसका वीर कुमार॥

सरदार बाण की बरसा कर, यह किसी वीर का बैर नहीं।
प्रत्यक्ष काल से पाला है, अर्जुन जीवन की खैर नहीं॥
अर्जुन ने आज्ञा पाते ही, बाणों की बरसा कर डाली।
पंखों के टुकड़े कर डाले, रग-रग बाणों से भर डाली॥
फिरभी उसपर कुछ असर न था, वैसेही चक्कर खाया किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्जुनतो वाण चलायाकिये, चुंचुक केवलमुसकायाकिया ॥
चुंचुक बोला अन्त में, सावधान सरदार ।
अब आता है शीश पर, नाग-वीर का वार ॥
यों कहकर झपटा जहाँ, वह अर्जुन की ओर ।
त्राह ! त्राह ! का शोर त्यों, छाया चारों ओर ॥
सुर बोल उठे नभ-मण्डल से, गोपाल ! बचाओ अर्जुनको ।
सेना भरसे आवाज उठी, बजरङ्ग ! सँभालो अर्जुनको ॥
क्षण के सौवें भागकी देर, बजरङ्ग बली यदि कर जाते ।
तो इस में कुछ सन्देह न था, जीवित न पार्थ रहने पाते ॥
पर धँसादिया रथ पृथिवी में, सब भार विश्वका दियेहुए ।
चुंचुक-शर को लौटना पड़ा, पार्थ की पताका लिये हुए॥
पूछा कर्ण ने कहो चुंचुक, मतलब हल होने पाया है ।
चुंचुक बोला हाँ कृष्ण और, अर्जुनका नाम मिटाया है ॥
कहा शल्य ने मौन रह, यों बढ़कर मत बोल ।
खुल जायेगी आप ही, सभी ढोल की पोल॥
क्यों रे पागल ! क्या कहता है, श्रीकृष्णार्जुन को खाया है ।
ओ मूरख ! क्या इस गूलरमें, सारा ब्रह्मांड समाया है ॥
नादान ! जहाँ वह विश्व रूप, तेरे पेट में समायेगा ।
त्यों ही बगले की तरह नीच, दो टूक पड़ा दिखलायेगा ॥
यहाँ शल्य ने नाग को, दी भर कर फटकार ।
पृथ्वी से प्रगटे वहाँ, अर्जुन लीला धार ॥
हा हा कारों में जय छाई, जयकारी हा हा कार हुई ।
मुँह सूखगया रवि-नन्दनका, चुंचुक की गति बेकारहुई॥
कर्ण ने कहा क्योंरे चुंचुक, अबतक मुझको बहकाता है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह देख सामने से अर्जुन, रथ पर उमड़ाता आता है ॥
चुंचुक बोला उफ ! दगाहुआ, यह सब मोहन की माया है।
दे गये पताका-मात्र मुझे, रथको भूमि में दबाया है ॥
मेरा फिर से सन्धान करो, अब से न दगा में आऊँगा।
मैं दावा करके जाता हूँ, अर्जुन को मार गिराऊँगा ॥

कहा कर्ण ने हो चुका, एक बार जो बार।
क्षत्रिय गण करते नहीं, इसको बारम्बार ॥

यह बाजारी व्यौपार नहीं, जो बार-बार ठहराते हैं।
मर्दकी जान वीर के बाण, जाकर न हाथ में आते हैं ॥
चुंचुक ! तू गया आनसे भी, आगे भी शान्ति न पायेगा।
इस झूठ बोलने के बदले, नर्क की हवायें खायेगा ॥
चुंचुक बोला मेरे समान, तू भी निराश हो जायेगा।
विश्वास रहे इस भारतमें, तेरा विनाश हो जायेगा ॥

यहाँ कर्ण से पार्थ का, मचा रहा संग्राम।
वहाँ भिड़ा था भीम से, दुःशासन बलधाम ॥

भीम ने कहा ओ दुःशासन, है बार आज बजरङ्गी का।
तेरे जीवन की श्वासें हैं, आखिरी तार बजरङ्गी का ॥
दुःशासन बोला कई बार, आखिरी बार दिखलाया है।
बाबरे मगर ! एकभी बार, जी भरकर वार न पाया है ॥
द्यूतके समय क्योंरे कायर, क्या लड़नेको तैयार न था।
जब नारि सभामें नङ्गीकी, क्या वहां आखिरी बार न था॥
भीमने कहा-रे कपट मूर्ति, वह घट ही तो भर आया है।
रे पाखण्डी ! पाखण्डों का, भंडा उबाल पर आया है ॥

यों कह कर झट भीमने, किया वज्र का वार।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किन्तु बार पर बारकर, निकल गया सरदार ॥
दूसरा बार भी बाणों से, कुछ टकरा गया वृकोदर का ।
दुःशासन के फिर वारों से, सिर चकरा गया वृकोदरका ॥
लेकिन सिरका चकराना ही, प्रत्यक्ष कालका चक्कर था ।
अब भीम भीम ही रहे न थे,नरसिंहा रूप गदाधर था ॥
वह काट छांट रख एक तरफ, दी हांक वीर बलकारी ने ।
सारा दलमण्डल हिला दिया, भीमकी एककिलकारी ने ॥
फिर किलक हुमक लेकर उछाल,उस भटको आन दबाया है ।
मानो दहाड़ कर नाहर ने, बकरे पर दांत लगाया है ॥

फिर झटका देकर पटक, उसे भीम सरदार ।
किलकारी भरकर हुआ, छाती पर असवार ॥

फिर कहा—वीर सहदेव बढ़ो, संदेश प्रियातक पहुँचादो ।
जाता है समय प्रतिज्ञा का, खूनी गङ्गा में नहला दो ॥
है जीवन का आधार यही, उस देवी दीन दुखारी को ।
सहदेव ! यहाँ मत देर करो, ले आओ द्रुपद-दुलारी को ॥

उसी समय सहदेवभट, बढ़े शिविर की ओर ।
यहां भीम कहने लगा, और लगाकर जोर ॥

आओ अरमानी बलवानो, भरलो अरमान दुशासन का ।
इतने वीरों के आगे, जाता है प्राण दुशासन का ॥
त्रैलोकों में है ? कौन शक्ति,जो आशा भरे दुशासन की ।
दोनों दलमें है कौन वीर, जो रक्षा करे दुशासन की ॥
वह वीर आज आगे आये, जो वीर पिता का जाया हो ।
वह अपनीशक्ति दिखाये जिसे,जननी ने दूध पिलाया हो॥
गायन-धाओ इन्द्र ! सुरेन्द्र, दुशासन प्राण बचाओ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धाओ दिक् दिक्पाल, काल के आगे आओ ॥
धाओ पवन ! प्रचण्ड-ज्वाल, ! शशि सूर्य सितारो ।
धाओ भुवन-समेत, विश्व-पति ! जोश उतारो ॥
वह आगे आये कि हो, सच्ची मां जिस वीर की ।
यह खुली चुनौती आज है, यहाँ वृकोदर वीर की ॥

हीर हाँक सुन वीर की, कांप उठे बलवीर ।
किन्तु पार्थ रणधीर का, फिर न रहसका धीर ॥

शर को निकाल धन्वा संभाल, बोले बस रहा न जाता है ।
हे नाथ ! शीघ्र ही आज्ञा दो, अब चुपके रहा न जाता है ॥
भाई है पर भाई कैसा ?, अब भाईपन न निभाया है ।
भीम ने कौरवों ही का क्या, हम सबका मान गिराया है ॥
इस वीर-हाँक पर अगर नाथ,यह वीर शान्ति दिखलायेगा ।
भारत में कोई वीर न था, यह कहने को रह जायेगा ॥
इसलिये आन पर भाई को, भाई से टक्कर लेने दो ।
उस भट की वीर चुनौती का, हे नटवर ! उत्तर देने दो ॥

प्रभु बोले ऐसे समय, तुम न बघारो जोश ।
आज भीम के सामने, बिगड़ जायगा होश ॥

कुछ पता ठिकाना है अर्जुन, यह किसकी वीर हङ्कारी है ।
भट भीम आज को भीम नहीं, नरसिंह—रूप अवतारी है ॥
मैंने सन्ध्या के समय उसे, दे दी नरसिंही ताकत है ।
उसके मुकाबिले जाने की, किस वीर-धीर की हिम्मत है॥
चौदहों लोक दिक्पाल दशों, त्रैदेव अगर भिड़ जायेंगे ।
तो आज भीम रण—रङ्गी से, वे भी न जीतने पायेंगे ॥
तुम तो क्या अगर शस्त्र लेकर, समता पर मैं भी जाऊँगा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो मैं दावे से कहता हूँ, जीत कर न आने पाऊँगा ॥
इसलिये शांत होकर बैठो, देवी का ऋण भुगताने दो ।
अपना करतव तुम किये चलो, उसको कर्त्तव्य निभाने दो ॥

आज्ञा पाकर नाथ की, शांत रहे रण-धीर ।
जा पहुँचे सहदेव भट, द्रुपद सुता के तीर ॥

बोले हे प्रिये ! विलम्ब न कर, भाई भीम ने बुलाया है ।
इन बिखरी हुई वेणियों के, बन्धन का अवसर आया है ॥
पांचाली परम प्रमोद सहित, संग्राम भूमि में आई है ।
उस ओर वीर दुःशासन ने, अन्तिम आवाज उठाई है ॥
भीम ने कहा बता बलधर !, वह कहाँ आज बल विक्रम है ।
बलवीर भीम के हाथों में, दमदार आज तेरा दम है ॥
बतला उन बालों के बदले, तेरे सर्वाङ्ग तोड़ जाऊँ ।
या जीवन की भिक्षा मांगे, तो जीता यहीं छोड़ जाऊँ ॥

दुःशासन कहने लगा, कर न भीम अपमान ।
जीवन में जाते नहीं, सब दिन एक समान ॥

जय के दिन थे सो निकल गये, अब आया क्षय दुर्योधन का ।
यह समय वीर वर तेरा है, था समय कभी दुर्योधन का ।
वैभवकी घड़ियां निकल चुकीं, वह दिन बीते अब दिन यह है ॥
चलती में अपनी चला चुके, अब चलती के पौ बारह हैं ॥
वह मर कर भी जीवित समझो, जिसके सिरमें सच्ची धुन है ।
भिक्षा का आदी तो बलधर, तेरे ही दल में अर्जुन है ॥
शान के साथ मर जाना है, जीवित रहने से बढ़कर है ।
भिक्षा मांगकर जिये भी तो वह जीवन मरण बराबर है ॥
इसलिये जीत की बात न कर, वह बार आखिरी दिखला दे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नापाक नीच के लोहू में, इस पतिव्रता को नहला दे ॥

वज्रधारी ने वीर पर, किया आखिरी वार ।
प्राण पखेरू देह से, सुरपुर गया सिधार ॥
दुःशासन के भीम ने, बाजू दिये उखाड़ ।
देवी पहुँची सामने, लिये वचन की आड़ ॥
दुःशासन के रक्त से, पतिव्रता के बाल ।
वीर वृकोदर ने वहीं, धुलवाये तत्काल ॥
पांचाली कहने लगी, धन्य वीर भर्तार ।
इस दुखिया की नाव के, तुम हो खेवन हार ॥

यद्यपि भारत में से हरेक, योधा रण धीर दिलावर है ।
पर वीर वृत्ति की मर्यादा, हे नाथ ! तुम्हीं पर निर्भर है॥
जो रस है सबी आत्मा का, उसके चखने वाले तुम हो ।
रखते हैं पंच-पती फिर भी, लज्जा रखने वाले तुम हो ॥
तुमने ही मोह तोड़ करके, कीचक से धर्म बचाया है ।
तुमने ही दुःशासन बधकर, दासी का वचन निभाया है ॥
वीरता अगरचे घर घर है, पर है इस पर अधिकार तुम्हें ।
हे वीर-विभूषण क्यों न कहूँ, मैं भारत का शृङ्गार तुम्हें ॥

द्रुपद दुलारी ने फकत, किया न था गुण गान ।
किन्तु बधाई भीम की, था गारहा जहान ॥

दुःशासन का इस तरह, हुआ वहाँ अवसान ।
यहाँ बराबर भिड़ रहे, पार्थ कर्ण बलवान ॥

पार्थ के करारे तीरों से, जर्जर कर्ण का शरीर हुआ ।
कर्ण के कौतुकी बाणों से, व्याकुल अर्जुन रण-धीर हुआ ॥
रथ के कुछ हिस्से टूट गये घायल घोड़े हैं तड़ फड़ाने लगे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छिद गये अङ्ग मधुसूदन के, बजरङ्ग बली अकुलाने लगे।
तब अर्जुन ने क्रोधित होकर, वह तीखा बाण चलाया है।
जिसके वेगसे कर्ण का रथ, यक सहस्र कदम हट आया है॥
ढाई डग पीछे हटा दिया, कर्ण ने पार्थ बलधारी को।
हे रवि-नन्दन है धन्य तुझे, यों कह आया बनवारी को॥
अर्जुन बोले हे प्रभु फिर से, उल्टी प्रभुताई देते हो।
मेरा उत्साह गिराते हो, शत्रु को बधाई देते हो॥
कृष्ण ने कहा क्या भूल गये, यह कर्ण भीष्म से क्या कम है।
वह ब्रह्मचर्य की महिमा थी, यह दान वीर का विक्रम है॥
अर्जुन! कर्ण के साथ मेरे, अभिमान विश्व का तोड़ा है।
इसलिये वीर के बारे में, जो कहा जाय सो थोड़ा है॥

उसी समय भट कर्ण ने, नील बाण सन्धान।
हुँकारी भरते हुए, मारा एक निशान॥
जैसे चुंचुक बाण से, कांपे थे सरदार।
उसी तरह इस बाण से, फैला हा हा कार॥

कृष्ण ने उसी युक्ती द्वारा, रथ को भूमि में दबाया है।
बाण ने मुकुट के टुकड़े कर, अर्जुन का मान गिराया है॥
कर्ण ने कहा हां शल्य वीर, वह दिखलाओ तासीर यहीं।
रथ घूमा करे सैन्य भर में, पृथिवी पर पड़े लकीर नहीं॥

नृप विराट के नगर से, है मेथुनि का शाप।
मेरा रथ इस समर में, अटक जायगा आप॥

शल्य की युक्ति से उसी तरह, घूमने लगा वह यान वहीं।
चक्कर पर चक्कर लगा रहा, पृथिवी पर पड़ा निशान नहीं॥
अब तो रवि-नन्दन ने यकदम, वह फैलादी धर मार वहां।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रथ पड़ा इधर रथवान उधर, सर पड़ा यहां सरदार वहाँ ॥
उड़ चले मुकुट कट चले शीश, गिरचले धड़ाधड़ धड़ बेसर ।
बह चला रक्त उठ चली बाढ़, वीरों ने वीर बाहु लेकर ॥
जयकार और हाहा पुकार, मिलती-जुलती सी आती है ।
धाराधर उधर धरकते हैं, धरणी धर-धर धरकाती है ॥

कर्ण वीर की मार जब, सह न सके सरदार ।
अर्जुन से कहने लगे, मुड़ कर जगदाधार ॥

अर्जुन क्या बाजू टूट गये ?, रग-रग तो टूटी जाती है ।
बल वीर कर्ण की मारों से, डोरी तक छूटी जाती है ॥
अब कांट-छांट का काम नहीं, बाणों की बरसा कर डालो ।
रोक दी हवा की चालों को, आकाश-भूमि को भर डालो॥

छोड़े लक्ष-अलक्ष शर, अर्जुन ने तत्काल ।
वहीं कर्ण के यान की, बन्द होगई चाल ॥

सारा प्रयत्न कर चुका शल्य, पर घोड़े आगे चल न सके ।
की लाख कर्ण ने कांट-छांट, पर तीर वहां से टल न सके ॥
बाण से बाण का जोड़ मिला, बाणों की एक कतार बनी ।
मानो बाणों का महल बना, बाणों ही की दीवार बनी ॥
लाचार शल्य ने कहा कहो, अब कौन उपाय किया जावे ।
कर्ण ने कहा परवाह नहीं, रथ ही को छोड़ दिया जावे ॥
रण की जय निर्भर कभी कहीं, लकड़ी पर और ध्वजाओं पर ।
"जय" स्वयं निछावर रहता है, वीरों की वीर भुजाओं पर ॥

यों कहकर झट कर्ण ने, छोड़ दिया झट यान ।
अब दोनों ही ओर से, चले बराबर बाण ॥

थे सुखी दुखी भाव में न अब, एक ही किसी मण्डल वाले ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हल चल थी तो हर दल में थी, बेकल थे तो हर दल वाले॥
उठ गई आपसी मार-मार, सरदार चिकारी मार उठे।
रुक गये जहाँ के तहाँ सभी, रह गये फकत हथियार उठे॥
खट्-चटाक खट खट खटाक, हा हा के साथ समाया था।
उस अन्धकार की मारों में, अपना भी बना पराया था॥
कब मरा कौन किसने मारा, किससे किसका संग्राम हुआ।
क्या पता सफल है कौन वार, कौनसा वार बेकार हुआ॥

आगे पीछे बगल में, ऊपर—नीचे बाण।
दोनों दल के साथ ही, चीख उठे बलवान॥

पड़ उठी प्रलय की महा मार, हे हे मन मोहन! दया करो।
जाती है भूमि रसातल को, हे हे मधुसूदन! दया करो॥
उफ सूर्य चला आकाश चला, पृथिवी भी जाने वाली है।
यह महा मार सैन्य ही नहीं, त्रिभुवन को खाने वाली है॥

उसी समय भट कर्ण को, सूझा एक विचार।
लगा उठाने यान को, छोड़ दिया हथियार॥

कृष्ण ने कहा अर्जुन चेतो, बस मौका यही मुबारिक है।
इस महावीर रविनन्दनकी, जिन्दगी इन्हीं श्वांसों तक है॥
जल्दी से जल्दी वार करो, छक्के कर्ण के छुड़ा डालो।
रथ को टिकसाने से पहले, गर्दन वीर की उड़ा डालो॥

पार्थ वीर कहने लगे, नीति—धाम—घनश्याम।
अर्जुन से होगा नहीं, यह अनर्थ का काम॥

निःशस्त्र वीर पर वार करे, वह बेगुनाह की हत्या है।
धोके से शत्रु मार देना, किस नीति-शास्त्र में लिक्खा है॥
कृष्ण ने कहा हे पार्थ वीर, यह उसी शास्त्र की आज्ञा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसके द्वारा को दुष्टों ने, अभिमन्यु कुँवर की हत्या है ॥
हे वीर आज तक सृष्टी में, छल ही ने बल को रोका है।
वीरों के लिये वीरता है, धोके का बदला धोका है ॥
अर्जुन उलझन का मौका है, है समय नहीं समझाने का।
शाप की आड़ में यह क्षण है, पापी के शीश उड़ाने का ॥
भीम को जहर, लाख का महल, द्यूत का खेल बन पहुँचाना।
अर्जुन सारे षड्यन्त्रों में, था इसका ही ताना—बाना ॥

वार किया झट पार्थ ने, महा वेग के साथ।
लगा लोटने भूमि पर, कर्ण वीर का माथ ॥

कौरव हा हाकर विकल हुए, पांडव-दल में जयकार उठा।
हिन्द का एक सरदार उठा, भारत मां का शृङ्गार उठा ॥
कोई इसका फल कुछ समझे, यह अपना-अपना निश्चय है।
हमने तो यह भाव निकाला है, यह सबकी घोर पराजय है॥
भारत हो चुकने के पीछे, थी व्याप्त वही दुख-मय दव भी।
कौरव ही केवल मिटे न थे, मिट गये साथ में पांडव भी ॥
घाटा न आज तक भरा गया, रवि-सुत ऐसे रण धीरों का।
बदला न मिला कौड़ी से भी, उफ! हमें हिन्द के हीरों का॥

❀ गायन ❀

फूट अब भी कर कृपा इस देश पर।
द्वेष अब भी कर दया इस देश पर ॥
हो गयीं वीरान यह फुलवारियां।
मिल गईं हैं खाक में गुल क्यारियां ॥
साफ है मैदान सारे स्वत्व का।
उठ गया है नाम ही वीरत्व का ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दियो ! मानो वचन "गोविन्द"के ।
खो न दो बेकार हीरे हिन्द के ॥

पाण्डव-दल गमनित हुआ, लेकर विजयनिशान ।
उसदिन अर्जुनको बड़ा, दिलही दिल अभिमान ॥
अन्तर्यामी ने कहा, उधर न जाओ पार्थ ! ।
नहीं कर्ण–संहार में, तेरा कुछ पुरुषार्थ ॥

वह परशुराम का महाशाप, मिथुनी का शाप सहायक था ।
अन्यथा कर्ण के बधने में, हे अर्जुन तू किस लायक था ॥
इस पर भी बाण मांग लेना, कुण्डल या कवच छुड़ा लेना ।
बतला तो कौन वीरता है, मरते का माथ उड़ा लेना ॥
में आगे ऊपर बजरङ्गी, नीचे शेष का सहारा था ।
अन्यथा कर्ण के बधने में, अर्जुन तेरा क्या चारा था ॥
खुल गये पार्थ के हृदय-पटल, छबि बढ़ी ज्ञानकी किरणों में ।
कुन्ती कुमार विह्वल होकर, गिर पड़े कृष्ण के चरणों में ॥

ज्ञान-रूप अशरण-शरण, लीलाधर घनश्याम ।
व्याप रहा है विश्व में, एक तुम्हारा काम ॥
तुम प्रेरक हो हर आत्मा के, हर आत्मा आज्ञाकारी है ।
हम सब इच्छा के पुतले हैं, यह इच्छा मात्र तुम्हारी है ॥
भगवान ! तुम्हारी माया का, साया न हृदय से जाता है ।
यह जीव अहम में पड़ कर खुद, कर्त्ता धर्त्ता चिल्लाता है ॥
कुछ आज अहम का भाव नाथ, आप ही आप उपजाया है ।
उपकार नाथ ! उपकार देव !, वह अंकुर वहीं मिटाया है ॥

पाण्डव-दल ने शांति से, किया रात विश्राम ।
इति विनीत आनन्द से, जय जय श्रीघनश्याम ॥ इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ महाभारत ॥

॥ शल्य-पर्व ॥

॥ प्रार्थना ॥

पूछा हृदय से मैंने आराम कहाँ है ? ।
उसने कहा हमारा सुख धाम जहाँ है ॥
बेकार पूछते हो, राहगीर का ठिकाना ।
घर है वहीं हमारा, विश्राम जहां है ॥
क्या जीविका बतायें, धन्धा किसे दिखायें ।
जागीर वहीं समझो कुछ काम जहां है ॥
क्या स्वर्ग में धरा है क्या नर्क में धरा है ।
मनमूद चल वहां पर, घनश्याम जहां है ॥
गोपाल भक्त ऐसा तुमको न मिल सकेगा ।
बतलाओ मुझ सरीखा, बदनाम कहां है ॥
'गोविन्द' के लिये भी, कोई उपाय सोचो ।
तुम जानते हो मेरा, परिणाम कहां है ॥

॥ शल्य-वध ॥

उठे आज संसार से, दो सच्चे सरदार ।
दुर्योधन की नाव फिर जा, पहुँची मँझधार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीष्म या द्रोण के मरने से, सेना की ताकत टूटी थी।
पर कर्ण वीर के रहने से, आशा न विजय की छूटी थी॥
था राज्य भार दुर्योधन पर, दुःशासन पर असवारी थी।
कौरव-दल के सरदारों में, कर्ण पर ख़तम सरदारी थी॥
चल पड़ा आज वह बलशाली, जो कल पाने को साथ रहा।
कल पाने वाला निकल गया, केवल कलपाना हाथ रहा॥
वह विकल आंसुओं के जलसे, उस विषय जलन को धोता है।
आती है याद दुशासन की, तो कभी कर्ण को रोता है॥

कृतवर्मा कहने लगा, अब रोना बेकार।
लड़ने-मरने के सिवा, नहीं दूसरा सार॥

ना समझ! न आई समझ तुम्हें, मोहन के भी समझाने से।
अब आयेगा क्या हाथ भला, यों पड़े-पड़े बिलपाने से॥
मानस पीड़ा खोने वाली, अब दवा हाथ से निकल गई।
जिससे न हवा आ सकती थी, वह हवा हाथ से निकल गई॥
अब रुदन करो या हँसा करो, दोनों का कुछ परिणाम नहीं।
मरने से पहले अब हमको, है कहीं शान्ति का नाम नहीं॥
इसलिये न चुपके पड़े रहो, आगे के लिये विचार करो।
कर्ण की जगह कौरव-दल का, शल्य को सुबड़ सरदार करो॥

दुर्योधन ने शल्य को, दिया उठाकर ताज।
फिर टूटे दिल से उठी, फूटी सी आवाज॥

मामाजी! अब इन हाथों में, लूले-लँगड़ों की गाड़ी है।
जिसके चौतरफा झाड़ी है, फिर अन्धा कुआँ अगाड़ी है॥
ले चलो इसे चल सके अगर, चलना क्या है टिसकानी है।
चाल ही साफ दिखलाता है, गाड़ी गड्ढे में जानी है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शल्य ने कहा यह जाय कहीं, काबू भर जोर लगाऊँगा।
जीवन की अन्तिम श्वासों तक, इस दल की आन बचाऊँगा॥

प्रात हुआ धोंसा बजा, चले वीर किलकार।
अपनी-अपनी पक्ष पर, फिर पहुँचे सरदार॥

पार्थ से शल्य भीम से द्रोणी, सहदेव शकुन के साथ हुए।
भिड़ गये नकुल कृतवर्मा से, धर्म के नृपति से हाथ हुए॥
फिर वही मार संहार वही, चिक्कार वही ललकार वही।
जयकारों में मिलती जुलती, फिर गूँजी हा हाकार वही॥
झट लटक पड़े कुछ अटकपड़े झटपट में खटक कृपाण पड़ी।
कुछ भटकपड़े कुछ लटकपड़े, जिनपर जबचटक कमान पड़ी॥
सर सर बनकर शरनिसर निसर, सरकसर-कसर सरदारों के।
कर कर बिस्तर बन बिखर रहे, दम ले-लेकर दमदारों के॥
घोड़े चिकार दम तोड़ चले, कुञ्जर कराह मुँह मोड़ चले।
कुछ बाण धनुषसे जोड़चले, कुछ धनुष बाणको छोड़ चले॥

वहां आपसी युद्ध में, जूझ रहे सरदार।
यहां पार्थ ने शल्य का, दिया सारथी मार॥

सारथी मार रथ तोड़ तोड़, घोड़े बिडार संहार दिये।
शल्य ने दूसरा यान साज, सब तितर बितर सरदार किये॥
तब बज्र धार हुँकार पार, बलकारी पवन-कुमार चले।
कर धुवाँ-धारसी मार मार, सेना का सार उतार चले॥
कुछ तोड़-मोड़ कुछ जोड़-जोड़, कुछ फोड़-फाड़कर चोका दिये।
कुछ मरे दहाड़ों के मारे, कुछ मारे और पछाड़ दिये॥
कुछ मसल गये कुछ पिचल गये, कुछ उथल पुथल में बिचल गये।
कुछ भिड़ा किये कुछ मरे जिये, कुछ मोका पाकर निकल गये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीम वीर मथने लगा, कौरव दल इस ओर।
कुरु-पतिसे कहने लगा, खल शकुनी इस ओर॥

राजन्! अनियमित समरनहीं, इर तरफ प्रलय दिखलाती है।
इस अवसर पर तो महाराज, यह युक्ति समझ में आती है॥
सेनायें इधर लड़ रहीं हैं, मैं पीछे बाण प्रहार करूँ।
इस बेखबरी में छिपे-छिपे, पांडव दल को संहार करूँ॥
दुर्योधन बोला यह नैया, ले जानी है अब पार तुम्हें।
आगे आओ पीछे जाओ, मामा! यह है अधिकार तुम्हें॥
शकुनी फौरन पीछे पहुँचा, छिप-छिपकर बाण चलाने लगा।
अनजाने बिना ठिकाने ही, मनमाने वीर गिराने लगा॥

पता न चलता है किधर, कौन कर रहा? वार।
गिरते जाते हैं इधर, कितने ही सरदार॥

पार्थ से कहा मधुसूदन ने, अब यहाँ नहीं है काम हमें।
उस धूर्त नीच खल शकुनी से, करना होगा संग्राम हमें॥
अर्जुन बलधर पीछे पहुँचा, उस खल छलिये पर मचल गया।
पर एक बार ही खाकर के, वह प्राण बचाकर निकल गया॥
त्यों ही सहदेव वीर वर ने, शकुनी का काम तमाम किया।
द्रोणी ने मार शिखंडी को, भारत में अपना नाम किया॥

यहाँ शल्य से धर्म का, मचा घोर संग्राम।
कहा धर्म ने सजग हो, शल्य वीर बलधाम॥

दल के सारे सरदारों को, भीमार्जुन ने संहारा है।
पर याद रहे तेरे ऊपर, इस रण में दांत हमारा है॥
वह समय आज आ पहुँचा है, दल बाले दल को मारेंगे।
कोई कुछ आज करे न करे, पर हम तुमको संहारेंगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों ने रथ छोड़कर, ली हाथ में कृपाण ।
सारा दल पैदल हुआ, मचा घोर घमसान ॥
बाणों की जगह कृपाण चली, एवं छोटे हथियार चले ।
भाले बिछुवे बरछे परिघे, कोतह कटार के बाण चले ॥
मुग्दर का गदर कहीं पर है, चल रही शूल-तलवार कहीं ।
गदका-फड़ियों की मार कहीं, धमकार कहीं चिक्कार कहीं॥
चढ़ गया किसी पर वीर कहीं, या कोई कहीं खदेड़ दिया ।
कर दिया कलेजा चाक कहीं, बखिया कहीं उधेड़ दिया ॥
चुपके-चुपके एक ने कहीं, यक दम से धावा बोल दिया ।
कर दिया किसीको खंड-खंड, खोपड़ा किसीका खोल दिया॥

चीड़-फाड़ में मिट गये, कितने ही सरदार ।
शल्य धर्म में फिर मची, तीरों की बौछार ॥

सेना वाले भी रथ पर चढ़, बाणों की झड़ी लगाने लगे ।
शल्य पर धर्म धर्म पर शल्य, अपने करतब जतलाने लगे ॥
शल्य ने धर्म का लक्ष्य बाँध, ज्योंही यम शस्त्र चलाया है ।
त्यों ही धर्म ने इन्द्र शर से, धन्वा भी काट गिराया है ॥
फिर शल्य शक्ति लेकर दौड़ा, धर्म ने उसे भी काट दिया ।
तीरों की मार मार करके, आधा दल-मण्डल पाट दिया ॥

लड़ते-लड़ते शल्य पर, पड़े गीध अरु काग ।
मानो जीवन भाग्य ही, चला आप से भाग ॥

सूरज पर छाया अन्धकार, सन्मुख सियार चिल्लाने लगे ।
बे वक्त सितारे टूट पड़े, बादल सहसा घुमड़ाने लगे ॥
पानी की जगह खून बरसा, शीश पर सवार उल्लू हुए ।
घोड़े हाँसे रथ लचक गया, झंडे के भी दो टूक हुए ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहीं वीर—संहारणी, की धर्म ने प्रहार।
एक आह के साथ ही, गिरा शल्य सरदार॥

शल्य का जहां संहार हुआ, मच गई वहां मारा मारी।
हा चला सैन्य में कत्लआम, शाहीपन रहा न सरदारी॥
जो जैसा जिसके आगे था, वह वहीं उसी पर टूट पड़ा।
लुट गया आप लुटकर उसे, दोनों का भांडा फूट गया॥
घोड़े- घोड़े लड़ मरे आप, रथसे भिड़कर रथ ही न रहा।
यह गिरा इधर वह गिरा उधर, यह भी न रहा वह भी न रहा॥
पांचों पांडव श्रीकृष्णचन्द्र, इस ओर खड़े दिखजाते हैं।
बाकी दोनों सेनाओं में, सरदार नजर में आते हैं॥

कृतवर्मा द्रोणी तथा, कृपाचार्य कुरु-राज।
छिपे कहीं रण भूमि में, छोड़ समरका साज॥

नृप ने समझा हो चुका, सारा दल संहार।
विजय—नाद करते हुए, लौटे लीला धार॥

❀ शुभमस्तु ❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* श्रीगणेशायनमः *

* महाभारत *

* गदा-पर्व *

दुर्योधन-बध

—o:::❀:::o—

* कथा-प्रारम्भ *

अभी न जाओ बाचको, धर्मराज के साथ।
हमें देखनी है अभी, समर भूमि की गाथ॥
उन्हें लौटते-लौटते, यहाँ हो चली शाम।
था अब वीरों की जगह, भूतों का संग्राम॥

सब कुरुक्षेत्र में रक्त मात्र, घुटनों से भी कुछ ऊपर था।
यानी लाशों से भरा हुआ, वह खूनी एक समन्दर था॥
घायल मुरदार नीम जान, बढ़ते हैं कहीं अटकते हैं।
अब भी आपस में गुथ मुथकर, झुरमुट में हाथ-झटकते हैं॥
रवि-भास लाल आकाश लाल, बादल भी लाल हो रहे हैं।
उस लाल लाल रण स्थल में, भारत के लाल सो रहे हैं॥
मखमली सेज कामनी-केलि, वह रङ्ग-महल को भूलायें।
वह हँसी खेल वह दिल्ली मेल, क्या हुए आज क्या बतलायें॥
वह विभव विलासा आज कहां, दीन हैं मलीन उदासी हैं।
वह खेल अपर घट के वासी, मरघट के बने निवासी हैं॥

छू न सका था इन्द्र भी, जिनके तनका बाल।
खोंचे जाते हैं उन्हें, कौवे गीध शृगाल॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन खाली खड़ा-खड़ा, चौतरफ आंख उठाता है।
सरदारों को चिल्लाता है, कोई भी नजर न आता है॥
अब वह शाही पोशाक न थी, खूनी लिबास दिखलाता है।
दुर्योधन कौरव-नाथ न था, बनकर अनाथ चिल्लाता है॥
दो-चार कदम इस ओर दिये, दो-चार कदम उस ओर दिये।
पृथिवी ने अपनी थाह न दी, हा हा पृथिवी नाथ के लिये॥
उस ओर भूमि में खड़ा-खड़ा, जब दुर्योधन नृप ऊब गया।
तो विह्वल होकर बहते ही, खूनी गड्ढे में डूब गया॥

अब बेचारा आप हीं, लगा चलाने हाथ।
पार हुआ उस रक्त से, एक लाश के साथ॥
उस शवके मुखपर पड़ा, मणिका तनिक प्रकाश।
देखा तब गुरुनाथ ने, है बेटे की लाश॥

दुर्योधन उससे लिपट गया, बोला बस मैं बेकार हुआ।
जो जग से निराधार भागा, वह कुल सपूत से पार हुआ॥
सच्चे सपूत अपने कुल को, मर कर भी पार लगाते हैं।
लेकिन कुपूत कुल के कलङ्क, दोनों ही आन डुबाते हैं॥

कुन्ती माता ने यहाँ, सुना विजय का नाद।
विजय-हार ले हाथ में, चली सहित आह्लाद॥

बोली पिशाच को वध करके, जननी की आन बचाई है।
इस महा-विजय के लिये धर्म, माता की प्रथम बधाई है॥
धर्म ने कहा यह विजय आज, केवल भीम ने दिखाई है।
इसलिये पाण्डवों में पहले, झटपट भीम को बधाई है॥
भीम ने कहा क्या कहते हो, यह भार यहां बेकार दिया।
उस जय का पात्र उसे समझो, कुरु-पति जिसने संहार दिया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुन्ती बोली क्या कहा ? भीम, कुरुनाथ नहीं संहार हुआ ।
नृप नाकी है तो सेना का, यह खूँ-खच्चड़ बेकार हुआ॥
भानुमताप के हाथों से, भूप ही निकलने पाया था ।
जिसने तपसी बनकर नृपका, सर्वस्व नाश करवाया था ॥
कृष्ण ने कहा-ठहरो फूफी, हम उसका पता लगाते हैं ।
दुर्योधन का संहारण कर, रात ही रात में आते हैं ॥

केशव-पाण्डव गण चले, समर भूमि की ओर ।
मचा हुआथा जिस जगह,महा प्रलयका शोर॥

जिस जगह विश्व के वीरों पर, गीदड़ अधिकार जमाये थे ।
जिस जगह हिन्द के हीरे सब,मिट्टी में मुँह लटकाये थे ॥
जिस जगह भूत भैरव पिशाच,हिल-मिल त्यौहार मनाते थे।
भारत माँ के आधार जहाँ, आधार-हीन सिसकाते थे ॥
योगिनी प्रेत खप्पर भर कर, चौतरफा रक्त उलीच रहे ।
उन सूखी आशा बेलों को, खूनी धारों से सींच रहे ॥
जिस जगह दीन से दान आज, राजों के पद पर आया है ।
मानो धर्म की लड़ाई ने, शुचि साम्यवाद फैलाया है ॥

देखा पाण्डव-वृन्द ने, चहुँ दिशि दृष्टि उठाय ।
पर न कहीं आया नजर, उनको कौरव राय ॥

एक भील से राह में, प्रभु ने किया सवाल ।
वह बोला मुझको नहीं,इतना अधिक खयाल॥

वह राजा था या भिक्षुक था, इतना तो नहीं समझता हूँ ।
हां जो कुछ मैंने देखा है, उतना चरित्र कह सकता हूँ ॥
था सब शरीर लोहू लुहान,मणियों का मुकुट शीश पर था ।
चहरे पर घोर विकलता थी, टूटा-फूटा कुल बख्तर था ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डेरों से चला आरहा था, जाता था व्यास-सरोवर को।
हे नाथ! अभी कुछ ही पहले, देखा है मैंने उस नर को॥

यहाँ भील भगवान को, रहा पता बतलाय।
वहाँ सरोवर के निकट, पहुँचा कौरव-राय॥
ज्यों त्योंकर उस रुधिरसे, निकल सका कुरु-वीर।
गया हांपता-कांपता, भानुमती के तीर॥

वह भेष देख उठते उठते, ठिठकी रानी चकरानी सी।
आंखों से आंखें मिल न सकीं, बोली भाव भुलानी सी॥
हा प्रियतम यह क्या हालत है, कम्पित हो रहे लुटाने से।
नर-पति हो किन्तु बिकाने से, आये हो मगर भुलाने से॥
सारा शरीर लोहू लुहान, पट-भूषण कहां गंवाये हो।
आंखें न ठहरने पाती हैं, आज तो बहुत घबराये हो॥

कुरु-पति बोला बस प्रिये, है यह अन्तिम रूप।
अब है तू रानी नहीं, मैं न किसी का भूप॥

दो चार घड़ी का जीवन है, यह अन्त समय की माया है।
तुमसे मिलने का मोह फकत, खींचकर यहां ले आया है॥
हो चुकी सैन्य संहार सभी, वीरों का हुआ सफाया है।
इतनी लालसा बुझाने को, किस्मत ने मुझे बचाया है॥
मैं भी शांति से पयान करूँ, इतनी ईश्वर से दुआ करो।
प्रियतमे! आखिरी भेट करो, प्रियतमे! आखरी विदा करो॥

भानुमती कहने लगी, तब न हुआ कुछ चेत।
अब पछिताये होत क्या, चिड़ियां चुगगईं खेत॥

मैं क्या! दुनियां के कहने से, दूषित ममतायें धुल न सकीं।
की लाख कोशिशें लोगोंने, पर मदमय आंखें खुल न सकीं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब रण वृथा ही जायेगा, काले वस्त्र पर चढ़ाने से।
क्या लाभ भला हो सकता है, मुरदे को अमृत पिलाने से॥
इससे मेरी भी सम्मति है, जो करते थे सो काम करो।
हे नाथ! विदाई देती हूँ, जाओ अन्तिम संग्राम करो॥
अब जोड़ांपर भी दिल न जुड़ा, तो अब हाथोंको जोड़ो ना।
छोड़ दो गेह छोड़ दो नेह, पर वीर प्रतिज्ञा तोड़ो ना॥

नाथ-नाथ से प्रियतमा, मिली प्रेम के साथ।
गया पिता के भवन में, फिर उठकर कुरु-नाथ॥

जीवन में कभी न देखी थी, जितनी उस रोज सिधाई थी।
मानो विष-बेल सुखा करके, अमृत सिन्ध में डुबाई थी॥
था सच्चा पूत आज कुरु-पति, सच्चा विरही सा बाप था वह।
पाठकगण यही समझलीजे, अन्तिमदिनका मिलापथा वह॥
चरणों में दुखिया लोट गया, वह बूढ़ा बदन निहार चला।
अथवा अन्तिम हाहा करके, उस ऋणका भार उतार चला॥

अन्धे नृप ने भी कहा, लेकर लम्बी सांस।
बेटा! होता है वृथा, अब अन्त में उदास॥

तेरी उस वीर परीक्षा का, यह सबसे अन्तिम साधन है।
है एक तोल पर वचन मात्र, दूसरी तोल पर जीवन है॥
यदि आज वचन के पल्ले से, जीवन भारी दिखलायेगा।
तो याद रहे जीवन कलङ्क, जीवन में कभी न जायेगा॥
इसलिये हमारी सम्मति है, अब रण से पीठ दिखाओ ना।
अब धन परिवार गँवा बैठे, ये रण भी तात! गँवाओ ना॥

गाँधारी ने भी कहा, अरे केहरी वीर!
करती हूँ रण मात्र में, सारा वस्त्र शरीर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांडव क्या आये काल स्वयं, पर विजय न तुझसे पायेगा।
जो अस्त्र चलाया जायेगा, वह दो टुकड़े हो जायेगा॥
मेरे लाड़ले नग्न होकर, यदि निकल सामने जायेगा।
तो वज्र-देह हो जायेगी, वज्रांगी ही कहलायेगा॥
मेरे बोने संकोच न कर, आज्ञा पालन ही करतब है।
माता की नजरों में बेटा, जैसा तब था वैसा अब है॥

दुर्योधन को मातु का, था पूरा विश्वास।
फिर भी लज्जा ने किया, इसको तनिक उदास॥
एक वस्त्र बारीक सा, कटि अङ्गों पर डाल।
गांधारी के सामने, जा पहुँचा तत्काल॥
गांधारी ने भी वहीं, दिया नयन पट खोल।
पर वह हालत देखकर, बोल उठी दो बोल॥
सच है हों जिससे विमुख, माया-पति घनश्याम।
अमृत भी उसके लिये, करे जहर का काम॥

बेटा तुझ को मिटा गई, इतनी आंखों की चोरी है।
हो गया अङ्ग है वज्र सभी, पर जंघों में कमजोरी है॥
जंघों के ऊपर शस्त्रों का, होगा कोई अधिकार नहीं।
कटि से नीचे यदि घाव लगे, तो मैं हूँ जिम्मेदार नहीं॥
धृतराष्ट्र बीच में बोल उठे, कुछ रोज न अब संग्राम करो।
कुछ दिन तक व्यास-सरोवर में, जाओ बेटा विश्राम करो॥

विदा हुआ मां-बाप से, मिलकर कौरव-नाथ।
व्यास सरोवर की तरफ, बड़ा वेग के साथ॥
वह महा अगाध सरोवर था, कोई न पार पा सकता था।
हाँ देवी शक्ती के कारण, दुर्योधन ही जा सकता था॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण ? जन्म के समय ही से, थी कमला की इमदाद उसे ।
जल-स्तम्भन की इसी लिये, थी कला जन्म से याद उसे ॥

अस्तु इसी आधार पर, चला गया कुरु नाथ ।
यहाँ बढ़े भगवान भी, धर्मराज के साथ ॥
व्यास-सरोवर के निकट, पहुँचे सब सरदार ।
किन्तु धर्म कहने लगा, देख घोर विस्तार ॥

भगवन् ! यह व्यास सरोवर है, या वैतरणी का सागर है ।
यह प्रलय पवन के झोंके हैं, या महा प्रलय का चक्कर है ॥
इसकी केवल लहरों ही से, आंखों को चक्कर आता है ।
भगवन् इस महा समुन्दरमें, फिर कौन किस तरह जाता है ॥

कृष्णचन्द्र कहने लगे, सच कहते हो तात ! ।
यह विद्या तो है फकत, कुरु-पति ही को ज्ञात ॥

बेशक इस महा सरोवर से, कोई न पार पा सकता है ।
हां एक उपाय लड़ाने पर, कुरु-पति बाहर आ सकता है ॥
एक कोई बात दूसरी है, जो किया गया संग्राम नहीं ।
अन्यथा बात तो यह सच है, कुरु-पतिमें भयका नाम नहीं ॥
वह प्राण-हानि सह सकता है, अपमान नहीं सह सकता है ।
यदि वीर हांक दे दी जाये, तो मौन नहीं रह सकता है ॥
यदि भीम यहीं बाहर ही से, उसको कुछ हाँक सुनायेगा ।
तो मैं विश्वास दिलाता हूँ, वह निश्चय बाहर आयेगा ॥

धर्म राज ने कृष्ण की, ली वह सम्मति मान ।
तथा वहीं से भीम भट, गरजा मेघ समान ॥

ओ कुल कलंक ! कायर ! कुपूत, सिंह का कान खुजलाया है ।
अब वह जोशों पर आया है, तो यह चेटक फैलाया है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओ वीरों के खाने वाले, छोड़ दे नारियों का अंचल ।
जो सच्ची माँ का बेटा है, तो हे दुर्योधन बाहर चल ॥

दुर्योधन इस हाँक पर, उठ बैठा तत्काल ।
पर कमला कहने लगी, ठहरो वीर कृपाल ॥

तुम आज रात को बात मान, सरवर से बाहर जाओ ना ।
है काम शांति की चालों का, उनकी चालों में आओ ना ॥
दुर्योधन यह सुन बैठ गया, लक्ष्मी बहुत लाचार पड़ी ।
लेकिन फिर से उन कानों में, भीम की वीर हुँकार पड़ी ॥
ओ अड़ियल पहले दम भर कर, कुल का विध्वंस कराया है ।
अब अपने प्राणों के भय से, नारी की ओट छिपाया है॥
लानत है इस मर्दानी पर, थूके काबिल है ऐसा बल ।
जो असली बिन्दु पिता का हो,तो हे दुर्योधन बाहर चल ॥

दुर्योधन इस हाँक पर, उठा दूसरी बार ।
कमला बोली व्यर्थ क्यों, मरते हो सरदार ॥

यह भीम वीर की हांक नहीं, आवाज काल की आती है ।
यह होनहार होनी बन कर, अनहोनी तुम्हें बुलाती है ॥
यदि मृत्यु तुम्हारी हुई कहीं, तो मैं अनाथ हो जाऊँगी ।
हे भाग्य शील छोड़ कर तुम्हें, किसके दरवाजे जाऊँगी ॥
यदि आज रात संतोष करो, तो मैं कौतुक दिखला दूंगी ।
पांडव बेचारे तो क्या हैं ?, त्रै-लोक विजय दिलवा दूंगी ॥

कौरव-पति इस बार भी, बैठ गया मनमार ।
किन्तु तीसरी बार भी, उठी वही हुँकार ॥

मालूम हुआ मालूम हुआ, तू कोरी शान दिखाता था ।
सिंह के चाम में छिपा हुआ, गीदड़ भभकी दिखलाता था॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धिक्कार तुझे मेरी तेरी माँ को, लानत है तेरे कुल को खल ।
जो अबभी हुरमत बाकी हो, तो हे दुर्योधन बाहर चल ॥

इस तीसरी पुकार पर, रुक न सका रण धीर ।
गदा पटक दी हाँक भर, कम्पित हुआ शरीर ॥

बोला बस कमले क्षमा करो, अब यहां नहीं रह सकता हूँ ।
सह सकता हूँ वज्र की बात, पर बात नहीं सह सकता हूँ ॥
वैरी दरवाजे खड़ा-खड़ा, तालों पर ताल लगाता है ।
अफसोस ! मगर शत्रुका काल, कालसे आज घबराता है ॥
कमले ! बस मुझको विदा करो, बल धरको धीरु बनाओ न ।
ना क्षुद्र प्राणों के लालचमें, अपनी आनसे गिराओ ना ॥
जल जाय एक चिनगारी से, देवी संपति वह रुई नहीं ।
कमले ! सब हुए तुम्हारे हैं, तुम मगर किसीकी हुई नहीं ॥
मेरे मरने पर और तुम्हें, दूसरा नाथ मिल जायेगा ।
पर वीर-कलङ्क मुझे लगकर, फिर कभी न धोने पायेगा ॥

योंकहकर गमनित हुआ, वीर जननिका लाल ।
लिपट गये कुरु-नाथ से, रोकर धर्म कृपाल ॥

बोले भैया ! बस इस मतिपर, सारी गति-पति बलिहारी है ।
मैं जय पाकर भी हार चुका, मिटकरभी विजय तुम्हारी है ॥
बस चलो बन्धु ! हो चुकासमर, जो करते थे सो कामकरो ।
तुम राजकरो आराम करो, हाजिर हैं हमें गुलाम करो ॥
हम अबभी सच्ची आत्मासे, तत्पर हैं हुक्म बजाने को ।
बस वही गांव दे दो भैया, अपनी जीविका चलाने को ॥

कुरु-पति बोला रुदनकर, अब न करो लाचार ।
वचन-वज्र मारो न यों, लो यह शीश उतार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह साधु वृत्ति यह सज्जनता, जिसपर संसार निछावर है।
पांडव-दलका साराबल-बल, हे धर्म! तुम्हींपर निर्भर है॥
दिल कहता है इन चरणों में, अपना सर्वस्व चढ़ा डालूँ।
पहिना दूं पैरों में पनहीं, इस तन का चाम खिचा डालूँ॥
वास्तव में मेरा करतब था, तुमको अधिकार दिलाने का।
इस सत्य-मूर्ति की आज्ञामें, अपना सर्वस्व लगाने का॥
पर देवी माया के कारण, काँटा बनकर शुचि फूल रहा।
देह ने जीव को रिपु समझा, सूर्यसे कमल प्रतिकूल रहा॥

इस आज्ञा का पालना, है मेरा कर्त्तव्य।
लेकिन टलने का नहीं, भैया अब भवितव्य॥

आ गया तुम्हारा शांतिसमय, शान्तिसे हमें भी सोना है।
हम तुम संग्राम करें न करें, पर मौत हमारी होनी है॥
अब तनिक मोह या ममतामें, क्यों मेरा प्रण तुड़वाते हो।
दिलवादो भैया! स्वर्ग राज्य, क्या भारत-राज्य दिलाते हो॥
मत मांगो पांच गांव अबभी, तब वीर प्रतिज्ञा पालेंगे।
हम कहें न रत्तीभर देंगे, तुम कहा करो हम ले लेंगे॥
बस इसी आनमें बँधे हुए, वीर की तरह संहारण हो।
तुम भूप बनो इस भारत के, स्वर्ग का भूप दुर्योधन हो॥

धर्म राज कहने लगा, धन्य वीर बलधाम।
मगर पांच से एक का, हो कैसे संग्राम॥

यदि तुम्हें आन ही रखना है, तो एक समान सहाई लो।
हम पांचों में से जो चाहो, कोई से भी दो भाई लो॥
दुर्योधन बोला नीतिसे धर्म, ऐसा होना आवश्यक है।
पर आज तुम्हारा बल बूता, केवल इन भीमार्जुन तकहै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि इन्हें साथ में ले बैठूँ, तो अर्थ व्यर्थ हो जावेगा।
वह इच्छित फल वह विजय लाभ, आते-आते खो जावेगा॥
दे देकर आँच खिला गुलमी, तो बतलाओ वह खिलना क्या।
शत्रु की मददसे अगर मुझे, स्वर्ग मिला तो मिलना क्या॥

कहा धर्म ने तो लड़ो, किसी एक के साथ।
कुरुपति बोला तो बढ़ो, तुम्हीं आज नर-नाथ॥

गोपाल पराये नौकर हैं, सारथी यहाँ बन आये हैं।
बाकी भाई हैं प्रजा-रूप, धर्म के दास कहलाये हैं॥
इसलिये किसी से समता से, हे वीर आज अपमान यहां।
यदि न्याय-पूर्वक पूछो तो, हम तुम हैं एक समान यहां॥

धर्मराज चकमक हुए सुनकर यह प्रस्ताव।
लीलाधारी ने वहीं, बदल दिया यह भाव॥

बोले कुरु-पति क्या कहते हो, यह कैसा न्याय निचोड़ा है।
राजा—राजा के नाते से, भीम का तुम्हारा जोड़ा है॥
पाण्डव-जन अपनी सेना का, राजा भीम को बनाये हैं।
हम लोग उसी की आज्ञा से, तुम तक लड़ने को आये हैं॥

कुरु-पति बोला हे मुझे, ऐसा ही स्वीकार।
शीश-झुकायें भीम को, अगर धर्म-अवतार॥
धर्म-पक्ष के और भी, अब न रह सके होश।
ताक उठे मुँह कृष्ण का, खड़े हुये खामोश॥

कारण उस कठिन समस्या में, यह भय था शीश झुकाने में।
धर्म का माथ झुक जाना तो, होती न देर जब जाने में॥
माया धारी ने आँखों में, संकेत सभी समझा डाले।
भीम के हाथ में प्रगट हुए, मुरली बनकर मुरली वाले॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म ने वहीं सिर झुका दिया, माधव का ध्यान लगा करके।
दुर्योधन भी झट खड़ा हुआ, जीवन का मोह भुला करके॥

गदा युद्ध होने लगा, वायु-वेग के साथ।
एक एक के हाथ पर, लगे दिखाने हाथ॥

दोनों समान बलवान वीर, दोनों गुमान गर्वीले हैं।
दोनों विशुद्ध दोनों त्यागी, दोनों ही परम हठीले हैं॥
कमला उस ओर सहायक है, कमला-पति यहाँ सहायक हैं।
वह कौरव-दल का नायक है, यह पांडव दल के नायक हैं॥
अपने प्रण के सरदार थे यह, तो मद-बल का भंडार था वह।
यह पवनतत्व अवतारी थे, तो कलयुग का अवतार था वह॥
दोनों हुंकार मार बढ़ कर, बारों पर वार दिखाते हैं।
काट कर एक का काट एक, दूसरा काट जतलाते हैं॥

दुर्योधन ने भीम पर, किया एक वह वार।
गिरते गिरते बच गया, चकरा कर सरदार॥

करुणाकर देखा जहाँ, करुणाकर की ओर।
त्यों ही करुणा के सहित, चितये नन्दकिशोर॥

संकेत नाथ का पाते ही, भीम ने जांघ पर वार किया।
गिर पड़ा भूमि पर दुर्योधन, देवों ने जय जय कार किया॥
वीर के भूमि पर गिरते ही, की बात प्रहार वृकोदर ने।
तत्काल वहीं धिक्कार दिया, उन धर्म-शील सत् सागर ने॥
ओ अन्यायी जांघ पर वार, वीर का घोर अन्याय है यह।
हट दूर वीर पर घात-घात, बतला तो कौन उपाय? है यह॥
बस सावधान! यदि घात कहीं, कुरुपति पर पड़ने पायेगी।
तो इस अनीति के साथ-साथ, मेरी तेरी बन जायेगी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा भीम ने भ्रातवर, करो न इसका खेद।
क्या तुमको जाहिर नहीं, मेरे बल का भेद॥
इस पामर ने पांचाली को, जंघे पर रखना ठाना था।
जांघ ही तोड़कर सेवक को, उसका प्रण मुझे चुकाना था॥
माधव बोले क्यों कौरवेन्द्र, उस दिन समझ में आता था।
धर्म का वैर पार्थ का समर, उस समय खेल दिखलाता था॥
क्यों दुर्योधन वह आन बान, वह हठ का ध्यान कहाँ पर है।
पहला अरमान कहाँ पर है?, पहिला अभिमान कहाँ पर है॥

दुर्योधन कहने लगा, सुनो कृष्ण भगवान।
दुर्योधन को आज भी, है वैसी ही शान॥
अपने जीवन रहते-रहते, दुश्मन को हम लेने न दिया।
दम और कदम से बिन रहते, देश में कदम देने न दिया॥
अन्तिम श्वांसोंके तारोंतक इस प्रण-धरका बल टल न सका।
चल गये तुम्हीं अपने पथसे, पर मुझ पर चारा चल न सका॥
अब तक जीवन की आन रही, अब झांकी हुई तुम्हारी है।
वैसे भी विजय हमारी थी, ऐसे भी विजय हमारी है॥

इससे अब पूछो न यों, मेरी अन्तिम आन।
कुछ अपनी भी ओर को, देखो कृपा निधान॥
बचपन से बोलो आज तलक, कितने दिन नीति निभाई है।
मेरे विचार में तो अब तक, बस विद्या ही फैलाई है॥
इसमें कोई सन्देह नहीं, तुमने दुष्टों को मारा है।
पर यह अवतारी ताकत है, इसमें क्या नाम तुम्हारा है॥
यह काम बिना अवतार लिये, तुम स्वयं एवं कर सकते थे।
दुनियाँ के सारे बलशाली, आप ही आप मर सकते थे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैदा होने पर मरने की, निश्चय ही कोई सूरत थी।
फिर इतने छल-बल करने को, तुमको ही कौन जरूरत थी॥
हमने माना हम लोगों ने, करणी का ही फल पाया है।
लेकिन निष्पक्ष बात यह है, तुमने भी नाम डुबाया है॥

तुमने अब से दुष्ट ही, किये न वध गोपाल।
करवा डाले भक्त भी, कितनी जगह हलाल॥
हम बेचारे जीव हैं, हमको क्या अधिकार।
करना-धरना है हमें, प्रभु इच्छा अनुसार॥
पर इच्छा ही हो अगर, त्रिये दोष मय भाव।
स्वयं विश्व पर भाव का, होगा बुरा प्रभाव॥
भला किया जोकुछ किया, तुम जानो घनश्याम।
तुम्हें तुम्हारे चरित को, अन्तिम बार प्रणाम॥
भक्त-वश्य कहने लगे, करो न नृप बौछार।
सोच-समझकर आप ही, करो वीर! निर्धार॥

सुख दुख हो लाभ हानि कुछ भी, जो जिसके आगे आई है।
वह फकत दान या दण्ड नहीं, तुम सबकी पूर्व कमाई है॥
जिससे अपने को जिस लायक, पहले से पात्र बनाया है।
मैंने केवल उनके निमित्त, इतना संयोग जुटाया है॥
जिसको जो था वरदान शाप, उसका बदला न दिया होता।
तो बोलो दुनियाँ क्या होती, इस लीलाका फल क्या होता॥
तुम जिसको छल-बल समझेहो, वह प्रकृति मात्र कहलाती है।
जो जीवों के कर्मानुसार, उल्टी सीधी हो जाती है॥

बेशक रण में भक्त भी, किये गये संहार।
पर वे फल भी पा गये, निज इच्छा अनुसार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन ? तुमको आज तलक, असली मायाका ज्ञान नहीं।
भक्तों को देखा भाला है, पर भक्तों की पहिचान नहीं॥
ज्ञानी हो चाहे योगी हो, संयमी पूर्ण आचारी हो।
अपने कर्मों से कर्म-वीर, चाहे जिसका अधिकारी हो॥
अपने सुकर्म से सभी पुरुष, इच्छित पद पर रह सकते हैं।
पर मद्रा योगी को भी हम, भक्त नहीं कह सकते हैं॥
है एक पुरुष जो कानूनन, अपने हकूक पा जाता है।
दूसरा पुरुष जो प्रेत मात्र, पालन कर मुझे रिझाता है॥
अब कानूनी अपराध करे, तो दण्ड उठाने लायक है।
भक्त भी अगर पाप में पड़े, तो वह फल पाने लायक है॥
बस ज्ञानी को कर्मानुसार, उसका लेखा भर देता हूँ।
भक्त को जहाँ तक बनता है, पाप से दूर कर लेता हूँ॥
कारण ? ज्ञानी अपने बलपर, सब कुछ करने को कहता है।
पर भक्त बिचारा सब प्रकार, मेरे ही आश्रित रहता है॥

भक्त-वत्स तो नाम ही, है मेरा विख्यात।
ज्ञान दूसरी बात है, भक्ति दूसरी बात॥

भीष्मादि भक्त थे 'अहम' लिये, समझे न बात समझाने से।
इसलिये पाप के कर्मों ने, पहुँचाया उन्हें ठिकाने से॥
राजन् ! नर उत्तम बनता है, उत्तम कर्तव्य निभाने से।
कोई न भक्त बन जाता है, केवल माला सटकाने से॥
मेरा बनकर मेरी न सुने, मेरे नियमों को भङ्ग करे।
वह भक्त नहीं अन्यायी है, जो पाप करे अप सङ्ग करे॥

अस्तु न रक्खो व्यर्थ का, मेरे शिर पर दोष।
भूप ! खा गया आपही, तुम्हें तुम्हारा जोश॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौरव पति कहने लगा, सब है लीलाधाम।
पाया है हमने स्वयं, अपना ही परिणाम॥
हम ज्ञानी थे कर्मवीर, लेकिन सच्चे अभिमानी थे।
महिमा न तुम्हारी समझे थे, अपनी शक्तिके गुमानी थे॥
अपनी मतिमें भला बुरा, वास्तव में कर्म कमाया है।
हे दया-धाम! बिलकुल सच है, उस करणी का फल पाया है॥
विद्या विवेक बल धन कुटुम्ब, वास्तव में कोई शक्ति नहीं।
अब समझ पड़ा है व्यर्थ सभी, यदि एक तुम्हारी भक्ति नहीं॥
पर अब क्या? मुरदारको, मिला सुधाका पान।
एक बार देखो इधर, भक्त-वश्य भगवान॥
यहाँ अहम के दोष से, किया भक्त का काज।
वहाँ शरण के नाते से, रखियो अब की लाज॥
जाओ कृष्णेश! नीच कुरुपति, इस गतिका ही अधिकारी है।
इस जगह पार्थ की बारी थी, अब वहां हमारी बारी है॥
जाओ अर्जुन! जाओ नरपति, अब आगे कहना नाहक है।
मैं खुद ही इसे जानता हूँ, आधार तुम्हें माधव तक है॥
पर मेरी तरह राजसी में, नरपति मनमानी करियो ना।
हांगज अनीति पधारियो ना, केशव की प्रीति बिसरियो ना॥
जाओ भैया तुमको सारा, साधन केवल केशव तक हो।
यह शासन तुम्हें मुबारिक हो, यह मरना हमें मुबारिक हो॥
नयन-नीरभर सकल जन, मिलगमने यदुनाथ।
जय श्री लीलाधाम की, कहो प्रेम के साथ॥

॥ समाप्त ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

❀ महाभारत ❀

॥ सौप्तिक-पर्व ॥

❀ प्रार्थना ❀

तुम्हीं बताओ जीजाधार ! ?
हमारा है ? ही क्या अधिकार ॥
सुख दुख जीवन-मरण अयश यश, सभी तुम्हारे हाथ ।
पाप-पुण्य के हम भागी हैं ?, किस बिरते पर नाथ ॥
कलङ्कित करते हो बेकार ।
हमारा है ? ही क्या अधिकार ॥
कहीं हमें कर्त्ता बतला कर, मढ़ देते हो दोष ।
किसी जगह अपनी इच्छा, कह देते हो सन्तोष ॥
बताओ है ? क्या असली सार ?
हमारा है ? ही क्या अधिकार ॥
कहते हो तुम—हैं जीव—मात्र सब, मेरा ही तो अंश ।
कौन नाश करता है ? भगवन् ! यों अपना ही वंश ॥
उठता है इस भ्रम के कारण, घर-घर आज सवाल ।
इसे दूर करने को आओ, एक बार गोपाल ! ॥
तभी होगा कोई निर्धार ।
हमारा है ? ही क्या अधिकार ॥
रचा ही क्यों ऐसा संसार ।
हमारा है ? ही क्या अधिकार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❋ पाण्डव पुत्र संहार ❋

पहुँच शिविर में धर्म से, बोले लीला धाम ।
नहीं करेंगे रात में, आज यहाँ विश्राम ॥

है समय आजतक हलचलका, इसलिये अभी कुछ संभल चलो ।
आवश्यक है अस्त्र शस्त्र लेकर, हे धर्म ! यहाँ से निकल चलो ॥
अर्जुन फौरन ही ताड़ गये, प्रभु नैन भेद बतलाया है ।
पर आज हमारे जाने में, संहार किसी का आया है ॥
वे भक्ति-भाव के बन्धनमें, कुछ सुन न सके कुछ कह न सके ।
सारांश रातमें पाण्डव-गण, उस रोज शिविरमें रह न सके॥

अन्तर्ज्ञानी ने किया, वहीं शम्भु का ध्यान ।
तथा परस्पर भेंट कर, यों बोले भगवान ॥

भगवन् ! हम लोग जारहे हैं, डेरों की रक्षा तुम पर है ।
यह याद रहे यह महा युद्ध, आजकी रात पर निर्भर है ॥
शिव बोले केशव ! हाजिर हूँ, पर कीजो मत बदनाम मुझे ।
प्रत्यक्ष कहो या गुप्त कहो, करना है अन्तिम काम मुझे ॥
प्रभु बोले फल के साथ साथ, वृक्ष का फूल भी बहजाये ।
सीधा मतलब है कलियुग में, द्वापर का बीज न रहजाये ॥
जो रह जायेगा वह आगे, आप ही आप मिट जायेगा ।
हे भक्त-वश्य ! इस लीलामें, कुछ तुम्हें कलङ्क न आयेगा ॥

चार कोश चल शिविर से, ठहर गये वह वीर ।
पहुँचा द्रोणी इस तरफ, दुर्योधन के तीर ॥

देखा वह ताजदार घायल, मातम ताज का मनाता है ।
वीरों को दहलाने वाला, गीदड़ न भगाने पाता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगे से श्वान सूंघते हैं, पीछे गीदड़ चिपटाते हैं।
चमगीदड़ आंखें खींच रहे, उल्लू सिर पर उमड़ाते हैं॥
बेचारा उठकर हक्का कर, अपने को बहुत बचाता है।
पर अगला अङ्ग देखता है, तो पिछला खिंचता जाता है॥

आह आज इस हाल में, कौन एक नर-नाथ।
कह आता है देख यह, विषम शोक का साथ॥

ओ मरघट के रहने वाले, बतला यह साज समाज कहां।
ओ राज ताज के मतवाले, वह राज कहां वह ताज कहां?॥
ओ ममता पर मरने वाले!, अब भी बतला क्या तेरा है?।
मेरा है और न तेरा है, सब चिड़िया रैन बसेरा है॥
जिसपर फूला न समाता था, वह बेल अहमकी फल न सकी।
धन जन धरणीकी बात अलग, देहभी साथमें चल न सकी॥
जिसको अपना-अपना कह कर, अपना भी नाश कराया है।
सच तो बतला उस माया ने, तेरा क्या साथ निभाया है॥
वह जन न रहे वह तन न रहा, वह धन है और न धरणी है।
ओ मन के मौजी देख यहाँ, तू है या तेरी करणी है॥
ऐसी घटनायें सुन कर भी, हो कुछ न ज्ञान संचार तुझे।
ओ अन्तिम कहना इतना है, हे बार बार धिक्कार तुझे॥

अश्वत्थामा रो उठा, देख भूप का हाल।
द्रोणी भट से लिपट कर, कहने लगा नृपाल॥

भैया क्या लाभ उठाओगे, रोने से और रुलाने से।
हम एक ठिकाने पहुँच गये, तुम भी जा रहो ठिकाने से॥
यह रोना धोना बन्द करो, रोने के दिन तो बीत गये।
लड़ते थे तो रोना कैसा, हम हार गये वे जीत गये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस फलका अगर पता होता,तो जीवन क्यों निष्फल होता।
पड़ कर पांडाल चौकड़ी में,चिन्तामणिको क्यों ठुकराता॥
यदि करनी का फल देते हैं, तो दोष नहीं यमदूतों का।
रोना तो रोया जाता है, अपनी काली करतूतों का॥
इसलिए हमारी हालत पर, हे भटवर अश्रु बहाओ ना।
हो चुकी भेंट वर को जाओ, बस भैया मोह बढ़ाओ ना॥

द्रोणी बोला मौत पर, क्या शोक का सवाल।
किसी बहाने भी हमें, ले जायेगा काल॥

जो बढ़ता है वह गिरता है, होता है वही नशाता है।
जो फलता है वह झड़ता है, जो आता है जो जाता है॥
मैं केवल इसको रोता हूँ, कुछ अपनी सेवा कर न सका।
मर चला अन्न दाता मेरा, पर मैं मालिक पर मर न सका॥
जाओ नरेश जाओ बलधर, आन ही साथ में ले जाओ।
अरमान अगर कुछ बाकी हो,तो मुझको आज्ञा दे जाओ॥

कुरु-पति बोला देव ने, की पूरी सब आन।
किन्तु रह गया अन्त तक, एक वही अरमान॥

यदि अपने दावादारों का, संहार कहीं सुनने पाता।
तो इतना मुझे भरोसा है, सुख से यह प्राण निकल जाता॥
द्रोणी बोला कुछ कठिन नहीं, पर होगा पूर्ण विचार कहाँ।
नृप रहे नहीं तो बढ़ने का, फिर सेना का अधिकार कहाँ॥
कुरु-पति बोला है शेष अभी, मेरी श्वासों का तार यहाँ।
इस कारण अपनी चीजों पर, है मुझे पूर्ण अधिकार यहाँ॥
नृप घायल होकर भी अपना, बदला रिपु से ले सकता है।
वह अपनी सारी संपति को, जिसको चाहे दे सकता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये मित्र मैं आज तुम्हें, जो अपना ताज दे रहा हूँ।
जाओ अपना कर्तव्य करो, मैं तुमको राज दे रहा हूँ॥

मुकुट पहन कर चल दिया, अश्वत्थामा वीर।
गया रात ही रात में, कृतवर्म्मा के तीर॥

बोला जो युद्ध समाप्त हुआ, हो चुकी खतम सब उलझन है।
पाण्डव शिविरों में सोते हैं, मरघट में पड़ा सुयोधन है॥
इसलिये शेष जो योधा हैं, उनकी भी आज लड़ाई हो।
है यही रात बस भारत की, रातों ही रात सफाई हो॥
यदि सुबह निशान उठा कर हम, उनसे लड़ने को जायेंगे।
अर्जुन के तीखे बाणों में, तो ठहर न हरगिज पायेंगे॥
इसलिये भलाई इसमें है, रात ही रात भाग करदें।
या उनका नाम मिटा डालें, या अपना ही स्वाहा करदें॥

सम्मति करके उस तरफ, गमने दोनों वीर।
लेकिन शिर पर शम्भु के, लगे बरसने तीर॥

तीरों के तरल सनाके में, चल सकी न सनक लड़ाकों की।
उन ऊर्ध्व उड़ानों के आगे, उड़ गई उड़ान उड़ाकों की॥
दोनों ही ने मुँह मोड़ लिया, कुछ बल न दिया हथियारों ने।
वैसे ही खड़े-खड़े सोचा, आपस ही में सरदारों ने॥

कृतवर्म्मा बोला—

बोलो अब कौन उपाय करें, यह शिव के तीर करारे हैं।
जिनके आगे हम तुम तो क्या?, ब्रह्म-महेन्द्र भी हारे हैं॥
द्रोणी बोला ठहरो भाई, है समय निहायत उलझन का।
लेकिन ऐसी सूरत में भी, बल है उनके भोले पन का॥
अपना हित-अहित समझकर भी, देने में सकुच न खाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोले भण्डारी इसलिये, "अवढर-दानी" कहलाते हैं ॥
यों कह कर द्रोणी गया, महादेव के तीर।
इस प्रकार कहने लगा, नीति कुशल रण धीर ॥

❀ गायन ❀

सुर नर मुनि त्राता, शान्ति दाता मुरारी।
त्रिभुवन-सुख कारी, लोक आलोक कारी ॥
त्रिविध विभव धारी, आत्मा, आभा, प्रकाशी।
द्रवहु द्रवहु भोले, शम्भु, कैलाश-वासी ॥
जग मग लय कर्त्ता, विश्व हर्त्ता प्रयागा ॥
भव भय हर स्वामी, योग योगीन्द्र योगी ॥
अखिल हृदय व्यापी, सर्वतो खरड भासी।
द्रवहु द्रवहु भोले, शम्भु, कैलास वासी ॥
विनय मात्र पर द्रवित हो, बोल उठे भगवान।
प्रिय! मैं परम प्रसन्न हूँ, पुत्र! मांग वरदान॥

द्रोणी बोले प्रभु! हो प्रसन्न, तो बदला मुझे चुकाने दो।
छोड़ दो शिविरका बमुख द्वार, मुझको भीतरही जाने दो ॥
शिव बोले बेटा! इसमें तो, बट्टा मुझको भी आता है।
दीवार लांघ कर महावीर, क्यों निकल न अन्दर जाता है॥
द्रोणी बोला कोट ही अगर, मैं किसी प्रकार लांघ पाता।
तो इस प्रकार हा हा! खाकर, पास ही तुम्हारे क्यों आता॥
शिव बोले हे लाल, यह है विभूति का दान।
जो कि कोट के शूल से, तुझे करेगी त्राण ॥
वर पाकर द्रोणी वहीं, लांघ गया दीवार।
तथा शिविर में पहुँच कर, फैलादी घर मार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दासियां दास चिल्लाने लगे, नारियाँ सभी बिलपाने लगीं।
एक ही घड़ी में अन देखी, बीसों लाशें तड़फाने लगीं॥
घुप अन्धकार वह मार-मार, पर किसके द्वारा! पता नहीं।
रह गईं नारियाँ बिलपातीं, पर पुरुष एक भी बचा नहीं॥
कुछ ही देरी में द्रोणी ने, सोते वीरों को मार दिया।
जो बचे-खुचे भागे उनको, कृतवर्म्मा ने संहार दिया॥

पड़े हुए थे जिस जगह, पांचाली के पूत।
जा पहुँचा द्रोणी वहीं, बन कर यम का दूत॥
हत्यारे ने क्रोध में, काट दिये वह बाल।
उन पांचों के शीश ले, निकल चला तत्काल॥
कृतवर्म्मा द्रोणी तथा, कृपाचार्य्य ने जाय।
दुर्योधन से यों कहा, पाँचों शिर दिखलाय॥

राजन् यह उनके मस्तक हैं, रण रोपा जिनके कारण से।
यह अन्तिम सेवा पूर्ण हुई, हम उऋण हुए अपने ऋण से॥
मणि के प्रकाश में देख उन्हें, दुर्योधन बाहें मार उठा।
वाह की जगह पर आह उठी, आहा पर हाहा कार उठा॥
ओ काले दिलवाले तेरी, काली करतूतें अब तक हैं।
ओ हत्यारे? यह पांडव हैं!, या पांडव-कुल के बालक हैं॥
इस वैतरणी की तरणी में, धरणी की अभी गिरानी थी।
इसलिये तुझे जाते-जाते, यह हत्या भी ले जानी थी॥

चल चल अब परलोक को, पूर्ण हुआ सामान।
नहीं प्रलय तक जायगा, यह नर्क का निशान॥
दुर्योधन अब भी ममता तज, अन्यथा यहीं तड़पायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो आंख मोह की खुली रही, तो और द्रोह फैलायेगा ॥
काली काली करतूत खूब, अब काला मुँह करजा पापी ।
मर चुका खूब मद-ममता में, अब भी खुश से मरजा पापी ॥

❀ गायन ❀

देखली दुनियाँ की चाहत देख ली ।
जाओ हरामत रखो राहत देखली ॥
जान तक अरमान जाने के नहीं ।
आप ही अपनी शराफत देखली ॥
हर खड़ी सदमें बचाने के लिये ।
एक सीधी राह रहबत देख ली ॥
जिन्दगी का क्या करोगे अये "विनीत" ।
चल बसो अब तो मुसीबत देख ली ॥

एकोऽहं कहते हुए, निकल गये बस प्राण ।
आगे को यात्री चला, पड़ा रहा सामान ॥

उन आह-वाह की तानों की, रह गई गूँज कुछ कानों तक ।
उस प्रभुता-ममता के चरचे, रह गये तनिक विद्वानों तक ॥
मिट गया निशान उसी दिन से, प्रभुता-तेजकी निशानीका ।
प्रारम्भ यहीं से होता है, भारत की आदि गिरावी का ॥
इसमें कोई संदेह नहीं, वे द्रोह—मोह के कारण थे ।
पर फिर भी हम कह सकते हैं, वे सच्चे भारत-भूषण थे ॥
वैसे रण—वीर कर्म—योगी, आन के लिये मरने वाले ।
वैसे रण—वीर सत्यवादी, वैसे करतब करने वाले ॥
हमने माना हिन्द के लिये, मौके-मौके से आयेंगे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर याद रहे इन वीरों का, घाटा न कभी भर पायेंगे।
जो हो वह भाग गया, भागे तीनों वीर।
शान स्यारगिध चीख मिख,नोंचा किये शरीर॥
कृतवर्म्मा करने लगा, द्वारावति विश्राम।
अश्वत्थामा भागकर, गया बद्रिकाधाम॥
प्रातःकाल के साथ ही, लौट पड़े घनश्याम।
मचा हुआ था इस जगह,महा घोर-कुहराम॥
डेरों में खून भर रहा था, हर अबला खड़ी रो रही थी।
द्रोपदी बाल बिखराये हुए, लाशों पर पड़ी रो रही थी॥
मोहन के आते ही बोली, नटवर आओ वे बाकी है।
अथवा इस खेल तुम्हारे में, और भी कसर कुछ बाकी है॥
हठ पूर्वक आज पांडवों को, डेरों से अलग हटाया है।
मैं दावे से कह सकती हूँ, यह तुमने खून कराया है॥
निश्चय न तुम्हारा यह होता, तो क्या अनाथ मरने पाते।
डेरों पर तुम्हीं बने रहते, या इन्हें साथ में ले जाते॥
तुम प्रभु हो हम हैं तुच्छ जीव,यह होनी अपनी किस्मत है।
तुमसे मुँह लगकर बात करें, यह कहां हमारी ताकत है॥
फिर भी विश्वास दिला करके, यों नेह न छोड़ा जाता है।
अपने आश्रम में रखकर के, इस तरह न तोड़ा जाता है॥
कहू बहुत पर सोच यह, रहती हूँ खामोश।
तुम समरथ हो देव हो,समरथ को क्या दोष॥
कृष्णचन्द्र कहने लगे, बहटी पार न मार।
है बस चारों ओर से, मुझ पर ही बौछार॥
उस ओर कौरवों के साथी, मुझ पर ही थूक उड़ाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस ओर हानि हो जाती है, तो पाण्डव आंख दिखाते हैं॥
पांचाली बोली जिसके सिर, घर भर का ऊपर होता है।
तुम नहीं जानते हो माधव, यश अपयश इसपर होता है॥
बदनामी और नेक नामी, उसको ही सहनी पड़ती है।
कुछ हो अच्छी बुरी बात, उस से ही कहनी पड़ती है॥
क्या तुमको यह मालूम नहीं, इस दलके कर्णाधार तुमहो।
हम सबके नाव्यकार तुम हो, भारतके सूत्र धार तुम हो॥

प्रभु बोले यह ठीक है, पर कुछ करो विचार।
नहीं किसी के भाग्यपर, मेरा कुछ अधिकार॥

मैं एक पक्ष में रह कर भी, निष्पक्ष भाव दरसाता हूं।
जितनी जिसकी जब भावी है, उतनी करके दिखलाता हूं॥
मानलो आजको पाण्डवही, शिवरों से अलग न हो जाते।
तो अभी बाप बेटे सारे, दो टुकड़े पड़े नजर आते॥
पर जितना वचन दे चुका हूँ, उसको अन्त तक निभाता है।
सबका बलिदान चढ़ाकर भी, धर्मको राज्य दिलवाना है॥

पांचाली बोली—करो, ठण्डी मेरी ज्वाल।
इन लालों के बधिक को, ले आओ गोपाल॥
अर्जुन बोले ठहरो भद्रे !, मैं आज नीचको लाऊंगा।
या तेरा वचन निभाऊँगा, या मुँह न तुझे दिखलाऊँगा॥
यों कहकर अर्जुन और कृष्ण, चल दिये तलाश लगानेको।
मायापतिको क्षण भी न लगा, उनका ऋण भी भुगतानेको॥
मिलगया राह में द्रोण तनय, पार्थ से वहीं मुठ भेड़ हुई।
कुछ देर बात पर बात हुई, फिर हथियारों की बेड़ हुई॥
द्रोण ने अग्नी-शर ताना, जिसको न पार्थ पहिचान सके।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुँह भी न मोड़ने पाये हैं, धन्वा भी वहाँ न तान सके ॥
उसकी विकराल ज्वाल ही से, मुँद गये नयन बलधारी के ।
अर्जुन ने एक आह करके, पद पकड़ लिये बनवारी के ॥

दशों दिशाओं में हुआ, सहसा हा हा कार ।
हुए सामने बाण के, तब प्रभु लीला धार ॥
वह शर बदन पसार कर, निगल गये गोपाल ।
द्रोणी को झट पार्थ ने, बाँध लिया तत्काल ॥

बेचारा रण में बँधा हुआ, नीचा शिर किये जा रहा है ।
मानों कोई कैदी जकरन, फाँसी के लिये जा रहा है ॥

भीम ने तलवार उठाकर कहा—

ओ नीच कमान तान फिर भी, देखूं ताना-बाना तेरा ।
बिस्तरे बांध इस दुनियां से, उठ चुका आब-दाना तेरा ॥
द्रोपदी मुझे जल्दी बतला, क्यों कर तेरा दिल भर डालूँ? ।
खींच लूँ खाल सारे तन की, या टुकड़े-टुकड़े कर डालूँ ॥

गरज रहा था शीश पर, यों ही काल कराल ।
पानी-पानी था वहाँ, स्वयं द्रोण का लाल ॥
उठे निराशा को लिये, टूटे दिल के बैन ।
हैं दोनों ही सामने, बल-धर करुणाऐन ॥

अपनी चलती भर करणी में, मैंने कुछ उठा न रक्खा है ।
अपनी दानिशमें इस कुलका अंकुर भी छिपा न रक्खा है ॥
जो चला खूब उस चलती में, जितनी चल सकी हमारी है ।
मारो तो न्याय मानता हूँ, छोड़ो तो दया तुम्हारी है ॥

पांचाली यह वचन सुन, तुरत उठी झुंझलाय ।
बोली बस प्रभु हो चुका, अपराधी का न्याय ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माना हम इसे मार करके, वह क्षत्रिय की जगी बुझायेंगे।
पर क्या इसके मर जाने से, मेरे बेटे जिन्दा जायेंगे? ॥
बलधर बे वश ब्राह्मण पर, अब क्या हथियार उठाते हो?।
जाने भी दो हो चुका दण्ड, क्यों व्यर्थ कलङ्क लगाते हो॥
माधव! मोहन जो इसी समय, मैं अपना मोह त्यागती हूँ।
पर एक अनाथ ब्राह्मण के, प्राणों की भिक्षा मांगती हूँ॥

कृष्णचन्द्र कहने लगे, धन्य द्रुपद सुकुमारि।
त्याग कथा तेरी सदा, गायेगा संसार॥

प्राणों से प्यारे बेटों का, क्षण भर में मोह तोड़ देना।
जीवन के ग्राहक पर करुणा, घर आया शत्रु छोड़ देना॥

गायन—नारि ने किया देश उद्धार।

सावित्री बन बनी कहीं पर, पति की प्राण-धार।
सीता रूप सती के हाथों, हुआ दुष्ट संहार॥
सत-व्रत की पति-व्रत की, सीमा धर्मों का आधार।
नारि मात्र है आदि प्रकृति से, शील स्वभाव उदार॥
हुआ न ऐसा काम अभी तक, जो हो जीवन सार।
किन्तु न उसमें बने सहायक, विदुषी अबला नारि॥
सचमुच है इनके ही द्वारा, भव का बेड़ा पार॥

पांचाली की विनय पर, द्रवित हुए भगवान।
कहा भीम रस छोड़दो, निकल चुका अरमान॥
द्रोणीका सिर चीरकर, मणिको लिया निकाल।
उसे छुड़ाकर शान्ति से, बैठ सके गोपाल॥
यहीं समझिये पूर्ण है, भारत का संग्राम।
श्रोताओ मिलकर कहो जय श्री राधेश्याम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ महाभारत ॥

॥ ऐषिक-पर्व ॥

॥ प्रार्थना ॥

तुम्हारा पाते हुए प्रमाण।
पुकारें ? कहाँ कहो भगवान !
तुम व्यापक सर्वत्र हो, गुण—निधि दीन दयाल !।
छिपा हुआ है ? कौन सा, मेरा तुम से हाल ॥
तुम्हें है घट-घट की पहचान।
पुकारें ? कहाँ कहो भगवान ॥
बिछा हुआ है हर तरफ, यह माया का जाल।
खड़ा हुआ मृग की तरह, भूल रहा हूँ चाल ॥
ठिकाने करदो, दया निधान !।
पुकारें ? कहाँ कहो भगवान !।
मिला न जीवन में मुझे, क्षण भर भी विश्राम।
खिला नहीं है ? क्या कभी, कुछ भी सुख का नाम ॥
तनिक तो करदो, दया प्रदान।
पुकारें ? कहाँ कहो भगवान !॥
भटकूंगा फिर किस तरफ, छोड़ चरण का साथ।
कहाँ मिलेगा ? दीन को, तुम सा दीनानाथ ॥
निभादो जन 'विनोति' की आन।
पुकारें ? कहाँ कहो भगवान !॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* धर्म-राज्य-तिलक *

हुआ अठारहवें दिवस, पूरा वह संग्राम।
धर्म-राज से अन्त में, यों बोले घनश्याम॥

राजन्! रिपु-जीवन पूर्ण हुआ, अब दुखियों में जीवन डालो।
हो रहे निराश प्रजा वाले, इन दोनों को देखो भालो॥
धृतराष्ट्र और गांधारी को, चलकर अब शांति दिलानी है।
पर उनसे मिलने के पहले, लोह की मूर्ति ले जानी है॥
अन्यथा विजय पाने पर भी, उलटा प्रभाव दिखलायेगा।
ऐसा किस लिये कर रहा हूँ, यह भेद वहीं खुल जायेगा॥

लोह-मूर्ति को साथ ले, चले धर्म हर्षाय।
यहां पहुँच कर भूप से, यों बोले यदुराय॥

राजन्! संग्राम समाप्त हुआ, पा लिया राज्य अधिकारी ने।
धर्मका अन्त तक साथ दिया, ऋषिवर! आशीष तुम्हारीने॥
वे पांचों भाई जय पाकर, आपके सामने आये हैं।
अब राज्य भार की शक्ति-हेतु, फिर भीख मांगने आये हैं॥
वे मधुर वचन मन मोहन के, लगते थे शूल समान उन्हें।
पर क्या करते! देना ही था, बातों में प्रेम-प्रमाण उन्हें॥
बोले केशव क्या चारा है, हमने सब जतन लगाया है।
पर उन नीचों की करणी ने, खुद ही फल पर पहुँचाया है॥
कुछ बात नहीं यह तो रण था, यह जीत गये वह हारा है।
पर केशव! यह तो बतलाओ, दुर्योधन किसने मारा है॥

मुसका कर कहने लगे, उसी समय यदु-नाथ।
कुरु-पति के वध का सुयश, रहा भीम के हाथ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्ध राज कहने लगे, धन्य वीर बलधाम।
वास्तव में यह कठिन प्रण, था तेरा ही काम॥
ओ अन्धी आँखों के तारे, कर ठंडी इन आत्माओं को।
आ एक बार चुम्बन करलूँ, इन तेरी वीर भुजाओं को॥
कृष्ण का इशारा पाते ही, वह लोह मूर्ति आगे बढ़ी।
भूप ने हाथ में लेते ही, वह उसी समय चूरा कर दी॥
फिर बोले हा! एकायक ही, यह क्या से क्या बलधाम हुआ।
हैं! क्या हाथों ही हाथों में, हाथी का काम तमाम हुआ॥
जीवाधार कहने लगे, तजो शोक अवनीश।
व्यर्थ न जायेगा कभी, बूढ़ों का आशीश॥
जो मृत्यु-कलश था भटवर का, वह समय हाथ से बीता है।
हे भूप! तुम्हारा कृपा-पात्र, यह भीम अभी तक जीता है॥
धृतराष्ट्र चकित होकर बोले, यह सारा चरित्र तुम्हारा है।
वास्तव में वीर पाण्डवों का, अब ऊँचा हुआ सितारा है॥
खा गया जोश उन नीचों का, था जिनको अपना होश नहीं।
ले गई उन्हें उनकी करनी, इन बेचारों का दोष नहीं॥
ले जाओ राज दुलारों को, देश का करो भगवान इन्हें।
मैं आज हृदय से कहता हूँ, सुख से राखे भगवान इन्हें॥
बढ़े बिदा लेकर सभी, गान्धारी की ओर।
धर्म राज से राह में, बोले नन्दकिशोर॥
राजन्! गान्धारी के आगे, भीम को अगर पहुँचाओगे।
तो योग-दृष्टि के पड़ते ही, भाई हाथ से गँवाओगे॥
इसलिये हमारी सम्मति है, भीम को न पहले पहुँचाओ।
वह महा तेज तुम सहन करो, वह जलती ज्वाल बुझा आओ॥

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गान्धारी के सामने, पहुँचे धर्म नृपाल।
कहा नाम के बाद में, रण का सारा हाल॥
उबल उठा मज्जमून सुन, उस देवी का खून।
दृष्टि मात्र से धर्म के, टूट पड़े नाखून॥

उस विषम-तेज को देख धर्म, देवी की हाहा खाने लगे।
उस भभकी हुई तपस्विन को, ज्यों त्यों कर धीर दिलाने लगे॥
ओ देवि! शांत ओ अम्ब शांत, यह सेवक आज सहारे है।
मैया! क्या द्विविधा समझी है, हम भी तो तेरे बारे हैं॥
माता! तूने ही तो हमको, पहले रण में उकसाया है।
तेरी ही आशिष पाने से, हम में बल-धीरज आया है॥
भाई! भाई की निभाई खूब, पर निभा न भाई-चारा है।
वह हार गये हम जीत गये, इसमें क्या दोष हमारा है॥
जो हमें ओट में किये रहा, मैया! वह तेरा अंचल है।
तबभी इन चरणों का बल था, अब भी इन चरणों का बल है॥

गान्धारी कहने लगी, है उनका ही दोष।
फिर भी है यह लाड़ले, पुत्र प्रेम का जोश॥
उस ममता ही ने उभड़ा कर, अपना प्रभाव जतलाया है।
तुझको भी दुख पहुँचाया है, अपना भी तेज गँवाया है॥
मैं खुद ही इसे जानती हूँ, वह हठी और अन्यायी था।
पर धर्म करूँ क्या? ममता है, आखिर मेरा बेटा ही था॥

उसी समय हँसते हुए, पहुँचे लीला धार।
गान्धारी कहने लगी, आओ नन्दकुमार॥
यद्यपि संसारी मानता है, तुम आदि पुरुष हो त्यागी हो।
पर इतना मैं कह सकती हूँ, इन पापों के भी भागी हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब एक पक्ष ने तुम्हें यहाँ, अपना नेता ठहराया था।
तो तुम्हें शांति करवा देना, बतलाओ श्याम कठिन क्या था॥
मानलो न कौरव माने थे, तो पाण्डव पक्ष मना लेते।
क्या उसी राज्य से अटकी थी, अधिकारी कहीं बना देते॥
जिसका प्रभाव पड़ सकता है, पशु-पक्षी या पाषाणों पर।
अचरज है उसका कुछ प्रभाव, पड़ सका न इन विद्वानों पर॥
मैं बिलकुल साफ कह रही हूँ, कर गई काम कुटलाई है।
इस बसी बसाई बस्ती में, तुम ने ही आग लगाई है॥
इन नाहक खूनों के बदले, यदु-वंश खूब हो जायेगा।
तुमको भी अंतिम घड़ियों तक, अब चैन न मिलने पायेगा॥

शाप सीख धर बिहँस कर, बोले कृष्ण ऐन।
फूफी! अब क्या शाप है, होने से बेचैन॥

तुम से ही पहले कह सुनकर, मैंने यह मेल मिलाया है।
तुमने ही अपना बल देकर, इनको अधिकार दिलाया है॥
तुमने ही इन्हें बढ़ाया है, तुमने ही मान बढ़ाया है।
मुझको भी अचरज होता है, अब क्यों यह क्रोध समाया है॥

गान्धारी कहने लगी, है तुमको सब ज्ञात।
पात-पात में पात है, बात-बात में बात॥

पुण्य भी तुम्हारी इच्छा है, पाप भी तुम्हारी इच्छा है।
युद्ध भी तुम्हारी इच्छा थी, शाप भी तुम्हारी इच्छा है॥
जाओ अब इनको ले जाओ, होने दो बात ठिकाने की।
जो भार सक्ष पर रखते हो, दो उतनी शक्ति उठाने की॥

विदा माँगकर देवि से, गमने यादव नाथ।
तिलक-साज साजा गया, समारोह के साथ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिल्लियाँ उड़ाने वालों का, अब वह पहला उपहास न था।
वह भी सच्चे हो गये दास, धर्म पर जिन्हें विश्वास न था॥
इन्द्र का नगर कुछ चीज न था, जैसी उसकी सुथराई थी।
दर-दर पर वन्दन वारे थे, घर-घर आनन्द बधाई थी॥
चौमुखे दीप थे कलशों पर, वे कलश काँचनी न्यारे थे।
मनियों की मीना कारी थी, मनियों के चौक सँवारे थे॥
थी गली-गली फूलों की कली, ऐसी सुगन्ध कुछ आती है।
सुर-वृन्द हर्ष जय बोल रहे, जनता जय हर्ष मनाती है॥
भारत-जननी उँमगानीसी, वह सुख-मय साज निहार रही।
द्रोपदी साज शृङ्गार रही, कुन्ती माता बलिहार रही॥

कृष्णचन्द्र कहने लगे, पग धारो नर-नाह।
यह सिंहासन देर से, देख रहा है राह॥

ऋषियों ने और ब्राह्मणों ने, वेद ध्वनि से आह्वान किया।
जगपति ने अपने हाथों से, नर पतिको मुकुट प्रदान किया॥
मङ्गल-मुखियों ने मोद सहित, मङ्गल-आरती उतारी है।
दायीं दिश धर्म सुशोभित हैं, बाईं दिश द्रुपद दुलारी है॥
थी सीमा विजय-बधाई की, छाई ध्वनि विपुल निशानों की।
नरपति ने पूर्ण प्रतिष्ठा की, ऋषि मुनि ब्राह्मण महमानों की॥

पट-भूषण गज-हय-सुरभि, दिये विविध विधिदान।
महमानों का सब तरह, किया गया सन्मान॥
आये राज समाज में, वीर-विजय के गान।
द्रुपद-दुलारी के सहित, लसत धर्म अवतार।
जन "विनीत" श्रीकृष्णको, महिमा पर बलिहार।

॥ शुभमस्तु ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ महाभारत ॥

॥ स्त्री-पर्व ॥

—०:::॥:::०—

॥ अन्तिम-संस्कार ॥

न था महीनों के लिये, वह अक्षत आह्लाद ।
कुछ घड़ियों के बाद ही, आया वही विषाद ॥

वो धृतराष्ट्र नन्द नन्दन, दिन है आनन्द मनाने का ।
साथ ही हमारा करतब है, अपनी कुल प्रथा मनाने का ॥
इस जगह ढोल-नक्कारों की, यह मीठी तान सुनाती है ।
लेकिन हृदयों में छिपी हुई, दावानल सी सुलगाती है ॥
भारत के कोने कोने में, आई भारत की विपदायें ।
भारत पर रांड हो चुकी हैं, भारत की लाखों ललनायें ॥
उलटा मुँह किये बिसूर रहीं, ना जाने कितनी मातायें ।
सैकड़ों विलाप कर रहीं हैं, खुद राज महल में विधवायें॥
हम हिन्द-राज्य की खुशियां में, इस जगह प्रमोद पा रहे हैं ।
उस जगह हिन्द के हीरों को, गीदड़ और श्वान खा रहे हैं॥
इसलिये नियम हो चुका पूर्ण, अब साज आज को रुकवादो ।
भारत पर मिटने वालों की, मिट्टियां ठिकाने लगवा दो ॥

उठे सभा से शीघ्र ही, सभा सहित घनश्याम ।
राज भवन में आ गया, उसी तरह कुहराम ॥
सतियां सारा शृङ्गार साज, श्रीफल हाथ में उछाल चलीं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे हूली-फूली ललनायें, एक धूम फूल पर डाल चलीं ॥
राजों की राज रानियों में, सरदारों की नारियां चलीं ।
मानों देवों से मिलने को, हिलती मिलती देवियां चलीं ॥
वह भारत की शक्तियां चलीं, या प्रभा देश की निकल चली ।
या सती-वेष बहुरूपों में, करणी नरेश की निकल चली॥
गुण गान स्वामियों के गाकर, जब वहां सती समुदाय चला ।
तब राज-समाज नगर सारा, हा हा करके बिलपाय उठा ॥

पहुँचे सब जन अन्त में, उस रण-स्थल के पास ।
पड़ी हुई थी जिस जगह, मृतक रूप में आश ॥

जिस जगह देश के वीरों की, ललकारें कभी सुनाती थीं ।
उस जगह आज कुछ लाशोंसे, आहों की श्वासें आती थीं ॥
उस राज्य बेल को जहाँ काल, खूनी कीचड़ से सींच रहा ।
कोई हड्डियां बिछोड़ रहा, कोई आंतों को खींच रहा ॥
कुछ कमल नयन हो चुके अन्ध, है कहीं देह तो माथ नहीं ।
सर पड़ा कहीं सरदार कहीं, हथियार कहीं तो हाथ कहीं ॥
ममता मोह ने कराया है, बलिदान जहां बलवानों का ।
जिस जगह खूनमें मिला हुआ, था खूनी सभी अरमानों का॥
गायन-आखिर उमङ्गों की घटा, आई बरसती रह गई ।
रह गई हसरत खड़ी, आशा तरसती रह गई ॥
उठ गया बाजार सौदा बिक चुका, गाहक गये ।
बस गये बसते हुए, वीरान बरसती रह गई ।
मँहगी बुरी सस्ती बुरी हस्ती न दोनों को मिली ॥
यह हाथ खाली रह गये मंहगी न सस्ती रह गई ।
कितने इरादे गर्व कैसे, थे इसी पर तो विनीत ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हा ! आज वह टूटी हुई बेजार मस्ती रह गई।
लगी हृदने देवियाँ, अपने पति की लाश।
रची गई चन्दन—चिता, एक एक के पास॥
देवियाँ हृदय देव के साथ, बैठीं उन देव-चिताओं में।
देखते-देखते दुनियाँ के, लग गई आग ममताओं में॥
डेरे वाले चल दिये प्रथम, पीछे उनका डेरा न रहा।
मालिक न रहा चेरा न रहा, मेरा न रहा तेरा न रहा॥
जो रङ्ग—रङ्गीले छैला थे, विश्व की रङ्ग शालाओं के।
वे अपनी हसरत लिए हुए, ईंधन बन गये चिताओं के॥
रागियो ! विराग देखना हो, तो इन पर एक नजर डालो।
ओ आगे के बढ़ने वालो !, कुछ पीछे भी देखो भालो॥
गायन—हम कौन हैं कुछ भी नहीं, हैं खाक के पंजर फकत।
ज्ञानी-गुणी कोई नहीं, अज्ञान के सागर फकत॥
करना न अपने हाथ है, धरना न अपने हाथ है।
यह हाथ ही हैं बस दिखाने के लिये बाहर फकत॥
चोटी हमारी काल के हाथों से छुट सकती नहीं।
करना हमारे हाथ है, तो रात दिन बर बर फकत॥
गोविन्द नाहक मान में, क्यों खो रहा जीवन पड़ा।
तेरे लिये आधार है, संसार में हरिहर फकत॥
दिया गया प्रति वीर को, पिण्ड-दान जल दान।
हुआ वीर मैदान वह, मुरदों का मैदान !॥
कुन्ती ने कहा धर्म—पति से, बेटा जो बात छिपाई है।
वह आज बतानी पड़ती है, कर्ण भी तुम्हारा भाई है॥
बलवीर वीर के नाते से, बलिदानी पर वैदिक बलि दो।
दे सके न जीते को जल भी, मरते को मगर तिलाञ्जलि दो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सुनते ही धर्म को, आया क्रोध उबाल ।
हो मेरे ही हाथ से, मेरा बन्धु हलाल ॥
मेया तू बेशक माता है, लेकिन आखिर को नारी है ।
हो लाख सत्य की महतारी, पर बल बदम की पिटारी है॥
हा इतनी बात छिपा करके, इतना संहार कराया है ।
बिलकुल सच है बिलकुल सच है, नारी की अद्भुत माया है॥
पुत्र पर काल मँडराता था, पर उठा प्रेम का जोश नहीं ।
यह नारी जाति का गुण ही है, हे माता तेरा दोष नहीं ॥
अब नारि जाति में आगे को, यह बात न रहने पायेगी ।
इसके दिल में एक भी बात, अब नहीं ठहरने पायेगी ॥

नारि जाति को इस तरह, दिया धर्म ने साप ।
पहरों तक करते रहे, सब नर नारि विलाप ॥
देकर अंजलि कर्ण को, लौट पड़े नर नाथ ।
जन विनीत जप कृष्ण को, कहो प्रेम के साथ ॥
घर आकर भी धर्म का, हुआ न वह दुख नाश ।
समय समझकर शीघ्र ही, पहुँचे वेद व्यास ॥

बोले राजन् रोते-रोते, रोने को मित्र न साथ रहा ।
रोये हजार शान्ति के लिये, फिर भी रोना ही साथ रहा॥
इस मिटने वाली दुनियाँ में, कुछ पा जाना भी खोना है ।
जिसको तुम हँसी समझते हो, वह सब रोना ही रोना है॥
इसलिये भीष्म के पास चलो, वह सब सन्देह मिटायेंगे ।
है शान्ति समय अब उनका भी, क्या जाने क्या कह जायेंगे ॥

धर्मराज सब वंश को, लिये साथ यदुवीर ।
उसी समय हो चल दिये, भीष्म पिता के तीर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* श्रीगणेशायनमः *

* महाभारत *

* शान्ति-पर्व *

—— ०::❀::० ——

* प्रार्थना *

भीष्म से पूत फिर से, भारत में पठा दाता ! ।
अपने वचन पर मरना, दीनों को सिखा दाता ! ॥
'अनहद' की शुद्ध-वाणी, वीरों को सुना दाता ! ।
मिटने के लिये सत पर, उत्साह दिला दाता ! ॥
भारत की क्यारियों को, रक्त से सिंचा के ।
पृथिवी से आसमां तक, यह बेल बढ़ा दाता ! ॥
खाते हैं ठोकरों पर, हम ठोकरें दयामय ! ।
गिरती हुई बाजी है, कुछ हाथ लगा दाता ! ॥
'गोविन्द' का कट जाये, जीवन स्वतन्त्रता से ।
वह घूंट अमरता का, सेवक को पिला दाता ॥

* भीष्म का परलोक गमन *

शर-शैया पर शान्ति से, लेटे थे योगीश ।
इसी जगह अवनीश ने, इन्हें झुकाया शीश ॥
जिह्वा ने एक प्रणाम छोड़, आगे अक्षर भी कहा नहीं ।
आंखों से आखें मिली रहें, वह बल आंखों में रहा नहीं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीष्म ने स्वयं आशिष देकर, पूछा राजन् क्या हालत है ?।
यह विश्व विजय पाने पर भी, भिखमंगे की सी सूरत है ॥
धर्म ये कहा—यह 'जय' ही तो, जीवन की असली हार हुई।
जिसको मैं कार समझता था, यह कोयले की बेगार हुई ॥
दुनियां जाहिर में कहती है, मैंने यह नाम कमाया है।
पर आत्मा यह पुकार रही, जीवन का दाग लगाया है ॥
जो शांति और श्री थी मुझपर, भगवान ! भिखारी होनेसे।
वह शांति न अब दिखलाती है, भारत अधिकारी होने से॥

इस ममता की आग में दिया वंश को भून।
चुटकी लेने की जगह, तोड़ लिये नाखून ॥

जिन से बनाव की शोभा थी, अब वह बनती में बने नहीं।
जब चने रहे तब दांत न थे, अब दांत हुए तो चने नहीं ॥
हथियार सामने कब आया, जब, तोड़ चुका हूँ हाथों को।
संसार देखने की सूझी, जब फोड़ चुका हूँ आंखों को ॥
जो गुरुजन के हत्यारे की, होती है वैसी हालत है।
पापी की सूरत मत देखो, बस यही शांति की सूरत है ॥

भीष्म पितामह ने कहा, नृप ! छोड़ो यह ध्यान।
पाप—ताप कुछ भी नहीं, है केवल अज्ञान ॥

जो अहम में पड़ा हुआ, त्यागी है अथवा रागी है।
ऐसा मनुष्य निश्चय राजन्, हर पुण्य-पाप का भागी है ॥
निष्काम कर्म-योगी बनकर, जो कर्त्ता-भर्त्ता आपही नहीं।
ऐसे मनुष्य को कर्मों का, पुण्य भी नहीं पाप भी नहीं ॥
इस रण के लिये कहो राजन्, वास्तव में किसकी शिक्षा थी।
अबतक जोकुछ भी किया गया, उसमें अपनी क्या इच्छा थी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम सब अपनी कह बैठे हो, हम सब अपनी कह बैठे हैं।
लेकिन मन से कहलाओ तो, कर्त्ता-धर्त्ता यह बैठे हैं॥

लीला लीला धाम की, मान करो सन्तोष।
राजन्! इस रण-कर्म में, नहीं किसी का दोष॥

हम तुम क्या थे! कठपुतले थे, नट की इच्छा पर फूट गये।
जुड़ पड़े परस्पर टकराकर, तुम बने रहे हम टूट गये॥
मुड़ जायेगा फिर समय कभी, जिस दिन यह मोड़ लगादेंगे।
जोड़ों को तोड़-ताड़ देंगे, तोड़ों पर जोड़ लगादेंगे॥
मत समझो हमें मिटाने से, मिटना ही मिटा जा रहा है।
कुछ दिन के बाद तुम्हारा भी, मिटने का समय आरहा है॥
जलके बुल्ले की तरह हमीं, उठते-मिटते दिखलायेंगे।
यह सिन्धु-रूप जितने भी थे, वैसे फिर भी रह जायेंगे॥
इसलिये अगर कुछ कहना हो, तो कहो चरित नटनागरके।
जो मुझसे सुनने आये हो, तो सुनो सु-यश लीला-धरके॥

जितना जो कुछ है जहां, इन्द्रिय का व्यापार।
इनकी माया मात्र का, सो सारा विस्तार॥

ये देव यही देवाधिदेव, सविकार यही अविकारी हैं।
प्रति तत्व यही तत्वज्ञ यही, विश्वम्भर यही बिहारी हैं॥
कारण कर्त्ता या कर्म-रूप जो कुछ हैं यह लीलाधर हैं।
इस दुनियां के व्यापार सभी, इनकी इच्छा पर निर्भर हैं॥

❀ गायन ❀

कण-कण में से दरशाती है, महिमा श्री कृष्णबिहारी की।
पग-पग पर प्रगट दिखाती है, महिमा श्रीकृष्णबिहारी की॥
पर्वत की अगम ऊँचाई से, सागर की अति गहराई से।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारों में से मुसकाती है, महिमा श्री कुञ्ज-बिहारी की ॥
व्योम के यही अन्तर्गत हैं, फूल की यही प्रभु रञ्जत हैं ।
इन लहरों में लहराती है, महिमा श्री कुञ्ज-बिहारी की ॥
गोविन्द उन्हीं पर निर्भर हो, जो तन मनसे आत्मा पर हो ।
तो निश्चय पार लगाती है, महिमा श्री-कुञ्ज बिहारी की ॥

राजन् ! ठहरो कुछ समय, करो यहीं सत्सङ्ग ।
उतर जायगा आप ही, यह माया का रङ्ग ॥
विरचित की भगवान ने, सृष्टि अनेक प्रकार ।
सकल योनियों में मगर, है-नर तन सरदार ॥
ब्रह्मांड मात्र के सभी लोक, योगों के हेतु बनाये हैं ।
पर भूमि-लोक के वासी को, ब्रह्मा ने कर्म लगाये हैं ॥
इन कर्मों के अनुसार जीव, अन्याय लोक पा जाते हैं ।
इसलिये इसे उन लोगों से, विद्वान श्रेठ बतलाते हैं ॥
यों तो त्रिभुवन में सर्व श्रेष्ठ, भूलोक सभी को प्यारा है ।
पर इस पर भी सबसे प्यारा, यह भारतवर्ष हमारा है ॥
जलवायु उपज प्राकृतिक दृश्य, वह सुन्दर सुखद दिखाते हैं ।
जिनके उपयोग मात्र से ही, नर भव-सागर तर जाते हैं ॥
सुन्दर-समीर उत्तम पहाड़, विद्या-विवेक की खान है वह ।
सारांश मुक्ति के साधन को, प्रत्यक्ष देव स्थान है वह ॥

बँधे हुए हैं हिन्द में, कर्म वर्ण अनुसार ।
सधा हुआ है इसलिये, उभय लोक का भार ॥

सन्तोषी शान्त संयमी हो, हो व्यसन पठन और पाठन का ।
ब्रह्म का बोध शुभ दान हवन, सन्ध्या है करतब ब्राह्मण का ॥
चारों वर्णों में सर्व श्रेष्ठ, ब्राह्मण इसलिये कहाते हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे स्वयं ब्रह्म-ज्ञाता बनकर, औरों को राह लगाते हैं ॥
गो द्विज-सेवा पृथ्वी पालन, क्षत्रिय के लिये बताया है।
व्यापार और खेती करना, वैश्य का कर्म ठहराया है ॥
तीनों वर्णों की सेवा ही, शूद्र को शास्त्र बतलाता है।
जातिय-कर्म पूरा करना, मुक्ति की ओर ले जाता है ॥
नृप और प्रजा में एक मात्र, शुचि पिता पुत्र का नाता हो।
नारी पति आज्ञा कारी हो, मंत्री राज-हित निभाता हो ॥
है पहला कर्म गृहस्थों का, अतिथियों की सेवा किया करें।
त्यों ही है धर्म वैष्णवों का, हित पूजन में मन दिया करें॥

जाति-कर्म में है नहीं, किसी भांति से दोष।
करो इसलिये धर्म पति, इस रण पर सन्तोष ॥

जैसे देवों ने विष्णु देव, नदियों में गङ्गा देवी है।
त्यों ही त्रिलोक के वृक्षों में, सबसे उत्तम तुलसीजी हैं ॥
जो लोग नियम से तुलसीदल, शालिग्राम पर चढ़ते हैं।
उनको चरणामृत लेते हैं, वे रोग-मुक्त हो जाते हैं ॥

तुलसी चरित्र

त्रिभुवन में विख्यात है, विन्दा का इतिहास।
जिसके शील सतीत्वपर, मोहे जगन्निवास ॥

विन्दा तो शील सत् वती थी, पर उसका स्वामी निश्चर था।
वह देवों का था परम शत्रु उस खल का नाम जलन्धर था॥
हो सका न खल का वध यद्यपि, देवों में पूर्ण संगठन था।
उसके इस विक्रम का कारण, विन्दा का फक्त सतीपन था॥
विष्णु ने सुरों की सम्मति से, विन्दा का सत्य डिगाया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसका ही शाप धार हरि ने, पाषाण रूप प्रकटाया था ॥

तुलसी बिन्ता रूप है, हरि हैं शालिग्राम ।
सिर पर धरते हैं उसे, अब तक लीलाधाम ॥

काशी माहात्म्य

राजन् ! हैं संसार में, सभी तीर्थ शिर-मौर ।
पर काशी का जगत् में, है महत्व ही और ॥

है केवल यही क्षेत्र ऐसा, जिससे यम पति भी हारे हैं ।
जिसको खुद शम्भु संवारे हैं, भैरव जिसके रखवारे हैं ॥
पापी से पापी जीव जहां, आपही मुक्ति-अधिकारी है ।
जिस जगह पंचनद लिये हुए, बह रही जान्हवी न्यारी है॥

❀ गायन ❀

जपजोग विराग सुहागमयी, शुचिसोहत मोहत पुण्यप्रभासी।
मुनिराजसमाज सुसंगकेसाज, लिये जु विराजरहे अविनाशी॥
जितजात न लैसवुहातहु पाप, सुखैकटि जात कुतापकीफाँसी।
जगजीत विनीत जोमुक्तिचहै, सबआसबिहायतोसेइयकासी।

तीन बरस तक जो करे, काशी में स्नान ।
इसमें कोई शक नहीं, हो उसका निर्वान ॥

गङ्गावतरण

है प्रसिद्ध रवि वंश में, सगर भूप का नाम ।
दस सहस्र उनके तनय, थे विशेष बल धाम ॥

नरपति ने अश्वमेध करके, घोड़ा देशों में पहुँचाया ।
बीच में किसी पाखण्डी ने, उस जग में रोड़ा अटकाया॥

वह अश्व छिपाकर किसी तरह, भटकाया दल को जल-थल में।
घोड़े का पता न चलने से, हल-चल फैली दल-मण्डल में॥

परेशान सेना हुई, सब भू-मण्डल छान।
किन्तु अश्व का भूमिपर, मिला न पता निशान॥
पर उनको भी शक्ति का, था पूरा अभिमान।
आपस में कहने लगे, डटे रहो बलवान॥

भूलोक व्योम पाताल छोड़, तुम घोड़ा निकल न जायेगा।
यह सगर-वंश त्रैलोकों से, ढूंढ़ कर उसे ले आयेगा॥
बस इतनी हठ पर वीरों ने, पृथवी के पर्त तोड़ डाले।
सागर कर दिये महा-तल पर, पाषाण-पहाड़ फोड़ डाले॥
खोदते-खोदते किसी जगह मुनि आश्रम एक नजर आया।
ध्यानस्थ वहीं मुनि को देखा, घोड़ा भी वहीं बँधा पाया॥

किसी वीर ने क्रोध में, उन्हें मार दी लात।
किसे पता था है वही, कोमल ऋषि विख्यात॥

ये बोले ओ बायदाल! अजी!, पहले तो अश्व चुराया है।
फिर प्राणों के भय से कायर, बगुला भगती बन आया है॥
मुनिवर ने योग दृष्टि द्वारा, कर दिया भस्म सरदारों को।
पानी का भी न उपाय रहा, नृप-वंशी पानी दारों को॥
रह गया वहीं से अश्वमेध, दूसरे यज्ञ की बारी थी।
बेटों के उद्धार के लिये, भूप के यहां तैयारी थी॥
ऋषियों से पूछा नर-पति ने, हे नाथ! बड़ा ही सङ्कट है।
मैं जल देने को बाकी हूँ, सारी पृथिवी पर मरघट है॥
इतने वीरों की अन्त्येष्टि, कहिये किस भांति विचार करूं!
हे देव बताओ वह उपाय, जिससे कि वंश उद्धार करूं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषियों ने उत्तर दिया, सुनो धर्म अवतार।
कर सकती है यदि इन्हें, तो गङ्गा उद्धार॥
यदि विष्णु-लोक से किसी तरह, गङ्गा को तू लाने पाये।
तो तेरे कुल के साथ साथ, उद्धार लोक का हो जाये॥
बह दिये सगर तप के निमित्त, ममता जीवन में छुई नहीं।
जीवन हो गया समाप्त वहीं, पर उन्हें सफलता हुई नहीं॥
फिर अंशुमान उनके पीछे, गङ्गा के लिये सिधाये हैं।
पर सारा जीवन देकर भी, वह सफल न होने पाये हैं॥
झुक गये विष्णु ब्रह्मा आखिर, तप पुंज भगीरथ के आगे।
या स्वारथ ने सिर टेक दिया, आत्मिक पर-मारथ के आगे॥

चली लोक उद्धार को, गङ्गा जी की धार।
पर न सँभाला जा सका, पृथ्वी से वह भार॥
फल यही हुआ भू लोक फोड़, गङ्गा नीचे लहराने लगी।
पाताल-लोक में रुकने से, पाताल-गङ्ग बहलाने लगी॥
अब तो लाचार भगीरथ का, फिर हर को हा हा खाना पड़ा।
गङ्गा का भार उठाने को, शङ्कर का ध्यान लगाना पड़ा॥

किया शम्भु ने भार वह, अपने शिर स्वीकार।
ब्रह्म-लोक से घहरकर, चली गङ्ग की धार॥
गङ्गा को था अभिमान बहुत, अपनी उन तरल तरङ्गों पर।
भोले बाबा का प्रण सुनकर, वह आई और उमङ्गों पर॥
सोचने लगी इन धारों पर, अहि-पति भी बदन छिपालेंगे।
अचरज है बूढ़े बाबाजी, मेरा क्या भार सभालेंगे?॥
एक ही बार जब धार धार, धरणी को धुरी हिलाऊँगी।
उससमय कमण्डल महि-मण्डल, सबलिये रसातल जाऊँगी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह गर्व धार कर गङ्गा ने, फैलाया सत-धाराओं को।
भोले भण्डारी खड़े हुए, फैला कर फक्त जटाओं को॥
रह गया भार मुक्त-हार बना, वह धार उन्हीं में समा गई।
धूनी वाले की धूनी पर, गङ्गा भी धूनी रमा गई॥
अपनी उस अतुल सफलता पर, तप मुक्ति भगीरथ फूल गये।
पर गङ्गा को धारण करके, भगवान ध्यान ही भूल गये॥
बहुत घुमड़ाकर घूम फिरी, पर सिरसे बाहर हिल न सकी।
आगे-पीछे की धार मिली, पर राह कहीं से मिल न सकी॥

नर-पति को करना पड़ा, फिर पूजन-उपवास।
बड़े मास में तब कहीं, जागे जगत-निवास॥

जटा-जूट से मिल सकी, तब गङ्गा को राह।
साथ भगीरथ के चली, देवि सहित उत्साह॥

आगे-आगे यान की चाल, वायु को लजाती जाती थी।
पीछे से तरल तरङ्गों में, गङ्गा माँ दौड़ी आती थी॥
घड़ियों में गङ्गा देवी का, भूमि पर दिव्य विस्तार हुआ।
तत्काल सगर के पुत्रों का, भव-सागर से उद्धार हुआ॥

स्वयं सिद्ध है लोक में, श्री गङ्गा का प्रभाव।
भव-सागर में है यही, नर-जीवन की नाव॥

दरशन, परसन, स्नान, पान, प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाते हैं।
दैहिक, दैविक, भौतिक, त्रितापं, तत्काल नाश हो जाते हैं॥
जिस घर ही में गङ्गा जल हो, उसमें न व्याधियां आती हैं।
जप पूजन और ध्यान ही से, सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं॥

मरण समय दो बूँदहो, गङ्गा जल मिल जाय।
तो इस में संशय नहीं, यम न प्रभाव दिखाय॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्य महिमा

राजन्! है सबसे अधिक, सत्य मुक्ति का द्वार।
लोक और परलोक में, है इसका आधार॥
कौनसा काम है? जीवन का, जो सत्य नहीं कर सकता है।
काल भी खड़ा है सत्यवान, पर कभी नहीं मर सकता है॥
सत्य की सत्यता कहना क्या, सत्य ही सत्य का ज्ञान है यह।
है धर्म सुनो गो-नाहर का, साधारण सा आख्यान है यह॥
रहता है जिस विपिन में, सिंहों का समुदाय।
जा पहुँची संयोग से, वहां एक दिन गाय॥
तिनका न दांतसे दबासकी, शांति से खड़ी हो भी न सकी।
वह दशा हुई क्षण ही भर में, हँस भी न सकी रो भी न सकी॥
आ पहुँचा सिंह सामने से, बोला क्या सोच समाया है?।
री कपिला इस बनमें तुझको, घेर कर काल ले आया है॥
कर याद हृदय से ईश्वर को, मैं तुझे शिकार बनाऊँगा।
इस बन में आने के बदले, उस बन की हवा खिलाऊँगा॥
कपिला बोली कीजिये, मेरा नाथ शिकार।
पशु-पति पर जीवन चढ़े, तो जीवन बलिहार॥
लग जाये किसी के हेतु अहो, यह मैल-मूत्र का कचड़ा है।
पर नाथ जरा सी उलझन है, घर में नन्हा सा बछड़ा है॥
मैं उससे यह कहकर आई हूँ, सन्ध्या को दूध पिलाऊँगी।
यदि अभी आप खा डालेंगे, तो मैं प्रण से टल जाऊँगी॥
इसलिये शीस इतनी दीजे, आज्ञा हो घर तक जाने की।
रह जाय न मरते समय मुझे, अभिलाषा दूध पिलाने की॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाहर बोला मालूम हुआ, माहिर को बात बनाने में।
काल के पास खुद ही आये, है ऐसा कौन जमाने में॥
काल के गाल से जो कोई, भाग्य से निकलने पायेगा।
क्यों कपिले क्या वह मूर्ख, लौटकर वहां फिर आयेगा॥

कपिला बोली वह नहीं, साधन मेरे पास।
जिनके द्वारा मैं तुम्हें, दिलवाऊँ विश्वास॥

फिर भी मैं इतना कहती हूँ, यदि कहीं सत्य की कीमत है।
तो याद रहे प्राण से अधिक, बात की मुझे प्रभु इज्जत है॥
सौगन्ध कृष्ण की कहती हूँ, देती हूँ आन जगत्पति की।
साक्षी है सूर्य चन्द्रमा की, है मुख्य जमीन बनस्पति की॥
यदि आज वचन के रखने को, बछड़े तक जाने पाऊँगी।
तो प्रातकाल कल इसी जगह, मृगराज तुम्हें मिल जाऊँगी॥

कपिला की हर बात का, था कुछ ऐसा ढंग।
नाहर पर भी चढ़ गया, सत्य-वचन का रङ्ग॥
अस्तु सिंह के पास से, चली अन्त में गाय।
घर जाकर कहने लगी, बछड़े को चुमकाय॥

बेटा! आओ लाला आओ, आखिरी मिलन की बारी है।
मेरे कुमार! आज के लिये, केवल यह माय तुम्हारी है॥
किस्सा सुनकर बछड़ा बोला, जब तुम वचनों पर मरती हो।
तो मुझे दूध पी लेने को, क्यों बार-बार हठ करती हो॥
जिसकी मां का असली करतब, वचनों पर प्राण लगाना है।
उसके बच्चे का भी करतब, माता का साथ निभाना है॥
मां चलो लाल भी चलता है, सत् पर बलिदान चढ़ायेंगे।
या कुशल सहित घर आयेंगे, या दोनों मारे जायेंगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उछल कूदकर चल दिया, बछड़ा माँ के साथ।
उधर ऊँचाई पर खड़ा, देख रहा मृगनाथ॥

देखा कपिला ने मोह छोड़, अन्तःशः वचन निभाये हैं।
सत पर बलिदान चढ़ाने को, एक की जगह दो आये हैं॥
तब तक भी बछड़ा बोल उठा, मामाजी आगे बढ़ आओ।
पहले मेरा खेलो शिकार, पीछे मैया को खा जाओ॥
हे नाथ! सत्य पर मरने को, तत्पर हैं माँ बेटे दोनों।
हे तात! तुम्हारी सेवा में, हाजिर हैं माँ-बेटे दोनों॥
पानी-पानी होगया सिंह, सुनकर मृदु-वाणी बछड़े की।
किस की गम? जो कर देता, इस पर कुरबानी बछड़े की॥

शीश झुकाकर सिंह ने, कहा भानजे वीर!।
हुआ आज से विपिन यह, तेरी ही जागीर॥

तू प्राण पर मरने आया है, मैं इस आन पर मर चुका हूँ।
ओ बलिदानी तेरे ऊपर, मैं अपना दान कर चुका हूँ॥
नश्वर शरीर नश्वर त्रिलोक, सत्य ही सर्वदा अक्षय है।
इसलिये प्राण की बाणी पर, भानजे आज तेरी जय है॥

दिया सत्य की शक्ति ने, गौ को जीवन-दान।
राजन अब तू श्रवण कर, दानी का आख्यान॥

दान माहात्म्य

यों तो प्रत्येक वस्तु देना, दान में श्रेष्ठ बतलाया है।
पर अन्न-दान गौ-दान मात्र, दोनों से उत्तम पाया है॥
'मुदगल' ऋषि इसी अन्न-द्वारा, अपना जीवन-व्रत धरते थे।
हर पन्द्रहवें दिन अन्न जोड़, उससे अतिथारा करते थे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्वासा ऋषि को एक बार, ऋषि-वर ने भोजन करवाया।
जो जूठन उनकी बची रही, उसको अङ्गों से लिपटाया॥
बस इसी दान के बदले में, मिलगया स्वर्ग स्थान उन्हें।
जो करें मान प्रभु भक्तों का, क्यों न दें नाथ सम्मान उन्हें॥

* दया माहात्म्य *

जड़-चेतन जिसके निकट, हैं एक ही समान।
घट-घटमें जिसके लिये, हैं व्यापक भगवान॥

वह दया-वान है स्वयं ब्रह्म, है ब्रह्म स्वयं अनुकूल उसे।
यदि दया फूल लग गया हाथ, तो और फूल हैं धूल उसे॥
नृप शिविका यज्ञ निधान यहाँ, ज्यों ज्यों शांतिपर आरहाथा।
त्यों त्यों भय से इन्द्र का वहाँ, इन्द्रासन हिला जारहा था॥
नरपति का सत्य डिगाने को, इन्द्र ने बाज का वेष किया।
अग्नि को कबूतर बनाकर, एक ने एक को घेर लिया॥
भयभीत कबूतर भाग चला, वह बाज झपट्टा मार चला॥
वह हा हाकार पुकार चला, शिवि भूप उसे चुमकार चला।

नृप ने अपनी गोद में लिया उसे बिठलाय।
कहा बाज ने धन्य है, यह करुणा नर राय॥

बेशक यह अभय दान देना, सारे दानों से बढ़कर है।
जो दया दीन पर करता है, वह दीनानाथ बराबर है॥
पर याद रहे कम नहीं यहाँ, तुमसे स्थान दूसरों का।
साधू जन अपने ही समान, रखते हैं ध्यान दूसरों का॥
इस दया भाव से एक जीव, निश्चय कुछ जीवन पायेगा।
पर याद रहे दूसरा जीव, तरसाकर मारा जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि यह समझो हिंसा प्रवृत्ति, नीची करतूत हमारी है।
तो इतना तुमको जाहिर है, जीवों का जीव अहारी है॥
इसलिये मुझे मेरा अहार, मेरे आगे रख दो राजन्।
या कोई और उपाय सोच, यह क्षुधा शान्त करदो राजन्॥

शिवि बोले तेरे लिये, हाजिर है यह माथ।
पर शरणागत छोड़ना, नहीं हमारे हाथ॥
इसके बदले जो भी मांगो, वह इसी समय हाजिर करदूं।
यदि फकत मांस ही खाना हो, तो तन भी नेछावर करदूं॥
बाज ने कहा इसके बदले, है भोजन की दरकार मुझे।
मांस ही हाथ से दीना है, तो दे मांस ही अहार मुझे॥
नृप ने तत्काल तराजू ले, रक्खा तोल पर कबूतर को।
रग-रग का मांस उतार दिया, उस बाज रूप जल सागर को॥

जब अन्तिम श्वांस लिये, उठे भूप के प्राण।
त्यों ही प्रकटे सामने, दोनों देव प्रधान॥
स्वस्थ्य हुए नरराज भी, मिले अटल वरदान।
अतिथि मान का भी यहां, है ऐसा ही मान॥

अतिथि सत्कार

जो जन प्रत्येक अतिथि के हित, अपना सर्वस्व लगाता है।
मानो वह उसी वेष ही में, ईश्वर पर प्राण चढ़ाता है॥
ज्ञानी अज्ञानी भले बुरे, आना जाना है हर जन का।
क्या पता! कौन से परदे में, हो जाय दरस नारायन का॥

किसी बधिक ने एक दिन, ली कबूतरी फांस।
विवश कबूतर डाल पर, लेने लगा उसांस॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोली कबूतरी—आह ! नाथ, नाहक का मोह बढ़ाते हो।
ना कुछ मिट्टी की ममता में, करतब को भूले जाते हो॥
सम्बन्ध अटल यदि अपना है, तो फिर आगे मिल जायेगा।
पर समय अतिथि की सेवा का, फिर कभी न मिलने पायेगा॥
जिस पर जीवन दे देना हो, स्वर्ग का मार्ग सदा पर है।
हे नाथ ! कहाँ पर भूले हो ! वह अधिक नहीं है ईश्वर है॥

सुने कबूतर के नयन, कूद पड़ा तत्काल।
पर व्याधे का हृदय भी, अब ले उठा उबाल॥

बोला—ओ दया-धाम ! थामो, हा हा ! हम कैसे पथ पर हैं।
हैं ! हैं कर्तव्य पालने में, पशु पक्षी हमसे बढ़कर हैं॥
ना कुछ पक्षी का यह विचार, सेवा में जीवन लग जाये।
मुझसे पामर के जीवन में, प्रभु का न ध्यान आने पाये॥
यह वह है जिसने पर-हित में, अपनी देह को जलाया है।
यह मैं हूँ जिसने स्वारथ में, पर जीवन नाश कराया है॥
ओ पक्ष-योनि धारी दानी, सुर पुर भी है बलिहार तुझे।
ओ नर-पामर जलके पुतले, है लाख लाख धिक्कार तुझे॥

उस कबूतरी को दिया, व्याधे ने छुटकाय।
पर उसने भी अग्नि में, दिया शरीर जलाय॥

अब वे पक्षी पक्षी न रहे, था देवों में स्थान उन्हें।
पर-हित में जीवन देना ही, बन गया आत्म कल्याण उन्हें॥
तप दान भजन या दया कर्म, सच्चा प्रकाश कर देता है।
पर कुछ भी मद का अंकुर हो, तो सर्व-नाश कर देता है॥

जाजलि ऋषि ने इस तरह, किया योग अभ्यास।
तप ही में कटने लगे, उनके बारह मास॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गर्मी में पंचवटी तपना, बरसा भर बरसा आती है।
एवं जल ही में खड़े-खड़े, सारी सरदी कट जाती है॥
कर दिया मग्न इतना ऋषिको, उनकी इन आत्म वृत्तियोंने।
शीश पर घोंसले बना लिये, कितने ही जीव जन्तुओं ने॥
अण्डे देना बच्चे होना, पर उगना और निकल जाना।
इतनी ही अचल समाधि साध, मुनिवर ने योग सफल जाना॥

जाजलिको यह देख कर, इतना बड़ा गुमान।
मानो कोई भी ऋषि, इनके नहीं समान॥

गर्वाहारी यह गर्व देख, वह भार मन का सह न सके।
हे भक्त-दश्य चेताये बिना, अपने भक्तों को सह न सके॥
आकाश मार्गसे धुनिगूँजी, ओजाजलि यह अभिमान न कर।
ना कुछ विभूति पा जाने पर, नाहक का ज्ञान गुमान न कर॥
यह चमत्कार हो जाना तो, उस जीवाधर की इच्छा है।
तेरे मुकाबले में तपसी, वह तुलाराम ही अच्छा है॥
यदि इसका भेद समझना है, तो उसी जगह मिल जायेगा।
जीवन का असली भाव तुझे, वह महा-पुरुष समझायेगा॥

अब न ठिकाने रह सके, ऋषि के होश हवास।
गये विचारे भागकर, तुलाराम के पास॥

वह मामूली सा बनिया था, था काम वही व्यापारी का।
औरों की तरह वहाँ भी था, सब चरचा दुनियांदारी का॥
पर ऋषिके दरशन होते ही, बोला-अच्छा प्रभु! स्वागत है।
ऋषि राज चकित क्या होते हो, कर्मों की परम गूढ़गति है॥
मैंने माना तुमने अपना जीवन, योग में बिताया है।
पर शोक! अहम के भावों ने, वह सब धूल में मिलाया है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलाराम ने जब किया, सारा हाल बयान।
टूटा अपने आप ही, जाबलि का अभिमान॥
बोले—भैया! गुड़ तेल बेच, तुमने जिन्दगी बिताई है।
अचरज है पर यह योग दृष्टि, किस तरह हाथ में आई है॥
श्रेष्ठ से श्रेष्ठ तप करके भी, मुझको यह हुई तमीज नहीं।
इससे तो यह फल सिद्ध हुआ, ऋषि होना कोई चीज नहीं॥
तुलाराम कहने लगा, है यह भी भ्रम तात।
ज्ञान दूसरी बात है, सिद्धि दूसरी बात॥
जो सिद्धि न मिलने पाती है, जीवन योग बिताने से।
वह स्वयं हाथ लग जाती है, अपना कर्तव्य निभाने से॥
सिद्धि या स्वर्ग या मुक्ति-मनुज, अपने कर्मों से पाता है।
पर जहां तनिक अभिमान हुआ, तो सर्वनाश हो जाता है॥
जो आलस और अभिमान छोड़, केवल कर्तव्य निभाता है।
वह सिद्धि स्वर्ग या मुक्ति लाभ, आपही आप पा जाता है॥
ऋषिवर मैं जो कुछ करता हूँ, वह प्रभु का रहस मानता हूँ।
उनकी ही कृपा मात्र से कुछ, यह अन्तर भाव जानता हूँ॥
तुलाराम ने जब दिया, इस प्रकार उपदेश।
दूर हुआ तब ज्ञान से, ऋषि का आत्म कलेश॥

❀ गायन ❀

निभा दो इतनी ही भगवान।
सब जीवों पर दया भाव रख, करें उचित सम्मान॥
दीन हीन के लिये कर सकें, यथा शक्ति कुछ दान॥
सत्य शील संयम व्रत रखकर, रखें देश की आन॥
जन विनीत कर सके तुम्हारा, जीवन में गुण गान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब तक मनुष्य का क्षीण कभी, हे राजन् पुण्य प्रताप न हो।
जबतककि आप अभिमान नहो, या किसी विप्रका शाप नहो॥
देखो जब नहुष महीपति को, स्वर्ग का राज दे दिया गया।
इन्द्रको अहिल्याके कारण, इन्द्रासनसे च्युत कर दिया गया॥
शासन शासनपर दिल नगया, उस व्यभिचारी अभिमानीका।
सबसे पहले यदि शोक हुआ, तो विपय और इन्द्राणी का॥

सबसे पहले बस वहीं, पहुँचाया सन्देश।
आते हैं रति-भवन में, सुर-पति नहुष नरेश॥
इन्द्राणी ने शान्ति से, कहा पधारें नाथ।
मगर मिलूंगी मैं उन्हें, कुछ शर्तों के साथ॥

उन शर्तों में थी एक शर्त, सुर-राज पालकी पर आयें।
पर मजदूरों के बदले में, ब्राह्मण ही लगा दिये जायें॥
कामान्ध अहम के चक्कर में, समझ न भेद इन्द्राणी का।
आ पहुँचा इसी बहाने से, मूरख को समय गिरानी का॥
रखदी पालकी ब्राह्मणों पर, शचिके मन्दिरको जाने लगा।
कामातुर काम-उमङ्गों में, फिर*सर्प सर्प चिल्लाने लगा॥

सीमा के अन्दर सभी, निभजाती है बात।
जगत पूज्य द्विज जाति क्या, सहे नीचकी बात॥

दो पटक पालकी पृथिवी पर, द्विज बोल उठे सोजा पापी।
लग रही सर्प की लगन बहुत, तो सर्प स्वयं हो जा पापी॥
सारे विनाश का मूल हेतु, नर-राज नहुष का दर्प हुआ।
वह सर्प-सर्प कहने वाला, अन्त में जनम को सर्प हुआ॥

कर्म रहे अभिमान तज, रहे राम आधार।
जन 'विनीत' नर-देह का, है इतना ही सार॥

*'सर्प' शब्द का अर्थ साप है और, 'सर्प-सर्प का भाव जल्दी जल्दी चलने से है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गायन-दिया है नाथ ने कुछ ज्ञान तो अभिमान न कर।
मूढ़ बन बन के यहां, मौत का सामान न कर॥
मिला है नाम या वैभव तुझे न तुझ से ही।
दान है देव का यह व्यर्थ का अनुमान न कर॥
बाद बनने के बिगड़ना भी शुरू होता है।
बनी रहेगी सदा ध्यान यह नादान! न कर॥
विनीत तुझ से हजारों बने-मिटे हैं यहां।
वक्त बनने का है तो गर्व तू अनजान न कर॥
इसी भांति सत्सङ्ग में, आया फागुन मास।
भीष्म भक्त कहने लगे, सुनिये जगन्निवास॥

जीवन की अन्तिम श्वांसें हैं, नैया आ चुकी किनारे पर।
अब लङ्गर खींचा जाता है, बस या विश्वास तुम्हारे पर॥
इस जगह पार्थ से समता थी, कर्मों से वहाँ लड़ाई है।
थी यहाँ दुहाई दल-बल की, करणी की वहाँ दुहाई है॥
रण की जैसी हे जगन्नाथ, उस जगह निठुरता धरियो ना।
जैसा इस जगह बिसर बैठे, वैसा उस जगह बिसरियो ना॥
माना हमने भक्त के लिये, तुमने मानव तन धारा है।
पर परम पिता के नाते से, पापी भी पुत्र तुम्हारा है॥

गायन-जैसा ही बनाया प्रभु वैसा बन आया जीव,
कोई है भूपति कोई रङ्क या भिखारी है।
पाप पुण्य दोनों कर्म जीव धर्म कहते हैं,
इनके ही बूते पर सृष्टि अनुसारी है।
उत्तम कराया किया, मध्यम कराया किया,
आप-आप करने की शक्ति कया हमारी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब भी जो कराओगे करना पड़ेगा हमें,
करना या कराना तो मरजी तुम्हारी है।
यह सुनकर बहने लगे, कमल नयन के नयन।
सिसकी भर संकोच में, बोले माधव वचन॥
हे कर्म-वीर हे ज्ञान सिन्धु, अब यह प्रलाप दिखलाओ ना।
जाओ शान्ति से पयान करो, नाहक में मुझे लजाओ ना॥
तुमको ही अपने कर्मों का, दोनों ही लोक में सहारा है।
लोक से पार करने वाला, केवल कर्त्तव्य तुम्हारा है॥
हे भारत के भूषण! जाओ, सब आशा पूर्ण तुम्हारी हो।
हे भक्त-राज क्या और कहूँ, तुम स्वयं स्वर्ग-अधिकारी हो॥
शांति सहित हरिॐ कह, कर कृष्ण को प्रणाम।
भारत के शृङ्गार वह, जा पहुँचे सुर-धाम॥

❀ गायन ❀

उठ जब भारत का शृङ्गार, जगत में आया हा हाकार।
यहां विश्व में हा हा आया, वहां सुरों ने स्वागत गाया॥
खड़ी देवियां द्वार-द्वार पर, विजय लिये कर हार।
भारत जननी हुई अनाथा, झुका आप आर्यों का माथा॥
शेष रह गई करुणा गाथा, रहे न वे सरदार।
भीष्म वीरता वीर जहां से, रवि-सुतसा प्रण-धीर जहां से॥
चला गया फिर बाकी क्या है? वहाँ शक्ति का सार।
वीरो जाते जाते आओ आत्म-मान का ज्ञान सिखाओ॥
हिन्द वासियों में भर आओ, उस प्रण की झनकार।
रोते धोते धर्म-पति, लौटे अपने धाम।
कृष्णचन्द्र का नाम ले, कर विनीत विश्राम॥इति॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* श्रीगणेशायनमः *

* महाभारत *

* अश्वमेध-पर्व *

—— ०::❀::० ——

* प्रार्थना *

भँवर से नाव मेरी पार लगा दो माधव ! ।
मनुष्य-देह को कुछ सार बनादो माधव ॥
पड़े हैं सैकड़ों झगड़े पुराण-वेदों में ।
एक सीधी सी हमें राह बतादो माधव ॥
खड़े हैं मृग की तरह कान किसी आशा में ।
मोहनी-मन्त्र भरी तान सुनादो माधव ॥
लोक में हूँ तो निबादो मेरी लौकिक-करणी ।
गिरती बाजी को तनिक हाथ लगादो माधव ॥
सूझा जाता है कभी आपको भी यह पापी ।
विनीत को भी कोई ज्ञान सिखादो माधव ॥

पाण्डवों की दिग्विजय

भीष्म पिताका जब हुआ, शांतिसहित निर्वाण ।
धर्म-राज से इस तरह, बोले कृपानिधान ॥
यह अनुष्ठान हो चुका पूर्ण, अब नृपति दूसरा ध्यान करो ।
यह पद देव ने प्रदान किया, कुछ उसका भी सन्मान करो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह पीड़ित प्रजा पाल करके, कुछ शांति हुये नर-राईदो।
हो चुका यहां पर समय बहुत, राजन! अब मुझे बिदाईदो॥

प्रणत-पालके वचन सुन, बिलख उठे नर-पाल।
चरण पकड़ कहने लगे, जाते हो गोपाल॥

मेंढक पर मेरु मार धरकर, धरणी-धर किधर जा रहे हो।
लोचों पर शासन निर्भरकर, विश्वम्भर! किधर जारहे हो॥
जिन बातोंसे प्रेरित हो कर, इतना रण-रङ्ग मचाया है।
जिन आशाओं में बँध करके, अपना तक रुधिर बहाया है॥
वे आशायें या भाव सभी, अपना प्रभाव दिखलायेंगे।
जब इस शासन की बागडोर, प्रभु हो सँभालते जायेंगे॥
इसलिये विनय है यहीं रहो, राज्य के योग यह क्रूरनहीं।
मथुरा द्वारिका हस्तिनापुर, हे देव! तुम्हें कुछ दूर नहीं॥

करुणा-निधि कहने लगे, सुनो धर्म नर-पाल।
इस पद पर बिठला गई, तुम्हें तुम्हारी चाल॥

पांडव-गण मेरे मित्र न थे, कुरु पति न कृष्णका दुश्मन था।
पक्ष या विपक्ष बना लेना, यह भावों ही का कारण था॥
है इसी स्वाति का स्वच्छ नीर, मोती सीप में बनाता है।
विषधर के मुँहमें पड़ने से, विषका प्रभाव दिखलाता है॥
बस इसी तरह जो सत्य न्याय, द्वारा मुझको अपनाता है।
तो मोहन भी बेवश होकर, उसका सेवक बन जाता है॥
मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ, मैंने न रहस्य रचाया है।
तुम लोगों ने ही करणी का, अन्तिम स्वरूप दिखलाया है॥
अब भी यदि सत्य न्याय द्वारा, जो भक्ति भाव अपनाओगे।
तो इच्छा और ध्यान ही में, मोहन को हाजिर पाओगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा पार्थ ने तो मुझे, ले चलिये भगवान ।
कुछ जीवन कट जायगा, यों ही कृपानिधान ॥
इतने दिन कटे झंझटों में, अब समय शांतिका आयेगा ।
इस मुखकी छवि देख-देख, सुखसे जीवन कट जायेगा ॥
श्री धर्मराज के पास तीन, यह है ब्रह्मचारी सेवा में ।
यह सेवक समय बितायेगा, यदुनाथ ! तुम्हारी सेवा में ॥
केशव ने उत्तर दिया, रखो पार्थ ! विश्वास ।
भक्त-वश्य घनश्याम हैं, सदा तुम्हारे पास ॥
मन की दूरी पर दूरी है, विश्वास पास ले आता है ।
मोहन हाजिर हो जाता है जो जन जिस समय बुलाता है ॥
घर रहो प्रजाका हित देखो, कुछ दिन बैठो शासन में ।
है नई नीति इससे कुछ दिन, जायेंगे और भी उलझन में ॥
आना पर आ जा सकता हूँ, रहना ही कहीं जरूर नहीं ।
हे अर्जुन मुझे बिसार दो, मैं दूर नहीं तुम दूर नहीं ॥
कृष्ण चन्द्रके गमन पर, रोने लगे तमाम ।
छोड़ चला संतान को, क्या पिता सुखधाम ॥
उन्हीं दिनों आये वहां, ऋषिवर वेद-व्यास ।
ज्ञान-धामके चरण गहि, बोले धर्म-निवास ॥
भगवान ! न समझ में आता है यह नाव किधर को जाती है ।
मैं ज्यों-ज्यों शांति खोजताहूँ त्यों त्यों अशांति दिखलाती है ।
बचपन से एक घड़ी अपनी, सुख से न बीतने पाई है ।
यह दिन हैं सुख के लेकिन अब, मानस-वेदना समाई है ॥
जिसको अपना बैरी कहकर, बाणों से मार गिराया है ।
उसकी ममता के परदे से, अब दूना दुःख समाया है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझा था कल तक इस रण में, मैं ही धर्म का सहारा हूँ।
पर आज समझ में आता है, मैं पापी हूँ हत्यारा हूँ॥

देव! कहो तो दोन का, है कैसा संयोग!
ज्यों-ज्यों औषधि की गई, बढ़ा उसी विधि रोग॥

व्यास-देव कहने लगे, सुनो धर्म अवतार।
एक धर्म के आसरे, है असार संसार॥

इसमें कोई सन्देह नहीं, यह महा-यज्ञ कर डाला है।
जो दानव-दल संहारण कर, भारत का भार सँभाला है॥
तब तक वह मरना मरना था, अब इसकी घटी भरो राजन्।
तब वह कर्त्तव्य निभाना था, अब यह कर्त्तव्य करो राजन्॥

धर्म राज! है धर्म का, भेद गूढ़ गम्भीर।
बदला करती है यहां, क्षण-क्षण पर तासीर॥

जो कर्म कभी हित-रूप समझ, सत्कर्म कहाया जाता है।
वह कभी देश अवसर पाकर, अधरम बतलाया जाता है॥
जैसे हिंसा को वेद-शास्त्र, सब से निकृष्ट ठहराते हैं।
पर न्याय-धर्म की रक्षा पर, उसको न बुरा बतलाते हैं॥
जो जीवों को दुखदाई है, जो जगके लिये अगनि सा है।
यदि उसका कोई बध करदे, तो हिंसा नहीं अहिंसा है॥
तुमने कुरुदल-संहारण कर, हे धर्म! न पाप कमाये हैं।
सैकड़ों जीव वध कर डाले, तो लाखों जीव बचाये हैं॥
इसलिये न इसको पाप समझ, राजा रण का अधिकारी है।
अब तक नर मेध हो रहा था, अब अश्व-मेध की बारी है॥

यद्यपि इसमें भी वही, मचना है रण रङ्ग।
पर किस पर जो आज भी, करें धर्म को भङ्ग॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस अश्वमेध से तुम्हें भूप, अब प्रभुता नहीं बढ़ानी है।
हां पृथिवी के राजाओं को, धर्म की नीति सिखलानी है॥
जो सत्य-न्याय को मान चले, वह निर्भय बना दिया जाये।
जो अब भी पाप कमाता हो, उसका संहार किया जाये॥

धर्मराज कहने लगे, सच कहते हो नाथ।
पर प्रभु को मालूम है, रही न पाई हाथ॥
बन गया सैन्य के स्वागत में, रण में सारा परिवार गया।
जिस पर सरदारी होती है, वह हाथों का हथियार गया॥
है विदित नाथ को इन रोजों, रजवाड़ों की हालत क्या है।
आप ही कहें इस आज्ञा के, अब पालन की सूरत क्या है॥
सत्य ही तुम्हारी प्रभुता है, हथियार तुम्हारे साधन हैं।
धन-जनकी कुछ चिन्ता न करो, जबतक सहाय मनमोहन हैं॥
त्रेता में मरुत महीपत ने, जब अश्वमेध रचवाया था।
तब दान दक्षिणामें उसने, इतना धन-धान्य लुटाया था॥
जिसको ब्राह्मण ले जा न सके, था भार शक्ति से बढ़ा हुआ।
वह छोड़ा हुआ स्वर्ण उनका, है आज वहीं पर पड़ा हुआ॥
हिमि-गिरि घाटीपर सैन्यसहित, कुछ वाहन राजन पहुँचाओ।
इस अश्वमेध के लिये नृपति, सब द्रव्य वहीं से मँगवाओ॥

धर्मराज कहने लगे, जो आज्ञा स्वीकार।
पर विप्रों के द्रव्य पर, मेरा क्या अधिकार॥
व्यास ने कहा धन या पृथिवी, एककी नहीं कहलाती है।
जब जिसका शासन होता है, वह उसकी ही बन जाती है॥
ऐसी सम्पत्ति को लेने के, राजा गण ही अधिकारी हैं।
नर-राज न यह अनुचित समझो, ब्राह्मण भी प्रजा तुम्हारी हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज्ञा पाकर धर्म ने, भेजा दल हरषाय।
विविध वाहनों से किया, शस्त्र स्वर्ण मंगाय॥
गया द्वारका-नाथ पर, फिर नृप का सन्देश।
भक्त काज की लाज हित, आ पहुँचा करणेश॥
सज गया फिर पूर्व-वत्, वही समर का साज।
चले दिग्विजय के लिये, पार्थ और महाराज॥
धर्मराज ने उस समय, कहा विनय के साथ।
दीन बन्धु! जन दीन पर, रहे दया का हाथ॥

इस महा समर में लड़ भिड़कर, कितने ही भूप तमाम हुए।
लुट गये अनेकों धनी-पुरुष, कितने ही उजड़ ग्राम हुए॥
उन दुखित जनों के प्राणों में, दूसरी बार प्रभु जैयो ना।
जो स्वयं शरण में आ जाये, हे अर्जुन! उसे सतैयो ना॥

विदा मांग कर धर्म से, चले पार्थ घनश्याम।
जगह-जगह पर फिर हुए, वही घोर संग्राम॥
नहीं लिखेंगे हम यहां, वह सारा मजमून।
थकित हो चुकी लेखनी, लिखते-लिखते खून॥

है सार फकत इतने ही में, भारत का उग्र संहार था वह।
अंतिम प्रकाश था दीपक का, या पिटती का आसार था वह॥
संहार हुआ नवयुवकों का, बेटे बापों से बिछुड़ गए।
हो गईं हजारों विधवायें, लाखों बनते घर उजड़ गए॥
मद-मस्त पिशाच-प्रकृति वाले, बच सारे क्रूर-कमीन हुए।
कुछ धनी हुए कुछ दीन हुए, कुछ आकर वहां अधीन हुए॥

अस्तु विजयकर अन्त में, लौटे कृपा-निधान।
नियम सहित होने लगा, सारा यज्ञ-विधान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सार अधीन राजाओं को सेवा का काम प्रदान हुआ।
अतिथों का और याचकों का, इच्छानुसार सन्मान हुआ॥
वह साज-बाज गायन वादन, सब नये निराले ठाट हुए।
पाँचाली हुई राज रानी, श्री धर्म राज सम्राट हुए॥

गायन— बधाई पाण्डव कुल-नर-राज।
संभालो आर्य-भूमि का ताज॥

जनता बढ़ियां देख रही है, भारत माँ मुँह देख रही है।
भाग्य कामनी बढ़ी-चढ़ी वर, बदल रही है साज॥
संभालो आर्य्य-भूमि का ताज।

अमर बने नृप-नीति तुम्हारी, रहे प्रलय तक प्रीति तुम्हारी।
एक मात्र है हाथ तुम्हारे, धर्म—सत्य की लाज॥
संभालो आर्य—भूमि का ताज।

राजेश्वर पद प्राप्त कर, खड़े हुए धर्मेश।।
बोले सुनते हैं सभी, नर पति और नरेश॥

यह धर्म-यज्ञ यह महा-विजय, केवल न मोह के कारण है।
तुमको इतना जतलाना है, अब धर्म राज का शासन है॥
इसलिये धर्म का नियम चले धर्म का भूमि पर शासन हो।
धर्म से धर्म की डोर बने, धर्म ही धर्म का बन्धन हो॥

इन वचनोंमें थी भरी, तनिक अहम की गन्ध।
भला तोड़ते किस तरह, प्रभु वह नीति निबन्ध॥
आ पहुँचा मूसक वहीं, भण्डारे के तीर।
जिसका आधे भाग में, था स्वर्ण मय शरीर॥
लोट-पोट कर अन्त में, लौट चला मन मार।
बोला उफ! सारा हुआ, किया दिया बेकार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं समझा था धर्म का यज्ञ, कुछ मुख्य प्रभाव दिखायेगा।
जो जीव यहाँ पर आयेगा, वह जन्म-सफल हो जायेगा॥
अब समझ पड़ा प्रभुता वाले, होते की पोल में सोते हैं।
दूर से सुहाने लगते हैं, नारे के ढप-ढप होते हैं॥

एक ब्राह्मण था यहां, धर्म-वान धन-हीन।
रहता था आठों पहर, राम-भजन में लीन॥

हो गये पांच दिन एक बार, पर ब्राह्मण को भोजन न मिला।
छटवें दिन भोजनभी पाया, तो खाने को शुभ दिन न मिला॥
उससे भी भूखा एक विप्र, उसके द्वारे पर आया था।
ब्राह्मण ने अपनी चिन्ता तज, उसको भोजन करवाया था॥
उस जूठन को खाकर मैंने, यह सोने का तन पाया था।
आधे को पूरा करने को, मैं यहां भागता आया था॥
इतना भी मगर प्रभाव नहीं, पा सका धर्म अवतारी का।
जितना प्रभाव दिखलाता था, ना कुछ कङ्गाल भिखारी का॥
मालूम हुआ इस करणी में, तिलभर भी श्रद्धा हुई नहीं।
सारे शरीर की बात अलग, दुम ही सोने की हुई नहीं॥

यक दम ठण्डे पड़ गये, धर्म राज के जोश।
उन उपदेशों से हुए, स्वयं ठिकाने होश॥
चरण पकड़ कर कृष्ण के, गिरे धर्म अकुलाय।
हा हा कर कहने लगे, कृपा करो यदुराय॥
यह नेवला कोई चीज नहीं, जिसने उपदेश सुनाया है।
हे गर्वाहारी! तुमने ही, मेरा यह गर्व गिराया है॥
मैं झूठा मेरा करा-धरा, झूठ है और आचारी है।
अब साफ समझ में आया है, सब लीला नाथ तुम्हारी है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हा हा प्रभु खण्डन करो, इस खल का अभिमान।
चरण कमल की भक्ति ही, करदो मुझे प्रदान॥
धर्मराज की विनय पर, द्रवित हुए भगवान।
द्विज मिलकर सब परस्पर, विदा हुए सुखमान॥
धर्मराज का जब हुआ, एक छत्र अधिकार।
तब से भारत होगया, ऋद्धि-सिद्ध भण्डार॥
जिस तरह अन्त में प्राणी की, नाड़ी विशुद्ध हो जाती है।
अथवा बुझते दीपक की कुछ, बढ़ती सी लौ दिखलाती है॥
त्योंही वह तड़क-भड़क सारी, विधवा तिय का सिंगार समझो।
कलियुग से पहले द्वापर का, वह अंतिम चमत्कार समझो॥
वह रामराज्य का अङ्क कहो, मुँदती आंखों के पलक कहो।
उड़ते बादल की कड़क कहो, या अस्ताचल की झलक कहो॥
जो कहो मगर वह इतना था, जिसके आगे सब सूना था।
हम तो इतना ही कहते हैं, सच्चे का राज्य नमूना था॥
धन-धान्य यहां तक उन्नत था, धरने का रहा मुकाम न था।
याचक चोरों का नाम न था, घर में तालों का नाम न था॥
अपने-अपने कर्त्तव्य जोड़, दूसरा उन्हें अधिकार न था।
कानूनों की भरमार न थी, उन पर टैक्सों का भार न था॥
झगड़े थे सत्य-अहिंसा के, नीति में दया दरशाती थी।
स्वार्थ में फँसाने को झूठी, गङ्गा न उठाई जाती थी॥
यानी था वह सब तरह, शान्ति सुखों का राज।
एक रोज दरबार में, बैठे थे नर राज॥
आ पहुँचे लड़ते हुए, दो द्विज वर्ण किसान।
एक विप्र कहने लगा, सुनिये नीति निधान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यास ने कहा अचरज न करो, दूसरा समय आ पहुँचा है।
द्वापर का सत्य-सूर्य बढ़कर, अस्ताचल पर जा पहुँचा है॥
आया अब समय धांधली का, कुछ ग्राह्य नहीं कुछ त्याज्य नहीं।
कलि-राज सामने आये हैं, धर्म का रहा साम्राज्य नहीं॥
सत्पात्रा धर्म प्रिय लोगों को, अब रहा वहां विश्राम नहीं।
हे धर्म! हिमालय पर जाओ, अब यहां तुम्हारा काम नहीं॥

आज्ञा पाकर व्यास से, चले धर्म नर-राय।
यादवेन्द्र की शरण में, खड़े हुए शिर नाय॥

यदु-पति बोले आओ नरेश, इस मोड़न को क्या आज्ञा है।
धर्मावतार! बतलाओ तो, इस चहरे की रङ्गत क्या है॥
कम्पित होकर धर्म ने कहा, भगवान! कलि-काल आरहा है।
जिसके भय से हे दया धाम, सिंहासन हिला जा रहा है॥
श्रीव्यास देवने हिमि-गिरि पर, अब जाने की आज्ञा दी है।
मैं यही पूछने आया हूँ, इसमें क्या राय नाथ की है॥
केशव बोले—यह तो सच है, कलियुग में अपना काम नहीं।
लेकिन कुछ दिनों और ठहरो, शीघ्रता करो गुणधाम नहीं॥
वह समय स्वयं ही आता है, जब तुम हिमगिर पर जाओगे।
इस युगको इसकी महिमा को, क्षण-क्षण पर उलटा पाओगे॥

धर्मराज आये भवन, प्रभु की आज्ञा पाय।
कह 'विनीत' आनन्द से, जय श्रीयादवराय॥

❀ शुभमस्तु ❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके खेत में द्रव्य मुझको, कुछ मिला धर्म-अवतारी है।
लेकिन मेरा यह कहना है, इस धनका यह अधिकारी है॥
मैं तो केवल जोता ही हूँ, मिल जाये पैदावार मुझे।
हे धर्म! पराई सम्पति में, है कभी नहीं अधिकार मुझे॥
बोला दूसरा अगर सचमुच, वह थी राजन्! मेरी थाती।
मेरी ही किस्मत की होती तो, मुझे आज तक मिल जाती॥
पर मुझे आज तक मिली नहीं, तो कैसे मेरी सम्पति है।
खोदी मिट्टी मिल गया स्वर्ण, यह अपनी-अपनी किस्मत है॥

कहा कृष्ण ने आज यह, हो न सकेगा न्याय।
लौटे घर में फिर यहीं, आना हे द्विजराज॥
दोनों द्विज घरको गये, विदा हुए घनश्याम।
बदल गये छः माह में, उनके भाव तमाम॥

अब जोता यह चिल्लाता था, यह सब सम्पत्ति हमारी है।
आत्मिक केवल ज्ञान ही का, है पृथ्वी-पति अधिकारी है॥
दूसरा विप्र यह कहता था, यह हिस्सेदार उपज का है।
मेरी स्याई सम्पति में, इसका राजन्! क्या लगता है॥

यह परिवर्तन देखकर, धर्म गये चकराय।
मुसका कर कहने लगे, व्यास-देव ऋषिराज॥
मेरी सम्मति में यही, है निर्णय का रूप।
आधी-आधी द्रव्य यह, दो दोनों को भूप॥
अपना-अपना भाग ले, चले विप्र हरषाय।
पर असमंजस में नृपति, बैठे शीश झुकाय॥

बोले भगवन् क्या जादू है, क्या नीति लोक से निकल गई।
हे हे! प्रभु इतनी जल्दी क्यों, इन विप्रों की मति बदल गई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ महाभारत ॥

॥ आश्रम वासिक-पर्व ॥

॥ प्रार्थना ॥

सच है हर बात का रह-रह के असर होता है।
चाम मिट जाता है पर नाम अमर होता है॥

छोड़ देते हैं जो घर-बार तुम्हारे सिर पर।
ऐसे बे घर का हर इक लोक में घर होता है॥

नहीं है जिनमें 'नहीं' छोड़के कुछ भी हासिल।
ऐसी दुनिया से अलग अहले खबर होता है॥

हम भी उसके द्वार के भिक्षुक हैं हमारे केशव।
जहां विनीत से दीनों का गुजर होता है॥

॥ सन्यास ॥

वहाँ अन्ध-पति विदुर से, कहने लगे विचार।
भैया! टूटेगा नहीं, क्या माया का तार॥
सब विषय आप ही टूट गये, वासना न फिर भी टूटी है।
तृष्णा के साथी छूट गये, पर तृष्णा रांड न छूटी है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो चुका देह का तार-तार, पर माया तार न टूट सका।
मरघट की ओर जा रहा हूँ, फिर भी शृङ्गार न छूट सका॥
खा लिया बंश परिवार सभी, पर काल न मुझको आता है।
हो चुका द्रोह का मोह खतम, पर ममता मोह न जाता है॥
यह राहें जी भर भटक चुके, अब राहें धरो वहाँ की भी।
चिन्ता ममता हो चुकी खूब, कुछ चिन्ता करो वहाँ की भी॥

कहा विदुर ने शांति का, घर में मिलना झूँठ।
जैसे मिल सकता नहीं, कभी बाम पर ऊँट॥

है लाख त्याग वैराग्य भाव, या लाख भक्ति से नाता है।
लेकिन घरके षट रोगों में, वह राग हवा हो जाता है॥
जिस जगह बन्धु माता नारी, बेटा बेटी हैं नाती है।
उस जगह लाख परहेज करो, फिर भी झंझट लग जाती है॥
पर इसके साथ निभाने का, इतने दिन स्वाद उठाया है।
अब चलो कहीं पर भजन करें, चौथापन आगे आया है॥
भूसे की आग गृहस्थी है, सुख से न तापने पायेंगे।
यह वह मकड़ी का जाला है, जिसमें फँसते ही जायेंगे॥

गान्धारी कुन्ती विदुर, अन्ध-राज के साथ।
इस प्रकार कहने लगे, पकड़ धर्म का हाथ॥

बेटा हम अन्धे बूढ़ों का, अब अन्तिम समय आ रहा है।
कानों पर खड़ा कराल-काल, चलती के राग गा रहा है॥
जो कुछ शुभ अशुभ भावना थी, हो चुकी आप से बाकी है।
अब राज धर्म के नाते से, केवल वन-जीवन बाकी है॥
इसलिये हमें प्रिय विदा करो, शान्ति से विपिन गमन करें।
तुम करो प्रजा पालन सुख से, हम वहां कृष्ण का भजन करें॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सुनकर रोने लगे, धर्म सहित परिवार ।
देव ! देव ! छोड़ो न यह, हम नीचों पर भार ॥

यह सब है घर का काम काज, बड़के नवयुवक चलाते हैं ।
लेकिन बूढ़े बुजुर्ग गुरु-जन, उन सबको राह बताते हैं ॥
जिस घर में कोई वृद्ध नहीं, वा घर में खींचा-तानी है ।
मेरे विचार में उस घर के, बंटाढार की निशानी है ॥
पर इन बातों की चरचा क्या, यह सब स्वारथ का होना है ।
हे देव पधारो अब क्या है ? जो होना है सो होना है ॥
हे पितृ-देव हे पूज्य चचा !, निर्मोह भाव से गमन करो ।
मैं यहाँ भवनमें व्यसन करूँ, तुम वहाँ कृष्ण का भजन करो ॥
मेरा हम मूढ़ अज्ञानों की, किस्मत में सेवा लिखी न थी ।
जीवन था रोने-रोने को, हँसने की रेखा लिखी न थी ॥
हम लोगों की चिन्ताओं में, तूने जिन्दगी बिताई है ।
अब सुख का कुछ सामान हुआ, तो बड़ी दूसरी आई है ॥

कुन्ती बोली लाड़ले, इसका करो न खेद ।
बहुत गूढ़-गम्भीर है, मातृ-भक्ति का भेद ॥
माता की सेवा पूजा तो, पूजन है और न अर्चन है ।
उसकी सच्ची श्रद्धा बेटा !, केवल आत्मा का पावन है ॥
तुमने मेरी इच्छानुसार, भारत आजाद बनाया है ।
देश का जाति का पुरुषों का, सच्चा कर्त्तव्य निभाया है ॥
अब भी मैं कहे जा रही हूँ, बेटा नृप-नीति बिसरियो ना ।
जो भार प्रजा पर पड़ न सके, वह भार भूलकर धरियो ना ॥
जनता को हरी दूब समझे, बकरी पर सिंह न चढ़ा करे ।
भर जाय पेट घोड़े का भी, दूब भी बराबर बढ़ा करे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ गायन ❀

वही है नीति नृपति गुण धाम, प्रजाका जो बन रहे गुलाम।
राज्य—कोष जनता का माने, छोटे बड़े एक कर माने ॥
दीन दुखी की गति पहिचाने, समझे स्वार्थ हराम।
अङ्क समझ कर सबको पाले, प्रजा कहेसो नियम निकाले ॥
इन पर ही जीवन दे डाले, छोड़—ऐश आराम।
प्रजा देश का नृप सेवक है, सिंहासन जनता का हक है ॥
दे निकाल अन्यायी नृप को, यदि न मिले आराम।
जो विषयों में समय बितायें, ठग ठग कर जनता धन खायें॥
इन राज्यों में आन्दोलन से, मचता है कुछ राम।

धर्म-राज को धैर्य दे, सब ने किया पयान।
व्यासाश्रम में पहुँचकर, ठहरा योग-विधान ॥
कुछ दिन तक रहते हुऐ, यों ही योग विधान।
हुआ शान्ति के साथ में, उन सबका निर्वाण ॥
धर्म भवन में जिस समय, पहुँचा यह सम्वाद।
आत्माओं से चक-चकक, उतर गया आह्लाद ॥

फिर वही शोक फिर वही रुदन, फिर वही घोर कुहराम हुआ।
उस करुणा क्रन्दन के मारे, करुणा-मय नगर तमाम हुआ ॥
धर्म ने कहा बस बन्धु उठो, सीमा हो चुकी विलापों की।
अब समय नहीं है सोने का, कुछ कद्र करो इन श्वासों की॥
बस समझ रखो इस जीवन में, जब मर भी चैन न पायेंगे।
भूल ही जानते आये हैं, भूल ही जानते जायेंगे ॥
घर बार मिटा परिवार मिटा, मिट गये बनाने वाले भी।
हम खुद मिटने पर आये हैं, मर मिटे बनाने वाले भी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगे न रहा पीछे न रहा, जो है वह भी न दिखायेगा।
जो इसे हाथ से खोया तो, शोक ही हाथ रह जायेगा॥

वहीं परीक्षित कुँवर को, बुलवाकर तत्काल।
कहा धर्म ने लाल यह, भारत-भार सँभाल॥

इसके पाने को पल-पल पर, हम सबने रक्त बहाया है।
पर पाने पर जो पाया है, वह पाया भी न पाया है॥
कब तक लायें? दिल का कबाब, कब तक यह आँसू पियाकरें।
जी रहा नहीं जी रहने का, तो किस आशा में जियाकरें॥
भारत में वीर बोड़ने का, भावी का कभी विचार न था।
उत्तर सती हो जाती तो, कोई पानी का दातार न था॥
पर माया माया-भारी की, जो कुल का अंश बचाया है।
देव ने तुम्हारे लिये कुँवर, यह आशा-विटप लगाया है॥
यह आर्य-भूमि की डोरी है, थामो कुमार! सहाद इसे।
यह धर्मराज का ताज नहीं, समझो कृष्ण का प्रसाद इसे॥

भूल न जाय स्वप्न में, पांडु वंश की नीति।
रहे प्रजा पर सर्वदा, सुत समान ही प्रीति॥

आता है समय दुरङ्गी का, अब कलियुग रङ्ग जमायेगा।
प्रत्येक जाति का एक साथ, सब भाव बदलता जायेगा॥
पर बेटा! बने जहां तक भी, तुम राज नीति पालन कीजो।
दीजो न हाथ से धर्म कभी, चाहे जीवन भी दे दीजो॥

विह्वल परीक्षित से कहा, क्या कहते हो! नाथ।
भार आर्य्य-सन्तान का, इस अजान के हाथ॥

जिस कलियुग का आना सुनकर, धर्मावतार भी भाग चले।
जिसके आने से पहले ही, मैदान वीर गण त्याग चले॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस कठिन काल के चक्कर में, क्या नीति चलाई जायेगी।
हे नाथ! अज्ञान अनाड़ी से, यह लाज न रहने पायेगी॥
धर्मराज कहने लगे, करो न सोच-विचार।
जो जग का आधार है, सो भारत-आधार॥
इस सृष्टि-कार का सृष्टि सूत्र, हरगिज न टूटने पायेगा।
जैसा ही चलता आया है, वैसा ही चलता जायेगा॥
द्वापर-कलियुग के कर्मों में, केवल भावों का अन्तर है।
अन्यथा सृष्टि का सभी काम, बाहिर में सदा बराबर है॥
इसलिये तात! यह सोच छोड़, जो अब आये सो तब देखो।
देखा न किसी का ऐब-हुनर, केवल अपना करतब देखो॥
यों तो इस संसार का, है यों ही व्यापार।
पुण्य-पाप का सर्वदा, रहता है अधिकार॥
सतयुग में यदि न पाप होते, तो क्यों होता? अवतार यहाँ।
त्रेतायुग यदि विशुद्ध होता, क्यों आते? लीलाधार यहाँ॥
द्वापर में भारी पृथ्वी पर, फैले थे यह अत्याचारी।
जिनका संहार कराने को, खुद प्रगट हुए हैं बनवारी॥
हमसे ही पूछो इस युग में, कौन सा सुकर्म कमाया है।
अपना-अपना कहते-कहते, अपना कर दिया पराया है॥
चाह की चाह में चाह गई, सुख भी न रहे गम भी न रहे।
मिट गये मिटाकर औरों को, वे भी न रहे हम भी न रहे॥
पांचाली पाण्डव हुए, हिमि गिरि को तैयार।
कह विनीत फिर प्रेमसे, जय-जय लीलाधार॥

❀ शुभमस्तु ❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

❋ महाभारत ❋

मुशल-पर्व

यदुकुल-संहार

नारद से कहने लगे, यहाँ कृष्ण भगवान ।
ऋषिवर ! पूरा हो चुका, अपना अनुसन्धान ॥
सारी का टूटा तार-तार, बारी रह गई किनारी की ।
हो चुके सभी के अनुष्ठान, रह गई शाप गान्धारी की ॥
चलने वाले हैं पाण्डव गण, चलने का समय हमारा है ।
पर यदुकुल को ले चलने का, बोलो क्या जतन विचारा है ॥
नारद बोले है शाप तुम्हें, पर फल यदु-कुल पर आना है ।
अपराध तुम्हारा सीमित है, पर दण्ड वंश को पाना है ॥
और का दोष और का दण्ड, यह नीति न मानी जायेगी ।
उनका ही उन पर कारण हो, तब उचित रीति कहलायेगी ॥
यह ताप उन्हें हे ताप रहित, उनका ही पाप दिखायेगा ।
इतनी जल्दी इतना प्रभाव, द्विज-शाप फकत दिखलायेगा ॥
लीला-धर को थी कहाँ, लीलाओं में देर ।
सिद्ध कर दिया शीघ्र ही, यदु-कुल का अन्धेर ॥
चौमासे के इस तरफ, चले मेघ उमड़ाय ।
ऋषि बनकर यदु-वंश का, बड़ा काल हरषाय ॥
दुर्वासा मण्डल सहित, गये द्वारिका धाम ।
नगर निकट करने लगे, सारे ऋषि विश्राम ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावी-वशात् यदुवंशी भी, हर रोज वहीं से जाते थे।
ऋषि पति को आंखें बन्द किये, प्रतिदिन बैठा ही पाते थे॥
श्री माया पति के भावों का, डोंगा आ लगे किनारे से।
यह ऋषि पाखण्ड दिखाता है, भावी ने कहा इशारे से॥
एक ने कहा यह तो यों ही, रोजाना चकमे देता है।
हम लोग सामने आते हैं, तो आंख बन्द कर लेता है॥
कोई बोला क्या करें! बन्धु, घर में की थैली खाली है।
तो अपना पेट पालने को, अन्तिम तदबीर निकाली है॥
एक ने कहा तो कुछ ठहरो, सच-झूंठ अभी खुल जायेगा।
जांच की आंच में कांच और, हीरा न एक ठहरायेगा॥

एक कढ़ाहा पेट पर, बाँध लिया तत्काल।
यदुकुल वालों ने किया, ऋषिराज से सवाल॥

हे देव! हमारे साथी की, ऐसी हालत मुद्दत की है।
इस के पेट में बताओ तो, लड़का है अथवा लड़की है॥
ऋषिवर बोले लड़का-लड़की, दोनों का नहीं सितारा है।
हां अपना ब्रह्म कह रहा है, जो है वह काल तुम्हारा है॥
मुनिवर का शाप सितार उठा, यदुकुल का हाहा कार उठा।
वैसे ही हितू-रूप बनकर, भावी का भाव पुकार उठा॥
उफ! नाहक क्यों घबराते हो, अपना भी बल देखो भालो।
जिस पर यह शाप मुनहसिर है, उसका नाम ही मिटा डालो॥

लोह कढ़ाहे को वहीं, घिस डाला तत्काल।
बचा रहा जो अंश वह, दिया सिन्धुमें डाल॥
कण-कण से पैदा हुआ, वहीं तिधारा कांस।
घास-रूपमें आ गया, यदु-वंश का विनाश॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खा लिया भाग वह मछली ने, मल्लाह उसी को ले आया।
मीनको चीर लोहा निकाल, बाण के लिये शर बनवाया॥
केलि की किलोल उलेल बनी, या मौत सामने आ पहुँची।
या साधन या स्थान ढूंढ, यदु-कुल में भावी जा पहुँची॥

उद्धव ने यदुवंश का, यह भविष्य अनुमान।
किया बद्रिका-धामको, उसी समय प्रस्थान॥
यदुकुल के शिरपर यहाँ, हुआ पिशाच सवार।
खेल-खेल में मच गई, आपस की धरमार॥

बस उसी त्रिधारे के द्वारा, एक का एक पर बार हुआ।
देखते-देखते घड़ियों में, यदु-वंश वहीं संहार हुआ॥
इस ओर त्रिगुण त्रै भाव त्याग, प्रभु अँवराई में जा पहुँचे।
उस ओर योगिया वेष किये, धर्मादि सामने आ पहुँचे॥

निर्विकार भगवान को, सबने किया प्रणाम।
चरण पकड़ कहने लगे, जै जै माया धाम॥

गायन-नमामि नित्य-निर्विकारं नेति लोक नायकं।
अनादि आदि कारणं, स-कान्ति शान्तिदायकं॥
विशुद्धि-बोध विग्रहं, अतीत इन्द्रियादिकम्।
अरूप-रूप्य निर्गुणं, गुणादि शक्ति वर्द्धकम्॥
विशोक शोक भंजनं, स्वभक्त भाव रञ्जनम्।
विनीत पाद पाहिमाम्, नमो त्रिपाद भञ्जनम्॥

दोहा-विहँस कहा करुणेश ने, आओ धर्म कुमार।
अच्छा है अन्तिम समय, मिललें बाँह पसार॥

हो चुकी साधना सिद्ध सभी, अब अगला अवसर साध चलो।
उस घोर प्रात से पहिले ही, सब अपने बिस्तर बाँध चलो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई न आज कह सकता है, हम किधर रहें या किधर चलें।
यह चला चली का अवसर है, तुम इधर चलो हम उधर चलें॥
धर्मराज कहने लगे, जाते हैं भगवान।
पर ऐसा ही हर जगह, रहे हमारा ध्यान॥
इस जगह युद्ध था तन बलका, समता थी कौरव लोगों से।
उस जगह मानसिक रण होगा, पाला है यम के दूतों से॥
परमार्थ रूप स्वारथियों का, स्वारथ उस जगह निभादीजो।
जिस तरह बने दोनों की, यह नैया पार लगा दीजो॥
गुणातीत कहने लगे, सुनो धर्म अवतार।
कर्म योगियों पर कभी, आता नहीं विकार॥
मैं निर्विकार हूँ सिन्धु रूप, लहरें मेरी इच्छा समझो।
प्रत्येक जीव इन लहरों में, चलता फिरता बुलबा समझो॥
मेरी ही इच्छा से वे सब, मिलते हैं या टकराते हैं।
मुझ में ही पैदा होते हैं, फिर मुझमें ही मिल जाते हैं॥
इसलिये कर्म या अकरम पर, अब नहीं ध्यान का अवसर है।
राजन्! सारी मुक्ति का तत्व, अब ओंकार पर निर्भर है॥
पहुँचे करुणा अयन के, सख्त पार्थ पर नैन।
सखा भाव में फिर उठे, भागा हर के बैन॥
अर्जुन! अब वह वह समय नहीं, जिसमें मोहका प्रकाश करो।
मेरा भूलो तेरा भूलो सोऽहं, में शान्ति निवास करो॥
कोई तुम से था बहुत दूर, कोई तुमसे था सटा हुआ।
यह याद रहे एक ही सूर्य, था सभी घटों में बँटा हुआ॥
प्रत्येक देह प्रत्येक योनि, इस माया ग्रह का दर्पण है।
तुम जो कुछ जिधर देखते हो, वह एकमात्र मन मोहन है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घट ही से घट निर्माण हुआ, घट ही से घट कल्याण हुआ।
घट ही में फिर घट समा गया, घटसे घट का निर्माण हुआ॥

अस्तु न करना चाहिये, अब कोई भी खेद।
पार्थ उठा दो हृदय से, पाप पुण्य का भेद॥
अर्जुन बोले जो कहो, सो सच है घनश्याम।
पर इस प्रेमी हृदय को, नहीं ज्ञान का काम॥

मुझको इससे क्या सरोकार, क्या किया और क्या करना है।
मुझको इससे सम्बन्ध नहीं, जीना है अथवा मरना है॥
पाऊँगा स्वर्ग नर्क अथवा, विश्व से पार हो जाना है।
इसकी चिन्ता तो उसको है, जिसने पहिना यह बाना है॥
परवाह नहीं सुख-दुःख रहे, अथवा आह्लाद विषाद रहे।
हाँ इच्छा है तो इतनी है, यह मूर्ति मनोहर याद रहे॥
कोई भी कहीं योनि पाऊँ, पर नाथ। तुम्हारा ध्यान रहे।
मैं प्रभु का हूँ प्रभु मेरे हैं, इतना जीवन-अभिमान रहे॥

❀ गायन ❀

स्वर्ग या मुक्ति की लालसा क्या करूँ, जो यह मूर्ति ही नाथ धारे रहो।
मैं रहूँ चाहता चारु चरणाब्ज को, तुम मनोहर छटा को सँवारे रहो॥
विलासों से क्या या तमाशों से क्या, अगर दास अपना बिचारे रहो।
यहाँ कोई अपना रहे न रहे, हम तुम्हारे रहें तुम हमारे रहो॥

दिया सच्चिदानन्द ने, अर्जुन को वरदान।
धर्म आदि ने फिर किया, शांति-सहित प्रस्थान॥

❀ शुभमस्तु ❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ महाभारत ॥

॥ स्वर्गारोहण-पर्व ॥

—o::❀::o—

॥ पाण्डवों का स्वर्ग-गमन ॥

कृष्ण कृष्ण कहते हुए, गये बद्रिका-धाम ।
किन्तु वहां भी धर्म को मिल न सका आराम ॥
तक रहे निगाहें फाड़ फाड़, अभिलाषी विश्व निवासी के ।
कैलाश-धाम में जाकर भी, दर्शन न मिले कैलासी के ॥
धर्म ने बिलख कर कहा तात, अब पाप सामने आये हैं ।
इस कारण हर्ष देखते ही, नन्दी में शम्भु समाये हैं ॥
भीम ने कहा ठहरो भ्राता !, दूसरा उपाय लगायेंगे ।
भक्ति से अगर शिव दुरे नहीं, तो शक्ति काम में लायेंगे ॥
भारत जयकारी गदा-शक्ति, जिस समय दिखाई जायेगी ।
तब या नन्दी मिट जायगा, या मूर्ति सामने आयेगी ॥

कहा धर्म ने छोड़ दो, अब विचार यह क्रूर ।
गदा और गांडीव का, उतर चुका है नूर ॥

यदि अब भी अपने तन बलका, अभिमान यहां दरशायेगा ।
तो अभी लोक से छूटे हो, अब यह भी हाथ न आयेगा ॥
देवादिदेव की समता में, इसलिये न अब अभिमान करो ।
जो शान्ति अन्त में पाना है, तो इन्हीं शम्भुका ध्यान धरो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब बोले यदि तन-मन-धनसे, हम-जन-मन रञ्जन के जनहाँ।
तो इसी समय उन प्रेम वश्य, श्री कैलाशी के दर्शन हों॥

प्रेम-प्रवश पर शीघ्र ही, प्रकट हुए भगवान।
भक्त वृन्द करने लगे, हिल मिलकर गुण गान॥

गायन— रखियो प्रभु! आज हमारी।
जय जय भोले भण्डारी॥

त्रै-ताप तपाये आये, विश्व से सताये आये।
ओ शरण हमें त्रिपुरारी, जय जय भोले भण्डारी॥
छूटे हैं सकल सहारे, हम भी अब नहीं हमारे।
है केवल आश तुम्हारी, जय-जय भोले भण्डारी॥
जबविमुख जगतदिखलाये जब अपन न कुछबन आये।
तब तुम तक टेर हमारी, जय जय भोले भण्डारी॥

विहँस कहा, त्रिपुरारि ने, छोड़ो भ्रम का खेद।
ब्रह्मा विष्णु महेश हैं, नाम—मात्र का भेद॥
उस परम ब्रह्म की जो शक्ति, सम्पूर्ण सृष्टि उपजाती है।
बस वही विश्व में कहने को, ब्रह्मा बतलाई जाती है॥
यों ही पालक हैं विष्णु रूप, शङ्कर उसका संहारी है।
फिर जितनी शक्ति हमारी है, उतनी ही शक्ति तुम्हारी है॥
जिस जगह ब्रह्म वह व्याप्त न हो, ऐसा कोई भी ठौर नहीं।
हे धर्मराज यह याद रहे, तुम और नहीं मैं और नहीं॥
जो सच्ची शान्ति चाहते हो, तो ध्याओ त्रिलोकधारी को।
त्रिभुवन को यदि अपनाना है, तो अपनाओ बनवारी को॥

पहुँचे 'शैलावर्त' पर, पाँचों पाण्डव वीर।
अगम चढ़ाई देखकर, नर—पति हुए अधीर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिखर तोड़कर भीम ने, मारग दिया बनाय ।
तब एक निर्झर सामने, बोला हाँक लगाय ॥

हे धर्म ! न यह भारत-रण है, जिसको जय करने आये हो ।
इसको तुम स्वयं जानते हो, गल-गलकर मरने आये हो ॥
लेकिन कितने ही शान्त रहो, कितना ही नीचा माथ करो ।
आगे तब बढ़ने पाओगे, जब मुझ से दो दो हाथ करो ॥
धर्म ने कहा उस दल बल में, अब यहां हमारा साथ कहां ।
राज्य के बिना राजा कैसा, हथियार नहीं तो हाथ कहां॥
खून ही खून करते करते, अब रक्त की चाहत रही नहीं ।
खूनी दिल था तब खून किये, अब खूनी तबियत रही नहीं॥
निर्झर बोला तुम लाख कहो, पर मुझे हराने पाओगे ।
तब बिना रोक इस चोटी से, आगे को जाने पाओगे ॥

द्रुपद सुता को नीच वह, ले भागा तत्काल ।
विवश खड़े रोने लगे, पार्थ और नर-पाल ॥
पर न भीम अपमान वह क्षण भर सके सँभाल ।
पकड़ नीच को भूमि पर, मार दिया तत्काल ॥
द्रुपद-सुता के साथ में, बढ़ने लगे सुधीर ।
नजर पड़ी यक कामनी, वेनवती के तीर ॥

वह बोली धर्म राज ठहरो, नर जीवन मत बेकार करो ।
वह राज्य नहीं यह राज्य करो, मेरे साथ में विहार करो॥
पाण्डव-पति बोले देवी अब, विषयों में मुझे फँसाओ ना ।
ज्यों-ज्यों कर उठने पाया वह, फिरसे वहीं गिराओ ना ॥
दूसरी जगह भी यही कहा, फिर आगे पाण्डव-वृन्द चले ।
उस ओर धर्म से मिलने को, नारद समेत ऋषि वृन्द चले ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नर-पति ने उन्हें प्रणाम किया, ऋषियों ने आशीर्वाद दिया ।
मानों मुक्ति का पात्र पाकर, अन्तिम योग का प्रसाद दिया ॥
नारद बोले राजर्षि ! धन्य, तुमने यह धर्म निभाया है ।
जिसके द्वारा पर-लोक लोक, दोनों को सुलभ बनाया है ॥
जीवन का देश-जाति हितमें, अन्तिम काल तक लगाया है ।
साथ ही कृष्ण को सेवा में, तन मन देकर दिखलाया है ॥

स्वर्ग-भूमिको अबकरो, शांति सहित प्रस्थान ।
पार लगावेंगे वही, कृपा-सिन्धु भगवान ॥

जिस समय विवेक मात्र होगा, ममता मानकी न बू होगी ।
सर्वत्र एक आत्मा होगी, मैं होगी और न तू होगी ॥
जिस समय भक्ति बढ़ते बढ़ते, ब्रह्मास्मि भाव पा जायेगी ।
जिस समय एक सोऽहं ही की, अन्तर में गूंज समायेगी ॥
उस समय स्वयं जीवात्मा यह, ओंकार रूप हो जायेगा ।
अद्वैत शक्ति जागृत होगी, सब द्वैत भाव खो जायेगा ॥
सब पाप पुण्य सब कर्म धर्म, उस समय भस्म हो जायेंगे ।
कैवल्य भाव को लिये हुए, ब्रह्म ही ब्रह्म दिखलायेंगे ॥

जगत ब्रह्म हम ब्रह्ममय, ब्रह्म मात्र का मान ।
यहीं समझना चाहिये, प्राणी का निर्वाण ॥
ऋषियों ने फिरसे दिया, उनको आशीर्वाद ।
धर्म-राज हरि ध्यानमें, बढ़े सहित आह्लाद ॥

लीला का अन्तिम दृश्य लिये, लट आया लीलाधारी का ।
श्री कृष्ण कहा दम टूट गया, बढ़ते ही द्रुपद दुलारी का ॥
चीखकर वृकोदर बोल उठे, भैया ! भैया ! प्रेयसी कहां ? ।
भारत की भावी मूर्ति कहां, बलिष्ठभा कहां ? द्रौपदी कहां ? ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म ने कहा अब समय नहीं, ममता या मोह दिखाने का।
है अवसर यही परीक्षा का, अपना वैराग्य जताने का॥
द्रोपदी युद्ध का कारण थी, या हत्याओं का पाप इसे।
इसलिये सहन हो सका नहीं इस दिव्य लोक का ताप इसे॥
जिसका जितना आत्मिक बल है, वह उतना बढ़ने पायेगा।
पुण्य के क्षीण होते ही, वह आप ही ढेर हो जायेगा॥

नकुल और सहदेव का हुआ वहीं अवसान।
कुछ चलते ही चल दिये, भीम पार्थ बलधाम॥
धर्म-दृष्टि में उस समय, कांप उठा संसार।
रह न सका कर्त्तव्य का, कुछ भी उन्हें विचार॥

आंसू उमड़ाने वाले थे, जाता था धर्म विचार वहाँ।
पर अहित कहां हो सकता है, श्री कृष्णचन्द्र रखवाल जहाँ॥
धर्म ने श्वान का वेश धरा, गिरने से उन्हें संभाल लिया।
ममता को दिल से टाल दिया, मद के सिन्धु में निकाल दिया॥
श्वान ने कहा बस सावधान, आंसू न भूमि पर आ जाये॥
इस सुर-ममता वाले पद को, ममता डांकनी न खा जाये॥
अन्तिम बार की परीक्षा है, कुछ झोंके दिये जा रहे हैं।
हे धर्म! तुम्हारे स्वागत को, वह देखो इन्द्र आ रहे हैं॥

उतर पड़ा तत्काल ही, सुर-नाथ का विमान।
कहा इन्द्र ने विनय से, आओ सत्य निधान॥

त्रैलोकों की शक्तियां सभी, मिलकर जयकार पुकार रहीं।
देवियां द्वार पर खड़ी हुईं, आने की राह निहार रहीं॥
धर्मने कहा मुझसे पहले, श्वान को यान पर बिठलाओ।
जिस जगह मुझे पहुंचाना है, उस जगह इसे भी पहुँचाओ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चकित रह गये इन्द्र भी, नृप का शौर्य निहार।
पहुँचे सब मिल स्वर्ग में, छाया जय-जय कार॥

गायन—भारत शृङ्गार! आओ धर्मावतार आओ।
हे सत्य-सिन्धु आओ, हे निर्विकार! आओ॥
हे देश भक्त! आओ, हे कृष्ण भक्त! आओ।
सद्धर्म कर्म व्रत के, हे कर्ण-धार आओ॥
जनता के प्राण आओ, आर्यों के मान आओ।
हे शील मूर्ति! आओ, हे धाम-द्वार आओ॥

दोहा—भारत का इस भाँति से, पूर्ण हुआ सम्वाद।
जय जय जीजा-धामकी, कहा सहित आह्लाद॥

गायन—बढ़ी धार बहते हुए कह गई।
बढ़ो आपही आपही बह गई॥
तरंगें कहां तक गिनायें तुम्हें।
कभी यह गई तो कभी वह गई॥
फकत शक्ति भी यह किसी खासकी।
कि चोटों पे चोटों को जो सह गई॥
रहे राऊ या रङ्क कोई नहीं।
किताबों में कुछ याद सी रह गई॥
यह चरित्र जो हृदय से, कहें-सुने गुण धाम।
उनके आत्म-मनोर्थ सब, पूर्ण करें घनश्याम॥
राधावर! गिरि-धर! हरे! हे विनीत की बार।
इस जीवन संग्राम से, इसे लगादो पार॥

❀ शुभमस्तु ❀

मुद्रक व प्रकाशक—श्यामलाल हीरालाल, श्यामकाशी प्रेस, मथुरा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] संस्कृत वेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थालय
प्राप्त क्रमांक..... 9707.....
दिनांक.....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri